नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव® बुक्स

हिन्दी-IX

(कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए
पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 260/-

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

मुद्रक :
मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

★ ★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी कक्षा 9

समय : 3.15 घंटे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	15
रचना	15
व्यावहारिक व्याकरण	15
पाठ्यपुस्तक : क्षितिज (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : कृतिका (भाग-1)	15

1. अपठित बोध : **15 अंक**

अपठित गद्यांश (आठ बहुचयनात्मक प्रश्न) 08

अपठित काव्यांश (सात बहुचयनात्मक प्रश्न) 07

2. रचना : **15 अंक**

(i) संकेत बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध-लेखन (विकल्प सहित) 06

(ii) संवाद-लेखन/पत्र-लेखन (विकल्प सहित) 05

(iii) प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन (100 शब्द) 04

3. व्यावहारिक-व्याकरण : **15 अंक**

(8 रिक्त स्थान पूर्ति, तीन अतिलघूत्तरात्मक एवं दो लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) शब्द निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय), विशेषण, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव 03

(ii) परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव 03

(iii) वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य) 03

(iv) पर्यायवाची, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 03

(v) मुहावरे 03

4. पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक : **(40+15) 55 अंक**

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-1) **40 अंक**

(i) निर्धारित गद्य-पाठों से किन्हीं दो गद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(ii) निर्धारित कविताओं से किन्हीं दो पद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(iii) 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) 06

(iv) 5 लघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) 10

(v) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 03

(vi) किसी एक रचनाकार का परिचय (कवि अथवा लेखक के विकल्प के साथ) 04

(vii) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 05

पूरक-पुस्तक (कृतिका भाग-1) 15 अंक

(i) 3 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 03

(ii) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न 04

(iii) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 03

(iv) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 05

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **कृतिका–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-1

गद्य-खण्ड

1. दो बैलों की कथा	*प्रेमचन्द*	1-14
2. ल्हासा की ओर	*राहुल सांकृत्यायन*	14-25
3. उपभोक्तावाद की संस्कृति	*श्यामाचरण दुबे*	25-36
4. साँवले सपनों की याद	*जाबिर हुसैन*	36-45
5. प्रेमचन्द के फटे जूते	*हरिशंकर परसाई*	45-56
6. मेरे बचपन के दिन	*महादेवी वर्मा*	56-67

काव्य-खण्ड

7. कबीर	साखियाँ एवं सबद	68-79
8. ललद्यद	*वाख*	79-87
9. रसखान	*सवैये*	87-96
10. माखनलाल चतुर्वेदी	*कैदी और कोकिला*	96-108
11. सुमित्रानंदन पंत	*ग्राम-श्री*	108-118
12. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	*मेघ आए*	118-128
13. राजेश जोशी	*बच्चे काम पर जा रहे हैं*	128-136

कृतिका भाग-1 (पूरक पुस्तक)

1. इस जल प्रलय में	*फणीश्वरनाथ 'रेणु'*	137-143
2. मेरे संग की औरतें	*मृदुला गर्ग*	143-151
3. रीढ़ की हड्डी	*जगदीश चंद्र माथुर*	151-157

व्याकरण

1. शब्द-निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय)	158-172
2. विशेषण (लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव)	172-184
3. परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव	184-192
4. वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य)	192-200
5. पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	201-223
6. मुहावरे	223-237

अपठित-बोध

1. अपठित गद्यांश	**238-251**
2. अपठित काव्यांश	**251-263**

रचना

निबन्ध-लेखन

राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्यात्मक निबन्ध

1. मेक इन इंडिया **अथवा** स्वदेशी उद्योग 264
2. आत्मनिर्भर भारत 265
3. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
अथवा
कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 265
4. समाज में नारी का स्थान **अथवा** भारतीय नारी तब और अब
अथवा
राष्ट्र के उत्थान में नारी की भूमिका 266
5. राष्ट्र निर्माण में युवकों का योगदान **अथवा** राष्ट्रीय उत्थान में युवा वर्ग का योगदान
अथवा
राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका 267
6. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन **अथवा** प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 267
7. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या **अथवा** कन्या भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 268
8. आतंकवाद : एक विश्व समस्या **अथवा** आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 269
9. रोजगार गारंटी योजना : मनरेगा **अथवा** गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 269
10. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 270
11. बाल-विवाह : एक अभिशाप 270
12. आतंकवाद : भारत के लिए चुनौती **अथवा** आतंकवाद : भारत की विकट समस्या 271
13. दहेज-प्रथा **अथवा** समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 272
14. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या **अथवा** बढ़ती महँगाई : एक विकराल समस्या 272
15. पर्यावरण प्रदूषण **अथवा** बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 273
16. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या **अथवा** देश में व्याप्त भ्रष्टाचार 273
17. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान 274
18. बढ़ती भौतिकता : घटते मानवीय मूल्य 274
19. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन **अथवा** वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 275
20. राजस्थान का अकाल 276
21. बेरोजगारी : समस्या और समाधान **अथवा** रोजगार के घटते साधन 276
22. नारी सशक्तीकरण 277

शिक्षा एवं विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध

23. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 277
24. सर्व शिक्षा अभियान **अथवा** सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 278
25. शिक्षित नारी : सुख समृद्धिकारी **अथवा** नारी-शिक्षा का महत्त्व 278
26. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व **अथवा** कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता 279

27. शिक्षा-सुधार में विद्यार्थियों की भूमिका 280
28. निरक्षरता : एक अभिशाप 280
29. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता **अथवा** नैतिक शिक्षा का महत्त्व 281
30. इन्टरनेट : वरदान या अभिशाप **अथवा** इन्टरनेट की उपयोगिता
अथवा
विद्यार्थी-जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 281
31. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 282
32. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी **अथवा** सूचना क्रांति के युग में भारत 283
33. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव **अथवा** कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 283
34. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप **अथवा** युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव 284
35. मानव के लिए विज्ञान-वरदान या अभिशाप **अथवा** विज्ञान के बढ़ते कदम 284

विचारात्मक निबन्ध

36. समय का सदुपयोग 285
37. जल संरक्षण : हमारा दायित्व **अथवा** जल है तो जीवन है 286
38. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है **अथवा** विद्यार्थी जीवन में अनुशासन 286
39. स्वावलम्बन का महत्त्व 287
40. वर्तमान की महत्ती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता **अथवा** राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 287
41. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका **अथवा** समाचार-पत्रों का महत्त्व 288
42. कटते जंगल : घटता मंगल 288

पर्व-त्योहार सम्बन्धी निबन्ध

43. ऋतुराज वसन्त **अथवा** प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त 289
44. त्योहारों का महत्त्व **अथवा** त्योहार : जनमंगल के आधार 290
45. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 290

स्वास्थ्य एवं खेलकूद सम्बन्धी निबन्ध

46. स्वच्छ भारत अभियान 291
47. खुला-शौचमुक्त गाँव 291
48. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग **अथवा** योग भगाए रोग 292
49. शिक्षा में खेलकूद का महत्त्व **अथवा** जीवन में खेलकूद की आवश्यकता 292
50. जब मैंने क्रिकेट मैच देखा **अथवा** आँखों देखे मैच का वर्णन 293

संस्कृति एवं पर्यटन सम्बन्धी निबन्ध

51. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता 294
52. राजस्थान के लोकगीत 294
53. नखरालो राजस्थान 295

संस्मरणात्मक निबन्ध

54. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना **अथवा** जीवन की वह चिरस्मरणीय घटना 295
55. गुरुजी जिन्हें मैं भूला नहीं सकता **अथवा** मेरे आदरणीय गुरुजी 296
56. विद्यालय का अन्तिम दिन 296
57. परीक्षा का अन्तिम दिन 297
58. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा **अथवा** किसी रोचक यात्रा का वर्णन 298
59. भीषण वर्षा की वह रात **अथवा** जब मेरे गाँव में भीषण वर्षा हुई 298
60. चुनाव का एक दृश्य **अथवा** चुनाव की हलचल 299

विविध विषयात्मक निबन्ध

61. मेरी प्रिय पुस्तक (रामचरितमानस) 299
62. इक्कीसवीं सदी का भारत

अथवा

मेरे सपनों का भारत 300
63. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 301
64. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक

अथवा

पर्यावरण संरक्षण के उपाय 301
65. मनोरंजन के आधुनिक साधन 302

संवाद-लेखन **303-309**

पत्र-लेखन

(औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) **310-336**

प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन **337-344**

क्षितिज : भाग-1

गद्य खण्ड

1. दो बैलों की कथा

(प्रेमचन्द)

लेखक-परिचय—महान् कथाकार एवं उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 में बनारस के पास 'लमही' गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचन्द का बचपन अभावों में बीता और अभावों के बीच ही उन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा विभाग में नौकरी की, परन्तु असहयोग आन्दोलन में भाग लेने हेतु सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दिया। ये स्वतन्त्र-लेखन में प्रवृत्त हुए। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ तथा ग्यारह प्रसिद्ध उपन्यासों की रचना की। इनके साथ ही कुछ पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। सन् 1936 में उनका देहान्त हो गया।

पाठ-सार—'दो बैलों की कथा' प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी है। झूरी काछी के दो बैलों के नाम थे—हीरा और मोती, दोनों बैल सीधे-सादे भारतीय लोगों के प्रतीक थे। वे ताकतवर और कमाऊ होते हुए भी अत्याचार सहते थे। कहानीकार ने इनके माध्यम से भारतीय लोगों की परतन्त्रता में होती दुर्दशा का संकेत किया है। पर उन दोनों बैलों में घनिष्ठ मित्रता थी। झूरी उनकी पूरी देखभाल करता था। एक बार झूरी ने उन्हें अपनी ससुराल भेज दिया। तब हीरा-मोती ने समझा कि उन्हें बेच दिया है। इस कारण मौका पाकर वे दोनों बैल वहाँ से भागकर आ गये। उन्हें फिर झूरी के ससुराल भेजा गया। इस बार भी वे वहाँ से भाग गये। मार्ग में एक खेत में चरते हुए पकड़े जाने पर उन्हें 'काँजीहौस' में लाया गया। वहाँ से उनकी नीलामी की गई और एक कसाई ने उन्हें खरीद लिया। कसाई के साथ चलते-चलते दोनों बैलों को उससे डर लगने लगा। इसलिए वे दोनों भागकर झूरी के घर आ गये। अपने प्यार करने वाले मालिक और अपने थान को पाकर वे खुश हुए। झूरी ने उनके पास चारा डाला तो उसकी पत्नी ने उनके माथे चूम लिये। इस तरह दोनों बैल प्रसन्नता से रहने लगे।

कठिन-शब्दार्थ—निरापद = सुरक्षित। अनायास = अचानक। मिसाल = उदाहरण। वंचित = रहित। विग्रह = लड़ाई। जालिम = अत्याचारी। गोई = बैलों की जोड़ी। चरनी = चारा खाने की जगह या पात्र। प्रतिवाद = विरोध। बछिया के ताऊ = मूर्ख। बेतहाशा = बिना होश-हवास के। जोखिम = खतरा। साबिका = सरोकार। चेत उठना = सावधान रहना। अंतर्ज्ञान = भीतरी समझ। अश्रद्धा = असम्मान से। पांगुर करना = जुगाली करना। रेवड़ = समूह, झुण्ड।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर—काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी कैद पशुओं की संख्या, उनकी विभिन्न आवश्यकताओं की पड़ताल, जिससे उनके खाने-पीने का इन्तजाम उसके अनुसार किया जा सके, पशुओं के व्यवहार का आकलन तथा सभी कैद पशुओं की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए ली जाती होगी।

प्रश्न 2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर—छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। उसकी सौतेली माँ उसे मारती थी और उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। इसलिए हीरा-मोती की व्यथा देखकर उसके मन में उनके प्रति प्रेम उमड़ आया, क्योंकि उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं।

प्रश्न 3. कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में बैलों के माध्यम से अग्रलिखित नीति-विषयक मूल्य उभरकर सामने आये हैं—

(1) सरल-सीधा और अत्यधिक सहनशील नहीं होना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक सीधे इन्सान को 'गधा' कहा जाता है। इसलिए मनुष्य को अपने अधिकारों के प्रति संघर्षरत रहना चाहिए।

(2) मनुष्य को हमेशा स्वामिभक्ति, सहयोग, नि:स्वार्थ परोपकार, मित्रता और नारियों के प्रति सहयोग की भावना रखनी चाहिए।

(3) आजादी पाने के लिए मनुष्य को बड़े से बड़ा कष्ट उठाने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

(4) मनुष्य को नारी जाति का सम्मान करने वाला, धर्म की मर्यादा मानने वाला तथा सच्ची आत्मीयता रखने वाला होना चाहिए।

प्रश्न 4. प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किस नये अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे के लिए रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न करके उसे सन्तोषी, सहनशील, सुख-दु:ख में समान रहने वाला, क्रोधरहित एवं स्थिर व्यवहार वाला बताया है। इस आधार पर उसकी तुलना ऋषि-मुनियों के स्वभाव से की है। इस प्रकार कथाकार ने गधे के सहिष्णु, निरापद, सद्गुणी एवं सन्तोषी स्वभाव वाले अर्थ की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 5. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर—'दो बैलों की कथा' में कुछ घटनाएँ ऐसी हैं, जिनसे हीरा और मोती की गहरी दोस्ती का पता चलता है। यथा—

(1) वे एक-दूसरे को सूँघ कर व चाटकर अपना प्रेम प्रकट करते थे।

(2) दोनों बैलगाड़ी या हल में जोते जाने पर ज्यादा से ज्यादा बोझ स्वयं ढोने का प्रयास करते थे।

(3) मटर के खेत में दोनों मस्त होकर, सींग मिलाकर एक-दूसरे को ढेलने लगे। तब हीरा को क्रोधित देखकर मोती ने उसके साथ कठोर व्यवहार किया और दोस्ती को दुश्मनी में नहीं बदलने दिया।

(4) गया द्वारा हीरा की निर्दयतापूर्वक पिटाई करने पर मोती का क्रोध भड़क उठा और वह हल, जुआ आदि लेकर भाग निकला और उनको तोड़-ताड़कर बराबर कर दिया।

(5) दोनों मित्रों ने सहयोगी रणनीति से सांड का मुकाबला कर उसे परास्त किया।

(6) मटर के खेत में मोती के पकड़े जाने पर हीरा भी उसके पास आ गया। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

(7) काँजीहौस में दीवार गिराने पर जब हीरा की रस्सी नहीं टूटी तो मोती भी अकेले बाहर नहीं गया।

इस तरह के आचरण से दोनों में गहरी दोस्ती दिखाई दी।

प्रश्न 6. "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।"—हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचन्द के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हीरा के उक्त कथन के माध्यम से प्रेमचन्द का स्त्री-जाति के प्रति सम्मान का भाव व्यक्त हुआ है। भारतीय संस्कृति में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' कथन से नारी को सम्मानित एवं पूज्या माना गया है। हमारे समाज में कुछ लोग स्त्री को केवल भोग्या तथा साधारण जीव मानते हैं, उसका शोषण-उत्पीड़न करते हैं, मारते-पीटते भी हैं, परन्तु प्रेमचन्द का ऐसा दृष्टिकोण नहीं रहा है। उन्होंने स्त्री को समता एवं सम्मान का पात्र बताया है।

प्रश्न 7. किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी सम्बन्धों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर—कहानी में किसान जीवन वाले समाज में मनुष्य और पशु का घनिष्ठ संबंध बताया गया है। वे एक-दूसरे के सहायक और पूरक रहे हैं। किसान पशुओं को घर का सदस्य मानकर उनसे प्रेम करता है और पशु भी अपने स्वामी के लिए जी-जान देने को तैयार रहते हैं। झूरी हीरा-मोती को घर के सदस्यों की तरह स्नेह करता था। इसीलिए हीरा-मोती दो बार उसकी ससुराल से भाग कर अपने थान पर खड़े हुए थे। उन्हें देखकर वह ही नहीं उसकी पत्नी भी आनन्द से भर उठी थी। इससे पता चलता है कि किसान अपने पशुओं से मानवीय व्यवहार करते हैं।

प्रश्न 8. "इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे"—मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—इस कथन से ज्ञात होता है कि मोती स्वभाव से उग्र किन्तु परोपकारी, सहयोगी और दयालु बैल है। वह अत्याचार का विरोधी, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति रखने वाला और आजादी का समर्थक है। इसीलिए वह काँजीहौस की दीवार तोड़कर बन्द पड़े पशुओं को आजाद कर देता है। उसे इस बात पर सन्तोष होता है कि अब चाहे कुछ भी हो। इतना तो हो गया कि मेरे प्रयास से नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी। अत: वह आशावादी, स्वार्थहीन और साहसी पशु था।

प्रश्न 9. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

उत्तर–आशय–सामान्य पशु होते हुए भी हीरा और मोती एक-दूसरे के मनोभावों को समझ लेते थे तथा मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। इससे कथाकार का मानना है कि उन दोनों बैलों के पास अवश्य ही कोई गुप्त शक्ति थी जिसके माध्यम से मूक-भाषा में वे एक-दूसरे की मन की भावनाओं को समझ लेते थे। मनुष्य सभी जीवों में श्रेष्ठ है, परन्तु उसके पास ऐसी गुप्त शक्ति का अभाव है, जो बिना बोले ही दूसरों की भावनाओं को स्पष्टतया समझ सके।

(ख) उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शान्त होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर–आशय–गया के घर में हीरा-मोती के साथ अत्याचार होता था। गया उन्हें मारता था और खाने के लिए सूखा भूसा देता था। दोनों बैल इसे अपना अपमान समझते थे। सन्ध्या के समय उसी घर की एक छोटी सी बच्ची ने दो रोटियाँ लाकर उन दोनों को खिलायीं। एक-एक रोटी से उनकी भूख क्या शान्त होती, परन्तु छोटी बच्ची के प्रेमपूर्ण व्यवहार को देखकर उन दोनों में एक शक्ति का संचार हो गया, मानो उन्हें अच्छा भोजन मिल गया और उनके हृदय में यह भाव जागा कि यहाँ पर भी किसी सज्जन का वास है।

प्रश्न 10. गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि–

(क) गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

(ख) गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था।

(घ) उसे खली आदि सामग्री की जानकारी न थी।

सही उत्तर के आगे (√) का निशान लगाइए।

उत्तर–(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था। (√)

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 11. हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ़ आवाज उठाई, लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में हीरा-मोती को स्वतन्त्रता-आन्दोलन के क्रान्तिकारियों के प्रतीक रूप में रखा गया है। इन दोनों ने गया के घर जाने पर मातृभूमि के प्रति अपना प्रेम दर्शाने और अत्याचार-शोषण का विरोध करने में अपनी क्षमता का परिचय दिया। इस संघर्ष में उन्हें वहाँ प्रताड़ना मिली, मार भी खानी पड़ी और भूखा भी रखा गया, फिर भी वे अपने ढंग से उसका विरोध करते रहे। इस तरह गुलामी के बदले आजादी की लालसा में उन्होंने संघर्षरत रहने की अपनी बलवती भावना का परिचय दिया।

प्रश्न 12. क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है?

उत्तर–अप्रत्यक्ष रूप से यह कहानी अंग्रेजों की दासता से मुक्ति की कहानी है और इसमें हीरा-मोती क्रान्तिकारियों के प्रतीक हैं। जिस समय यह कहानी लिखी गयी, उस समय भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन चल रहा था। अपनी बात को खुलकर न कह सकने के कारण प्रेमचन्द ने दो बैलों के माध्यम से आजादी की लड़ाई की ओर संकेत किया। हीरा-मोती को लेकर कहानी में जो घटना-क्रम एवं विचाराभिव्यक्ति दर्शायी गई है, वह सब आजादी की लड़ाई से मेल खाती है। जहाँ झूरी का घर स्वराज्य का और गया का घर पराधीनता का प्रतीक है वहीं हीरा अहिंसा का और मोती क्रान्ति का प्रतीक है और रेवड़ में चरने वाले पशु स्वतन्त्रता के प्रतीक हैं। अन्त में इन दोनों की विजय बताई गयी है।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 13. बस इतना ही काफ़ी है।

फिर मैं भी जोर लगाता हूँ।

'ही' 'भी' वाक्य में किसी बात पर जोर देने का काम कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में से ऐसे पाँच वाक्य छाँटिये, जिनमें निपात का प्रयोग हुआ हो।

उत्तर–(1) जोर तो मारता ही जाऊँगा।

(2) न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नजर आती।

(3) एक ने भी उसमें मुँह न डाला।

(4) आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा।

(5) साँड को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजरबा न था।

प्रश्न 14. रचना के आधार पर वाक्यभेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उसके भेद भी लिखिए–

उत्तर–रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं—

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य।

(क) दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।

उत्तर–यह मिश्र वाक्य है।

(i) दीवार का गिरना था –प्रधान या मुख्य उपवाक्य

(ii) अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे। –आश्रित क्रिया विशेषण उपवाक्य

(ख) सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया।

उत्तर–यह मिश्र वाक्य है।

(i) सहसा एक दढ़ियल आदमी आया। –प्रधान उपवाक्य

(ii) जिसकी आँखें लाल थीं। –आश्रित विशेषण उपवाक्य

(iii) और मुद्रा अत्यन्त कठोर। –आश्रित विशेषण उपवाक्य

(ग) हीरा ने कहा–गया के घर से नाहक भागे।

उत्तर–मिश्र वाक्य है।

(i) हीरा ने कहा। –प्रधान उपवाक्य

(ii) गया के घर से नाहक भागे। –आश्रित संज्ञा उपवाक्य

(घ) मैं बेचूँगा, तो बिकेंगे।

उत्तर–मिश्र वाक्य है।

(i) तो बिकेंगे। –प्रधान उपवाक्य

(ii) मैं बेचूँगा। –आश्रित क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(ङ) अगर वह मुझे पकड़ता तो मैं बे-मारे न छोड़ता।

उत्तर–मिश्र वाक्य है।

(i) मैं बे-मारे न छोड़ता। –प्रधान उपवाक्य

(ii) अगर वह मुझे पकड़ता। –आश्रित क्रिया-विशेषण उपवाक्य

प्रश्न 15. कहानी में जगह-जगह मुहावरों का प्रयोग हुआ है। कोई पाँच मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–कहानी में प्रयुक्त मुहावरे–ईंट का जवाब पत्थर से देना, सिंहनी का रूप धारण करना, सींग मारना, गम खाना, जी-तोड़ काम करना, सिर झुकाना, धौल-धप्पा होना, कोर कसर उठा न रखना, पसीना आना, दिल भारी होना, आँख न उठाना, पलट जाना, टल जाना, जान से हाथ धोना, नाकों में नथ डालना, जान जोखिम में डालना, मन फीका होना, अकड़ निकल जाना, खलबली मचना, मन फीका करना, माथा चूमना, काम आना आदि।

वाक्य-प्रयोग–(1) शत्रु तभी शान्त होगा, जब **ईंट का जवाब पत्थर से दिया जायेगा।**

(2) मालकिन ने तुरन्त पास आकर दोनों के **माथे चूम लिये।**

(3) काँजीहौस में बंद होने पर दोनों की **अकड़ निकल गई।**

(4) काँजीहौस की दीवार गिरने पर सभी जानवरों में **खलबली मच गई।**

(5) यहीं रहे तो **जान से हाथ धोना पड़ेगा।**

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में मोती प्रतीक है—

(क) महात्मा गाँधी का (ख) सुभाष चन्द्र बोस का

(ग) जवाहरलाल नेहरू का (घ) प्रेमचन्द का

2. भारतवासियों की अफ्रीका और अमेरिका में दुर्दशा होने का कारण था—

(क) अकर्मण्यता और आलस (ख) पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेष

(ग) सीधापन और सहनशीलता (घ) सहिष्णुता और संघर्ष

3. छोटी-सी लड़की उन दोनों के मुँह में रोटियाँ देकर चली गयी थी—
(क) उनकी भूख शान्त करने के कारण (ख) उनके प्रति दया दिखाने के कारण
(ग) उनके प्रति आत्मीयता होने के कारण (घ) उनके प्रति सज्जनता दिखाने के कारण
4. साँड आदी था—
(क) मल्ल युद्ध करने का (ख) डर कर भागने का
(ग) शत्रुओं को पछाड़ने का (घ) हिल-मिलकर रहने का
5. "इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी।" यह कथन है—
(क) हीरा का (ख) मोती का (ग) गाय का (घ) गधे का
6. गधे में किसके गुण पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं?
(क) आम आदमी (ख) चोर डकैत (ग) ऋषि मुनि (घ) कुलीन वर्ग
7. निरापद सहिष्णुता का क्या अर्थ है?
(क) संत भोलापन (ख) अत्यन्त मूर्खता
(ग) अत्यन्त सहनशीलता (घ) सादगी
8. दो बैलों की कथा-कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
(क) मेहनत करनी चाहिए। (ख) अपने मालिक की सेवा करनी चाहिए।
(ग) भाग्य पर विश्वास करना चाहिए। (घ) स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करना चाहिए।
9. दोनों बैल गया से नफरत क्यों करते थे?
(क) गया पेटभर चारा नहीं देता था। (ख) गया दोनों बैलों को मारता था।
(ग) उनसे खूब काम लेता था। (घ) उपरोक्त सभी।
10. झूरी ने अपने दोनों बैलों को कहाँ भेज दिया था?
(क) भाई के घर (ख) ससुराल (ग) मित्र (घ) बहन के घर

उत्तर-माला—1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख) 6. (ग) 7. (ग) 8. (घ) 9. (घ) 10. (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. दिनभर की थकान के बाद शाम को जब वे खुलते तो एक-दूसरे को................. अपनी थकान मिटा लेते। (चाटकर/बातकर)
2. गया के बैलों की गोई ले जाने में .... आ गया। (जोर/नाकों तले पसीना)
3. दो-चार बार मोती ने गाड़ी को .... गिराना चाहा पर हीरा ने संभाल लिया। (खाई में/ढलान में)
4. छोटी-सी लड़की .... रोटी लिए निकली। (दो/पाँच)
5. जिस .... मार्ग से आए थे उसका यहाँ पता ना था। (परिचित/अपरिचित)
6. संध्या समय दोनों बैल अपने .... पर पहुँचे। (नए स्थान/पुराने स्थान)

उत्तर—1. चाटकर 2. नाकों तले पसीना 3. खाई में 4. दो 5. परिचित 6. पुराने स्थान।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'दो बैलों की कथा' किस लड़ाई की ओर संकेत करती है?
उत्तर—'दो बैलों की कथा' कहानी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की लड़ाई की ओर संकेत करती है।
प्रश्न 2. "गिरे हुए बैरी पर सींग नहीं चलाना चाहिए।" यह कथन किसका है?
उत्तर—यह कथन हीरा का था। वह यह कथन मोती को कहता है।
प्रश्न 3. झूरी कौन था? उसका हीरा-मोती के साथ क्या सम्बन्ध था?
उत्तर—झूरी एक किसान था। हीरा-मोती उसके दो बैल थे।
प्रश्न 4. दूसरी बार गया बैलों को कैसे लेकर जाता है?
उत्तर—दूसरी बार गया हीरा-मोती को बैलगाड़ी में जोत कर ले जाता है।
प्रश्न 5. काँजीहौस के अन्दर का दृश्य कैसा था?
उत्तर—काँजीहौस के अन्दर बिना चारा-पानी के जमीन पर मुर्दों के समान अनेक भैंसें, बकरियाँ, घोड़े और गधे पड़े थे।

प्रश्न 6. हीरा-मोती ने स्वयं को साँड से कैसे बचाया?

उत्तर—हीरा-मोती ने यह सोचा कि दोनों सांड पर एकसाथ चोट करें, एक आगे से दूसरा पीछे से। इस तरह स्वयं को बचाया।

प्रश्न 7. गया ने जब बैलों को हल में जोता तो बैलों पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर—गया ने जब बैलों को हल में जोता तो वे दोनों अड़ियल बन गए।

प्रश्न 8. हीरा-मोती भूख से व्याकुल होकर किस फसल के खेत में चरने लगे?

उत्तर—हीरा-मोती भूख से व्याकुल होकर मटर की फसल के खेत में चरने लगे।

प्रश्न 9. बाल सभा ने क्या किया?

उत्तर—बाल सभा ने बैलों के घर लौटने पर उनका अभिनन्दन किया।

प्रश्न 10. झूरी के ना चाहते हुए भी हीरा और मोती को क्यों बेचना पड़ा?

उत्तर—झूरी को इसलिए बेचना पड़ा क्योंकि उसकी पत्नी हीरा-मोती को बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती थी।

प्रश्न 11. पशुओं में ऐसा कौनसा गुण होता है जो मनुष्य में इनकी अपेक्षा कम है?

उत्तर—मन के भावों को समझ लेने का गुण।

प्रश्न 12. भूखे रहने के बावजूद हीरा-मोती ने नाँद में मुँह क्यों नहीं डाला था?

उत्तर—अपमान के कारण हीरा-मोती ने नाँद में मुँह डाला।

प्रश्न 13. हीरा और मोती किस भाषा में एक-दूसरे से बात करते थे?

उत्तर—मूक भाषा में।

प्रश्न 14. "जाकर थाने में रपट कर दूँगा।" यह कथन किसका है?

उत्तर—यह कथन दढ़ियल का था।

प्रश्न 15. झूरी के साले का क्या नाम था?

उत्तर—गया बजरंग सुखिया धनिया नाम था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. "नहीं, हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।" यह किसने और किस आशय से कहा?

उत्तर—यह हीरा ने कहा। दोनों बैल जब हल लेकर भागे, तो गया अपने दो आदमियों के साथ लाठी लेकर आया। उस समय गया को देखकर मोती ने कहा कि मैं भी इसे कुछ मजा चखाता हूँ। तब हीरा ने कहा कि गया इस समय हमारा मालिक जैसा है। अत: मालिक पर प्रहार करना हम सेवकों का धर्म नहीं है।

प्रश्न 2. दोनों बैलों ने आजादी का कब अनुभव किया?

उत्तर—दोनों बैलों की रस्सियाँ भैंरो की लड़की ने चुपचाप खोल दी थीं। इस कारण वे दोनों वहाँ से भागने लगे। तब हीरा और मोती दोनों ही अपनी भूख शान्त करने के लिए मटर के एक खेत में घुस गये। उन्होंने पेट भरकर हरी मटर खायी और मस्त होकर उछलने-कूदने लगे। उस समय इन दोनों बैलों को आजादी का अनुभव हुआ।

प्रश्न 3. बेदम होकर गिर पड़े साँड को लक्ष्य कर हीरा-मोती ने कौनसी नीति-विषयक बातें कही?

उत्तर—बेदम होकर गिरे सांड को लक्ष्य करके हीरा ने कहा कि 'गिरे हुए बैरी पर सींग नहीं चलाना चाहिए।' मोती ने फिर कहा कि 'यह सब ढोंग है, बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।' अर्थात् उसके प्रति सदाशयता या क्षमा भाव नहीं रखना चाहिए। इस प्रकार हीरा-मोती ने साँड को लक्ष्य कर सुन्दर नीति-विषयक बातें कही ।

प्रश्न 4. "जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बन्धन पड़ते जाएँ।" इस वाक्य के माध्यम से लेखक ने क्या व्यंजना की है?

उत्तर—यह वाक्य हीरा का कथन है। वह काँजीहौस की दीवार तोड़ने के सम्बन्ध में अपने दृढ़ संकल्प को व्यक्त करता है। उसके माध्यम से लेखक ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में जो क्रान्तिकारी अंग्रेजों की कैद में थे, उनकी भावनाओं की व्यंजना की है। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए संघर्ष और दृढ़ संकल्प की जरूरत होती है।

प्रश्न 5. हीरा और मोती के स्वभाव में क्या अन्तर दिखाई देता है? कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर—मोती स्वभाव से कुछ उग्र, अन्याय व अत्याचार का विरोध करने में 'जैसे को तैसा' सिद्धान्त को मानने वाला, परोपकारी व दयालु है। हीरा भी अन्याय का विरोधी है लेकिन मोती की तरह उग्र नहीं है। इस तरह हीरा के मुकाबले मोती का स्वभाव अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है।

प्रश्न 6. "मर जाऊँगा, पर उसके काम न आऊँगा।" यह किसने और किस आशय से कहा?

उत्तर—यह मोती ने हीरा से कहा, क्योंकि उसकी निगाह में कसाई शोषणकारी और हिंसक था। ऐसे व्यक्ति की गुलामी में रहना, उसकी खातिर अपना जीवन बलिदान करना या अन्याय का विरोध न करना अनुचित है। ऐसे व्यक्ति के काम में आने की बजाय प्राणों का बलिदान करना उचित है।

प्रश्न 7. हीरा-मोती ने दूसरी बार गया के घर भेजे जाने का किस प्रकार विरोध किया? कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर—हीरा और मोती गया के घर नहीं जाना चाहते थे लेकिन भेजे जाने पर पहले तो मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा परन्तु हीरा ने उसे सँभाल लिया। सूखी घास नहीं खायी और गया द्वारा हीरा की नाक पर डंडे बरसाये जाने पर मोती ने हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब तोड़-ताड़कर गया के घर से भाग गए।

प्रश्न 8. 'दो बैलों की कथा' पाठ में गुप्त-शक्ति से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर—'दो बैलों की कथा' नामक कहानी में मुंशी प्रेमचन्द ने बताया कि जानवरों में गुप्त शक्ति होती है। उनमें दूसरे के मनोभावों को भाँपने की ताकत होती है। इसी कारण दढ़ियल आदमी को देखकर उन्हें पता चल गया कि यह आदमी हत्यारा है, यह उनका मित्र नहीं हो सकता। इससे हमारा अनर्थ हो सकता है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. दोनों बैलों के साथ कैसा व्यवहार हो रहा था?

उत्तर—झूरी अपने दोनों बैलों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करता था, परन्तु उसके घर को छोड़कर अन्य सब जगहों पर उनके साथ शोषण और अन्याय का व्यवहार किया जा रहा था। गया उन्हें अपने खेतों पर जबरदस्ती जोतता था, चारा कम देता था। रास्ते में साँड ने उन पर बेवजह आक्रमण कर दिया था। काँजीहौस में तो अन्य जानवरों के साथ उन पर अन्याय हो रहा था। वहाँ पर चारा-पानी कुछ नहीं दिया जा रहा था। दढ़ियल व्यक्ति कसाई था, वह उन्हें काट देना चाहता था। उसका व्यवहार अत्यन्त निर्मम था।

प्रश्न 2. काँजीहौस में हीरा-मोती ने किस तरह एकता दिखाई थी?

उत्तर—काँजीहौस के अन्दर अनेक भैंसें, बकरियाँ, घोड़े, गधे आदि पशु बन्द थे। भूख-प्यास के कारण वे बेहाल थे और एकदम मरियल बने हुए थे। ऐसे में हीरा-मोती ने काँजीहौस की दीवार को सींग मार-मार कर तोड़ डाला। इससे वहाँ के सारे पशु आजाद हो गये। गधे वहाँ से भागने को तैयार नहीं थे। तब हीरा-मोती ने उन्हें भी खदेड़कर बाहर कर दिया था। इस तरह काँजीहौस में हीरा-मोती ने एकता और साहस का परिचय दिया, परन्तु अन्तत: वे पूरी तरह सफल नहीं हुए।

प्रश्न 3. 'दो बैलों की कथा' के आधार पर बताइए कि क्या-क्या आरोप लगाकर भारतीयों को अमेरिका में नहीं घुसने दिया जाता था?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में बताया गया है कि अमेरिका के लोग भारतीयों की सरलता, सहनशीलता, सादगी एवं अहिंसा के कारण नीचा मानते थे। वे केवल संघर्षशील लोगों को तथा खुले दिल से खर्च करने वालों को सम्मान देते थे। भारतीय लोग शराब नहीं पीते थे, चार पैसे कमाकर कुसमय के लिए बचाकर रखते थे और जी-तोड़ काम करते थे। किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं। भारतीयों के ऐसे स्वभाव को देखकर अमेरिकावासी उन्हें वहाँ घुसने नहीं देते थे।

प्रश्न 4. 'दो बैलों की कथा' में लेखक ने सच्चे मित्रों की क्या पहचान बतायी है?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में लेखक ने हीरा-मोती बैलों के माध्यम से सच्चे मित्रों की यह पहचान बतायी है कि सच्चे मित्र आपस में खूब मेल-जोल से रहते हैं। वे कभी आपस में कुछ धौल-धप्पा, शरारत या कुलेल-क्रीड़ा भी करते हैं, परन्तु उससे उनका प्रेम बढ़ता है। सच्चे मित्र हर समय एक-दूसरे की निस्वार्थ भाव से सहायता-सहयोग करते हैं। जैसे हीरा-मोती एक साथ हल या गाड़ी को खींचते थे, नाँद में खली-भूसा एक साथ खाते थे और विपदा आने पर एक साथ उसका सामना करते थे।

प्रश्न 5. झूरी की पत्नी ने हीरा-मोती को पहले नमकहराम क्यों कहा? बाद में उनका माथा क्यों चूमा?

उत्तर—झूरी की पत्नी ने दोनों बैल अपने भाई गया के घर हल चलाने के लिए भिजवाये थे। परन्तु दोनों बैल वहाँ से भाग आये, तो झूरी की पत्नी को अच्छा नहीं लगा और अपने भाई का अपमान मानकर उसने हीरा-मोती को गुस्से में नमकहराम कहा। बाद में कसाई के बन्धन से भागते हुए जब दोनों बैल अपने थान पर पहुँचे, तो झूरी की पत्नी के मन का मैल दूर हो गया। वह हीरा-मोती को सच्चा स्वामिभक्त मानने लगी। कई दिनों के बाद बैलों के लौट आने से उसने खुशी से उनका माथा चूम लिया।

प्रश्न 6. 'दो बैलों की कथा' के आधार पर सिद्ध कीजिए कि एकता में ही शक्ति है।

उत्तर–गया के घर से दूसरी बार भागने पर हीरा-मोती रास्ता भटक गये। वे दोनों एक खेत में मटर खाने घुसे, तो वहाँ उनका मुकाबला एक बड़े भयानक साँड से हुआ। तब हीरा-मोती ने योजना बनाई कि कैसे साँड का मुकाबला करें। साँड जब एक को आगे से मारता, तो उसी समय दूसरा उस पर पीछे से सींग से प्रहार करता। इस तरह वे दोनों उस साँड का मुकाबला करते रहे। हीरा-मोती ने योजनानुसार साँड के हमले को विफल कर दिया। इससे साँड बेदम होकर गिर पड़ा। तब हीरा-मोती ने उसे छोड़ दिया। यदि वे दोनों मिलकर साँड का मुकाबला नहीं करते, तो जान से हाथ धो बैठते। इससे सिद्ध होता है कि एकता में ही शक्ति है।

प्रश्न 7. दोनों बैलों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह क्यों झलक रहा था?

उत्तर–हीरा-मोती को गया के घर जाना ठीक नहीं लगा। वहाँ पर इन दोनों को गाँव, घर तथा मनुष्य सब बेगाने जैसे लग रहे थे। वे वहाँ से विद्रोही बनकर, पगहे उखाड़कर वापस झूरी के घर आ गये थे। तब झूरी ने उन्हें गले लगाया, प्रेमालिंगन एवं चुम्बन किया। उस समय गया के घर मिले अपमान को लेकर तथा झूरी के स्नेह को देखकर हीरा और मोती की आँखों में विद्रोहमय स्नेह अर्थात् मिला-जुला भाव झलक रहा था। उनका गया के प्रति विद्रोह तथा झूरी के प्रति प्रेम व्यक्त हो रहा था।

प्रश्न 8. 'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो'–इस कथन से लेखक ने समाज की किस विडम्बना पर आक्षेप किया है?

उत्तर–गया के घर में छोटी बच्ची को उसकी सौतेली माँ मारती-पीटती थी। इस बात पर मोती ने लड़की को सताने वाली औरत पर अपना सींग चलाने की इच्छा व्यक्त की। तब उसे हीरा ने ऐसा करना गलत बताया। इस प्रसंग से समाज पर आक्षेप किया गया है कि औरत को कदम-कदम पर पुरुष के हाथों अपमानित होना पड़ता है तथा मार-पीट सहनी पड़ती है। औरत स्वयं को अबला मानकर सब कुछ सहती है। पुरुष-वर्ग द्वारा औरतों के साथ ऐसा आचरण जानवरों से भी बदतर और निन्दनीय है।

प्रश्न 9. सिद्ध कीजिए कि हीरा नरम विचारों तथा मोती गरम विचारों वाला क्रान्तिकारी है।

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में हीरा और मोती के कार्यों एवं उनकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर हीरा नरम दल का तथा मोती गरम दल का क्रान्तिकारी प्रतीत होता है। हीरा अपने कार्यों से सहनशीलता, अहिंसा, विनम्रता की अभिव्यक्ति करता है, तो मोती उग्रता, प्रतिकार, बदला लेने एवं बलिदानी भावना को व्यक्त करता है। हीरा गया की मार खाकर भी नरम रहने की बात कहता है। काँजीहौस में मोती पूरी ताकत से दीवार गिराकर सभी पशुओं को भागने का मौका देता है। इस प्रकार मोती गरम विचारों का क्रान्तिकारी प्रतीत होता है।

प्रश्न 10. 'स्वतन्त्रता सहज में नहीं मिलती, उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है।'
'दो बैलों की कथा' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'दो बैलों की कथा' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–मुंशी प्रेमचन्द ने 'दो बैलों की कथा' के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि आजादी बिना संघर्ष के नहीं मिलती है। उसके लिए परस्पर एकता व सहयोग रखकर, संघर्ष एवं बलिदान-त्याग का मार्ग अपनाकर आगे बढ़ना पड़ता है। हीरा और मोती दोनों बैल गया के अत्याचार से, काँजीहौस रूपी जेल से, दढ़ियल कसाई के बन्धन से तभी मुक्त होते हैं, जब वे संघर्ष करते हैं, अनेक कष्ट झेलकर भी वे हार नहीं मानते हैं। देश को पराधीनता से मुक्ति भी एकता, सहयोग परहित निःस्वार्थ भाव एवं संघर्ष से मिल सकी, यही उद्देश्य प्रस्तुत कहानी में व्यंजित हुआ है।

प्रश्न 11. जानवरों में भी मानवीय संवेदनाएँ होती हैं–'दो बैलों की कथा' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–मुंशी प्रेमचन्द ने प्रस्तुत कहानी में हीरा-मोती को ऐसा चित्रित किया है कि वे मनुष्यों की तरह परस्पर सुख-दुःख का अनुभव करते हैं तथा आपस में प्रेम एवं सहयोग रखते हैं। वे गया के घर से भागकर अपने परिचित थान पर आते हैं और रोटियाँ खिलाने वाली छोटी लड़की के स्नेह को भली-भाँति समझते हैं। वे प्यार का बदला प्यार-प्रेम से देते हैं। वे गया और दढ़ियल आदमी के कठोर भावों को अच्छी तरह समझते हैं। उनमें उग्रता, गुस्सा, विद्रोह, आत्मीयता तथा परस्पर सहयोग जैसी सभी मानवीय संवेदनाएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. हीरा-मोती किस प्रकार सहयोग एवं प्रेम करते थे? इससे क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर–सच्चे मित्र एक-दूसरे पर पूरा विश्वास करते हैं। वे एक-दूसरे के लिए त्याग भी करते हैं और एकसाथ खाते-पीते भी हैं। ये सभी गुण हीरा और मोती दोनों बैलों में भी देखे जा सकते हैं। हीरा-मोती गहरे मित्र हैं, वे आपस

में कौल-क्रीड़ा, शरारत आदि भी करते हैं। हीरा-मोती एक साथ ही नाँद में मुँह डालते थे, एक साथ खली-भूसा खाते थे और आपस में एक-दूसरे को चाट-सूँघकर या सींग मिलाकर प्रेम प्रकट करते थे। हल या गाड़ी पर जोते जाने पर दोनों की यह चेष्टा रहती थी कि ज्यादा से ज्यादा बोझ मेरी गर्दन पर ही रहे। इसी प्रकार मुसीबत आने पर वे एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ते थे। काँजीहौस में मोती हीरा की रस्सी तोड़ने का प्रयास करता रहा, परन्तु वह अकेला वहाँ से बाहर नहीं आया। इस प्रकार हीरा-मोती के परस्पर सहयोग एवं प्रेम को देखकर शिक्षा मिलती है कि आपस में अटूट प्रेम, मित्रता एवं सहयोग रखना चाहिए।

प्रश्न 2. 'दो बैलों की कथा' कहानी का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'दो बैलों की कथा' कहानी के माध्यम से प्रेमचन्द ने भारतीय कृषक समाज और पशुओं के भावात्मक सम्बन्ध का वर्णन किया है। इसका मूल भाव यह है कि सहनशीलता, सरलता, सीधापन आदि गुणों का आज के परिवेश में कोई महत्व नहीं है। भारतीयों का पराधीनता काल में इसी कारण शोषण-उत्पीड़न हुआ। संघर्षशील और शक्तिशाली का सदा सम्मान होता है। जापान और अमेरिका ने इसी आधार पर सम्मान अर्जित किया है। अत्याचार और अन्याय का शिकार न होकर सदा संघर्ष करने से सम्मान भी मिलता है और आजादी भी हासिल होती है। स्वामी के प्रति वफादारी निभाने का वर्णन करना कहानी का प्रमुख लक्ष्य है। कहानीकार का सच्ची मित्रता पर प्रकाश डालना भी एक उद्देश्य है। एक सच्चा मित्र ही सुख-दुःख में साथ देता है। आत्मरक्षा के लिए सदैव संघर्ष करना चाहिए। एकता में सदा बल है, इस सर्वविदित सत्य को दर्शाना भी कहानी का मूल भाव है।

प्रश्न 3. कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौनसे नीति विषयक मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर–कहानी में बैलों के माध्यम से निम्नलिखित नीति विषयक मूल्य उभरकर आए हैं—

(1) **सच्ची मित्रता**–मुसीबत के समय हीरा-मोती एक-दूसरे का साथ निभाते हैं।

(2) **मिल-जुलकर रहने की भावना**–हीरा-मोती बलशाली सांड को हराकर 'एकता में शक्ति' की कहावत को सच सिद्ध करते हैं।

(3) **निःस्वार्थ परोपकार की भावना**–हीरा और मोती काँजीहौस की दीवार गिराकर अधमरे जानवरों को भगाकर अपनी निःस्वार्थ परोपकार की भावना व्यक्त करते हैं।

(4) **स्वतन्त्रताप्रिय**–हीरा और मोती स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते हैं और अन्ततः वे इसमें सफल भी होते हैं।

(5) **धर्मपरायणता**–हीरा-मोती गया द्वारा पीटे जाने पर उसकी जान नहीं लेते। हीरा उसे समझाता है कि 'हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।'

रचनाकार परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. मुंशी प्रेमचन्द का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर–मुंशी प्रेमचन्द एक महान कथाकार थे। उन्हें उपन्यास-सम्राट् के रूप में भी जाना जाता है। उनका जन्म सन् 1880 में बनारस के निकट लमही नामक गाँव के एक साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रेमचन्द ने आरम्भ में उर्दू में लिखना शुरू किया तथा बाद में हिन्दी में आए थे। उन्होंने वरदान, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, निर्मला, प्रेमाश्रम, गोदान आदि ग्यारह उपन्यासों की रचना की है तथा तीन सौ के लगभग कहानियाँ लिखी हैं जिनमें 'कफन', 'पूस की रात', 'दो बैलों की कथा', 'पंचपरमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी', 'शतरंज के खिलाड़ी' आदि प्रमुख हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में भावानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा का सार्थक प्रयोग किया गया है। इनकी भाषा-शैली में प्रेरणा देने की शक्ति के साथ पाठकों को चिन्तन के लिए उकसाने की शक्ति समाहित है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए :

(1)

जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याही हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा।

प्रश्न 1. जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन क्यों समझा जाता है?

प्रश्न 2. किसी आदमी को गधा कब कह देते हैं?
प्रश्न 3. गधे की कौनसी विशेषताएँ अन्य पशुओं से भिन्न हैं?
प्रश्न 4. 'परले दरजे का बेवकूफ़' से लेखक का क्या आशय है?
प्रश्न 5. जानवरों में सबसे ज्यादा बुद्धिहीन जानवर कौन है?
प्रश्न 6. ब्याही हुई गाय अनायास ही किसका रूप धारण कर लेती है?
उत्तर–1. स्वभाव से सीधा और सहनशील होने के कारण जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है।
2. जब हम किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ़ समझते हैं।
3. अत्यधिक सहनशीलता, सीधापन, सन्तोषी भाव आदि विशेषताएँ।
4. 'परले दरजे का बेवकूफ़' से लेखक का आशय है—बिल्कुल मूर्ख।
5. जानवरों में सबसे ज्यादा बुद्धिहीन जानवर गधा है।
6. ब्याही हुई गाय से यदि छेड़खानी करते हैं तो वह अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है।

(2)

जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसा खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असन्तोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक विषाद स्थायी रूप में छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गये हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ़ समझता है। सद्गुणों का इतना अनादर नहीं देखा। कदाचित् सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है।

प्रश्न 1. गधे के चेहरे पर कभी असन्तोष की छाया क्यों नहीं दिखाई देती?
प्रश्न 2. कदाचित् सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। इसका आशय स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 3. आदमी गधे को बेवकूफ क्यों समझता है?
प्रश्न 4. ऋषियों-मुनियों के गुण किसमें पराकाष्ठा पर पहुँच गए हैं?
प्रश्न 5. कौनसे महीने में गधा प्रसन्न दिखाई देता है?
प्रश्न 6. 'पराकाष्ठा' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर–1. गधा स्वभाव से सरल, संतोषी और हर हाल में सन्तुष्ट रहने वाला पशु है।
2. इसका आशय है—इस संसार में रहने वाले स्वार्थी और दुष्ट लोग सीधापन रखने वालों को अनावश्यक तंग करते हैं।
3. गधे का सीधा-सरल स्वभाव व अन्याय का विरोध न करने के कारण।
4. गधे में।
5. वैशाख महीने में गधा प्रसन्न दिखाई देता है।
6. 'पराकाष्ठा' का अर्थ—चरम सीमा।

(3)

देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? क्यों अमरीका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।

प्रश्न 1. भारतीयों को अमेरिका में क्यों नहीं घुसने दिया जाता?
प्रश्न 2. विदेशों में रहने वाले भारतीय किस तरह का आचरण करते हैं?
प्रश्न 3. किस कारण से जापान को सभ्य मान लिया है?
प्रश्न 4. गम खाना का आशय स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 5. 'ईंट का जवाब पत्थर से देना' का मतलब क्या है?
प्रश्न 6. परतन्त्रता में भारतीयों को कहाँ घुसने नहीं दिया जाता था?
उत्तर–1. भारतीय सीधे-सादे, सहनशील, बचत करने के पक्षपाती होने के कारण।
2. विदेशों में भारतीय सदाचार का पालन करने हेतु अपना कार्य पूरी मेहनत के साथ करते हैं।
3. युद्ध में कुशलता दिखाकर विजय प्राप्त कर लेने के कारण जापान को सभ्य मान लिया गया।

4. गम खाना का आशय है—आयी हुई मुसीबत को चुपचाप सहन कर लेना।

5. कड़ा प्रतिरोध करना, मुँहतोड़ जवाब देना होता है।

6. परतन्त्रता में भारतीयों को अमेरिका में घुसने नहीं दिया जाता था।

(4)

लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधे का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवक़ूफ़ों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है और भी कई रीतियों से अपना असन्तोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

प्रश्न 1. बैल को गधे का छोटा भाई क्यों कहा गया है?

प्रश्न 2. 'बछिया का ताऊ' किसे कहा जाता है?

प्रश्न 3. 'कुछ लोग बैल को शायद बेवक़ूफ़ों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे।' इस संबंध में लेखक का विचार भिन्न क्यों है?

प्रश्न 4. अड़ियल का क्या अर्थ है?

प्रश्न 5. हम 'गधे' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में करते हैं?

प्रश्न 6. बैल का स्थान गधे से नीचा क्यों है?

उत्तर—1. बैल में भी गधे की तरह सरलता-सहनशीलता के गुण पाये जाते हैं।

2. 'बछिया का ताऊ' बैल को कहा जाता है।

3. बैल गधे के गुणों को त्यागकर कभी-कभी अड़ियल होकर अपने सींगों का प्रयोग मारने के लिए भी करता है।

4. अड़ियल का अर्थ हठी है।

5. हम 'गधे' शब्द का प्रयोग मूर्ख और बेवकूफ अर्थ में करते हैं।

6. बैल कभी-कभी मारकर और जिद्द करके अपना असन्तोष व्यक्त कर देता है, जबकि गधा अपना असन्तोष कभी भी व्यक्त नहीं करता है।

(5)

बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे—विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की रहती है, जिस पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 1. दोनों बैल आपस में किससे विचार-विनिमय करते थे?

प्रश्न 2. इस गद्यांश में किनकी चर्चा है?

प्रश्न 3. हीरा और मोती आत्मीयता किस तरह प्रकट करते थे?

प्रश्न 4. 'गुप्त-शक्ति' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 5. कौन एक-दूसरे के मन की बात समझ जाते थे?

प्रश्न 6. 'धौल-धप्पा होना' का आशय क्या है?

उत्तर—1. दोनों बैल आस-पास बैठे हुए मूक-भाषा में एक-दूसरे से विचार-विनिमय करते थे।

2. इस गद्यांश में हीरा-मोती नामक दो बैलों की चर्चा है।

3. एक-दूसरे को चाटकर, सूँघकर, विनोद भाव से सींग मिलाकर अपनी आत्मीयता प्रकट करते थे।

4. पशु परस्पर विचार-विनिमय मूक-भाषा में ही कर लेते हैं। अत: उनके पास कोई गुप्त-शक्ति है।

5. हीरा और मोती दोनों एक-दूसरे के मन की बात समझ जाते हैं।

6. हाथ के पंजे अथवा हथेली से किसी के सिर पर हल्का आघात करना।

(6)

अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता,

तो दोनों पीछे को जोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते–तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथ क्यों बेच दिया?

प्रश्न 1. गया कौन था? वह बैलों को क्यों नहीं सँभाल पा रहा था?

प्रश्न 2. दोनों बैल क्यों विरोध कर रहे थे?

प्रश्न 3. दोनों बैल झूरी से क्या पूछना चाहते थे?

प्रश्न 4. दोनों बैल गया को जालिम क्यों मान रहे थे?

प्रश्न 5. तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? यहाँ गरीब कौन है?

प्रश्न 6. 'दाँतों पसीना आना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

उत्तर–1. गया झूरी का साला था, क्योंकि हीरा-मोती झूरी के बैल थे।

2. दोनों बैलों को लगता था कि झूरी ने उन्हें बेच दिया, इस कारण विरोध कर रहे थे।

3. दोनों बैल झूरी से यह पूछना चाहते थे कि हमें घर से क्यों निकाल रहे हो?

4. गया द्वारा दोनों बैलों को खाने के लिए सूखा भूसा देने और उनके प्रति कठोरता का व्यवहार करने के कारण।

5. यहाँ पर गरीब हीरा और मोती इन दोनों बैलों को कहा है जो झूरी के यहाँ काम करते थे।

6. 'दाँतों पसीना आना' मुहावरे का अर्थ है—कठिन परिश्रम करना।

(7)

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्त्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

प्रश्न 1. झूरी ने प्रातः काल उठते ही क्या देखा?

प्रश्न 2. झूरी किसे देखकर गद्‌गद् हो गया?

प्रश्न 3. गाँव के इतिहास में कौनसी घटना अभूतपूर्व न होते हुए भी महत्त्वपूर्ण थी?

प्रश्न 4. 'दोनों पशु-वीरों को अभिनन्दन पत्र देना चाहिए' से क्या आशय है?

प्रश्न 5. कौनसा दृश्य बड़ा ही मनोहर था?

प्रश्न 6. गाँव के बच्चे बैलों के लिए क्या-क्या लाए थे?

उत्तर–1. झूरी ने प्रातः काल सोकर उठते ही देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं।

2. झूरी बैलों को देखकर गद्‌गद् हो गया।

3. गया के घर से हीरा और मोती का भाग कर झूरी के घर पुनः आने की घटना।

4. दोनों पशु गया के घर से पगहे तोड़कर भाग आये थे, उनकी इस शूरवीरता के कारण अभिनन्दन पत्र देना चाहिए।

5. झूरी और उसके दोनों बैलों का परस्पर प्रेमालिंगन और चुम्बन का दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

6. गाँव के बच्चे बैलों के लिए रोटियाँ, गुड़, चौकर और भूसी लेकर आए।

(8)

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे; पर किसी के सामने चारा न था, सब जमीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमजोर हो गए थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाए ताकते रहे; पर कोई चारा लेकर आता न दिखाई दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती?

प्रश्न 1. दोनों मित्रों से क्या अभिप्राय है?
प्रश्न 2. दोनों मित्रों को काँजीहौस के मालिक से 'गया' अच्छा क्यों लगा?
प्रश्न 3. काँजीहौस में पशु जमीन पर मुरदों की तरह क्यों पड़े हुए थे?
प्रश्न 4. दोनों मित्रों ने दीवार की नमकीन मिट्‌टी चाटनी क्यों शुरू की?
प्रश्न 5. दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाए क्यों ताक रहे थे?
प्रश्न 6. काँजीहौस में उन दोनों बैलों के अलावा और कौन-कौनसे जानवर थे?

उत्तर–1. दोनों मित्रों से अभिप्राय हीरा और मोती से है।

2. गया उन्हें मार-पीटकर भी खाने के लिए कुछ देता था, लेकिन काँजीहौस का मालिक खाने के लिए कुछ नहीं देता था।

3. काँजीहौस में पशु भूख-प्यास के कारण मुर्दों की तरह पड़े थे।

4. मिट्टी चाट कर अपनी भूख मिटाना चाहते थे।

5. दोनों मित्र इसलिए ताक रहे थे कि कोई उनके लिए चारा-पानी लेकर आएगा जिससे वो अपनी भूख शान्त कर पाते।

6. काँजीहौस में उन दोनों बैलों के अलावा कई भैंसें, बकरियाँ, घोड़े और गधे आदि जानवर थे।

(9)

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी-बोटी काँप रही थी। बेचारे पाँव तक न उठा सकते थे। पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे; क्योंकि वह जरा भी चाल धीमी हो जाने पर जोर से डंडा जमा देता था।

राह में गाय-बैलों का एक रेवड़ हरे-हरे हार में चरता नजर आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल। कोई उछलता था, कोई आनंद से बैठा पांगुर करता था। कितना सुखी जीवन था इनका; पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिंता नहीं कि उनके दो भाई बधिक के हाथ पड़े कैसे दुःखी हैं।

प्रश्न 1. दढ़ियल कौन था? उन दोनों की बोटी-बोटी क्यों काँप रही थी?
प्रश्न 2. हीरा-मोती में चलने की सामर्थ्य न होने पर भी भागे क्यों जा रहे थे?
प्रश्न 3. हीरा-मोती और रेवड़ में चरने वाले गाय-बैलों की स्थिति में क्या अन्तर था?
प्रश्न 4. हीरा-मोती को हार में चरने वाला रेवड़ स्वार्थी क्यों प्रतीत हो रहा था?
प्रश्न 5. दोनों मित्र दुःखी क्यों थे?
प्रश्न 6. 'पांगुर करना' का आशय बताइए।

उत्तर–1. दढ़ियल कसाई था, वे उससे भयभीत थे इसलिए उनकी बोटी-बोटी काँप रही थी।

2. हीरा-मोती कसाई से भयभीत थे इसलिए चलने की सामर्थ्य न होने पर भी भागे जा रहे थे।

3. हीरा-मोती भूखे-प्यासे थे और दासता से पूरित थे जबकि रेवड़ में चरने वाले गाय-बैल स्वतंत्रता के प्रतीक थे।

4. हीरा-मोती को हार में चरने वाले पशु उनकी सहायता नहीं करने के कारण स्वार्थी प्रतीत हो रहे थे।

5. दोनों मित्र दढ़ियल नामक कसाई द्वारा खरीद लिए जाने से दुःखी थे क्योंकि वह उन्हें काटने के लिए ले जा रहा था।

6. पांगुर जानवरों के द्वारा की जाने वाली एक क्रिया है जो उनके भोजन के पाचन की प्रक्रिया का एक भाग है।

(10)

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आये और खड़े हो गए। दढ़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने आकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं। झूरी ने कहा–मेरे बैल हैं।

प्रश्न 1. यह गद्यांश कहाँ से उद्धृत एवं किसके द्वारा लिखित है?
प्रश्न 2. दोनों बैल दौड़कर कहाँ आकर खड़े हो गए थे?
प्रश्न 3. झूरी कौन था? वह बैलों के गले क्यों लगा?
प्रश्न 4. दढ़ियल कौन था? उसने बैलों की रस्सियाँ क्यों पकड़ लीं?
प्रश्न 5. दोनों बैल उन्मुक्त होकर किसकी भाँति कुलेलें कर रहे थे?

प्रश्न 6. झूरी द्वार पर बैठा क्या कर रहा था?

उत्तर–1. यह गद्यांश 'दो बैलों की कथा' कहानी से उद्धृत है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं।

2. दोनों बैल दौड़कर (झूरी के घर पर) अपने थान पर आकर खड़े हो गए थे।

3. झूरी हीरा-मोती बैलों का असली मालिक था। अचानक अपने बैलों को पाकर वह प्रसन्नता से उनके गले लगा।

4. दढ़ियल एक कसाई था। वह उनका मालिक बन गया था इस कारण उसने बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

5. दोनों बैल उन्मुक्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें कर रहे थे।

6. झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था।

2. ल्हासा की ओर

(राहुल सांकृत्यायन)

लेखक-परिचय–राहुल सांकृत्यायन का जन्म सन् 1893 में आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इनका मूल नाम केदार पाण्डेय था। शिक्षा प्राप्त कर सन् 1930 में श्रीलंका जाकर इन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया। तब से इनका नाम राहुल सांकृत्यायन हो गया। ये पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, चीनी, तिब्बती आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। इन्होंने पर्याप्त मात्रा में साहित्य रचना की। यात्रावृत्त, जीवनी, आत्मकथा, शोध आदि अनेक विधाओं पर इन्होंने लिखा। सन् 1963 में इनका देहान्त हो गया।

पाठ-सार–'ल्हासा की ओर' राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत है। इसमें उन्होंने सन् 1929-30 में अपनी तिब्बत यात्रा का वर्णन किया है। वे नेपाल के प्राचीन मार्ग से ल्हासा गये। उस यात्रा में उन्हें अनेक पुराने अवशेष मिले। तिब्बत में यात्रियों को बहुत कष्टों का सामना करना पड़ता था। वहाँ पर जाति-पाँति, छुआछूत की परम्परा नहीं थी। तिब्बत में डांडे काफी खतरनाक होते हैं। वहाँ सुनसान स्थानों पर डाकू खून तक कर देते हैं। लेखक और उसका साथी वहाँ भिखमंगों के वेश में थे। वहाँ पर एक ओर सफेद बर्फीले पहाड़ हैं तो दूसरी तरफ वनस्पतियों का अभाव है। लेखक का साथी सुमति (लोबजंग) तिब्बती लामा था। रास्ते में उसके अनेक यजमानों के गाँव थे। वह उन्हें गण्डे देता था। वे दो दिन यात्रा कर जिस बौद्ध विहार में रुके, वहाँ पर एक मन्दिर में बुद्धवचन-अनुवाद (कन्जुर) की एक सौ तीन हस्तलिखित भारी पुस्तकें थीं। लेखक उन्हीं की तलाश में गया था। इसलिए वह वहीं पर आसन लगाकर बैठ गया तथा उनका अवलोकन करने लगा। लेखक ने सुमति को अपने यजमानों के पास भेज दिया और साथियों सहित तिङ्री गाँव की ओर प्रस्थान किया।

कठिन-शब्दार्थ–पलटन = सेना। परित्यक्त = छोड़ा हुआ। छङ् = मदिरा जैसा एक पेय पदार्थ। थुम्पा = एक खाद्य पदार्थ। चिरी = चीर कर बनाई हुई। गंडा = मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा। निर्जन = एकान्त। हस्तलिखित = हाथ से लिखी हुई। पोथियाँ = पुस्तकें।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला, जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?

उत्तर–गाँव में ठहरने का उचित स्थान मिलने या न मिलने का कारण यह था कि—

(i) भिखमंगे के वेश में यात्रा करते समय लेखक के साथ सुमति था। वहाँ गाँव में सुमति के जान-पहचान के लोग थे। इस कारण उन्हें ठहरने के लिए अच्छी जगह मिल गयी।

(ii) दूसरी बार भद्र वेश में घोड़े पर सवार होकर आये थे। वहाँ पर शाम के समय लोग छङ् पीकर नशे में अपना होश-हवास खो देते हैं। इस तरह की मनोवृत्ति के कारण लेखक को रहने का उचित स्थान नहीं मिला और उन्हें सबसे गरीब के झोंपड़े में ठहरना पड़ा।

प्रश्न 2. उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर–लेखक की यात्रा के समय तिब्बत में हथियार का कानून नहीं था, वहाँ के लोग बन्दूक, पिस्तौल को लाठी की तरह लिये फिरते थे। वहाँ पर अनेक निर्जन स्थान थे, जहाँ न पुलिस का और न खुफिया विभाग का प्रबन्ध था। यहाँ डाकू किसी को भी आसानी से मार सकते थे। इसलिए यात्रियों को हत्या और लूटमार का भय था।

प्रश्न 3. लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया?

उत्तर–लङ्कोर के मार्ग में लेखक अपने साथियों से इस कारण पिछड़ गया था कि—

(i) उसका घोड़ा मन्द गति से चल रहा था। जब लेखक उस पर जोर देता तो वह और सुस्त पड़ जाता था।

(ii) एक जगह दो रास्ते फूट रहे थे, लेखक गलत रास्ते पर डेढ़-दो मील चला गया और फिर लौटकर सही रास्ते पर चला, जिससे वह पिछड़ गया था।

प्रश्न 4. लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परन्तु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर–सुमति आसपास के गाँवों में गण्डे-ताबीज बाँटने जाते, तो जल्दी वापस नहीं आते थे। इसलिए लेखक ने उन्हें यजमानों के पास जाने से रोका। परन्तु दूसरी बार लेखक को शेकर विहार के एक मंदिर में बुद्धवचन-अनुवाद की एक सौ तीन पोथियाँ मिल गई थीं। लेखक को उनका अवलोकन एवं अध्ययन करने के लिए समय की जरूरत थी। इसलिए एकान्त ज्ञानार्जन की दृष्टि से लेखक ने सुमति को रोकने का प्रयास नहीं किया।

प्रश्न 5. अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

उत्तर–अपनी यात्रा के दौरान लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा—

(i) बीहड़ एवं ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर उसे तेज धूप में यात्रा करनी पड़ी।

(ii) ऐसे निर्जन स्थानों से गुजरना पड़ा, जहाँ डाकू बिना बात पर खून कर देते थे। हथियारों का कानून न होने से डाकुओं का भय रहता था।

(iii) उसका घोड़ा मन्द गति से चल रहा था, इसलिए वह साथियों से बिछड़ गया।

(iv) वापस आते समय अपना सामान स्वयं पीठ पर लादकर पैदल यात्रा करनी पड़ी।

(v) उस समय भारतीयों को तिब्बत यात्रा की अनुमति नहीं थी। इसलिए उन्हें भिखमंगे के रूप में यात्रा करनी पड़ी।

प्रश्न 6. प्रस्तुत यात्रा-वृत्तान्त के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर–लेखक ने सन् 1929-30 में तिब्बत की यात्रा की थी। उस समय वहाँ स्त्रियों में परदा-प्रथा नहीं थी। वहाँ की स्त्रियाँ अपरिचित यात्रियों की सेवा-सहायता कर दिया करती थी। वहाँ के लोग शाम को छङ् पीकर नशे में मस्त रहते थे। धार्मिक प्रवृत्ति के कारण वहाँ के लोग बोधगया के कपड़े से बने गण्डे धारण करते थे। समाज में छुआछूत, जाति-पाँति आदि कुप्रथाएँ नहीं थीं। खुफिया विभाग या पुलिस का पूरा इन्तजाम नहीं था, इस कारण अपराध-वृत्ति भी प्रचलित थी। लोग लाठी की भाँति बन्दूक रखते थे। अधिकांश मठों का जमीन आदि पर कब्जा था। भिक्षु जागीर के लोगों में राजा के समान सम्मान पाता था। जागीरदारों को मजदूर बेगार में मिल जाते थे। बुद्ध और उनके वचनों के संग्रह को महत्त्व दिया जाता था।

प्रश्न 7. "मैं अब पुस्तकों के भीतर था।" नीचे दिये गये विकल्पों में से कौन-सा इस वाक्य का अर्थ बतलाता है–

(क) लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

(ख) लेखक पुस्तकों की शैल्फ के भीतर चला गया।

(ग) लेखक के चारों ओर पुस्तकें ही थीं।

(घ) पुस्तक में लेखक का परिचय और चित्र छपा था।

उत्तर-(क) लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 8. सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले। इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?

उत्तर–हर गाँव में सुमति के यजमान और परिचित लोगों के मिलने से उसके चरित्र की निम्न विशेषताएँ प्रकट होती हैं—

(1) मिलनसार स्वभाव और हंसमुख व्यक्ति–सुमति मिलनसार स्वभाव और हंसमुख स्वभाव का था और हर किसी का ध्यान रखकर उससे अपनत्व रखता था।

(2) धार्मिक विचारक–सुमति बौद्ध धर्म में आस्था रखने वाला था। उसके यजमान दूर-दूर तक अनेक गाँवों में फैले हुए थे। वह उन्हें बोधगया से लाये गये गण्डे देता था। यजमान उसका धर्मगुरु की तरह सम्मान करते थे।

(3) लालची—वह तीर्थयात्रा का प्रसाद बाँटने के बहाने नकली गण्डों को भी बोधगया के कपड़ों से बना बताकर यजमानों को बाँटता था और उनसे दक्षिणा पाता था। यह सब दक्षिणा के लालच से करता था।

(4) समय का पाबन्द—वह लेखक के समय पर न पहुँचने पर नाराज हो जाता है।

(5) आतिथ्य सत्कार में कुशल था।

प्रश्न 9. ''हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था।''—उक्त कथन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। आपकी समझ में यह उचित है अथवा अनुचित, विचार व्यक्त करें।

उत्तर—यह पूर्ण रूप से सत्य है कि हम किसी के अच्छे पहनावे को देखकर उसका मान-सम्मान करते हैं, परन्तु फटे-पुराने कपड़ों में देखकर उसका जरा भी सम्मान नहीं करते हैं क्योंकि बहुत हद तक वेश-भूषा हमारे आचार-व्यवहार से सम्बन्धित होती है। वेशभूषा मनुष्य के व्यक्तित्व को दर्शाती है। लेखक भिखमंगों के वेश में यात्रा कर रहा था। इसलिए उसे यह अपेक्षा नहीं थी कि शेकर विहार का भिक्षु उसे सम्मानपूर्वक देखेगा। लेकिन व्यवहार और वेशभूषा के आधार पर किसी का सम्मान या अपमान करना सर्वथा अनुचित है। उचित तो वेशभूषा की अपेक्षा 'सादा जीवन उच्च विचार' को महत्त्व देना है। महात्मा गाँधी, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, प्रेमचन्द आदि साधारण वेशभूषा पहनने वाले थे, परन्तु उनका व्यक्तित्व महान् था तथा सब उनका सम्मान करते थे।

प्रश्न 10. यात्रा-वृत्तान्त के आधार पर तिब्बत की भौगोलिक स्थिति का शब्द-चित्र प्रस्तुत करें। वहाँ की स्थिति आपके राज्य/शहर से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर—हिमालय पर्वत-शिखरों से घिरा तिब्बत ऊँचा पठारी भू-भाग है। यहाँ पर बर्फीले श्वेत शिखर तथा वनस्पतियों से रहित घाटियाँ, डाँडे एवं निर्जन क्षेत्र हैं। उत्तर की तरफ पत्थरों का ढेर था। यहाँ पर आवागमन के गिने-चुने मार्ग और साधन हैं। तिब्बत की जलवायु विचित्र है, सर्दी का प्रकोप रहता है, परन्तु धूप इतनी तेज पड़ती है कि उसे सहा नहीं जाता। वहाँ रास्ते चढ़ाई और उतराई के हैं जो ऊबड़-खाबड़ हैं। कुछ भागों में खेती होती है, सारी भूमि जमींदारों में बँटी है, जमीन पर मठों का अधिकार है; जमीदारों को बेगार के मजदूर मिल जाते हैं।

हमारा राज्य राजस्थान उष्ण जलवायु का है। इसके पश्चिमी भाग में विशाल मरुस्थल है। पूर्वी एवं दक्षिणी भाग में खेती होती है। राजस्थान का भू-भाग तिब्बत की भौगोलिक स्थिति से सर्वथा भिन्न है।

प्रश्न 11. आपने भी किसी स्थान की यात्रा अवश्य की होगी? यात्रा के दौरान हुए अनुभवों को लिखकर प्रस्तुत करें।

उत्तर—निबन्ध भाग में 'किसी रोचक यात्रा का वर्णन' शीर्षक देखकर लिखें।

प्रश्न 12. यात्रा-वृत्तान्त गद्य-साहित्य की एक विधा है। आपकी इस पाठ्य-पुस्तक में कौन-कौन सी विधाएँ हैं? प्रस्तुत विधा उनसे किन मायनों में अलग है?

उत्तर—

पाठ	**विधा**
दो बैलों की कथा	कहानी
ल्हासा की ओर	यात्रा-वृत्तान्त
उपभोक्तावाद की संस्कृति	लेख/निबन्ध
साँवले सपनों की याद	संस्मरण
प्रेमचन्द के फटे जूते	व्यंग्य
मेरे बचपन के दिन	संस्मरण

प्रस्तुत यात्रा-वृत्तान्त अन्य विधाओं से निम्नलिखित मायनों में भिन्न है—

(1) यात्रा-वृत्तान्त कहानी आदि की तरह कल्पित नहीं है।

(2) यात्रावृत्त होने से इसमें बीते रोचक प्रसंगों का चित्रण हुआ है।

(3) इसमें निबन्ध की भाँति गम्भीरता नहीं है।

(4) इसमें रिपोर्ताज की भाँति कलात्मकता तथा व्यंग्य-रचना की तरह पैनापन नहीं है।

(5) प्रत्यक्ष अनुभवों का वर्णन होने पर भी यह संस्मरण एवं आत्मकथा से भिन्न है।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 13. किसी भी बात को अनेक प्रकार से कहा जा सकता है, जैसे—
सुबह होने से पहले हम गाँव में थे।
पौ फटने वाली थी कि हम गाँव में थे।
तारों की छाँव रहते-रहते हम गाँव पहुँच गए।
नीचे दिये गये वाक्य को अलग-अलग तरीके से लिखिए–
जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे।

उत्तर–घोड़ा बहुत ही धीरे-धीरे चल रहा था। यह कहना कठिन था कि घोड़ा किधर जा रहा है—आगे या पीछे। घोड़े की गति की दिशा मालूम नहीं पड़ रही थी। घोड़ा इतनी मन्द गति से चल रहा था कि लगता ही नहीं था कि वह चल रहा है।

प्रश्न 14. ऐसे शब्द जो किसी 'अंचल' यानी क्षेत्र-विशेष में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें आंचलिक शब्द कहा जाता है। प्रस्तुत पाठ में से आंचलिक शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर–प्रस्तुत पाठ में प्रयुक्त कुछ आंचलिक शब्द—

चोङी	भीटा	डाँडा
थुम्पा	छङ्	भरिया
कुची-कुची	कंडे	कन्जुर
गाँव-गिराँव	राहदारी	पलटन

प्रश्न 15. पाठ में कागज, अक्षर, मैदान के आगे क्रमशः मोटे अच्छे और विशाल शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों से उनकी विशेषता उभर कर आती है। पाठ में से कुछ ऐसे ही और शब्द छाँटिए जो किसी की विशेषता बता रहे हों।

उत्तर–

–**मुख्य** रास्ता	–**विकट** डाँडा	– **बरफ** की सफेदी
–**परित्यक्त** किला	–**निर्जन** स्थान	– **श्वेत** शिखर
–**दूधवाली** चाय	–**ऊँची** चढ़ाई	– **खुफिया** विभाग
–**सारा** मक्खन	–**विशाल** मैदान	
–**भद्र** यात्री	–**हस्तलिखित** पोथियाँ	

पाठेतर सक्रियता–

• यह यात्रा राहुलजी ने 1930 में की थी। आज के समय यदि तिब्बत की यात्रा की जाए तो राहुलजी की यात्रा से कैसे भिन्न होगी?

उत्तर–आज तिब्बत स्वतंत्र राष्ट्र न होकर चीनी गणतंत्र का एक प्रान्त है। वहाँ जाने के लिए अब सर्वप्रथम पासपोर्ट और वीजा की जरूरत होती है। राहुलजी को पैदल यात्रा करनी पड़ी थी, अब पैदल मार्ग बहुत कम है। अब तीन दर्रों से तिब्बत की यात्रा की जा सकती है—लेह दर्रे से, लिपु दर्रे से तथा नीति पास से। राहुलजी को गाँवों में आश्रय माँगना पड़ा था, जबकि अब वहाँ पर विश्राम-गृह एवं होटल उपलब्ध हैं। आवागमन के मोटर-कार आदि साधन सुलभ हैं। पहले कच्चा रास्ता जंगलों से था, अब अच्छी सड़कें बनी हुई हैं।

• क्या आपके किसी परिचित को घुमक्कड़ी/यायावरी का शौक है? उसके इस शौक का उसकी पढ़ाई/काम आदि पर क्या प्रभाव पड़ता होगा, लिखें।

उत्तर–घुमक्कड़ी करने वाले को प्रायः घर से बाहर और अव्यवस्थित रहना पड़ता है। अतएव इस तरह के शौक से उसकी पढ़ाई या काम पर काफी प्रभाव पड़ता होगा। शेष छात्र स्वयं लिखें।

अपठित गद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

आम दिनों में समुद्र किनारे के इलाके बेहद खूबसूरत लगते हैं। समुद्र लाखों लोगों को भोजन देता है और लाखों उससे जुड़े दूसरे कारोबारों में लगे हैं। दिसम्बर 2004 में सुनामी या समुद्री भूकम्प से उठने वाली तूफानी लहरों के प्रकोप ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि कुदरत की यह देन सबसे बड़े विनाश का कारण भी बन सकती है।

प्रकृति कब अपने ही ताने-बाने को उलट कर रख देगी, कहना मुश्किल है। हम उसके बदलते मिज़ाज को उसका कोप कह लें या कुछ और, मगर यह अबूझ पहेली अक्सर हमारे विश्वास के चीथड़े कर देती है और हमें यह एहसास करा जाती है कि हम एक कदम आगे नहीं, चार कदम पीछे हैं। एशिया के एक बड़े हिस्से में आने वाले उस भूकंप ने

कई द्वीपों को इधर-उधर खिसकाकर एशिया का नक्शा ही बदल डाला। प्रकृति ने पहले भी अपनी ही दी हुई कई अद्‌भुत चीज़ें इंसान से वापस ले ली हैं जिसकी कसक अभी तक है।

दु:ख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है। वह हमारे जीवन में ग्रहण लाता है ताकि हम पूरे प्रकाश की अहमियत जान सकें और रोशनी को बचाए रखने के लिए जतन करें। इस जतन से सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है। सुनामी के कारण दक्षिण भारत और विश्व के अन्य देशों में जो पीड़ा हम देख रहे हैं, उसे निराशा के चश्मे से न देखें। ऐसे समय में भी मेघना, अरुण और मैगी जैसे बच्चे हमारे जीवन में जोश, उत्साह और शक्ति भर देते हैं। 13 वर्षीय मेघना और अरुण दो दिन अकेले खारे समुद्र में तैरते हुए जीव-जन्तुओं से मुकाबला करते हुए किनारे आ लगे। इंडोनेशिया की रिजा पड़ोसी के दो बच्चों को पीठ पर लादकर पानी के बीच तैर रही थी कि एक विशालकाय साँप ने उसे किनारे का रास्ता दिखाया। मछुआरे की बेटी मैगी ने रविवार को समुद्र का भयंकर शोर सुना, उसकी शरारत को समझा, तुरन्त अपना बेड़ा उठाया और अपने परिजनों को उस पर बिठा उतर आई समुद्र में, 41 लोगों को लेकर। महज 18 साल की यह जलपरी चल पड़ी पगलाए सागर से दो-दो हाथ करने। दस मीटर से ज्यादा ऊँची सुनामी लहरें जो कोई बाधा, रुकावट मानने को तैयार नहीं थीं, इस लड़की के बुलंद इरादों के सामने बौनी ही साबित हुईं।

जिस प्रकृति ने हमारे सामने भारी तबाही मचाई है, उसी ने हमें ऐसी ताकत और सूझ दे रखी है कि हम फिर से खड़े होते हैं और चुनौतियों से लड़ने का एक रास्ता ढूँढ़ निकालते हैं। इस त्रासदी से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए जिस तरह पूरी दुनिया एकजुट हुई है, वह इस बात का सबूत है कि मानवता हार नहीं मानती।

प्रश्न 1. कौन-सी आपदा को सुनामी कहा जाता है?

2. 'दु:ख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है'—आशय स्पष्ट कीजिए।

3. मैगी, मेघना और अरुण ने सुनामी जैसी आपदा का सामना किस प्रकार किया?

4. प्रस्तुत गद्यांश में 'दृढ़ निश्चय' और 'महत्त्व' के लिए किन शब्दों का प्रयोग हुआ है?

5. इस गद्यांश के लिए एक शीर्षक 'नाराज समुद्र' हो सकता है। आप कोई अन्य शीर्षक दीजिए।

उत्तर—(1) समुद्र में आये भयंकर भूकम्प के कारण उठने वाली विनाशकारी तूफानी लहरों को सुनामी आपदा कहा जाता है।

(2) दु:ख और कष्टों का सामना करने से जीवन में विपत्तियों से जूझने की हिम्मत प्राप्त होती है। कठिनाइयों का सामना करते रहने से जीवन में आगे बढ़ने का साहस बढ़ता है, अच्छी प्रेरणा मिलती है और जीवन सुन्दर प्रतीत होता है।

(3) मैगी ने दस मीटर ऊँची लहरों की परवाह न करके अपना बेड़ा उतार दिया और अपने साहस से संघर्ष करते हुए अपने परिजनों और इकतालीस लोगों को बचा लिया।

मेघना और अरुण भी दो दिन तक खारे पानी में तैरते हुए, समुद्री जीव-जन्तुओं से मुकाबला करते हुए किनारे आ गए थे।

(4) 'दृढ़ निश्चय' के लिए 'बुलन्द इरादे' तथा 'महत्त्व' के लिए 'अहमियत' शब्द का प्रयोग हुआ है।

(5) 'पगलाए समुद्र से दो-दो हाथ' या 'सुनामी का सामना'।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न—

1. नेपाल-तिब्बत मार्ग व्यापारिक होने के साथ-साथ कौनसा मार्ग था?
   (क) पर्यटन मार्ग (ख) आम आवागमन मार्ग (ग) सैनिक मार्ग (घ) इनमें से कोई नहीं
2. 'भरिया' किसे कहते हैं?
   (क) पानी भरने वाले कहार को (ख) भारवाहक (कुली) को
   (ग) मजदूरी करने वाले को (घ) पुरोहित को
3. 'ल्हासा की ओर' पाठ हिन्दी गद्य की कौनसी विधा है?
   (क) संस्मरण (ख) नाटक (ग) रिपोर्ताज (घ) यात्रा वृत्तान्त
4. लेखक समुद्रतल से कितने फीट ऊँचे खड़े थे?
   (क) 15-16 हजार फीट (ख) 17-18 हजार फीट
   (ग) 16-17 हजार फीट (घ) 10-12 हजार फीट
5. 'कुची-कुची' का क्या अर्थ है?

(क) डाकू-डाकू (ख) भागो-भागो (ग) दया-दया (घ) बचाओ-बचाओ

6. लेखक ने अपनी पहली तिब्बत यात्रा की थी——" "
(क) सादगी भरे वेश में (ख) भिखमंगे के छद्‌म वेश में
(ग) बौद्ध भिक्षु के वेश में (घ) राजसी वेश में

7. तिब्बत में जगह-जगह बनी फौजी चौकियों और किले में रहा करती थी—
(क) भारतीय पलटन (ख) तिब्बती पलटन
(ग) चीनी पलटन (घ) नेपाली पलटन

8. तिब्बत में लोग लाठी की तरह पिस्तौल और बन्दूक लिए फिरते हैं, क्योंकि—
(क) जान का खतरा रहने के कारण (ख) लुटेरों का आधिक्य होने के कारण
(ग) हिंसक जानवरों के कारण (घ) हथियार का कानून न होने के कारण

9. आदमी से मिलने का बहाना कर सुमति ने लेखक से चलने को कहा था—
(क) लङ्कोर की ओर (ख) तिडरी की ओर
(ग) शेकर विहार की ओर (घ) बोध गया की ओर

10. शेकर की खेती के मुखिया थे—
(क) जागीरदार (ख) नम्से (ग) सुमति (घ) जमीदार

उत्तर-माला—1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग) 6. (ख) 7. (ग) 8. (घ) 9. (ग) 10. (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. तिब्बत में .... कानून नहीं था। (हथियार/न्याय)
2. तिब्बत में जागीरों का अधिकार .... के पास था। (मठों/भिक्षुकों)
3. तिब्बत में खेती की व्यवस्था .... देखते हैं। (मठ का भिक्षुक/सरपंच)
4. डाँडा थोङ्‌ला .... के लिए उपयुक्त है। (व्यापारियों/डाकुओं)
5. कंजुर खजूर का .... रूप है। (विकसित/संकुचित)
6. राहुलजी के द्वारा रचित पुस्तकों की संख्या लगभग .... है। (140/150)

उत्तर—1. हथियार 2. मठों 3. मठ का भिक्षुक 4. डाकुओं 5. विकसित 6. 150

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. तिब्बत का हर जागीरदार किनसे खेती कराता है?
उत्तर—तिब्बत का हर जागीरदार बेगार मजदूरों से खेती कराता है।

प्रश्न 2. तिब्बत में बनने वाली चाय की विशेषता क्या है?
उत्तर—तिब्बत में चाय मक्खन और दूध से बनाई जाती है।

प्रश्न 3. दुर्ग के एक भाग में किसने अपना बसेरा बना लिया है?
उत्तर—दुर्ग के एक भाग में किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है।

प्रश्न 4. लेखक ने सुमति को किस जाति से सम्बन्धित बताया है?
उत्तर—लेखक ने सुमति को मंगोल जाति से सम्बन्धित बताया है।

प्रश्न 5. तिब्बत में भिक्षु को क्या कहते हैं?
उत्तर—तिब्बत में भिक्षु को नम्से कहते हैं।

प्रश्न 6. 'थुक्का' क्या होता है?
उत्तर—'थुक्का' एक तरह का खाद्य पदार्थ है।

प्रश्न 7. उस समय तिब्बत के समाज में क्या नहीं था?
उत्तर—उस समय तिब्बत के समाज में जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत का भेदभाव नहीं था।

प्रश्न 8. तिब्बत यात्रा के दौरान सुमति का साथ लेखक के लिए क्यों फायदेमंद रहा?
उत्तर—सुमति उस इलाके के लोगों और भौगोलिक स्थिति से अच्छी तरह से परिचित थे।

प्रश्न 9. लेखक ने तिब्बत की यात्रा नेपाल के रास्ते से क्यों की?
उत्तर—क्योंकि उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था और भारतीयों को तिब्बत यात्रा में जाने की अनुमति नहीं थी।

प्रश्न 10. लेखक के अनुसार रास्ते में जगह-जगह पर क्या बने हुए थे?

उत्तर—लेखक के अनुसार रास्ते में जगह-जगह चीनी फौजियों की चौकियाँ व किले बने हुए थे।

प्रश्न 11. सुमति कौन था?

उत्तर—सुमति लेखक का सहयात्री तथा एक बौद्ध भिक्षुक था।

प्रश्न 12. अपनी यात्रा के दौरान लेखक चाय पीने के लिए कहाँ ठहरा था?

उत्तर—अपनी यात्रा के दौरान लेखक चाय पीने के लिए परित्यक्त किले में ठहरा था।

प्रश्न 13. तिब्बतियों का देवता स्थल कहाँ था?

उत्तर—तिब्बतियों का देवता स्थल डाँडे के सर्वोच्च शिखर पर था।

प्रश्न 14. डाँडे की ऊँचाई कितनी थी?

उत्तर—तिब्बत के डाँडे की ऊँचाई सोलह हजार फीट से अधिक थी।

प्रश्न 15. परित्यक्त चीनी किलों की क्या विशेषता थी?

उत्तर—परित्यक्त चीनी किले भव्य तथा विशाल थे परन्तु लेखक ने उन्हें जीर्ण-शीर्ण स्थिति में देखा था, जिन पर किसानों ने अपने डेरे डाल रखे थे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. तिब्बत में यात्रियों के लिए आराम की बातें क्या हैं?

उत्तर—तिब्बत में छुआछूत का भाव नहीं है। भिखमंगों को छोड़कर सामान्य अपरिचित जन को भी घर में प्रवेश दिया जाता है। यात्री घर की स्त्री की झोली में चाय देते हैं तो वे बनाकर दे देती हैं। यह वहाँ यात्रियों के लिए आराम की बात है।

प्रश्न 2. "शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते।" लेखक के इस कथन का आशय बताइये।

उत्तर—तिब्बत में निर्जन स्थानों पर डाकुओं का आतंक रहता है। वे यात्रियों को मार देते हैं। जो यात्री साधारण भिखमंगों के वेश में जाते हैं, वे उनसे कुछ भी धन न मिलने की बात समझकर नहीं मारते हैं। लेखक और उनका साथी भी भिखमंगों के वेश में थे। इसी कारण लेखक ने कहा कि खून की हमें उतनी परवाह नहीं थी।

प्रश्न 3. 'नम्से' कौन था? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—'नम्से' शेकर विहार नामक जागीर का प्रमुख बौद्ध भिक्षु था। वह भद्र पुरुष था। उसका जागीर में बहुत सम्मान था। उसमें किसी भी प्रकार से अभिमान नहीं था इसीलिये भिखमंगे के वेष में लेखक के होने पर भी वह उससे बड़े प्रेम से मिला था और लेखक के साथ प्रेमपूर्वक बातें की थीं।

प्रश्न 4. लेखक अपने मित्र सुमति के पास विलम्ब से क्यों पहुँचा?

उत्तर—लेखक का घोड़ा धीमे चलने के कारण वह अपने साथियों से पिछड़ गया था साथ ही आगे चलने पर रास्ता दो जगहों के लिए फूट रहा था। इस कारण लेखक गलत रास्ते पर डेढ़ किलोमीटर तक चला गया था। पूछने पर वापस आया था इसलिए सुमति के पास देर से पहुँचा था।

प्रश्न 5. "मैं अब पुस्तकों के भीतर था।" लेखक के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लेखक हस्तलिखित पोथियों की खोज में, बौद्ध धर्म का अध्ययन करने के लिए तिब्बत गया था। वहाँ पर लेखक को पोथियों का संग्रह मिल गया था, उसका मन एकाग्र होकर पोथियों को पढ़ने में लीन हो गया था। इसी कारण उसने कहा कि अब वह पुस्तकों के भीतर था।

प्रश्न 6. लेखक को भिखमंगे का वेश बनाकर यात्रा क्यों करनी पड़ी थी?

उत्तर—लेखक को भिखमंगे का वेश बनाकर यात्रा इसलिए करनी पड़ी थी, क्योंकि तिब्बत के पहाड़ों पर लूटपाट और हत्या का भय बना रहता था। वहाँ लूटपाट के इरादे से ही हत्याएँ की जाती थीं इसलिए लेखक ने अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए भिखमंगे का वेश धारण किया।

प्रश्न 7. तिङ्री समाधि गिरि कहाँ स्थित है?

उत्तर—तिङ्री में एक विशाल मैदान है। उसके चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ है। उसके बीचोंबीच एक पहाड़ी स्थित है जो टापू जैसी प्रतीत होती है। उसी का नाम तिङ्री समाधि गिरि है।

प्रश्न 8. शेकर बिहार के मन्दिर में रखी पोथियों का परिचय दीजिए।

उत्तर—शेकर विहार में एक सौ तीन पोथियाँ बड़े मोटे कागज पर अच्छे अक्षरों में लिखी हुई थीं, एक-एक पोथी 15-15 सेर से कम वजन की नहीं थी। वहाँ पर रखी गई पोथियाँ अच्छी दशा में तथा पूरी तरह सुरक्षित थीं। लेखक उन पोथियों के अध्ययन में रम गया था।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'ल्हासा की ओर' यात्रा-वृत्त के आधार पर सुमति की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–सुमति लेखक का मित्र तथा तिब्बत से परिचित सहयोगी यात्री था। वह मिलनसार एवं स्नेही व्यक्ति था। वह समय का महत्त्व समझने वाला और अतिथि-सत्कार में कुशल था। मंगोल जाति का होने से वह जल्दी नाराज भी हो जाता था और गुस्सा करता था, परन्तु उतनी ही जल्दी उसकी नाराजगी दूर हो जाती थी। वह यजमानों से काफी स्नेह एवं मेल-मिलाप रखता था, परन्तु कुछ लालची भी था। वह बौद्ध धर्म पर आस्था रखने वाला भिक्षु था।

प्रश्न 2. 'भारत के समान तिब्बत में भी अतिथि-सत्कार की परम्परा है'–पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर–तिब्बत में सभी घरों के द्वार खुले रहते हैं और वहाँ की महिलाएँ अपरिचित व्यक्तियों को भी चाय बनाकर देती हैं। अगर किसी यात्री को आशंका रहती है कि सारा मक्खन उसकी चाय में नहीं पड़ेगा, तो वह खुद अन्दर जाकर चाय बनाकर ला सकता है। निम्न श्रेणी के भिखमंगों को छोड़कर अन्य व्यक्ति वहाँ घरों के अन्दर बेरोकटोक जा सकते हैं। इस प्रकार तिब्बत में भारत के समान ही 'अतिथिदेवो भव:' की परम्परा दिखाई देती है।

प्रश्न 3. भारत की तुलना में तिब्बती स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–भारत में स्त्रियाँ अपरिचित व्यक्ति से परदा करती हैं और न उनसे बात करती है। फिर घर के अन्दर तक जाने का सवाल ही नहीं उठता। भारत की स्त्रियाँ अपरिचित पुरुष से दूरी बनाये रखती हैं तथा उससे स्वयं को असुरक्षित अनुभव करती हैं। परन्तु तिब्बत में स्त्रियाँ न तो परदा करती हैं और न अपरिचित से डरी-सहमी रहती हैं। वे अपरिचित यात्रियों का पूरे विश्वास से, बिना भय के स्वागत-सत्कार करती हैं। इस तरह भारत की तुलना में तिब्बती स्त्रियों की सामाजिक स्थिति कुछ अच्छी दिखाई देती है।

प्रश्न 4. तिब्बत में डाँडे डाकुओं के लिए किस कारण सुरक्षित स्थान हैं?

उत्तर–तिब्बत में 16-17 हजार फीट की ऊँचाई पर अनेक डाँडे हैं। वे एकदम निर्जन और खतरनाक मोड़ों वाले होते हैं। इनके आसपास कोई गाँव या आबादी नहीं होती है। पहाड़ और नदी के मोड़ पर मौजूद ये डाँडे डाकुओं के लिए सुरक्षित स्थान होते हैं। एकदम सूनसान होने के कारण डाकू वहाँ पर यात्रियों को लूट लेते हैं। वहाँ न पुलिस होती है और न कानून-व्यवस्था है। इस वजह से वहाँ पर आसानी से खून हो जाते हैं अर्थात् यात्री मारे जाते हैं।

प्रश्न 5. लेखक सुमति को अपने यजमानों के पास क्यों नहीं जाने देना चाहता था?

उत्तर–सुमति गया से लाये कपड़े के गंडे बनाकर अपने यजमानों को देता था और उनसे भेंटस्वरूप धन प्राप्त करता था। तिब्बत में सुमति के अनेक यजमान थे। लेखक का मानना था कि सुमति अपने यजमानों के पास जाकर काफी समय लगा देगा। इतने दिनों तक उसे भी उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इससे उसकी यात्रा में तथा बौद्ध ग्रन्थों के अध्ययन में बाधा पड़ेगी। इसीलिए वह सुमति को यजमानों के पास नहीं जाने देना चाहता था।

प्रश्न 6. लेखक ने तिब्बत में किस धर्म के अनुयायियों का उल्लेख किया है?

उत्तर–तिब्बत में बौद्ध धर्म के अनुयायी रहते हैं। लेखक का मित्र सुमति बौद्ध धर्म का अनुयायी था और वहाँ पर उसके अनेक यजमान थे। सुमति दूर-दूर तक अपने यजमानों के गाँवों में जाता था। लेखक ने उल्लेख किया है कि तिब्बत में बौद्ध विहारों (मठों) की अधिकता है। वहाँ बौद्ध भिक्षुओं को राजा के समान आदर दिया जाता है। सुमति मंगोल भिक्षु था अर्थात् वह मुसलमान था। उसी की तरह वहाँ के मुसलमान बौद्ध धर्म से प्रभावित बताये गये हैं तथा सब ओर बौद्ध धर्म का प्रसार है।

प्रश्न 7. तिब्बत के डांडों की यात्रा कितनी सुरक्षित रहती है?

उत्तर–लेखक ने जिस समय तिब्बत की यात्रा की थी, तब वहाँ पुलिस एवं गुप्तचर विभाग की कोई व्यवस्था नहीं थी। तिब्बत के डाँडे (पहाड़ियाँ) समुद्रतल से 16-17 हजार फीट ऊँचाई पर स्थित हैं। वहाँ पर नदियों एवं पहाड़ों के खतरनाक मोड़ हैं, मीलों तक निर्जन स्थान हैं, परन्तु वहाँ डाकुओं का भय बना रहता है। डाकू धन के लोभ में यात्रियों को मार डालते हैं। निर्जन स्थान पर यात्री को मारने पर न कोई गवाह होता, न पुलिस की सहायता मिलती। डाँडों की चढ़ाई-उतराई भी खतरनाक रहती। इस प्रकार तिब्बत में डाँडों की यात्रा भययुक्त और असुरक्षित रहती है।

प्रश्न 8. डाँडे के आसपास के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन पाठानुसार कीजिए।

उत्तर–तिब्बत में डाँडे सोलह-सत्रह हजार फीट ऊँचे हैं। लेखक ने डाँडे पर चढ़कर देखा, उसे पश्चिम से दक्षिण तक हिमालय के सैकड़ों श्वेत-शिखर दिखाई दिये। भीटे (नीचे खड़े पहाड़) की ओर देखने पर उन पर न बरफ थी और न हरियाली दिखाई दी। उत्तर की तरफ कम बरफ वाली अनेक चोटियाँ थीं, जिन पर पेड़-पौधे नहीं थे। सबसे ऊँचे स्थान

पर डाँडे के देवता का चबूतरा था जो कि पत्थरों का ढेर जैसा था, जिसे जानवरों के सींगों और रंग-बिरंगे कपड़े की झण्डियों से सजाया गया था।

प्रश्न 9. तिब्बत में कृषि-योग्य जमीन की क्या स्थिति है? पठित पाठ के आधार पर बताइये।

उत्तर—तिब्बत में कृषि-योग्य सारी जमीन छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी हुई है। इन जागीरदारों का वहाँ के मठों पर नियन्त्रण है तथा जमीन का एक बड़ा हिस्सा मठों (बौद्ध विहारों) के अधिकार में है। वहाँ के जागीरदार बेगार में मिलने वाले मजदूरों से खेती करवाते हैं। प्रायः खेती का प्रबन्ध कोई भिक्षु करता है। वहाँ पर ऐसे भिक्षु को मठ का अधिकारी माना जाता है तथा उसे राजा की तरह सम्मान दिया जाता है।

प्रश्न 10. तिब्बत में उस समय कानून-व्यवस्था एवं सुरक्षा की स्थिति कैसी थी?

उत्तर—जब लेखक तिब्बत-यात्रा पर गया था, उस समय वहाँ पर कानून-व्यवस्था एवं सुरक्षा की स्थिति ठीक नहीं थी। वहाँ सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती थी। वहाँ हथियार रखने का कानून न होने से लोग लाठी की तरह पिस्तौल व बन्दूक लिये फिरते थे। तिब्बत के पहाड़ी भागों में डाकू-लुटेरे खुलेआम घूमते थे और वे राहगीर को पहले मारकर फिर लूटते थे। मरने वाले का न कोई गवाह होता था और न कोई परवाह करता था। तिब्बत के गाँव भले ही कुछ सुरक्षित थे, परन्तु पहाड़ी निर्जन स्थान पूरी तरह असुरक्षित थे।

प्रश्न 11. तिब्बत की जलवायु भारत से किस प्रकार भिन्न है? सोदाहरण लिखिए।

उत्तर—तिब्बत की जलवायु भारत से बिल्कुल भिन्न है। वहाँ पर सुबह एवं शाम को ठंड बढ़ जाती है। दिन में सूर्य की ओर मुँह करके चलने में तेज धूप पड़ती है और ललाट धूप से तपने लगता है, लेकिन पीछे की तरफ सूर्य की किरणें न पड़ने से कन्धा-पीठ बर्फ की तरह ठंडा हो जाता है। इसी प्रकार छाया वाले स्थानों पर काफी ठंडक रहती है। पर्वतीय क्षेत्र होने से वहाँ पर भारत की तुलना में सर्दी का प्रकोप अधिक रहता है।

प्रश्न 12. सुमति तिब्बतवासियों की धार्मिक आस्था का अनुचित लाभ किस तरह उठाता था?

उत्तर—सुमति लेखक का सहयोगी बौद्ध भिक्षु था। वह बोधगया से लाये गये कपड़ों को चीरकर उनके गंडे बनाकर अपने यजमानों को बाँटता था। जब बोधगया से लाये लाल कपड़े खत्म हो जाते, तो वह उसी रंग के किसी भी कपड़े से गंडा बना देता और उसे बोधगया से लाया हुआ बताकर यजमानों को बाँट देता था और उनसे दक्षिणा लेता था। इस तरह वह अपने तिब्बतवासी यजमानों की धार्मिक आस्था का अनुचित लाभ उठाता था।

निबन्धात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. तिब्बत की कौनसी बातें लेखक राहुल सांकृत्यायनजी को अच्छी लगी?

उत्तर—लेखक राहुल सांकृत्यायन को तिब्बत की जो बातें अच्छी लगीं वे निम्नलिखित हैं—

(1) यहाँ जाति-पाँति, छुआछूत तथा पर्दा-प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयाँ नहीं थीं।

(2) भारत की तुलना में यहाँ स्त्रियों की स्थिति ज्यादा सुरक्षित, सम्मानजनक और अच्छी थी।

(3) यहाँ यात्रियों के आराम व सुविधा का ध्यान रखा जाता था।

(4) भिखमंगों का वेश होने पर भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिल जाती थी।

(5) समाज में अपरिचित अतिथियों का भी सेवा सत्कार होता था।

रचनाकार परिचय सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. राहुल सांकृत्यायन का जीवन परिचय बताइए।

उत्तर—हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन का जन्म सन् 1893 में उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में कनैला गाँव में हुआ। उनके बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डेय था। उनका बौद्ध धर्म की ओर विशेष झुकाव था। उन्हें पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, तिब्बती, चीनी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान था। वे यात्रा-साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। उन्होंने तिब्बत से लेकर श्रीलंका तक भ्रमण किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—सतमी के बच्चे, बहुरंगी मधुपरी, जीने के लिए, मधुर स्वप्न, विस्मृत यात्रा, मेरी जीवन यात्रा आदि। राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ स्वभाव के थे। उनकी भाषा सरल, सहज व स्वाभाविक है। राहुलजी द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या लगभग 150 है। सन् 1963 में इनका देहावसान हो गया था। इनकी रचनाएँ दो भागों में विभक्त हैं—यात्रा साहित्य और अन्य साहित्य।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

निर्देश—निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए :

(1)

यह व्यापारिक ही नहीं सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए जगह-जगह फौजी चौकियाँ और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत-से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं, ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी किला था। हम वहाँ चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत-सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाँति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती हैं। बहुत निम्न श्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते; नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं।

प्रश्न 1. राहुल सांकृत्यायन ने कहाँ की यात्रा की थी?

प्रश्न 2. लेखक किस रास्ते से तिब्बत गया था?

प्रश्न 3. लेखक जिस रास्ते से तिब्बत गया था, वह कैसा रास्ता था?

प्रश्न 4. तिब्बत की किन सामाजिक प्रवृत्तियों की ओर लेखक ने संकेत किया है?

प्रश्न 5. इस गद्यांश में किस रास्ते का वर्णन है?

प्रश्न 6. उपरोक्त रास्ते के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–1. राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा की यात्रा की थी।

2. लेखक, नेपाल के व्यापारिक व सैनिकों द्वारा घिरे मुख्य रास्ते से गया था।

3. लेखक तिब्बत नेपाल से गया था, उस रास्ते पर जगह-जगह पुलिस चौकियाँ और किले बने हुए हैं।

4. लेखक ने यह संकेत किया है कि वहाँ पर जाति-पाँति, ऊँच-नीच, पर्दा-प्रथा एवं छुआछूत की भावना नहीं थी।

5. प्रस्तुत गद्यांश में नेपाल से तिब्बत जाने के मुख्य रास्ते का वर्णन है।

6. यह रास्ता व्यापार करने की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण था ही, इसके साथ-साथ यह सैनिक रास्ता होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था।

(2)

परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। हमने वह दोनों चिटें उसे दे दीं। शायद उसी दिन हम थोड्ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गये। यहाँ भी सुमति के जान-पहचान के आदमी थे और भिखमंगे रहते भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद हम इसी रास्ते लौटे थे और भिखमंगे नहीं, एक भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार होकर आये थे, किन्तु उस वक्त किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी, और हम गाँव के सबसे गरीब झोंपड़े में ठहरे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त छङ् पीकर बहुत कम होश-हवास को दुरुस्त रखते हैं।

प्रश्न 1. किले को परित्यक्त तथा चीनी क्यों कहा गया है? बताइये।

प्रश्न 2. लेखक और उसका साथी भिखमंगे के वेश में क्यों थे?

प्रश्न 3. भिखमंगे रहते भी लेखक को ठहरने की अच्छी जगह कैसे मिली?

प्रश्न 4. तिब्बत यात्रा में लेखक को भारतीय तथा तिब्बती अतिथि-सत्कार में क्या अन्तर देखने को मिला?

प्रश्न 5. शाम के वक्त गाँव के लोगों के होश-हवास ठीक नहीं रहने का कारण बताइए।

प्रश्न 6. परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। वाक्य का प्रकार बताइए।

उत्तर–1. पहले उस किले में चीनी सैनिक रहते थे, किन्तु अब उसमें कोई नहीं रहता था।

2. तिब्बत यात्रा में निर्जन स्थानों पर डाकुओं के भय के कारण।

3. सुमति के जान-पहचान के कारण।

4. जान-पहचान वाले को ही तिब्बत में अतिथि-सत्कार प्राप्त होता है। जबकि भारत में लोग बिना जान-पहचान के भी अतिथि-सत्कार करते हैं।

5. शाम के वक्त गाँव के लोग 'छङ्' नामक मादक द्रव्य पीकर अपने होश-हवास को ठीक नहीं रख पाते हैं।

6. मिश्र वाक्य।

(3)

डाँडे तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं। सोलह-सत्रह हजार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ मीलों तक कोई गाँव-गिराँव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी

को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं। हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ लाठी की तरह लोग पिस्तौल, बन्दूक लिये फिरते हैं।

प्रश्न 1. तिब्बत के निर्जन स्थानों पर मरे हुए आदमियों की कोई परवाह क्यों नहीं करता है?

प्रश्न 2. तिब्बत में डाँडों की कितनी ऊँचाई है?

प्रश्न 3. तिब्बत में लोग लाठी की तरह पिस्तौल और बन्दूक लिए क्यों फिरते हैं?

प्रश्न 4. तिब्बत के डाँडे, नदियों के मोड़ एवं पहाड़ों के कोने किनके लिए अच्छे हैं? बताइए।

प्रश्न 5. तिब्बत के डाँडे में खून होने पर खूनी को सजा क्यों नहीं मिल पाती?

प्रश्न 6. डकैत आदमी को किस प्रकार लूटते हैं?

उत्तर–1. तिब्बत में एकदम निर्जन स्थान डाकुओं के होने के कारण लोग मरे हुए आदमियों की परवाह नहीं करते हैं।

2. तिब्बत में डाँडे सोलह-सत्रह हजार फीट की ऊँचाई पर हैं।

3. हथियार का कानून न होने के कारण लोग अपनी सुरक्षा के लिए पिस्तौल और बन्दूक रखते हैं।

4. तिब्बत में उक्त जगहें डाकुओं के लिए बहुत अच्छी हैं, क्योंकि निर्जन स्थानों पर मरे हुए आदमियों की कोई परवाह नहीं करता।

5. तिब्बत के डाँडे में खून करने वाले के खिलाफ कोई गवाह नहीं होता इसलिए खूनी को सजा नहीं मिलती।

6. डकैत आदमी को पहले पकड़ लेते हैं फिर उसका खून कर उसके बाद उसका सामान लूटते हैं।

(4)

अब हम तिङ्री के विशाल मैदान में थे, जो पहाड़ों से घिरा टापू-सा मालूम होता था, जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती है। उसी पहाड़ी का नाम है तिङ्री समाधि-गिरि। आस-पास के गाँव में भी सुमति के कितने ही यजमान थे, कपड़े की पतली-पतली चिरी बत्तियों के गंडे खतम नहीं हो सकते थे, क्योंकि बोधगया से लाये कपड़े के खतम हो जाने पर किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे। वह अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे। मैंने सोचा वह तो हफ्ताभर उधर ही लगा देंगे। मैंने उनसे कहा कि जिस गाँव में ठहरना हो, उसमें भले ही गंडे बाँट दो, मगर आस-पास के गाँवों में मत जाओ। इसके लिए मैं तुम्हें ल्हासा पहुँचकर रुपये दे दूँगा। सुमति ने स्वीकार कर लिया।

प्रश्न 1. तिङ्री-समाधि-गिरि किसका नाम है? वह कहाँ स्थित है?

प्रश्न 2. सुमति द्वारा बनाये जाने वाले गंडे खतम क्यों नहीं हो पाते थे?

प्रश्न 3. गंडा किसे कहा गया है?

प्रश्न 4. लेखक ने सुमति को क्या प्रलोभन दिया था?

प्रश्न 5. लेखक ने सुमति को अन्य गाँवों में क्यों नहीं जाने दिया?

प्रश्न 6. सुमति अपने यजमानों को क्या लाकर देता था?

उत्तर–1. तिङ्री के विशाल मैदान के मध्य में एक पहाड़ी स्थित है जो टापू जैसी प्रतीत होती है। उसी पहाड़ी का नाम तिङ्री-समाधि-गिरि है।

2. बोध-गया से लाए कपड़े के खतम हो जाने पर भी किसी भी कपड़े को बोधगया का कपड़ा बनाकर उससे गंडे को तैयार कर देता था।

3. मंत्र पढ़कर गाँठ लगाए हुए धागे या कपड़े को गंडा कहा गया है।

4. लेखक ने समय की बचत से उसे प्रलोभन दिया था कि ल्हासा पहुँच कर वह उसे रुपये दे देगा।

5. लेखक को पहले ही काफी समय लग चुका था। सुमति अन्य गाँवों में जाता तो और देर होती, इसलिए मना किया।

6. सुमति अपने यजमानों को बोधगया से लाए गए कपड़े से बनाए हुए गण्डे देता था।

(5)

दूसरे दिन हमने भरिया ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन कोई न मिला। सवेरे ही चल दिए होते तो अच्छा था, लेकिन अब 10-11 बजे की धूप में चलना पड़ रहा था। तिब्बत की धूप भी बड़ी कड़ी मालूम होती है, यद्यपि थोड़े से

भी मोटे कपड़े से सिर को ढाँक लें तो गरमी खतम हो जाती है। आप दो बजे सूरज की ओर मुँह करके चल रहे हैं, ललाट धूप से जल रहा है और पीछे का कन्धा बर्फ हो रहा है। फिर हमने पीठ पर अपनी-अपनी चीजें लादीं, डंडा हाथ में लिया और चल पड़े। यद्यपि सुमति के परिचित तिङ्री में भी थे। लेकिन वह एक और यजमान से मिलना चाहते थे। इसलिए आदमी मिलने का बहाना कर शेकर विहार की ओर चलने के लिए कहा।

प्रश्न 1. लेखक को यात्रा के दौरान तेज धूप में क्यों चलना पड़ा था?

प्रश्न 2. तिब्बत में पड़ने वाली धूप पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 3. 'सवेरे ही चल दिए होते तो अच्छा था' लेखक ने यह क्यों कहा?

प्रश्न 4. सुमति ने लेखक से शेकर विहार की ओर चलने को क्यों कहा?

प्रश्न 5. लेखक ने किसको ढूँढ़ने की कोशिश की?

प्रश्न 6. सुमति ने लेखक को कहाँ चलने के लिए कहा?

उत्तर–1. उसे तेज-धूप में ही अपनी यात्रा जारी रखने के कारण चलना पड़ा था।

2. तिब्बत में धूप बहुत तेज पड़ती है। इसलिए 10–11 बजे तेज धूप में चलना मुश्किल हो जाता है। उस कड़ी धूप से बचने के लिए मोटे कपड़े से सिर को ढँकना पड़ता है।

3. क्योंकि उसने 10–11 बजे यात्रा प्रारम्भ की तब तेज धूप के कारण उसको चलने में कठिनाई हो रही थी।

4. वह वहाँ जाकर अपने अन्य किसी परिचित यजमान से धन-प्राप्ति की लालसा में मिलना चाहता था।

5. लेखक ने भरिया (सामान ढ़ोने वाला) ढूँढ़ने की कोशिश की।

6. सुमति ने लेखक को शेकर विहार की ओर चलने के लिए कहा।

(6)

तिब्बत की जमीन बहुत अधिक छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरों का बहुत ज्यादा हिस्सा मठों (विहारों) के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में हरेक जागीरदार कुछ खेती खुद भी करता है, जिसके लिए मजदूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का इन्तजाम देखने के लिए वहाँ कोई भिक्षु भेजा जाता है, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु (नम्से) बड़े भद्र पुरुष थे। वह बहुत प्रेम से मिले, हालांकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था। यहाँ एक अच्छा मन्दिर था, जिसमें कन्जुर (बुद्धवचन-अनुवाद) की हस्तलिखित एक सौ तीन पोथियाँ रखी हुई थीं, मेरा आसन भी वहीं लगा।

प्रश्न 1. नम्से कौन थे?

प्रश्न 2. 'पुस्तकों के भीतर होना' से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 3. कन्जुर से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 4. लेखक का आसन कहाँ लगाया गया था?

प्रश्न 5. तिब्बत में जागीरों का अधिकतर भाग किसके पास है?

प्रश्न 6. तिब्बत में खेती की व्यवस्था कौन देखता है?

उत्तर–1. नम्से शेकर विहार की खेती के मुखिया भिक्षु थे।

2. पुस्तकों के भीतर होना—पुस्तक पढ़ने में रम जाना।

3. कन्जुर भगवान बुद्ध के वचनों की हस्तलिखित अनुवादित पोथियाँ हैं।

4. लेखक का आसन मन्दिर में रखी पोथियों के पास लगाया गया।

5. तिब्बत में जागीरों का अधिकतर भाग मठों के पास है।

6. तिब्बत में खेती की व्यवस्था मठ का भिक्षु देखता है।

3. उपभोक्तावाद की संस्कृति

(श्यामाचरण दुबे)

लेखक-परिचय–श्यामाचरण दुबे का जन्म सन् 1922 में मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में हुआ। ये आधुनिक मानव विज्ञान के अध्येता एवं प्रमुख समाज-वैज्ञानिक थे। विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन कराते हुए उन्होंने जीवन, समाज और संस्कृति के ज्वलन्त विषयों पर चिन्तन-विश्लेषण किया तथा इन्हीं विषयों पर पर्याप्त लेखन-कार्य भी किया। इनका देहान्त सन् 1996 में हुआ।

पाठ-सार–'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ में लेखक ने उपभोक्तावाद का अर्थ बताते हुए वर्तमान काल में बाजार की गिरफ्त में आ रहे समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत किया है। आज सुख की व्याख्या बदल गई है। विलासिता की सामग्रियों से बाजार भरा पड़ा है। तरह-तरह के आकर्षक विज्ञापनों के कारण उपभोग की वस्तुओं की लिस्ट बढ़ती जा रही है। प्रत्येक चीज का कीमती ब्राण्ड लोगों को लुभा रहा है। उपभोक्तावाद के कारण दिखावे की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। विशिष्ट लोग जिन चीजों को खरीदते हैं, सामान्य लोग भी उन्हें खरीदने की लालसा रखते हैं। लेखक बताता है कि भारत के सामन्ती समाज से ही उपभोक्तावादी समाज पैदा हुआ है। उपभोक्तावाद अनुकरण की संस्कृति है, पश्चिम की नकल है, जिसके हम गुलाम बनते जा रहे हैं। वास्तव में यह बौद्धिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उपनिवेशवाद का नया स्वरूप है। इससे हम अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को त्याग रहे हैं। इससे समाज में आक्रोश, अशान्ति एवं सामाजिकता की कमी आ रही है और हम अपनी जड़ों से कट रहे हैं।

कठिन-शब्दार्थ–वर्चस्व = दबदबा। जीवन-दर्शन = जीवन को देखने की दृष्टि। उत्पाद = तैयार माल। विलासिता = सुख का उपभोग। मैजिक = जादुई। सिने स्टार्स = सिनेमा के शीर्ष अभिनेता। परिधान = सिले-सिलाए वस्त्र। सांस्कृतिक अस्मिता = सांस्कृतिक पहचान। प्रतिमान = आदर्श, कसौटी। वशीकरण = वश में करना। व्यक्ति-केन्द्रिकता = व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रहना।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' का अभिप्राय केवल उपभोग सुख नहीं है बल्कि अन्य प्रकार के मानसिक, शारीरिक तथा छोटे आराम भी सुख कहलाते हैं। लेकिन आजकल लोग केवल उपभोग-सुख को ही 'सुख' कहने लगे हैं।

प्रश्न 2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर–आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित कर रही है—(1) हम उत्पादों के निरन्तर दास बन रहे हैं। (2) पिज्जा-बर्गर आदि कूड़ा खाद्य वस्तुओं को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। (3) पाँचसितारा संस्कृति से सामान्य व्यक्ति में प्रतिष्ठा के नाम पर लालच भर गया है। (4) समाज के वर्गों में परस्पर दूरियाँ बढ़ रही हैं। (5) दिखावे की संस्कृति या अनुकरण की संस्कृति फल-फूल रही है। (6) हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को खोते जा रहे हैं। (7) हमारे संसाधनों का अपव्यय हो रहा है और (8) मानवीय गुणों एवं मूल्यों का पतन हो रहा है। (9) विज्ञापनों के प्रभाव से हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं (10) हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं।

प्रश्न 3. लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

उत्तर–उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे सामाजिक जीवन की नींव कमजोर कर, मानवीय एकता तथा प्रेम-भाव का ह्रास कर रही है। परिणामस्वरूप यह प्रवृत्ति हमारी संस्कृति के लिए खतरा बन सकती है। इस नयी संस्कृति से बचकर अपने परम्परागत नैतिक एवं सामाजिक मानदण्डों को अपनाना वर्तमान में कठिन है। आज इसी प्रवृत्ति के कारण हम पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं, क्योंकि यह भोग को बढ़ावा दे रही है। इसलिए उपभोक्ता संस्कृति हमारे समाज के लिए चुनौती बन गई है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

उत्तर–आशय–आज उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव इतनी धीमी गति से पड़ रहा है। इसके प्रभाव में आकर हमारा चरित्र ही बदलता जा रहा है। क्योंकि हम वस्तुओं का उपभोग ही सुख मानने लगे हैं और हम उत्पादों का उपभोग करते-करते उनके गुलाम होते जा रहे हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि हम उत्पादों का उपभोग नहीं कर रहे हैं बल्कि उत्पाद हमारे जीवन का भोग कर रहे हैं।

(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों।

उत्तर–आशय–सामाजिक प्रतिष्ठा अनेक तरह की होती है। प्रतिष्ठा के कई रूप तो बिल्कुल विचित्र होते हैं। उनके कारण हम हँसी के पात्र बन जाते हैं। जैसे अमेरिका में लोग मरने से पहले अपनी समाधि का प्रबन्ध करने लगे हैं। वे धन देकर यह सुनिश्चित करने लगे हैं कि उनकी समाधि के आसपास हमेशा हरियाली रहेगी और मनमोहक संगीत बजता रहेगा।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 5. कोई वस्तु हमारे लिये उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं, क्यों?

उत्तर–टी.वी. पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन इतने आकर्षक और प्रभावशाली होते हैं कि वे हमारे मन में वस्तुओं के प्रति इतना भ्रामक आकर्षण पैदा कर देते हैं कि उन्हें खरीदने की लालसा हमारे मन में जाग जाती है और हम उन्हें अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए बिना खरीदे नहीं रह पाते हैं। इस स्थिति में अनुपयोगी वस्तुएँ भी हमें लालायित कर देती हैं।

प्रश्न 6. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर–वस्तुओं को खरीदने का आधार उसकी गुणवत्ता होनी चाहिए, न कि विज्ञापन। उत्पादक विज्ञापनों में वस्तुओं का बढ़ा-चढ़ाकर प्रचार करते हैं और उपभोक्ता को भ्रम में डालते हैं। विज्ञापनों के प्रभाव से व्यक्ति ऐसा सम्मोहित हो जाता है कि वह वस्तु की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दे पाता है। वह भूल जाता है कि गुणवत्ता वाली वस्तुएँ विज्ञापन के बिना भी खरीदी जा सकती हैं। अतएव विज्ञापन की अपेक्षा वस्तु की गुणवत्ता पर ही ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न 7. पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–आज दिखावे की संस्कृति पनप रही है "जो दिखता है वही बिकता है"। यह बात अपने आप में बिल्कुल सत्य है। इसलिए लोग अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए उन्हीं चीजों को अपना रहे हैं, जो दुनिया की नजरों में अच्छी हैं, चाहे उनमें गुणवत्ता न हो। आज संभ्रान्त व्यक्ति से लेकर सामान्य व्यक्ति तक दिखावे की प्रवृत्ति का शिकार हो रहा है। इसलिए वह अपनी आर्थिक स्थिति पर ध्यान न देकर अपनी हैसियत दिखाने के लिए आज पाँच सितारा संस्कृति को अपना रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि समाज के वर्गों में दूरियाँ बढ़ रही हैं। मनुष्य, मनुष्य से कट रहा है। इससे सांस्कृतिक अस्मिता का, श्रेष्ठ मूल्यों एवं आस्थाओं का निरन्तर क्षरण हो रहा है।

प्रश्न 8. आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाजों और त्योहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर–वर्तमान में उपभोक्तावादी संस्कृति का उत्तरोत्तर प्रसार हो रहा है। इससे हमारी अस्मिता एवं प्राचीन परम्पराओं का अवमूल्यन हो रहा है, हमारी आस्थाओं का क्षरण हो रहा है और हम बौद्धिक दासता अपना रहे हैं। इस उपभोक्तावादी संस्कृति से हमारे रीति-रिवाजों एवं त्योहारों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। भारत में तीज-त्योहारों का अपना सांस्कृतिक महत्त्व है। यहाँ प्रत्येक त्योहारों पर स्त्रियों की वेशभूषा को परम्परा रूप में अपनाया जाता है, परन्तु अब उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण बाजार में नये-नये परिधान आ गये हैं, लोगों का सोचना कि पिछले वर्ष की फैशन इस वर्ष क्यों रहे? फलस्वरूप परम्परागत परिधान बदल रहे हैं, इसी प्रकार विवाह के अवसर पर मेहँदी लगवाने की, महिला संगीत और भोजन आदि की परम्परा बदल गई है। शुभकामना एवं आमन्त्रण के निमित्त जो कार्ड मिलते हैं, वे महँगे भी हैं और एकदम नये-से-नये डिजायन के। कुछ सम्पन्न लोग तो चाँदी के पतरों से कार्ड बनवाकर अपनी प्रतिष्ठा का खुला प्रदर्शन भी करते हैं। इस तरह रीति-रिवाज बदलने लगे हैं। रक्षा-बन्धन, वेलेंटाइन डे आदि पर नयी परम्पराओं का प्रचलन बढ़ रहा है। होली-दीवाली पर गिफ्ट देने-लेने की परम्परा चल रही है। अब दीपावली में दीप की जगह इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रोनिक लाइटों ने ली है। इस तरह उपभोक्ता संस्कृति से हमारे रीति-रिवाजों एवं त्योहारों पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 9. "धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।" इस वाक्य में 'बदल रहा है' क्रिया है। यह क्रिया कैसे हो रही है—धीरे-धीरे। अतः यहाँ धीरे-धीरे क्रिया विशेषण है। जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जहाँ वाक्य में हमें पता चलता है कि क्रिया कैसे, कब, कितनी और कहाँ हो रही है, वहाँ वह शब्द क्रिया-विशेषण कहलाता है।

(क) ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए क्रिया-विशेषण से युक्त पाँच वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।

उत्तर–(1) उत्पादन बढ़ाने पर जोर है **चारों ओर**।

(2) **कल** भारत में भी यह सम्भव हो सकता है।

(3) अमेरिका में **आज** जो हो रहा है।

(4) **जैसे-जैसे** दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी।

(5) **आज** सामन्त बदल गए हैं।

(ख) धीरे-धीरे, जोर से, लगातार, हमेशा, आजकल, कम, ज्यादा, यहाँ, उधर, बाहर—इन क्रिया-विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

उत्तर—

धीरे-धीरे	—	समाज में धीरे-धीरे बदलाव आने लगा।
जोर से	—	नेताजी जोर से चिल्लाए।
लगातार	—	राजस्थान में लगातार अकाल पड़ रहा है।
हमेशा	—	हमेशा सत्य बोलना चाहिए।
आजकल	—	आजकल विज्ञापनों का बोलबाला है।
कम	—	चाय में चीनी कम डालो।
ज्यादा	—	ज्यादा सोना ठीक नहीं है।
यहाँ	—	यहाँ क्या हो रहा है?
उधर	—	उधर कौन रहता है?
बाहर	—	वह जयपुर से बाहर जायेगा।

(ग) नीचे दिये गये वाक्यों में से क्रिया-विशेषण और विशेषण शब्द छाँटकर अलग लिखिये।

उत्तर—वाक्य	**क्रिया-विशेषण**	**विशेषण**
(1) कल रात से निरन्तर बारिश हो रही है।	कल रात से, निरन्तर	—
(2) पेड़ पर लगे पके आम देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया।	मुँह में पानी	पके आम
(3) रसोईघर से आती पुलाव की हल्की खुशबू से मुझे जोरों की भूख लग आयी।	भूख	हल्की जोरों की
(4) उतना ही खाओ जितनी भूख है	भूख	—
(5) विलासिता की वस्तुओं से आजकल बाजार भरा पड़ा है।	आजकल	उतना, जितनी भरा

पाठेतर सक्रियता—

'दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों का बच्चों पर बढ़ता प्रभाव' विषय पर अध्यापक और विद्यार्थी के बीच हुए वार्तालाप को संवाद-शैली में लिखिए।

उत्तर—विद्यार्थी— गुरुजी, आप कौन-सा साबुन प्रयोग में लाते हो?

शिक्षक— क्यों, तुम क्यों ऐसा पूछ रहे हो?

विद्यार्थी— क्या आप गोरा होने वाला साबुन इस्तेमाल करते हैं?

शिक्षक— नहीं तो?

विद्यार्थी— क्या आप दिनभर शरीर को तरोताजा रखने वाला साबुन लगाते हैं?

शिक्षक— नहीं तो?

विद्यार्थी— गुरुजी! एक साबुन ऐसा भी आता है, जिससे पसीना भी नहीं आता है और जर्म्स भी मिट जाते हैं।

शिक्षक— ऐसा साबुन तो मैं भी एक बार लाया था।

विद्यार्थी— क्या अब शुद्ध गंगाजल से निर्मित साबुन आता है?

शिक्षक— ऐसा तो कम ही सम्भव है।

विद्यार्थी— गुरुजी, कल टी.वी. पर ऐसा ही एक विज्ञापन आया था।

शिक्षक— यह तो उत्पादक कम्पनी का कोरा प्रचार है। ऐसे विज्ञापनों पर तुम्हें विश्वास नहीं करना चाहिए। नहाने के साबुन कमोबेश सब एक-से ही होते हैं।

इस पाठ के माध्यम से आपने उपभोक्ता संस्कृति के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। अब आप अपने अध्यापक की सहायता से सामन्ती संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करें और नीचे दिये गये विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में कक्षा में अपने विचार व्यक्त करें।

क्या उपभोक्ता संस्कृति सामन्ती संस्कृति का ही विकसित रूप है?

उत्तर–पक्ष में विचार–वर्तमान में उपभोक्तावादी संस्कृति पनप रही है, वस्तुत: यह सामन्ती संस्कृति का ही विकसित रूप है। भारत में सामन्ती संस्कृति के तत्त्व काफी पहले से रहे हैं। पुराने जमाने में यहाँ के राजा, सामन्त, जागीरदार एवं जमींदार आदि प्रजा के साथ कठोरता का व्यवहार करते थे। परन्तु वे स्वयं विलासी जीवन जीते थे और अपने भवनों में विलासिता की वस्तुओं का संग्रह करते थे। कीमती वस्त्र आभूषण, बहुमूल्य सौन्दर्य-प्रसाधन एवं परिधान आदि के प्रति उनका विशेष लगाव रहता था। अंग्रेजों के शासन-काल में अनेक पूँजीपति एवं उद्योगपति भी सामन्ती संस्कृति के पोषक बन गये थे। उस समय यद्यपि आज की तरह विज्ञापनों का उपयोग नहीं होता था, परन्तु विभिन्न अवसरों पर वे स्वयं उपभोक्ता संस्कृति का प्रचार करते थे। राजा-महाराजा, सामन्त एवं राय बहादुर लोग ऐसे रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं का प्रचार करते थे, जिनसे सामान्य व्यक्ति भी लालायित हो जाते थे। विज्ञापन-कला के प्रसार से जब उत्पादों का प्रचार किया जाने लगा, तो तब सामन्ती संस्कृति से उसे काफी सहारा मिला। राजा-महाराजा आदि अमुक तेल की मालिश कराते थे, च्यवनप्राश आदि खाते थे, अंगूरी आसव पीते थे इत्यादि परम्पराओं को विज्ञापनों के द्वारा अब नया रूप दिया जा रहा है। इस तरह कहा जा सकता है कि उपभोक्ता संस्कृति सामन्ती संस्कृति का ही विकसित रूप है।

विपक्ष में विचार–अभी जो हमारे साथियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि उपभोक्ता संस्कृति सामन्ती संस्कृति का ही विकसित रूप है, के विचारों से सहमत नहीं हूँ बल्कि यह वक्त के बदलाव के साथ उपभोग के उपलब्ध साधनों की प्रचुरता का प्रमाण है। पहले जिन साधनों का उपभोग बड़े-बड़े आदमी अपनी समृद्धि के आधार पर करते थे वे आज आर्थिक प्रगति के आधार पर मध्यम वर्गीय व्यक्ति क्या सामान्य जन भी उनका उपभोग करने लगे हैं। उदाहरण के लिए पहले मोटरकार का उपयोग राजा-महाराजा और बड़े-बड़े पूँजीपति करते थे। आज मध्यम वर्गीय व्यक्ति भी आर्थिक प्रगति के आधार पर इनका सुख ले रहा है।

आप प्रतिदिन टी.वी. पर ढेरों विज्ञापन देखते-सुनते हैं और इनमें से कुछ आपकी जबान पर चढ़ जाते हैं। आप अपनी पसन्द की किन्हीं दो वस्तुओं पर विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–विज्ञापन एक–

आपकी दाँतों में चमक है?
आपके पेस्ट में नमक है?
तो आज ही अपनाइये,
नमकयुक्त असरकारी डाबर पेस्ट।

विज्ञापन दो–

भूख जगाए, तन्दुरुस्त बनाए,
कमजोरी हटाए, शक्ति बढ़ाए,
गोल्डी च्यवनप्राश
सदा खाएँ!

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. आज बाजार भरा पड़ा है—
   (क) आकर्षक वस्तुओं से (ख) विलासिता की सामग्रियों से
   (ग) टूथ-पेस्ट की किस्मों से (घ) विज्ञापित वस्तुओं से
2. जीवन स्तर का बढ़ता अन्तर जन्म दे रहा है—
   (क) संकीर्णता और स्वार्थ को (ख) वैमनस्य और अलगाववाद को
   (ग) आक्रोश और अशान्ति को (घ) अनैतिकता और अत्याचार को
3. भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है—
   (क) बढ़ती हुई विलासिता (ख) बढ़ती हुई बौद्धिकता
   (ग) बढ़ती हुई अशान्ति (घ) बढ़ती हुई उपभोक्ता संस्कृति
4. भारतीय संस्कृति की नियंत्रण शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम हो रहे हैं—
   (क) दिग्भ्रमित (ख) बौद्धिक (ग) अकर्मण्य (घ) हतोत्साहित

5. लोगों की दृष्टि में सुख क्या है?
(क) उपभोग-भोग ही सुख है (ख) मस्त रहना ही सुख है
(ग) संयमित जीवन में ही सुख है (घ) प्रभु शक्ति में ही सुख है
6. गाँधीजी ने किनके लिए दरवाजे खिड़कियाँ खुली रखने की बात कही थी?
(क) विदेशी उपनिवेश के लिए (ख) लघु उद्योगों के लिए
(ग) स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं
7. उपभोक्ता संस्कृति का हमारे सामाजिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(क) परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है (ख) परम्पराओं का निर्वाह हुआ है
(ग) परम्पराओं का लोप हो गया है (घ) हम उन्हीं परम्पराओं पर चल रहे हैं
8. पुरुष किस दौड़ में शामिल हो गए हैं?
(क) पैसे कमाने में (ख) सौन्दर्य-प्रसाधन उपयोग करने में
(ग) वर्चस्व स्थापित करने में (घ) नाचने-गाने में
9. सम्भ्रान्त महिलाओं से लेखक का क्या तात्पर्य है?
(क) सुन्दर महिलाएँ (ख) भ्रम में डालने वाली महिलाएँ
(ग) उच्चकुल की महिलाएँ (घ) इनमें से कोई नहीं
10. मनुष्य का लक्ष्य क्या होना चाहिए?
(क) धन प्राप्ति (ख) सुख प्राप्ति (ग) सम्पूर्ण विकास (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-माला–1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (क) 6. (ग) 7. (क) 8. (ख) 9. (ग) 10. (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. उपभोक्तावादी में ....प्रत्यय प्रयुक्त है। (उप/वादी)
2. उपभोक्तावाद .... संस्कृति से जुड़ा है। (सामन्ती/आध्यात्मिक)
3. परमार्थ का अर्थ .... है। (दूसरों की भलाई/स्वयं की भलाई)
4. उपभोक्तावादी संस्कृति भारतीय संस्कृति के लिए .... है। (लाभकारी/हानिकारक)
5. विलासिता की सामग्रियों से .... भरा पड़ा है। (बाजार/घर)
6. भोग की आकांक्षाएँ .... को छू रही हैं। (आसमान/पाताल)

उत्तर–1. वादी 2. सामन्ती 3. दूसरों की भलाई 4. हानिकारक 5. बाजार 6. आसमान।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. सामन्ती संस्कृति किससे सम्बन्धित है?
उत्तर–सामन्ती संस्कृति उपभोक्तावाद से सम्बन्धित है।
प्रश्न 2. नई संस्कृति की क्या विशेषता है?
उत्तर–नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है।
प्रश्न 3. बाजार में किस तरह की वस्तुएँ उपलब्ध हैं?
उत्तर–बाजार में विलासिता की वस्तुएँ अधिक उपलब्ध हैं।
प्रश्न 4. उपभोक्ता संस्कृति के कारण हम कैसी दासता स्वीकार करते जा रहे हैं?
उत्तर–उपभोक्ता संस्कृति के कारण हम बौद्धिक दासता स्वीकार करते जा रहे हैं।
प्रश्न 5. उपभोक्ता व सामन्ती संस्कृति में क्या सम्बन्ध है?
उत्तर–सामन्ती संस्कृति से ही उपभोक्ता संस्कृति ने जन्म लिया है।
प्रश्न 6. विज्ञापन और प्रसार का सम्मोहन क्या बदल रहा है?
उत्तर–विज्ञापन और प्रसार का सम्मोहन हमारी मानसिकता को बदल रहा है।
प्रश्न 7. लोगों को आजकल किसमें लज्जा आती है?
उत्तर–लोगों को आजकल पुराने फैशन के कपड़े पहनने में लज्जा आती है।
प्रश्न 8. 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ में एक गम्भीर विषय है, वह क्या है?
उत्तर–इस पाठ में 'उपभोक्ता संस्कृति का भारत में विकास' इस विषय का विवेचन किया है।
प्रश्न 9. इस पाठ के अनुसार लेखक किस ओर ध्यान दिला रहे हैं?

उत्तर–इस पाठ के अनुसार लेखक 'उपभोक्ता संस्कृति हमारे लिए कितनी खतरनाक है' इस ओर ध्यान दिला रहे हैं।

प्रश्न 10. उपभोक्ता संस्कृति हमारी किस नींव को हिला रही है?

उत्तर–उपभोक्ता संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को हिला रही है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. उपभोक्तावाद का दर्शन किस तरह का दर्शन है? संक्षेप में बताइए।

उत्तर–उपभोक्तावाद का दर्शन एक ऐसा जीवन-दर्शन है, जिसका मुख्य उद्देश्य उपभोग-भोग ही सुख है। इस सुख भोग के लिए व्यक्ति दिखावे की संस्कृति की ओर अधिक लालायित हो रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि व्यक्ति स्वयं को विशिष्ट एवं समाज को गौण मानने लगा है।

प्रश्न 2. उपभोक्तावाद के कारण समाज में नया बदलाव क्या आ रहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–आज प्रत्येक व्यक्ति उत्पाद का उपभोग करने के लिए इतना लालायित रहता है कि वह अपनी आर्थिक सीमा की अनदेखी करने लगता है, उपभोग को अपनी प्रतिष्ठा का विषय बना लेता है। इस तरह उपभोक्तावाद के कारण अब समाज का चरित्र बदल रहा है, उसमें सामाजिकता का ह्रास एवं वैयक्तिकता का प्रसार हो रहा है।

प्रश्न 3. भारत में उपभोक्ता संस्कृति का विकास किस तरह हो रहा है?

उत्तर–लेखक ने बतलाया है कि पहले हमारे देश में सामन्ती संस्कृति के पोषक राजा, सामन्त, जागीरदार थे, जो विलासी जीवन जीते थे लेकिन अब सम्पन्न लोग, उद्योगपति, राजनेता तथा उच्च अधिकारी वर्ग आदि नये सामन्त हो गये हैं। जो पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर उपभोक्ता संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं।

प्रश्न 4. लेखक ने भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति का विकास करने में किन्हें उत्तरदायी ठहराया है?

उत्तर–लेखक ने भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति का विकास करने में आज के सामन्ती, उद्योगपति, राजनेता तथा उच्च अधिकारियों को उत्तरदायी ठहराया है जो भौतिकता की आड़ में पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण कर भोगवादी आधुनिकता की अन्धी दौड़ में दौड़ रहे हैं।

प्रश्न 5. उपभोक्ता संस्कृति से सबसे बड़ा खतरा क्या है? लिखिए।

उत्तर–उपभोक्ता संस्कृति से मर्यादाएँ एवं नैतिक मूल्य टूट रहे हैं, परमार्थ एवं लोकहित की भावना दब रही है तथा मानवता के विकास का लक्ष्य छूट रहा है। उपभोक्ता संस्कृति केवल भोगवादी है; इससे सामाजिक, पारिवारिक एवं मानवीय संबंध आदि सब कुछ टूट रहे हैं।

प्रश्न 6. उपभोक्ता संस्कृति के सम्बन्ध में गाँधीजी ने क्या कहा था?

उत्तर–उपभोक्ता संस्कृति के दोषों एवं बुराइयों को लक्ष्यकर गांधीजी ने कहा था कि हमें पश्चिम की संस्कृति से वही बात अपनानी चाहिए जो हमारी संस्कृति के लिए हानिकारक न हो। हम स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने दरवाजे-खिड़की खुले रखें, पर अपनी बुनियाद पर कायम रहें।

प्रश्न 7. 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ के आधार पर बताइए कि कौनसी बात सुख बनकर रह गई है?

उत्तर–पहले लोगों को त्याग, परोपकार तथा अच्छे कार्यों से मन को जो सुख-शान्ति मिलती थी उसे सुख मानते थे, पर आज विभिन्न वस्तुओं और भौतिक साधनों के उपभोग को सुख मानने लगे हैं।

प्रश्न 8. 'हम जाने-अनजाने उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं' क्यों?

उत्तर–हम जाने-अनजाने उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं—का आशय है कि वस्तुओं की आवश्यकता और उसकी गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना वस्तुओं को खरीदकर उनका उपभोग कर लेना चाहते हैं। ऐसा लगता है जैसे हम उपभोग के लिए बने हो।

प्रश्न 9. नई जीवन शैली का बाजार पर क्या प्रभाव पड़ा है? उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर–नई जीवन शैली अर्थात् उपभोक्तावाद की पकड़ में आने के बाद व्यक्ति अधिकाधिक वस्तुएँ खरीदना चाहता है। इस कारण बाजार विलासिता की वस्तुओं से भर गए हैं तथा तरह-तरह की नई वस्तुओं से लोगों को लुभा रहे हैं।

प्रश्न 10. पुरुषों का झुकाव सौन्दर्य प्रसाधनों की ओर बढ़ा है। उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–पुरुष पहले प्राय: तेल और साबुन से काम चला लेते थे परन्तु उपभोक्तावाद के प्रभाव के कारण उनका झुकाव सौन्दर्य प्रसाधनों की ओर बढ़ा है। अब वे आफ्टर शेव और कॉलोन का प्रयोग करने लगे हैं।

प्रश्न 11. 'व्यक्तियों की केन्द्रिता' से क्या तात्पर्य है? उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'व्यक्ति की केन्द्रिता' का तात्पर्य है अपने आप तक सीमित होकर रह जाना। अर्थात् व्यक्ति पहले दूसरों के सुख-दु:ख को अपना समझता था तथा उसे बाँटने का प्रयास करता था परन्तु अब स्वार्थवृत्ति के कारण उन्हें दूसरों के दु:ख से कोई मतलब नहीं रह गया है।

प्रश्न 12. संस्कृति की नियन्त्रक शक्तियाँ कौनसी हैं? आज उनकी स्थिति क्या है?

उत्तर–कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जो भारतीय संस्कृति पर नियन्त्रण करती हैं। ये शक्तियाँ हैं—धर्म, परम्पराएँ, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, आस्थाएँ, पूजा-पाठ आदि हैं। नई जीवन शैली के कारण लोगों का इनसे विश्वास उठता जा रहा है और ये शक्तियाँ कमजोर होती जा रही हैं।

प्रश्न 13. विज्ञापन हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है?

उत्तर–विज्ञापनों की भाषा बड़ी ही आकर्षक और भ्रामक होती है। आज उत्पाद को बेचने के लिए हमारे चारों ओर विज्ञापनों का जाल फैला है। इसके प्रभाव में आकर हम विज्ञापित वस्तुओं का उपयोग करने लगे हैं। अब वस्तुओं के चयन में गुणवत्ता पर ध्यान न देकर विज्ञापनों को आधार बनाया है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. भारत की सांस्कृतिक अस्मिता किस कारण से नष्ट हो रही है?

उत्तर–किसी राष्ट्र की पहचान उसकी अपनी संस्कृति होती है जिसका पालन और अनुकरण उस देश के वासी करते हैं। यह पहचान ही सांस्कृतिक अस्मिता कहलाती है। आज हमारी सांस्कृतिक अस्मिता उपभोक्ता संस्कृति के प्रसार के कारण नष्ट हो रही है। भोगवाद की प्रवृत्ति को अपनाने के कारण हम भारतीय अपना धर्म, अपनी आदर्श परम्परायें, अपनी मर्यादाओं की सीमा और नैतिकता को खो रहे हैं।

प्रश्न 2. खिड़की-दरवाजे खुले रखने के लिए किसने कहा था? इसका अर्थ भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–भारतीयों द्वारा अन्धाधुन्ध पाश्चात्य जीवन शैली अपनाने के सम्बन्ध में गाँधीजी ने कहा था कि हमें अपनी बुद्धि-विवेक से सोच-विचार कर पश्चिमी जीवन शैली के उन्हीं अंशों को अपनाना चाहिए जो हमारी भारतीय संस्कृति के लिए घातक सिद्ध न हो। हमें भारतीय संस्कृति को बचाए रखना है। क्योंकि पश्चिमी संस्कृति लोगों में स्वार्थवृत्ति और आत्मकेन्द्रिता बढ़ाती है जिससे लोगों में परोपकार त्याग, दया, सद्भाव, समरता जैसे गुणों का अभाव होता जा रहा है। इसलिए हमें पश्चिमी संस्कृति के उन्हीं विचारों को अपनाना चाहिए जिससे हमारे मानवता के गुणों को कोई हानि न पहुँचे।

प्रश्न 3. उपभोक्तावादी संस्कृति का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ा है? उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–उपभोक्तावादी संस्कृति ने व्यक्ति विशेष को गहराई तक प्रभावित किया है। व्यक्ति इसकी चमक-दमक और आकर्षण से बच नहीं पाया है। व्यक्ति चाहता है कि वह अधिकाधिक सुख-साधनों का प्रयोग करें। इसी आकांक्षा में वह वस्तुओं की गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना उत्पाद के वश में हो गया है। इससे उसके चरित्र में बदलाव आया है। विज्ञापनों की अधिकता से व्यक्ति उन्हीं वस्तुओं को प्रयोग कर रहा है जो विज्ञापनों में बार-बार दिखाई जाती है। व्यक्ति महँगी वस्तुएँ खरीदकर अपनी हैसियत का प्रदर्शन करने लगा है।

प्रश्न 4. उपभोक्तावादी संस्कृति का अन्धानुकरण हमारी संस्कृति के मूल तत्त्वों के लिए कितना घातक है? उपभोक्तावाद की संस्कृति के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–उपभोक्तावादी संस्कृति और भारतीय संस्कृति में कोई समानता नहीं है। यह संस्कृति भोग एवं दिखावे को बढ़ावा देती है। जबकि भारतीय संस्कृति त्याग एवं परोपकार को बढ़ावा देती है। इस तरह हमारी संस्कृति के मूल तत्त्वों पर प्रहार हो रहा है। इसके अलावा स्वार्थवृत्ति, आत्मकेन्द्रिता लाभवृत्ति को बढ़ावा उपभोक्तावादी संस्कृति की देन है। अब हम दिखावे के चक्कर में पड़कर त्यौहारों और विभिन्न कार्यक्रमों में महँगे उपहार देकर अपनी हैसियत जताने लगे हैं। इसके अलावा इन उपहारों और कार्डों को खुद न देकर कोरियर आदि से भेजने लगे हैं। हमारे ये कार्य-व्यवहार भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को नष्ट करते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. उपभोक्तावादी संस्कृति के विभिन्न दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। आप उनका उल्लेख करते हुए इनसे बचने के उपाय बताइए।

उत्तर–उपभोक्तावादी संस्कृति उपभोग और दिखावे की संस्कृति है। लोगों ने इसे बिना सोचे-समझे अपनाया ताकि वे आधुनिक कहला सकें। इस संस्कृति का दुष्परिणाम सामाजिक अशान्ति में वृद्धि, समरसता में कमी, विषमता

आदि रूपों के सामने आने लगा है। इस कारण सामाजिक मर्यादाएँ टूटने लगी हैं, नैतिक मानदण्ड कमजोर पड़ते जा रहे हैं और लोग स्वार्थी होते जा रहे हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्परिणाम से बचने के लिए—

(1) भारतीय संस्कृति को अपनाए रखना चाहिए।

(2) आधुनिक बनने के चक्कर में पश्चिमी संस्कृति का अन्धानुकरण नहीं करना चाहिए।

(3) दिखावे की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।

(4) आवश्यकता और गुणवत्ता को ध्यान में रखकर वस्तुएँ खरीदनी चाहिए।

प्रश्न 2. दिखावे की संस्कृति से समाज को क्या हानि है?

उत्तर–दिखावे की संस्कृति हमारी सामाजिक एकता को खण्डित कर रही है। इस संस्कृति के फलस्वरूप हम दिग्भ्रमित होकर आधुनिकता की चकाचौंध में बुरी तरह फँस गए है। आज की संस्कृति के अनुसार सर्वाधिक सुख अधिकतम उपभोग में है। आप चाहे प्रतिष्ठित हों, या नहीं हों, पर अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना प्रत्येक मानव की मनोवृत्ति बन गई है। प्राचीन समय में धर्म, कर्म तथा मोक्ष को अपने जीवन का लक्ष्य मानने वाले लोग आज चमक-दमक और आकर्षक वस्तुओं के मोह में फँसकर रह गए हैं। दिखावे की संस्कृति हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति की कब्र खोदने का काम कर रही हैं। समय रहते हमें इससे बचने का कठिन संकल्प करना होगा।

रचनाकार परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. लेखक श्यामाचरण दुबे का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर–समाजशास्त्र और मानव विकास के क्षेत्र में श्यामाचरण दुबे के शोधों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। दुबेजी का जन्म मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सन् 1922 में हुआ था। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में उन्होंने अध्यापन कार्य किया। स्वतन्त्र भारत के सर्वोच्च समाज-विज्ञानियों में उनकी गणना होती है। उनकी मुख्य रचनाएँ—'मानव और संस्कृति', 'परम्परा और इतिहास ग्रन्थ', 'संस्कृति तथा शिक्षा', 'समाज और भविष्य', 'भारतीय ग्राम', 'संक्रमण की पीड़ा', 'विकास का समाजशास्त्र', 'समय और संस्कृति'। श्यामाचरण दुबे के लेखन में समाज, संस्कृति और जीवन के ज्वलन्त प्रश्नों को उठाया गया है। ऐसे विषयों पर उनकी तार्किक स्पष्टता साफ दिखाई देती है। श्यामाचरण दुबे की भाषा और शैली पर उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है। उनके विचारों की तरह ही उनकी भाषा भी स्पष्ट और सहज है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिये प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए–

(1)

धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन-शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है एक नया जीवन-दर्शन–उपभोक्तावाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर जोर है चारों ओर। यह उत्पादन आपके लिए है, आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है। 'सुख' की व्याख्या बदल गई है। उपभोग-भोग ही सुख है। एक सूक्ष्म बदलाव आया है नई स्थिति में। उत्पाद तो आपके लिए है, पर आप यह भूल जाते हैं कि जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

प्रश्न 1. सामाजिक जीवन में बदलाव लाने के लिए जिम्मेदार कौन है?

प्रश्न 2. उपभोक्तावाद से समाज में किस तरह के बदलाव आ रहे हैं? स्पष्ट लिखिए।

प्रश्न 3. अब सुख की व्याख्या कैसे बदल गई है?

प्रश्न 4. मनुष्य के बदले हुए चरित्र का क्या लक्षण है?

प्रश्न 5. गद्यांश में किस नए दर्शन की चर्चा है? नए दर्शन के अन्तर्गत किस चीज पर अत्यधिक बल दिया गया है?

प्रश्न 6. धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। वाक्य में रेखांकित शब्द क्या है?

उत्तर–1. सामाजिक जीवन में बदलाव लाने के लिए उपभोक्तावाद का दर्शन जिम्मेदार है।

2. उपभोक्तावाद से हमारे समाज का चरित्र बदल रहा है। इससे हम उत्पाद के प्रति दिन-प्रतिदिन समर्पित होते जा रहे हैं।

3. उपभोक्तावाद के प्रचलन से अब सुख की व्याख्या उपभोग का भोग करना अर्थात् अपनी सुख-सुविधाओं का एकाकी ही भोग करना हो गया है।

4. मनुष्य उत्पादों का भोग नहीं करता बल्कि उत्पाद ही उसके जीवन का भोग करते हैं।

5. गद्यांश में उपभोक्तावादी दर्शन की चर्चा है। नए दर्शन के अन्तर्गत उत्पादन बढ़ाने पर अत्यधिक बल दिया गया है।

6. वाक्य में रेखांकित शब्द क्रिया विशेषण है।

(2)

विलासिता की सामग्रियों से बाजार भरा पड़ा है, जो आपको लुभाने की जी तोड़ कोशिश में निरन्तर लगी रहती हैं। दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को ही लीजिए। टूथ-पेस्ट चाहिए? यह दाँतों को मोती जैसा चमकीला बनाता है, यह मुँह की दुर्गंध हटाता है। यह मसूड़ों को मजबूत करता है और यह 'पूर्ण सुरक्षा' देता है। यह सब करके जो तीन-चार पेस्ट अलग-अलग करते हैं, किसी पेस्ट का 'मैजिक' फार्मूला है। कोई बबूल या नीम के गुणों से भरपूर है, कोई ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत तथा मान्य वनस्पति और खनिज तत्वों के मिश्रण से बना है। जो चाहे चुन लीजिए।

प्रश्न 1. आज बाजार किन चीजों से भरा पड़ा है और क्यों?

प्रश्न 2. इस गद्यांश में कौनसी वस्तु के विज्ञापन की चर्चा की गई है?

प्रश्न 3. 'ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत तथा मान्य' का क्या आशय है?

प्रश्न 4. बाजार हमें किसके माध्यम से आकर्षित कर रहा है?

प्रश्न 5. निर्माताओं द्वारा वस्तुओं के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर बतलाने का क्या उद्देश्य होता है?

प्रश्न 6. उत्पाद को विभिन्न सम्मानित व्यक्तियों यथा ऋषि-मुनियों, अभिनेताओं, खिलाड़ियों से जोड़ने का क्या उद्देश्य है?

उत्तर–1. आज बाजार नई-नई सुख-सुविधा प्रदान करने, विलासिता को उकसाने वाली और मन को लुभाने वाली वस्तुओं से भरा पड़ा है।

2. इस गद्यांश में टूथ-पेस्ट के विज्ञापन की चर्चा की गयी है।

3. इसका आशय है कि हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा बताई गयी सामग्री का उपयोग हमारे द्वारा निर्मित टूथ-पेस्ट में ही किया जाता है।

4. आज विलासिता की सामग्रियों से भरा बाजार हमें लुभावने विज्ञापनों के माध्यम से आकर्षित कर रहा है।

5. इसका उद्देश्य उत्पाद के प्रति उपभोक्ताओं की जिज्ञासा बढ़ाकर अत्यधिक विक्रय कर लाभ कमाना होता है।

6. उत्पाद को विभिन्न सम्मानित व्यक्तियों यथा—ऋषि-मुनियों, अभिनेताओं, खिलाड़ियों से जोड़ने का उद्देश्य विक्रय सम्वर्द्धन करना है।

(3)

सुख-सुविधाओं और अच्छे इलाज के अतिरिक्त यह अनुभव काफी समय तक चर्चा का विषय भी रहेगा, पढ़ाई के लिए पाँचसितारा पब्लिक स्कूल है, शीघ्र ही शायद कालेज और यूनिवर्सिटी भी बन जाए। भारत में तो यह स्थिति अभी नहीं आयी पर अमेरिका और यूरोप के कुछ देशों में आप मरने के पहले ही अपने अन्तिम संस्कार और अनन्त विश्राम का प्रबन्ध भी कर सकते हैं—एक कीमत पर। आपकी कब्र के आसपास सदा हरी घास होगी, मनचाहे फूल होंगे। चाहे तो वहाँ फब्बारे होंगे और मन्द ध्वनि में निरन्तर संगीत भी। कल भारत में भी यह संभव हो सकता है। अमेरिका में आज जो हो रहा है, वह कल भारत में भी आ सकता है। प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों।

प्रश्न 1. उपभोक्तावाद के कारण अब कौन-सी संस्कृति विकसित हो रही है ?

प्रश्न 2. उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सुख-सुविधाओं और अच्छे इलाज के लिए क्या किया जा रहा है?

प्रश्न 3. अमेरिका में आज ऐसा क्या हो रहा है जिसके अनुकरण की चर्चा भारत में भी हो रही है?

प्रश्न 4. प्रतिष्ठा के हास्यप्रद रूप से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 5. भारत में कौनसी स्थिति अभी नहीं आई है?

प्रश्न 6. लेखक गद्यांश में किस समाज की झलक प्रस्तुत कर रहा है। यह समाज किसका है?

उत्तर–1. उपभोक्तावाद के कारण अब अन्धानुकरण की प्रवृत्ति, सुख-भोग की लालसा एवं पाँचसितारा संस्कृति विकसित हो रही है।

2. पाँचसितारा होटलों और पाँचसितारा अस्पतालों का निर्माण एवं उपयोग किया जा रहा है।

3. अमेरिका में लोग अपने अन्तिम संस्कार और अनंत विश्राम की व्यवस्था करने लगे हैं, आने वाले समय में भारत में भी यह सब होने लगेगा।

4. अपने अन्तिम संस्कार और अनंत विश्राम के लिए अच्छा प्रबन्ध करना ऐसी झूठी प्रतिष्ठा है जिसे सुनकर हँसी आती है।

5. मरने से पहले अन्तिम संस्कार का प्रबन्ध कर लिया जाए, भारत में अभी ऐसी स्थिति नहीं आई है।

6. लेखक गद्यांश में उपभोक्तावादी समाज की झलक प्रस्तुत कर रहा है। यह समाज विशिष्ट जनों का है।

(4)

हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें, परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नयी संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियन्त्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य-निर्देशित होता जा रहा है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तन्त्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं। उनमें सम्मोहन की शक्ति है, वशीकरण की भी।

प्रश्न 1. 'सांस्कृतिक अस्मिता' का आशय क्या है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2. आज हमारी मान्य परम्पराओं का अवमूल्यन और आस्थाओं का क्षरण किन कारणों से हो रहा है?

प्रश्न 3. छद्म आधुनिकता का आशय क्या है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4. हम किसके सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं? बताइए।

प्रश्न 5. उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी संस्कृति को कैसे नुकसान पहुँचाया है?

प्रश्न 6. हमारी नई संस्कृति की क्या विशेषता है?

उत्तर–1. किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी अपनी संस्कृति होती है। यह पहचान ही 'सांस्कृतिक अस्मिता' कहलाती है।

2. समाज में प्रसारित हो रही उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हो रहा है।

3. छद्म आधुनिकता का आशय—आधुनिक होने का दिखावा। हम सभ्य भारतीय पश्चिमी जीवन शैली को अपना रहे हैं।

4. हम आज पश्चिमी देशों अर्थात् अमेरिका और यूरोप के सांस्कृतिक उपनिवेश (गुलाम) बन रहे हैं।

5. उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हमारी परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है। हमारी आस्थाओं का क्षरण हुआ है। हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं।

6. हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है।

(5)

समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। जीवन-स्तर का यह बढ़ता अन्तर आक्रोश और अशान्ति को जन्म दे रहा है। जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशान्ति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास हो ही रहा है, हम लक्ष्य-भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट् उद्देश्य पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदण्ड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति-केन्द्रिकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। किस बिन्दु पर रुकेगी यह दौड़?

प्रश्न 1. आज हम लक्ष्य-भ्रम से किस कारण पीड़ित हैं?

प्रश्न 2. व्यक्ति-केन्द्रिकता का क्या अर्थ है?

प्रश्न 3. किन कारणों से समाज में आक्रोश और अशान्ति फैल रही है?

प्रश्न 4. उपभोक्तावादी संस्कृति का क्या दुष्प्रभाव दिखाई दे रहा है? बताइए।

प्रश्न 5. समाज के विभिन्न वर्गों के बीच दूरी का क्या कारण है?

प्रश्न 6. 'परमार्थ' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–1. उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम भारतीय अपनी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास कर रहे हैं। इसी कारण अपने विराट् उद्देश्य से पीछे हटकर लक्ष्य-भ्रम से पीड़ित हो रहे हैं।

2. व्यक्ति-केन्द्रिकता का अर्थ है—मनुष्य का अपने स्वार्थ तक ही सीमित रह जाना।

3. आपसी संबंधों में आई दूरियाँ और आर्थिक स्तर पर बढ़ता अन्तर के कारण मानव-मन में आक्रोश और अशान्ति पैदा हो रही है।

4. इससे हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास, मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदण्ड कमजोर पड़ रहे हैं, व्यक्तिवाद का बोलबाला दिखाई दे रहा है।

5. दिखावे की संस्कृति और असमानता समाज के विभिन्न वर्गों के बीच दूरी का मूल कारण है। उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग का अन्तर समाज में अशान्ति का एक बड़ा कारण है।

6. 'परमार्थ' से अभिप्राय दूसरों की भलाई है।

4. साँवले सपनों की याद

(जाबिर हुसैन)

लेखक-परिचय—प्रस्तुत संस्मरण के लेखक जाबिर हुसैन का जन्म सन् 1945 में बिहार के नालन्दा जिले के नौनहीं राजगीर गाँव में हुआ। ये अंग्रेजी भाषा और साहित्य के प्राध्यापक रहे तथा उन्होंने सक्रिय राजनीति में भी भाग लिया। उन्हें हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में समान अधिकार था। वे तीनों भाषाओं में अपना लेखन करते रहे। उन्होंने संघर्षरत आम आदमी तथा विशिष्ट व्यक्तित्वों पर चर्चित डायरियाँ लिखकर इस विधा को अभिनव रूप दिया है।

पाठ-सार—जाबिर हुसैन द्वारा लिखित पाठ 'साँवले सपनों की याद' डायरी शैली में लिखा गया संस्मरण है। लेखक के अनुसार सालिम अली सुप्रसिद्ध पक्षी- विज्ञानी एवं प्रकृति-प्रेमी थे। वे पक्षियों की खोज में वनों में दूर तक भटकते रहते थे और कन्धों पर सैलानियों की तरह अन्तहीन सफर का बोझ लेकर चलते थे। वे कहते थे कि लोग पक्षियों और प्रकृति को अपनी नजर से अर्थात् आदमी की नजर से देखते हैं। यह उनकी भूल है। पक्षियों के मधुर कलरव का संगीत कभी समाप्त नहीं हो पाता। श्रीकृष्ण की बाँसुरी का मधुर स्वर आज भी जादू की तरह वृन्दावन में गूँज रहा है। सालिम अली ने पक्षियों एवं प्रकृति के सम्बन्ध में तत्कालीन प्रधानमंत्री से मिलकर अपनी योजना प्रस्तुत की, परन्तु उनकी वह योजना पूरी नहीं हुई। सालिम अली पक्षी-प्रेमी लॉरेंस के समान थे। बचपन में उनकी एयरगन से नीले कण्ठ की एक गौरैया घायल होकर गिरी, वह घटना उन्हें जीवनभर जिन्दगी की नयी ऊँचाइयों की ओर ले जाती रही। प्रकृति और पक्षियों के सम्बन्ध में उन्होंने जो जानकारियाँ एकत्र कीं तथा जो अनुभव प्राप्त किये, वे उनकी व्यक्तित्व गरिमा के परिचायक माने जाते हैं।

कठिन-शब्दार्थ—परिंदे = पक्षी। सैलानी = यात्री। पलायन = दूसरी जगह चले जाना। जिस्म = शरीर। आबशारों = निर्भर। शोख़ = तेज़, तर्रार। छाली = सुपारी। वाटिका = बाग। हिदायत = निर्देश। हिफ़ाजत = सुरक्षा। कायल = प्रशंसक, मुग्ध। पसरी = फैली। आँखें नम करना = आँसू आना। संकल्प = इरादा। जटिल = कठिन। पहेली = रहस्य। यायावरी = घुमक्कड़ स्वभाव। सुराग = खोज़।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी-प्रेमी बना दिया?

उत्तर—बचपन में सालिम अली की एयरगन से नीले कण्ठ वाली एक गौरैया घायल होकर गिरी थी। उसी घटना ने उनकी जीवन-दिशा को बदल दिया। तब गौरैया आदि पक्षियों की देखभाल, सुरक्षा और खोजबीन में जुट गये। इसके बाद वे पक्षियों की खोज में नये-नये स्थानों पर जाते रहे और पक्षी प्रेमी बन गये।

प्रश्न 2. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से सम्बन्धित किन सम्भावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

उत्तर—सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के सामने केरल की 'साइलेंट वैली' सम्बन्धी खतरों की बात उठाई। सालिम अली ने इन रेगिस्तानी हवाओं के कुप्रभावों, जैसे—क्षेत्र का पक्षी विहीन हो जाना, पेड़-पौधों का नष्ट हो जाना, गन्दगी का जमावड़ा लग जाना, क्षेत्र का प्राणीविहीन हो जाना इत्यादि बातों का लेखा-जोखा उनके सामने पेश किया। चौधरी साहब ग्रामीण पृष्ठभूमि के होने के कारण सालिम अली की बातें सुनकर उनकी आँखें नम हो गयी होंगी।

प्रश्न 3. लॉरेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि "मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है?"

उत्तर—डी.एच. लॉरेंस प्रकृति-प्रेमी कवि थे। वे अपनी छत पर बैठकर गौरैया के साथ काफी समय बिताते थे। इसी कारण लॉरेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा कहा होगा कि मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेंस के बारे में बहुत कुछ जानती है। फ्रीडा का आशय लॉरेंस के पक्षी-प्रेम को स्पष्ट करना था।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) वो लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिन्दगी का प्रतिरूप बन गये थे।

उत्तर–आशय–लॉरेंस का जीवन बहुत सीधा-सादा था, प्रकृति के प्रति उनके मन में जिज्ञासा थी। सालिम अली भी लॉरेंस की तरह प्रकृति प्रेमी थे। वे प्रकृति से इतना घुल-मिल गये थे कि उनका जीवन ही जैसे प्रकृतिमय हो गया था। उनका जीवन भी नैसर्गिक था, तो प्रकृति के प्रति भी वे नैसर्गिक बन गये थे।

(ख) कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा?

उत्तर–आशय–सालिम अली रूपी पक्षी मौत की गोद में सो चुका है। यदि कोई व्यक्ति अपने दिल की धड़कन उनके दिल में तथा अपने शरीर की गर्मी उनके शरीर में डाल भी दे, तो उन्हें जीवित नहीं कर सकता। वे जन्मजात प्रकृति-प्रेमी एवं पक्षी-प्रेमी थे, वे मौलिक थे, इसी कारण किसी और के दिल की धड़कन से उनके सपने पूरे नहीं हो सकते।

(ग) सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।

उत्तर–आशय–टापू सीमित आकार का होता है। टापू बन्धन तथा सीमा का प्रतीक है और सागर की कोई सीमा नहीं होती है। सालिम अली अपने कार्य-क्षेत्र में टापू की तरह सीमित नहीं रहे। वे तो पक्षियों की खोज में प्रकृति के विशाल परिवेश में घूमते रहे और अपना कार्य-क्षेत्र विस्तृत बनाकर अथाह सागर के समान प्रकृति से जो-जो अनुभव प्राप्त किए और उन्हें संजोया।

प्रश्न 5. इस पाठ के आधार पर लेखक की भाषा-शैली की चार विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–प्रस्तुत पाठ के आधार पर लेखक की भाषा-शैली की विशेषताएँ निम्नांकित हैं—

(1) मिश्रित भाषा का प्रयोग–लेखक ने प्रस्तुत संस्मरण में हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया है। हिन्दी के तत्सम एवं तद्भव शब्दों का मिला-जुला प्रयोग सशक्त भावाभिव्यक्ति के अनुकूल है।

(2) सुगठित वाक्य-योजना–संस्मरण-लेखन में व्यक्तित्व-चित्रण आदि को लेकर लम्बे और सुगठित वाक्यों का प्रयोग किया गया है। इससे वाक्य-योजना भावानुरूप दिखाई देती है। जैसे—"सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हुजूम मौत की खामोश वादी की तरफ अग्रसर है।"

(3) मुहावरों व अलंकारों का प्रयोग–प्रस्तुत संस्मरण में भावाभिव्यक्ति एवं भाषा सौन्दर्यवर्द्धन की दृष्टि से मुहावरों और अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(4) शैली-विधान–प्रस्तुत संस्मरण में मुख्यतया भावात्मक शैली ही अपनाई गई है, परन्तु कहीं पर प्रश्न-शैली, ललित शैली तथा आवेग शैली का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 6. इस पाठ में लेखक ने सालिम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर–सालिम अली सुप्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी, विचारशील व्यक्ति एवं प्रकृति-प्रेमी थे। उन्हें पक्षियों से विशेष लगाव था। वे हमेशा गले में या आँखों पर दूरबीन लगाकर पक्षियों के प्रत्येक क्रिया-कलाप को निहारते रहते थे। वे पर्यावरण-प्रेमी एवं घुमक्कड़ स्वभाव के थे। वे पहाड़ों, जंगलों, झरनों को उन्हीं की नजर से देखते थे और पक्षियों के मधुर कलरव को संगीत के समान रोमांचकारी मानते थे। वे अद्वितीय 'बर्ड वाचर' थे और प्रकृति के संरक्षण के लिए चिन्तित भी रहते थे। सालिम अली वस्तुत: सरल हृदय के मानव थे और अपने लक्ष्य को लेकर जिन्दगी की ऊँचाइयों को छूने में सफल रहे थे।

प्रश्न 7. 'साँवले सपनों की याद' शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–यह रचना लेखक जाबिर हुसैन द्वारा अपने मित्र सालिम अली की याद में लिखा गया संस्मरण है। इस संस्मरण में सालिम अली को जीवन भर सुनहरे पक्षियों की दुनिया में खोया रहने वाला बताया गया है। वे प्रकृति परिवेश और पक्षियों की सुरक्षा और खोज के सपनों में खोये रहते थे। श्रीकृष्ण की बाँसुरी का मधुर स्वर और यमुना का साँवला जल उन्हें सपनों की याद दिला जाता था। इसी कारण वे सपनों के मिथक बन गये हैं। अत: उन्हें लक्ष्यकर लिखे गये संस्मरण का शीर्षक सर्वथा उचित एवं सार्थक है। यह शीर्षक रहस्यात्मक एवं जिज्ञासावर्द्धक भी है।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 8. प्रस्तुत पाठ सालिम अली की पर्यावरण के प्रति चिन्ता को भी व्यक्त करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए आप कैसे योगदान दे सकते हैं?

उत्तर–पर्यावरण बचाने या संरक्षण के लिए हम अग्र योगदान कर सकते हैं–

(1) हम अपने आसपास हरियाली बढ़ाने के लिए पौधों-पादपों का रोपण कर इस काम के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें।

(2) हम पशु-पक्षियों एवं वन्य जीवों की रक्षा करें। छोटे पक्षियों के लिए दाना-पानी की यथासंभव व्यवस्था करें।

(3) हम यथासम्भव प्लास्टिक की थैलियों या अन्य ऐसी दूषित चीजों का उपयोग न के बराबर करें।

(4) कूड़ा-कर्कट घर के सामने या खुले में न फेंकें, उसे सिर्फ कूड़ेदान में ही डालें। गन्दगी न फैलने दें।

(5) प्रकृति का अवैध दोहन-खनन रोकें, पर्यावरण के प्रति जन-चेतना जगाने का प्रयास करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. "वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा।" 'वह पक्षी' कहा गया है—
   (क) जाबिर हुसैन को (ख) सैलानियों को
   (ग) गौरेया चिड़िया को (घ) सालिम अली को
2. वृंदावन में रास लीला रची थी—
   (क) गोपियों ने (ख) कृष्ण ने (ग) सालिम अली ने (घ) ग्वालों ने
3. सालिम अली थे—
   (क) कृषि विज्ञानी (ख) प्रकृति विज्ञानी (ग) पक्षी विज्ञानी (घ) दूरबीन विज्ञानी
4. लॉरेंस की अंतरंग संगिनी बन गई थी—
   (क) छत पर बैठने वाली गौरेया (ख) फ्रीडा लॉरेंस
   (ग) एयरगन (घ) तहमीना
5. किस पक्षी ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया था?
   (क) कबूतर (ख) मैना (ग) गौरैया (घ) कोयल
6. सालिम अली की पुस्तक का क्या नाम था?
   (क) पक्षियों के देश में (ख) फाल ऑफ द स्पैरो (ग) प्रकृति के पुत्र (घ) पर्यावरण सुरक्षा
7. प्रकृति से सालिम अली का सम्बन्ध कैसा था?
   (क) प्रकृति उनके लिए उपयोग की वस्तु थी (ख) वे प्रकृति पर विजय पाना चाहते थे
   (ग) वे प्रकृति का दोहन कर सफल होना चाहते थे (घ) वे प्रकृति का आत्मीय हिस्सा बनकर रहते थे
8. 'सपनों के गीत गाना' का तात्पर्य है?
   (क) अपना पसंदीदा कार्य करना (ख) नींद में गाने गाना
   (ग) झूठी बातें करना (घ) गाने में सपनों का वर्णन करना
9. सालिम अली को एक और नाम से जाना जाता है। बताइए वह नाम क्या है?
   (क) जीव वैज्ञानिक (ख) वर्ड ऐनजल (ग) बर्ड वाचर (घ) बर्ड हंटर
10. डी.एच. लॉरेंस का स्वभाव कैसा था?
   (क) प्रकृति प्रेमी (ख) सीधे-सादे (ग) खुले (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर-माला–1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग) 6. (ख) 7. (घ) 8. (क) 9. (ग) 10. (घ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. 'आबसार' का अर्थ .... है। (नदी/झरना)
2. 'हुजूम' में सबसे आगे .... है। (नेता/सालिम अली)
3. सालिम अली को .... की बीमारी थी। (क्षय/कैंसर)
4. सालिम अली की आँखों पर उम्र भर .... चढ़ा रहा। (चश्मा/दूरबीन)
5. 'फाल ऑफ ए स्पेरो' .... की आत्मकथा है। (महात्मा गाँधी/सालिम अली)
6. जो लोग उनके .... स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित है। (भ्रमणशील/आलसी)

उत्तर–1. झरना 2. सालिम अली 3. कैंसर 4. दूरबीन 5. सालिम अली 6. भ्रमणशील।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. वृन्दावन क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर–वृन्दावन भगवान कृष्ण की लीला स्थली होने से प्रसिद्ध है।

प्रश्न 2. तहमीना कौन थी?

उत्तर–तहमीना सालिम अली की पत्नी थी।

प्रश्न 3. साइलेंट वेली कहाँ है?

उत्तर–साइलेंट वेली केरल प्रान्त में है।

प्रश्न 4. चौधरी चरणसिंह कौन थे?

उत्तर–चौधरी चरणसिंह भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री थे।

प्रश्न 5. 'यायावरी' क्या होती है?

उत्तर–यायावरी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति होती है।

प्रश्न 6. सालिम अली पक्षियों को किन नजरों से देखना चाहते थे?

उत्तर–सालिम अली को पक्षियों से बहुत प्रेम था। वे पक्षियों को उनकी ही नजर से देखते थे।

प्रश्न 7. सालिम अली किसकी तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं?

उत्तर–प्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी सालिम अली उस वन पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं।

प्रश्न 8. मनुष्य पक्षियों की मधुर आवाज सुनकर रोमांच अनुभव क्यों नहीं कर सकता?

उत्तर–पक्षी कलरव और अपनी मधुर आवाज से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है लेकिन मनुष्य उनकी भाषा को नहीं समझता है।

प्रश्न 9. वृन्दावन किसके जादू से खाली नहीं होता?

उत्तर–वृन्दावन कृष्ण की बाँसुरी की आवाज के जादू से कभी खाली नहीं होता।

प्रश्न 10. सालिम अली की मृत्यु किस बीमारी से हुई?

उत्तर–सालिम अली की मृत्यु कैंसर बीमारी से हुई थी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. लेखक ने भारत के किस प्रधानमंत्री को गाँव की मिट्टी से जुड़ा हुआ माना है और क्यों?

उत्तर–लेखक ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह को गाँव की मिट्टी से जुड़ा हुआ माना है, क्योंकि वे ग्रामीण जीवन से जुड़े हुए थे। इसलिए वे खेती, पर्यावरण, मिट्टी तथा पशु-पक्षियों आदि की समस्याओं के बारे में भली प्रकार से जानते थे।

प्रश्न 2. सालिम अली के अनुसार पक्षियों एवं प्रकृति के विषय में लोग क्या भूल जाते हैं?

उत्तर–सालिम अली के अनुसार लोग भूलकर पक्षियों को आदमी की नज़र से देखते हैं। वे प्रकृति को अर्थात् पहाड़ों, वनों, झरनों आदि को प्रकृति की नज़र से नहीं देखते हैं। आदमी की नज़र से देखने में उनका सौन्दर्य तथा मधुर संगीत अच्छी तरह नहीं प्रतीत होता है। परन्तु उनकी नज़र से देखने पर सब कुछ रोमांचकारी लगता है।

प्रश्न 3. ''इस हुजूम के आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली।'' यहाँ किस सफ़र का उल्लेख हुआ है?

उत्तर–यहाँ लेखक ने सालिम अली की अन्तिम यात्रा का उल्लेख किया है। वे पिछले सफ़रों में पक्षियों के बारे में जानकारी लेकर लौट आते थे, परन्तु आज स्वयं पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे थे। इस सफ़र में उनका शव सबसे आगे चल रहा था और उसके पीछे शवयात्रा में सम्मिलित लोगों का हुजूम था।

प्रश्न 4. सालिम अली ने अपनी आत्मकथा का नाम क्या रखा था? और क्यों?

उत्तर–सालिम अली ने अपनी आत्मकथा का नाम 'फाल ऑफ ए स्पैरो' अर्थात् 'एक गोरैया का गिरना' रखा था, क्योंकि बचपन में उनकी एयरगन से नीले कण्ठ वाली एक गोरैया घायल होकर गिरी थी, जिससे उनका पक्षी-प्रेम जागृत हुआ और उसी में उनका सारा जीवन समर्पित रहा।

प्रश्न 5. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री से किस उद्देश्य से मुलाकात की थी? इसका प्रधानमंत्री पर क्या असर पड़ा था?

उत्तर–सालिम अली ने 'साइलेंट वैली' के पर्यावरण को बचाने का अनुरोध करने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री से मुलाकात की। पर्यावरण के सम्भावित खतरों का उन्होंने जो चित्र सामने रखा, उससे प्रधानमंत्री पर यह असर हुआ कि उनकी आँखें नम हो गईं और उन्होंने सालिम अली को सहयोग का आश्वासन दिया।

प्रश्न 6. लॉरेन्स की मृत्यु के बाद पत्नी फ्रीडा ने उनके बारे में क्या कहा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–लॉरेन्स अतीव सरल हृदय के, निर्मल स्वभाव के थे कि उनके बारे में अपने शब्दों को व्यक्त करना मेरे

लिए कठिन है। वे ऐसे प्रकृति-प्रेमी थे कि उनकी भावनाओं का निरूपण सहज भावुकता से ही हो सकता है। उनके बारे में मुझसे ज्यादा छत पर बैठने वाली गोरैया अधिक जानती है।

प्रश्न 7. सालिम अली की मौत कैसे हुई? उनकी आँखों पर चढ़ी दूरबीन कब उतरी? बताइए।

उत्तर–सालिम अली ने जीवन में लम्बी यात्राएँ की थीं, उन्हें कैंसर हो गया था और उस जानलेवा बीमारी से लगभग नब्बे वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। जीवन के अन्तिम समय तक उनकी आँखों पर दूरबीन चढ़ी रही वह सालिम अली की मौत के बाद ही उतरी थी।

प्रश्न 8. 'साँवले सपनों की याद' पाठ में वर्णित वृन्दावन में सुबह क्या अनुभूति होती है और क्यों?

उत्तर–लेखक का मानना है कि आज भी यदि कोई वृन्दावन जाए तो हर सुबह, सूरज निकलने से पहले ऐसी अनुभूति होती है कि अभी गलियों की भीड़ को चीरते हुए अचानक श्रीकृष्ण सामने आकर बंशी-वादन करने लग जाएँगे। क्योंकि भारत के सभी लोग आज भी कृष्ण की लीलाओं को अपने मन में बसाए हुए हैं।

प्रश्न 9. 'पंखों पर सवार साँवले सपनों का हुजूम' किसे और क्यों कहा गया है? 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर–पक्षी-प्रेमी एवं पर्यावरणविद् सालिम अली को 'पंखों पर सवार साँवले सपनों का हुजूम' कहा गया है। क्योंकि सालिम अली जीवनभर पक्षियों के जीवन का अध्ययन करने के लिए घुमक्कड़ों की तरह भ्रमण करते रहे। पक्षियों को निहारने के लिए वे सदा गले में दूरबीन लटकाये यायावरी करते रहते थे।

प्रश्न 10. 'मौत की खामोश वादी' किसे कहा गया है? इसे घाटी की ओर किसे ले जाया जा रहा है?

उत्तर–'मौत की खामोश वादी' कब्रिस्तान को कहा गया है। इस घाटी की ओर प्रसिद्ध पक्षी प्रेमी सालिम अली को ले जाया जा रहा है जो लगभग नब्बे वर्ष की उम्र में कैंसर नामक बीमारी का शिकार हो गए और मृत्यु की गोद में सो गए हैं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. "मेरी आँखें नम हैं।" लेखक ने इसका क्या कारण बताया?

उत्तर–सुप्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी सालिम अली का सारा जीवन प्रकृति एवं पक्षियों के प्रेम में व्यतीत हुआ। वे प्रतिदिन अपने गले में लम्बी दूरबीन लटकाकर अपनी खोजपूर्ण यात्रा पर निकल पड़ते थे। इसलिए ऐसा प्रतीत होता था कि सायंकाल तक वे लौट आयेंगे, परन्तु इस बार वे मृत्यु के आगोश में इस तरह समा गये कि फिर लौटकर नहीं आ सके। इस तरह उनकी मृत्यु से उत्पन्न दुःख और अवसाद के कारण लेखक की आँखें नम हो गईं।

प्रश्न 2. 'मनुष्य को प्रकृति को उसी की नजर से देखना चाहिए।' इससे क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–प्रकृति को उसी की नजर से देखने का तात्पर्य यह है कि हमें प्रकृति के साथ ऐसा आत्मीय सम्बन्ध रखना चाहिए, जिससे उसे नुकसान न पहुँचे। हमें प्रकृति को फलने-फूलने और संवर्धित होने का पूरा अवसर देना चाहिए तथा प्रकृति का विदोहन इतना अधिक नहीं करना चाहिए, जिससे सारा पर्यावरण प्रदूषित हो जावे। प्रकृति का शोषण एवं उत्पीड़न नहीं करना चाहिए और उससे मानवीय संवेदना रखनी चाहिए।

प्रश्न 3. 'साँवले सपनों की याद' पाठ से क्या प्रेरणा मिलती है?

अथवा

'साँवले सपनों की याद' पाठ का क्या प्रतिपाद्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'साँवले सपनों की याद' नामक संस्मरण में सुप्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी, प्रकृति-प्रेमी और पर्यावरण विज्ञानी सालिम अली का व्यक्ति-चित्र उभारा गया है। इससे यह प्रेरणा मिलती है कि हमें पक्षियों तथा अन्य जीव-जन्तुओं से प्रेम करना चाहिए। हमें पशु-पक्षियों के व्यवहार का ज्ञान कर उनके संवर्धन का प्रयास करना चाहिए। साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिन्ता रखनी चाहिए। पर्यावरण की सुरक्षा से ही प्रकृति का विकास होता है तथा जीव-जन्तुओं को स्वच्छन्द जीवन मिलता है। हम जो कार्य प्रारम्भ करें, उसे दृढ़ता से आगे बढ़ाएँ।

प्रश्न 4. सालिम अली ने पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या प्रयास किये?

उत्तर–सालिम अली पक्षी-प्रेमी के साथ पर्यावरण-प्रेमी भी थे। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण को लक्ष्यकर ये प्रयास किये–

1. उन्होंने भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री से मिलकर केरल की साइलेंट वैली के पर्यावरण को उजड़ने से रोकने की प्रार्थना की।

2. उन्होंने हिमालय और लद्दाख की बर्फीली धरती पर रहने वाले पक्षियों के लिए कल्याणकारी कार्य किये।

3. उन्होंने जीवन भर पक्षियों के विषयों में खोजें कीं तथा उनके जीवन के बारे में अध्ययन किया।

प्रश्न 5. वृन्दावन में कृष्ण की मुरली का जादू हमेशा क्यों बना रहता है? 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर बताइये।

उत्तर–वृन्दावन कृष्ण की लीलाभूमि रहा, इस कारण भारतीयों के मन में वहाँ पर कृष्ण द्वारा की गई रास-लीला एवं मुरली का सुरीला स्वर बार-बार गूँजता रहता है। जब भी भक्त-यात्री वृन्दावन की गलियों में घूमने जाते हैं, वहाँ यमुना-तट पर आते हैं, तो उन्हें कृष्ण के मुरली-वादन की मधुर अनुभूति होने लगती है और लगता है कि अभी कहीं से निकलकर कृष्ण प्रकट हो जायेंगे और मधुर स्वर में मुरली बजाना शुरू कर देंगे। इसी कारण वृन्दावन में श्रद्धालु सदैव आते रहते हैं और मुरली का जादू हमेशा बना रहता है।

प्रश्न 6. मनुष्य को प्रकृति किस नजर से देखनी चाहिए? पठित पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर–मनुष्य का दृष्टिकोण प्रायः सीमित स्वार्थों पर आधारित रहता है। इस कारण मनुष्य प्रकृति और उसके अन्य अंगों-पर्वतों, वनों, झरनों, तालाबों, जलाशयों, वन्य पशुओं तथा पक्षियों को प्रकृति की नजर से नहीं देखते हैं। वे उन्हें अपनी नजर से अर्थात् अपनी स्वार्थपूर्ति की लालसा से देखते हैं। ऐसी नजर रखने से मनुष्य न तो प्रकृति के संरक्षण की चिन्ता करता है और न पक्षियों के मधुर संगीत का आनन्द ले सकता है। अतः हमें प्रकृति की संरक्षा, खुशहाली तथा पर्यावरण-सुरक्षा की चिन्ता करनी चाहिए।

प्रश्न 7. ''सालिम अली, तुम लौटोगे ना!'' संस्मरण के अन्त में लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर–लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है कि सालिम अली रोजाना गले में दूरबीन लटकाये और कन्धे में झोला डाले पक्षियों के विषय में जानकारी करने चले जाते थे। वे पक्षियों के विषय में दुर्लभ जानकारी लेकर लौट आते थे। इस तरह का दैनिक कार्य होने से लेखक को आज भी यह एहसास होता है कि सालिम अली शायद अभी अपने सफर पर गये हैं और कुछ समय बाद लौट आयेंगे। जबकि सालिम अली संसार से चिर-यात्रा पर चले गये हैं। अतः अपनी संवेदना प्रकट करने के लिए लेखक ने ऐसा कहा है।

प्रश्न 8. यमुना नदी का साँवला पानी आज भी किस घटनाक्रम की याद दिला देता है?

उत्तर–यमुना नदी का साँवला पानी आज भी उन सभी घटनाओं की याद दिला देता है, जो कभी कृष्ण ने वृन्दावन में रास-लीला रची थी, शोख गोपियों को अपनी शरारत का निशाना बनाया था, गोपियों के माखन के बर्तन फोड़े थे और यमुना तट के उपवनों में विश्राम किया था तथा अपनी वंशी की मधुर संगीत-लहरी से सारे भू-भाग को सरस बना दिया था। इस प्रकार यमुना के जल-प्रवाह को देखकर कृष्ण की सभी मधुर लीलाओं तथा घटनाक्रम की याद ताजा हो जाती है।

प्रश्न 9. 'बर्डवाचर' किसे कहते हैं। सालिम अली कैसे बर्डवाचर थे?

उत्तर–पक्षियों को निहारने वाले तथा उनकी प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखने वाले को 'बर्डवाचर' कहते हैं। बर्डवाचर पक्षियों की बोलियों, उनके खान-पान, परिचरण एवं स्वभाव आदि सभी बातों पर गहरी रुचि रखते हैं। सालिम अली भी प्रसिद्ध बर्डवाचर थे। वे पक्षियों को उन्हीं की नजर से देखते थे, न कि मानवीय नजरों से। वे पक्षियों की खुशहाली एवं सुरक्षा के लिए चिन्तित रहते थे और सारे दिन पक्षियों के क्रियाकलापों को देखने के लिए भटकते रहते थे।

प्रश्न 10. पक्षी-विज्ञानी सालिम अली का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

उत्तर–प्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी सालिम अली का जन्म 12 नवम्बर, 1896 को हुआ था। उन्होंने अपनी आत्मकथा 'फाल ऑफ ए स्पैरो' नाम से लिखी। उसमें उन्होंने पक्षियों से सम्बन्धित रोचक किस्से लिखे। वे सारे भारत में, अनेक वन्य-घाटियों एवं अरण्यों में पक्षियों की खातिर दूरबीन लेकर घूमते रहे और अपना सारा जीवन इसी में समर्पित कर दिया। वे भ्रमणशील और यायावरी स्वभाव के थे। उनका निधन 20 जून, 1987 को हुआ।

प्रश्न 11. डी.एच. लॉरेंस कौन थे? उनकी क्या विशेषता थी?

उत्तर–डी.एच. लॉरेंस बीसवीं सदी के अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार थे। उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं, उनकी कविताएँ प्रकृति सम्बन्धी होने से विशेषकर उल्लेखनीय हैं। लॉरेंस का प्रकृति से गहरा लगाव और गहन सम्बन्ध रहा। वे मानते थे कि मानव जाति एक उखड़े हुए महान् वृक्ष की भाँति है, जिसकी जड़ें हवा में फैली हुई हैं। वे सालिम अली की तरह पक्षी-प्रेमी थे और अपने मकान की छत पर बैठने वाली गौरैयाओं को लगातार निहारते रहते थे।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर बताइए कि सामान्य लोग पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान किस तरह दे सकते हैं?

उत्तर–'साँवले सपनों की याद' पाठ से ज्ञात होता है कि सालिम अली प्रकृति और उससे जुड़े विभिन्न अंगों— नदी, पहाड़, झरने, आबशारों आदि को प्रकृति की निगाह से देखते थे और उन्हें बचाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे।

उन्होंने केरल साइलेंट वैली को बचाने का अनुरोध किया। इसी तरह सामान्य लोग भी अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए विभिन्न रूपों में अपना योगदान दे सकते हैं, जैसे—

(1) अधिकाधिक पेड़ लगाकर
(2) पेड़ को कटने से बचाकर
(3) प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करके
(4) अपने आसपास साफ-सफाई करके
(5) जल स्रोतों को दूषित होने से बचाकर
(6) वन्य जीवों तथा पक्षियों की रक्षा करके आदि।

प्रश्न 2. 'साँवले सपनों की याद ' पाठ के आधार पर सालिम अली के किन्हीं तीन गुणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर सालिम अली के तीन गुण इस प्रकार हैं—

1. पक्षी-प्रेमी–सालिम अली जीवन भर नये-नये पक्षियों की खोज में, उनकी आदतों आदि के बारे में खोज करते रहे। वे पक्षी-प्रेमी के साथ ही प्रकृति-प्रेमी भी थे, वे सरल हृदय एवं करुणा के पुजारी थे।

2. पर्यावरण के रक्षक–सालिम अली पर्यावरण प्रदूषण को लेकर चिन्तित रहते थे और पर्यावरण-रक्षा के लिए वे तत्कालीन प्रधानमन्त्री से भी मिले थे।

3. शारीरिक दुर्बलता–सालिम अली दुबली-पतली काया वाले व्यक्ति थे, जिनकी आयु लगभग नब्बे वर्ष थी। पक्षियों की खोज में की गई लम्बी-लम्बी यात्राओं की थकान से उनका शरीर कमजोर हो गया था। वे अपनी आँखों पर प्राय: दूरबीन चढ़ाए रखते थे।

रचनाकार परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. जाबिर हुसैन का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर–जाबिर हुसैन का जन्म सन् 1945 में बिहार प्रदेश में हुआ। ये अंग्रेजी भाषा और साहित्य के अध्यापक के साथ राजनीतिज्ञ और श्रेष्ठ लेखक भी हैं। डोली बीनी का मजार, जो आगे हैं, अतीत का चेहरा, लोगों, एक नदी रेत भरी आदि इनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। जाबिर हुसैन ने राजनैतिक-सामाजिक जीवन में आम आदमी के संघर्ष को निकटता से महसूस किया है। इस अनुभव को उन्होंने अपने साहित्य में भी प्रकट किया है। उनके द्वारा संघर्षरत आम आदमी और विशिष्ट व्यक्तियों पर लिखी गई डायरियाँ काफी चर्चित और प्रशंसित हैं। जाबिर हुसैन की कृतियों में प्रयुक्त भाषा आम आदमी के निकट है। उनकी भाषा कलात्मक, सरल तथा रोचक है। उन्होंने अपनी भाषा में उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया है। हुसैनजी की रचनाओं से पता चलता है कि वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनसे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1)

इस हुजूम में आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कन्धों पर सैलानियों की तरह अपने अन्तहीन सफ़र का बोझ उठाए। लेकिन यह सफर पिछले तमाम सफ़रों से भिन्न है। भीड़-भाड़ की जिन्दगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है। अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो जिन्दगी का आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा।

प्रश्न 1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके लेखक का नाम भी बताइए।
प्रश्न 2. सालिम अली का यह सफर पिछले तमाम सफरों से भिन्न किस कारण था?
प्रश्न 3. सालिम अली अब किसमें विलीन हो रहे थे?
प्रश्न 4. सालिम अली की तुलना किससे की गई है?
प्रश्न 5. उक्त गद्यांश में किस हुजूम की चर्चा की गई है?
प्रश्न 6. इस गद्यांश में वर्णित हुजूम में सबसे आगे कौन है?

उत्तर–1. यह गद्यांश 'साँवले सपनों की याद' शीर्षक पाठ (संस्मरण) से लिया गया है। इसके लेखक जाबिर हुसैन हैं।

2. यह सफर मृत्यु के आगोश में जाने का था, उनकी जीवन-यात्रा का अन्तिम सफर था। इसी कारण भिन्न था।

3. सालिम अली प्रकृति की गोद में विलीन होने जा रहे थे।

4. सालिम अली की तुलना उस वन-पक्षी से की गई है जो अपने जीवन का अन्तिम गीत गाने के बाद मौत को गले लगा लेता है।

5. उक्त गद्यांश में सालिम अली के शव को कन्धे पर उठाए लोगों के हुजूम की चर्चा की गई है।

6. इस गद्यांश में वर्णित हुजूम में सबसे आगे सालिम अली है।

(2)

मुझे नहीं लगता, कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व, खुद सालिम अली ने कहा था, कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं। यह उनकी भूल है, ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वो प्रकृति की नज़र से नहीं, आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज का मधुर संगीत सुनकर अपने भीतर रोमांच का सोता फूटता महसूस कर सकता है।

प्रश्न 1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके लेखक का नाम भी बतलाइए।

प्रश्न 2. सालिम अली पक्षियों को किन नज़रों से देखने के आकांक्षी थे?

प्रश्न 3. लोग प्रकृति को किन नज़रों से देखने को उत्सुक रहते हैं और क्यों?

प्रश्न 4. लोग पक्षियों की मधुर आवाज सुनकर रोमांच अनुभव क्यों नहीं कर सकते?

प्रश्न 5. इस गद्यांश में सोए हुए पक्षी किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? सालिम अली ने क्या कहा था?

प्रश्न 6. 'आबशार' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर—1. यह गद्यांश 'साँवले सपनों की याद' शीर्षक पाठ (संस्मरण) से लिया गया है। इस पाठ के लेखक जाबिर हुसैन हैं।

2. सालिम अली पक्षियों को उन्हीं की नज़रों से देखने के आकांक्षी थे।

3. लोग प्रकृति को अपनी नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। क्योंकि लोगों की दृष्टि केवल अपने स्वार्थ तक ही सीमित है।

4. पक्षियों की अपनी भाषा होती है जिसे आदमी समझ नहीं पाता है।

5. इस गद्यांश में सोए हुए पक्षी का प्रयोग सालिम अली के लिए हुआ है। सालिम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं।

6. 'आबशार' का अभिप्राय 'झरना' है।

(3)

पता नहीं, यह सब कब हुआ था। लेकिन कोई आज भी वृन्दावन जाए तो नदी का साँवला पानी उसे पूरे घटनाक्रम की याद दिला देगा। हर सुबह सूरज निकलने से पहले, जब पतली गलियों से उत्साह भरी भीड़ नदी की ओर बढ़ती है तो लगता जैसे उस भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा और बंसी की आवाज पर सब किसी के कदम थम जायेंगे। हर शाम सूरज ढलने से पहले, जब वाटिका का माली सैलानियों को हिदायत देगा तो लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में वो कहीं से आ टपकेगा और संगीत का जादू वाटिका के भरे-पूरे माहौल पर छा जायेगा। वृन्दावन कभी कृष्ण की बाँसुरी के जादू से खाली हुआ है क्या!

प्रश्न 1. नदी का साँवला पानी किस घटना की याद ताजा कर देता है?

प्रश्न 2. 'साँवले सपनों की याद' संस्मरण में किसने किसे याद किया?

प्रश्न 3. वृन्दावन में सायंकाल क्या अनुभूति होती है ?

प्रश्न 4. वृंदावन कृष्ण की बाँसुरी के जादू से खाली क्यों नहीं होता?

प्रश्न 5. वृन्दावन क्यों प्रसिद्ध है?

प्रश्न 6. वृन्दावन में किसके संगीत का जादू चलता है?

उत्तर—1. वृन्दावन में यमुना का साँवला पानी हर आने वाले यात्री को श्रीकृष्ण की नटखट क्रीड़ाओं की याद ताजा कर देता है।

2. प्रस्तुत संस्मरण में लेखक जाबिर हुसैन ने सुप्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी सालिम अली को याद किया।

3. सायंकाल ऐसी अनुभूति होती है कि मानो कृष्ण अभी यहाँ आ जायेंगे और मनमोहनी मुरली बजाने लगेंगे।

4. वृन्दावन में कृष्ण भक्त वर्षभर दर्शनार्थ आते रहते हैं और सुबह-शाम उनके मन में कृष्ण की बाँसुरी का स्वर बजता रहता है।

5. वृन्दावन कृष्ण की लीला स्थली होने के कारण प्रसिद्ध है।

6. वृन्दावन में कृष्ण की बाँसुरी के संगीत का जादू चलता है।

(4)

दूर क्षितिज तक फैली जमीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नज़रों में कुछ-कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है। सालिम अली उन लोगों में से थे जो प्रकृति के प्रभाव में आने की बजाय प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ हँसती-खेलती रहस्यभरी दुनिया पसरी थी। यह दुनिया उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने लिए गढ़ी थी। इसके गढ़ने में उनकी जीवन-साथी तहमीना ने काफ़ी मदद पहुँचाई थी।

प्रश्न 1. सालिम अली के लिए प्रकृति कैसी थी?

प्रश्न 2. सालिम अली की गणना किन लोगों में होती थी?

प्रश्न 3. तहमीना ने सालिम अली को क्या मदद पहुँचाई थी? बताइए।

प्रश्न 4. सालिम अली की नजरों में कैसा जादू था?

प्रश्न 5. सालिम अली के जीवन में क्या विशिष्ट था?

प्रश्न 6. सालिम अली की पत्नी का क्या नाम था?

उत्तर–1. सालिम अली के लिए प्रकृति नयी-नयी जानकारियाँ देने वाली और अतीव आनन्ददायी थी।

2. सालिम अली की गणना उन लोगों में होती थी, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेते हैं।

3. तहमीना ने प्रकृति-प्रेम से भरी दुनिया को गढ़ने में सालिम अली की भरपूर मदद की थी।

4. सालिम अली की नज़रों में ऐसा जादू था कि वे धरती से आकाश तक फैली प्रकृति को अपने सम्मोहन से बाँध लेते थे।

5. सालिम अली के जीवन में उनका पक्षी प्रेम विशिष्ट था।

6. सालिम अली की पत्नी का नाम तहमीना था।

(5)

डी. एच. लॉरेंस की मौत के बाद लोगों ने उसकी पत्नी फ्रीडा लॉरेंस से अनुरोध किया कि वह अपने पति के बारे में कुछ लिखे। फ्रीडा चाहती तो ढेर सारी बातें लॉरेंस के बारे में लिख सकती थी। लेकिन उसने कहा—मेरे लिए लॉरेंस के बारे में कुछ लिखना असंभव सा है। मुझे महसूस होता है मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है। मुझसे भी ज्यादा जानती है। वह सचमुच इतना खुला-खुला और सादा-दिल आदमी था। मुमकिन है, लॉरेंस मेरी रगों में, मेरी हड्डियों में समाया हो। लेकिन मेरे लिए कितना कठिन है उसके बारे में अपने अनुभवों को शब्दों में जामा पहनाना। मझे यकीन है, मेरी छत पर बैठी गौरैया उसके बारे में और हम दोनों के बारे में, मुझसे ज्यादा जानकारी रखती है।

प्रश्न 1. फ्रीडा लॉरेंस से लोगों ने क्या अनुरोध किया था?

प्रश्न 2. फ्रीडा लॉरेंस ने अपने पति के बारे में लिखने से इनकार क्यों किया था?

प्रश्न 3. गौरैया लॉरेंस की अंतरंग संगिनी कैसे बन गयी थी?

प्रश्न 4. रगों और हड्डियों में बसने से क्या आशय है?

प्रश्न 5. 'वह सचमुच इतना खुला-खुला और सादा-दिल आदमी था' यहाँ पर किस आदमी के बारे में बताया है?

प्रश्न 6. 'जामा पहनाना' का क्या अर्थ है?

उत्तर–1. फ्रीडा लॉरेंस से लोगों ने अनुरोध किया था कि वह अपने पति के बारे में कुछ लिखे।

2. उसे ऐसा लगता था कि वह अपने पति के बारे में उतना नहीं जानती जितना कि छत पर बैठने वाली गौरैया उनके बारे में जानती है।

3. गौरैया लॉरेंस की छत पर आकर उनके साथ काफी समय बिताती थी इस कारण वह लॉरेंस की अंतरंग संगिनी बन गयी थी।

4. रगों और हड्डियों में बसने से आशय है—जीवन में समा जाना।

5. यहाँ पर डॉ. एच. लॉरेंस के बारे में बताया है।

6. जामा पहनाना का अर्थ—आकार देना, अनुवाद करना, तर्तीब करना आदि।

(6)

बचपन के दिनों में, उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली नीले कण्ठ की वह गौरैया सारी जिन्दगी उन्हें खोज के लिए नए-नए रास्तों की तरफ़ ले जाती रही। जिन्दगी की ऊँचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं। वो लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिन्दगी का प्रतिरूप बन गये थे।

सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय अथाह सागर बनकर उभरे थे। जो लोग उनके भ्रमणशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं , उन्हें महसूस होता है कि वो आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं और बस अभी गले में लम्बी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नतीजों के साथ लौट आयेंगे।

प्रश्न 1. सालिम अली के व्यक्तित्व की क्या विशेषता थी?

प्रश्न 2. सालिम अली को पक्षियों की दुनिया की ओर किस बात ने मोड़ा?

प्रश्न 3. सालिम अली के भ्रमणशील स्वभाव के कारण आज भी क्या अनुभव होता है?

प्रश्न 4. क्या लक्ष्य की ऊँचाई व्यक्ति को डिगा सकती है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5. लॉरेंस और सालिम में क्या समानता थी?

प्रश्न 6. सालिम अली को नित्य नई खोज की तरफ प्रेरित करने वाला कौन था?

उत्तर—1. सालिम अली के व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि वे भ्रमणशील एवं यायावरी प्रवृत्ति के प्रकृति-प्रेमी एवं पक्षी-विज्ञानी थे।

2. बचपन में सालिम अली की एयरगन से एक गौरैया घायल होकर गिरी, इसी बात ने उन्हें पक्षियों की दुनिया की ओर मोड़ा।

3. अनुभव होता है कि वे आज भी पक्षियों का सुराग लेने की लम्बी यात्रा पर निकले हैं और जल्दी ही लौट आयेंगे।

4. लक्ष्यवान व्यक्ति को लक्ष्य की ऊँचाई डिगा नहीं सकती क्योंकि वह लक्ष्य के अनुसार अपने कदमों को बढ़ाता रहता है।

5. लॉरेंस और सालिम दोनों प्रकृति प्रेमी थे। इन्हें पक्षियों से असीम प्रेम था।

6. वह गौरैया, जो बचपन में उनकी एयरगन से घायल हुई थी, सालिम अली को नित्य नई खोज के लिए प्रेरित करती थी।

5. प्रेमचन्द के फटे जूते

(हरिशंकर परसाई)

लेखक-परिचय—हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म सन् 1922 में मध्य प्रदेश में होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में हुआ। प्रारम्भ में अध्यापन कार्य किया, फिर स्वतन्त्र लेखन करने लगे और 'वसुधा' नामक पत्रिका का सम्पादन किया। सन् 1995 में परसाईजी का निधन हो गया। इन्होंने कहानी, उपन्यास, निबन्ध-लेखन के साथ व्यंग्य-लेखन में उल्लेखनीय कार्य किया। वस्तुत: उनके व्यंग्य-लेखन में भारतीय जीवन में व्याप्त अनेक बुराइयों का चुभता हुआ चित्रण हुआ है।

पाठ-सार—हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित प्रस्तुत पाठ उपन्यास-सम्राट् एवं कथाकार मुंशी प्रेमचन्द को लक्ष्य कर लिखा गया व्यंग्य-लेख है। लेखक के सामने प्रेमचन्द का एक फोटो है, जिसमें उन्होंने धोती-कुरता और टोपी पहन रखी है। प्रेमचन्द के पैरों में बेतरतीब बँधे जूतों से पतरी निकल रही है और बायें पैर के जूते के छेद से एक अंगुली बाहर झाँक रही है। उस फोटो को देखकर लेखक सोचने लगा कि जो व्यक्ति फोटो में ऐसा दिखता है, वह अपने वास्तविक जीवन में कैसा होगा? फोटो में प्रेमचन्द की व्यंग्यपूर्ण हँसी देखकर लेखक सोचने लगा कि लोग फोटो खिंचवाने के लिए सब-कुछ माँग कर ले आते हैं, तो प्रेमचन्द को भी जूते किसी से माँग लेने चाहिए थे। उस फोटो में मुस्कान को लक्ष्य कर लेखक उसका आशय जानना चाहता है। वह पूछता है कि क्या होरी का गोदान हो गया? या पूस की रात में नील गाय हल्कू का खेत चर गई? क्या सुजान भगत का लड़का मर गया? लेखक यह अर्थ भी निकालता है कि माधो औरत के 'कफन' के चन्दे की शराब पी गया।

लेखक फिर प्रश्न करता है कि प्रेमचन्द का जूता फट कैसे गया? क्या बनिए के तगादे से बचने के लिए रोज मील-दो मील का चक्कर काट कर घर आते थे? क्या बुराइयों को ठोकर मारते-मारते जूते फाड़ डाले? लेखक इस

तरह प्रेमचन्द की कहानियों एवं उपन्यासों के पात्रों को लेकर सोचता है कि जिसे प्रेमचन्द घृणित समझते थे, उस पर ठोकर मारने से जूता फट गया, क्योंकि वे जीवन में किसी से समझौता नहीं कर सके और घृणित समझे जाने वाले के प्रति हाथ की अंगुली से नहीं, अपितु फटे जूते से झाँक रही अंगुली से ही मानो संकेत करते रहे। चेहरे की व्यंग्य-भरी मुस्कान भी यही व्यक्त कर रही है।

कठिन-शब्दार्थ–केनवस = एक प्रकार का मोटा कपड़ा। बेतरतीब = बेढंगे। आग्रह = जोर। ट्रेजडी = दुःखद बात। विडंबना = दुर्भाग्य। ठाठ = शान, सुख। हौसला पस्त करना = जोश समाप्त करना। पन्हैया = जूतियाँ। बिसरना = भूलना। बरकाकर = बचाकर। बाजू से = बगल से।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. हरिशंकर परसाई ने प्रेमचन्द का जो शब्द-चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है, उससे प्रेमचन्द के व्यक्तित्व की कौन-कौनसी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

उत्तर–प्रस्तुत शब्द-चित्र से प्रेमचन्द के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ व्यक्त होती हैं—

(1) उनका जीवन संकट एवं अभावों में व्यतीत हुआ।

(2) उन्हें दिखावा पसन्द नहीं था और किसी से माँगना अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने जीवनभर मर्यादाओं का पालन किया।

(3) उनका व्यक्तित्व बाहर-भीतर एक जैसा सादगी और सहजता से भरा था।

(4) उन्होंने समाज में व्याप्त सदियों पुरानी मान्यताओं को ध्वस्त किया।

(5) वे परिस्थितियों के गुलाम नहीं थे। वे बाधाओं से बचकर नहीं, उनसे संघर्ष कर आगे बढ़ते थे।

(6) वे स्वाभिमानी थे, उनका स्वभाव समझौतावादी नहीं था।

इस प्रकार प्रस्तुत व्यंग्य-निबन्ध से प्रेमचन्द के व्यक्तित्व को संघर्षशील, अपराजेय, मर्यादित, स्वाभिमानी, सादगीयुक्त एवं घिसी-पिटी परम्पराओं का विरोधी बताया गया है।

प्रश्न 2. सही कथन के सामने (√) का निशान लगाइए–

(क) बाएँ पाँव का जूता ठीक है मगर दाहिने जूते में छेद हो गया है जिसमें से अंगुली बाहर निकल आयी है।

(ख) लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचवाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए।

(ग) तुम्हारी यह व्यंग्य-मुस्कान मेरे हौसले बढ़ाती है।

(घ) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ अंगूठे से इशारा करते हो।

उत्तर–(क) (×), (ख) (√), (ग) (×), (घ) (×)

प्रश्न 3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए–

(क) जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्यौछावर होती हैं।

उत्तर–व्यंग्य–टोपी सम्मान की प्रतीक और जूता सामर्थ्य या अधिकार का प्रतीक है। व्यंग्य यह है कि शक्तिशाली व्यक्ति के चरणों में अनेक लोग झुकते हैं। आज की दुनिया में गुणी लोग भी अपने स्वाभिमान को भुलाकर शक्तिशाली अर्थात् धनवान लोगों की सेवा में खड़े रहते हैं। जूता देना एक मुहावरा भी है। इस तरह अब जूतों की कीमत बढ़ गई है।

(ख) तुम परदे का महत्त्व नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं।

उत्तर–व्यंग्य–यहाँ परदे का सम्बन्ध इज्जत से है। लोगों के द्वारा असलियत को छिपाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है। लोग अपनी बुराइयों को ढकने का निरन्तर प्रयास करते हैं, परन्तु प्रेमचन्द के पास परदे में छिपाने लायक कुछ भी नहीं था। वे स्वभाव से जैसे बाहर थे, वैसे ही भीतर भी थे।

(ग) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अंगुली से इशारा करते हो।

उत्तर–व्यंग्य–व्यक्ति जिन चीजों को घृणा योग्य समझता है, उनकी तरफ हाथ की बजाय पाँव की अंगुली से इशारा करता है। प्रेमचन्द ने भी जिसे समाज में घृणा योग्य समझा उसकी ओर अपने पाँव की अंगुली से इशारा किया अर्थात् उसे अपने जूते की नोक पर रखा, उसके विरुद्ध संघर्ष किया।

प्रश्न 4. पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी?' लेकिन अगले ही पल में वह विचार बदलता है कि 'नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी।' आपके अनुसार इस सन्दर्भ में प्रेमचन्द के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?

उत्तर—लेखक ने पहले सोचा कि संसार में अधिकतर लोग अपने घर पर पहनने के और बाहर पहनने के कपड़ों में अन्तर रखते हैं। परन्तु प्रेमचन्द का व्यक्तित्व सादगी भरा था। वे जैसे बाहर थे वैसे ही मन से भी थे। प्रायः देखने में आता है कि लोगों के व्यक्तित्व में एकरूपता नहीं होती है। इस कारण वे दिखाई कुछ देते हैं और होते कुछ और हैं। फिर लेखक ने सोचा कि प्रेमचन्द के व्यक्तित्व में ऐसी भिन्नता या बनावटीपन नहीं हो सकता। वे तो सदा एक जैसे सहज रहे। इसी से लेखक ने अपना विचार बदला। उक्त विचार बदलने का अन्य कारण यह भी व्यंजित हुआ है कि प्रेमचन्द का जीवन अर्थाभाव से ग्रस्त रहा। इस कारण उनके पास पोशाकों की भी कमी रही होगी और वे अलग-अलग पोशाकें नहीं पहन सके होंगे। एक महान साहित्यकार के जीवन में यह विडम्बना की बात थी।

प्रश्न 5. आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौनसी बातें आकर्षित करती हैं?

उत्तर—प्रस्तुत पाठ को पढ़कर लेखक की निम्नलिखित बातें आकर्षित करती हैं—

(1) लेखक सफल व्यंग्यकार है, वह प्रेमचन्द जैसे महान् साहित्यकार पर व्यंग्य करने से नहीं डरता है।

(2) लेखक ने सरल एवं सजीव भाषा का प्रयोग कर सुन्दर शब्द-चित्र उपस्थित किया है तथा प्रेमचन्द के स्वभाव का सहजता से उद्घाटन किया है।

(3) लेखक ने दोहरा व्यक्तित्व रखने वालों पर तथा स्वाभिमान का ध्यान न रखने वालों पर आक्षेप किया है।

(4) लेखक स्पष्टवादी एवं सत्यवादी है। वह महान् साहित्यकारों की आर्थिक दशा को लेकर चिन्तित दिखाई देता है।

(5) लेखक को वर्तमान काल की अवसरवादी प्रवृत्ति एवं दिखावे की प्रवृत्ति का पूरा ज्ञान है और वह ऐसी स्थिति पर व्यंग्य करना चाहता है।

प्रश्न 6. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन सन्दर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर—प्रस्तुत पाठ में 'टीले' से तात्पर्य है मार्ग की रुकावटें अथवा बाधा उपस्थित करने वाले लोग, सामन्तवादी और पुरातनपंथी लोग। टीले पर ठोकर मारने का उल्लेख करने से लेखक ने बाधक तत्त्वों जैसे—तत्कालीन समाज में व्याप्त शोषण की प्रवृत्ति, अन्याय, छुआछूत, जाति-पांति आदि बुराइयों को ध्वस्त करने का संकेत किया है। सुविधाभोगी लेखक ऐसे तत्त्वों से समझौता कर लेते हैं, या उन्हें अनदेखा कर बगल से आगे निकल जाते हैं, लेकिन प्रेमचन्द का स्वभाव समझौतावादी नहीं था, वे तो सामने से ठोकर मारकर बाधक तत्त्वों को ध्वस्त करना चाहते थे।

रचना और अभिव्यक्ति—

प्रश्न 7. प्रेमचन्द के फटे जूते को आधार बनाकर परसाईजी ने यह व्यंग्य लिखा है। आप भी किसी व्यक्ति की पोशाक को आधार बनाकर एक व्यंग्य लिखिए।

उत्तर—स्वदेशी आन्दोलन को लक्ष्य कर गाँधीजी ने नेताओं से खद्दर पहनने के लिए कहा। फलस्वरूप तब से स्वयं को सच्चा गाँधीवादी जनसेवक दिखाने के लिए झक सफेद खद्दर पहनने की परम्परा बन गई है। वस्तुतः जनता को दिखाने के लिए नेतागण सफेद बेदाग कपड़े पहनते हैं, परन्तु जनसेवा के नाम पर वे कितने काले कारनामे करते हैं, कितनी भेंट-पूजा डकार जाते हैं, यह अब आम जनता को मालूम है। वे संसद में किसी की माँग या समस्या को उठाने के लिए मोटी रकम चुपचाप डकार लेते हैं। जन-कल्याण के कार्यक्रमों के लिए आवण्टित धन को काले तरीकों से हजम कर जाते हैं। इस तरह वे अन्दर से काले, स्वार्थी एवं भ्रष्ट रहते हैं, जबकि बाहर से उजले, जनहितकारी एवं बेदाग खद्दरधारी बनते फिरते हैं। ऐसे नेताओं का चरित्र तो अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ और रहता है।

प्रश्न 8. आपकी दृष्टि से वेश-भूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर—आज वेश-भूषा के प्रति लोगों की सोच में काफी परिवर्तन आया है। वस्तुतः वेश-भूषा से व्यक्तित्व का पता चलता है; उसके स्वभाव, आचरण, आर्थिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा, मानसिक स्थिति, रुचि आदि का पता चलता है। आजकल लोग वेश-भूषा के प्रति अधिक सतर्क रहते हैं। यथासम्भव अच्छी काट के और नये फैशन के कपड़े पहनते हैं, जूतों के पहनावे में भी काफी सतर्कता दिखाते हैं। सामान्य गरीब लोग भी जितना सम्भव हो, ठीक-ठाक ढंग की वेशभूषा अपनाने का प्रयास करते हैं। अब लोग वेश-भूषा को आर्थिक सम्पन्नता, शिष्ट आचरण एवं सभ्यता से जोड़कर देखते हैं, तो कुछ लोग दिखावा भी करते हैं। आज वेशभूषा केवल व्यक्ति की जरूरत न होकर उसके व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग बन चुका है।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 9. पाठ में आये मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–पाठ में काफी मुहावरे प्रयुक्त हुए हैं, यथा—कुर्बान होना, जूता आजमाना, हौसले पस्त होना, दृष्टि अटकना, रो पड़ना, परदा होना, पछतावा होना, टीला खड़ा होना, पहाड़ फोड़ना, उँगली से इशारा करना, चक्कर काटना, जूते घिसना, व्यंग्य मुसकान, बाजू से निकलना, रास्ते पर खड़ा होना इत्यादि। इनमें कुछेक वाक्य-प्रयोग—

कुर्बान होना–न्यौछावर होना।

जब भारतवासी अपने देश पर कुर्बान हुए, तभी हमें आजादी मिली।

ठोकर मारना–चोट मारना, अपमानित करना।

व्यक्तिगत सुख-भोग की लालसा को ठोकर मारने वाले ही महापुरुष बनते हैं।

पहाड़ फोड़ना–बाधाएँ नष्ट करना।

नदियों की तरह पहाड़ फोड़कर आगे बढ़ने वाले ही जीवन में प्रगति कर पाते हैं।

हौसले पस्त होना–उत्साह कम होना।

निरन्तर बढ़ती महंगाई को देखकर अब मध्यमवर्ग के हौसले पस्त हो रहे हैं।

टीला खड़ा होना–बाधाएँ आना, रुकावट आना।

वर्तमान में मानव सभ्यता के विकास में अनेक टीले खड़े हो रहे हैं।

प्रश्न 10. प्रेमचन्द के व्यक्तित्व को उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का उपयोग किया है, उनकी सूची बनाइए।

उत्तर–प्रेमचन्द के लिए विशेषण—

साहित्यिक पुरखे, महान् कथाकर, उपन्यास सम्राट्, युग प्रवर्तक, मेरी जनता के लेखक।

पाठेतर सक्रियता–

महात्मा गाँधी भी अपनी वेश-भूषा के प्रति एक अलग सोच रखते थे, इनके पीछे क्या कारण रहे होंगे? पता लगाइए।

उत्तर–महात्मा गाँधी जीवन में सादगी और मितव्यय को बहुत महत्त्व देते थे। उस समय भारत में बहुत से लोगों के पास तन ढकने के लिए वस्त्र नहीं थे। इसी कारण गाँधीजी स्वयं भी कम वस्त्र पहनते थे। देश के गरीब लोगों के प्रति सहानुभूति रखने के लिए वे अधिक वस्त्र पहनना गलत मानते थे। वे स्वयं चरखे पर सूत कातकर उससे बने वस्त्र-धोती और चादर धारण करते थे।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. 'प्रेमचन्द के फटे जूते' निबन्ध में व्यंग्य किया गया है—
   (क) प्रेमचंद के फटे जूतों को लक्ष्य करके लेखकों की दुर्दशा पर
   (ख) आज के दिखावे की प्रवृत्ति और अवसरवादिता पर
   (ग) प्रेमचन्द की वेशभूषा पर
   (घ) तत्कालीन समाज में व्याप्त अमीरी-गरीबी और छुआछूत पर
2. बाएँ जूते में बड़ा छेद होने का परिणाम हुआ—
   (क) प्रेमचन्द की गरीबी झलक आयी (ख) उनकी वास्तविकता का पता लग गया
   (ग) अंगुली बाहर निकल आयी (घ) जूता फटा होने का पता चल गया
3. तुम फोटो का महत्त्व नहीं समझते। कथन में 'तुम' शब्द का प्रयोग हुआ है—
   (क) महाजन के लिए (ख) ग्रामीणजन के लिए
   (ग) असभ्यजन के लिए (घ) प्रेमचंद के लिए
4. "टोपी आठ आने में मिल जाती है।" यहाँ 'टोपी' का प्रतीकार्थ है—
   (क) मान-सम्मान (ख) तुच्छता (ग) बड़प्पन (घ) श्रेष्ठता
5. 'प्रेमचन्द के फटे जूते' पाठ में लेखक ने प्रेमचन्द का कैसा चित्रण किया है?
   (क) बनावटी (ख) अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण
   (ग) व्यंग्य चित्रण (घ) यथार्थ चित्रण

6. प्रेमचन्द का यह फोटो किसके साथ खिंचा था?
(क) लेखक के (ख) प्रेमचन्द के मित्र के (ग) उनकी पत्नी के (घ) जयशंकर प्रसाद के
7. प्रेमचन्दजी का जीवन कैसा था?
(क) दुःखों से भरा (ख) सुख से भरा (ग) अभावों से भरा (घ) इनमें से कोई नहीं
8. इस पाठ में लेखक ने व्यंग्य करते हुए कहा है कि—
(क) प्रेमचन्द बहुत अच्छे इंसान हैं (ख) लोग दिखावटी हैं
(ग) लोग इत्र लगाकर खुशबूदार फोटो खिंचवाते हैं
(घ) प्रेमचन्द एक गरीब आदमी हैं
9. इस पाठ के अनुसार कैसे लोग व्यक्तित्व, सच्चाई और सादगी को अपनाने वाले हैं?
(क) लेखक जैसे (ख) प्रेमचन्द जैसे (ग) कोई अन्य (घ) इनमें से कोई नहीं
10. प्रेमचन्दजी के अन्दर निम्नलिखित में से..............गुण नहीं था।
(क) लिखने का (ख) गाने का (ग) बातें करने का (घ) पोशाकें बदलने का

उत्तर-माला—1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ) 6. (ग) 7. (ग) 8. (ग) 9. (ख) 10. (घ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. लेखक के सामने .... का फोटो है। (प्रेमचन्द/परसाईजी)
2. लेखक की दृष्टि .... पर अटक गई है। (फोटो/प्रेमचन्दजी)
3. प्रेमचन्दजी .... साहित्यकार थे। (आदर्शवादी/यथार्थवादी)
4. परसाईजी .... एक थे। (आलोचक/व्यंग्यकार)
5. प्रेमचन्द के .... फटे थे। (जूते/कपड़े)
6. .... सदैव दृढ़ चरित्र और सन्तुष्ट दिखते थे। (परसाईजी/प्रेमचन्दजी)

उत्तर—1. प्रेमचन्द 2. फोटो 3. यथार्थवादी 4. व्यंग्यकार 5. जूते 6. प्रेमचन्दजी।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. लेखक क्या करने को तैयार नहीं है?

उत्तर—लेखक प्रेमचन्द की तरह फटे जूते पहनकर फोटो खिंचवाने को तैयार नहीं है।

प्रश्न 2. होरी में क्या कमजोरी थी?

उत्तर—होरी में नेम-धरम के पालन की कमजोरी थी।

प्रश्न 3. चक्कर लगाने से जूते में क्या परिवर्तन आता है?

उत्तर—चक्कर लगाने से जूता घिस जाता है।

प्रश्न 4. "आवत जात पन्हैया घिस गई, बिखर गयो हरि नाम।" का क्या आशय है?

उत्तर—उपर्युक्त पंक्ति का यह आशय है कि बार-बार आने और जाने से पैर का जूता घिस गया। इस क्रम में भगवान का नाम लेना भी भूल गया।

प्रश्न 5. इस पाठ के लेखक बार-बार एक ही प्रश्न के बारे में सोचते हैं वह प्रश्न क्या है?

उत्तर—वह प्रश्न यह है—"प्रेमचन्द का जूता घिसने की जगह फट कैसे गया?"

प्रश्न 6. 'प्रेमचन्द के फटे जूते' पाठ के माध्यम से लेखक ने किस पर तीखा प्रहार किया है?

उत्तर—इस पाठ में लेखक ने समाज की अनेक विषमताओं और बुराइयों पर तीखा प्रहार किया है।

प्रश्न 7. इस पाठ में लेखक ने नदी की क्या विशेषता बताई है?

उत्तर—लेखक ने बताया है कि नदी के मार्ग में यदि कोई रुकावट आती है तो वह रुकती नहीं, अपना मार्ग बदल कर आगे बढ़ती जाती है।

प्रश्न 8. लेखक हरिशंकर परसाईजी के अनुसार प्रेमचन्दजी के पाँव की अंगुली क्या इशारा कर रही है?

उत्तर—लेखक के अनुसार प्रेमचन्दजी के पाँव की अंगुली घृणा की ओर इशारा कर रही है।

प्रश्न 9. फोटो में प्रेमचन्द ने कैसे जूते पहन रखे थे?

उत्तर—फोटो में प्रेमचन्द ने फटे जूते पहन रखे थे, जिनके बंद बेतरतीब बंधे थे।

प्रश्न 10. फोटो देखकर प्रेमचन्द के किस गुण का पता चलता है?

उत्तर—फोटो देखकर प्रेमचन्दजी का पता चलता है कि वह वास्तविक जीवन में बहुत ही सीधे-सादे व्यक्ति थे।

प्रश्न 11. गन्दे से गन्दे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है—में छिपा व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–इस कथन में लेखक ने उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो दिखावे के लिए अच्छे बनते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. प्रेमचन्द की फोटो में उनके जूते देखकर लेखक क्या सोचने लगता है?

उत्तर–प्रेमचन्द की फोटो में उनके बेतरतीब बँधे जूतों को और बाएँ पैर के फटे जूते को देखकर लेखक सोचने लगता है कि जिस आदमी की फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है, तो प्रतिदिन पहनने की पोशाक कैसी होगी? क्या इस आदमी के पास अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी या इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं होगा?

प्रश्न 2. प्रेमचन्दजी फटा जूता भी ठाठ से क्यों पहन सके?

उत्तर–प्रेमचन्दजी सहज स्वभाव के थे। उन्होंने अपनी गरीबी को स्वीकार कर लिया था इसलिए उनके मन में हीनता की गाँठ और दिखावे का भाव नहीं था। वे अपनी गरीबी को छिपाने का प्रयास नहीं करते थे, इसलिए वे गरीबी के बावजूद ठाठ से जिए और फटा जूता भी ठाठ से पहन सके।

प्रश्न 3. जो लोग फोटो का महत्त्व समझते हैं, लेखक के अनुसार वे क्या करते हैं?

उत्तर–जो लोग फोटो का महत्त्व समझते हैं, वे लोग अपनी फोटो को सुन्दर सी बनाने के लिए किसी से जूते, कोट आदि परिधान माँग लेते हैं। यहाँ तक उधार की बीबी तक माँग लेते हैं। कई लोग तो फोटो खिंचवाने के लिए इत्र लगाकर बैठते हैं ताकि फोटो में भी उसकी खुशबू आ जाए।

प्रश्न 4. होरी और प्रेमचन्द की कमजोरी क्या थी? बताइये।

उत्तर–'गोदान' उपन्यास के मुख्य पात्र होरी और प्रेमचन्द की एक ही कमजोरी थी। वे दोनों 'नेम-धरम' के पक्के थे। उन्होंने कभी भी अपनी नैतिकता को गिरने नहीं दिया और अपनी मर्यादाओं की रक्षा के लिए चुपचाप गरीबी झेलकर भी संघर्ष करते रहे। इस कारण होरी एवं प्रेमचन्द जीवनभर अभावग्रस्त रहे।

प्रश्न 5. 'प्रेमचन्द सहज जीवन में विश्वास रखते थे।' पठित पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर–प्रेमचन्द दिखावा पसन्द स्वभाव के नहीं थे। वे अपनी आर्थिक कमजोरी, फटेहाली और दुर्दशा को छिपाना नहीं चाहते थे, साथ ही वे कोरे दिखावे से दूर रहना चाहते थे, इसलिए उन्होंने फोटो खिंचवाते समय बनावटी वेशभूषा धारण करने का प्रयास नहीं किया। वस्तुतः वे सहज एवं सादा जीवन में विश्वास करते थे।

प्रश्न 6. प्रेमचन्द की वेशभूषा का वर्णन पठित पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर–मुंशी प्रेमचन्द यद्यपि कलम के धनी थे, दूरदर्शी विचारों से मण्डित थे, परन्तु वे दिखावे की बजाय सहज जीवन तथा साधारण देहातियों की भाँति साधारण जीवन जीते थे। वे साधारण धोती-कुर्ता पहनते थे। उनके एकदम साधारण से एवं फटे जूतों को देखकर उनकी सादी वेशभूषा और साधारण जीवन का परिचय मिल जाता था।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. कुम्भनदास कौन थे? उनका जूता कैसे घिस गया था?

उत्तर–कुम्भनदास भक्ति-काल में कृष्ण-भक्ति शाखा में अष्टछाप के कवि एवं वल्लभाचार्य के शिष्य थे। एक बार बादशाह अकबर के बुलावे पर वे उनसे मिलने फतेहपुर सीकरी गये थे। वह स्थान उनके निवास से काफी दूर था। इस कारण फतेहपुर सीकरी जाने व लौट आने में उनके जूते घिस गये थे। इसीलिए उन्होंने कहा कि, "आवत-जात पन्हैया घिस गई, बिसर गयो हरि नाम।" अर्थात् फतेहपुर सीकरी आते-जाते पैरों की जूतियाँ तो घिसी ही, ईश्वर के नाम-स्मरण में भी बाधा पड़ी।

प्रश्न 2. जनता का लेखक किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर–मुंशी प्रेमचन्द को जनता का लेखक कहा गया है। उन्होंने जीवनभर आम जनता के दुःख-दर्द, उसकी समस्याओं आदि के बारे में लिखा। साथ ही उन्होंने किसानों की गरीबी, शोषण और बदहाली के बारे में लिखा। उदाहरण के लिए 'पूस की रात' कहानी का हलकू हो चाहे 'कफन' का माधो, चाहे 'मंत्र' का सुजान भगत और चाहे 'गोदान' उपन्यास का होरी हो, ये सभी जनता वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं। इसीलिए प्रेमचन्द को जनता का लेखक कहा गया है।

प्रश्न 3. "गन्दे से गन्दे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।" इसके माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर–इस कथन के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि समाज में दिखावे की प्रवृत्ति और फैशनपरस्ती चल रही है। लोग अपनी अच्छी फोटो खिंचवाने के लिए दूसरों से कोट-पेंट, जूते आदि उधार माँग लाते हैं। अपने बाल संवारते हैं तथा चेहरे पर क्रीम-पाउडर, इत्र आदि लगाकर सजते हैं। फोटो खिंचवाने के लिए बैठने के ढंग, मुख मुद्रा एवं हाव-भाव का पूरा ध्यान रखते हैं। इस प्रकार वे अच्छी फोटो खिंचवाने के लिए पूरा दिखावा करते रहते हैं। लेखक ने समाज में व्याप्त इस तरह की प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है।

प्रश्न 4. "तुम फटा जूता बड़े ठाठ से पहने हो! मैं......... फोटो तो जिन्दगीभर इस तरह नहीं खिंचाऊँ।" लेखक ने ऐसी फोटो खिंचवाने से क्यों मना किया?

उत्तर–मुंशी प्रेमचन्द को जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ा, अर्थाभाव से गुजरना पड़ा, परन्तु वे दिखावे की प्रवृत्ति से ग्रस्त नहीं रहे। वे यथार्थ को स्वीकार करने वाले थे और अन्दर से जैसे थे बाहर भी वैसा ही दिखते थे। इसी से उन्होंने फटे जूते में फोटो खिंचा ली, लेकिन लेखक ऐसी फोटो नहीं खिंचवाता, क्योंकि इससे हीनभावना एवं व्यक्तित्व में कमी नजर आती है। लेखक वर्तमान समाज के अनुसार दिखावा पसन्द एवं फैशनपरस्त होने से उस दशा में फोटो नहीं खिंचा सकता।

प्रश्न 5. 'प्रेमचन्द के फटे जूते' पाठ के आधार पर पर्दे के महत्व पर लेखक और प्रेमचन्द की विचारधारा में अन्तर बताइये।

उत्तर–प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि लोग अपने जीवन के कमजोर पक्ष पर या अपनी बुराइयों पर पर्दा डालकर जीना चाहते हैं। इसी कारण गरीबी एवं फटेहाली में भी लोग सुन्दर वेशभूषा में फोटो खिंचवाने का पूरा प्रयास करते हैं। लेखक का विचार है कि जीवन में अपनी कमजोरियों पर पर्दा डालना जरूरी है, परन्तु प्रेमचन्द का मानना था कि जैसी वास्तविक स्थिति हो, उसे वैसा ही दिखाओ, जीवन में पर्दा डालकर अपने चरित्र को मत गिराओ। इस प्रकार पर्दे के महत्व को लेकर लेखक और प्रेमचन्द के विचारों में काफी अन्तर दिखाई देता है।

प्रश्न 6. "सभी नदियाँ पहाड़ी थोड़े ही तोड़ती हैं।" 'प्रेमचन्द के फटे जूते' पाठ के आधार पर इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–लेखक ने व्यंग्य रूप में कहा कि समाज के विकास में अनेक कुरीतियाँ, अनेक चुनौतियाँ बाधक बनती हैं। उन चुनौतियों एवं बाधाओं से हर कोई नहीं जूझता है। अनेक लेखक अपने आस-पास की समस्याओं से बचकर चला करते हैं। समाज की बुराइयों को दूर करने का जरा भी प्रयास नहीं करते हैं। परन्तु प्रेमचन्द ऐसे नहीं थे। उन्होंने अपने समय की अनेक चुनौतियों को तोड़ने या ठोकर मारने का पूरा प्रयास अपने लेखन-कर्म से किया। इस विशेषता से वे अन्यतम साहित्यकार थे।

प्रश्न 7. प्रेमचन्द फोटो में मुस्कुराकर क्या व्यंग्य कर रहे हैं? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर–प्रेमचन्द फोटो में मुस्कुराकर लेखक पर यह व्यंग्य कर रहे हैं कि तुम अंगुली को सुरक्षित रखकर तलुआ घिसाये चल रहे हो। ऊपर से दिखावा कर अन्दर के दर्द को छिपाने का प्रयास कर रहे हो। ऐसा करना कदापि ठीक नहीं है। समाज के द्वारा प्रदत्त दु:ख-दर्द एवं अभावग्रस्त जीवन के यथार्थ को खुलकर प्रकट करना चाहिए, उसे छिपाना तो कायरता है, कोरा दिखावा है और आत्मबल की कमी की पहचान है। इसलिए यथार्थ का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहो।

प्रश्न 8. 'प्रेमचन्द के फटे जूते' व्यंग्य-निबन्ध में हिन्दी के लेखकों पर क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर–प्रस्तुत व्यंग्य-निबन्ध में हिन्दी के लेखकों की दयनीय दशा पर व्यंग्य किया गया है। हिन्दी के लेखक समाज की अनेक बुराइयों पर लिखते रहते हैं, परन्तु उनकी आर्थिक स्थिति सदा कमजोर रहती है। उन्हें समाज में सम्मान तो मिलता है, परन्तु उनका शोषण भी खूब होता है। वे अपनी कमजोरी छिपाने का प्रयास भी करते हैं, ऊपर से दिखावा भी करते हैं। यों ऊपर से अच्छा दिखता है परन्तु प्रेमचन्द की तरह बुराइयों पर ठोकर मारने की क्षमता हिन्दी लेखकों में उतनी प्रखर नहीं है।

प्रश्न 9. 'प्रेमचन्द के फटे जूते' व्यंग्य-निबन्ध से युवाओं को क्या शिक्षा दी गई है?

उत्तर–'प्रेमचन्द के फटे जूते' व्यंग्य-निबन्ध से युवाओं को यह शिक्षा दी गई है कि वे कोरे दिखावे की प्रवृत्ति, फैशनपरस्ती और बनाव श्रृंगार या आडम्बरों से दूर रहें। वे प्रेमचन्द की तरह सादा जीवन और उच्च विचार अपनाएँ। समाज की भलाई के लिए संघर्ष करें, शोषण-उत्पीड़न का विरोध करें तथा जीवन में मानवीय आदर्शों को उतारें। आज के युवा बनावटी जीवन जीने की आदत छोडें और सादगी भरा जीवन जीना सीखें।

प्रश्न 10. "तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे।" इस कथन का आशय 'प्रेमचन्द के फटे जूते' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–इस कथन का आशय यह है कि टोपी सिर पर धारण की जाती है, उसे सम्मान दिया जाता है, जबकि जूता पैर में पहना जाता है। सम्मान की दृष्टि से टोपी का मूल्य अधिक होना चाहिए, परन्तु टोपी सस्ती एवं जूता अधिक मूल्य का होता है। मुंशी प्रेमचन्द उच्च कोटि के साहित्यकार और सम्मानित लेखक थे, परन्तु अपनी आर्थिक दुर्दशा के कारण मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में विवश थे। अत: गुणी को धनी से कमतर माना जाता है। वे अपने जीवन की इस विडम्बना से ग्रस्त थे और अच्छा जूता पहनने में शायद समर्थ नहीं थे।

प्रश्न 11. लेखक ने प्रेमचन्द को 'मेरे साहित्यिक पुरखे' क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–लेखक ने प्रेमचन्द को 'मेरे साहित्यिक पुरखे' इसलिए कहा है कि प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी एवं उपन्यास-विधा में नयी शैली-शिल्प का प्रवर्तन किया। उन्होंने आम जनता से पात्र लिये तथा उस समय की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया। इन विशेषताओं के कारण प्रेमचन्द अपने युग में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में सर्वोच्च स्थान रखते हैं और हिन्दी गद्य तथा हिन्दी भाषा को समृद्ध करने में बेजोड़ एवं अग्रणी लेखक माने जाते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. लेखक ने अपने तथा प्रेमचन्द के जूतों में क्या अन्तर बताया? निबंध के आधार पर लिखिए।

उत्तर–लेखक प्रेमचन्द की फोटो के आधार पर बताता है कि उनके जूते केनवस के थे, उनके बन्द के सिरों पर लोहे की पतरी निकल आयी थी। उनके दाहिने पैर का जूता ठीक था, परन्तु बायें पैर के जूते में बड़ा छेद हो गया था, जिसमें से एक अंगुली बाहर निकल आई थी। लेखक बताता है कि मेरा जूता ऊपर से अच्छा दिखता है, इसमें से अंगुली बाहर तो नहीं निकलती है, परन्तु अंगूठे के नीचे का तला फटा हुआ है, इस कारण अंगूठा जमीन से घिसता रहता है और पैनी मिट्टी की रगड़ खाकर लहूलुहान हो जाता है। प्रेमचन्द अपनी वास्तविकता दुनिया से नहीं छिपाते थे। प्रेमचन्द की तरह लेखक भी अभावता का कमी में जीवन व्यतीत कर रहे हैं लेकिन अपनी दुर्दशा पर पर्दा डालकर अपनी कमजोरियाँ वास्तविक दुनिया से छिपाकर रखना चाहते हैं। इस प्रकार लेखक ने अपने और प्रेमचन्द के जूतों में काफी अन्तर बताया है।

प्रश्न 2. लेखक ने प्रेमचन्द के जूते फटने का क्या कारण सोचा? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर–लेखक ने प्रेमचन्द के जूते फटने को लेकर यह अनुमान लगाया कि प्रेमचन्द का जूता किसी सख्त चट्टान से टकराने के कारण ही फटा है। अर्थात् प्रेमचन्द ने चट्टान से बचकर निकलने की कोशिश नहीं की बल्कि उसे रास्ते से हटाने का प्रयास किया। इसका अर्थ है कि वे जीवनभर समाज की कुरीतियों रूपी टीलों को ठोकरें मारते रहे, समाज की बुराइयों से संघर्ष करते रहे, इस कारण उनका जूता फट गया। दूसरा कारण यह कि वे आर्थिक तंगी से ग्रस्त रहे और तगादों से बचने के लिए लम्बा चक्कर लगाकर घर लौटते रहे। उन्होंने लेखन-कार्य में काफी परिश्रम किया, परन्तु उससे उचित धन-लाभ नहीं हुआ। वैसे भी उन्होंने गरीबों एवं दीन-दलितों को लक्ष्यकर लिखा, तो उनसे उन्हें कुछ नहीं मिला। फलस्वरूप जीवन के कठिन-मार्ग पर चलने से उनके जूते फट गये।

रचनाकार परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. लेखक हरिशंकर परसाई का साहित्यिक परिचय बताइए।

उत्तर–हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1922 ई. को मध्यप्रदेश में हुआ था। इनकी स्नातक तक की शिक्षा मध्यप्रदेश में हुई। फिर नागपुर विश्वविद्यालय में एम.ए. की परीक्षा पास की। परसाईजी हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्य लेखक है। समाज, राजनीति, धर्म आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों को उन्होंने अपने व्यंग्य लेखन से व्यक्त किया है। उनके व्यंग्य अत्यन्त चुटीले एवं प्रभावकारी होते हैं तथा उनका उद्देश्य व्यवस्था में सुधार लाना है। इन्होंने दो उपन्यास—(1) रानी नागफनी की कहानी (2) तट की खोज और कहानी संग्रह। (1) 'हँसते हैं रोते हैं', (2) 'जैसे उनके दिन फिरे लिखे हैं'। इन्होंने कई हास्य-व्यंग्य संकलनों की रचना की है जैसे—विकलांग श्रद्धा का दौर, सदाचार का ताबीज, ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, वैष्णव की फिसलन आदि। इनकी रचनाओं में व्यंग्य के अनुरूप भाषा का प्रयोग हुआ है। इनकी रचनाएँ हिन्दी जगत में बड़े आदर की वस्तु है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनसे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1)

मैं चेहरे की तरफ देखता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है, मेरे साहित्यिक पुरखे कि तुम्हारा जूता फट गया है और अंगुली बाहर दिख रही है? क्या तुम्हें इसका जरा भी एहसास नहीं है? जरा लज्जा, संकोच या झेंप नहीं है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अंगुली ढक सकती है? मगर फिर भी तुम्हारे चेहरे पर बड़ी बेपरवाही, बड़ा विश्वास है। फोटोग्राफर ने जब 'रेडी प्लीज' कहा होगा, तब परम्परा के अनुसार तुमने मुस्कान लाने की कोशिश की होगी, दर्द के गहरे कुएँ के तल में वहीं पड़ी मुस्कान को धीरे-धीरे खींचकर ऊपर निकाल रहे होंगे कि बीच में ही 'क्लिक' करके फोटोग्राफर ने 'थैंक यू' कह दिया होगा। विचित्र है यह अधूरी मुस्कान। इसमें मुसकान नहीं, उसमें उपहास है, व्यंग्य है।

प्रश्न 1. लेखक ने 'साहित्यिक पुरखे' किसके लिए कहा है?

प्रश्न 2. प्रेमचन्द की मुसकान अधूरी क्यों रह गई?

प्रश्न 3. प्रेमचन्द अपनी अंगुली कैसे ढक सकते थे?

प्रश्न 4. इस गद्यांश से प्रेमचन्द की किस विशेषता का पता चलता है?

प्रश्न 5. गद्यांश में, मैं से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 6. लेखक प्रेमचन्द से क्या कहना चाहता है?

उत्तर–1. लेखक ने मुंशी प्रेमचन्द को 'साहित्यिक पुरखे' कहा है।

2. फोटो खिंचाते समय प्रेमचन्द के पूर्णतया न मुस्करा पाने से उनकी मुसकान अधूरी रह गई।

3. फोटो खिंचवाते समय प्रेमचन्द अपनी धोती को यदि थोड़ा-सा नीचे की ओर खींच लेते, अर्थात् सिद्धान्तों से समझौता कर लेते, तो अंगुली ढक सकती थी।

4. इस गद्यांश से प्रेमचन्द की इस विशेषता का पता चलता है कि वे सरल और सहज स्वभाव वाले व्यक्ति थे।

5. प्रस्तुत गद्यांश में, मैं शब्द का प्रयोग लेखक ने स्वयं के लिए किया है। अतः गद्यांश में ''मैं'' का तात्पर्य लेखक से है।

6. लेखक प्रेमचन्द से यह कहना चाहता है कि फोटो में तुम जैसे महान् साहित्यकार की पोशाक प्रतिष्ठा के अनुसार नहीं है।

(2)

यह कैसा आदमी है, जो खुद तो फटे जूते पहने फोटो खिंचा रहा है, पर किसी पर हँस भी रहा है। फोटो ही खिंचाना था, तो ठीक जूते पहन लेते या न खिंचाते। फोटो न खिंचाने से क्या बिगड़ता था। शायद पत्नी का आग्रह रहा हो और तुम 'अच्छा, चल भई' कहकर बैठ गये होंगे। मगर यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी' है कि आदमी के पास फोटो खिंचाने को भी जूता न हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते, तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पड़ना चाहता हूँ, मगर तुम्हारी आँखों का यह तीखा दर्द-भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है।

प्रश्न 1. यदि प्रेमचन्द को फोटो का महत्त्व ज्ञात होता, तो वे क्या करते?

प्रश्न 2. गद्यांश में प्रेमचन्द द्वारा फोटो खिंचवाने का क्या कारण बताया गया है?

प्रश्न 3. फोटो को देखकर लेखक क्या करना चाहता हुआ भी नहीं कर पाता है?

प्रश्न 4. गद्यांश में लेखक ने किस 'ट्रेजडी' की ओर संकेत किया है?

प्रश्न 5. लेखक क्या नहीं कर पाता है?

प्रश्न 6. लेखक परसाई प्रेमचन्द को क्या सलाह दे रहे हैं?

उत्तर–1. वे अपनी धोती नीचे की ओर सरका कर फटे जूते को ढक लेते या फोटो खिंचाने के लिए किसी से जूता माँग कर पहन लेते।

2. फोटो खिंचवाने का यह कारण बताया गया है कि प्रेमचन्द को न चाहते हुए भी पत्नी का आग्रह मानना पड़ा होगा।

3. लेखक रोना चाहता था, परन्तु प्रेमचन्द की फोटो में उनकी आँखों में भरे हुए तीखे व्यंग्य को देखकर वह वैसा नहीं कर पाता है।

4. प्रेमचन्द के पास आर्थिक दशाहीनता के कारण फोटो खिंचवाने के लिए एक जोड़ी अच्छे जूते नहीं थे, यह सबसे बड़ी ट्रेजडी थी।

5. लेखक प्रेमचन्द के दर्द को स्वयं महसूस कर उनकी स्थिति पर चाहकर भी रो नहीं पाता।

6. लेखक सलाह दे रहा है कि कम-से-कम चन्द क्षणों के लिए ही सही, दिखावे की संस्कृति को अपना लेते, अर्थात् फोटो खिंचवाने के लिए ठीक जूते पहन लेते।

(3)

तुम फोटो का महत्त्व नहीं समझते। समझते होते, तो किसी से फोटो खिंचाने के लिए जूते माँग लेते। लोग तो माँगे के कोट से वर दिखाई करते हैं और माँगे की मोटर से बारात निकालते हैं। फोटो खिंचवाने के लिए बीवी तक माँग ली जाती है, तुम से जूते माँगते नहीं बने। तुम फोटो का महत्त्व नहीं जानते। लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचवाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए। गन्दे से गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।

प्रश्न 1. 'तुम फोटो का महत्त्व नहीं समझते।' लेखक ने यह किसके लिए कहा है?

प्रश्न 2. लोग सुन्दर फोटो खिंचवाने के लिए क्या-क्या करते हैं?

प्रश्न 3. 'तुम से जूते ही माँगते नहीं बने।' लेखक का यह कथन प्रेमचन्द के किस गुण की ओर संकेत है?

प्रश्न 4. 'गंदे से गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।' निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5. प्रेमचन्द फोटो का महत्त्व क्यों नहीं समझते?

प्रश्न 6. लोग क्या चुपड़कर फोटो खिचवाते हैं और क्यों?

उत्तर–1. लेखक ने यह साहित्यकार प्रेमचन्द के लिए कहा है।

2. लोग अपनी सुन्दर फोटो खिंचवाने के लिए उधार के जूते, उधार का कोट और यहाँ तक कि उधार की बीवी तक माँग लेते हैं।

3. लेखक का यह कथन उनकी आडम्बरहीनता के गुण की ओर संकेत है।

4. इस कथन में निहित व्यंग्य यह है कि गंदे आदमी भी अपनी छवि दूसरे के सामने सुन्दर बना कर पेश करते हैं।

5. प्रेमचन्द को फोटो का महत्त्व नहीं मालूम क्योंकि उनका जीवन एक खुली किताब है। जैसे दिखते हैं, वैसे ही हर जगह व्यक्त होते हैं।

6. लोग इत्र चुपड़कर फोटो खिंचवाते हैं जिसमें फोटो में खुशबू आ जाए।

(4)

टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस जमाने में भी पाँच रुपये से कम में क्या मिले होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्यौछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडम्बना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान् कथाकार, उपन्यास-सम्राट्, युग-प्रवर्तक, जाने क्या-क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है।

प्रश्न 1. टोपी और जूते के मूल्य में क्या सम्बन्ध रहा है?

प्रश्न 2. 'एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्यौछावर हो रही हैं'—इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 3. प्रस्तुत गद्यांश में टोपी और जूते के माध्यम से क्या व्यंग्य किया गया है?

प्रश्न 4. हमारे देश में साहित्यकारों के साथ क्या विडंबना है?

प्रश्न 5. लेखक ने प्रेमचन्द को किन-किन उपाधियों से विभूषित बताया है?

प्रश्न 6. प्रेमचन्द की विडम्बना क्या थी?

उत्तर–1. टोपी और जूते के मूल्य में अनुपातिक सम्बन्ध रहा है, अर्थात् टोपी की कीमत सदैव जूते की कीमत से कम रही है।

2. इसका आशय यह है कि वर्तमान भौतिकतावादी युग में धनवानों अर्थात् वैभव-सम्पन्न लोगों के सामने गुणवान लोगों को झुकना पड़ रहा है।

3. प्रस्तुत गद्यांश में टोपी और जूते के माध्यम से गुणी को धनी से कमतर मानने पर व्यंग्य किया गया है।

4. हमारे देश में न तो साहित्यकारों को मान-सम्मान मिलता है और न धन। यह बहुत बड़ी विडंबना है।

5. लेखक ने प्रेमचन्द को महान कथाकार, उपन्यास सम्राट्, युग प्रवर्त्तक इत्यादि उपाधियों से विभूषित बताया है।

6. प्रेमचन्द की विडम्बना यह थी कि उनके जैसा महान साहित्यकार भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। जूता हमेशा से टोपी से कीमती रहा है।

(5)

मुझे लगता है, तुम किसी सख्त चीज को ठोकर मारते रहे हो। कोई चीज जो परत-दर-परत सदियों से जम गई है, उसे शायद तुमने ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया। कोई टीला जो रास्ते पर खड़ा हो गया था, उस पर तुमने अपना जूता आजमाया।

तुम उसे बचाकर, उसके बगल से भी निकल सकते थे। टीलों से समझौता भी तो हो जाता है। सभी नदियाँ पहाड़ थोड़े ही फोड़ती हैं, कोई रास्ता बदलकर, घूमकर भी तो चली जाती हैं........तुम्हारी यह पाँव की अंगुली मुझे संकेत करती-सी लगती है, जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अंगुली से इशारा करते हो।

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार प्रेमचन्द ने किस पर अपना जूता आजमाया?

प्रश्न 2. 'टीले' से समझौता भी तो हो जाता है–इसका आशय क्या है?

प्रश्न 3. लेखक को प्रेमचन्द का जूता फटने का क्या कारण प्रतीत होता है?

प्रश्न 4. इस गद्यांश में प्रेमचन्द के व्यक्तित्व की क्या विशेषता बताई गई है?

प्रश्न 5. लेखक को अंगुली उसकी ओर क्या संकेत करती-सी लगती है?

प्रश्न 6. प्रेमचन्द पाँव की अंगुली से किसकी तरफ इशारा करते हैं?

उत्तर–1. लेखक के अनुसार प्रेमचन्द ने सामयिक उत्थान के मार्ग की बाधक जो बुराइयाँ एवं असामाजिक तत्त्व थे, उन पर अपना जूता आजमाया।

2. इसका आशय है—सामाजिक जीवन में अनेक बाधक तत्त्व टीलों की तरह मार्ग रोक देते हैं। समझौतावादी, स्वार्थी एवं कमजोर लोग उनसे समझौता कर लेते हैं।

3. प्रेमचन्द हमारे समाज में व्याप्त उन बुराइयों पर ठोकरें मारते रहे, जिससे उनके जूते फट गये।

4. प्रेमचन्द न तो सुविधाभोगी थे और न समझौतावादी थे। वे तो सामाजिक जीवन में व्याप्त अनेक बुराइयों तथा कुरीतियों को मिटाना चाहते थे।

5. लेखक को उसकी ओर प्रेमचन्द के पाँव की अंगुली संकेत करती सी लगती है।

6. प्रेमचन्द पाँव की अंगुली से उसकी तरफ इशारा करते हैं जिसे वह घृणित समझते हैं।

(6)

''मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अंगुली बाहर नहीं निकलती, पर अंगूठे के नीचे तला फट गया है। अंगूठा जमीन से घिसता है और पैनी मिट्टी पर कभी रगड़ खाकर लहुलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा, पूरा पंजा छिल जाएगा, मगर अंगुली बाहर नहीं दिखेंगी। तुम्हारी अंगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अंगुली ढंकी है पर पंजा नीचे घिस रहा है। तुम पर्दे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं।''

प्रश्न 1. लेखक ने अपने जूते को कैसा बताया है?

प्रश्न 2. लेखक के अनुसार कौन पर्दे का महत्त्व नहीं जानता?

प्रश्न 3. पर्दे पर कौन कुर्बान हो रहा है?

प्रश्न 4. 'मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है' यहाँ किसके जूते की बात हो रही है?

प्रश्न 5. किसकी अंगुली जूते से बाहर दिखती है?

प्रश्न 6. 'कुर्बान' शब्द का क्या आशय है?

उत्तर–1. लेखक ने अपना जूता अँगूठे के नीचे से तल्ला फटा हुआ बताया है। पूरा तल्ला गिर जाएगा परन्तु अंगुली बाहर नहीं दिखेंगी।

2. लेखक के अनुसार महान कथाकार प्रेमचन्द पर्दे का महत्त्व नहीं जानते।

3. पर्दे पर दिखावा पसन्द संस्कृति के लोग कुर्बान हो रहे हैं।

4. यहाँ पर लेखक के जूते की बात हो रही है।

5. प्रेमचन्द की अंगुली जूते से बाहर दिखती है।

6. कुर्बान शब्द का आशय है—जो न्यौछावर किया गया है, जिसकी बलि दी गयी हो।

(7)

तुम फटा जूता बड़े ठाठ से पहनते हो। मैं ऐसे नहीं पहन सकता। फोटो तो जिन्दगी भर इस तरह नहीं खिंचाऊँ, चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे।

तुम्हारी यह व्यंग्य मुसकान मेरे हौंसले पस्त कर देती है। क्या मतलब है इसका? कौनसी मुसकान है यह?

–क्या होरी का गोदान हो गया?

–क्या पूस की रात में नीलगाय हलकू का खेत चर गई? क्या सुजान भगत का लड़का मर गया, क्योंकि डॉक्टर क्लब छोड़कर नहीं आ सकते?

नहीं, मुझे लगता है माधो औरत के कफन के चन्दे की शराब पी गया। वही मुसकान मालूम होती है।

मैं तुम्हारा जूता फिर देखता हूँ। कैसे फट गया यह, मेरी जनता के लेखक?

प्रश्न 1. लेखक क्या करने को तैयार नहीं है?

प्रश्न 2. लेखक का हौंसला कैसे पस्त हो जाता है?

प्रश्न 3. लेखक प्रेमचन्द को कैसा मानता है?

प्रश्न 4. कौन कफन के चन्दे की शराब पी गया था?

प्रश्न 5. पूस की रात में हलकू के साथ क्या हुआ था?

प्रश्न 6. किसका लड़का मर गया?

उत्तर–1. लेखक प्रेमचन्द की तरह फटे जूते पहनकर फोटो खिंचवाने को तैयार नहीं, क्योंकि वह पर्दा-पसन्द है। अंगुली नहीं दिखनी चाहिए, भले ही तलवा घिस जाए।

2. लेखक का हौंसला सभी कष्टों को झेल कर भी मुस्कुराते प्रेमचन्द के व्यंग्यात्मक मुस्कान से पस्त हो जाता है।

3. लेखक प्रेमचन्द को जनता का लेखक मानता है।

4. माधव कफन के चन्दे की शराब पी गया था।

5. पूस की रात में नीलगाय हलकू का खेत चर गई थी।
6. सुजान भगत का लड़का मर गया था।

6. मेरे बचपन के दिन

(महादेवी वर्मा)

लेखिका-परिचय–छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फ़र्रुखाबाद शहर में हुआ। इन्होंने दर्शनशास्त्र में एम.ए. करने के बाद प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या पद का कार्यभार संभाला। उन्हें सरकार से 'पद्मभूषण' तथा 'यामा' काव्य-संग्रह पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। संस्मरण एवं रेखाचित्र लेखन में उनका अग्रणी स्थान रहा है। इन्होंने काव्य एवं गद्य में पर्याप्त साहित्य-सृजन किया है।

पाठ-सार–प्रस्तुत पाठ 'मेरे बचपन के दिन' में महादेवी वर्मा ने अपने बचपन का मधुर शब्दों में वर्णन किया है। उनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जिसमें लगभग दो सौ वर्षों से कोई कन्या नहीं हुई थी। उनके बाबा द्वारा कुल-देवी दुर्गा की पूजा करने के बाद जन्म होने से इनका खूब सत्कार हुआ। माँ के प्रयासों से लेखिका ने हिन्दी, संस्कृत पढ़ना सीख लिया था। पहले मिशन स्कूल में प्रवेश लिया, फिर क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा गया। वहाँ छात्रावास के एक कमरे में चार छात्राओं में से एक सुभद्रा कुमारी भी थी। सुभद्राजी द्वारा गीत-रचना करने का प्रभाव लेखिका पर भी पड़ा और वे भी कविता-रचना करने लगीं। फिर कवि-सम्मेलनों में भाग लेने लगीं और एक बार पुरस्कार में चाँदी का एक कटोरा प्राप्त किया। वह कटोरा सत्याग्रह आन्दोलन के निमित्त इलाहाबाद आये गाँधी को उन्होंने भेंट कर दिया था।

कॉलेज के छात्रावास में साम्प्रदायिकता नहीं थी। वहाँ पर अलग धर्मों एवं विभिन्न प्रान्तों की लड़कियाँ मिलकर रहती थीं। लेखिका का परिवार जहाँ पर रहता था, वहाँ पर जवारा के नवाब साहब का परिवार भी रहता था। उन परिवारों में अत्यन्त आत्मीयता थी और वे सभी त्योहार आपस में मिलकर मनाते थे। नवाब साहब की बेगम ने ही लेखिका के छोटे भाई का नाम मनमोहन रखा था। उस समय की सामाजिक स्थिति अतीव सहज थी, लगता है वह समय अब खो गया।

कठिन-शब्दार्थ–स्मृतियाँ = यादें। आकर्षण = खिंचाव। विदुषी = बुद्धिमती। दर्जा = कक्षा। मेस = भोजनालय। प्रभाती = सुबह के समय गाया जाने वाला गीत। कम्पाउंड = क्षेत्र। निराहार = बिना भोजन के। वाइस चांसलर = उप-कुलपति।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. "मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है।" इस कथन के आलोक में आप यह पता लगाएँ कि–

(क) उस समय लड़कियों की दशा कैसी थी?

उत्तर–उस समय अर्थात् सन् 1900 के आसपास लड़कियों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण अच्छा नहीं था। उस समय परिवार में लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्त्व दिया जाता था। प्राय: लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था। उन्हें बोझ समझा जाता था। उनके पैदा होते ही घर में मातम छा जाता था। अत: लेखिका के परिवार में दो सौ वर्ष तक कोई लड़की पैदा नहीं हुई थी।

(ख) लड़कियों के जन्म के सम्बन्ध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

उत्तर–आज लड़कियों के जन्म के संबंध में कुछ परिस्थितियाँ बदली हैं। पढ़े-लिखे लोग लड़का-लड़की के अन्तर को धीरे-धीरे कम करते जा रहे हैं। लड़कियों के विकास के लिए कई सरकारी-गैर-सरकारी योजनाएँ चल रही हैं। बहुत-से जागरूक लोग लड़का-लड़की को समान दृष्टि से देखते हैं और लड़कियों का अच्छी तरह से पालन-पोषण के साथ खूब पढ़ाते-लिखाते भी हैं लेकिन संकीर्ण मानसिकता की आज भी कमी नहीं है। भ्रूण-हत्या इसका उदाहरण है। जन्म के बाद उनके साथ भेदभाव किया जाता है। परिणामस्वरूप आज लड़कियों की संख्या घटती जा रही है।

प्रश्न 2. लेखिका उर्दू-फारसी क्यों नहीं सीख पाई?

उत्तर–लेखिका महादेवी वर्मा की उर्दू-फारसी सीखने में रुचि नहीं थी। उनके मन में बैठ गया था कि ये भाषाएँ सीखना मेरे बस की बात नहीं है। परन्तु उसके बाबा चाहते थे कि वह उर्दू-फारसी सीखे, इसलिए एक मौलवी साहब को भी उन्होंने लगाया था, परन्तु लेखिका उसके आते ही चारपाई के नीचे छिप जाती थी। परिणामस्वरूप वह उर्दू-फारसी नहीं सीख पायी।

प्रश्न 3. लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर–लेखिका ने अपनी माँ की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है—

(1) लेखिका की माँ हिन्दी और संस्कृत की ज्ञाता थीं।

(2) वह धार्मिक विचारों वाली महिला थीं और पूजा-पाठ किया करती थीं।

(3) गीत लिखने के अलावा वह मीरां के पदों को गाया करती थीं।

(4) वह साम्प्रदायिक सद्भाव रखती थीं। नवाब साहब के परिवार से उनका पारिवारिक सम्बन्ध था।

(5) बच्चों को शिक्षित एवं संस्कार-युक्त करने के प्रति वह विशेष जागरूक थीं।

(6) गीता में उन्हें विशेष रुचि थी तथा उन्हें लिखने का भी शौक था।

प्रश्न 4. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक सम्बन्धों को लेखिका ने आज के सन्दर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?

उत्तर–जवारा के नवाब के साथ लेखिका के पारिवारिक संबंध बिना किसी भेदभाव के घनिष्ठ थे। दोनों परिवारों के लोग सुख-दु:ख, पर्व-त्योहार, जन्मदिन आदि सभी मौकों पर आपस में आत्मीयता रखकर सम्मिलित होते थे। उनमें साम्प्रदायिक कट्टरता तो जरा भी नहीं थी। महादेवी से नवाब साहब का लड़का राखी बँधवाता था और मुहर्रम पर उनके यहाँ से सभी बच्चों के कपड़े आते थे। इस प्रकार का स्नेह-भाव आज के सन्दर्भ में स्वप्न जैसा लगता है, क्योंकि आज साम्प्रदायिकता, वैमनस्यता एवं धार्मिक-कट्टरता ने लोगों में अलगाववाद को बढ़ावा दिया है।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 5. जेबुन्निसा महादेवी वर्मा के लिए बहुत काम करती थी। जेबुन्निसा के स्थान पर यदि आप होतीं/होते तो महादेवी से आपकी क्या अपेक्षा होती?

उत्तर–जेबुन्निसा के स्थान पर यदि मैं लेखिका के लिए कुछ काम करता, तो मैं भी उनसे कुछ अपेक्षाएँ रखता। मैं उनसे बराबरी, प्रेम और आदर की अपेक्षा करता। महादेवी कविता लिखती थीं, तो उनसे कविता कैसे रची जाती है—इसकी जानकारी हासिल करता। साथ ही पढ़ाई के सम्बन्ध में उचित सहायता-सहयोग की अपेक्षा रखता।

प्रश्न 6. महादेवी वर्मा को काव्य-प्रतियोगिता में चाँदी का कटोरा मिला था। अनुमान लगाइए कि आपको इस तरह का पुरस्कार मिला हो और वह देश-हित में या किसी आपदा-निवारण के काम में देना पड़े तो आप कैसा अनुभव करेंगे/करेंगी?

उत्तर–मुझे भी यदि ऐसा पुरस्कार मिले, तो मैं उसे जरूरत पड़ने पर देश-हित या आपदा-निवारण में देने में संकोच नहीं करूँगा। मैं ऐसे कार्य से स्वयं को गौरवान्वित मानूँगा। देश या समाज के हित को व्यक्तिगत हित से श्रेष्ठ मानना वस्तुत: महान् कर्त्तव्य होता है। इससे सभी को खुशी होती है।

प्रश्न 7. लेखिका ने छात्रावास के जिस बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है, उसे अपनी मातृभाषा में लिखिए।

उत्तर–महादेवी वर्मा जिस क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज में पढ़ती थी, उसमें देश के विभिन्न भागों की छात्राएँ पढ़ती थीं। उनके साथ छात्रावास में रहने वाली छात्राएँ अवधी, बुन्देली, बघेली आदि बोलियों का प्रयोग करती थीं। जेबुन्निसा मराठी शब्दों का प्रयोग करती थी, तो कुछ लड़कियाँ खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग करती थीं। इस प्रकार वहाँ पढ़ने वाली सभी छात्राएँ परस्पर व्यवहार में अपनी-अपनी मातृभाषा का प्रयोग कर सुन्दर वातावरण बना देती थीं।

प्रश्न 8. महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़ते हुए आपके मानस-पटल पर भी अपने बचपन की कोई स्मृति उभरकर आयी होगी, उसे संस्मरण शैली में लिखिए।

उत्तर–मनुष्य को अपने बचपन की कई बातें एवं घटनाएँ सदैव याद रहती हैं और वह उनका जब-तब संस्मरण कर रोमांचित हो जाता है। मेरे बचपन में पाकिस्तान से शरणार्थी बनकर आये लोगों के लिए सरकार ने नई बस्तियों का निर्माण किया। जयपुर शहर के आदर्श नगर तथा सिन्धी कैम्प आदि क्षेत्रों में उन लोगों को बसाया गया था। यद्यपि भारत में उस समय माहौल कुछ अशान्त था, परन्तु इन शरणार्थी बसेरों में अनुपम शान्ति एवं भाईचारा विद्यमान था। वे लोग आपस में बढ़-चढ़कर सहयोग करते थे और मेल-मिलाप रखकर उद्यमी बन रहे थे। उनमें ऊँच-नीच या जाति-पाँति का जरा भी भेदभाव नहीं था। वे केवल मानवता और मानवीय संवेदना जानते थे तथा सदा एक-दूसरे से स्नेहपूर्ण भाषा में वार्तालाप करते थे। इस प्रकार के वातावरण को देखकर हमें काफी प्रसन्नता होती थी और हमारे परिवार भी उनसे एकदम घुल-मिल कर रहने लगे थे।

प्रश्न 9. महादेवी ने कवि सम्मेलनों में कविता पाठ के लिए अपना नाम बुलाए जाने से पहले होने वाली बेचैनी का जिक्र किया है। अपने विद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते समय आपने जो बेचैनी अनुभव की होगी, उस डायरी का एक पृष्ठ लिखिए।

उत्तर–15 अगस्त, 2019। हमारे विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया था। मुझे उसमें महाराणा प्रताप के शौर्य पर आधारित एक कविता पढ़नी थी। मैंने अपनी कक्षा में और अन्त:कक्षा प्रतियोगिताओं में अनेक बार कविता पाठ किया था, परन्तु सांस्कृतिक मंच से कविता पढ़ने का यह पहला ही अवसर था। कार्यक्रम प्रारम्भ होने पर मंच-संचालक ने ज्यों-ज्यों वक्ताओं के नामों की घोषणा की, मेरी बेचैनी बढ़ती गयी। मन धक-धक करने लगा था। मन में घबराहट होने लगी थी कि कहीं कविता भूल नहीं जाऊँ। हथेलियों पर पसीना आ गया तथा गला सूखने-सा लगा, हाथ-पाँव में कम्पन महसूस होने लगा। परन्तु मैं मन को सान्त्वना भी देता रहा। उद्घोषक महोदय ने ज्यों ही मेरा नाम पुकारा, मैं स्वयं को संयमित करके माइक पर पहुँचा, फिर बड़ी सावधानी और धैर्य से कविता-पाठ करने लगा। मेरा कविता-पाठ समाप्त होते ही सभी ने तालियाँ बजायीं और आचार्यजी ने मुझे शाबाशी दी। इस तरह कविता-पाठ की सफलता से मुझे काफी प्रसन्नता हुई।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 10. पाठ से निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए–
विद्वान्, अनन्त, निरपराधी, दण्ड, शान्ति।

उत्तर–

शब्द	विलोम शब्द
विद्वान्	मूर्ख
अनन्त	सीमित, संक्षिप्त
निरपराधी	अपराधी
दण्ड	पुरस्कार
शान्ति	अशान्ति

प्रश्न 11. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग/प्रत्यय अलग कीजिए और मूल शब्द बताइए।

उत्तर–

शब्द	उपसर्ग		मूल शब्द		प्रत्यय
निराहारी	निर्	+	आहार	+	ई
साम्प्रदायिकता	सम्+प्र	+	दाय	+	इक+ता
अप्रसन्नता	अ	+	प्रसन्न	+	ता
अपनापन	–		अपना	+	पन
किनारीदार	–		किनारी	+	दार
स्वतन्त्रता	स्व	+	तन्त्र	+	ता

प्रश्न 12. निम्नलिखित उपसर्गों की सहायता से दो-दो शब्द लिखिए–
उपसर्ग—अन्, अ, सत्, स्व, दुर्
प्रत्यय—दार, हार, वाला, अनीय।

उत्तर–उपसर्ग/प्रत्यय		शब्द
अन्	–	अनाचार, अनुपयोगी, अनन्त
अ	–	अन्याय, असत्य, अनाथ
सत्	–	सज्जन, सद्गति, सत्कार
स्व	–	स्वार्थ, स्वतन्त्र, स्वराज, स्वाधीन
दुर्	–	दुर्गति, दुराचार, दुर्गन्ध
दार	–	दुकानदार, किरायेदार, जमींदार
हार	–	पालनहार, सिरजनहार, मनिहार
वाला	–	गाड़ीवाला, दूधवाला, पानवाला
अनीय	–	माननीय, पठनीय, पूजनीय

प्रश्न 13. पाठ में आये सामासिक पद छाँटकर विग्रह कीजिए।

उत्तर–

पद	विग्रह	समास-नाम
पूजा-पाठ	पूजा और पाठ	द्वन्द्व
परमधाम	परम है जो धाम	कर्मधारय
दुर्गापूजा	दुर्गा की पूजा	तत्पुरुष
कुलदेवी	कुल की देवी	तत्पुरुष
पंचतन्त्र	पाँच तन्त्रों का समूह	द्विगु

रोना-धोना	रोना और धोना	द्वन्द्व
कवि-सम्मेलन	कवियों का सम्मेलन	तत्पुरुष
छात्रावास	छात्रों के लिए आवास	तत्पुरुष
निराहार	बिना आहार के	अव्ययीभाव
चाची-ताई	चाची और ताई	द्वन्द्व
मनमोहन	मन का मोहन है जो, वह (कृष्ण)	बहुब्रीहि
जन्मदिन	जन्म का दिन	तत्पुरुष
कृपानिधान	कृपा के निधान	तत्पुरुष
उर्दू-फारसी	उर्दू और फारसी	द्वन्द्व

पाठेतर सक्रियता—

बचपन पर केन्द्रित मैक्सिम गोर्की की रचना 'मेरा बचपन' पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।

उत्तर—छात्र स्वयं करें।

'मातृभूमि : ए विलेज विदआउट विमेन' (2005) फिल्म में देखें।

मनीष झा द्वारा निर्देशित इस फिल्म में कन्या-भ्रूण हत्या की त्रासदी को अत्यन्त बारीकी से दिखाया गया है।

उत्तर—फिल्म स्वयं देखें।

कल्पना के आधार पर बताइए कि लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का रूप कैसा होगा?

उत्तर—भारत में लड़कियों की संख्या कम होने पर समाज का रूप बिखर जायेगा। यदि लड़कियों का जन्म नहीं होगा, तो अनेक युवक बिना विवाह किये रह जायेंगे। समाचार में लड़कियों की खरीद-फरोख्त का दुराचार चल पड़ेगा। एक लड़की के लिए तीन चार लड़के वर-रूप में सामने आ जायेंगे। तब लड़की वालों से दहेज की माँग भी कोई नहीं करेगा, उल्टे लड़के वालों को लड़की के गरीब पिता की आर्थिक सहायता करनी पड़ेगी। लड़कियों की संख्या कम होने से परिवार एवं समाज में मधुर स्नेह-सम्बन्ध कम हो जायेंगे। भैया-दूज, राखी आदि त्योहार की रौनक फीकी पड़ जायेगी। लड़की कोमलता, मधुरता, त्याग-भावना, स्नेह-भाव एवं सेवा-भावना आदि से मण्डित रहती है। लड़कियों के न होने या कम होने से परिवारों में इन मधुर भावनाओं का लोप हो जायेगा। इस तरह समाज की दशा एकदम नीरस, दयनीय तथा चिन्तनीय बन जायेगी।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न—

1. महादेवी वर्मा से पूर्व उनके परिवार में वातावरण नहीं था—
   (क) अंग्रेजी भाषा का (ख) हिन्दी भाषा का
   (ग) उर्दू भाषा का (घ) फारसी भाषा का
2. महादेवी के मन ही मन प्रसन्न होने का प्रमुख कारण था—
   (क) कविता-पाठ में चाँदी का कटोरा मिलना। (ख) सुभद्राजी को मिले कटोरे में खीर खिलाना।
   (ग) पुरस्कार में मिले कटोरे को बापू को देना। (घ) मिले कटोरे को सुभद्राजी को दिखाना।
3. बेगम साहिबा के घर में बोली जाती थी—
   (क) बुंदेली भाषा (ख) उर्दू भाषा (ग) अवधी भाषा (घ) मराठी भाषा
4. महादेवी वर्मा के भाई का नाम 'मनमोहन' रखा था—
   (क) उनकी माताजी ने (ख) उनके दादाजी ने
   (ग) बेगम साहिबा ने (घ) उनके चाचा ने
5. महादेवी के बचपन में देशगत वातावरण था—
   (क) जातिगत एकता का (ख) सरलता तथा अपनेपन का
   (ग) साम्प्रदायिक मेलजोल का (घ) विश्वास और प्रेम का
6. महादेवी के परिवार की कुल-देवी कौन थी?
   (क) लक्ष्मीजी (ख) दुर्गाजी (ग) कालीजी (घ) पार्वतीजी
7. 'क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज' में लेखिका को पहली साथिन के रूप में कौन मिली थी?
   (क) दो मराठी लड़कियाँ (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान

(ग) जीनत बेगम (घ) अध्यापिका

8. किसे देखकर लेखिका चारपाई के नीचे जा छिपी?
(क) बापू को देखकर (ख) माता को देखकर
(ग) मौलवी साहब को देखकर (घ) भाई को देखकर

9. पाठ के आधार पर कवयित्री को किसमें विचित्र आकर्षण लगता है?
(क) बचपन के मित्रों में (ख) बचपन के खिलौनों में
(ग) बचपन की स्मृतियों में (घ) बचपन के पकवानों में

10. महादेवी को बचपन से किस चीज का शौक था?
(क) गाने का (ख) कविता बोलने का
(ग) निबन्ध लिखने का (घ) खेलने का

1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ग) 6. (ख) 7. (ख) 8. (ग) 9. (ग) 10. (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. महात्मा गाँधी को लेखिका ने .... दिखाया। (कविता संग्रह/कटोरा)
2. आनन्द भवन का सम्बन्ध .... से था। (स्वतन्त्रता संघर्ष/निवास)
3. जेबुन्निसा .... की रहने वाली थी। (पूना/कोल्हापुर)
4. नवाब साहिबा लेखिका की माँ को .... कहती थी। (रानी/दुल्हन)
5. जवारा के नवाब .... में रहते थे। (कोठी/बंगले)
6. मुझको प्रायः .... पुरस्कार मिलता था। (प्रथम/द्वितीय)

उत्तर–1. कटोरा 2. स्वतन्त्रता संघर्ष 3. कोल्हापुर 4. दुल्हन 5. बंगले 6. प्रथम।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'स्त्री दर्पण' क्या है?
उत्तर–'स्त्री-दर्पण' एक पत्रिका का नाम है।

प्रश्न 2. परम धाम भेजने का क्या अर्थ है?
उत्तर–परम धाम भेजने का अर्थ मार डालना है।

प्रश्न 3. नवाब साहिबा के अनुसार राखी के दिन राखी बँधवाने तक भाई को कैसे रहना चाहिए?
उत्तर–नवाब साहिबा के अनुसार राखी के दिन राखी बँधवाने तक भाई को निराहार रहना चाहिए।

प्रश्न 4. नवाब साहिबा लेखिका को बार-बार क्या कहलाती थी?
उत्तर–नवाब साहिबा लेखिका को बार-बार कहलाती थी "भाई भूखा बैठा है राखी बँधवाने के लिए।"

प्रश्न 5. इस्लाम के मुहर्रम में किस रंग के कपड़े बनवाए जाते हैं?
उत्तर–इस्लाम के मुहर्रम में हरे रंग के कपड़े बनवाए जाते हैं।

प्रश्न 6. नवाब साहिबा दुल्हन किसे कहती थी?
उत्तर–नवाब साहिबा लेखिका की माँ को दुल्हन कहती थी।

प्रश्न 7. महादेवी के जन्म के समय समाज में लड़कियों की दशा कैसी थी?
उत्तर–महादेवी के जन्म के समय समाज में लड़कियों को बोझ माना जाता था। उनके पैदा होते ही उन्हें मार दिया जाता था।

प्रश्न 8. प्रतिभागी के रूप में महादेवी कवि-सम्मेलन में कौनसा स्थान प्राप्त करती थी?
उत्तर–प्रतिभागी के रूप में महादेवी वर्मा को कवि-सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार मिलता था। उन्हें सौ से अधिक पदक मिले थे।

प्रश्न 9. सुभद्राजी कहाँ की रहने वाली थी?
उत्तर–सुभद्राजी कोल्हापुर की रहने वाली थी।

प्रश्न 10. महादेवी के बड़े होने पर किनके सम्बन्धों में खटास पैदा होने लगी?
उत्तर–महादेवी के बड़े होने पर हिन्दू-मुस्लिम के सम्बन्धों में खटास पैदा होने लगी।

प्रश्न 11. लेखिका की भेंट गाँधीजी से किस स्थान में हुई थी?
उत्तर–लेखिका की भेंट गाँधीजी से आनन्द भवन में हुई थी।

प्रश्न 12. बेगम साहिबा कौन थी?

उत्तर—बेगम साहिबा महादेवी की पड़ोसन थी।

प्रश्न 13. लेखिका अपनी आरम्भिक कविताएँ कहाँ छापने भेजती थी?

उत्तर—लेखिका अपनी आरम्भिक कविताएँ 'स्त्री-दर्पण' में छापने भेजती थी।

प्रश्न 14. 'मेरे बचपन के दिन' पाठ में किस छात्रावास का उल्लेख किया गया है?

उत्तर—इस पाठ में क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज के छात्रावास का उल्लेख है, जहाँ बालिका महादेवी वर्मा को पाँचवीं कक्षा में भर्ती कराया गया।

प्रश्न 15. लेखिका को कविताएँ लिखने की प्रेरणा किससे मिली?

उत्तर—लेखिका को काव्य-लेखन की प्रेरणा दो लोगों से मिली है—

(1) उनकी माँ (2) सुभद्राकुमारी चौहान।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. लेखिका के जन्म पर उसकी खातिर क्यों की गई? 'मेरे बचपन के दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर—लेखिका ने बताया कि उनके घर-परिवार में पिछले दो सौ वर्षों से कोई कन्या का जन्म नहीं हुआ था। उनके बाबा ने अपनी कुलदेवी दुर्गा की विशेष आराधना कर कन्या-जन्म की प्रार्थना की थी। इस तरह दुर्गा-पूजा के बाद कन्या रूप में लेखिका का जन्म हुआ था इसी कारण उसकी बड़ी आस्था के साथ खातिर की गई।

प्रश्न 2. लेखिका ने ब्रजभाषा में कविता लिखना क्यों प्रारम्भ किया?

उत्तर—बचपन में लेखिका की माँ स्वयं गीत लिखती थीं और विशेषकर मीरां के भक्ति-पद गाया करती थीं। वे प्रभात काल में 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यह गाती थीं। इस प्रकार वे ब्रजभाषा के पद मधुर स्वर में गाती थीं, जिसे सुन-सुनकर लेखिका ने भी ब्रजभाषा में लिखना प्रारम्भ किया।

प्रश्न 3. लेखिका को कवि-सम्मेलनों में भाग लेने से क्या लाभ रहा?

उत्तर—उस समय कवि-सम्मेलन होते थे, वहाँ जाकर लेखिका कविता-पाठ करती थीं। उन सम्मेलनों में उन्हें पुरस्कार मिलता था। इससे उन्हें सौ से अधिक पदक मिले होंगे। एक बार उन्हें चाँदी का नक्काशीदार सुन्दर कटोरा मिला था। इस प्रकार लेखिका को प्रतिभा निखारने एवं शिक्षित समाज में प्रतिष्ठा बढ़ने का लाभ रहा।

प्रश्न 4. पुरस्कार में चाँदी का कटोरा मिलने पर सुभद्राजी ने लेखिका से क्या कहा?

उत्तर—लेखिका ने कवि-सम्मेलन से लौटकर सुभद्राजी को पुरस्कार में मिला चाँदी का कटोरा दिखाया। तब सुभद्राजी ने कहा कि ठीक है, अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ।

प्रश्न 5. 'मेरे बचपन के दिन' संस्मरण के आधार पर बताइए कि जेबुन्निसा कौन थी? वह महादेवी की क्या मदद करती थी?

उत्तर—जेबुन्निसा एक मराठी लड़की थी, जो सुभद्राजी के जाने के बाद उनकी जगह पर छात्रावास में आयी थी। वह महादेवी की डेस्क साफ कर देती थी, किताबें ठीक से रख देती थी, जिससे लेखिका को कविता लिखने का भी समय मिल जाता था। वह मराठी शब्दों से मिश्रित हिन्दी बोलती थी। लेखिका भी उससे कुछ-कुछ मराठी सीखने लगी थी।

प्रश्न 6. महादेवी की हिन्दी के प्रति रुचि कैसे जागी?

उत्तर—महादेवी के घर हिन्दी का वातावरण नहीं था। उनकी माता हिन्दी अवश्य जानती थी। उन्होंने ही महादेवी को पंचतन्त्र पढ़ना सिखाया, फिर क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में सुभद्रा कुमारी चौहान आदि सहपाठिनों के सम्पर्क से हिन्दी भाषा का परिष्कार होने लगा। तभी से महादेवी की हिन्दी के प्रति रुचि जागी।

प्रश्न 7. 1917 में स्वतन्त्रता संग्राम का क्या स्वरूप था?

उत्तर—1917 में गाँधीजी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता-संग्राम शुरू हो चुका था। इसकी पहल गाँधीजी ने सत्याग्रह से की। जगह-जगह हिन्दी के कवि-सम्मेलन के द्वारा जन-जागरण का कार्य शुरू हो चुका था।

प्रश्न 8. महादेवी ने हिन्दी किस प्रकार सीखी?

उत्तर—महादेवी के पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी और घर में हिन्दी का कोई वातावरण नहीं था। जब उनकी माता जबलपुर से आई तब उन्होंने महादेवी को पंचतन्त्र पढ़ना सिखाया और इस प्रकार उन्होंने हिन्दी सीखी।

प्रश्न 9. बेगम साहिबा की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—बेगम साहिबा मुसलमान होते हुए भी लेखिका महादेवीजी के परिवार से भावनात्मक रूप से जुड़ी थी। वह एक मिलनसार तथा खुले विचारों वाली महिला थी। उन्होंने महादेवी के परिवार के साथ ऐसे सम्बन्ध जोड़ लिए थे जैसे वह उन्हीं के परिवार का हिस्सा हो।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. महादेवी वर्मा के जन्म पर लड़कियों की स्थिति-परिवर्तन के क्या कारण रहे होंगे?

उत्तर–महादेवी वर्मा के जन्म से पहले समाज में लड़कियों को जन्म लेते ही परमधाम भेज देते थे। उस समय लड़कियाँ पैदा होना अच्छा नहीं मानते थे। इस तरह तब कन्या-जन्म पर रोक लगी हुई थी। परन्तु समाज में प्रचलित इस बुराई के प्रति विरोध की आवाज उठने लगी तथा कन्या-हत्या को अपराध माना जाने लगा। समाज-सुधारकों ने इस कुप्रथा को मिटाने के प्रयास किये। फलस्वरूप कन्या-जन्म को शुभ माना जाने लगा और लड़कियों की लड़कों की तरह ही परवरिश होने लगी। नारी-जागरण की भावना का प्रसार होने लगा।

प्रश्न 2. हमारे समाज में महादेवी वर्मा के बचपन और वर्तमान स्थिति में क्या परिवर्तन आ गया है?

उत्तर–महादेवी वर्मा के बचपन में हिन्दुओं एवं मुसलमानों में आपसी भेदभाव कम ही था। उस समय दोनों सम्प्रदाय भाई-चारे का व्यवहार रखते थे। परन्तु अब राजनीतिक कुचक्र के कारण हिन्दू-मुसलमानों में वैसा प्यार और भाईचारा नहीं रह गया है। महादेवी वर्मा के जन्म-काल में लड़कियों को अनेक कष्ट सहने पड़ते थे, नारी-सम्मान की कमी थी, परन्तु अब वैसी स्थिति नहीं है। अब कन्याओं की सुख-सुविधा एवं शिक्षा आदि को लेकर काफी परिवर्तन आ गया है। फिर भी पिछड़े वर्गों में स्थिति कुछ चिन्तनीय बनी हुई है।

प्रश्न 3. स्वतंत्रता आन्दोलन में कवि सम्मेलनों का क्या योगदान था?

उत्तर–स्वतन्त्रता आन्दोलन में कांग्रेस पार्टी आजादी प्राप्त करने की आकांक्षा के साथ-साथ देश को एकता के सूत्र में भी बाँधना चाहती थी, इसके लिए वह हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार कर रही थी। इस दृष्टि से जगह-जगह पर हिन्दी कवि सम्मेलन आयोजित किए जाते थे जिनकी अध्यक्षता हिन्दी के शीर्षस्थ कवि किया करते थे। इन्हीं के प्रयासों से देश में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार और स्वदेश प्रेम की भावना का जागरण हुआ।

प्रश्न 4. लेखिका की शिक्षा की शुरूआत किस तरह हुई?

उत्तर–लेखिका के परिवार में हिन्दी का कोई वातावरण नहीं था। परिवार में हिन्दी की शुरुआत इनकी माँ से हुई। लेखिका को उनकी माँ ने 'पंचतन्त्र' पढ़ना सिखाया, कुछ संस्कृत भी पढ़ी। इनके बाबा इन्हें विदुषी बनाना चाहते थे, इसलिए वे चाहते थे कि बालिका महादेवी संस्कृत के साथ उर्दू-फारसी भी सीख ले। परन्तु लेखिका ने उर्दू-फारसी नहीं सीखी। फिर इन्हें मिशन स्कूल में प्रवेश दिलाया। वहाँ इनका मन नहीं लगा तो क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज में भेजा गया, जहाँ उन्हें पाँचवीं में प्रवेश मिला।

प्रश्न 5. ''शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।'' इस कथन से लेखिका ने क्या व्यंजना की है?

उत्तर–इस कथन से लेखिका ने यह व्यंजना की है कि उन्होंने अपने बचपन में हिन्दू-मुसलमान परिवारों में पारस्परिक प्रेम, मित्रता, उदारता एवं आत्मीयता का जो सपना देखा था, यदि वह सत्य हो जाता, तो आज सारे भारत में दोनों ही सम्प्रदायों में भाईचारे का प्रसार होता। दोनों सम्प्रदायों के मेल-मिलाप से देश में सर्वत्र शान्ति स्थापित होती और प्रगति का मार्ग प्रशस्त रहता। तब भारत की कथा कुछ और ही होती।

प्रश्न 6. 'मेरे बचपन के दिन' संस्मरण के आधार पर बताइए कि महादेवी वर्मा के जीवन पर किन-किन लोगों का अधिक प्रभाव पड़ा?

उत्तर–महादेवी वर्मा ने संस्मरण में बताया कि उनके बाबा उन्हें विदुषी बनाना चाहते थे। फिर माँ ने 'पंचतन्त्र' पढ़ना सिखाया, भजन के पदों से प्रभावित किया। इस प्रकार महादेवी वर्मा के जीवन पर पहले बाबा और माँ का प्रभाव पड़ा। फिर सहपाठिन रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रभाव पड़ा और वे कविता-रचना करने लगीं और कवि-सम्मेलनों में भाग लेने लगीं। गाँधीजी का महादेवी पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा, इससे वे देशसेवा के कार्य में लग गईं। जवारा की बेगम साहिबा का भी साम्प्रदायिक सद्भाव रखने का प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 7. 'जवारा की बेगम साहिबा' के प्रसंग का स्मरण कर महादेवी वर्मा ने क्या सन्देश दिया है?

उत्तर–जवारा की बेगम साहिबा के मन में हिन्दू-मुसलमान का भेद नहीं था। धार्मिक कट्टरता से भी वह मुक्त थी। वह महादेवी वर्मा के परिवार से भाईचारा रखती थी। इसी से वह महादेवी से अपने पुत्र को राखी बँधवाती थी और मुहर्रम पर महादेवी के परिवार को आमन्त्रित करती थी। महादेवी वर्मा उसे 'ताई साहिबा' कहती थी तो उनके बच्चे लेखिका की माँ को 'चाची जान' कहते थे। महादेवी के भाई का नामकरण भी उन्हीं ने किया था। लेखिका ने जवारा की बेगम साहिबा के प्रसंग का स्मरण कर धार्मिक सद्भाव रखने तथा साम्प्रदायिक भेद-भाव न रखने का सन्देश दिया है।

प्रश्न 8. महादेवी वर्मा ने मिशन स्कूल में जाना क्यों बन्द किया?

उत्तर–महादेवी वर्मा की माँ ने उसे 'पंचतन्त्र' पढ़ाया था, गीता के श्लोक एवं मीराँ के पद सुनाये थे। जब माँ पूजा-पाठ करती तो लेखिका भी वहीं पर बैठ जाती थी। इस प्रकार घर का वातावरण बहुत अच्छा था। महादेवी वर्मा को

जब मिशन स्कूल में दाखिला कराया, तो वहाँ का वातावरण एकदम भिन्न था। वहाँ प्रार्थना भी दूसरी थी। इस कारण उनका मन नहीं लगा और लेखिका ने उस स्कूल में जाना बन्द कर दिया।

प्रश्न 9. लेखिका बापू से मिलने जाते समय अपने साथ पुरस्कार में मिला चाँदी का कटोरा क्यों ले गई थीं? कटोरा खोने पर भी लेखिका क्यों प्रसन्न थीं?

उत्तर–लेखिका को कविता-पाठ में प्रथम पुरस्कार के रूप में चाँदी का नक्काशीदार कटोरा मिला था। गाँधीजी से मिलने जाते समय लेखिका उन्हें दिखाने के लिए तथा उनकी प्रशंसा पाने के लिए कटोरा साथ ले गई थीं। बापू ने वह कटोरा हाथ में लिया और अपने पास रख लिया। तब कटोरा खोने पर लेखिका मन-ही-मन प्रसन्न थीं कि पुरस्कार में मिला कटोरा देशहित में काम आयेगा। उसने अपना कटोरा बापू को देकर बड़ा त्याग किया है।

प्रश्न 10. साम्प्रदायिक सद्‌भाव और राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज का वातावरण कितना अच्छा था? लिखिए।

उत्तर–क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में हिन्दू-मुस्लिम और ईसाई लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ती थीं। वहाँ छात्रावास में अलग-अलग प्रान्तों से आयी हुई लड़कियाँ अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषा में बोलती थीं, परन्तु सभी हिन्दी-उर्दू पढ़ती थीं। सभी एक साथ प्रार्थना करती थीं और सभी के लिए एक मेस था, जिसमें प्याज का प्रयोग नहीं होता था। उन लड़कियों में जाति-धर्म अथवा साम्प्रदायिकता की भावना नहीं थी, भाषा एवं प्रान्तीयता का भेद-भाव नहीं था। इस प्रकार वहाँ साम्प्रदायिक सद्‌भाव एवं राष्ट्रीय एकता के आदर्श विद्यमान थे।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. महादेवी वर्मा के लिखने-पढ़ने के संस्कार किस तरह विकसित हुए?

उत्तर–महादेवी का जन्म होने पर उनके बाबा ने उन्हें विदुषी बनाने का निश्चय व्यक्त किया। इसी कारण उन्हें बचपन में संस्कृत के साथ उर्दू-फारसी का भी ज्ञान कराया। वे अपनी माँ से जो ब्रजभाषा में तुकबन्दी किया करती थी। महादेवी का अधिकतर समय अपनी माँ के साथ सवेरे प्रभाती और शाम को मीरा के पद सुनते हुए बीता था। यही सुनते-सुनते महादेवीजी ने ब्रज भाषा में तुकबन्दी करना शुरू किया था तथा माँ से गीता का पाठ सुनती थी। फिर क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में जाने पर लेखिका में लिखने-पढ़ने के संस्कार विकसित होने लगे। वे वहाँ पर सुभद्राजी का अनुसरण कर कविताएँ लिखने का अभ्यास करने लगीं और उनके साथ कवि-सम्मेलनों में जाने लगीं। कॉलेज की सहपाठिनी लड़कियों के साथ रहने से उनकी प्रतिभा का विकास हुआ। इस तरह उनमें सुशिक्षा के संस्कार विकसित होते रहे।

प्रश्न 2. लेखिका की सुभद्राजी से किस तरह मित्रता हुई?

उत्तर–छात्रावास के एक कमरे में चार लड़कियाँ रहती थीं। उस कमरे में लेखिका की पहली साथिन सुभद्रा कुमारी थी। वे लेखिका से दो कक्षा सीनियर अर्थात् सातवीं कक्षा में पढ़ती थीं। वे कविता लिखती थीं तथा उस समय तक एक प्रसिद्ध कवयित्री बन चुकी थी। लेखिका भी बचपन से तुकबन्दी किया करती थी। सुभद्राजी कविता-रचना में प्रतिष्ठित हो गई थीं, इसलिए लेखिका उनसे छिप-छिपकर लिखती थी। सुभद्राजी के पूछने पर लेखिका ने कविता-रचना की बात नकार दी, परन्तु तलाशी लेने पर उनकी किताबों से ढेर-सारी कविताएँ निकलीं। फिर तो सुभद्राजी ने छात्रावास में सबसे लेखिका का परिचय कवयित्री के रूप में कराया। इस प्रकार दोनों में मित्रता हो गई।

प्रश्न 3. 'मेरे बचपन के दिन' पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'मेरे बचपन के दिन' पाठ में लेखिका वर्मा ने स्मृतियों के सहारे कई रोचक घटनाओं का वर्णन किया है। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों से आने वाली पीढ़ी को अवगत कराया। लेखिका ने तत्कालीन समाज के साथ-साथ अपने परिवार में स्त्री की स्थिति का चित्रण किया है। उन्होंने अपने शिक्षित परिवार के साथ-साथ घर के धार्मिक और सद्‌भावपूर्ण वातावरण का भी चित्रण किया है। अत: इस पाठ का प्रमुख उद्देश्य आज की युवा पीढ़ी के मन में मेलजोल की भावना को मजबूत करना है। साथ ही पाठ हमें साम्प्रदायिक सद्‌भाव से जुड़कर तथा राष्ट्रीय एकता को समृद्ध करने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार हम अपनी स्वतन्त्रता के प्रति सजग रहकर देश की सुरक्षा के लिए तन-मन-धन से अपने प्राण न्यौछावर करने का संकल्प ले सकते हैं।

रचनाकार परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. महादेवी वर्मा के जीवन परिचय पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–हिन्दी साहित्य में आधुनिक मीरा के नाम से प्रसिद्ध कवयित्री एवं लेखिका महादेवी वर्मा का जन्म वर्ष 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद शहर में हुआ था। इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम.ए. तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वर्ष 1933 में प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य पद को सुशोभित किया। इन्हें 'यामा' काव्य ग्रन्थ पर

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। महादेवीजी ने गद्य-पद्य दोनों ही विधाओं पर समान अधिकार से अपनी लेखनी चलाई। इनकी नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र, स्मृति के रेखाएँ, शृंखला की कड़ियाँ, पथ के साथी आदि प्रमुख रचनाएँ हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में खड़ी बोली, संस्कृत, ब्रज आदि भाषाओं का प्रयोग किया है। 1987 में इनका निधन हो गया था।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनसे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1)

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं।

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजा की। हमारी कुलदेवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिन्दी का कोई वातावरण नहीं था।

प्रश्न 1. बचपन में लेखिका के परिवार का शैक्षिक वातावरण कैसा था?

प्रश्न 2. लेखिका के बाबा ने दुर्गा-पूजा क्यों की?

प्रश्न 3. पहले लड़कियों को पैदा होने पर क्या करते थे?

प्रश्न 4. ''मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है।''–से लेखिका का क्या आशय है?

प्रश्न 5. बचपन की स्मृतियों का क्या असर रहता है?

प्रश्न 6. लड़की पैदा हो, इसके लिए लेखिका के बाबा ने क्या किया?

उत्तर–1. बचपन में लेखिका के परिवार में उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और संस्कृत के जानकार थे। परन्तु परिवार में हिन्दी का कोई वातावरण नहीं था।

2. परिवार में लड़की का जन्म हो, इस अभिलाषा से पूरित होकर लेखिका के बाबा ने दुर्गा-पूजा की।

3. पहले लड़कियों को पैदा होने पर बोझ समझ कर मार दिया जाता था।

4. लेखिका के बचपन के समय लड़कियों को पैदा होते ही परम धाम पहुँचा दिया जाता था, पर लेखिका को परिवार का प्यार मिला।

5. जब भी बचपन की याद आती है, मन प्रसन्नता से भर जाता है और ऐसा प्रतीत होता है कि बचपन क्यों चला गया।

6. अपने परिवार को शापमुक्त करने तथा घर में लड़की पैदा होने के लिए लेखिका के बाबा ने देवी दुर्गा की बहुत पूजा-अर्चना की।

(2)

मेरे सम्बन्ध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतन्त्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू-फारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पण्डितजी आये संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं। गीता में उन्हें विशेष रुचि थी। पूजा-पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थी और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरान्त उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल का वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बन्द कर दिया। जाने में रोने-धोने लगी। तब उन्होंने मुझे क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा।

प्रश्न 1. मिशन स्कूल में लेखिका का मन क्यों नहीं लगा?

प्रश्न 2. मौलवी साहब लेखिका के घर क्यों आए थे?

प्रश्न 3. लेखिका ने अपनी माँ के विषय में क्या बताया?

प्रश्न 4. मौलवी साहब को देखकर लेखिका ने क्या किया?

प्रश्न 5. लेखिका के वश में क्या नहीं था?

प्रश्न 6. लेखिका का मन मिशन स्कूल में नहीं लगा तब उसे कहाँ भेजा गया?

उत्तर–1. मिशन स्कूल का वातावरण दूसरा था। वहाँ पर प्रार्थना भी दूसरी तरह की थी, इसी कारण मन नहीं लगा।

2. मौलवी साहब लेखिका के बाबा की आज्ञानुसार लेखिका को उर्दू-फारसी पढ़ाने के लिए आए थे।

3. लेखिका की माँ धार्मिक विचारों की थी। वह हिन्दी और संस्कृत जानती थी तथा गीता में रुचि रखती थी।

4. मौलवी साहब को देखकर लेखिका चारपाई के नीचे जा छिपी थी।

5. उर्दू-फारसी सीखना लेखिका के वश में नहीं था।

6. तब लेखिका को क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा।

(3)

हिन्दी का उस समय प्रचार-प्रसार था। मैं सन् 1917 में यहाँ आई थी। उसके उपरांत गाँधीजी का सत्याग्रह आरम्भ हो गया और आनन्द भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केन्द्र हो गया। जहाँ-तहाँ हिन्दी का प्रचार भी चलता था। कवि सम्मेलन होते थे तो क्रास्थवेट से मैडम हमको साथ लेकर जाती थी। हम कविता सुनाते थे। कभी हरिऔधजी अध्यक्ष होते थे, कभी श्रीधर पाठक होते थे, कभी रत्नाकरजी होते थे। कभी कोई होता था। कब हमारा नाम पुकारा जाए, बेचैनी से सुनते रहते थे। मुझको प्रायः प्रथम पुरस्कार मिलता था। सौ से कम पदक नहीं मिले होंगे उसमें।

प्रश्न 1. सन् 1917 में हिन्दी की क्या स्थिति थी?

प्रश्न 2. इलाहाबाद का आनन्द भवन किसका केन्द्र बन चुका था?

प्रश्न 3. महादेवी के साथ कवि सम्मेलनों में कौन जाया करता था?

प्रश्न 4. सन् 1917 में महादेवी कहाँ आयी थी?

प्रश्न 5. 1917 में कौनसी घटना घटी?

प्रश्न 6. मैडम लेखिका को लेकर कहाँ जाती थीं?

उत्तर–1. सन् 1917 में कांग्रेस के नेतृत्व में हिन्दी का प्रचार-प्रसार चल रहा था। जगह-जगह हिन्दी के कवि सम्मेलन होते थे।

2. इलाहाबाद का आनन्द-भवन स्वतन्त्रता संग्राम का केन्द्र बन चुका था।

3. महादेवी के साथ कवि सम्मेलनों में क्रास्थवेट की मैडम साथ जाया करती थी।

4. महादेवी वर्मा सन् 1917 में इलाहाबाद में क्रास्थवेट कॉलेज में पढ़ने आई थी।

5. 1917 में गाँधीजी ने सत्याग्रह शुरू किया था।

6. मैडम लेखिका को लेकर कवि-सम्मेलनों में जाती थीं।

(4)

उसी बीच आनन्द भवन में बापू आये। हम लोग तब अपने जेब-खर्च में से हमेशा एक-एक दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बाबू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको'। मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे? अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुःख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब मैंने सुभद्राजी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्राजी ने कहा, 'और जाओ दिखाने! फिर बोलीं, देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी ही पड़ेगी।'

प्रश्न 1. गाँधीजी आनन्द भवन में किस निमित्त आये थे?

प्रश्न 2. 'मेरे बचपन के दिन' पाठ में बापू ने लेखिका की कौनसी वस्तु माँग ली थी?

प्रश्न 3. सुभद्राजी ने कटोरा दे आने पर लेखिका से क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

प्रश्न 4. गाँधीजी को कटोरा देकर लेखिका को दुःख क्यों हुआ?

प्रश्न 5. लेखिका ने बापू को क्या दिखाया?

प्रश्न 6. लेखिका देश के लिए पैसे कैसे जुटाती थी?

उत्तर–1. गाँधीजी ने देश को आजादी दिलाने के लिए सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था। इसी निमित्त वे आनन्द भवन में आये थे।

2. महात्मा गाँधी ने लेखिका से कविता-पाठ में पुरस्कारस्वरूप प्राप्त चाँदी का कटोरा माँग लिया था।

3. सुभद्राजी ने कहा कि, "और जाओ कटोरा दिखाने! देखो भाई, तुम्हें खीर बनाकर तो खिलानी ही पड़ेगी।"

4. जिस कविता-पाठ से लेखिका को पुरस्कार मिला था, गाँधीजी ने उस कविता के बारे में कुछ न पूछने से लेखिका को दु:ख हुआ।

5. लेखिका महादेवी वर्मा ने बापू को कविता गायन में मिला चाँदी का कटोरा दिखाया।

6. लेखिका देश के लिए पैसे अपने जेब खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने बचाकर जुटाती थी।

(5)

उस समय यह देखा मैंने कि साम्प्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं, वे आपस में अवधी बोलती थीं, बुन्देलखण्ड की आती थीं, वे बुन्देली बोलती थीं। कोई अन्तर नहीं आता था और हम पढ़ते हिन्दी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परन्तु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।

मैं जब विद्यापीठ आयी, तब तक मेरे बचपन का वही क्रम चला जो आज तक चलता आ रहा है। कभी-कभी बचपन के संस्कार ऐसे होते हैं कि हम बड़े हो जाते हैं, तब तक चलते हैं।

प्रश्न 1. लेखिका के बचपन में साम्प्रदायिक वातावरण कैसा था? बताइए।

प्रश्न 2. 'मेरे बचपन का क्रम वही चला' इसमें लेखिका ने किस क्रम का उल्लेख किया है?

प्रश्न 3. 'यह बहुत बड़ी बात थी'—लेखिका ने किसे बहुत बड़ी बात कहा?

प्रश्न 4. बचपन के संस्कारों की क्या विशेषता होती है?

प्रश्न 5. बचपन के संस्कार से क्या आशय है?

प्रश्न 6. साम्प्रदायिकता का क्या अर्थ है?

उत्तर-1. लेखिका के बचपन में सभी धर्मों के लोगों में परस्पर सद्भाव एवं मेल-मिलाप था। सब एक-साथ रहते थे और उस समय साम्प्रदायिकता नहीं थी।

2. लेखिका विद्यालय में जिस क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करती रही, आगे भी उसने वही किया।

3. लेखिका ने बताया कि विद्यालय की सभी लड़कियाँ आपस में अपनी क्षेत्रीय भाषा में ही बोलती थीं। यही विशेषता या सद्भावना बहुत बड़ी बात थी।

4. बचपन के संस्कारों की यह विशेषता होती है कि वे आजीवन व्यक्ति के आचार-व्यवहार आदि को प्रभावित करते हुए साथ रहते हैं।

5. बचपन के संस्कार से तात्पर्य उन संस्कारों से हैं, जो हमें बचपन में अपने घर-परिवार से प्राप्त होते हैं।

6. साम्प्रदायिकता का अर्थ है—अपने समुदाय के प्रति एक मजबूत लगाव, यह किसी का अपना धर्म, क्षेत्र या भाषा हो सकती है।

(6)

वही प्रोफेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे, गोरखपुर यूनिवर्सिटी के भी रहे। कहने का तात्पर्य यह कि मेरे छोटे भाई का नाम वही चला जो ताई साहिबा ने दिया। उनके यहाँ भी हिन्दी चलती थी, उर्दू भी चलती थी। यों, अपने घर में वे अवधी बोलते थे। वातावरण ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वह सपना खो गया।

प्रश्न 1. प्रोफेसर वर्मा कौन थे?

प्रश्न 2. बेगम साहिबा के घर में कौन-कौन सी भाषाएँ बोली जाती थीं?

प्रश्न 3. प्रोफेसर साहब का नामकरण किसने किया था?

प्रश्न 4. 'जैसे वह सपना ही था, आज वह सपना खो गया।' यहाँ लेखिका ने किस सपने की बात कही है और क्यों?

प्रश्न 5. आज की स्थिति देखकर लेखिका को क्या लगता है?

प्रश्न 6. पहले की तरह आज भी हम लोग मिल-जुलकर रहते तो किसकी स्थिति अच्छी होती?

उत्तर-1. प्रोफेसर वर्मा महादेवीजी के छोटे भाई थे। जो जम्मू यूनिवर्सिटी और गोरखपुर यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे थे।

2. बेगम साहिबा के घर में हिन्दी, उर्दू तथा अवधी तीनों भाषाएँ बोली जाती थीं।

3. प्रोफेसर साहब का नामकरण ताई साहिबा ने किया था।

4. यहाँ लेखिका ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के सपने की बात कही है जो समय और परिस्थितियों के आधार पर टूट गया।

5. आज की स्थिति देखकर लेखिका को यह लगता है, जैसे तत्कालीन परिस्थितियाँ अर्थात् सौहार्दपूर्ण वातावरण एक सपना हों।

6. पहले की तरह आज भी हम लोग मिल-जुलकर रहते तो भारत की स्थिति अच्छी होती।

(7)

वहाँ छात्रावास के हर एक कमरे में हम चार छात्राएँ रहती थीं। उनमें पहली ही साथिन सुभद्रा कुमारी मिलीं। सातवें दर्जे में वे मुझसे दो साल सीनियर थीं। वे कविता लिखती थी और मैं भी बचपन से तुक मिलाती आई थी। बचपन में माँ लिखती थीं, पद भी गाती थी। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यहीं सुना जाता था। प्रभाती गाती थी। शाम को मीरा का कोई पद गाती थीं। सुन सुनकर मैंने भी ब्रजभाषा में लिखना आरम्भ किया। यहाँ आकर देखा कि सुभद्रा कुमारीजी खड़ी बोली में लिखती थीं। मैं भी वैसा ही लिखने लगी। लेकिन सुभद्राजी बड़ी थीं, प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। उनसे छिपा-छिपाकर लिखती थी मैं।

प्रश्न 1. लेखिका के स्कूल के छात्रावास में एक कमरे में कितनी छात्राएँ रहती थीं?

प्रश्न 2. छात्रावास में लेखिका की पहली साथिन कौन थी?

प्रश्न 3. 'जागिए कृपा निधान पंछी बन बोले' किसकी पंक्ति हैं?

प्रश्न 4. महादेवी किससे छिपा-छिपाकर कविता लिखती थीं?

प्रश्न 5. सुभद्रा की भाषा देखकर महादेवीजी कौनसी भाषा में लिखने लगी?

प्रश्न 6. महादेवी के बचपन में कौन पद गाती थी?

उत्तर–1. लेखिका के स्कूल के छात्रावास में एक कमरे में चार छात्राएँ रहती थीं।

2. सुभद्रा कुमारी चौहान लेखिका की पहली साथिन थी।

3. प्रस्तुत पंक्ति भक्तिकाल की प्रसिद्ध कवयित्री मीराबाई की है।

4. सुभद्राकुमारी चौहान से।

5. सुभद्रा की भाषा देखकर महादेवीजी खड़ी बोली में लिखने लगी।

6. महादेवी के बचपन में उनकी माँ पद गाती थी।

(8)

एक दिन उन्होंने कहा 'महादेवी, तुम कविता लिखती हो?' तो मैंने डर के मारे कहा, 'नहीं'। अन्त में उन्होंने मेरी किताबों की तलाशी ली और बहुत-सा निकल पड़ा उसमें से। तब जैसे किसी अपराधी को पकड़ते हैं, ऐसे उन्होंने एक हाथ में कागज लिए और एक हाथ में मुझे पकड़ा और पूरे होस्टल में दिखा आई कि ये कविता लिखती है। फिर हम दोनों की मित्रता हो गई। क्रॉस्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी। उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे और लड़कियां खेलती थीं तब हम लोग तुक मिलाते थे।''

प्रश्न 1. महादेवी ने सुभद्रा से झूठ क्यों बोला?

प्रश्न 2. क्रॉस्थवेट क्या है?

प्रश्न 3. क्रॉस्थवेट की क्या विशेषता थी?

प्रश्न 4. जब सब खेलते थे, उस समय लेखिका क्या करती थीं?

प्रश्न 5. सुभद्राजी ने किसकी तलाशी ली?

प्रश्न 6. सुभद्राजी पूरे हॉस्टल में क्या दिखा आई?

उत्तर–1. महादेवी ने उनसे झूठ बोला कि उन्हें डर था कि कविता लिखते देखकर सुभद्रा बहुत गुस्सा होगीं तथा मुझे डाँट लगाएँगी।

2. क्रॉस्थवेट एक स्कूल का नाम है।

3. क्रॉस्थवेट स्कूल में सभी धर्मों के अनुयायी पढ़ते थे। परन्तु इस स्कूल के मेस में प्याज तक नहीं बनता था। मेस शुद्ध शाकाहारी था।

4. जब सब खेलते थे, उस समय महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ पेड़ की डाल पर बैठकर कविताओं का तुक मिलाती थीं।

5. सुभद्राजी ने महादेवी की किताबों की तलाशी ली।

6. सुभद्राजी पूरे हॉस्टल में महादेवी को और उसकी कविता को दिखा आई कि ये कविता लिखती है।

काव्य-खण्ड

7. कबीर

कवि-परिचय—भक्तिकाल की ज्ञानाश्रयी निर्गुण शाखा के भक्त-कवियों में कबीर का प्रमुख स्थान है। इनके जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इनका जन्म सन् 1398 में काशी में और निधन सन् 1518 के आसपास मगहर में हुआ था। इन्होंने विधिवत् शिक्षा नहीं पायी थी, परन्तु सत्संग एवं स्वानुभव से ज्ञान प्राप्त किया था। कबीर श्रेष्ठ सन्त, समाज-सुधारक एवं क्रान्तिद्रष्टा कवि थे। इन्होंने समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, जातिगत भेदभावों, बहुदेववाद एवं सामाजिक विकृतियों का डटकर विरोध किया और सभी धर्मों का मूल एक बताकर मानवता का सन्देश दिया।

पाठ-परिचय—प्रस्तुत पाठ में कबीर की सात साखियाँ एवं दो पद संकलित हैं। इन साखियों में मन की पवित्रता, प्रेम का महत्त्व, हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा कर्मों की उदात्तता का महत्त्व बताया गया है। साखी का अर्थ साक्षी या गवाह होता है। यहाँ साखी का आशय ईश्वर को साक्षी मानकर ज्ञानपूर्ण बातों का उल्लेख करना है। पदों में बाह्याडंबरों का विरोध भक्ति-भावना एवं ज्ञान-चेतना का प्रतिपादन कर मानव को अज्ञान से मुक्त रहने का सन्देश व्यक्त हुआ है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

साखियाँ

(1)

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं॥

कठिन-शब्दार्थ—मानसरोवर = हिमालय स्थित पवित्र सरोवर, पवित्र मन। सुभर = अच्छी तरह भरा हुआ। केलि = क्रीड़ा। मुकताफल = मोती, मोक्ष। अनत = अन्यत्र।

भावार्थ—कबीरदास कहते हैं कि मानसरोवर स्वच्छ जल से लबालब भरा है, उसमें हंस क्रीड़ा कर रहे हैं। वे वहाँ मोतियों को चुगते हैं तथा उस आनन्ददायी स्थान को छोड़कर कहीं अन्यत्र नहीं जाते हैं। इसका निहितार्थ है कि भक्त का मन रूपी सरोवर ब्रह्म आनन्द रूपी स्वच्छ जल से भरा हुआ है। उसमें विषय-वासनाओं से मुक्त जीवात्मा रूपी हंस विहार कर रहा है। वह वहाँ आनन्द रूपी मोतियों को चुगता है। मुक्ति प्राप्त होने के पश्चात् वह उस स्थान से अन्यत्र कहीं नहीं जाता है। अर्थात् हमारे मन में ही परमात्मा निवास करता है, उसे खोजने या पाने के लिए अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. मानसरोवर को किसका प्रतीक बताया गया है?
प्रश्न 2. प्रस्तुत पद्यांश में हंस से क्या अभिप्राय है?
प्रश्न 3. मानसरोवर किस प्रकार के जल से युक्त है?
प्रश्न 4. हंस मानसरोवर छोड़कर अन्यत्र कहीं क्यों नहीं जाना चाहते हैं?
प्रश्न 5. परमात्मा कहाँ निवास करता है?
प्रश्न 6. प्रस्तुत साखी से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर—1. मानसरोवर को पवित्र मानव मन का प्रतीक बताया गया है।
2. प्रस्तुत पद्यांश में हंस भक्त या साधक का प्रतीक है।
3. मानसरोवर अर्थात् पवित्र मन शुद्ध विचारों रूपी जल से युक्त है।
4. हंस रूपी साधक मुक्ति प्राप्त होने की दशा में अन्यत्र कहीं और नहीं जाना चाहते हैं।
5. परमात्मा मनुष्य के पवित्र मन में निवास करता है।
6. यही कि ईश्वर का साक्षात्कार, अनुभूति हृदय में ही करनी चाहिए।

(2)

प्रेमी ढूँढत मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ॥

कठिन-शब्दार्थ—प्रेमी = प्रभु भक्त। फिरौं = फिरा। विष = जहर।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि मैं (भक्त) सच्चे ईश्वर-प्रेमी को ढूँढ़ता फिरा, पर मुझे ऐसा प्रेमी कोई भी नहीं मिला। जब ईश्वर के सच्चे प्रेमी हृदय से मिला, तब मन की विषय-वासनाओं का सारा विष अमृत में बदल गया। अर्थात् ईश्वर-प्रेम के प्रवाह से हृदय आनन्द से भर गया, सारी बुराइयाँ समाप्त हो गयीं तथा भावार्थ यह है कि जब तक 'मैं' (अभिमान) का नाश नहीं होता है तब तक ईश्वर के सच्चे स्वरूप के दर्शन-लाभ नहीं मिलते हैं। अहंकार के नष्ट होते ही समभाव की तरंगें हृदय को खुशियों से भर देती है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने 'मैं' का प्रयोग किस संदर्भ किया है?

प्रश्न 2. कवि किसे ढूँढ़ रहे थे?

प्रश्न 3. सच्चे ईश्वर-प्रेमी (भक्त) की प्राप्ति किस प्रकार संभव है?

प्रश्न 4. ईश्वर-प्रेमी के मिल जाने पर कैसी स्थिति बताई गई है?

प्रश्न 5. कवि को सच्चा प्रेमी-भक्त क्यों नहीं मिल रहा था?

प्रश्न 6. साखी का मूलभाव बताइये।

उत्तर—1. कवि ने 'मैं' का प्रयोग अहम् भाव अथवा अहंकार के सन्दर्भ में किया है।

2. कवि ईश्वर के सच्चे प्रेमी भक्त को ढूँढ़ रहे थे।

3. खोजकर्ता द्वारा अपने अहम् भाव को नष्ट करने पर सम्भव है।

4. ईश्वर-प्रेमी के मिल जाने पर विषय-वासनाओं रूपी जहर, अमृत में बदल जाता है।

5. क्योंकि अब तक कवि ने अपने 'मैं' भाव अर्थात् अहम् को खत्म नहीं किया था।

6. साखी का मूल भाव है कि मनुष्य को सर्वप्रथम अपना 'मैं' खत्म करना होगा।

(3)

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि॥

कठिन-शब्दार्थ—हस्ती = हाथी। सहज = सरल, स्वाभाविक। दुलीचा = छोटा आसन (यहाँ समाधि)। स्वान = कुत्ता। भूँकन = भौंकना।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि सहज समाधि का आसन बिछाकर ज्ञान के हाथी की सवारी करो, अर्थात् ज्ञान-प्राप्ति के लिए सहज समाधि लगाओ। यह संसार तो कुत्ते के समान है। यदि तुम्हारी आलोचना करने वाले कुत्तों की तरह भौंकते हैं, तो तुम उनकी चिन्ता मत करो। अर्थात् वे अन्ततः स्वयं चुप हो जायेंगे। आशय यह है कि प्रभु-साधक को संसार की निंदा की बिना परवाह किये साधना-पथ पर बढ़ते जाना चाहिए।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. ज्ञान की उपमा किससे की गई है और क्यों?

प्रश्न 2. 'सहज' शब्द का आशय क्या है?

प्रश्न 3. कवि ने संसार को किसके समान बताया है? क्यों?

प्रश्न 4. इस साखी में क्या सन्देश दिया गया है?

प्रश्न 5. मूर्ख लोग क्या करते हैं?

प्रश्न 6. प्रस्तुत साखी में किसके महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है?

उत्तर—1. ज्ञान की उपमा हाथी से की गई है क्योंकि हाथी मस्त स्वभाव का होता है, उसी प्रकार ज्ञान-साधना वाला भी मस्त रहता है।

2. 'सहज' शब्द का आशय है स्वाभाविक रूप से विषय-वासनाओं को त्यागकर समाधि लगाना अर्थात् सच्ची भक्ति में निमग्न रहना।

3. कवि ने संसार को कुत्ते के समान बताया है, क्योंकि संसारी लोग हर किसी की आलोचना करने (कुत्ते की तरह भौंकने) में लग जाते हैं।

4. इसी साखी में यह सन्देश दिया गया है कि आलोचकों अथवा निन्दकों की परवाह न करके ज्ञान-साधना एवं प्रभुभक्ति में लीन रहना चाहिए।

5. मूर्ख लोग विद्वानों के ज्ञान की निन्दा करते हैं।

6. प्रस्तुत साखी में ज्ञान साधना के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है।

(4)

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई सन्त सुजान॥

कठिन-शब्दार्थ—पखापखी = पक्ष और विपक्ष। भुलान = भूला हुआ। निरपख = निष्पक्ष। सोई = वही। सुजान = ज्ञानी।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि सब लोग समर्थन या विरोध करने में ही लगे हुए हैं। इस तरह पक्ष-विपक्ष अर्थात् सही गलत के चक्कर में पड़कर लोग ईश्वर को भूलने की बड़ी भूल कर रहे हैं। वास्तविक ज्ञानी सज्जन तो वह है जो पक्ष-विपक्ष से ऊपर उठकर अर्थात् निष्पक्ष होकर शुद्ध मन से ईश्वर का भजन करता है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. 'पखापखी' से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न 2. 'पखापखी' का लोगों पर क्या असर रहता है?

प्रश्न 3. 'निरपख होइ' का आशय क्या है?

प्रश्न 4. संसार किस कारण से किसे भूला हुआ है?

प्रश्न 5. कवि ने किसे सुजान बताया है?

प्रश्न 6. कवि ने निष्पक्ष होकर किस कर्म में प्रवृत्त होने को कहा है?

उत्तर—1. 'पखापखी' से कवि का आशय किसी का समर्थन (पक्ष लेना) या विरोध (पक्ष न लेना) है।

2. पखापखी अर्थात् एक सम्प्रदाय का समर्थन और दूसरे का विरोध करने से लोग अपने वास्तविक लक्ष्य अर्थात् ईश्वर-भजन को भूल जाते हैं।

3. इसका आशय है निष्पक्ष होना। किसी एक की तरफ आग्रही नहीं होना।

4. संसार आपसी तर्क-वितर्क और समर्थन-विरोध के प्रभाव में आकर ईश्वर को भूला हुआ है।

5. कवि ने निष्पक्ष सन्तों को सुजान बताया है।

6. कवि ने निष्पक्ष होकर ईश्वर, भजन में प्रवृत्त होने को कहा है।

(5)

हिन्दू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ॥

कठिन-शब्दार्थ—मूआ = मर गया। कहि = कहकर। सो जीवता = वही जीवित है। दुहुँ के = दोनों के।

भावार्थ—कबीरदास के अनुसार हिन्दू राम नाम लेकर मृत्यु को प्राप्त होता है और मुसलमान खुदा या अल्लाह नाम लेकर मरता है लेकिन कवि के अनुसार इस संसार में वही व्यक्ति जीवित है जो इन दोनों सम्प्रदायों या धर्मों के चक्कर में नहीं पड़ता है। अर्थात् उसी का जीवन सार्थक है जो धर्म-सम्प्रदाय से ऊपर उठकर भगवान की सच्ची साधना करता है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. 'हिन्दू मूआ राम कहि' से क्या आशय है?

प्रश्न 2. 'दुहुँ के निकटि न जाइ' से कवि ने क्या सन्देश दिया है?

प्रश्न 3. इस साखी में कबीर ने क्या भाव व्यक्त किया है?

प्रश्न 4. कबीर के अनुसार जीवित कौन है?

प्रश्न 5. मुसलमान किसका नाम लेकर मृत्यु प्राप्त करता है?

प्रश्न 6. कवि के अनुसार सच्चे साधक को किसके निकट नहीं जाना चाहिए?

उत्तर—1. इसका आशय हिन्दू का राम-नाम लेकर मरना है।

2. यही कि दोनों धर्म-सम्प्रदायों से ऊपर उठकर सच्ची साधना करनी चाहिए।

3. यही कि धार्मिक कट्टरता से मतभेद बढ़ते हैं। इन सब से ऊपर उठकर एकात्म भाव से ईश्वर भक्ति करनी चाहिए।

4. कबीर के अनुसार सांप्रदायिकता और कट्टरता से दूर रहने वाला मनुष्य ही सच्चे अर्थों में जीवित है।

5. मुसलमान खुदा या अल्लाह का नाम लेकर मृत्यु प्राप्त करता है।

6. कवि के अनुसार सच्चे साधक को धर्म कट्टरता एवं अलग-अलग सम्प्रदायों के निकट नहीं जाना चाहिए।

(6)

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम॥

कठिन-शब्दार्थ—काबा = मक्का-मदीना, मुसलमानों का पवित्र तीर्थ। भया = हुआ। मोट चून = मोटा आटा। जीम = भोजन करो।

भावार्थ—धार्मिक संकीर्णता को त्यागने का सन्देश देते हुए कबीर कहते हैं कि काबा और काशी एक समान पवित्र स्थान है तथा राम व रहीम का नाम भी एक समान पवित्र है। भाव यह है कि काबा, काशी, राम, रहीम में कोई भेद नहीं है। उसी प्रकार मोटा चून जब बारीक पीसकर मैदा बन जाता है तब लोग उसे आराम से खाते हैं। जबकि दोनों एक ही है बस स्वरूप का भेद है। कहने का आशय है कि धार्मिक संकीर्णता को छोड़कर सभी को समाज हित हेतु एक रहना चाहिए। स्वरूप की भिन्नता से सामाजिक भेदभाव नहीं होना चाहिए।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. साखी में किन दो धार्मिक स्थलों का उल्लेख हुआ है?

प्रश्न 2. 'रामहिं भया रहीम' से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न 3. इस साखी में कबीर ने क्या सन्देश व्यक्त किया है?

प्रश्न 4. कबीर ने मोट चून और मैदा किसे कहा है?

प्रश्न 5. 'बैठि कबीरा जीम' में क्या भाव व्यक्त हुआ है?

प्रश्न 6. प्रस्तुत साखी का मूल सन्देश क्या है?

उत्तर—1. साखी में मुसलमानों के तीर्थस्थल काबा और हिन्दुओं के तीर्थस्थल काशी का उल्लेख हुआ है।

2. कवि का आशय है कि राम ही रहीम है अर्थात् हिन्दू देवता और मुसलमान खुदा दोनों एक हैं।

3. इसमें कबीर ने एकेश्वरवाद का प्रतिपादन कर यह सन्देश व्यक्त किया है परमात्मा तो एक ही है, उसी की भक्ति करनी चाहिए।

4. विभिन्न संप्रदायों को खटकने वाली बातों को मोट चून और अपनाने वाली अच्छी बातों को मैदा कहा गया है।

5. धार्मिक सौहार्दता एवं समन्वयता का भाव व्यक्त हुआ है।

6. यही कि ईश्वर स्वरूप अलग-अलग होकर भी वह एक ही है।

(7)

ऊँचे कुल का जनमिया, जो करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निन्दा सोइ॥

कठिन-शब्दार्थ—जनमिया = जन्मा हुआ। करनी = कर्म, काम। सुबरन = सोना। सुरा = शराब। साधू = सज्जन।

भावार्थ—कबीरदास कहते हैं कि केवल ऊँचे खानदान या श्रेष्ठ परिवार में जन्म लेने से ही व्यक्ति महान् नहीं बन जाता है। इसके लिए कर्म भी अच्छा करना जरूरी है। जैसे सोने जैसी मूल्यवान् धातु से बने कलश में यदि शराब भरी गई हो, सज्जन उसकी निन्दा ही करते हैं। अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करने से ही व्यक्ति महान् बनता है, अन्यथा वह निन्दनीय होता है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. ऊँचे कुल और अच्छे कर्मों में से किसका महत्त्व अधिक है?

प्रश्न 2. 'सुबरन कलस' का आशय क्या है?

प्रश्न 3. इस साखी में किन लोगों पर आक्षेप किया गया है?

प्रश्न 4. साधु किसकी निंदा करते हैं?

प्रश्न 5. मनुष्य को किस आधार पर उत्तम माना जाता है?

प्रश्न 6. प्रस्तुत साखी का सन्देश क्या है?

उत्तर—1. ऊँचे कुल और अच्छे कर्मों में से अच्छे कर्मों को श्रेष्ठ माना जाता है।

2. 'सुबरन कलस' का आशय बहुमूल्य धातु अर्थात् स्वर्ण से निर्मित पात्र से है।

3. इस साखी में ऊँचे कुल में जन्म लेने वाले लेकिन बुरे कर्म करने वालों पर आक्षेप किया गया है।

4. साधु ऊँचे कुल में जन्म लेने के पश्चात् भी बुरे कर्म करने वाले मनुष्य की निन्दा करते हैं।

5. मनुष्य द्वारा किये गए अच्छे कर्मों के आधार पर उत्तम माना गया है।

6. साखी का सन्देश व्यक्ति द्वारा किये गए कार्य की उत्तमता से है।

सबद (पद)

(1)

मोकों कहाँ ढूँढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबै कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहै कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में॥

कठिन-शब्दार्थ–मोकों = मुझे। देवल = देवालय, मन्दिर। कैलास = हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ। क्रिया-कर्म = कर्मकाण्ड। योग बैराग = योग-साधना एवं वैराग्य। खोजी = खोजने वाला। तालास = तलाश। स्वाँस = श्वास।

भावार्थ–ईश्वर मनुष्य को लक्ष्यकर कहता है कि हे मनुष्य, तुम मुझे अपने से बाहर कहाँ ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे हो, मैं तो तुम्हारे पास में ही हूँ। मैं न तो किसी देवालय में रहता हूँ और न किसी मस्जिद में। न काबा में रहता हूँ और न कैलास पर्वत पर रहता हूँ। मैं किसी प्रकार की क्रियाओं और नाना प्रकार के कर्मकाण्डों से या योग-साधना तथा वैराग्य धारण करने से भी नहीं पाया जा सकता हूँ। यदि सचमुच कोई मुझे खोजना चाहे तो मैं पलभर की तलाश में ही मिल सकता हूँ। हे सन्तो, मैं तो हर प्राणी की श्वास में बसा हुआ हूँ अर्थात् प्रत्येक प्राणी की साँस में मेरा निवास है। अतएव मुझे बाहर नहीं अपितु अपने भीतर अर्थात् हृदय में ही खोजने की आवश्यकता है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. अज्ञानी लोग ईश्वर को ढूँढ़ने के लिए क्या-क्या करते हैं?

प्रश्न 2. कवि ने ईश्वर का निवास कहाँ बताया है?

प्रश्न 3. कवि ने ईश्वर-प्राप्ति का क्या उपाय बताया है?

प्रश्न 4. ईश्वर किसे मिलते हैं ?

प्रश्न 5. 'मोकों कहाँ ढूँढे बन्दे' पंक्ति में 'मोकों' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

प्रश्न 6. 'काबा' और 'कैलाश' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर–1. अज्ञानी लोग मन्दिरों-मस्जिदों में जाकर विभिन्न प्रकार की क्रियाओं एवं कर्मकाण्डों द्वारा ईश्वर को ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं।

2. कवि ने ईश्वर का निवास प्रत्येक प्राणी की साँस में अर्थात् उसके हृदय में बताया है।

3. कवि ने ईश्वर को स्वयं के भीतर खोजने का उपाय बताया है।

4. जो सच्चे मन से स्वयं के भीतर परमात्मा की खोज करता है उसे ही परमात्मा प्राप्त होते हैं।

5. 'मोकों' शब्द ईश्वर या परमात्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है।

6. 'काबा' मुसलमानों का और 'कैलाश' हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ-स्थान है।

(2)

संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहे न बाँधी॥
हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा॥
त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा॥
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी॥
कूड़कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी॥
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।।
कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ॥

कठिन-शब्दार्थ–भ्रम = सन्देह। टाटी = पर्दा, टटिया। माया = दौलत, मोह। हिति = भलाई। थूँनी = दो खम्भे (जिन पर झोंपड़ी की छत टिकी रहती है)। बलिंडा = छप्पर के नीचे लगने वाली बड़ी बल्ली। छाँनि = छाँवन। कुबुधि = दुर्बुद्धि। भांडा = बर्तन। भाँडाँ फूटा = भेद प्रकट हुआ। निरचू = निश्चिन्ततापूर्वक। चुवै = टपके। काया = शरीर। बूठा = बरसा, फैला। हरि जन = भगवान् के भक्त। भीनाँ = भीग गये। भाँन = सूर्य। तम = अंधकार। खीनाँ = क्षीण, मन्द हो गया।

भावार्थ–कबीर ज्ञान का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि हे भाई साधुओ, ज्ञान की आँधी आ गई है। जिस प्रकार आँधी के आने पर आड़ के लिए लगाई गई टटिया अर्थात् पर्दे उड़ जाते हैं, उसी प्रकार ज्ञान उत्पन्न होने पर मेरे सारे भ्रम नष्ट हो गये हैं। अब मैं सत्य और भ्रम का भेद समझने लगा हूँ। अब माया रूपी रस्सी भी टूट गई है अर्थात् माया के समस्त बन्धन समाप्त हो गये हैं। जैसे प्रबल आँधी के वेग के कारण छप्पर में लगी थूनी (खम्भे) गिर जाते हैं, उसी प्रकार ज्ञान की प्राप्ति में बाधक मोह और आसक्ति रूपी खम्भे ढह गये हैं। इतना ही नहीं, तृष्णा रूपी छप्पर को सँभाले हुए मोह रूपी लकड़ी के टूटते ही शारीरिक अहंकार रूपी छप्पर भी गिर पड़ा, अर्थात् मोह और तृष्णा के समाप्त होते ही शारीरिक अहंकार समाप्त हो गया। जैसे छप्पर के गिरने से उसके भीतर रखे हुए बर्तन फूट जाते हैं, उसी प्रकार शारीरिक अहंकार समाप्त होते ही मेरी दुर्बुद्धि रूपी भांडे अर्थात् बर्तन फूट गए हैं। अर्थात् जब तृष्णा ही नहीं रही, तब इच्छा भी कैसी? जब ज्ञान की प्राप्ति हुई, तब सन्तों ने वास्तविकता को समझ लिया। वह समझ गये कि बाहरी छप्पर (माया-मोह) व्यर्थ है। तब उन्होंने योग की युक्तियों और सद्वृत्तियों की सहायता से अपने शरीर रूपी छप्पर का निर्माण किया। जिससे जो कूड़ा-करकट था वह तुरन्त बाहर निकल आया और अब शरीर रूपी छप्पर में विषय-विकार रूपी जल की एक बूँद भी आने की सम्भावना नहीं रह गई। ज्ञान की इस आँधी के बाद प्रभु की भक्ति रूपी जल की वर्षा हुई। उससे समस्त भक्तजन भीग गये, अर्थात् वे भक्ति से सराबोर हो गये। कबीरदासजी कहते हैं कि जब वर्षा के पश्चात् ज्ञान रूपी सूर्य का उदय हुआ, जिससे मन में जो अज्ञान रूपी अंधकार समाया हुआ था, वह भी पूरी तरह से समाप्त हो गया।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. ज्ञान की आँधी आने से पहले मनुष्य के मन की क्या स्थिति थी?

प्रश्न 2. ज्ञान की आँधी का फल क्या बताया गया है?

प्रश्न 3. कबीर ने किस युक्ति से छप्पर को बाँधा?

प्रश्न 4. आँधी के बाद बरसने वाले जल का क्या आशय है?

प्रश्न 5. कवि के अनुसार ज्ञान की आँधी के आने के पश्चात् कौनसा जल बरसा?

प्रश्न 6. हरि की अर्थात् परमात्मा की गति का कब पता चलता है?

उत्तर–1. ज्ञान की आँधी आने से पहले मनुष्य के मन में नाना प्रकार के सांसारिक भ्रम, मोह-ममता, तृष्णा और कुविचार आदि समाये हुए थे।

2. ज्ञान की आँधी वस्तुत: विवेक की उपलब्धि है। इसका फल यह होता है कि इसके आने पर मनुष्य के शरीर में समाये सारे विकार समाप्त हो जाते हैं।

3. कबीर ने योग साधना की युक्तियों से छप्पर को बाँधा अर्थात् उन्होंने जीवन में योग-साधना को ही अपनाया।

4. कबीर ने आँधी के बाद बरसने वाले जल का आशय प्रभु-भक्ति का आनन्द बताया है।

5. ज्ञानरूपी आँधी के आने के पश्चात् परमात्मा की भक्ति का जल बरसा।

6. जब शरीर से विषय-वासनाओं रूपी कूड़ा-करकट बाहर निकल जाता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

साखियाँ–

प्रश्न 1. 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर–'मानसरोवर' से कवि का आशय है पवित्र मन रूपी पवित्र सरोवर। जैसे हिमालय में स्थित पवित्र मानसरोवर में हंस क्रीड़ा करते हुए मोती चुगते हैं, उसी प्रकार पवित्र मन रूपी सरोवर में आत्मा रूपी हंस प्रभु-भक्ति में निमग्न रहकर परमानन्द रूपी मोती चुगता है या मोक्ष रूपी मोती प्राप्त करता है।

प्रश्न 2. कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

उत्तर–कवि ने सच्चे प्रेमी की कसौटी यह बताई है कि सच्चा प्रेम मिलने पर मन की सारी मलीनता नष्ट हो जाती है अर्थात् सारे पाप धुल जाते हैं।

प्रश्न 3. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

उत्तर–तीसरे दोहे में कवि ने सहज-समाधि या सहज ध्यान के बाद प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान को महत्त्व दिया है, जिसे पाकर मनुष्य सांसारिक माया-मोह एवं अज्ञानता से सर्वथा मुक्त हो जाता है।

प्रश्न 4. इस संसार में सच्चा सन्त कौन कहलाता है?

उत्तर–इस संसार में सच्चा सन्त वही है, जो किसी भी मतवाद या सम्प्रदाय से निरपेक्ष होकर अर्थात् अलग रहकर ईश्वर की भक्ति में लीन रहता है।

प्रश्न 5. अन्तिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर–अन्तिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने मुख्यतया निम्न दो संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है—

(1) ईश्वर एक है, परन्तु धार्मिक संकीर्णता के कारण हिन्दू उसे राम तथा मुसलमान उसे रहीम कहते हैं। काबा और काशी में भेद-भाव रखते हैं।

(2) मनुष्य स्वयं को उच्च कुलीन मानकर दूसरों को संकीर्ण भावना से देखता है तथा वह कर्म को नहीं, जन्म को श्रेष्ठ मानता है।

प्रश्न 6. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्म से? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर–किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्म से होती है, कुल से नहीं। प्राय: देखा जाता है कि उच्च कुल में जन्म लेने वाला भी नीच कर्म करता है, चोरी, बेईमानी, धोखाधड़ी, फरेब आदि कर्म करता है जो कि गलत है। इसके विपरीत कोई सामान्य या निम्न कुल में जन्म लेकर भी अच्छे कर्म करता है। समाज में अच्छे कर्मों से उसे सम्मान मिलता है, विशेष पहचान मिलती है, और तब उसकी कोई कुल-जाति नहीं पूछता है।

प्रश्न 7. काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि॥

उत्तर–भाव-सौन्दर्य–इसमें कबीर ने ज्ञान का महत्त्व बताते हुए उसे प्राप्त करने पर बल दिया है। हाथी बलशाली होता है, तो ज्ञान भी प्रखर होता है। ज्ञान-रूपी हाथी की सवारी करना सम्मान का परिचायक है।

ज्ञान-प्राप्ति सहज-साधना, सहज समाधि या ध्यान से होती है। ऐसे ज्ञानी की आलोचना करने वाले लोग कुत्तों की तरह भले ही भौंकते रहते हैं, परन्तु ज्ञान-साधक को उनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इस तरह निन्दकों पर व्यंग्य किया गया है और साधकों को प्रेरणा दी गयी है।

शिल्प-सौन्दर्य–इसमें ज्ञान रूपी हाथी, सहज साधना रूपी दुलीचा, स्वान रूपी संसार तथा निन्दा रूपी भौंकना की अप्रस्तुत योजना होने से सांगरूपक अलंकार का चमत्कार है।

'भूँकन दे' तथा 'झख मारि' मुहावरों का प्रयोग करने से व्यंजना की गई है कि आलोचक तो कुछ-न-कुछ कहते रहते हैं या व्यर्थ की बातें करते हैं। अतएव उनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

दोहा छन्द, सधुक्कड़ी भाषा, लक्षणा शब्द-शक्ति और 'स्वान रूप संसार' में उपमा भी विद्यमान है।

सबद–

प्रश्न 8. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है?

उत्तर–मनुष्य ईश्वर को संसार में अनेक स्थानों पर ढूँढ़ता है। (1) कभी वह देवालयों एवं मस्जिद में, (2) कभी वह तीर्थस्थलों, काबा, काशी में तथा (3) कभी वह योग-साधना, पूजा-पद्धति, कर्मकाण्ड एवं विभिन्न उपासनाओं के द्वारा ढूँढ़ता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग वैराग्य अपनाकर, सांसारिकता से मुक्त होकर एकान्त-साधना से भी ईश्वर को खोजते रहते हैं।

प्रश्न 9. कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खण्डन किया है?

उत्तर–कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए मानवों में प्रचलित निम्न विश्वासों का खण्डन किया है—

(i) ईश्वर देवालयों एवं मन्दिरों में मिलता है।

(ii) ईश्वर मस्जिद में उपासना करने से मिलता है।

(iii) तीर्थ-स्थल काबा में अथवा कैलास की यात्रा करने से ईश्वर मिलता है।

(iv) कर्मकाण्ड तथा विभिन्न उपासना-पद्धतियों को अपनाने से ईश्वर-प्राप्ति होती है।

(v) योग-साधना करने तथा वैराग्य धारण करने से ईश्वर मिलता है।

प्रश्न 10. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

उत्तर–ईश्वर इस समस्त सृष्टि का रचयिता और पालनकर्त्ता है। सभी जीवधारी उसी की रचना है और वही घट-घट में निवास करता है। वही संसार के प्रत्येक प्राणी की साँस-साँस में समाया हुआ है। वह किसी जीव से अलग या उससे भिन्न नहीं है। इसीलिए कहा गया है कि ईश्वर सब स्वाँसों की स्वाँस में है।

प्रश्न 11. कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उत्तर–कबीर के अनुसार जब प्रभु-ज्ञान का आवेश होता है तब उसका प्रभाव चमत्कारी होता है। परिणामस्वरूप सांसारिक बंधन पूरी तरह से कट जाते हैं। यह परिवर्तन धीरे-धीरे न होकर पूरे प्रवाह के साथ ही अचानक होता है। इसलिए उसकी तुलना सामान्य हवा से न करके आँधी से की गयी है।

प्रश्न 12. ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर–ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर यह प्रभाव पड़ता है—

(1) भक्त के मन का भ्रम दूर हो जाता है।

(2) वह मोह-माया से मुक्त हो जाता है।

(3) तृष्णा, लालसा और कुबुद्धि नष्ट हो जाती है।

(4) ज्ञान की आँधी के बाद जो वर्षा होती है, उसमें भीगकर भक्त ईश्वरीय प्रेमाभक्ति में निमग्न हो जाता है।

(5) मन में ज्ञान का प्रकाश फैलता है और अज्ञान मिट जाता है। इससे परमानन्द की मनोरम अनुभूति होती है।

प्रश्न 13. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

उत्तर–भाव यह है कि ज्ञान की आँधी आने से स्वार्थ और आसक्ति रूपी दोनों खम्भे गिर गये और मोहरूपी बड़ी लकड़ी भी गिर गई है। उससे स्वार्थ-भावना समाप्त हो गई। तब ज्ञान-साधक स्वहित के साथ लोकहित का चिन्तन करने लगता है।

(ख) आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।

उत्तर–जैसे तेज आँधी के बाद प्राय: वर्षा होती है, उसी प्रकार ज्ञान की आँधी के बाद ईश्वरीय प्रेम की जो वर्षा हुई, उससे भक्तजन का मन भीग गया, अर्थात् भक्ति-तन्मयता से आनन्द की अनुभूति करने लगे।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 14. संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और साम्प्रदायिक सद्भाव सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर–संकलित साखियों और पदों में कबीर ने धार्मिक तथा सामाजिक एकता बढ़ाने वाले विचारों को व्यक्त किया है। उन्होंने धार्मिक आडम्बरों तथा साम्प्रदायिक कट्टरता का विरोध करते हुए काबा और काशी में, राम और रहीम में एकरूपता बतलायी है। साथ ही कर्मकाण्ड, पूजा-नमाज, तीर्थयात्रा आदि विविध उपासना-पद्धतियों को मतवाद का पोषक बताया है। सच्ची भक्ति तो मतवाद-निरपेक्ष रहने से ही होती है, पारस्परिक प्रेम-भाव रखने से ही होती है तथा सत्कर्मों से होती है। इस तरह कबीर ने एकेश्वरवाद का समर्थन कर धार्मिक कट्टरता त्यागकर साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने का सन्देश दिया है। इसमें कबीर एक सच्चे सुधारक रूप में दिखाई देते हैं।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 15. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

उत्तर–

पखापखी	—	पक्षापक्ष (पक्ष-विपक्ष)
अनत	—	अन्यत्र
जोग	—	योग
जुगति	—	युक्ति
बैराग	—	वैराग्य
निरपख	—	निष्पक्ष

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. "अब उड़ि अनत न जाहिं।" हंस अन्यत्र क्यों नहीं जाना चाहता है—
   (क) मोती मिल जाने के कारण (ख) मुक्ति का आनन्द मिल जाने के कारण
   (ग) भौतिक-सुख की प्राप्ति हो जाने के कारण (घ) जल-क्रीड़ा का आनन्द पा जाने के कारण।
2. कबीर ने सच्चा संत कहा है—
   (क) इन्द्रियों को वश में करने वाले को
   (ख) वैर-विरोधों और संघर्षों से दूर रहकर ईश्वर-भजन करने वाले को
   (ग) सांसारिक माया-मोह से दूर रहकर पूजा करने वाले को
   (घ) भगवान की भक्ति करने वाले को।
3. कबीर मनुष्य की श्रेष्ठता मानते हैं—
   (क) उसके उच्च कुल में जन्मने को (ख) उसके उच्च कर्मों में
   (ग) उसकी व्यवहारशीलता में (घ) उसकी विवेकशीलता में।
4. ईश्वर का निवास-स्थल है—
   (क) मन्दिर-मस्जिद (ख) धार्मिक तीर्थस्थल
   (ग) मानव-हृदय (घ) काबा-कैलाश।
5. 'संतों भाई आई ग्याँन की आँधी रे' पद में कबीर ने किस ज्ञान की बात की है—
   (क) भौतिक ज्ञान की (ख) कैवल्य ज्ञान की
   (ग) आध्यात्मिक ज्ञान की (घ) भावात्मक ज्ञान की।
6. 'मानसरोवर' से कवि का आशय है—
   (क) मन का सरोवर (ख) कैलाश स्थित मानसरोवर
   (ग) मान नामक सरोवर (घ) एक विशेष स्थान।
7. कवि के अनुसार विष कब अमृत बनता है?
   (क) विषय-वासनाओं के विकार से (ख) प्रेमी-हृदय के मिलने पर
   (ग) भगवद्-भक्ति प्राप्त होने पर (घ) उपर्युक्त सभी।
8. 'पखापखी के कारनै' में 'पखापखी' से तात्पर्य है—
   (क) पक्षापक्ष (ख) पक्ष-विपक्ष (ग) आग्रह-विग्रह (घ) उपर्युक्त सभी।
9. कबीर के अनुसार संत-सुजान का स्वभाव होता है—
   (क) निष्पक्षीय (ख) पक्षीय (ग) विपक्षीय (घ) उभयपक्षीय।
10. 'सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोई' साधु किसकी निंदा करते हैं?
    (क) स्वर्ण-कलश की (ख) सुरा की
    (ग) उच्च कुल की (घ) अनुचित कर्म की।

उत्तर-माला–1. (ख) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ग) 6. (क) 7. (ख) 8. (घ) 9. (क) 10. (घ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. निरपख होइ के हरि भजे, सोई संत ....।
2. स्वान रूप संसार है, ... दे झख मारि।
3. प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब .... अमृत होइ।
4. कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब .... की .... में।
5. त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, ... का भाँडाँ फूटा।
6. कहै कबीर .... के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ।

उत्तर-माला–1. सुजान 2. भूँखन 3. विष 4. स्वाँसों, स्वाँस 5. कुबुद्धि 6. भाँन।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'मानसरोवर सुभर जल' से कवि का आशय है?

उत्तर–मन का सरोवर पवित्र जल से पूरित है।

प्रश्न 2. कबीर के अनुसार प्रेमी हृदय कब तक प्राप्त नहीं होता है?

उत्तर–कवि के अनुसार जब तक 'मैं' अर्थात् अहम् भाव नष्ट नहीं हो जाता।

प्रश्न 3. 'स्वान रूप संसार है' से कवि का तात्पर्य है।

उत्तर–यही कि यह संसार आलोचकों एवं निन्दा करने वाले लोगों से भरा पड़ा है।

प्रश्न 4. साधु-संतों को किस प्रकार भक्ति करनी चाहिए?

उत्तर–साधु-संतों को किसी भी धर्म सम्प्रदाय के प्रति आग्रह न रखकर निरपेक्ष भाव से भक्ति करनी चाहिए।

प्रश्न 5. 'कहै कबीर सो जीवता' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर–अर्थात् उसी व्यक्ति का जीवन सार्थक है जो धर्म-सम्प्रदाय के फेर में नहीं पड़ता है।

प्रश्न 6. 'मोट चून मैदा भया' से कवि क्या बतलाना चाहते हैं?

उत्तर–यही कि ईश्वर का स्वरूप भले ही भिन्न दिखाई पड़ता हो लेकिन वह उसी प्रकार अभिन्न है जैसे मोटे आटे को महीन पीसकर मैदा बना दी जावे।

प्रश्न 7. 'सुबरन कलश' का प्रतीकार्थ किससे दिया गया है?

उत्तर–'सुबरन कलश' का प्रतीकार्थ उच्च कुल में उत्पन्न लोगों के लिए दिया गया है।

प्रश्न 8. ईश्वर की तलाश पल-भर में कैसे पूरी हो सकती है?

उत्तर–क्योंकि ईश्वर मनुष्य के हृदय में ही निवास करता है आवश्यकता है बस सार्थक खोज की इसलिए पल-भर में प्राप्त हो सकता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'मुकताफल मुकता चुगैं' इसका आशय क्या है? बताइए।

उत्तर–'मुकता' का आशय सांसारिक माया-मोह से मुक्त तथा पवित्राचरण के कारण मोक्ष-साधक भक्त है। ऐसे लोग अपने मन रूपी सरोवर में मुक्ताफल अर्थात् मोती रूपी मुक्ति को फल रूप में चुगते हैं, उसकी अनुभूति कर आनन्दित होते हैं। वे मोक्ष-प्राप्ति से परमानन्द में निमग्न हो जाते हैं।

प्रश्न 2. 'मानसरोवर सुभर जल .... अब उड़ि अनत न जाहिं।' कथन के द्वारा कबीर ने क्या भाव व्यक्त किया है?

उत्तर–इसमें कबीर ने यह भाव व्यक्त किया है कि मानसरोवर की पवित्र जलराशि में क्रीड़ा करते हुए हंस मोती चुगकर आनन्दित होते हैं। उसी प्रकार पवित्र मन रूपी सरोवर में मुक्ति का साधक जीवात्मा आनन्दमग्न रहता है। अब वह पुनर्जन्म-मरण से मुक्त हो जाने से अन्यत्र कहीं भी नहीं जाना चाहता है। वह वहाँ पर मुक्ति रूपी मोती पाकर प्रभु-भक्ति में निमग्न रहता है।

प्रश्न 3. 'स्वान रूप संसार है' इससे कवि ने क्या भाव व्यक्त किया है?

उत्तर–इससे कवि ने यह भाव व्यक्त किया है कि सांसारिक माया-मोह से ग्रस्त व्यक्ति ईश्वरीय भक्ति का महत्त्व नहीं जानते हैं। वे तो जैसे हाथी को देखकर कुत्ता भौंकता है, वैसे ही सहज-साधक को लेकर आलोचना करने लगते हैं, उसमें दोषों को खोजने का प्रयास करते हैं। परन्तु सच्चे साधक को ऐसे लोगों से नहीं डरना चाहिए।

प्रश्न 4. 'मोकों कहाँ ढूँढे बन्दे' पद में कबीर ने क्या सन्देश दिया है?

उत्तर–इस पद में कबीर ने यह सन्देश दिया है कि ईश्वर की भक्ति के लिए मन्दिर-मस्जिद में जाना, तीर्थ-यात्रा करना, कर्मकाण्ड आदि उपायों का सहारा लेना सर्वथा अनुचित, ढोंग और आडम्बरपूर्ण है। वस्तुत: ईश्वर कहीं बाहर नहीं, वह तो हृदय में ही रहता है और कहीं पर भी उसकी भक्ति एवं साक्षात्कार हो सकता है। प्रत्येक जीव की साँस में अर्थात् जीवात्मा में प्रभु रहता है। अतएव उसकी प्राप्ति आत्मानुभूति से ही हो सकती है।

प्रश्न 5. 'मैं तो तेरे पास में' के माध्यम से कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर–'मैं तो तेरे पास में' के माध्यम से कबीर यह कहना चाहते हैं कि ईश्वर घट-घटवासी है अर्थात् वह प्रत्येक प्राणी के घट अर्थात् हृदय में या प्रत्येक की आत्मा में समाया हुआ है, बस उसे पहचानने की आवश्यकता है।

प्रश्न 6. कबीरदास की वाणी साखी क्यों कहलाती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कबीर की वाणी साखी इसलिए कहलाती है क्योंकि साखी का अर्थ साक्षी होता है और उन्होंने जो भी कहा वह अपने अनुभवों की सच्चाई के आधार पर कहा। इसलिए उनकी वाणी वास्तविक जीवन की साखी अर्थात् साक्ष्य या गवाह बन कर आयी है। इसलिए उनकी वाणी साखी (साक्ष्य) कहलाती है।

प्रश्न 7. 'प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ'। इसमें विष और अमृत किसके प्रतीक हैं?

उत्तर–कबीर द्वारा रचित साखी में मनुष्य के मन में रहने वाली विषय-वासनाएँ, लोभ, मोह, माया, मतिभ्रम तथा मलिन कर्म, विष के प्रतीक हैं, अर्थात् ये सारे विकार विष के समान मनुष्य का अहित एवं विनाश करते हैं। इनके विपरीत सद्गुण, सदाचरण, प्रभुभक्ति, ईश्वरीय-साधना तथा माया-मोह आदि से मुक्ति पाकर परमानन्द की प्राप्ति अमृत के प्रतीक हैं। प्रभु-भक्ति से मिलने वाला आनन्द का प्रतीक अमृत जीवन को सफल बनाता है।

प्रश्न 8. 'मोकों कहाँ ढूँढे बंदे' पद के अनुसार मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ खोजता है? अन्ततः प्रभु-प्राप्ति कहाँ होती है?

उत्तर–मनुष्य रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों से ग्रस्त होकर ईश्वर को धार्मिक स्थलों, तीर्थों, योग-वैराग्य और पूजा-पाठ आदि कर्मकाण्ड में ढूँढता है। वह ईश्वर की खोज में भटकता रहता है। परन्तु ईश्वर तो घट-घट में व्याप्त है, प्रत्येक प्राणी की आत्मा में, प्रत्येक चेतन की स्वाँस में रहता है। अत: मनुष्य अन्तत: ईश्वर को अपनी आत्मा में ही प्राप्त करता है, परन्तु उसके लिए आत्मिक साधना करनी पड़ती है।

प्रश्न 9. 'निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान'–के माध्यम से कबीर ने क्या सीख दी है?

उत्तर–इस कथन के माध्यम से सन्त कबीर ने किसी भी मत, सम्प्रदाय, धर्म या किसी भी पक्ष-विपक्ष में न पड़ने की सीख दी है, क्योंकि किसी मत, पक्ष आदि का समर्थन करने से व्यक्ति का मन आसक्तियों से ग्रस्त हो जाता है, उसमें लोभ-मोह, मतिभ्रम आदि दोष आ जाते हैं। अत: निष्पक्ष भाव से प्रभु का भजन करना चाहिए।

प्रश्न 10. कबीर के अनुसार काबा कब काशी हो जाता है?

उत्तर–कबीर के अनुसार जब जातिगत एवं सम्प्रदायगत भेदभाव समाप्त हो जाता है, तब मनुष्य के मन से हिन्दू-मुसलमान और राम-रहीम का ऊपरी भेदभाव मिट जाता है। उस स्थिति में काबा काशी हो जाता है, अर्थात् धार्मिक दुर्भावनाएँ एकदम मिट जाती हैं तथा काबा और काशी में अन्तर नहीं रह जाता है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'मैं' और 'तेरे' मन के एक होने में क्या बाधा है?

अथवा

'मैं तेरे पास में' होकर भी भेद की स्थिति क्यों बनी रहती है?

उत्तर–'मैं' और 'तेरे' मन के एक होने में सबसे बड़ी बाधा अन्धविश्वास एवं अहंकार है। जब व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ ज्ञानी मानने का अहंकार पाल लेता है तथा दूसरों को अन्धविश्वासी एवं शास्त्रों में कही बातों को आँख मूँदकर मानने वाला समझ लेता है, तब दोनों के मन में अत्यधिक अन्तर आ जाता है। इसी कारण उनमें भेद की स्थिति बनी रहती है।

प्रश्न 2. क्या कबीर हिन्दू-मुसलमान भेदभाव से सर्वथा मुक्त थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कबीर अन्धविश्वास एवं धार्मिक रूढ़ियों के प्रबल विरोधी थे। इसी कारण वे धार्मिक भेदभाव और बहुदेववाद को नहीं मानते थे। उन्होंने परस्पर भेदभाव को लेकर हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों को फटकारते हुए कहा–

हिन्दू मुआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ।।

इसी प्रकार वे राम-रहीम और काबा-काशी में कोई भेद नहीं मानते थे। वे इस तरह के भेदभाव से सर्वथा मुक्त या ऊपर उठे हुए सच्चे सन्त थे।

प्रश्न 3. कबीर ने अपने अधिकतर दोहों और सबदों में साधुओं को ही सम्बोधित क्यों किया? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर–कबीर सन्त स्वभाव के थे। वे मानते थे कि केवल सच्चा साधु ही प्रभु-भक्ति की बात सुनना और समझना चाहता है। अन्य संसारी जीव तो आसक्ति से ग्रस्त होने से प्रभु-भक्ति का कोरा दिखावा करते हैं तथा अज्ञान से ग्रस्त रहते हैं। इसलिए ज्ञान-साधना से मण्डित भक्ति को लेकर उन्होंने साधुओं को ही सम्बोधित कर अपना मन्तव्य व्यक्त किया है। इसी कारण उनकी साखियों और सबदों में सन्तों एवं साधुओं का उल्लेख हुआ है।

प्रश्न 4. 'हिन्दू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ'–कहकर कबीर ने क्या व्यंग्य-आक्षेप किया है?

उत्तर–कबीर ने हिन्दुओं और मुसलमानों-दोनों को फटकार लगायी। उन्होंने दोनों सम्प्रदायों की उपासना पद्धति पर व्यंग्य-आक्षेप करते हुए कहा है कि हिन्दू जीवन भर राम-राम जपते तथा मुसलमान खुदा-खुदा कहते हुए संसार से चल बसते हैं। वे राम और खुदा के पक्ष में पड़कर धार्मिक रूप से कट्टर अन्धविश्वासी हो जाते हैं। इस कारण वे सच्चे हृदय से ईश्वर की उपासना नहीं कर पाते हैं। फलस्वरूप उनका मनुष्य जीवन भी असफल रहता है और उनका अगला जन्म भी बिगड़ जाता है।

प्रश्न 5. कबीर की साखियों में प्रेम का जो स्वरूप बताया गया है, उसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कबीर निर्गुण भक्तिधारा के ज्ञानमार्गी सन्त थे। इसलिए भले ही उन्होंने ईश्वर-प्राप्ति हेतु ज्ञान-साधना को प्राथमिकता दी, परन्तु उन्होंने प्रेम-साधना को भी काफी महत्त्व दिया। वे प्रेम को 'सुभर जल' अर्थात् उज्ज्वल या पवित्र जल कहते हैं, जिसमें रहने के बाद प्रेमी उसे छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाता है।

प्रश्न 6. 'मोट-चून मैदा भया' से कबीर का क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–इसमें मोटा चून का आशय न खाये जाने वाले अनाज से है तथा मैदा का आशय स्वादिष्ट एवं संग्रहित वस्तु से है। प्रतीक रूप में धार्मिक भेद-भाव, विषय-वासना, माया-मोह, अन्धविश्वास एवं मतिभ्रम आदि विकार मोटा चून हैं। धार्मिक एकता, राम-रहीम में एकता या रूढ़ियों के कारण मन में बसी दुर्भावनाओं की समाप्ति मैदा की तरह स्वादिष्ट है। क्योंकि इससे प्रभु-भक्ति का आनन्द मिलता है। उस दशा में मोट चून मैदा बन जाता है और धार्मिक भेद-भाव मिट जाता है।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. कबीर की साखियों में उनका समाज-सुधारक रूप किस प्रकार व्यक्त हुआ है? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर–कबीर ने अपनी साखियों में सन्त के लक्षण के साथ प्रेम एवं ज्ञान का महत्त्व बताया है तथा समाज में व्याप्त बाह्याडम्बरों पर कटाक्ष किया है। उन्होंने कहा कि काबा या काशी की यात्रा करने तथा योग-वैराग्य, क्रिया-कर्म आदि करने से ईश्वर को खोजने का प्रयास कोरा अन्धविश्वास है। राम और रहीम में भेद मानकर धार्मिक कट्टरता बढ़ती है, समाज में प्रेम-भाव घटता है। वस्तुत: राम और रहीम में कोई भेद नहीं है, केवल नाम का अन्तर है। इस प्रकार कबीर ने हिन्दू-मुसलमानों की एकता पर, अन्धविश्वासों के निवारण पर विशेष जोर दिया और समाज-सुधारक रूप में अपना निष्पक्ष मत व्यक्त किया।

प्रश्न 2. 'कबीर की साखियाँ एवं पद आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक हैं।' तर्कसहित संक्षेप में उत्तर दीजिए।

उत्तर–कबीर ने अपनी साखियों एवं पदों में अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों का खण्डन कर ज्ञानचेतना तथा सच्ची प्रभु-भक्ति को अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने ईश्वर की भक्ति में तथा हिन्दू-मुस्लिम में अन्तर न मानकर समानता एवं परस्पर एकता रखने का सन्देश दिया है। वर्तमान समय में जो धार्मिक संकीर्णता, रूढ़िग्रस्तता, साम्प्रदायिक वैमनस्य तथा भक्ति का कोरा दिखावा फैल रहा है, उसका समाधान करने के लिए कबीर की बाणी आज भी पहले से अधिक सर्वाधिक उपयोगी है। अत: कबीर की साखियाँ एवं पद आज के युग में पूरी तरह उपादेय एवं प्रासंगिक हैं।

रचनाकार का परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि कबीर का जीवन परिचय विस्तार से दीजिए।

उत्तर–कबीर के जन्म और मृत्यु के विषय में अनेक किवदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आस-पास मगहर में देहान्त। भक्तिकालीन निर्गुण संत परम्परा के प्रमुख कवि कबीर की रचनाएँ मुख्यत: कबीर ग्रंथावली में संग्रहीत हैं। कबीर उदार, निर्भय तथा संत थे। राम-रहीम की एकता में विश्वास रखने वाले कबीर ने सदैव ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव एवं कर्मकांड का खंडन किया। कबीर की भाषा की सहजता ही उनकी काव्यात्मकता की शक्ति है।

8. ललद्यद

कवि-परिचय–ललद्यद कश्मीरी भाषा की लोकप्रिय कवयित्री हैं। उनका जन्म सन् 1320 के लगभग कश्मीर-स्थित पाम्पोर के सिमपुरा गाँव में हुआ था। इनका निधन सन् 1391 के आसपास माना जाता है। इनके जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। इन्हें लल्लेश्वरी, लला, ललयोगेश्वरी, ललारिका आदि नामों से भी जाना जाता है। इनकी काव्य-शैली को 'वाख' कहते हैं। इनका कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं है। इनके 'वाख' सैकड़ों वर्षों से मौखिक रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे हैं। इन्हें भक्तिकाल के कवियों में गिना जाता है।

पाठ-परिचय–प्रस्तुत पाठ में ललद्यद के चार वाखों का हिन्दी-अनुवाद पद्यात्मक रूप में दिया गया है। इन वाखों में ईश्वर-प्राप्ति के लिए किये गये प्रयासों की व्यर्थता, बाह्याडम्बरों का विरोध, माया-मोह से मुक्ति का सन्देश तथा सत्कर्मों के महत्त्व का निरूपण किया गया है। साथ ही सामाजिक जीवन में भेद-भाव का विरोध और आत्मज्ञान का महत्त्व भी इनमें दर्शाया गया है। इन वाखों का अनुवाद मीरा कान्त द्वारा किया गया है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

वाख

(1)

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे॥

कठिन-शब्दार्थ—भवसागर = संसार, भव रूपी सागर। सकोरे = मिट्टी का पात्र, कुल्हड़। व्यर्थ = बेकार। प्रयास = कोशिश। हूक = तड़प, दर्द।

भावार्थ—कवयित्री ललद्यद कहती है कि यह जीवन कच्चे धागे की डोर के समान नाशवान है जिसके सहारे मैं प्रभु भक्ति की नाव को खींच रही हूँ। न जाने ईश्वर मेरी पुकार या प्रार्थना कब सुनेगा और कब इस संसार रूपी सागर से पार कराएगा अर्थात् मुक्ति देगा। मेरे सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं, जैसे मिट्टी के कच्चे सकोरे से पानी रोकना व्यर्थ प्रयास हो जाते हैं उसी प्रकार कवयित्री के सारे प्रयास व्यर्थ सिद्ध हो रहे हैं जिसमें वह ईश्वर के प्रति समर्पित भाव से प्रयत्न करती है। कवयित्री कहती है कि उसके मन में रह-रहकर एक तड़प या दर्द उठता रहता है जिसमें वह इस नश्वर संसार को छोड़कर ईश्वर के पास जाने की इच्छा करती है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. 'खींच रही मैं नाव'—इसमें 'नाव' से क्या आशय है?
प्रश्न 2. कवयित्री ने कच्चे धागे की रस्सी किसे कहा?
प्रश्न 3. 'पानी टपके कच्चे सकोरे' से क्या आशय है?
प्रश्न 4. कवयित्री के मन में हूक क्यों उठ रही है? कारण बताइए।
प्रश्न 5. कवयित्री का पद में कौनसा भाव प्रस्तुत हो रहा है?
प्रश्न 6. कवयित्री को कौनसे घर जाने की चाह घेरे हुए है?

उत्तर—1. इसमें 'नाव' का सामान्य अर्थ न लेकर प्रतीकार्थ लिया गया है, जिससे इसका आशय प्रभु भक्ति रूपी नाव है।

2. कवयित्री ने जीवन जीने के साधनों को कच्चे धागे की रस्सी कहा है।

3. 'पानी टपके कच्चे सकोरे' से आशय उन सभी प्रयासों से है जो कवयित्री ईश्वर-प्राप्ति हेतु उसी प्रकार कर रही है, जैसे कच्चे सकोरे में पानी रोकने का प्रयास है।

4. कवयित्री के अपने आराध्य परमात्मा से मिलने के सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं। इसी कारण उसके मन में हूक उठ रही है।

5. कवयित्री का ईश्वर मिलन के सारे प्रयासों के विफल हो जाने पर निराशावादी भाव प्रस्तुत हो रहा है।

6. कवयित्री को आध्यात्मिक घर अर्थात् ईश्वर के पास जाने की चाह घेरे हुए है।

(2)

खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बन्द द्वार की।

कठिन-शब्दार्थ—अहंकारी = घमण्डी। सम = शम, इन्द्रियों का दमन। समभावी = समानता की भावना। साँकल = जंजीर।

भावार्थ—कवयित्री ललद्यद कहती है कि हे मनुष्य ! इन सांसारिक विषय-वासनाओं में पूरी तरह लीन मत हो, इन भोगों से तुझे कुछ भी मिलने वाला नहीं है। लेकिन भोगों को पूरी तरह त्यागो भी नहीं। इससे मन में अहंकार का भाव उत्पन्न होगा। इसलिए तू भोग और त्याग के मध्य उचित संतुलन रखते हुए जीवन को जी अर्थात् इंद्रियों पर उचित संयम रख। इसी तरह समभावी अर्थात् समानता की भावना रखकर आगे बढ़ता चल। एक दिन प्रभु प्राप्ति के बन्द द्वार खुल जायेंगे और परमात्मा का साक्षात्कार हो सकेगा।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. 'खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं' से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. कवयित्री के अनुसार व्यक्ति अहंकारी कब बनता है?

प्रश्न 3. मनुष्य समभावी कब बनेगा?

प्रश्न 4. कवयित्री पद में क्या प्रेरणा देना चाहती है?

प्रश्न 5. कवयित्री ने ईश्वर-मिलन की राह में सबसे बड़ी बाधा किसे बताई है?

प्रश्न 6. 'सम' से आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–1. खा-खाकर अर्थात् निरन्तर विषय-वासनाओं का उपभोग करने से कुछ हाथ नहीं लगेगा।

2. विषय-वासनाओं पर नियन्त्रण रखने से और तपमय जीवन जीने से मनुष्य अपने आपको महात्मा मान अहंकारी बन जाता है।

3. जब मनुष्य भोग और त्याग के बीच रहकर मध्यम मार्ग अपनायेगा तब वह समभावी बनेगा।

4. कवयित्री पद में मनुष्य को सहज संयम अपनाने और ईश्वर से मिलने की प्रेरणा देना चाहती है।

5. कवयित्री ने ईश्वर-मिलन की राह में सबसे बड़ी बाधा मनुष्य के स्वयं का अहंकार बताया है।

6. 'सम' से आशय समन्वय, सन्तुलन एवं सन्तोष से है जो मनुष्य वृत्ति को लचीला एवं सुगम बनाता है।

(3)

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई?

कठिन-शब्दार्थ–राह = रास्ता। सुषुम = सुषुम्ना नाड़ी। सेतु = पुल, मध्य। कौड़ी न पाई = कुछ लाभ नहीं हुआ। उतराई = नदी पार करने का भाड़ा।

भावार्थ–कवयित्री ललद्यद कहती है कि वह इस संसार में परमात्मा की प्राप्ति के लिए सीधी राह से आयी, परन्तु वह जीवन में उस सीधी राह पर नहीं चल पायी। अर्थात् सीधे, सरल रूप से ईश्वर-चिन्तन नहीं किया। उसने हठयोग का सहारा लेकर गलत राह का चयन कर लिया और वह जीवनभर सुषुम्ना नाड़ी को साधने का प्रयास करती रही। कुंडलिनी जागरण के प्रयास में लगी रही। इसी में सारा जीवन बीत गया। जीवन-यात्रा के अन्त में जब उसने अपनी जेब टटोली, तो उसे कुछ भी नहीं मिला। अब उसे चिन्ता हो रही है कि संसार रूपी विशाल नदी को पार कराने वाले ईश्वर रूपी माझी को अब वह उतराई कहाँ से दे पायेगी? अर्थात् अब उसके पास देने के लिए कुछ नहीं बचा है, क्योंकि उसने ईश्वर-भक्ति की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवयित्री ने अपना दिन कैसे बिता दिया?

प्रश्न 2. 'गई न सीधी राह' कहकर कवयित्री ने क्या संकेत किया है?

प्रश्न 3. कवयित्री माझी के सामने क्यों परेशान है? बताइए।

प्रश्न 4. कवयित्री ने 'सुषुम-सेतु' किसे कहा है?

प्रश्न 5. 'आई सीधी राह से' पंक्ति में 'सीधी राह' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 6. ईश्वर को माझी क्यों बताया गया है?

उत्तर–1. कवयित्री ने अपना दिन अर्थात् जीवन हठयोग की साधना सीखने में बिता दिया।

2. कवयित्री ने संकेत किया है कि वह भक्ति की सीधी राह पर चलने की बजाय हठ योग के जटिल मार्ग पर चल पड़ी।

3. कवयित्री ईश्वर रूपी माझी के सामने इसलिए परेशान है, क्योंकि उसको देने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है।

4. कवयित्री ने सुषुम-सेतु सुषुम्ना नाड़ी की साधना को कहा है।

5. 'सीधी राह' से अभिप्राय सरल-सहज भाव से ईश्वर प्राप्ति करना है जिसमें किसी भी क्रिया-विधि का निषेध है।

6. क्योंकि ईश्वर ही इस संसार रूपी सागर से हमें पार उतारता है और सागर पार उतारने वाले केवट को माझी कहते हैं।

(4)

थल-थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिन्दू-मुसलमां।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान,
वही है साहिब से पहचान।

कठिन-शब्दार्थ–थल-थल = हर जगह। साहिब = ईश्वर।

भावार्थ–ईश्वर की सर्वव्यापकता बतलाती हुई कवयित्री कहती है कि ईश्वर थल-थल अर्थात् हर जगह रहता है, ईश्वर सर्वव्यापक है। इसलिए हमें धार्मिक एवं जातीय संकीर्णताओं से ऊपर उठते हुए हिन्दू एवं मुसलमान में कोई भेद नहीं करना चाहिए। यदि हम स्वयं को सच्चा ज्ञानी समझते हैं, तो पहले हमें स्वयं को पहचानना चाहिए। जब हम स्वयं को जान जायेंगे तो अपने भीतर रहने वाले अर्थात् आत्मा में रहने वाले ईश्वर को भी आसानी से पहचान लेंगे।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवयित्री ने शिव का निवास कहाँ बताया है?
प्रश्न 2. 'भेद न कर' कवयित्री ने ऐसा किस कारण कहा है?
प्रश्न 3. कवयित्री ज्ञानी जन को क्या जानने की प्रेरणा देती है?
प्रश्न 4. ईश्वर की पहचान का कौन-सा मार्ग है?
प्रश्न 5. कवयित्री के अनुसार ईश्वर को पहचानने के लिए किसे जानने की आवश्यकता है?
प्रश्न 6. कवयित्री ने ईश्वर-स्वरूप के विषय में क्या बताया है?

उत्तर–1. कवयित्री ने शिव अर्थात् परमेश्वर का निवास हर स्थान और हर प्राणी में बताया है, क्योंकि ईश्वर घट-घटव्यापी है।

2. क्योंकि ईश्वर किसी भी जाति या धर्म से परे है, वह एक है।

3. कवयित्री ज्ञानी जन को अपने अन्दर स्थित आत्मा को पहचानने की प्रेरणा देती है।

4. ईश्वर की पहचान का मार्ग आत्मज्ञान है।

5. ईश्वर को जानने के लिए पहले स्वयं को जानने की आवश्यकता बताई गई है।

6. यही कि ईश्वर सभी जाति-धर्मों से परे घट-घट वासी है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर–'रस्सी' शब्द यहाँ जीवन जीने के साधनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह स्वभाव में कच्ची अथवा नश्वर है।

प्रश्न 2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किये जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर–क्योंकि कवयित्री को लगता है सभी विधियों से ईश्वर-भक्ति करने के पश्चात् भी ईश्वर-मिलन नहीं हो पा रहा है और ईश्वर-मिलन के बिना मुक्ति असंभव है, इसलिए वह निराशा भरे स्वर में अपने प्रयासों को व्यर्थ मान रही है।

प्रश्न 3. कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–घर जाने की चाह से तात्पर्य है–मुक्ति या मोक्ष पाने की इच्छा। सभी ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं और परमात्मा के ही अंश हैं और अंतत: वे उसी में मिल जाने या मोक्ष पाने की चाह रखते हैं इस तरह सभी परमात्मा के घर जाने की इच्छा रखते हैं।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

उत्तर–कवयित्री को अनुभव होता है कि वह जीवन भर हठ योग साधना में लगी रही किन्तु उसे कोई सफलता न मिल सकी। उसकी जेब खाली ही रही अर्थात् प्रभु-भक्ति के लिए उसने कुछ नहीं किया।

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर–आशय है कि भोग-विलास में लिप्त होकर प्रभु-प्राप्ति नहीं कर सकता लेकिन अगर सारे भोग-विलास छोड़ देगा, साधु-संत बन जाएगा, तो फिर अहंकार उत्पन्न होगा। अर्थात् प्रभु-प्राप्ति हेतु भोग एवं त्याग के मध्य समभाव, सन्तुलन एवं समन्वय रखना आवश्यक है।

प्रश्न 5. बन्द द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर–बन्द द्वार की साँकल खोलने के लिए कवयित्री ललद्यद ने यह उपाय सुझाया है कि भोग और त्याग के बीच सन्तुलन बनाये रखना चाहिए। अर्थात् मध्यम मार्ग को ही अपनाना चाहिए। तभी प्रभु-मिलन के द्वार खुलेंगे।

प्रश्न 6. ईश्वर-प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?

उत्तर–यह भाव इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है—

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह!
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ क्या उतराई?

प्रश्न 7. 'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उत्तर–'ज्ञानी' से कवयित्री का अभिप्राय है—जिसे सम्यक ज्ञान अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान हो।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 8. हमारे सन्तों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है—

(क) आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?

(ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

उत्तर–(क) आपसी भेदभाव के कारण देश और समाज को बहुत बड़ी हानि हो रही है। सबसे बड़ी हानि तो यह हुई है कि समाज आपस में बँट गया है जिसके कारण अनेक झगड़े खड़े हो रहे हैं। हिन्दू और मुसलमानों के बीच भेदभाव की दीवार खड़ी हो गयी है। इस कारण साम्प्रदायिक दंगे होते रहते हैं। यह देश और समाज की बहुत बड़ी हानि है।

(ख) आपसी भेदभाव मिटाने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि हमें उन बातों की चर्चा नहीं करनी चाहिए जिससे आपसी भेदभाव बढ़े। हमें आपसी प्रेम, सौहार्द्र और एकता पर बल देना चाहिए। जातिवाद और क्षेत्रवाद की भावना समाप्त की जानी चाहिए। सभी सम्प्रदायों और धर्मों को बिना किसी भेद-भावों के दूसरे के त्योहारों में मिलकर भाग लेना चाहिए। संक्षेप में इन उपायों से आपसी भेदभाव दूर हो सकता है।

पाठेतर सक्रियता–

● भक्तिकाल में ललद्यद के अतिरिक्त तमिलनाडु की आंदाल, कर्नाटक की अक्क महादेवी और राजस्थान की मीरा जैसी भक्त कवयित्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए एवं उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर–छात्र स्वयं करें।

● ललद्यद कश्मीरी कवयित्री हैं, कश्मीर पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर–कश्मीर भारत का स्वर्ग कहलाता है। यह प्राकृतिक-सौन्दर्य से समृद्ध है। हिमालय की गोद में झेलम, सिन्ध आदि नदियों से सिंचित, हरे-भरे वनों और शुभ्र-हिमशिखरों से आच्छादित कश्मीर को लेकर कवियों एवं शायरों ने सुन्दर-ललित भाव व्यक्त किये हैं। कश्मीर प्रकृति का वरदान रहा है। यह प्राचीन काल में सारस्वत-साधना का एवं शैवदर्शन का केन्द्र रहा है। यहाँ पर अनेक स्वनामधन्य कवियों पर सरस्वती का वरदहस्त रहा है, जिन्होंने संस्कृत एवं कश्मीर की अन्य भाषाओं में सुन्दर काव्यों की रचनाएँ कीं। इसी कारण इसे सारस्वत-प्रदेश भी कहा जाता है।

कश्मीर का जन-जीवन यद्यपि विषमतापूर्ण रहा है, तथापि यहाँ के लोग बड़े हँसमुख, मिलनसार, अतिथि-सेवा करने वाले तथा सुन्दर हैं। यहाँ की संस्कृति अपनी अनेक विशेषताओं के कारण अनुपम मानी जाती है। यहाँ पर हिन्दू-मुसलमान एकता के अनेक पवित्र स्थल हैं। भले ही कुछ वर्षों से भ्रष्ट राजनीति के कारण यहाँ पर रक्तपात का दौर रहा, अशान्त वातावरण रहा, परन्तु यहाँ के निवासियों में मानवता का लोप नहीं हुआ है। आज भी सभी दृष्टियों से कश्मीर भारत का सिरमौर प्रदेश है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. परमात्मा को जानने के लिए आवश्यक है—
(क) संयम का पालन (ख) भक्तिपूर्ण आराधना
(ग) कुंडली जागरण (घ) आत्मज्ञान की प्राप्ति
2. कवयित्री ने मुक्ति का आधार-मार्ग बताया है—
(क) मध्यम मार्ग (ख) हठयोग और साधना (ग) सहज समर्पण (घ) अहंकार का त्याग
3. 'खींच रही मैं नाव'। नाव प्रतीक है—
(क) सागर पार करने की (ख) संसार-उद्धार की
(ग) माया-मुक्ति की (घ) ईश्वर-भक्ति की
4. कवयित्री ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को आराधना करने के लिए कहा है—
(क) राम की (ख) शिव की (ग) परामात्मा की (घ) निराकार की
5. 'घर जाने की चाह है घेरे' कवयित्री कौन-से घर जाने की चाह रखती है?
(क) पिया का घर (ख) ईश्वर का घर (ग) पिता का घर (घ) स्वयं का घर
6. 'खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं', से में 'खा-खाकर' से अभिप्राय है—
(क) छप्पन भोग (ख) भोग-विलास (ग) रिश्वत (घ) अन्नकूट
7. 'सम खा तभी होगा समभावी' में भाव है—
(क) विद्वता का (ख) समानता का (ग) ज्ञान का (घ) सम्मान का
8. 'माझी' का प्रतीकात्मक अर्थ है—
(क) केवट (ख) खवैया (ग) ईश्वर (घ) भक्त
9. कवयित्री ने ईश्वर का निवास-स्थान कहाँ बताया है?
(क) थल (ख) नभ (ग) जल (घ) हृदय
10. कवयित्री के अनुसार 'साहिब' से पहचान कौन कर सकता है?
(क) ज्ञानी (ख) अज्ञानी (ग) मूर्ख (घ) चतुर

उत्तर-माला–1. (घ) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ख) 6. (ख) 7. (ख) 8. (ग) 9. (घ) 10. (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पानी टपके .... सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
2. रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं ....।
3. .... खा तभी होगा समभावी।
4. .... पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह।
5. ज्ञानी है तो .... को जान।
6. थल-थल में .... है शिव ही।

उत्तर-माला–1. कच्चे 2. नाव 3. सम 4. सुषम-सेतु 5. स्वयं 6. बसता।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. कवयित्री ईश्वर से किस बात की प्रार्थना कर रही है?

उत्तर–कवयित्री घर जाने हेतु अर्थात् मोक्ष-प्राप्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना कर रही है।

प्रश्न 2. कवयित्री के निष्फल होते प्रयासों का उदाहरण किसके माध्यम से व्यक्त हुआ है?

उत्तर–कवयित्री के ईश्वर प्राप्ति हेतु किए गए सभी प्रयास मिट्टी के कच्चे सकोरे में रिसते पानी के माध्यम से व्यक्त हुआ है।

प्रश्न 3. कवयित्री के 'कच्चे धागे' का आशय क्या है?

उत्तर–जीवन की कच्ची डोर जो कभी भी टूट सकती है, से कवयित्री ने कच्चे धागे माना है।

प्रश्न 4. 'बनेगा अहंकारी' कवयित्री ने किसके संदर्भ में कहा है?

उत्तर–कवयित्री ने उन साधु-संतों को अहंकारी कहा है जिनमें तपस्वी बनने के पश्चात् अहम् भाव आ जाता है।

प्रश्न 5. 'समभावी' बनने की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर–समान भाव रखकर अर्थात् सन्तुलन की प्रक्रिया पर चलकर समभावी बना जा सकता है।

प्रश्न 6. किसके द्वार पर सांकल लगी है और वह किसके द्वारा खुलेगी?

उत्तर–परमात्मा के द्वार पर सांकल लगी है और वह त्याग व भोग के मध्य सन्तुलन रखने वाले के द्वारा खुलेगी।

प्रश्न 7. 'गई न सीधी राह' से कवयित्री का क्या आशय है?

उत्तर–हठयोग की जटिल प्रक्रिया को कवयित्री ने ईश्वर-प्राप्ति का कठिन मार्ग कहा है।

प्रश्न 8. 'कौडी न पाई' से कवयित्री का क्या आशय है?

उत्तर–कवयित्री का मानना है कि जीवन पर्यन्त ईश्वर भक्ति की कमाई प्राप्त नहीं कर पाई अर्थात् उसके पास कुछ नहीं है।

प्रश्न 9. हिन्दू-मुसलमां के मध्य भेद न करने का कह, कवयित्री का कौनसा भाव उत्पन्न होता है?

उत्तर–जातिगत भेदभाव से तथा संकीर्ण विचारों से ऊपर उठने का भाव प्रकट होता है।

प्रश्न 10. 'आत्मालोचन' का संदेश कवयित्री ने किन्हें दिया है?

उत्तर–आत्मालोचन अर्थात् स्वयं को जानने की प्रक्रिया का उपदेश कवयित्री ने उन ज्ञानियों को दिया है जो ईश्वर को जानने का दंभ रखते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'वाख' से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'वाख' का आशय है–वाणी, शब्द या कथन। ज्ञानानुभव के आधार पर लिखी गई कविता को 'वाख' कहते हैं। कश्मीर में सन्तों की वाणी जैसी भक्ति सम्बन्धी जो काव्य-शैली अपनायी जाती है, जो कि चार पंक्तियों में बद्ध तथा सुगेय रचना होती है, उसे 'वाख' कहते हैं।

प्रश्न 2. 'रस्सी कच्चे धागे..............चाह है घेरे' पद का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–इस कविता में कवयित्री ललद्यद ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किये जाने वाले प्रयासों की चर्चा की है तथा बताया है कि माया-मोह के कारण नश्वर साधनों के आधार पर ईश्वर-प्राप्ति संभव नहीं है। अतएव साधक को ऐसे साधन अपनाने की प्रेरणा दी गई है, जो सर्वथा आडम्बर-रहित हों।

प्रश्न 3. 'खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं'–पद में क्या सन्देश दिया गया है?

उत्तर–कवयित्री ने इस पद में संदेश दिया है कि भोग-विलास में डूबकर ईश्वर को भुलाकर तू अर्थात् जीव कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता है। माया-मोह, विषय-वासना जीव को भरमाती है और अपने पाश में जकड़े रखती है इसलिए जीव को भोग-विलास से दूर रहने का ज्ञान देती है। ईश्वर की सच्ची साधना का संदेश देती है।

प्रश्न 4. 'सुषुम-सेतु खड़ी थी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–हठयोग में शरीर को कष्ट देने वाली क्रियाओं को अपनाया जाता है। अत: उसमें इंगला और पिंगला को शरीर-रचना की साधारण वाहिका (नाड़ियाँ) माना जाता है जो शरीर में समानान्तर रहती हैं। सुषुम्ना नाड़ी उन दोनों से जुड़कर साधक की चेतना को ऊर्ध्वगामी करती है। यह नासिका के ऊपर और दोनों नेत्रों के मध्यभाग (ब्रह्मरन्ध्र) में स्थित मुख्य नाड़ी है। इसी कारण कवयित्री ने सुषुम्ना नाड़ी को सेतु अर्थात् पुल कहा है जो इंगला-पिंगला को आपस में जोड़कर सक्रिय रखती है। हठयोगी सुषुम्ना वाहिका को जगाने का निरन्तर प्रयास करते रहते हैं।

प्रश्न 5. 'ज्ञानी है तो स्वयं को जान' कवयित्री ने स्वयं को पहचानने की बात क्यों कही है?

उत्तर–कवयित्री का भाव है कि स्वयं को जानने अर्थात् आत्मज्ञान होते ही मनुष्य सबको समान समझता है और वह समस्त संकीर्णताओं से ऊपर उठ जाता है। उस दशा में ही वह ईश्वर की पहचान कर पाता है। प्रत्येक प्राणी के अन्त:करण में आत्मा के रूप में परमात्मा (साहिब) रहता है। अत: स्वयं को अर्थात् अपनी आत्मा को पहचानने से परमात्मा का भी साक्षात्कार हो जाता है। कवयित्री ने इसी दृष्टि से यह बात कही है।

प्रश्न 6. संकलित कविता के आधार पर कवयित्री ललद्यद की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिये।

उत्तर–कवयित्री ललद्यद ऐसी भक्त कवयित्री थी जिन्होंने जाति व धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर ईश्वरीय प्रेम की श्रेष्ठता को ही महत्त्व दिया। उन्होंने आत्मज्ञान को ही सच्चा ज्ञान और अन्त:करण की पवित्रता के साथ सत्कर्मों को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने ईश्वर को कबीर की तरह सर्वव्यापक, मायाजाल से दूर मुक्तिदाता बताया और हठ योग का विरोध कर भक्ति के लिए ज्ञानमार्गी साधना को श्रेष्ठ बताया।

प्रश्न 7. 'गई न सीधी राह' कथन से कवयित्री ने क्या सन्देश दिया है?

उत्तर—कवयित्री ने सन्देश दिया है कि भक्त को सदैव आत्मालोचन करना चाहिए, सत्कर्मों की ओर प्रवृत्ति रखनी चाहिए। मन की पवित्रता, वाणी का संयम तथा वासनाओं से मुक्ति ही भक्ति की सीधी राह है। जो इस पर नहीं चलता है, वह असफल रहता है, अर्थात् उसे ईश्वर-प्राप्ति नहीं होती है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'पानी टपके कच्चे सकोरे' का क्या आशय है? इसके माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है?

उत्तर—सकोरा मिट्‌टी से बना गिलास जैसा पात्र होता है। मिट्टी के कच्चे पात्रों से पानी टपकता रहता है। कवयित्री द्वारा प्रयुक्त 'पानी टपके कच्चे सकोरे' का सामान्य अर्थ यही है कि मिट्टी के कच्चे पात्र से पानी रिसता रहता है। यह उसी प्रकार है जिस प्रकार नश्वर शरीर का जीवन-काल धीरे-धीरे कम होता जाता है। कवयित्री के प्रभु-प्राप्ति के सारे प्रयास व्यर्थ जा रहे थे। यदि जीवनान्त से पहले प्रभु-दर्शन हो जाते, तो कितना अच्छा रहता? कवयित्री यह चाहत पूरी करना चाहती थी।

प्रश्न 2. कवयित्री ललद्यद ने परमात्मा की प्राप्ति का क्या उपाय बताया है?

उत्तर—कवयित्री ललद्यद के अनुसार परमात्मा-प्राप्ति के लिए हृदय में 'हूक' अर्थात् अप्राप्ति का भाव उठनी जरूरी है जिससे ज्ञान-साधना बढ़ती रहे। जीवन में त्याग और भोग, सुख एवं दु:ख के बीच समन्वय बना रहे, साधना करते समय मध्यम मार्ग अपनाते रहें। इस तरह विषयासक्ति, अहंकार एवं हठयोग को न अपनाकर समत्व भाव से आत्मज्ञानी बनना जरूरी है। इस तरह के उपाय अपनाने से ईश्वर-प्राप्ति हो सकती है। आत्मज्ञान से ही साहिब से मिलन हो सकता है।

प्रश्न 3. 'बीत गया दिन आह!' कवयित्री ललद्यद का दिन किस प्रकार बीत गया?

उत्तर—कवयित्री ललद्यद परमात्मा की प्राप्ति के लिए सीधे भक्ति-पथ पर चलना चाहती थी, वह केवल ज्ञान-चेतना को जगाना चाहती थी, परन्तु उन्होंने हठयोग का मार्ग पकड़कर गलती कर दी। इस तरह उसका सारा दिन व्यर्थ की साधनाओं में बीत गया, जिससे उन्हें ईश्वर-भक्ति का सहज मार्ग नहीं मिला। इसी बात पर उन्होंने अपना पछतावा व्यक्त किया।

प्रश्न 4. कवयित्री ललद्यद ने मुक्ति के लिए कौनसे प्रयास किये, जो व्यर्थ रहे?

उत्तर—कवयित्री ललद्यद ने बताया कि मुक्ति के लिए सरल-सीधे रास्ते पर चलना चाहती थी, परन्तु गलती से उसने हठयोग की साधना के प्रयास किये। उसके ये प्रयास व्यर्थ गये, क्योंकि हठयोग-साधना में उसके जीवन का सारा समय यों ही बीत गया। अत: कवयित्री द्वारा परमात्मा की प्राप्ति तथा मुक्ति के लिए जितने भी प्रयास किए गए, उनमें उचित सन्तुलन न होने से उसे सफलता नहीं मिली। क्योंकि त्याग और भोग के मध्य सन्तुलन रखने से ही परमात्मा-प्राप्ति की हूक उठ पाती है।

निबन्धात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. ललद्यद के अनुसार 'माझी' और 'उतराई' शब्दों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'माझी' का शाब्दिक अर्थ है—नाव द्वारा दूसरे किनारे पर पहुँचाने वाला और 'उतराई' का अर्थ है—नाव पार कराने का किराया। कवयित्री ललद्यद के अनुसार माझी का आशय परमात्मा से है, जो भक्तों को संसार-सागर से पार कराता है। ईश्वर ही मनुष्य को इस संसार की कठिनाइयों या कष्टों से मुक्तकर अपनी शरण में लेता है। अत: ऐसे माझी को उतराई के रूप में अपनी एकनिष्ठ भक्ति समर्पित करनी पड़ती है, क्योंकि बिना समर्पण-भाव के सच्ची प्रभु-भक्ति नहीं हो पाती है। कवयित्री ने ज्ञान-साधक सद्‌गुरु को भी सन्त-परम्परा के अनुसार 'माझी' कहा है तथा उसके प्रति समर्पण-भाव रखने का सन्देश दिया है।

प्रश्न 2. 'जी में उठती रह-रह हूक' कवयित्री के मन में किसकी हूक उठती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कवयित्री ललद्यद के मन में ईश्वर-मिलन या ईश्वर-प्राप्ति की हूक अर्थात् इच्छा उठती है। कवयित्री मानती है कि यह शरीर मिट्‌टी का कच्चा सकोरा जैसा है, इस पर से आयु या जीवन रूपी पानी निरन्तर टपक रहा है, जीवन-काल बीतता जा रहा है। मृत्यु-समय नजदीक आ रहा है, परन्तु प्रभु-मिलन के लिए किये जाने वाले सारे प्रयास व्यर्थ जा रहे हैं। इन बातों का विचारकर कवयित्री के हृदय में रह-रहकर एक तड़प उठती है कि कब मैं प्रिय-प्रभु से मिल सकूँगी।

प्रश्न 3. कवयित्री ललद्यद ने परमात्मा-प्राप्ति में कौन-सी बाधाओं का उल्लेख किया है?

उत्तर—कवयित्री ललद्यद ने परमात्मा-प्राप्ति में इन बाधाओं का उल्लेख किया है—

1. जीवन नश्वर एवं क्षण भंगुर है, जबकि परमात्मा तक पहुँचने का मार्ग बहुत लम्बा है।

2. सांसारिक विषय-भोग मनुष्य को लक्ष्य से भटकाते हैं।

3. मनुष्य त्यागी तपस्वी होने का आडम्बर करता है, जिससे वह अहंकारी बन जाता है, अहंकार उसे परमात्मा से दूर कर देता है।

4. हठयोग की साधना करने से परमात्मा-प्राप्ति कठिन लगती है।

5. ऊँच-नीच, हिन्दू-मुसलमान, राम-रहीम का भेद-भाव रखने से भक्त सच्चे मार्ग से भटक जाते हैं।

6. लोगों का स्वयं के बारे में, आत्मा के विषय में अज्ञानी होना भी बाधक है।

प्रश्न 4. कवयित्री ललद्यद ने किन आडम्बरों का विरोध किया है?

उत्तर–कवयित्री ललद्यद ने सन्त परम्परा के अनुसार समाज में प्रचलित इन आडम्बरों का विरोध किया है–

1. मनुष्य हिन्दू-मुसलमान आदि रूप में धार्मिक संकीर्णता रखता है, जबकि ये दोनों ईश्वर की समान रूप से सन्तान हैं।

2. लोग सच्ची भक्ति न करके तपस्वी होने का अहंकार रखते हैं, इससे भक्ति की हानि होती है।

3. माया-मोह, तृष्णा, विषय-सुख आदि में पड़कर भी व्यक्ति अनेक साधनों से भक्त होने का दिखावा करते हैं।

4. आत्मज्ञानी न होकर कोरे हठयोग की साधना करते हैं।

5. घट-घटवासी प्रभु को इधर-उधर खोजते हैं।

प्रश्न 5. 'थल-थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिन्दू-मुसलमां।'
इससे कवयित्री ललद्यद ने क्या सन्देश दिया है?

उत्तर–इससे कवयित्री ने सन्देश दिया है कि परमात्मा ही शिव है अर्थात् समस्त सृष्टि का कल्याणकारी है। वह परमात्मा प्रत्येक स्थान पर निवास करता है अर्थात् परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है, सबमें विद्यमान है। इसलिए निराकार परमात्मा को अपनाने में हिन्दू और मुसलमान को भेद-भाव नहीं करना चाहिए। इस तरह कवयित्री ने (1) ज्ञानी बनने का, (2) साम्प्रदायिक भेद-भाव न रखने का, (3) राम-रहीम में अभेद मानने का और (4) ईश्वर की सर्वव्यापक सत्ता मानने का सन्देश दिया है।

रचनाकार का परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवयित्री ललद्यद का जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर–कश्मीरी भाषा की लोकप्रिय कवयित्री ललद्यद का जन्म सन् 1320 के लगभग कश्मीर स्थित पांपोरा गाँव में हुआ था। उनके जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। ललद्यद को लल्लेश्वरी, लला, ललयोगेश्वरी, ललारीफा आदि नामों से भी जाना जाता है। ललद्यद की काव्य-शैली को वाख कहा जाता है। अपने वाखों के जरिये उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भक्ति के ऐसे रास्ते पर चलने पर जोर दिया जिसका जुड़ाव जीवन से हो, इन्होंने धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया तथा प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य बताया। इनका देहांत सन् 1392 के आस-पास माना जाता है।

9. रसखान

कवि-परिचय–कृष्णभक्त कवियों में प्रमुख स्थान रखने वाले कवि रसखान का मूल नाम सैयद इब्राहिम था। ये पठान कुल में सन् 1548 में उत्पन्न हुए थे। रसखान इनका उपनाम था। इन्होंने कृष्णभक्ति में लीन रहकर काव्य-साधना की। गोस्वामी विट्ठलनाथ से दीक्षा लेकर ये वैष्णव-भक्त बन गये थे। कृष्ण-भक्तों की संगति से इनका लौकिक-प्रेम कृष्ण-प्रेम में बदला। इनका निधन सन् 1628 के लगभग हुआ। इनकी तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं—प्रेम वाटिका, सुजान रसखान और राग रत्नाकर। 'रसखान रचनावली' नाम से इनकी रचनाओं को संकलित किया गया है।

पाठ-परिचय–पाठ में रसखान द्वारा रचित चार सवैये संकलित हैं। प्रथम एवं द्वितीय सवैये में कवि ने अपने आराध्य कृष्ण और ब्रजभूमि के प्रति अपना अनुराग एवं समर्पण भाव व्यक्त किया है। तीसरे सवैये में श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य के प्रति गोपियों की मुग्धता का चित्रण किया गया है। अन्तिम सवैये में मुरली की धुन और उनकी मुसकान के अचूक प्रभाव का तथा गोपियों की विवशता का वर्णन हुआ है। इस तरह संकलित सवैयों में कवि रसखान की आराध्य के प्रति अतीव सामीप्य, प्रेमाभक्ति तथा उनकी लीलाओं के प्रति मधुर-भाव की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

सवैये

(1)

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरि छत्र पुरन्दर धारन।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिली कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन॥

कठिन-शब्दार्थ—मानुष = मनुष्य। बसौं = बसेरा करूँ। पसु = पशु। मँझारन = मध्य में। पाहन = पत्थर। धेनु = गाय। गिरि = पर्वत। पुरन्दर = इन्द्र। खग = पक्षी। कालिन्दी = यमुना। कूल = किनारा। डारन = डालियों पर।

भावार्थ—हर दशा में अपने आराध्य श्रीकृष्ण का सामीप्य पाने की इच्छा से कवि रसखान कहते हैं कि यदि मैं अगले जन्म में मनुष्य योनि में जन्म लूँ, तो मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं ब्रज में गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच ही अर्थात् एक ग्वाला बनकर निवास करूँ। यदि मैं पशु बनूँ तो फिर मेरे वश में क्या है? अर्थात् पशु योनि में जन्म लेने पर मेरा कोई वश नहीं है, फिर भी चाहता हूँ कि मैं नन्द की गायों के मध्य में चरने वाला एक पशु अर्थात् उनकी गाय बनूँ। यदि पत्थर बनूँ, तो उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे श्रीकृष्ण ने इन्द्र के कोप से ब्रज की रक्षा करने के लिए छत्र की तरह हाथ में उठाया था या धारण किया था। यदि मैं पक्षी योनि में जन्म लूँ तो मेरी इच्छा है कि मैं यमुना के तट पर स्थित कदम्ब की डालियों पर बसेरा करने वाला पक्षी बनूँ। अर्थात् मैं हर योनि और हर जन्म में अपने आराध्य श्रीकृष्ण और ब्रजभूमि का सामीप्य चाहता हूँ और यही मेरी प्रभु से विनती है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि रसखान अगले जन्म में ब्रज में ही क्यों रहना चाहते हैं?

प्रश्न 2. रसखान अगले जन्म में कौनसा पशु बनना चाहते हैं और क्यों?

प्रश्न 3. प्रस्तुत सवैये से कवि रसखान ने क्या व्यंजना की है?

प्रश्न 4. 'हरि छत्र पुरन्दर धारन' से कवि ने किस कथा की ओर संकेत किया है?

प्रश्न 5. कवि रसखान गोकुल गाँव के ग्वालों के मध्य रहने की अभिलाषा क्यों रखते हैं?

प्रश्न 6. कालिंदी नदी के किनारे किस रूप में कवि रहना चाहते हैं?

उत्तर—1. कवि रसखान आराध्य श्रीकृष्ण और उनकी लीलाभूमि का सामीप्य पाने की उत्कट अभिलाषा रखने के कारण अगले जन्म में ब्रज में ही रहने की इच्छा व्यक्त की।

2. रसखान अगले जन्म में गाय (पशु) बनना चाहते हैं और नन्दजी की गायों के बीच रहना चाहते हैं।

3. प्रस्तुत सवैये से कवि रसखान ने आराध्य श्रीकृष्ण एवं ब्रजभूमि के प्रति अतिशय अनुराग एवं अनन्य भक्ति की व्यंजना की है।

4. इससे कवि ने इन्द्र द्वारा ब्रज पर क्रोध करके मूसलाधार जल-वर्षण करना तथा श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाकर इन्द्र के गर्व को नष्ट करना इत्यादि कथा की ओर संकेत किया गया है।

5. आराध्य कृष्ण का सामीप्य प्राप्त करने तथा उनके सखा बनने का सौभाग्य प्राप्त करने के कारण अभिलाषा रखते हैं।

6. कवि रसखान नदी किनारे के वृक्ष पर पक्षी रूप में रहना चाहते हैं।

(2)

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख नन्द की गाइ चराई बिसारौं।
रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तडाग निहारौं।
कौटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

कठिन-शब्दार्थ—या = इस। लकुटी = लकड़ी, लाठी। अरु = और। कामरिया = कम्बल। तिहूँ पुर = तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी व पाताल। तजि = त्यागना। बिसारौं = भुला दूँ, छोड़ दूँ। तडाग = तालाब। कबौं = कब। निहारौं = देख लूँ। कोटिक = करोड़ों। कलधौत = सोना। धाम = महल, घर। करील = एक कंटीला पौधा, कैर की झाड़ी। वारौं = न्यौछावर कर दूँ।

भावार्थ–श्रीकृष्ण की प्रिय वस्तुओं के प्रति अपना अतिशय अनुराग दर्शाते हुए कवि रसखान कहते हैं कि मैं श्रीकृष्ण की लाठी या छड़ी और कम्बल मिल जाने पर तीनों लोकों का सुख-साम्राज्य छोड़ने को तैयार हूँ अथवा छोड़ दूँ। यदि नन्द की गायें चराने का सौभाग्य मिले, तो मैं आठों सिद्धियों और नौ निधियों के सुख को भी त्याग दूँ, अर्थात् नन्द की गायें चराने का सुख मिलने पर मैं अन्य सब सुख त्याग सकता हूँ। जब मेरे इन नेत्रों को ब्रजभूमि के बाग, तालाब आदि देखने को मिल जाएँ और करील के कुंजों में विचरण करने का सौभाग्य या अवसर मिल जाए, तो मैं उस सुख पर सोने के करोड़ों महलों को न्यौछावर कर सकता हूँ। कवि रसखान यह कहना चाहते हैं कि मुझे अपने आराध्य श्रीकृष्ण से सम्बन्धित सभी वस्तुओं से जो सुख प्राप्त हो सकता है, वह अन्य किसी भी वस्तु से नहीं मिल सकता।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि ने श्रीकृष्ण की लाठी और कम्बल के बदले क्या छोड़ना चाहा है?

प्रश्न 2. 'लकुटी और कामरिया' का क्या महत्त्व है? बताइए।

प्रश्न 3. 'आठहु सिद्धि' से क्या अभिप्राय है? बताइए।

प्रश्न 4. प्रस्तुत सवैये से कवि ने क्या भाव व्यक्त किया है?

प्रश्न 5. कवि रसखान करील के कुंजों पर क्या न्यौछावर करने को उद्यत है? और क्यों?

प्रश्न 6. कवि रसखान अपने नेत्रों द्वारा क्या इच्छा रखते हैं?

उत्तर–1. कवि रसखान ने श्रीकृष्ण की लाठी और कम्बल के बदले तीनों लोकों से प्राप्त होने वाले सुख रूपी साम्राज्य को छोड़ना चाहा है।

2. श्रीकृष्ण जब गायें चराने जाते थे, वे लाठी (लकुटी) और कामरिया (कम्बल) साथ में लेकर जाते थे। ग्वाल रूप में ये दोनों ही वस्तुएँ उन्हें अतिशय प्रिय थीं।

3. आठों सिद्धियों से अभिप्राय है–अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व। इन सिद्धियों से मनचाहा कार्य सध जाता है।

4. यही कि भक्त को भौतिक सुख एवं कीमती वस्तुओं की अपेक्षा अपने आराध्य के सान्निध्य की सर्वाधिक लालसा होती है तथा उनसे पूरी श्रद्धा रखता है।

5. कवि रसखान करील के कुंजों पर सोने के करोड़ों महलों को न्यौछावर करने को उद्यत है।

6. कवि रसखान अपने नेत्रों द्वारा ब्रज के बाग-बगीचे, तालाब निहारना चाहते थे।

(3)

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

कठिन-शब्दार्थ–मोरपखा = मोर के पंखों से बना मुकुट। गुंज = गुंजा, घुंघुची। पितम्बर = पीला वस्त्र, पीताम्बर। लकुटी = छड़ी, लाठी। गोधन = गाएं। भावतो = अच्छा लगता है, प्रिय हो। स्वांग = रूप धारण करना, भेष बनाना। मुरलीधर = कृष्ण। अधरान = अधरों पर।

भावार्थ–श्रीकृष्ण के प्रति प्रेमाभक्ति रखने वाली कोई गोपी अपनी सखी से कहती है कि मैं प्रियतम कृष्ण की रूप-छवि को अपने शरीर पर धारण करना चाहती हूँ। इस कारण मैं अपने सिर पर मोरपंखों का मुकुट धारण करूँगी और गले में घुँघुची की वनमाला पहनूँगी। मैं शरीर पर पीला वस्त्र पहन कर कृष्ण के समान ही हाथ में लाठी लेकर अर्थात् उन्हीं के वेश में ग्वालों के साथ वन-वन में गायों के साथ पीछे फिरूँगी, अर्थात् गायें चराऊँगी। जो-जो बातें उन आनन्द के भण्डार कृष्ण को अच्छी लगती हैं, वे सब मैं करूँगी और तेरे कहने पर कृष्ण की तरह ही वेशभूषा, स्वांग-दिखावा, व्यवहार आदि करूँगी। रसखान कवि के अनुसार उस गोपी ने कहा कि लेकिन मैं मुरलीधर कृष्ण की मुरली को अपने होंठों पर कभी धारण नहीं करूँगी, क्योंकि वह मुरली तो उसके लिए सौतन के समान है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. गोपी श्रीकृष्ण की किस रूप-छवि को धारण करना चाहती थी?

प्रश्न 2. गोपी के ऐसे आग्रह से उसका कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है?

प्रश्न 3. गोपी श्रीकृष्ण की मुरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती थी?

प्रश्न 4. 'स्वांग करौंगी' से क्या आशय है?

प्रश्न 5. श्रीकृष्ण के माथे पर कैसा मुकुट सुशोभित होता है?

प्रश्न 6. कवि रसखान ने किसके माध्यम से श्रीकृष्ण का स्वांग करना बताया है?

उत्तर–1. गोपी अपने सिर पर मोरपंखों का मुकुट, गले में घुंघुची की माला, पीताम्बर ओढ़ना, हाथ में लाठी और गायों के साथ घूमना–यह रूप छवि धारण करना चाहती थी।

2. गोपी के ऐसे आग्रह से उसका श्रीकृष्ण की रूप-छवि के प्रति अनुराग-भाव तथा प्रेमाभक्ति की दृढ़ता का भाव व्यक्त हुआ है।

3. मुरली कृष्ण के अत्यधिक समीप रहती थी। इसलिए ईर्ष्या-भाव के कारण गोपी मुरली को अपने अधरों पर नहीं रखना चाहती थी।

4. स्वांग करने से आशय कृष्ण की भाँति ही वेशभूषा एवं शृंगार करना है तथा रूप-छवि की वैसी ही नकल करना।

5. मोर की पंखों से बना मुकुट श्रीकृष्ण के माथे पर सुशोभित होता है।

6. कवि ने एक गोपिका के माध्यम से श्रीकृष्ण का स्वांग करना बताया है।

(4)

काननि दै अंगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मन्द बजैहै।
मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै।
टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।
माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै॥

कठिन-शब्दार्थ–काननि = कानों में। रहिबो = रहूँगी। बजैहै = बजायेगा। मोहनी = मनमोहक, आकर्षक। तानन = रागों। अटा चढ़ि = अटारी पर चढ़कर। गैहै तौ गैहै = गाना चाहे तो गावे। टेरि = पुकारकर, टेर लगाकर। सिगरे = सब। काल्हि = कल। सम्हारि न जैहै = सँभाली नहीं जाती।

भावार्थ–श्रीकृष्ण की मुरली तथा उनकी मुस्कान पर आसक्त कोई गोपी अपनी सखी से कहती है कि जब श्रीकृष्ण मन्द-मन्द मधुर स्वर में मुरली बजायेंगे, तो मैं अपने कानों में उँगली डाल दूँगी, ताकि मुरली की मधुर तान मुझे अपनी ओर आकर्षित न कर सके। यदि श्रीकृष्ण ऊँची अटारी पर चढ़कर मुरली की मधुर तान छेड़ते हुए गोधन (ब्रज में गाया जाने वाला लोकगीत) गाने लगें, तो गाते रहें, परन्तु मुझ पर उसका कोई असर नहीं हो पायेगा। मैं ब्रज के समस्त लोगों को पुकार-पुकार कर अथवा चिल्लाकर कहना चाहती हूँ कि कल कोई मुझे कितना ही समझा ले, चाहे कोई कुछ भी करे या कहे, परन्तु यदि मैंने श्रीकृष्ण की आकर्षक मुसकान देख ली तो मैं उसके वश में हो जाऊँगी। हाय री माँ! उसके मुख की मुसकान इतनी मादक है कि उसके प्रभाव से बच पाना या सम्भल पाना अत्यन्त कठिन है। मैं उससे प्राप्त सुख को नहीं सँभाल सकूँगी।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. गोपी अपने कानों में अंगुली क्यों देना चाहती है?

प्रश्न 2. 'सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै' कथन से गोपी ने क्या भाव व्यक्त किया है?

प्रश्न 3. 'गोधन गैहै तौ गैहै'–इसमें 'गोधन' का क्या आशय है?

प्रश्न 4. 'टेरि कहौं' कथन से गोपी क्या कहना चाहती है?

प्रश्न 5. श्रीकृष्ण की कौनसी मुद्रा गोपियों से सम्भाली नहीं जाती है?

प्रश्न 6. श्रीकृष्ण के कोई दो उपादान बताइये जिनसे गोपियाँ विवश हो जाती हैं।

उत्तर–1. गोपी श्रीकृष्ण की माधुरी की मधुर तान सुन न सके, उनके वश में न हो जाये, इसलिए वह कानों में अंगुली देना चाहती है।

2. इसमें गोपी की विवशता का भाव व्यक्त हुआ है कि श्रीकृष्ण की मधुर मुसकान से स्वयं को सँभाल पाना अतीव कठिन है।

3. 'गोधन' शब्द गायों के लिए भी प्रयुक्त होता है, परन्तु उक्त प्रसंग में इसका आशय ब्रज-प्रदेश में गोचारण के समय गाया जाने वाले लोकगीत से है।

4. गोपी सबको पुकार कर कहना चाहती है कि अब उसे श्रीकृष्ण की मोहक मुस्कान के वश में होना ही पड़ेगा।

5. श्रीकृष्ण की मुस्कुराती हुई छवि गोपियों से सम्भाली नहीं जाती है।

6. एक तो कृष्ण की मुस्कराती छवि तथा दूसरी मधुर मुरली की धुन, गोपियों को विवश कर देती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?

उत्तर—ब्रजभूमि के प्रति कवि के मन में गहरा प्रेम है। वह इस जन्म में ही नहीं, अगले जन्म में भी ब्रजभूमि में ही रहना चाहता है, चाहे उसे ईश्वर ग्वाला बनाएँ, पक्षी बनाएँ, पशु बनाएँ या फिर पत्थर बनाएँ। वह इन सब रूपों के माध्यम से श्रीकृष्ण और उनकी प्रिय वस्तुओं का ही सामीप्य पाना चाहता है।

प्रश्न 2. कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है?

उत्तर—कवि रसखान के आराध्य श्रीकृष्ण ने ब्रजभूमि के वन, बाग और तालाबों में गोप-गोपियों के साथ अनेक लीलाएँ कीं। इसीलिए कवि उन सभी स्थलों को नजदीक से निहारकर धन्य हो जाना चाहता है।

प्रश्न 3. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्यौछावर करने को क्यों तैयार है?

उत्तर—कवि के आराध्य कृष्ण हैं। इसलिए कवि अपने आराध्य की प्रत्येक प्रिय चीज पर सर्वस्व न्यौछावर करना चाहता है। यही कारण है कि वह श्रीकृष्ण की लाठी और कम्बल के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार है।

प्रश्न 4. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर—सखी ने गोपी से कृष्ण का वैसा रूप धारण करने के लिए आग्रह किया, जिसमें सिर पर मोरपंखों का मुकुट तथा गले में घुँघुची की माला धारण कर रखी हो। शरीर पर पीला वस्त्र हो तथा हाथ में लाठी लेकर ग्वाल-बालों के साथ वन में गायों के पीछे चल रहे हों। अर्थात् रसिक स्वरूप लीलाधारी ग्वाल रूप धारण करने का आग्रह किया था।

प्रश्न 5. आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी श्रीकृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?

उत्तर—मेरे विचार से कवि (रसखान) श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त हैं। वे किसी भी सूरत में अपने आराध्य का सान्निध्य चाहते हैं। इसमें ही उनकी भक्ति-भावना तृप्त होती है। इसलिए वे पशु-पक्षी और पहाड़ बनकर भी अपने आराध्य का सामीप्य पाना चाहते हैं।

प्रश्न 6. चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आपको क्यों विवश पाती हैं?

उत्तर—श्रीकृष्ण की मुरली की तान अतीव मधुर एवं मनमोहक है। गोपियाँ उससे आकृष्ट होकर सब कुछ भूल जाती हैं। परन्तु श्रीकृष्ण के मुखमण्डल की मोहक मुस्कान उन्हें और भी मादक लगती है। इस कारण वे स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख पाती हैं तथा विवश होकर उनकी वशीभूत हो जाती हैं।

प्रश्न 7. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

उत्तर—ब्रजभूमि के करील कुंजों में रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ रासलीलाएँ की थीं, अतएव उनके प्रति अनन्य भक्ति रखने से कवि उन करील-कुंजों पर सैकड़ों स्वर्ण-महलों को न्यौछावर करने की बात कहता है।

(ख) माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर—कोई गोपी कृष्ण की मधुर मोहिनी मुस्कान पर इतनी मुग्ध है कि उससे कृष्ण की मोहकता झेली नहीं जाती। वह पूरी तरह से उस पर समर्पित हो गयी है।

प्रश्न 8. 'कालिन्दी-कूल कदम्ब की डारन' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर—इसमें 'क' वर्ण की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलकार है।

प्रश्न 9. काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

उत्तर–भाव-सौन्दर्य—गोपी का मुरली के प्रति ईर्ष्या भाव है। इस कारण वह कृष्ण की वेशभूषा धारण करती हुई भी मुरली को होंठों से नहीं लगाना चाहती है। इसमें गोपी का सौतिया भाव व्यक्त हुआ है।

शिल्प-सौन्दर्य—'मुरली-मुरलीधर' तथा 'अधरान अधरा न' में शब्द (वर्ण समूह) की सार्थक आवृत्ति होने से यमक अलंकार है। वैसे 'म', 'ध' और 'र' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार भी है। ब्रजभाषा का लालित्य और सवैया छन्द की गति-यति प्रशस्य है।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 10. प्रस्तुत सवैयों में जिस प्रकार ब्रजभूमि के प्रति प्रेम अभिव्यक्त हुआ है, उसी तरह आप अपनी मातृभूमि के प्रति अपने मनोभावों को व्यक्त कीजिए।

उत्तर–मैं अपनी मातृभूमि से अत्यधिक लगाव रखता हूँ। मेरा जन्म जयपुर के आमेर रोड पर बसे पुरानी आबादी क्षेत्र में हुआ। इसी मार्ग पर सुन्दर जल-महल, कनक वृन्दावन, यज्ञ-स्तूप आदि क्षेत्र हैं, जहाँ पर देशी-विदेशी पर्यटक आते रहते हैं। मातृभूमि राजस्थान वीरों की भूमि रही है। यहाँ की संस्कृति एवं परम्पराएँ अपने आप में अनुपम मानी जाती हैं। अतिथियों की सेवा करना यहाँ पवित्र कर्त्तव्य माना जाता है। आमेर की पहाड़ी पर अनेक तरह के हरे-भरे वृक्ष हैं, पहाड़ी औषधियाँ मिलती हैं, नाहरगढ़ तथा आमेर का पुराना किला है, पुराने कई ऐतिहासिक स्थल हैं। यहाँ की जलवायु भले ही शुष्क है, परन्तु स्वास्थ्य के अनुकूल है। इन सभी विशेषताओं के कारण मैं मातृ भूमि से अतिशय प्रेम करता हूँ और इसकी खुशहाली के लिए सदा तत्पर रहता हूँ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. रसखान अगले जन्म में पत्थर बनना चाहते हैं—
(क) गोवर्धन पर्वत की शोभा बढ़ा सकें। (ख) कृष्ण उन्हें अंगुली पर धारण कर सकें।
(ग) कृष्ण का हित साध सकें । (घ) ब्रज की रक्षा कर सकें ।
2. रसखान अपनी आँखों से देखना चाहते हैं—
(क) श्रीकृष्ण की लीलाओं को। (ख) ब्रज प्रदेश के वन, बाग और तालाबों को।
(ग) ग्वाल-बालों की क्रीड़ाओं को। (घ) गोवर्धन पर्वत के सौन्दर्य को।
3. श्रीकृष्ण के सब स्वांग करने को तैयार है—
(क) श्रीदामा (ख) हलधर (ग) एक अनुरागिनी गोपी (घ) राधा।
4. गोपी अपने कानों में अंगुली देना चाहती है—
(क) श्रीकृष्ण के वश में हो जाने के खतरे के कारण।
(ख) श्रीकृष्ण की बाँसुरी की मधुर आवाज न सुनने के कारण।
(ग) श्रीकृष्ण से रूठ जाने के कारण।
(घ) श्रीकृष्ण की मनमोहक बातों के प्रति आकर्षित न हो जाने के कारण।
5. रसखान किन वस्तुओं पर तीनों लोक का राज न्यौछावर करना चाहता है?
(क) मुकुट, बंशी (ख) करधनी, कंगन (ग) लाठी, कंबल (घ) पीताम्बर, मुंजमाल
6. करील के कुंजों पर रसखान किनका त्याग कर सकते हैं?
(क) तीनों लोक (ख) स्वर्ण-धाम (ग) हीरे-जवाहरात (घ) उपर्युक्त सभी
7. श्रीकृष्ण ने किसका गर्व नष्ट करने हेतु गोवर्धन पर्वत अपनी अंगुली पर धारण किया था?
(क) ब्रह्मा (ख) विष्णु (ग) इन्द्र (घ) कुबेर
8. गोपिका ने किस वस्तु को अपने अधरों पर रखने से इंकार किया?
(क) फल (ख) दही (ग) दूध (घ) बंशी
9. रसखान मनुष्य-रूप में कहाँ जन्म लेना चाहते हैं?
(क) ब्रज (ख) मथुरा (ग) हस्तिनापुर (घ) अयोध्या
10. श्रीकृष्ण की कौनसी मुद्रा गोपियों से सम्भाली नहीं जाती है?
(क) मुरली की तान (ख) मुख की मुस्कान
(ग) पीताम्बरी शोभा (घ) बाँकी चितवन

उत्तर-माला–1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग) 6. (ख) 7. (ग) 8. (घ) 9. (क) 10. (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. बसौ ब्रज .... गाँव के ग्वारन।

2. जो कियो .... पुरंदर धारण।
3. सुख .... की गाय चराई विसारौं।
4. रसखानि सो तेरे कहे सब .... करोगी।
5. मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न ....।
6. जबही .... धुनि मंद बजैहे।

उत्तर-माला—1. गोकुल 2. हरिछत्र 3. नंद 4. स्वाँग 5. धरौंगी 6. मुरली।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि रसखान मनुष्य रूप में कहाँ बसना चाहते थे?

उत्तर—कवि रसखान मनुष्य रूप में ब्रज में बसना चाहते थे।

प्रश्न 2. रसखान ने पशु योनि प्राप्त होने पर क्या इच्छा व्यक्त की है?

उत्तर—पशु योनि गाय की मिले, जिससे वह नन्द बाबा की गायों के मध्य चरे।

प्रश्न 3. श्रीकृष्ण ने किसका अभिमान चूर करने हेतु पर्वत धारण किया था?

उत्तर—श्रीकृष्ण ने वर्षा के देवता इन्द्र का अभिमान चूर करने हेतु अपने हाथ की छोटी अंगुली पर पर्वत धारण किया था।

प्रश्न 4. श्रीकृष्ण ने इन्द्र के कोप से बचाने के लिए ब्रजवासियों की किस प्रकार सहायता की?

उत्तर—श्रीकृष्ण ने अतिवृष्टि एवं बाढ़ की स्थिति से बचाते हुए गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली से उठाया जिसके नीचे सभी ब्रजवासियों ने शरण ली।

प्रश्न 5. कवि रसखान नंद की गायों को चराने के लिए किसे भूलने को तैयार है?

उत्तर—कवि रसखान नंद की गायों को चराने हेतु आठों सिद्धि और नौ निधि के सुख को भुलाने को तैयार है।

प्रश्न 6. 'भावतो वोहि मेरो रसखानि सो' गोपिका ने यह किस विषय में कहा है?

उत्तर—गोपिका ने कृष्ण के स्वांग को धरते हुए कहा कि जो कुछ भी उन्हें पसंद है वह वैसा ही स्वांग रखेगी।

प्रश्न 7. गोपिका ने कृष्ण का स्वांग करते हुए किस बात को मानने से इंकार कर दिया?

उत्तर—गोपिका ने श्रीकृष्ण की मुरली को अपने अधरों पर रखने से बिल्कुल मना कर दिया था।

प्रश्न 8. श्रीकृष्ण की कौनसी मुख मुद्रा गोपिका के लिए असहनीय थी?

उत्तर—श्रीकृष्ण के मुख की मादक मुस्कान गोपिका के लिए असहनीय थी।

प्रश्न 9. रसखान ने श्रीकृष्ण के किस रूप का वर्णन किया है?

उत्तर—कवि रसखान ने श्रीकृष्ण के मनोहारी, रंजनकारी, मादकता से पूर्ण रूप का चित्रण किया है।

प्रश्न 10. कवि रसखान की अभिलाषा का अभिप्राय क्या है?

उत्तर—यही कि अपने आराध्य के प्रति समर्पित प्रेम भाव प्रत्येक जन्म एवं प्रत्येक योनि में सदैव रहना चाहिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. "मानुष हौं तो वही रसखानि"—कहते हुए रसखान ने जीवन की सार्थकता किसमें मानी है?

उत्तर—भक्त-कवि रसखान ने मनुष्य-रूप में अपनी अभिलाषा व्यक्त करते हुए बतलाया है कि मनुष्य योनि में जन्म मिलने पर हर हालत में ईश्वर-भक्ति में मन लगाना चाहिए। इसलिए वे हर स्थिति में अपने आराध्य कृष्ण की समीपता चाहते हैं। अत: रसखान ने भक्ति-भावना तथा आराध्य की समीपता प्राप्त करने में ही जीवन की सार्थकता मानी है।

प्रश्न 2. इन्द्र को पुरन्दर क्यों कहा जाता है?

उत्तर—वैदिक विधान के यज्ञों में जिसका हवन करते समय अत्यधिक आह्वान किया जाता है, उसे पुरन्दर कहते हैं, अथवा यज्ञ करते समय आचार्य जिसके नाम को अनेक बार यज्ञ-रक्षार्थ पुकारते हैं, उसे पुरन्दर कहते हैं। यह इन्द्र का एक नाम है। इन्द्र को पुरन्दर इसलिए भी कहा गया है कि वह शत्रुओं के पुरों (नगरों) को शीघ्र नष्ट करने वाला देवराज है।

प्रश्न 3. 'स्वांग' किसे कहते हैं?

उत्तर—दूसरे के रूप, वेश-भूषा तथा हाव-भाव की नकल करना, अर्थात् वैसा ही रूप धारण करना स्वांग कहलाता है। जैसे नाटक में उसके मूल पात्रों के स्वरूप, वेशभूषा, वस्त्र-आभूषण आदि को अपनाया जाता है। खेल-तमाशे में भी अनेक रंग-बिरंगी पोशाकों एवं मुखौटे के द्वारा जो रूप धारण किये जाते हैं, उन्हें स्वांग कहते हैं।

प्रश्न 4. 'काननि दै अंगुरी..................मुसकानि सम्हारी न जैहै'—कथन से मुरली की तान और मुस्कान में से किसे विशिष्ट माना गया है और क्यों?

उत्तर–श्रीकृष्ण की मुरली की तान मधुर मुस्कान में से मधुर मुस्कान को विशिष्ट माना गया है, क्योंकि मुरली की तान के प्रति गोपी का ईर्ष्यात्मक भाव होने के कारण वह उसे सुनने की बजाय अपने कानों में अंगुली डाल लेती है, परन्तु वह मधुर मुस्कान की ओर खिंची चली जाती है। उसके आकर्षण से स्वयं को मुक्त रखने में असमर्थ पाती है।

प्रश्न 5. ब्रजभूमि के प्रति रसखान के प्रेम का वर्णन कीजिए।

उत्तर–रसखान ने ब्रजभूमि के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति अनेक रूपों में की है। अगले जन्म में मनुष्य बनने पर गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच, पशु बनने पर नन्द की गायों के बीच, पत्थर बनने पर गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनकर, पक्षी बनने पर कदंब की डालों के बीच रहने की कामना की है। इस प्रकार वे ब्रज के वन, बाग और तड़ाग को देखने तथा वहीं रहने की तीव्र लालसा रखकर ब्रज के प्रति अगाध प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं।

प्रश्न 6. रसखान श्रीकृष्ण की भूमि में क्या-क्या बनकर जन्म लेना चाहते हैं?

अथवा

कवि रसखान की भावी जन्म में क्या बनने की इच्छा है?

उत्तर–वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होकर रसखान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त बन गये थे। इस कारण वे आने वाले अपने अगले जन्म में भी अपने आराध्य का सामीप्य पाने के लिए अनेक रूपों में ब्रज में रहना चाहते हैं। वे मनुष्य बनकर गोकुल गाँव में बसना चाहते हैं, गाय बनने पर नन्द की गायों के मध्य रहना चाहते हैं, तो पत्थर बनने पर श्रीकृष्ण के हाथों का स्पर्श पाने वाला पत्थर बनना चाहते हैं और पक्षी बनने पर यमुना के तटवर्ती कदम्ब के वृक्षों पर कलरव करना चाहते हैं। अर्थात् वे हर योनि में और हर जन्म में अपने आराध्य का सामीप्य पाना चाहते हैं।

प्रश्न 7. 'टेरि कहौं सिगर ब्रज लोगनि' गोपी पुकार कर ब्रजवासियों से क्या कहना चाहती है?

उत्तर–गोपी पुकार कर ब्रजवासियों से यह कहना चाहती है कि यदि उस कृष्ण की बंशी की मधुर ध्वनि मेरे कानों में पड़ गयी तो फिर चाहे मुझे कोई कितना भी समझाए, मेरी भक्ति किसी भी स्थिति में कम नहीं होगी। मैं अपने आप में कृष्ण की बंशी के प्रति दीवानी हो जाऊँगी।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. रसखान के काव्य-सौन्दर्य का संक्षेप में निरूपण कीजिए।

उत्तर–संकलित काव्यांश में कवि रसखान ने भाव पक्ष की दृष्टि से अपने आराध्य श्रीकृष्ण और उनकी लीला भूमि ब्रज के प्रति अगाध प्रेम व्यक्त किया है। वे अगले जन्म में भी उन्हें चाहे जो योनि मिले, कृष्ण से सम्बन्धित वस्तुओं का ही साथ चाहते हैं। साथ ही कवि ने गोपियों के प्रेम-भाव का हृदयस्पर्शी रूप में वर्णन किया है। गोपी द्वारा कृष्ण रूप धारण करना, बंशी के प्रति रोष व्यक्त करना, उनकी मधुर मुस्कान पर न्यौछावर हो जाना उसकी प्रेम की पवित्रता तथा घनिष्ठता की ओर संकेत करता है। कला पक्ष की दृष्टि से ब्रज भाषा का ललित प्रयोग हुआ है। छन्द सवैया सुगेय, उचित गति-यति से मण्डित है। इस तरह रसखान का काव्य सौन्दर्य भावपक्ष और कलापक्ष दृष्टियों से समृद्ध है।

प्रश्न 2. रसखान द्वारा रचित एवं पाठ में संकलित सवैयों का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर–रसखान मुसलमान होकर भी परम वैष्णव भक्त थे। वे वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित थे। उनके संकलित सवैयों में यह अभिव्यक्त हुआ है कि रसखान हर दशा में श्रीकृष्ण से सम्बन्धित वस्तुओं से लगाव रखते रहे। वे चाहे किसी भी योनि में या किसी भी रूप में जन्म मिले, सदैव बृजभूमि में ही रहना चाहते थे। वे अपने आराध्य के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध थे तथा आठों सिद्धियों एवं नवों निधियों के सुख को नन्द बाबा की गाय चराने में न्यौछावर करना चाहते थे। इस प्रकार प्रस्तुत सवैयों का प्रतिपाद्य आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण भाव तथा रागानुगा प्रेमाभक्ति की सुन्दर व्यंजना करना रहा है।

प्रश्न 3. गोपी श्रीकृष्ण की मुरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती है?

उत्तर–गोपी में स्त्री-सुलभ सौतेया ईर्ष्या दिखाई देती है। श्रीकृष्ण हर समय मुरली को अधरों पर लगाये रहते हैं। वे मुरली वादन के समय गोपियों की ओर नहीं देखते हैं और मुरली वादन में ही लीन रहते हैं। इससे गोपियाँ सोचती हैं कि श्रीकृष्ण उनसे ज्यादा मुरली को चाहते हैं। इस कारण उनके और प्रियतम श्रीकृष्ण के बीच में मुरली बाधक बन गई है जिसके कारण कृष्ण का सरस सामीप्य नहीं मिलता है। गोपी ऐसा सोचकर तथा सौतिया डाह से ग्रस्त होकर मुरली को अपने अधरों पर नहीं रखना चाहती है।

प्रश्न 4. गोपियों एवं ब्रजवासियों को श्रीकृष्ण ने किस प्रकार अपने वश में कर रखा था?

उत्तर–श्रीकृष्ण का रूप-सौन्दर्य अतीव आकर्षक है। वे जब अटारी पर चढ़कर गोधन गीत गाते हैं तथा मुरली की तान छेड़ते हैं, तब उनके गायन-वादन से सभी ब्रजवासी उत्साहित हो जाते हैं। फिर वे अपनी मधुर मुस्कान से जिसे भी

देखते हैं, उस पर जादू का-सा प्रभाव हो जाता है। इस प्रकार गोपियों एवं ब्रजवासियों को श्रीकृष्ण ने अपने रूप-सौन्दर्य, मधुर मुस्कान तथा गायन-वादन से अपने वश में कर रखा था।

प्रश्न 5. श्रीकृष्ण ने किस कारण गोवर्धन पर्वत को उठाया था?

उत्तर–इन्द्र को वर्षा का देवता तथा बादलों का स्वामी बताया जाता है। एक बार ब्रजवासियों ने इन्द्र का पूजन न करके उसकी उपेक्षा की। इससे नाराज होकर इन्द्र ने ब्रज में मूसलाधार वर्षा की, जिससे चारों ओर बाढ़ आ गई। तब अतिवृष्टि और बाढ़ में डूबते-बहते ब्रजवासियों को बचाने के लिए श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर उठा लिया तथा उससे इन्द्र का प्रकोप शान्त किया।

प्रश्न 6. पठित सवैयों के आधार पर रसखान की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–भक्तिकाल में कृष्णभक्त कवियों ने सख्य भाव एवं माधुर्य भाव की भक्ति को प्राथमिकता दी। वल्लभ सम्प्रदाय में रागानुगा प्रेमाभक्ति की प्रधानता मानी जाती है। रसखान वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित थे। अत: उन्होंने भी आराध्य श्रीकृष्ण के प्रति रागानुगा भक्ति प्रकट की है। उनका यह अनुराग न केवल अपने आराध्य के प्रति, अपितु समस्त कृष्ण-भूमि के प्रति व्यक्त हुआ है। इसी से वे प्रेम की तन्मयता, भाव-विह्वलता और प्रेमासक्ति से अपनी भक्ति-भावना प्रकट करते हैं। इस तरह रसखान की माधुर्य भाव की प्रेमाभक्ति मार्मिकता एवं सरसता सहित व्यक्त हुई है।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. गोपी ने अपनी सखी के कहने पर श्रीकृष्ण का स्वांग (स्वरूप) धारण करने का निश्चय क्यों किया?

उत्तर–सखी ने गोपी से प्रियतम श्रीकृष्ण का स्वांग (स्वरूप) धारण करने के लिए इसलिए कहा कि अतिशय प्रेम-अनुराग रखने पर भी श्रीकृष्ण उनकी ओर नहीं देखते थे। ऐसे में वह अपनी ऐसी उपेक्षा नहीं सह पा रही थी। वह श्रीकृष्ण का स्वरूप धारण कर उनके प्रेम में डूब जाना चाहती थी और प्रियतम को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहती थी। उसे वैसा स्वरूप धारण करना अच्छा भी लग रहा था, वह प्रियतम का मनोहारी रूप था। इसी से गोपी ने वैसा स्वांग धारण करने का निश्चय किया।

प्रश्न 2. गोपियों को श्रीकृष्ण का कौन-सा गीत अच्छा लगता है तथा वे ब्रजवासियों से क्या कहती हैं?

उत्तर–गोपियों को श्रीकृष्ण के द्वारा सुन्दर-मधुर तान के साथ गाया जाने वाला गोधन नामक गीत अच्छा लगता है। वह गीत मुरली की धुन पर गाये जाने पर अत्यधिक मोहक लगता है और उससे गोपियाँ कृष्ण के वश में हो जाती हैं। तब गोपियाँ गाँव वालों से कहना चाहती हैं कि कृष्ण की मुरली की मधुर तान और मोहक मुस्कान का ऐसा मोहक जादू है कि उसकी मादकता से बचना कठिन है। ब्रज का हर व्यक्ति कृष्ण की मुरली की मधुर तान एवं गोधन गीत को सुनकर सुध-बुध खो बैठता है।

प्रश्न 3. "या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।" इसमें निहित भाव एवं शिल्प सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–गोपी मानती है कि प्रियतम कृष्ण मुरली के वश में होकर उसकी ओर नहीं निहारते हैं। वह मुरली गोपी को सौत की तरह कष्टदायी लगती है। इसीलिए ईर्ष्या-भाव या सौतिया-डाह से वह मुरली को अपने होंठों पर नहीं लगाना चाहती।

इस पंक्ति में 'मुरली-मुरलीधर' तथा 'अधरान धरी अधरा न' में शब्दगत सार्थक-निरर्थक आवृत्ति होने से यमक अलंकार का शिल्प-सौन्दर्य दर्शनीय है। वर्णावृत्ति से इसमें अनुप्रास अलंकार भी है एवं श्रृंगार रस की प्रधानता है।

प्रश्न 4. 'काननि दै अंगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि....।' इत्यादि कथन के द्वारा गोपी अपनी सहेली से क्या कहती है?

उत्तर–कोई गोपी अपनी सहेली से कहती है कि जब श्रीकृष्ण मन्द-मधुर तान में मुरली बजायेंगे, तो मैं अपने कानों में अंगुली रख दूँगी ताकि मुरली का मधुर-मादक स्वर मुझ पर अपना जादू न चला सके। जब से श्रीकृष्ण ने मुरली की मधुर तान छेड़ी है और गोधन गीत गाया है, तब से सारे ब्रजवासी मानो उनके भक्त हो गये हैं तथा उनके मुख पर केवल वंशी की चर्चा छायी रहती है। यदि मेरे कानों में मुरली की मधुर तान पड़ गई तो मेरा मन विवश हो जायेगा और मैं प्रियतम कृष्ण के मुख की मोहिनी मुस्कान से स्वयं को संभाल नहीं पाऊँगी।

रचनाकार का परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि रसखान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर–मुगल राजवंश में उत्पन्न कवि रसखान का मूल नाम सैयद इब्राहिम था। जन्म से मुसलमान होते हुए भी वे पूर्णत: वैष्णव थे एवं जीवनपर्यन्त उन्होंने कृष्ण-भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया। वे केवल कृष्ण-भक्ति की ओर ही उन्मुख नहीं हुए वरन् कृष्ण-भूमि के प्रति भी उनकी अगाध श्रद्धा दिखलाई पड़ती है। उनकी रचनाओं में ब्रज एवं वहाँ के लोगों के प्रति विशेष अनुराग की भावना है। उनके दोहों का विषय कृष्ण की रूप-माधुरी, ब्रज-महिमा एवं राधा-कृष्ण की प्रेमलीलाएँ हैं। रसखान की दो प्रमुख रचनाओं का वर्णन मिलता है—सुजान रसखान एवं प्रेमवाटिका। प्रेमवाटिका में प्रेम-विषयक दोहे हैं तथा सुजान रसखान में राधा-कृष्ण सम्बन्धित दोहे एवं कवित्त है। इनकी भाषा शैली मधुर, सरस एवं ब्रजभाषा युक्त है। कवित्त एवं दोहों की मधुरता ने वास्तव में इनके नाम को सार्थक किया है, रसखान वास्तव में ही रस की खान है।

10. माखनलाल चतुर्वेदी

कवि-परिचय–राष्ट्रीय चेतना के प्रखर कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई गाँव में सन् 1889 में हुआ। मात्र सोलह वर्ष की अवस्था में शिक्षक बने। बाद में अध्यापन कार्य त्यागकर 'प्रभा' पत्रिका का सम्पादन किया। सन् 1968 में इनका देहान्त हो गया। इन्होंने पर्याप्त मात्रा में काव्य रचना की। इन्हें पद्‌मभूषण एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पाठ-परिचय–पाठ्यक्रम में माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित अतीव प्रसिद्ध कविता 'कैदी और कोकिला' संकलित है। यह कविता भारतीय स्वाधीनता सेनानियों के साथ जेल में किये गये दुर्व्यवहारों और यातनाओं का मार्मिक साक्ष्य प्रस्तुत करती है। जेल के एकाकी एवं उदासी भरे वातावरण में रात्रि में जब कोयल अपने मन का दु:ख एवं असन्तोष व्यक्त कर स्वाधीनता सेनानियों की मुक्ति का गीत सुनाती है, तो लोगों में अंग्रेजों की अधीनता से मुक्त होने की भावना प्रबल बन जाती है। ऐसे में कवि कोयल को लक्ष्य कर अपनी भावना का प्रकाशन करता है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

कैदी और कोकिला

(1)

क्या गाती हो?
क्यों रह-रह जाती हो?
कोकिल बोलो तो!
क्या लाती हो?
सन्देशा किसका है?
कोकिल बोलो तो!

कठिन-शब्दार्थ–रह-रह जाती = चुप हो जाती। कोकिल = कोयल।

भावार्थ–स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर कवि को कारागार में जाना पड़ा। तब एक रात उसे वहाँ पर कोयल की कूक सुनाई पड़ती है। वह कहता है कि तुम रात में ही क्यों गाती हो? तुम फिर रह-रह अर्थात् कुछ क्षणों के बाद चुप क्यों हो जाती हो? हे कोयल, बोलो। तुम क्रान्तिकारी देशभक्तों को किसका सन्देश लाकर देती हो? स्वाधीनता संग्राम के कैदियों को तुम क्या सन्देश देती हो? हे कोयल, तुम स्पष्टतया बोलो।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कोयल अर्द्धरात्रि में क्यों गाने लगती है?
प्रश्न 2. कवि कहाँ रहकर कोयल से प्रश्न करता है?
प्रश्न 3. 'कैदी और कोकिला' कविता में कोकिला को किसका प्रतीक बताया गया है?
प्रश्न 4. काव्य पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 5. कवि कोकिला से कौनसे दो प्रश्न करता है?
प्रश्न 6. कवि ने कोकिला के चुप होने का क्या आशय लगाया?

उत्तर–1. कोयल देखती है कि स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाले भारतीयों को कैद में डालकर अंग्रेज सरकार अत्याचार एवं दमन का व्यवहार करती है, उन्हें कठोर यातनाएँ देती है। अतः यह देखकर कोयल दुःखी होकर संवेदना रूप में गाने लगती है।

2. कवि कारागार में रहते हुए कोयल से प्रश्न करता है। वह अपनी कोठरी में बैठा हुआ कोयल का गीत सुनकर जिज्ञासा भी प्रकट करता है।

3. प्रस्तुत कविता में कोकिला को स्वतन्त्रतापूर्वक जीवनयापन करने वाले कैदियों के प्रति सद्‌भावना रखने वाले लोगों का प्रतीक बताया गया है।

4. स्वतन्त्रता आन्दोलन काल में कारागार में बन्द कवि अपनी कोठरी में कोयल की कूक सुनकर जिज्ञासा भाव से उससे पूछने लगता है कि कोयल तुम कूक कर चुप हो जाती हो और फिर कूकने लगती हो। इस तरह से किसका सन्देश सुनाती हो?

5. कवि ने कोकिला से दो प्रश्न किये कि क्या गाती हो? और क्यों चुप रह जाती हो? अर्थात् इस तरह गाने और चुप होने के पीछे क्या रहस्य है?

6. कवि ने कोकिला के चुप होने का आशय स्वतंत्रता सेनानियों के लिए लाये गए किसी सन्देश से लगाया।

(2)

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,
जीने को नहीं देते पेट-भर खाना,
मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना।
जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,
शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली,
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली?

कठिन-शब्दार्थ–बटमारों = लुटेरों। डेरे में = रहने के स्थान पर। तम = अँधेरा। हिमकर = चन्द्रमा। कालिमामयी = अंधकार से व्याप्त। आली = सखी।

भावार्थ–कवि अपने और जेल में बन्द अन्य कैदियों के सम्बन्ध में कोयल से कहता है कि हम क्रान्तिकारी देशभक्त इस जेल की ऊँची काली दीवारों के घेरे में कैद हैं। वस्तुतः यह स्थान तो उनका निवास है जो डाकू, चोर, लुटेरे जैसे अपराधी हैं। जेल में भूखे पेट सोना पड़ता है क्योंकि यहाँ पेट-भर भोजन नहीं मिलता है। हमें न तो जीने देते हैं और न मरने देते हैं। हम तो यहाँ अंधकार में तड़पते रहते हैं। अंग्रेज सरकार का हम पर रात-दिन कड़ा पहरा रहता है। अंग्रेज शासन का प्रभाव गहरे अन्धकार के समान है। यहाँ रहते हुए प्रतीत होता है कि यह अंग्रेज शासन के अत्याचारों रूपी अँधेरा हम सब पर व्याप्त है। वातावरण का अंधेरा धीरे-धीरे खत्म हो जाता है लेकिन अंग्रेजों द्वारा फैलाया गया अंधकार खत्म ही नहीं हो रहा है। चन्द्रमा भी हमारी दुर्दशा देखकर निराश हो मन्द पड़ चला है, जिसके कारण रात और भी अंधेरी प्रतीत होने लगी है। अब हम निराश होकर काली रात में जी रहे हैं। ऐसे में हे काली कोयल, तुम क्यों जाग गई हो? क्या तुम्हें भी हमारे दुःखों को देखकर नींद नहीं आ रही है?

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि कोयल से क्या प्रश्न करता है?
प्रश्न 2. कवि को कारागार में किनके साथ रखा गया था?
प्रश्न 3. जेल में कवि के साथ कैसा व्यवहार किया गया?
प्रश्न 4. 'हिमकर निराश कर चला' का आशय क्या है?
प्रश्न 5. 'शासन है या तम का प्रभाव गहरा है' से कवि का क्या आशय है?
प्रश्न 6. अंग्रेजों द्वारा दी जा रही यातनाएँ किस प्रकार की हैं?

उत्तर–1. कवि कोयल से प्रश्न करता है कि असमय अर्थात् रात में जागकर क्यों करुण क्रन्दन कर रही है? इसका क्या कारण है?

2. कवि राजनीतिक कैदी था, परन्तु उसे चोर, डाकू आदि भयंकर अपराधी कैदियों के साथ रखा गया था।

3. जेल में कवि को अन्य कैदियों के साथ ही कोठरी में कैद किया गया। उनको भरपेट भोजन नहीं दिया गया और उनके साथ कठोरता का व्यवहार किया गया।

4. उस समय रात्रि का घना अंधकार फैला था। जेल में स्वतंत्रता-सेनानियों को अनेक कष्ट दिये जा रहे थे। उन अत्याचारों को देखकर अब चन्द्रमा भी निराश होकर चला गया था–निस्तेज हो गया था। इस प्रकार वहाँ का वातावरण निराशामय हो गया था।

5. कवि का आशय है कि चारों तरफ अंधकार, निराशा, वेदना व्याप्त है। यह दु:ख-दर्दों का अंधकार अंग्रेजों के कारण है या कुदरत द्वारा प्रदत्त काली रात है।

6. अंग्रेज स्वतंत्रता सेनानियों को भरपेट भोजन नहीं देते थे; चोर, डकैत व कुख्यात गुण्डों के साथ उनको रखा जा रहा था। न तो उन्हें जीने दे रहे थे और न ही उन्हें मार रहे थे।

(3)

क्यों हूक पड़ी?
वेदना बोझ वाली-सी;
कोकिल बोलो तो!
क्या लूटा?
मृदुल वैभव की
रखवाली-सी
कोकिल बोलो तो!
क्या हुई बावली?
अर्द्धरात्रि को चीखी,
कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की
ज्वालाएँ हैं दीखीं?
कोकिल बोलो तो!

कठिन-शब्दार्थ–हूक पड़ी = दर्द के स्वर में रो पड़ी। मृदुल = मधुर। वैभव = धन-दौलत। बावली = पागल। दावानल = जंगल में अपने आप फैलने वाली आग। ज्वालाएँ = आग की लपटें।

भावार्थ–कवि माखनलाल चतुर्वेदी कोयल से पूछता है कि हे कोयल, इस अँधेरी रात में जब सारा संसार सो रहा है, तब तुम किसकी भारी वेदना के बोझ से दर्द के स्वर में रो पड़ी हो? तुम मधुर वैभव की रखवाली करने वाली हो, ऐसे में विलाप करती-सी कूकी हो तो बताओ कि असल में उस खजाने से क्या लुट गया है? जो तुम आधी रात में चीख रही हो, क्या पागल गई हो? जो काली अंधेरी रात्रि में इतनी जोर से चीख रही हो या तुमने दावानल की तेज लपटें उठती हुई देखी हैं। क्या इसी कारण से तुम चीख रही हो? हे कोयल, तुम अपने चीखने का कारण बताओ।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. 'वेदना बोझ वाली-सी' से क्या अभिप्राय है?
प्रश्न 2. 'क्या हुई बावली'–कवि ने ऐसा क्यों कहा?
प्रश्न 3. 'दावानल की ज्वालाएँ' का आशय बताइये।
प्रश्न 4. 'मृदुल वैभव की रखवाली-सी' कवि ने किसे और क्यों कहा है?
प्रश्न 5. कवि को कोयल की कूक, हूक-सी क्यों जान पड़ती है?
प्रश्न 6. अर्द्धरात्रि में कोयल के कूकने पर कवि ने उसे क्या कहा?

उत्तर–1. उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था, परतन्त्रता की अनेक यन्त्रणाओं से देशवासी परेशान थे। देश की परतन्त्रता का वह दु:ख भारी बोझ के समक्ष कष्टदायी था। और कोयल की कूक उस वेदना को व्यक्त कर रही थी।

2. कोयल आधी रात में जोर से कूक रही थी। वह देश की परतन्त्रता एवं जेल में बन्द स्वाधीनता सेनानियों की कष्टमय जिन्दगी को देखकर काफी दु:खी थी। इस असह्य दु:ख-वेदना के कारण वह अर्द्धरात्रि में बावली-सी चीखने लगी थी।

3. जंगल में अपने आप सुलगने वाली भयंकर आग को दावानल कहते हैं। प्रस्तुत कविता में कैदियों को दी जाने वाली भयानक यातनाओं को कवि ने 'दावानल की ज्वालाएँ' कहा है।

4. कोयल को कवि ने 'मृदुल वैभव की रखवाली-सी' कहा है, क्योंकि वह अपने कोमल कंठ से माधुर्य और सरसता की रक्षा करती है और इस संसार के लिए मृदुल भावनाएँ बचाए रखती है।

5. सामान्यतया कोयल सदैव मधुर व सरस आवाज में कूकती है लेकिन कवि की पीड़ाओं के मध्य आधी रात में कोयल का कूकना उसकी पीड़ा व वेदना समान प्रतीत हो रहा था।

6. अर्द्धरात्रि में कवि तथा उनके साथियों की पीड़ा को व्यक्त करती हुई कोयल का जोर से कूकना उसे बावली या पागल बना रहा था।

(4)

क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश-राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूँ? जीवन की तान,
गिट्टी पर अंगुलियों ने लिखे गान!
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जुआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।
दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली,
इसलिए रात में गजब ढा रही आली?
इस शान्त समय में,
अंधकार को बेध, रो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!
चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज
इस भाँति बो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!

कठिन-शब्दार्थ—जंजीरों का गहना = हथकड़ियाँ। चर्रक चूँ = कोल्हू के लोहे के भारी पहियों के चलने से उत्पन्न आवाज। मोट = चरस, चमड़े का एक बड़ा थैला-सा जिससे कुएँ से पानी निकाला जाता है। जुआ = हल या गाड़ी खींचते समय बैलों के कन्धों पर रखी जाने वाली लकड़ी। ब्रिटिश अकड़ = अंग्रेजों का अहंकार। गजब ढा रही = आश्चर्यजनक कार्य कर रही। विद्रोह-बीज = स्वतन्त्रता-संग्राम के लिए ब्रिटिश-विरोधी प्रखर भावना।

भावार्थ—स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने से कवि तथा अन्य क्रान्तिकारी देशभक्तों को अंग्रेज सरकार ने जेलों में डाल दिया था और उन्हें अनेक कठोर यातनाएँ दी गई थीं। फिर भी वे साहसपूर्वक सब कुछ सहन करते रहे। इसी सन्दर्भ में कवि कहता है कि हे कोयल, ये हम स्वाधीनता सेनानियों के लिए हथकड़ियाँ नहीं हैं, हमें जेल में कोल्हू खींचना पड़ता है, उसकी चर्रक-चूँ की आवाज को हम जीवन का संगीत मानते हैं। पत्थरों को तोड़कर हम गिट्टियाँ बनाते हैं, उन गिट्टियों पर मानो हमारी अंगुलियाँ गीत लिखती हैं। जेल में मैं पेट पर जुआ बाँधकर मोट या चरस को खींचता हूँ और कुएँ से पानी निकालता हूँ। कुएँ से पानी निकालने से हम ब्रिटिश-राज के अहंकार के कुएँ को खाली कर रहे हैं। इस तरह अब अंग्रेजों की अकड़ धीरे-धीरे कम कर रहे हें। दिन में दु:ख एवं करुणा का अहसास कम होता है। जैसे-जैसे रात होती है, पीड़ा बढ़ती जाती है। इसलिए सखी कोयल तुम रात में रुलाकर गजब कर रही हो। इस शान्त, नीरव, पीड़ादायक अंधेरी रात को बेधकर तुम रो क्यों रही हो? हे कोयल तुम बताओ कि चुपचाप अपनी करुण मधुर आवाज में क्यों हम सबके मन में विद्रोह के बीज बो रही है अर्थात् सभी स्वतंत्रता सेनानी दिन-भर की पीड़ा से थककर जब रात को तुम्हारी करुण आवाज सुनते हैं तब सभी का हृदय विद्रोह करने को तैयार हो जाता है। कवि कोयल से पूछता है कि हे कोयल, तुम यह सब प्रयत्न क्यों कर रही हो बताओ तो, तुम क्यों चुपचाप स्वाधीनता-संघर्ष की गुपचुप तैयारी में संलग्न हो रही हो।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने हथकड़ियों को ब्रिटिश-राज का गहना किस कारण बताया है?

प्रश्न 2. ब्रिटिश अकड़ का कुआँ कौन खाली कर रहे थे?

प्रश्न 3. कोयल रात में गजब क्यों ढा रही है? बताइए।

प्रश्न 4. रात में विद्रोह के बीज कौन बो रही है?

प्रश्न 5. कवि को जीवन की तान किसमें सुनाई पड़ती है?

प्रश्न 6. कवि ने करुणा का जन्म होना कब का बताया है?

उत्तर—1. स्वतंत्रता सेनानियों को देशप्रेम के कारण ब्रिटिश सरकार से जेल व पहनने को हथकड़ियाँ मिलीं जिसे देशभक्तों ने सहर्ष स्वीकार किया इसलिए गहना बताया गया।

2. क्रान्तिकारी देशभक्त एवं स्वतन्त्रता-सेनानी जो कारागार में बन्द थे, वे ब्रिटिश शासन का प्रबल विरोध कर उसकी अकड़ का कुआँ खाली कर रहे थे।

3. दिन में तो कैदियों को अनेक यातनाएँ दी जाती थीं, कठोर श्रम का काम कराया जाता था। इसलिए रात में वह कवि के दु:खभरे हृदय पर अपनी करुण-मधुर आवाज से मलहम लगाने आई है। कवि को उसके सहानुभूति भरे स्वर से संघर्ष करने की बराबर प्रेरणा मिल रही है। इसी दृष्टि से कोयल रात में आश्चर्यजनक काम करने लगी है।

4. कोयल रात में करुणा कूक के द्वारा स्वाधीनता-सेनानियों के हृदय में चुपचाप विद्रोह के बीज बो रही है।

5. दिन में स्वतंत्रता सेनानियों से कोल्हू का चरक चलवाया जाता था। कठोर परिश्रम व घोर यातनाओं के बीच कोल्हू की चर्र-चूं आवाज कवि को जीवन का मधुर गान प्रतीत होता है।

6. जब अर्द्धरात्रि में सारा वातावरण नीरव और शान्त हो जाता है तब व्यथित के हृदय में नींद की जगह करुणा उत्पन्न होती है इसलिए कवि ने करुणा का जन्म रात्रि के मध्य में बताया है।

(5)

काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली,
काली लहर कल्पना काली,
मेरी काल-कोठरी काली,
टोपी काली, कमली काली,
मेरी लौह-शृंखला काली,
पहरे की हुंकृति की ब्याली,
तिस पर है गाली, ए आली!
इस काले संकट-सागर पर
मरने की, मदमाती!
कोकिल बोलो तो!
अपने चमकीले गीतों को
क्योंकर हो तैराती!
कोकिल बोलो तो!

कठिन-शब्दार्थ–रजनी = रात। शासन = अंग्रेज राजा। करनी = करतूतें। काल-कोठरी = गम्भीर अपराधी के लिए बनी जेल की अंधेरी कोठरी। कमली = कम्बल। लौह-शृंखला = लोहे की साँकल। हुंकृति = हुंकार। व्याली = साँपिन। संकट-सागर = भयंकर मुसीबत। मदमाती = मस्ती से भरी हुई।

भावार्थ–कैदी रूप में कवि कोयल से कहता है कि इस समय सब तरह अंधकार की कालिमा छायी हुई है, तुम काली हो, रात भी काली है और अंग्रेजों की करतूतें भी काली हैं। देश में निराशा रूपी काली लहर फैली हुई है और मन में काली (बुरी) कल्पनाएँ उठ रही हैं। हमारी टोपी और कम्बल का रंग भी काला है। हमारी हथकड़ियाँ या बेड़ियाँ भी काले रंग की हैं। जेल में पहरेदारों की हुंकार भी साँपिन की तरह काली-जहरीली है। उस पर ये लोग बात-बात पर गालियाँ देते हैं।

कवि कहता है कि हे कोयल, इस समय अपार संकट सामने खड़ा है, इस मुश्किल की घड़ी में तुम मरने को तैयार क्यों दिखाई देती हो? तुम यहाँ पर हम क्रान्तिकारियों के मस्ती भरे गीत क्यों सुनती हो? तुम भी तो मस्ती से भरी हुई दिखाई देती हो। तुम चमकीले अर्थात् आशा और उत्साह से भरपूर गीतों को क्यों इस कारागार के पास तैरा रही हो? रात्रि में कारागार के समीप क्यों घूम-फिरकर ओज-तेज का संचार कर रही हो? हे कोयल, तुम कुछ स्पष्ट कहो, कुछ तो बोलो।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. पद्यांश में 'काली' शब्द का बार-बार प्रयोग क्यों किया गया है?

प्रश्न 2. 'काले संकट-सागर' से कवि का आशय क्या है?

प्रश्न 3. जेल के पहरेदारों का व्यवहार कैसा है?

प्रश्न 4. 'चमकीले गीतों' से क्या अभिप्राय है? बताइए।

प्रश्न 5. 'टोपी काली कमली काली' इसमें 'कमली' से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 6. कवि कोयल से क्या जानना चाहता है?

उत्तर–1. काला रंग निराशा, वेदना, दु:ख-पीड़ा एवं व्यथा को व्यक्त करता है। परतंत्र भारत में सर्वत्र दु:ख एवं पीड़ा का वातावरण है, इसलिए कवि ने 'काली' शब्द का प्रयोग बार-बार किया है।

2. इससे कवि का आशय यह है कि जेल के अन्दर अंग्रेज अफसर स्वाधीनता- सेनानियों एवं क्रान्तिकारियों के साथ अमानवीय बर्ताव करते हैं, वे उन्हें कठोर यातनाएँ देते हैं। जेल से बाहर भी आम जनता पर नाना प्रकार के अत्याचार एवं दमन करके उनका जीवन नारकीय बना दिया है। इससे भयानक संकट का काल आ गया है।

3. कैदियों पर पहरेदारी में नियुक्त अंग्रेज अमानवीय व्यवहार करते हैं। वे कैदियों को अनेक तरह से यातनाएँ देते हैं तथा बात-बात पर गाली भी देते रहते हैं।

4. कारागार में अँधेरा व्याप्त है, वहाँ पर कैद स्वाधीनता-सेनानियों के मन में भी कुछ अनिश्चय की स्थिति है। ऐसे में कोयल की कूक से उनमें कुछ आशा और उत्साह का संचार हो रहा है। इसी विशेषता से कोयल की कूक को चमकीले गीत कहा गया है।

5. इसमें 'कमली' से आशय 'कम्बल' से है जो कैदियों को जेलखाने में दिया जाता है।

6. कवि कोयल से जानना चाहता है कि देश में जब सर्वत्र कालिमा का अर्थात् निराशा व वेदना का वातावरण है तो फिर तुम क्यों हम सबके मन में उत्साह का संचार करना चाहती हो?

(6)

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली!
तेरा नभ-नभ में संचार
मेरा दस फुट का संसार!
तेरे गीत कहावें वाह,
रोना भी मुझे गुनाह!
देख विषमता तेरी-मेरी,
बजा रही तिस पर रणभेरी!
इस हुंकृति पर,
अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ?
कोकिल बोलो तो!
मोहन के व्रत पर,
प्राणों का आसव किसमें भर दूँ!
कोकिल बोलो तो!

कठिन-शब्दार्थ–नसीब = भाग्य। नभ = आकाश। कहावें = कहलाते हैं। वाह = प्रशंसात्मक। गुनाह = अपराध। विषमता = असमानता। रणभेरी = युद्ध का नगाड़ा। हुंकृति = हुंकार, गर्जना। कृति = रचना। मोहन = मोहनदास कर्मचन्द गाँधी। आसव = तरल पदार्थ, रस, मदिरा।

भावार्थ–अपनी तुलना कोयल से करता हुआ कवि कहता है कि हे कोयल, तुझे तो रहने-बैठने के लिए हरी-भरी टहनी मिली है, पर मेरे भाग्य में जेल की यह काल कोठरी है, तू असीम आकाश में घूमती-फिरती है, परन्तु मेरी दुनिया दस फुट के कमरे में अर्थात् जेल की छोटी कोठरी में सिमट गई है। तेरे मधुर गीत (कूक) को सुनकर लोग प्रशंसा में वाह-वाह कहते हैं और मेरे लिए तो रोना भी अपराध या पाप है। हम दोनों में इतनी विषमता है, यह देखकर भी तुम युद्ध का नगाड़ा बजा रही हो, अर्थात् हमें स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए संघर्षरत रहने की प्रेरणा दे रही हो, यह आश्चर्यजनक है।

हे कोयल, तुम्हारी इस हुंकार को सुनकर मैं पूछना चाहता हूँ कि अपनी रचना से मैं और क्या कर सकता हूँ? कोयल तुम मुझे बताओ। मोहनदास कर्मचन्द गाँधी अर्थात् महात्मा गाँधी ने देश को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए जो दृढ़ संकल्प लिया उसे पूरा करने के लिए मैं अपने प्राणों का आसव किसमें भर दूँ, अर्थात् अपनी प्राणशक्ति किसे दे दूँ? हे कोयल, तुम कुछ तो बताओ आखिर तुम कया करवाना चाहती हो?

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. 'मेरा दस फुट का संसार' से क्या आशय है?

प्रश्न 2. 'रोना भी है मुझे गुनाह!' इससे कवि की किस दशा का पता चलता है?

प्रश्न 3. कवि किस हुंकृति की बात कर रहा है?

प्रश्न 4. 'प्राणों का आसव' से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 5. कवि ने स्वयं की और कोयल की किस विषमता पर प्रकाश डाला है?

प्रश्न 6. कवि ने किसके व्रत पर अपने प्राणों का आसव देने की बात कही है?

उत्तर–1. कवि जेल की जिस काल-कोठरी में रह रहा है, उसका क्षेत्रफल दस फुट का है और कवि को उसी में सिमटकर रहना पड़ता है। 'मेरा दस फुट का संसार' का यही आशय है।

2. इसमें कवि कहना चाहते हैं कि हम कैदियों के लिए तो सामान्य हँसना-रोना भी गुनाह माना जाता है। वैसे भी रोना कमजोरी की निशानी माना जाता है और स्वतंत्रता-सेनानियों की कमजोरी देशहित के लिए हानिकारक होगी।

3. कवि कोयल की उस हुंकृति की बात कर रहा है, जिसके द्वारा वह जेल में बन्द स्वतन्त्रता-सेनानियों तथा पराधीन भारतीयों में क्रान्ति की ज्वाला धधका देना चाहती है।

4. इसका आशय है प्राणशक्ति। देश को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए सभी क्रान्तिकारियों, स्वाधीनता-सेनानियों तथा देशवासियों में प्रखर भावना का प्रसार हो, प्राणशक्ति का संचार हो तथा प्राणों के उत्सर्ग की प्रबल भावना बनी रहे।

5. कवि ने कोयल के स्वतंत्र भाव से गीत गाने पर वाह होने पर तथा परतंत्रता पर रोना भी गुनाह माने जाने पर विषमता की बात कही है। यहाँ स्वतंत्रता एवं परतंत्रता की विषमता भारी है।

6. कवि ने मोहनदास कर्मचंद गाँधी के स्वतंत्रता प्राप्ति के व्रत पर अपनी प्राणशक्ति देने की बात कही है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर–कोयल की करुण कूक से कवि सोचता है कि कोयल हमारी यातनाओं को देखकर रो रही है या फिर अंग्रेज शासन के खिलाफ क्रान्ति की लौ जगाये रखने का संदेश दे रही है।

प्रश्न 2. कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की सम्भावना बताई?

उत्तर–कवि ने कोकिल के बोलने के निम्नलिखित कारणों की सम्भावना व्यक्त की है—

(1) कोयल कैदियों के मन में स्वतन्त्रता की भावना जगाने आयी है।

(2) कवि को मिल रही यातनाओं के प्रति सहानुभूति जताने के लिए आयी है।

(3) वह अपनी कूक के माध्यम से स्वतन्त्रता-सेनानियों के लिए किसी का सन्देश दे रही है।

(4) उसने सारे देश में क्रान्ति रूपी दावानल की ज्वालाएँ देख ली हैं।

(5) वह रणभेरी बजाने तथा विद्रोह के बीज बोने के लिए आह्वान कर रही है।

(6) सघन अंधकार में वह अपनी वेदना के बोझ से दबने कूकने लगी है।

प्रश्न 3. किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों?

उत्तर–तत्कालीन ब्रिटिश शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है, क्योंकि वे क्रान्तिकारियों को जेल की काली दीवारों के भीतर कैद कर देते थे, वे उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ देते थे और उनके साथ कोल्हू के बैल की तरह दुर्व्यवहार करते थे।

प्रश्न 4. कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यन्त्रणाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–पराधीन भारत की जेलों में कैदियों को अमानवीय यातनाएँ दी जाती थीं—(1) वहाँ कैदियों को अत्यन्त छोटी कोठरियों में रखा जाता था। (2) उन्हें भरपेट भोजन नहीं दिया जाता था। (3) उनसे कठोर परिश्रम कराया जाता था। इस दृष्टि से कोल्हू खींचना, गिट्टियाँ तोड़ना, पानी चरस से खींचना तथा अन्य कठोर कार्य करवाये जाते थे। (4) बात-बात पर जेल के अधिकारी व पहरेदार गालियाँ देते थे, मारते-पीटते थे। (5) राजनैतिक कैदियों को चोरों, लुटेरों एवं बटमारों के साथ रखा जाता था। (6) कैदियों को अपनी बात कहने का अवसर नहीं दिया जाता था। (7) उनके स्वास्थ्य एवं सुख का कोई ध्यान नहीं रखा जाता था।

प्रश्न 5. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) मृदुल वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!

उत्तर–यह संसार दु:ख से भरा हुआ है। यहाँ कष्ट ही कष्ट है। यदि कहीं मृदुलता और सरलता दिखलायी पड़ती है तो वह केवल कोयल के मधुर स्वर में ही है। इसलिए कोयल ही मृदुलता की रखवाली करने वाली है। अत: कवि उससे जानना चाहता है कि यहाँ कारावास में अपनी मधुर करुण कूक के माध्यम से वह उससे क्या कहना चाहती है।

(ख) हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।

उत्तर–अंग्रेजों के काल में स्वतंत्रता सेनानियों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार होता था। जेल में कैदियों से कठोर श्रम कराते थे। उस समय कैदी के पेट पर जुआ बाँधकर कुएँ से चरस से पानी खिंचवाया जाता था। उनके साथ पशुओं जैसा क्रूर व्यवहार किया जाता था। फिर भी वह हार नहीं माना था। कवि का मानना है कि ऐसा काम करने से अंग्रेजों की अकड़ खत्म हो जायेगी और वे यहाँ से चले जायेंगे, अर्थात् ब्रिटिश शासन का अन्त हो जायेगा।

प्रश्न 6. अर्द्धरात्रि में कोयल की चीख से कवि को क्या अंदेशा है?

उत्तर–कवि को अंदेशा है कि कोयल कैदियों पर होने वाले अत्याचारों को देखकर द्रवित हो उठी है जिसके कारण आधी रात में उसके गले से वेदनायुक्त चीख निकल पड़ी है।

प्रश्न 7. कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है?

उत्तर–कवि को कोयल से ईर्ष्या इसलिए हो रही है—(1) कोयल का बसेरा हरी-भरी डाली पर है, पर कवि काल-कोठरी में कैद है। (2) कोयल विस्तृत आकाश में निर्बाध उड़ सकती है, जबकि कवि छोटी-सी कोठरी में सिमटकर बैठा है। (3) कोयल की तान को सुनकर लोग प्रशंसा में 'वाह' कह उठते हैं, जबकि कवि को रोना भी मना है।

प्रश्न 8. कवि के स्मृति-पटल पर कोयल के गीतों की कौन-सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें वह अब नष्ट करने पर तुली है?

उत्तर–कवि की स्मृति में यह अंकित है कि—

(1) कोयल प्रातःकाल सूर्योदय होने पर अपना मधुर गीत सुनाती थी।

(2) विन्ध्याचल के वनों में झरनों के आसपास वह गीत सुनाती थी।

(3) तेज हवाओं के झोंकों के मध्य उसने कोयल का मधुर गान सुना था।

कवि की स्मृति में अंकित ये गीत घायल के घावों पर मलहम लगाने का काम कर सकते हैं, क्रान्तिकारियों में जोश भर सकते हैं, परन्तु अंग्रेजों के अत्याचारों से क्षुब्ध होने से वह सारी मधुर स्मृतियों को नष्ट करना चाहती है।

प्रश्न 9. हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?

उत्तर–अपराधियों को नियन्त्रित रखने के लिए हथकड़ियाँ पहनाई जाती हैं, परन्तु स्वतन्त्रता-सेनानियों एवं क्रान्तिकारी देशभक्तों के लिए हथकड़ियाँ गहने या अलंकरण से कम नहीं हैं। इससे उनके महान् त्याग, बलिदान एवं देशप्रेम की व्यंजना होती है। उनका सिर इनके कारण गर्व से ऊँचा उठता है और वे सहर्ष हथकड़ियाँ पहनने को तैयार रहते हैं। इससे उनमें जोश और उत्साह भर जाता है। इसी कारण हथकड़ियों को गहना कहा गया है।

प्रश्न 10. 'काली तू……ऐ आली।' इन पंक्तियों में 'काली' शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।

उत्तर–उक्त पंक्तियों में काली शब्द की आवृत्ति विभिन्न प्रसंगों में और विभिन्न अर्थों में हुई है। इसलिए यहाँ शब्दगत यमक अलंकार का चमत्कार है। यहाँ 'काली' शब्द के विभिन्न अर्थ देखिए—

जैसे काला रंग, काले कारनामे, काली काल कोठरी, काली लहर, काली कल्पना, काली कम्बल आदि।

प्रश्न 11. काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

(क) किस दावानल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?

उत्तर–भाव-सौन्दर्य–स्वतन्त्रता-संग्राम की आग दावानल की भाँति सारे देश में फैल चुकी थी। कवि को लगता है कि कोयल ने भी इस क्रान्ति की आग को देख लिया है।

शिल्प-सौन्दर्य–दावानल की ज्वालाएँ में रूपक अलंकार है। वैसे दावानल को स्वतन्त्रता हेतु क्रान्ति का प्रतीक बताया गया है। इसमें मानवीकरण अलंकार एवं प्रश्न-शैली है। शब्दावली तत्सम-प्रधान है।

(ख) तेरे गीत कहावें वाह, रोना भी है मुझे गुनाह।
देख विषमता तेरी-मेरी, बजा रही तिस पर रणभेरी!

उत्तर–भाव-सौन्दर्य–कोयल का जीवन स्वतन्त्र एवं निर्बाध है, जबकि कवि का जीवन यातनापूर्ण है। कोयल अपने मधुर गीतों से सभी को प्रिय लगती है, जबकि कवि का रोना भी अपराध है। कोयल की कूक अतीव प्रेरणादायी है।

शिल्प-सौन्दर्य–वर्णावृत्ति से अनुप्रास अलंकार है। खड़ी बोली एवं उर्दू का प्रयोग तथा मानवीकरण की योजना प्रशस्य है।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 12. कवि जेल के आसपास अन्य पक्षियों का चहकना भी सुनता होगा, लेकिन उसने कोकिला की ही बात क्यों की है?

उत्तर–यह निश्चित है कि कवि ने अन्य पक्षियों के चहकने के स्वर को भी सुना होगा लेकिन उसने कोयल की ही बात इसलिए की क्योंकि कोयल का मधुर स्वर उसे प्रभावित कर गया होगा और उसकी कोमल भावनाओं को छू गया होगा और फिर आधी रात में कूकना सुनकर कवि ने कोयल को ही चुना।

प्रश्न 13. आपके विचार में स्वतन्त्रता-सेनानियों और अपराधियों के साथ एक-सा व्यवहार क्यों किया जाता होगा?

उत्तर–ब्रिटिश शासन स्वतन्त्रता-सेनानियों को अधिक परेशान करने के लिए ऐसा करता था। वह स्वतन्त्रता-सेनानियों को नीचा दिखाना चाहता था, उन पर राजद्रोह जैसा गम्भीर अपराध लगाकर मानसिक तौर पर उन्हें कमजोर करना चाहता था। वे भारतीयों की आजादी की माँग को घोर अपराध मानते थे। इस कारण वे कठोर व्यवहार करते थे और उन्हें मानसिक स्तर पर तोड़ने की दृष्टि से उन्हें चोरों, अपराधियों आदि के साथ ही कारावास में रखते थे।

पाठेतर सक्रियता–

● पराधीन भारत की कौन-कौनसी जेलें मशहूर थीं, उनमें स्वतन्त्रता-सेनानियों को किस-किस तरह की यातनाएँ दी जाती थीं? इस बारे में जानकारी प्राप्त कर जेलों की सूची एवं स्वतन्त्रता-सेनानियों के नामों को राष्ट्रीय पर्व पर भित्तिपत्रिका के रूप में प्रदर्शित करें।

उत्तर–पराधीन भारत की प्रसिद्ध जेलें—

(1) पोरबन्दर की जेल, (2) पूना की यरवदा जेल, (3) इलाहाबाद (नैनी) की जेल, (4) कोलकाता जेल, (5) अजमेर जेल, (6) देहरादून जेल, (7) पटना जेल इत्यादि। इन जेलों में कोल्हू चलाना, गिट्टियाँ तोड़ना, चक्की एवं रहँट चलाना, चरस से पानी खींचना तथा सरकारी कार्यालयों के लिए फर्नीचर, दरियाँ आदि बनाने का काम यातनापूर्वक कराया जाता था। (शेष छात्र स्वयं करें)।

● स्वतन्त्र भारत की जेलों में अपराधियों को सुधारकर हृदय-परिवर्तन के लिए प्रेरित किया जाता है। पता लगाइए कि इस दिशा में कौन-कौनसे कार्यक्रम चल रहे हैं?

उत्तर–स्वतन्त्र भारत की जेलों में अपराधियों को सुधारने के लिए अनेक कार्यक्रम चल रहे हैं, जिनमें कुछ इस प्रकार हैं—

(1) जयपुर आदि शहरों में खुली जेल बनाई गई हैं।

(2) जेलों में नशा-मुक्ति केन्द्र संचालित हो रहे हैं।

(3) अपराधियों के हृदय-परिवर्तन के लिए समय-समय पर जेलों में धार्मिक प्रवचनों का आयोजन किया जा रहा है।

(4) जेलों में लघु कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है ताकि भविष्य में वे स्वावलम्बी बन सकें।

(5) जेलों में शिक्षा-सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। कम्प्यूटर प्रशिक्षण के कार्यक्रम चल रहे हैं।

(6) अपराधियों के साथ मानवीय व्यवहार किया जा रहा है और उन्हें आत्म-सुधार का अवसर दिया जा रहा है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. 'कैदी और कोकिला' कविता के माध्यम से कवि ने वर्णन किया है—
   (क) भारत की पराधीनता का
   (ख) पराधीन भारत की जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों को दिए जाने वाले कष्टों का
   (ग) कारावास के कैदियों की स्थिति का (घ) जेलों में होने वाली असुविधाओं का
2. कोयल गाने लगी है—
   (क) बसंत की मौज में आकर (ख) खिले हुए फूलों को देखकर
   (ग) अंग्रेज सरकार के अत्याचारों से क्षुब्ध होकर
   (घ) रात्रिकालीन मादक वातावरण को देखकर

3. कवि ने कोयल की आवाज को 'हूक' कहा है क्योंकि—
(क) आवाज तीखी होने के कारण (ख) दु:ख और वेदना की अनुभूति होने के कारण
(ग) आवाज में भय व्याप्त होने के कारण (घ) आवाज में मधुरता होने के कारण
4. कवि को कारावास में सहने पड़े थे—
(क) दु:ख (ख) कष्ट (ग) भूख (घ) अमानवीय यातनाएँ
5. कवि ने ब्रिटिश राज्य का गहना कहा है—
(क) पराधीनता को (ख) अन्याय-अत्याचार को (ग) हथकड़ियों को (घ) उसकी अमानवीयता को
6. कोयल किन्हें अपना संदेश सुनाना चाहती है?
(क) कवि (ख) कैदी (ग) स्वतंत्रता सेनानी (घ) उपर्युक्त सभी
7. 'हिमकर निराश कर चला' में 'हिमकर' से आशय है—
(क) सूर्य (ख) चन्द्रमा (ग) कोयल (घ) तारा
8. कवि ने कोयल को अर्द्धरात्रि में चीखने पर क्या बताया?
(क) मधुमती (ख) बुद्धिमती (ग) बावली (घ) सौभाग्यशाली
9. कवि किसके व्रत पर अपने प्राण न्यौछावर करने को कहते हैं?
(क) नेहरू (ख) गाँधी (ग) पटेल (घ) शास्त्री
10. 'दावानल' से तात्पर्य है—
(क) आग (ख) पेट की आग (ग) जंगल की आग (घ) समुद्र की आग
11. मेरी लौह-शृंखला काली, में लौह-शृंखला से तात्पर्य है—
(क) लोहे की कड़ी (ख) बेड़ी (ग) हथकड़ी (घ) जंजीर

उत्तर-माला—1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग) 6. (घ) 7. (ख) 8. (ग) 9. (ख) 10. (ग) 11. (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. क्यों हूक पड़ी? .... बोझ वाली-सी।
2. शासन है, या तम का प्रभाव .... है।
3. खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का .... ।
4. टोपी काली .... काली।
5. मोहन के व्रत पर प्राणों का .... किसमें भर दूँ।
6. शासन की .... भी काली।

उत्तर-माला—1. वेदना 2. गहरा 3. कुँआ 4. कमली 5. आसव 6. करनी।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि कोयल से क्या जानना चाहता है?
उत्तर—कवि कोयल से आधी रात को कूकने का कारण जानना चाहता है।
प्रश्न 2. अंग्रेजी शासन कैदियों को कैसी यातनाएँ देता है?
उत्तर—अंग्रेजी शासन कैदियों को भूखा पेट रखते, रहट चलवाते, मोट खिंचवाते थे।
प्रश्न 3. कवि ने कोयल को किसकी रखवाली करने वाली बताया?
उत्तर—कवि ने कोयल को मृदुल वैभव की रखवाली करने वाली बताया।
प्रश्न 4. कोयल के कूकने का समय क्या था?
उत्तर—कोयल अर्द्धरात्रि को कूक रही थी।
प्रश्न 5. कवि ने काले रंग को किसका प्रतीक बताया है?
उत्तर—कवि ने काले रंग को अंधकार, निराशा, वेदना व पीड़ा का प्रतीक बताया।
प्रश्न 6. कवि कोयल से तुलना किस विशेष सन्दर्भ में कर रहे थे?
उत्तर—कवि ने कोयल की स्वतंत्रता एवं स्वयं की परतंत्रता के सन्दर्भ में तुलना की।
प्रश्न 7. 'मेरा दस फुट का संसार' से कवि का क्या आशय है?
उत्तर—दस फुट के कमरे को, जिसमें कवि बन्दी थे, से तात्पर्य है।

प्रश्न 8. करुणा का सघनतम रूप कब स्पष्ट दिखलाई पड़ता है?

उत्तर—अर्द्धरात्रि में जब सारा संसार सो जाता है तब पीड़ित की करुणा सघन रूप में व्याप्त होती है।

प्रश्न 9. कवि किसके व्रत पर अपने प्राणों का त्याग करने को आतुर थे?

उत्तर—कवि मोहनदास कर्मचंद गाँधी के व्रत पर प्राणों का त्याग करने को आतुर थे।

प्रश्न 10. कवि को जेल की कोठरी में किसके साथ रखे जाने पर दुःख है?

उत्तर—कवि को डाकू, चोरों व बटमारों के साथ रखे जाने पर दुःख है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि द्वारा जेल में कोयल से ही बात करने से क्या व्यंजित हुआ है?

उत्तर—कवि स्वाधीनता-सेनानी है और अंग्रेजों ने उसे जेल में डाला है। वहाँ पर अंग्रेज अधिकारी उसके साथ अनेक तरह से दुर्व्यवहार और अत्याचार करते हैं और अनेक यातनाएँ देते हैं। कोयल आधी रात में क्रान्तिकारी बन्दियों को कुछ सन्देश देना चाहती है। इसी बात का आभास होने से कवि कोयल से बात करना चाहता है।

प्रश्न 2. कविता के आधार पर बताइए कि कवि को कोयल का आधी रात में कूकने का क्या कारण प्रतीत होता है?

उत्तर—कवि को कोयल के आधी रात में कूकने पर प्रतीत होता है कि हम स्वतंत्रता सेनानियों के लिए कोई संदेशा लायी है या फिर हम सब में स्वतंत्रता के लिए जोश व साहस भरना चाहती है।

प्रश्न 3. 'दावानल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?' इसमें 'दावानल' का प्रतीकार्थ क्या है?

उत्तर—इसमें दावानल का प्रतीकार्थ देश में सर्वत्र तीव्र गति से फैलने वाली क्रान्ति है। वन में आग की लपटों की तरह देश में क्रान्ति की लपटें फैलने लगी हैं, ब्रिटिश-शासन को विनष्ट करने लगी हैं।

प्रश्न 4. कैदी के रूप में कवि को जेल में क्या-क्या काम करना पड़ता है?

उत्तर—कैदी के रूप में कवि को जेल में निम्नलिखित काम करना पड़ता है—

(1) उससे कोल्हू पर काम लिया जाता है।

(2) पेट पर जुआ बाँधकर मोट से पानी खिंचवाया जाता है।

(3) पत्थरों को तोड़कर गिट्टियाँ बनवाई जाती हैं।

प्रश्न 5. कवि और कोयल की स्थिति में क्या विषमता है?

उत्तर—कवि और कोयल की स्थिति में यह विषमता है कि कोयल का जीवन स्वतन्त्र है, वह हरी-भरी डालियों पर बैठती है तथा अनन्त आकाश में विचरण करती है। इसके विपरीत कवि कारावास की एक छोटी-सी कोठरी में कैद है। उसे वहाँ घूमने-फिरने और बोलने तक की भी आजादी नहीं मिली हुई है। वह अपने मन की वेदना भी किसी से व्यक्त नहीं कर पाता है।

प्रश्न 6. कोयल अर्द्धरात्रि को क्यों चीख उठती है?

उत्तर—कोयल के मन में अंग्रेजी सरकार के प्रति आक्रोश है। वह अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहारों को देखकर पूरे देश को ही एक कारागार के रूप में देखती है। इसलिए अर्द्धरात्रि को चीख उठती है।

प्रश्न 7. कवि को कोयल का स्वर शंखनाद जैसा प्रतीत क्यों होता है?

उत्तर—कारागार में बन्द कैदी के रूप में कवि को कोयल का मधुर स्वर उसे संघर्ष की प्रेरणा देने वाला प्रतीत होता है और वह उसे देश को जगाने वाली काली माँ सी लगती है इसलिए उसका स्वर शंखनाद सा प्रतीत होता है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने कोयल की बोली कब और कहाँ सुनी? उसे सुनकर कवि को कैसा लगा? पठित कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर—कवि जब जेल में कैद था, तब अंधेरी रात में कवि ने कोयल की बोली सुनी। जेल की चारदीवारी में कवि को कोयल का स्वर बहुत ही करुणाजनक तथा उत्साहवर्धक लगा। उसे लगा कि कोई हमदर्द उसे अंधेरी रात में प्रोत्साहन देने आया है। वह निराशा रूपी अंधकार में भी आशा का संचार करना चाहती है और अपनी प्रेरणाभरी कूक से कवि के मन में उत्साह जगा रही है।

प्रश्न 2. 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर लिखिए कि कोकिला अंधेरे में किसे बेध रही थी और शासन की काली करनी क्या थी?

उत्तर—प्रस्तुत कविता में व्यंजित हुआ है कि कोकिला अंधेरे में कवि के मन की निराशा को बेध रही थी, वह उसके मन में उत्साह जगाना चाहती थी। उस समय अंग्रेज शासकों के काले कारनामों से जेल में बंद देशभक्त निराश थे। अंग्रेज शासक जनता पर अत्याचार कर रहे थे, दासता एवं शोषण-उत्पीड़न की जंजीरों से उन्हें प्रताड़ित कर रहे थे। शासन की यही काली करनी थी जिससे भारतीयों का उत्पीड़न हो रहा था।

प्रश्न 3. 'गिट्टी पर गान' लिखने से बन्दी कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर—कवि कहता है कि 'गिट्टी पर अंगुलियों ने लिखे गान!' इससे कवि का तात्पर्य है कि जेल में देशभक्त कैदियों से कठोर-से-कठोर काम करवाये जाते हैं, उनसे पत्थर की गिट्टी तोड़ने का काम कराया जाता है। इतने कष्ट मिलने पर भी कवि ने तथा देशभक्त कवियों ने हार नहीं मानी। कवि ने वहाँ पर देश-प्रेम के गीत लिखे, विदेशी शासकों की अकड़ कम करने का प्रयास किया। इस तरह कवि ने अपने गीतों को 'गिट्टी पर लिखे गये गान' बताया है।

प्रश्न 4. कोकिल को 'काली' की संज्ञा देना कहाँ तक उचित है?

उत्तर—कवि ने कोयल को 'काली' की संज्ञा दी है। काली युद्धोन्माद एवं शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाली देवी मानी जाती है। वैसे कोयल का रंग स्वाभाविक रूप से काला होता है। वह अंधेरी रात या काली रात में कवि के पास प्रेरणादायक स्वर बिखेरने आयी है। कोकिल का स्वर आजादी का प्रतीक है, जेल में बन्द देशभक्तों के मन में मुक्त होने की इच्छा का प्रतीक भी है। उसके स्वर में करुणा भी है तो उत्साह भी है। इस तरह वह कवि के साथ ही अन्य देशभक्तों को देश की मुक्ति हेतु संघर्ष करने तथा आन्दोलन छेड़ने की प्रेरणा देने वाली है। इसी आशय से कोकिल की 'काली' संज्ञा देना सर्वथा उचित है।

प्रश्न 5. "अपने चमकीले गीतों को/क्यों कर हो तैराती।" इससे कवि का क्या आशय है?

उत्तर—इससे कवि का आशय है कि कोयल कवि तथा देशभक्त कैदियों के मन में संघर्ष करने तथा देशोद्धार करने का जोश जगाना चाहती है। वह चमकीले गीतों से कवि के मन को कमजोर नहीं, शक्तिशाली बनाना चाहती है, उनमें उत्साह का संचार करना चाहती है। इसीलिए कोकिल अपना स्वर बिखेरती है।

प्रश्न 6. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य के भावगत सौन्दर्य पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय काव्यधारा के क्रान्तिकारी एवं ओजस्वी कवि माने जाते हैं। इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता तथा देश-प्रेम का स्वर प्रमुखता से सुनाई देता है, जिसमें देशोद्धार हेतु स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़ने पर सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना भरी हुई है। आजादी के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना इनके जीवन और काव्य दोनों पर परिलक्षित होती है।

प्रश्न 7. 'कैदी और कोकिला' कविता में निहित सन्देश को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—'कैदी और कोकिला' कविता में कवि ने कोयल के माध्यम से अंग्रेज सरकार के काले कारनामे तथा कैदियों को दी जाने वाली यातनाओं से परिचित कराते हुए, देशवासियों को स्वाभिमान से जीने और अंग्रेज शासन के विरुद्ध क्रान्ति का सन्देश दिया है। साथ ही कवि ने अपने जीवन की स्थिति को प्रस्तुत कर जनमानस के समक्ष स्वतन्त्र और परतन्त्र जीवन के अन्तर का बोध कराया है।

निबन्धात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर जेल में बन्द कैदी की दशा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—जेल की ऊँची दीवारों के अन्दर बनी कालकोठरी में कैदी बन्द रहते थे। उन पर हथकड़ियाँ लगी रहती थीं। उन्हें भरपेट भोजन नहीं दिया जाता था और न किसी से मिलने दिया जाता था। जेल के अन्दर उनसे कठोर परिश्रम के काम कराये जाते थे, जैसे पत्थर की गिट्टियाँ तोड़ना, कोल्हू चलाना, चरसे से पानी निकालना आदि। जेल के पहरेदारों का व्यवहार उनके साथ अतीव कठोर रहता था। इस प्रकार कैदी रूप में कवि की अत्यन्त दयनीय दशा थी।

प्रश्न 2. 'रोना भी है मुझे गुनाह!' इस कथन से किन स्थितियों की व्यंजना हुई है?

उत्तर—इस कथन से यह व्यंजना हुई है कि स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान देशभक्त बन्दियों को ब्रिटिश सरकार अनेक यातनाएँ देती थी। उनके साथ क्रूर व्यवहार किया जाता था। बात-बात पर उन्हें गाली दी जाती थी और मारा-पीटा जाता था। उन्हें राजनीतिक बन्दी होने पर भी कोई सहूलियत नहीं दी जाती थी और उन्हें चोर-लुटेरों एवं हत्यारोपियों के साथ रखा जाता था। इस प्रकार का अमानवीय व्यवहार होने पर भी वे अपनी व्यथा-कथा किसी से नहीं कह सकते थे। इसी से कवि ने रोना भी गुनाह बताया है।

प्रश्न 3. 'कैदी और कोकिला' कविता में कवि ने अन्त में कोयल के समक्ष क्या भाव व्यंजित किया है?

उत्तर—कवि ने कोयल के समक्ष यह भाव व्यंजित किया है कि वह कारागार में बन्द होने से शासन का विरोध नहीं कर पा रहा है। परन्तु वह कोयल से रणभेरी बजाकर देशवासियों को आजादी की लड़ाई के लिए उत्साहित करने को

कहता है। वह कोयल की ओजस्वी हुँकार से जोशीली कविताएँ लिख सकता है और जेल में बन्द स्वतन्त्रता-सेनानियों में जोश भर सकता है। वह अपनी रचनाओं में महात्मा गाँधी के संकल्प को पूरा करने का आत्मबल मुखरित कर सकता है। कवि ने देशप्रेम के अथाह जोश भाव को व्यक्त किया है।

प्रश्न 4. कवि आजादी के गीत गाने वाली कोयल के माध्यम से क्या कहना चाहता है?

उत्तर–कवि ने कोयल को स्वाधीनता-संग्राम में ओजस्वी स्वर भरने वाली बताया है। उस समय सारे भारत में पराधीनता से मुक्ति पाने की प्रबल भावना जाग गई थी। एक प्रकार से मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी भी ऐसा प्रयास कर रहे थे। इसी आशय से कवि कोयल के स्वर से क्रान्ति की ज्वाला फैलने का सन्देश सुनकर कहना चाहता है कि ऐसी ज्वाला जो दावानल का रूप ले तथा ब्रिटिश शासन का विनाश कर दे। स्वाधीनता सेनानियों के त्याग, बलिदान एवं संघर्ष को देखकर कोयल अंग्रेजों के प्रति विद्रोह के बीज बो रही है, उसका यह कार्य अतीव प्रेरणादायी है। इसलिए कोयल अपने चमकीले स्वर को सब ओर फैलाती रहे। इसलिए कोयल के माध्यम से देश में जोश एवं साहस भरना चाहता है।

प्रश्न 5. 'कैदी और कोकिला' कविता का प्रतिपाद्य या मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'कैदी और कोकिला' कविता में कवि ने स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में जेल में बन्द रहने का कटु अनुभव व्यक्त किया है। उस समय ब्रिटिश शासन का आचरण अत्यन्त क्रूर था। जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। फिर भी सब और स्वतन्त्रता-संग्राम का जोश फैल रहा था। ऐसे विदेशी शासन के प्रति आक्रोश व्यक्त कर कवि ने यह भाव व्यक्त किया है कि यह मधुर गीत गाने का समय नहीं, बल्कि मुक्ति के गीत गाने का समय है। कोयल जो कि मधुर गीत गाने के लिए जानी जाती है वह भी अपने करुण-हूक से दिलों में जोश भरने का कार्य कर रही है। इसलिए देशवासियों को देशहित में त्याग-बलिदान के लिए तैयार रहने का अवसर नहीं छोड़ना चाहिए।

रचनाकार का परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर–माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्यप्रदेश के बाबई गाँव में सन् 1889 में हुआ। वे देशभक्त एवं प्रखर पत्रकार थे। उन्होंने प्रभा, कर्मवीर और प्रताप पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इनकी रचनाएँ राष्ट्रीय भावना से युक्त हैं। ये स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान कई बार जेल गए। इन्होंने भक्ति, प्रेम और प्रकृति संबंधी कविताएँ भी लिखी हैं। हिम किरीटनी, साहित्य देवता, हिम तरंगिनी आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इन्हें पदमभूषण एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है। 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम से भी इन्हें जाना जाता है। सन् 1968 में इनका देहांत हो गया।

11. सुमित्रानन्दन पन्त

कवि-परिचय–प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म उत्तराखण्ड के बागेश्वर जिले में कौसानी ग्राम में सन् 1900 में हुआ। इनका मूल नाम गुसाईं दत्त था। वाराणसी और इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त करते समय ये स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ गये। इन्होंने घर पर ही अंग्रेजी, बांग्ला, संस्कृत आदि का गम्भीर अध्ययन किया। इन्होंने पद्य और गद्य दोनों विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। इनके दशाधिक काव्य-संग्रह, नाटक, उपन्यास एवं कहानियाँ प्रकाशित हैं। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ये छायावादी काव्य के प्रमुख स्तम्भ थे। इनका निधन सन् 1977 में हुआ।

पाठ-परिचय–पाठ में पन्तजी की 'ग्राम-श्री' कविता संकलित है। इस कविता में भारतीय गाँव की प्राकृतिक सुषमा और समृद्धि का मनोहारी वर्णन किया गया है। गाँव में दूर तक खेतों में फसलें लहराती रहती हैं, पेड़-पौधों की डालियाँ फल-फूलों से लदी रहती हैं। नदी-तट पर रंगीन रेत तथा जल-क्रीड़ा करते हुए पक्षी अतीव मनोरम लगते हैं। प्रस्तुत कविता में इन्हीं दृश्यों का चित्रण किया गया है। यह ग्राम्य-प्रकृति पर आधारित कविता है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

ग्राम-श्री

(1)

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,

लिपटीं जिसमें रवि की किरणें
चाँदी की-सी उजली जाली!
तिनकों के हरे-हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भूतल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक!

कठिन-शब्दार्थ—उजली = चमकदार। हरित = हरा। रुधिर = खून। श्यामल-भू = हरी-भरी धरती। चिर निर्मल = एकदम स्वच्छ। फलक = नीला विस्तार।

भावार्थ—गाँव की प्राकृतिक सुषमा एवं समृद्धि का मनोहारी वर्णन करते हुए कवि पन्त कहते हैं कि गाँव के खेतों में दूर-दूर तक मखमल की तरह की कोमल हरियाली फैली हुई है। उस हरियाली पर सूर्य की किरणें चाँदी की जाली की तरह उज्ज्वल एवं चमकीली शोभायमान हो रही हैं। हरी-हरी घास और तिनकों पर किरणें पड़ने से उनकी पत्तियाँ ऐसी चमक रही हैं मानो उनमें हरे रंग का खून बहता हुआ झलक रहा हो। हरियाली से शोभायमान धरती पर नीला स्वच्छ आकाश एक पट या फलक की तरह झुका हुआ है। आशय यह है कि गाँव का प्राकृतिक परिवेश अतीव मनोरम एवं समृद्ध है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. 'ग्राम-श्री' कविता के रचयिता का नाम बताइए।
प्रश्न 2. हरे तिनकों पर सूर्य की किरणों का क्या प्रभाव पड़ता है?
प्रश्न 3. चाँदी की-सी उजली जाली किसे कहा गया है और क्यों?
प्रश्न 4. खेतों में फैली हरियाली की उपमा किससे दी गई है?
प्रश्न 5. प्रस्तुत कविता में किसके सौन्दर्य का वर्णन हुआ है?
प्रश्न 6. 'श्यामल' से क्या आशय है?

उत्तर—1. 'ग्राम-श्री' कविता के रचयिता का नाम सुमित्रानन्दन पन्त है।

2. हरे तिनकों पर जब प्रातःकालीन सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो वे इस तरह चमकने लगते हैं जैसे तिनकों के तनों से हरे रंग का रुधिर बह रहा हो जिससे उनमें सजीवता आ गई हो।

3. चाँदी की-सी उजली जाली प्रातःकालीन सूर्य की चमकती हुई किरणों के लिए कहा गया है, क्योंकि हिलते-डुलते पेड़-पौधों पर तथा घास पर धूप चमकने लगती है, किरणों का आड़ा-तिरछा पड़ना चाँदी की उजली जाली के समान लगता है।

4. खेतों में फैली हरियाली की उपमा कोमल मखमल से दी गई है। मखमल अतीव कोमल एवं चमकदार कीमती कपड़ा होता है। हरियाली भी प्रातःकाल अतीव आकर्षक एवं कोमल दिखाई देती है।

5. प्रस्तुत कविता में प्रकृति के सौन्दर्यमय रूप का वर्णन हुआ है।

6. 'श्यामल' से तात्पर्य हरी-भरी अर्थात् हरी-भरी सम्पदा से युक्त पृथ्वी से है।

(2)

रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूँ में बाली,
अरहर सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली।
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली पीली,
लो, हरित धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली!

कठिन-शब्दार्थ—रोमांचित = अतीव प्रसन्न। वसुधा = धरती। बाली = फसलों की बालियाँ। सनई = एक पौधा, सण का पौधा। किंकिणियाँ = करधनी। तैलाक्त = तेल की-सी। भीनी = हल्की। धरा = पृथ्वी। तीसी = नीले फूल वाला पौधा, अलसी।

भावार्थ–कवि गाँव की प्राकृतिक सुन्दरता एवं समृद्धि का वर्णन करते हुए कहता है कि जौ और गेहूँ में बालियाँ आ गई हैं, इन बालियों पर तीखे तुस के नोक होते हैं। उन्हें देखकर कवि कल्पना करता है कि इससे मानो धरती को रोमांच हो गया है। खेतों में अरहर और सनई फलियाँ पक कर सोने के समान पीली हो गई हैं और उनकी फलियाँ करधनियों की भाँति बजने लगी हैं। खेतों में चारों ओर सरसों के पीले-पीले फूल खिला रहे हैं, जिनकी भीनी तैलीय गन्ध वातावरण में फैल रही है। इस, हरी-भरी धरती की सुन्दरता निहारने के लिए अलसी के नीले फूल भी धरती से झाँकने लगे हैं और वे नीलम की कलियों जैसे प्रतीत हो रहे हैं।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. वसुधा कैसे रोमांचित हो रही है?

प्रश्न 2. 'अरहर सनई की सोने की किंकिणियाँ'—इसका आशय क्या है?

प्रश्न 3. 'तीसी की कली' के लिए कवि ने क्या कल्पना की है?

प्रश्न 4. सरसों की फसल की शोभा कैसी बतायी गई है?

प्रश्न 5. जौ और गेहूँ की बालियों के पकने पर पृथ्वी कैसी प्रतीत होती है?

प्रश्न 6. हरित धरा से कौन झाँक रहा है और क्यों?

उत्तर–1. धरती पर खड़ी जौ-गेहूँ की फसल पर बालियाँ आ गई हैं। वे बालियाँ तीखी नोक वाली होती हैं जो काँटों की तरह चुभती हैं। अर्थात् पैने तुस वाली बालियों के रूप में धरती के रोंगटे खड़े हो रहे हैं।

2. अरहर और सनई की फसल पक गई है, सोने के समान पीली फलियाँ हवा में हिलने-डुलने पर मधुर आवाज कर रही हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि मानो धरती ने अपनी कमर में घुँघरूदार करधनी बाँध ली है।

3. तीसी अर्थात् अलसी की कलियाँ नीली होती हैं। हरी-भरी धरती में अलसी की नीली कली नीलम नामक रत्न की तरह सुन्दर दिखाई दे रही है।

4. सरसों की फसल पीले-पीले फूलों के गुच्छों के रूप में दिखाई देती है। उन फूलों से जो गन्ध निकल रही है, वह भीनी तैलीय गन्ध है और वह वातावरण को स्निग्ध बना रही है।

5. जौ और गेहूँ की बालियाँ सुनहरे रंग में पक चुकी हैं। उनके आगे पतले-पतले सुनहरी बाल, रोम-बाल जैसे प्रतीत होते हैं। उन्हें देखकर लगता है मानो पृथ्वी रोमांचित हो रही है जिसके कारण उसके रोम-बाल खड़े हो रहे हैं।

6. हरी-भरी धरती पर पीले-पीले सरसों के फूल खिले हुए हैं जिसके कारण पृथ्वी का सौन्दर्य अतीव मनोहारी है इसलिए उन्हें देखने के लिए अलसी के नीले फूल ऊपर की ओर मुँह किये हुए हैं।

(3)

रंग-रंग के फूलों से रिलमिल
हँस रही सखियाँ मटर खड़ी,
मखमली पेटियों सी लटकीं
छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी।
फिरती हैं रंग-रंग की तितली
रंग-रंग के फूलों पर सुन्दर,
फूले फिरते हैं फूल स्वयं
उड़-उड़ वृन्तों से वृन्तों पर!

कठिन-शब्दार्थ–सखियाँ मटर = विशिष्ट प्रकार की मटर, जिस पर बैंगनी फूल आते हैं। रिलमिल = घुलमिलकर। छीमियाँ = फलियाँ। वृन्त = पौधों के डण्ठल।

भावार्थ–कवि पन्त ग्राम्य प्रकृति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि खेतों में अनेक तरह के रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। उन्हीं के मध्य में खड़े मटर के पौधे मानो हँस रहे हैं। मानो कोई सखी सजी-धजी सखियों को देखकर प्रसन्नता से हँस रही हो। फलियाँ हरी मखमल की पेटियों के समान लटकी हुई हैं और उनके अन्दर रंग-बिरंगे बीजों की लड़ियाँ चमक रही हैं। खेतों में रंग-बिरंगे फूलों के समान ही रंगीन तितलियाँ उन फूलों पर मण्डरा रही हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि मानो तितलियाँ नहीं, बल्कि फूल ही एक वृन्त से दूसरे वृन्त पर उड़-उड़कर जा रहे हों।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. प्रस्तुत काव्यांश किस कविता से लिया गया है? इसके कवि कौन हैं?

प्रश्न 2. छीमियों की तुलना मखमली पेटियों से क्यों की गई है?

प्रश्न 3. फूल स्वयं वृन्तों पर उड़ते-फिरते प्रतीत होते हैं। कैसे?

प्रश्न 4. रंग-बिरंगी तितलियाँ किस प्रकार शोभायमान हो रही हैं?

प्रश्न 5. मटर की फलियाँ किनके समान दिखाई पड़ रही हैं?

प्रश्न 6. 'छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी' में 'छीमिया' से क्या आशय है?

उत्तर—1. प्रस्तुत काव्यांश 'ग्राम-श्री' कविता से लिया गया है। इसके कवि सुमित्रानन्दन पन्त हैं।

2. मखमली पेटियों में कीमती आभूषण आदि रखे जाते हैं। फलियों के गुच्छे मखमल के समान कोमल हैं और उन गुच्छों के अन्दर बीजों की रंग-बिरंगी लड़ियाँ छिपी रहती हैं। इसी विशेषता से छीमियों की तुलना मखमली पेटियों से की गई है।

3. खेतों में उड़ने वाली तितलियाँ फूलों की तरह रंगीन पंख वाली हैं। इस कारण वे दूर से फूल जैसी ही दीखती हैं। अतएव कवि कल्पना करता है कि तितलियों के रूप में फूल ही एक वृन्त से दूसरे वृन्त पर उड़ते प्रतीत होते हैं।

4. रंग-बिरंगी तितलियाँ खिले हुए रंग-बिरंगे फूलों पर इस तरह शोभायमान हो रही हैं कि मानो खिले हुए फूलों पर फूल ही एक-दूसरे पर मँडरा रहे हों।

5. मटर की फलियाँ उन सखियों के झुण्ड के समान दिखाई पड़ रही हैं जो आपस में हिलमिल कर एक-दूसरी से अपनी बातें कर रही हैं, साथ ही अति प्रसन्न भी लग रही हैं।

6. 'छीमियाँ' मटर की फलियों को कहा जाता है जो मटर के दानों को अपने अन्दर छिपाए रखती हैं।

(4)

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से
लद गई आम्र तरु की डाली,
झर रहे ढाक, पीपल के दल
हो उठी कोकिला मतवाली!
महके कटहल, मुकुलित जामुन,
जंगल में झरबेरी झूली,
फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम,
आलू, गोभी, बैंगन, मूली।

कठिन-शब्दार्थ—रजत = चाँदी। मंजरियाँ = आम की बौरें। आम्र तरु = आम का वृक्ष। दल = पत्ते। मतवाली = मस्त। मुकुलित = अधखिली कलियाँ।

भावार्थ—वसन्त ऋतु के आगमन से गाँव का वातावरण कितना मनोरम बन जाता है, इसी का वर्णन करते हुए कवि पन्त कहते हैं कि आम के पेड़ की डालियाँ चाँदी और सोने के समान चमकदार मंजरियों अर्थात् बौरों से लद गई हैं। पतझड़ के आने से ढाक (पलाश) और पीपल के पत्तों का झरना शुरू हो गया है। कोयल वसन्त के प्रभाव से मस्त होकर कूक रही है। कटहल की महक चारों ओर फैलने लगी है और जामुन की डालियों पर अधखिली कलियाँ आ गई हैं। जंगलों में छोटी झरबेरी की डालियाँ झूमने लग गई हैं। ऐसे सुरम्य प्राकृतिक परिवेश में आड़ू, नींबू, अनार, आलू, गोभी, बैंगन, मूली आदि सब्जियों के पौधों पर फूलों की बहार आ गई है। अर्थात् सारा ही ग्राम्य-परिवेश मनमोहक बन गया है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. आम्र तरु की डालियाँ किनसे लद गई हैं?

प्रश्न 2. ढाक और पीपल के दल क्यों झर रहे हैं?

प्रश्न 3. कोयल क्यों मतवाली हो रही है?

प्रश्न 4. ऋतु-परिवर्तन पर ग्राम्य परिवेश कैसा लगता है?

प्रश्न 5. वसन्त ऋतु के आने से प्रकृति के किन रूपों पर प्रभाव पड़ता है?

प्रश्न 6. 'जंगल में झरबेरी झूली' में 'झरबेरी' से क्या आशय है?

उत्तर—1. आम के पेड़ की डालियाँ वसन्त ऋतु के आगमन से चाँदी और सोने के समान अर्थात् सफेद-पीली मंजरियों से लद गई हैं। उन पर सुन्दर बौरें आ गई हैं।

2. वसन्त ऋतु के आगमन पर पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और उनके स्थान पर नये पत्ते आ जाते हैं। ढाक और पीपल के पत्ते भी वसन्त काल के आगमन से झर रहे हैं।

3. वसन्त ऋतु कोयल को अतीव प्रिय है। प्राकृतिक परिवेश में वसन्त का प्रसार देखकर अर्थात् वसन्त का मादक वातावरण देखकर कोयल मतवाली हो रही है और अपनी मधुर कूक छेड़ रही है।

4. ऋतु-परिवर्तन होने पर उसका प्रभाव सभी पेड़-पौधों एवं जीवों पर पड़ता है। इससे ग्रामीण प्रकृति का स्वरूप अतीव मनोरम और आकर्षक लगता है।

5. वसन्त ऋतु के आने पर फल-फूल खिल जाते हैं उसके कारण हवा भी सुगन्धित हो जाती है। वातावरण में सर्दी-गर्मी का मिश्रित सुहावना मौसम रहता है। विभिन्न प्रकार के फल पकने लगते हैं।

6. 'झरबेरी' से आशय है 'बेर की झाड़ी'। झाड़ियों पर बेर पकने लगते हैं और पकने के पश्चात् स्वयं ही झरकर जमीन पर गिर जाते हैं।

(5)

पीले मीठे अमरूदों में
अब लाल लाल चित्तियाँ पड़ीं
पक गये सुनहले मधुर बेर
अँवली से तरु की डाल जड़ी।
लहलह पालक, महमह धनिया,
लौकी औ' सेम फलीं, फैलीं,
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिरचों की बड़ी हरी थैली!

कठिन-शब्दार्थ–चित्तियाँ = रेखाकार निशान। अँवली = छोटा आँवला। लहलह = लहकता, झूमता हुआ। महमह = सुगन्ध से महकता हुआ।

भावार्थ–गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं समृद्धि को देखकर कवि कहता है कि अमरूद पहले पीले हुए, फिर पूरी तरह पक जाने से उन पर लाल-लाल धारियाँ पड़ गई हैं, अर्थात् वे पककर स्वादिष्ट हो गये हैं। बेर भी पककर सुनहरे अर्थात् पीले रंग के हो गये हैं और आँवले की डालियों पर छोटी-छोटी अँवली के गुच्छे सुन्दर लग रहे हैं। गाँव के खेतों में अब हरा पालक लगातार बढ़ रहा है, लहक रहा है तथा हरा धनिया भी खूब सुगन्ध बिखेर रहा है। लौकी और सेम की बेलें भी चारों ओर फैलकर खूब फलने लगी हैं। टमाटर पककर मखमल की तरह कोमल एवं मुलायम हो गये हैं। पौधों पर गुच्छों के रूप में लगी हरी मिर्चों को देखकर लगता है कि हरी बड़ी थैली लगी हुई है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कविता में अमरूदों की क्या विशेषता बताई गई है?
प्रश्न 2. 'अँवली से तरु की डाल जड़ी' का क्या आशय है?
प्रश्न 3. 'लहलह पालक, महमह धनिया' से क्या आशय है?
प्रश्न 4. बेर की विशेषताएँ बताइए।
प्रश्न 5. 'लाल-लाल चित्तियाँ' से क्या आशय है?
प्रश्न 6. कवि ने टमाटर को किनके समान बताया है?

उत्तर–1. कविता में बताया गया है कि अमरूद जब पकने लगे, तो पीले रंग के हो गये और पूर्णतया पक जाने पर उन पर लाल-लाल चित्तियाँ पड़ गई हैं जो एक विशेषता मानी जाती है अमरूद की, इससे उनका स्वाद अधिकाधिक मीठा हो जाता है।

2. अँवली अर्थात् आँवले के छोटे-छोटे फल डालियों पर इतनी अधिक मात्रा में आ गये हैं, डालें पूरी तरह ढक गई हैं। आँवलों के गुच्छे डालियों पर ऐसे लग रहे हैं, जैसे टहनियों को फलों से जड़ा गया हो।

3. इससे यह आशय है कि गाँव में खूब पालक उगा हुआ है। पालक के लम्बे-चौड़े पत्ते हवा के चलने से लहराने लगते हैं। धनिया के पौधों से खेतों में खुशबू फैल रही है और सारा वातावरण एकदम सुगन्धित बना हुआ है।

4. बेर पककर पीले हो गये हैं जिससे उनमें और मीठापन आ गया है और वे स्वादिष्ट लगने लगे हैं।

5. 'लाल-लाल चित्तियाँ' अमरूदों के पकने की पहचान बनती हैं, इन चित्तियों के पड़ने से पता चल जाता है कि अमरूद पका हुआ मीठा और स्वादिष्ट हो चुका है।

6. टमाटर पकने के पश्चात् गहरे लाल रंग के हो जाते हैं और पके हुए गहरे लाल टमाटर लाल मखमल की तरह नरम और सुन्दर दिखाई देते हैं।

(6)

बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती,
सुन्दर लगती सरपत छाई
तट पर तरबूजों की खेती;
अंगुली की कंघी से बगुले
कलंगी सँवारते हैं कोई,
गिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर
मगरौठी रहती सोई!

कठिन-शब्दार्थ—बालू = रेत। सरपत = घास-पात आदि। तट = किनारा। सुरखाब = चक्रवाक, चकवा पक्षी। पुलिन = तट। फिरते = तैरते। मगरौठी = मुर्गाबी पक्षी।

भावार्थ—गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि गंगा नदी के तट पर रंग-बिरंगी रेती फैली हुई है, उस पर सूर्य की किरणें पड़ने से सातों रंग चमकने लगते हैं और हवा से रेत पर बनी आड़ी-तिरछी लहरें साँपों की तरह चमकती हैं। वहाँ पर लम्बे पत्तों वाली घास छायी हुई है तथा गंगा-तट पर तरबूजों की खेती हो रही है। वहाँ पर कुछ बगुले अपनी अँगुली रूपी कंघी से अपना सिर खुजलाते हैं और कलंगी को सँवारते रहते हैं। वहाँ पानी पर चकवा पक्षी तैरते रहते हैं तथा कहीं पर मुर्गाबी सोयी रहती है अर्थात् गाँव के गंगा-तट का वातावरण अतीव रमणीय दिखाई देता है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. गंगा नदी के तट पर रेत-राशि किस प्रकार दिखाई देती है?
प्रश्न 2. गंगा-तट पर किसकी खेती की गई है?
प्रश्न 3. सुरखाब पक्षी की क्या विशेषता बतायी गई है?
प्रश्न 4. 'कलंगी सँवारते हैं कोई' से क्या अभिप्राय है?
प्रश्न 5. प्रस्तुत पद में कवि ने किसका वर्णन किया है?
प्रश्न 6. 'गिरते जल में सुरखाब' में 'सुरखाब' से क्या आशय है?

उत्तर—1. गंगा नदी के तट पर रेत-राशि हवा के कारण टेढ़ी-मेढ़ी लहरों वाली बनी हुई है। उस रेत पर सूर्य की किरणें पड़ने से वह रंग-बिरंगी दिखाई देती है तथा ऐसी लगती है कि वहाँ पर रंग-बिरंगे साँप लेटे हुए हों।

2. गंगा-तट पर खरपतवार उगा रहता है तथा उसी के बीच तरबूजों की बेलें फैली रहती हैं। गर्मियों के आने से पहले ही वहाँ पर तरबूजों तथा खीरा, ककड़ी आदि की खेती की जाती है।

3. सुरखाब अर्थात् चकवा पक्षी वन में विचरण करता है तथा पानी में अठखेलियाँ करता हुआ तैरता रहता है। यह उभयचर पक्षी है और ऐसी मान्यता है कि रात में यह अपने जोड़े से बिछड़ जाता है।

4. गंगा किनारे बगुले पानी में बैठकर अपने पंजे की अंगुली से मानो कंघी करते हुए अपनी कलंगी को सँवारते एवं खुजलाते रहते हैं। इस तरह बगुले वहाँ पर मस्त रहते हैं।

5. प्रस्तुत पद में कवि ने गंगा नदी के किनारे की बालू मिट्टी, लहरें, खरपतवार, तरबूजों की खेती आदि के विषय में वर्णन किया है।

6. 'सुरखाब' एक पक्षी का नाम है जिसे चकवा पक्षी के नाम से भी जाना जाता है।

(7)

हँसमुख हरियाली हिम-आतप,
सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अंधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खोए-
मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम
जिस पर नीलम नभ आच्छादन—
निरुपम हिमान्त में स्निग्ध शान्त
निज शोभा से हरता जन मन!

कठिन-शब्दार्थ–हिम-आतप = सर्दी की धूप। अलसाए = आलस्य से भरे। निशि = रात। अँधियाली = अँधेरा। तारक = तारे। मरकत = पन्ना नामक रत्न, हरे रंग का रत्न। नीलम = नीले रंग का कीमती पत्थर। आच्छादन = ढका हुआ, ऊपरी आवरण। निरुपम = जिसकी उपमा न हो। हिमान्त = शीत ऋतु का अन्त। स्निग्ध = सुन्दर। निज = अपनी।

भावार्थ–कवि पन्त गाँव के प्राकृतिक मनोरम वातावरण का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गाँव की हरियाली सूर्य की धूप के कारण हँसती हुई प्रतीत हो रही है। सर्दियों में मनभावन धूप खिली रहती है। ऐसा लगता है कि वहाँ का सारा ही परिवेश सुख से अलसाया और सोया हुआ लगता है। ओस पड़ने से रात भीगी-भीगी-सी लग रही है और रात के अन्धकार में तारे सपनों में खोए हुए-से लगते हैं। वह पूरा गाँव मरकत (हरे रंग के) रत्न के बने हुए डिब्बे के समान हरा दिखाई देता है। उसके ऊपर नीलम के समान नीले आकाश का आवरण है अर्थात् नीला रंग छाया हुआ है। सर्दियाँ बीतने पर इस गाँव में अनुपम शांति छायी हुई है। इस तरह यह गाँव अपनी शोभा से लोगों के मन को हर रहा है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. 'हँसमुख हरियाली' से क्या आशय है?

प्रश्न 2. रात में ग्रामीण परिवेश में तारे कैसे प्रतीत होते हैं?

प्रश्न 3. हँसमुख हरियाली किसके साथ सोई हुई है?

प्रश्न 4. गाँव की कौन-सी शोभा जन-मन को हर रही है?

प्रश्न 5. कवि को खुला ग्राम किसके समान दिखलाई पड़ता है?

प्रश्न 6. 'निरुपम हिमान्त' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर–1. इससे यह आशय है कि गाँव में चारों ओर हरियाली छायी हुई है। उस पर सूर्य की किरणें अर्थात् सर्दियों की गुलाबी धूप पड़ रही है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि हरियाली अपनी मन्द हँसी बिखेर रही है।

2. रात में सर्दियों के कारण ओस पड़ती रहती है, लगता है कि अँधेरा भीग रहा है। उधर अँधेरे में तारे टिमटिमाने लगते हैं मानो सपने में वे खोए हुए हैं।

3. हँसमुख हरियाली मानो सर्दियों की हरियाली के साथ शान्त रूप से सोई हुई है।

4. गाँव की प्राकृतिक शोभा यथा हरियाली, ठंडी भीगी रातें, खड़ी फसलें, नीला आकाश और शान्त वातावरण आदि मिलकर ऐसा वातावरण बनाते हैं कि वह हर व्यक्ति के मन को आकर्षित करता है।

5. कवि को खुला ग्राम मरकत के डिब्बे के समान दिखाई देता है अर्थात् मरकत हरे रंग का होता है और गाँव की हरियाली हरे रंग के चमकते पन्ना नामक रत्न के समान दिखाई पड़ता है।

6. निरुपम अर्थात् अत्यन्त सुन्दर और हिमान्त से आशय हिम का अन्त या सर्दी का अन्त से है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' क्यों कहा है?

उत्तर–कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' इसलिए कहा है, क्योंकि गाँव का प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त मनोरम है। खेतों पर चमकीली धूप पड़ रही है। नाना प्रकार की फसलों और खिले हुए फूलों पर रंग-बिरंगी उड़ती हुई तितलियाँ मन को मोह लेती हैं। वहाँ पर अनेक प्रकार की सब्जियाँ होती हैं और गंगा के तट पर तरबूजों की खेती होती है। पक्षी विहार करते हैं। ये सभी दृश्य मन को आकर्षित करते हैं।

प्रश्न 2. कविता में किस मौसम के सौन्दर्य का वर्णन है?

उत्तर–कविता में सर्दी ऋतु का वर्णन है। इस मौसम में आम पर बौर आता है। वातावरण महककर मादकता का प्रसार करता है। ढाक और पीपल के पत्ते झड़ने लगते हैं। चारों ओर खिले फल-फूलों पर तितलियाँ मँडराने लगती हैं।

प्रश्न 3. गाँव को 'मरकत डिब्बे-सा खुला' क्यों कहा गया है?

उत्तर–गाँव में चारों ओर हरियाली है, हेमन्त एवं वसन्त की धूप अधिक प्रखर नहीं होती है, वह धूप हरियाली पर पड़कर सुन्दर चमक बिखेर देती है। पन्ना भी हरे रंग का होता है, वह सुन्दर चमकता है। गाँव का परिवेश खुला है, इसलिए उसे 'मरकत डिब्बे-सा खुला' कहा गया है।

प्रश्न 4. अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं?

उत्तर–अरहर और सनई की फसलें जब पक जाती हैं, तो उनकी सुनहरी बालियाँ पककर सूख जाती हैं। तब वे करधनी के समान सुन्दर लगती हैं तथा मधुर आवाज में बजने लगती हैं।

प्रश्न 5. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) 'बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती।'

उत्तर–गाँव के समीप गंगा का रेतीला तट काफी दूर तक फैला हुआ है। तेज हवा के चलने से रेत-राशि सर्पों की टेढ़ी चाल के समान कुछ आड़ी-तिरछी लकीरों से व्याप्त है। सूर्य की किरणें पड़ने से रेत-राशि पर रंग-बिरंगी चमक फैल रही है। इस कारण वह रेती सतरंगी साँपों से अंकित-सी दिखाई दे रही है।

(ख) 'हँसमुख हरियाली हिम आतप
सुख से अलसाए-से सोए',

उत्तर–सर्दियों की मन्द धूप पड़ने से हरियाली हँसती हुईसी लगती है। गाँव के परिवेश में सर्दियों की धूप एकदम शान्त एवं सहन-योग्य है। ऐसा लगता है कि हरियाली और सर्दियों की धूप दोनों सुख से अलसाकर सो गये हैं। हरियाली तो धूप सेंकने से अलसा गई है।

प्रश्न 6. निम्न पंक्तियों में कौनसा अलंकार है?
तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक।

उत्तर–सामान्य रूप से इसमें अनेक वर्णों की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।
'हरे-हरे' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार तथा 'तिनकों के तन' और 'रुधिर' में मानवीकरण अलंकार है।

प्रश्न 7. इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है, वह भारत के किस भूभाग पर स्थित है?

उत्तर–इस कविता में जिस भूभाग का चित्रण हुआ है, वह गंगा नदी के तटवर्ती भूभाग पर स्थित है।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 8. भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर–इस कविता में ग्रामीण परिवेश का मनोरम चित्रण किया गया है। सारा ग्रामीण परिवेश सुन्दरता एवं समृद्धि से व्याप्त है। ऐसे वर्णन के लिए कवि पन्त ने कोमल एवं मधुर भावों का समावेश किया है तथा अप्रस्तुत विधान से उसे अलंकृति दी है। भाषा इसमें सरल, तत्सम-तद्भव-प्रधान, प्रवाहपूर्ण एवं भावानुकूल है। ग्राम्य प्रकृति का यथार्थ चित्रण मधुर कल्पनाओं से युक्त होने से प्रकृति-सौन्दर्य की सुकुमार झाँकी प्रस्तुत की गई है।

प्रश्न 9. आप जहाँ रहते हैं, उस इलाके के किसी मौसम विशेष के सौन्दर्य को कविता या गद्य में वर्णित कीजिए।

उत्तर–मैं टोंक जिले के पास एक छोटे-से गाँव का रहने वाला हूँ। हमारे गाँव के पास बनास नदी बहती है। बनास नदी के रेतीले तट से बजरी-रेत का खूब खनन होता है। शिशिर के प्रारम्भ में यहाँ पर खरबूजे और तरबूजे की बुवाई होती है, जो ग्रीष्म ऋतु आते ही अच्छी फसल देती है। यहाँ खूब तरबूज एवं खरबूजे लगते हैं, जो जयपुर, अजमेर आदि दूर-दूर स्थानों तक भेजे जाते हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. गाँव के खेतों में दूर-दूर तक कोमल हरियाली फैली हुई है—
   (क) सूर्य की किरणों की तरह (ख) मखमल की तरह
   (ग) कलियों की तरह (घ) रेशम की तरह
2. छीमियाँ लटक रही हैं—
   (क) रेशम के समान (ख) मक्खन के समान
   (ग) मखमली पेटियों के समान (घ) फलों के डिब्बों के समान
3. पेड़ महक उठा है—
   (क) कटहल का (ख) जामुन का (ग) पीपल का (घ) ढाक का
4. लाल-लाल चित्तियाँ पड़ गई हैं—
   (क) काले-काले जामुनों में (ख) पके बेरों में
   (ग) पीले मीठे अमरूदों में (घ) मटर की फलियों में

5. गाँव की हरियाली हँसती हुई प्रतीत होती है—
(क) हवा के झोंकों से (ख) पड़े ओस के कणों से
(ग) सूर्य की धूप से (घ) चन्द्रमा की चाँदनी से
6. श्यामल भूतल पर कौन झुका हुआ है?
(क) हरित रुधिर (ख) नील फलक (ग) उजली जाली (घ) मखमल
7. हरित धरा से कौन झाँक रही है?
(क) सरसों (ख) अलसी (ग) नीलम (घ) अरहर
8. गंगा की सतरंगी रेती किसके समान लगती है?
(क) लहरों के (ख) किरणों के (ग) साँपों के (घ) खरबूजों के
9. 'मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम' में 'मरकत' का अर्थ है—
(क) हीरा (ख) रूबी (ग) कुन्दन (घ) पन्ना
10. टमाटर पकने के पश्चात् कवि को कैसे लगते हैं?
(क) फूल (ख) मखमल (ग) लाल (घ) रुधिर

उत्तर-माला—1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (ग) 6. (ख) 7. (ख) 8. (ग) 9. (घ) 10. (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. फैली खेतों में दूर तलक, ... की कोमल हरियाली।
2. उड़ती भीनी तैलाक्त गंध, फूली सरसों ....।
3. झर रहे ढाक, पीपल के दल, हो उठी .... मतवाली।
4. पीले मीठे अमरूदों में, अब लाल-लाल .... पड़ी।
5. तिरते जल में .... पुलिन पर मगरौठी सोई।
6. निरुपम हिमांत में स्निग्ध शांत, निज शोभा से हरता .... ।

उत्तर-माला—1. मखमल 2. पीली-पीली 3. कोकिला 4. चित्तियाँ 5. सुरखाब 6. जन-मन।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि को खेतों में दूर तक क्या दिखाई पड़ता है?

उत्तर—कवि को दूर तक खेतों में मखमल की तरह बिछी कोमल हरियाली दिखाई पड़ती है।

प्रश्न 2. हरियाली से लिपटी रवि की किरणें कैसी प्रतीत होती हैं?

उत्तर—हरियाली से लिपटी रवि की किरणें चाँदी की उजली जाली के समान प्रतीत होती हैं।

प्रश्न 3. वसुधा कब रोमांचित प्रतीत होती है?

उत्तर—जब गेहूँ और जौ में बालियाँ आ जाती हैं।

प्रश्न 4. नीलम की कली के समान किसे बताया गया है?

उत्तर—अलसी के छोटे-छोटे पौधे और उन पर आये नीले-नीले छोटे फूलों को नीलम (पत्थर) की कली समान बताया गया है।

प्रश्न 5. सखियों की तरह हिल-मिल कौन हँस रही हैं?

उत्तर—मटर की छीमियाँ सखियों की तरह हिलमिल कर हँस रही हैं।

प्रश्न 6. तितलियों का इधर-उधर उड़ना क्या भ्रम उत्पन्न कर रहा था?

उत्तर—रंग-बिरंगी तितलियाँ फूलों के समान लग रही थीं इसलिए उनका इधर-उधर उड़ना फूलों का दूसरे फूलों तक जाने का भ्रम उत्पन्न कर रहा था।

प्रश्न 7. कवि ने जंगल में किसके झूलने का वर्णन किया है?

उत्तर—कवि ने झरबेरी अर्थात् बेर के झड़ने का वर्णन किया है।

प्रश्न 8. कवि ने अपनी अंगुली से कलंगी संवारते हुए किसे बताया है?

उत्तर—कवि ने बगुले को अंगुली द्वारा कलंगी संवारते हुए बताया है।

प्रश्न 9. गंगा-तट पर किसकी खेती की जाती है?

उत्तर—गंगा-तट पर तरबूजों की खेती की जाती है।

प्रश्न 10. मरकत डिब्बे के समान किसे बताया गया है?

उत्तर—गाँव को जो हरा-भरा होने के कारण मरकत डिब्बे के समान प्रतीत होता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने खेतों की हरियाली को कौनसी उपमाएँ दी हैं?

उत्तर—कवि ने खेतों की हरियाली को मखमल, हरा रुधिर तथा मरकत के समान बताया है। जिन पर सूर्य की किरणें जाली के समान लगती हैं। जिससे हरियाली का दृश्य अतीत अनुपम प्रतीत होता है।

प्रश्न 2. वसुधा के रोमांचित होने का कवि ने क्या कारण बताया है?

उत्तर—वसन्त ऋतु के आने पर गेहूँ और जौ में बालियाँ आ जाती हैं और इन बालियों पर नर्म रेशे निकलते हैं उन्हें देखकर लगता है कि पृथ्वी अत्यधिक खुशी में रोमांचित हो रही है और बालियों के रेशे रोमांच में रोंगटे खड़े होने जैसा प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 3. प्रस्तुत पद में तितली को किसके समान बताया गया है?

उत्तर—वसन्त ऋतु में चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिल जाते हैं, वातावरण में सुगन्ध भर जाती है। तितलियाँ अपने रंग-बिरंगे रूप को लेकर एक फूल से दूसरे फूल पर बैठती हैं। उन्हें देखकर लगता है कि मानो एक फूल दूसरे फूल पर आ-जा रहा है।

प्रश्न 4. ''तिनकों के हरे-हरे तन पर हिल हरित रुधिर है रहा झलक''—इससे कवि का क्या आशय है?

उत्तर—प्रात:काल हरी घास पर पड़ी ओंस की बून्दों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि तिनकों के हरे शरीर पर हरे रंग का रुधिर हिल रहा है। ओंस की बून्दों का जल स्वच्छ और पारदर्शी होने के कारण तिनकों पर पड़ा वह हरा दिखाई देता है। कवि कल्पना में हरे रंग का रुधिर उनमें प्रवाहित हो रहा है।

प्रश्न 5. तितलियों से वातावरण की शोभा कैसे बढ़ रही है? कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर—वसन्त ऋतु के आगमन पर बाग-बगीचों तथा खेतों में फूल खिल जाते हैं। उन रंग-बिरंगे फूलों पर पराग आकर्षण के कारण तितलियाँ मंडराती हैं। तितलियाँ भी रंग-बिरंगी होती हैं। वे एक फूल से दूसरे फूल पर मँडराती हुई ऐसी प्रतीत होती हैं कि मानो खिले हुए फूल एक वृन्त से दूसरे वृन्त पर जा रहे हों।

प्रश्न 6. वसन्त ऋतु के आगमन पर कौन-कौनसे फल एवं सब्जियाँ उग आती हैं? कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर—प्रस्तुत 'ग्राम-श्री' कविता में शीत ऋतु के अन्त तथा वसन्त ऋतु के आरम्भ का चित्रण किया गया है। इस मौसम में जामुन, बेर, आड़ू, अनार आदि फल उगे। आलू, गोभी, बैंगन, मूली, कटहल आदि सब्जियाँ उगती हैं।

प्रश्न 7. 'मिरचों की बड़ी हरी थैली' से कवि ने क्या भाव व्यक्त किया है? बताइए।

उत्तर—मिर्च के पौधों पर छोटे फूल आते हैं, फिर उन पर हरी-हरी मिर्चों के गुच्छे लगते हैं। एक छोटे-से पौधे पर एक-साथ कई मिर्चें उग आने से ऐसा लगता है कि कोई बड़ी-सी हरे रंग की थैली लटक रही है, वह हरी मिर्चों से भरी हुई है। इस प्रकार कवि ने मिर्चों के गुच्छों को मिर्चों से भरी हुई बड़ी थैली बताकर सुन्दर कल्पना प्रस्तुत की है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने कोकिला के मतवाली होने का क्या कारण बताया है?

उत्तर—गाँव में हरियाली की बहार छायी हुई है। आम की डालियों पर बौर आ गए हैं जिसके कारण चारों तरफ मीठी-सी खुशबू फैल गई है। ढाक के पुराने पत्ते झर रहे हैं, पीपल पर भी नई मंजरियाँ आ गई हैं। कटहल महकने लगे हैं, जामुन पकने लगे हैं। जंगली बेर की झाड़ियाँ फलों से लद गई हैं। आड़ू, नींबू और अनार भी अपनी सुगन्ध बिखेर रहे हैं। ऐसे सुगन्धित एवं फल-फूलों से परिपूर्ण वातावरण को देखकर कोयल मतवाली हो उठी है और कूक कर अपनी खुशी व्यक्त कर रही है।

प्रश्न 2. कवि के गंगा किनारे के दृश्य को बताइये।

उत्तर—कवि ने बताया है कि गंगा किनारे की रेत लहरों के आने-जाने से एक विशेष प्रकार से अंकित हो जाती है। उन आड़ी-तिरछी बालू की रेखाओं को देखने से साँपों का जमीन पर लोटने का भ्रम प्रतीत होता है। गंगा किनारे खरपतवार घास मनोहारी लगती है। तरबूजों की खेती हो रही है। बगुले मछलियों के इन्तजार में अपने हाथों से अपनी कलंगी ठीक कर रहे हैं। गंगा के जल पर चकवा पक्षी तैर रहा है। इस प्रकार गंगा किनारे का दृश्य अतीव मनोरम है।

प्रश्न 3. गाँव की उस सुन्दरता का वर्णन कीजिए जो जन-मन को हरती है।

उत्तर–'ग्राम-श्री' कविता में कवि ने गाँव की सुन्दरता का वर्णन करते हुए बताया है कि खेतों में दूर-दूर तक फैली हरियाली, फलों से लदे पेड़, नाना प्रकार की सब्जियाँ आदि अतीव मनोरम दिखाई देती हैं। गंगा नदी के तट पर फैली रेत-राशि पर पड़ती सूर्य की किरणें सतरंगी दिखाई देती हैं। हवा के प्रभाव के कारण रेत पर बनी आड़ी-तिरछी लहरें साँप की तरह लगती हैं। इस तरह गाँव के प्राकृतिक परिवेश के सभी दृश्य इतने सुन्दर हैं कि वे जन-मन को मानो हर रहे हों या मोहित कर रहे हों।

प्रश्न 4. गाँव की तुलना कवि ने मरकत मणि के डिब्बे से क्यों की है?

उत्तर–गाँव के खेतों में सर्वत्र मखमली हरियाली छाई हुई है। रंग-बिरंगे फूलों की आभा सब जगह फैली हुई है। फल और फसलें अपनी-अपनी जगह शोभायमान हैं। फूलों पर विविध रंगों की तितलियाँ मँडरा रही हैं। लहकती और महकती फसलें सुगंध बिखेर रही हैं। सारी धरती विविध रूपों में सजी-धजी है। उसी सज-धज को दर्शाने के लिए ग्राम की तुलना कवि ने मरकत मणि के डिब्बे से की है।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि सुमित्रानन्दन पंत द्वारा लिखित 'ग्राम-श्री' कविता में व्यक्त प्रकृति के विभिन्न रूपों को विस्तार से बताइये।

उत्तर–'ग्राम-श्री' कविता में पंत ने गाँव की प्राकृतिक सुषमा और समृद्धि का मनोहारी वर्णन किया है। खेतों में दूर तक फैली हरियाली, लहलहाती फसलें, फल-फूलों से लदी डालियाँ और गंगा तट के किनारे का मनोरम दृश्य अति रमणीय लगते हैं। गेहूँ-जौ में बालियों के आने पर पृथ्वी का रोमांचित हो जाना तथा अरहर और सनई के पक जाने पर सोने की किंकणी के समान बजना, फूली-खिली पीली सरसों का महकना आदि प्राकृतिक दृश्य मन को मोह लेते हैं। मटर की फलियों का सखियों की तरह खिलखिलाना, कोकिला का मतवाली होकर कूकना, मीठे अमरूदों पर चित्तियाँ पड़ना, संगीतमय वातावरण उपस्थित करता है। जाती हुई सर्दी की अलसाती रातों में सुख से सोना, तारों के सपनों में खोना, अर्द्धरात्रि में गाँव का मरकत के समान चमकना, ये सभी आकर्षण प्रत्येक मन को मोह लेता है। कवि ने अनेक उपमाओं एवं अलंकारों से ग्राम श्री को सुशोभित किया है।

रचनाकार का परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि सुमित्रानन्दन पंत का जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर–सुमित्रानन्दन पंत का जन्म सन् 1900 में उत्तरांचल के बागेश्वर जिले में हुआ। आजादी के आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। ये छायावादी कविता के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। वीणा, ग्रंथि, गुंजन, ग्राम्या, पल्लव, युगांत, स्वर्ण-किरण, स्वर्ण-धूलि आदि इनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं। पंत की कविताओं में प्रकृति के विभिन्न रूप हैं। भावों की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए उन्हें शब्द-शिल्पी भी कहा जाता है। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार एवं सोवियत लैंड पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। साहित्य साधना करते हुए 1977 में इनका देहावसान हुआ।

12. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

कवि-परिचय–'नयी कविता' के सशक्त कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म बस्ती (उ.प्र.) में सन् 1927 में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद कुछ समय तक उन्हें आजीविका हेतु काफी संघर्ष करना पड़ा। फिर 'दिनमान' पत्रिका के उपसम्पादक एवं चर्चित 'पराग' बाल-पत्रिका के सम्पादक बने। 'काठ की घण्टियाँ', 'बाँस का पुल', 'एक सूनी नाव', 'गर्म हवाएँ', 'कुआनो नदी' इत्यादि इनके काव्य-संग्रह हैं। इन्होंने कहानी, उपन्यास, निबन्ध एवं बाल-साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1983 में उनका निधन हो गया।

पाठ-परिचय–पाठ में सर्वेश्वरजी की 'मेघ आए' शीर्षक कविता संकलित है। इसमें उन्होंने मेघों के आने की तुलना सजकर आये प्रवासी अतिथि (दामाद) से की है। ग्रामीण परिवेश में मेघों के आने से सर्वत्र उल्लास छा जाता है, इसी प्रकार वहाँ के परिवेश में दामाद के आने से आनन्दमय अनुभूति होती है। कवि ने इसी भाव का सजीव एवं आकर्षक वर्णन किया है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

मेघ आए

(1)

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के!
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

कठिन-शब्दार्थ—मेघ = बादल। बयार = हवा। पाहुन = मेहमान, दामाद। घाघरा = लहँगा। बाँकी = टेढ़ी। चितवन = दृष्टि। उचकाए = ऊपर उठाये। ठिठकी = रुक गई।

भावार्थ—कवि सर्वेश्वर वर्णन करते हुए कहते हैं कि बादल रूपी प्रवासी मेहमान बड़े सज-धजकर आ गए हैं। उन बादलों के आने की सूचना देने वाली हवा उनके आगे नाचती-गाती चली आ रही है। उसके आने से मकानों के बन्द दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगी हैं। ऐसा लगता है कि शहर से आये मेहमान (दामाद) को देखने के लिए गली-गली में बन्द दरवाजे एवं खिड़कियाँ खोली जा रही हैं, ताकि घरों के लोग इस शहरी मेहमान को देख सकें। इस तरह मेघ गाँव में मेहमान की तरह सज-धजकर आ गये हैं।

कवि कहता है कि बादलों के आने की सूचना हवा से मिल जाने पर पेड़ भी खुशी से झूम रहे हैं और सिर झुकाकर देखते हुए फिर गर्दन ऊँची कर रहे हैं। अर्थात् हवा के चलने से पेड़ कुछ झुक रहे हैं, फिर सीधे हो रहे हैं। इस तरह वे व्याकुलता से बार-बार अपनी गर्दन उचकाकर बादलों को देख रहे हैं। आँधी चलने से गलियों की धूल उठकर अन्यत्र जाने लगी, इससे ऐसा लग रहा है कि जैसे गाँव की कोई लड़की अपना घाघरा उठाये भागी जा रही है। नदी कुछ रुककर बादलों को उसी प्रकार देखने लगी, जिस प्रकार गाँव की कोई स्त्री मेहमान को देखने के लिए अपने घूँघट को थोड़ा-सा हटाकर और लज्जा सहित नेत्रों को कुछ तिरछा करके देखने लगी हो। इस प्रकार बादल मेहमान के रूप में सज-धजकर गाँव में आ गये हैं।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. मेघों की तुलना पाहुन से क्यों की गई है? बताइये।
प्रश्न 2. 'पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के' का भाव स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 3. गली-गली में दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने को लेकर कवि ने क्या कल्पना की है?
प्रश्न 4. हवा किस प्रकार चली?
प्रश्न 5. बादलों को देखने के लिए नदी ने कैसा उपक्रम किया?
प्रश्न 6. बादलों के आने से पेड़ों ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

उत्तर—1. गाँवों में कृषक-समाज वर्षा के लिए मेघों के आने की बेचैनी से प्रतीक्षा करता है और जब दूर से आकाश में मेघ-घटाएँ दिखाई देती हैं, तो गाँव में प्रसन्नता का संचार होने लगता है। इसी प्रकार जब प्रवासी दामाद ससुराल में आता है, तो सभी को प्रसन्नता होती है और सब उसके आगमन को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसी कारण मेघों की तुलना पाहुन से की गई है।

2. गाँव के रहन-सहन और शहर के रहन-सहन में अन्तर होता है। गाँवों के लोगों में शहरों के प्रति अधिक उत्सुकता रहती है। इसीलिए जब बादल आये, तो गाँव के लोगों में उसे देखने की ऐसी उत्सुकता जागी, जैसे शहरी मेहमान के आने पर जगती है।

3. मनोरम मेघों को देखने के लिऐ गली-गली में दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं। इस सम्बन्ध में कवि ने यह कल्पना की है कि प्रवासी बादल रूपी मेहमान (दामाद) के आने की सूचना मिलने से गाँव के लोगों में उनको देखने की उत्सुकता जागी। इस दृष्टि से लोगों ने दरवाजे-खिड़कियाँ खोल दीं।

4. हवा मेघ रूपी पाहुन के आगे-आगे नाचती-गाती हुई चली।

5. बादलों को आते देखकर नदी ने गाँव की शर्मीली स्त्री के समान नेत्रों को तिरछा करके घूँघट को थोड़ा सा हटाकर, ठिठककर देखती है।

6. बादलों के आने पर पेड़ खुशी से झूमकर कुछ थोड़ा नीचे झुककर तथा फिर वापस उचककर ऊपर उठकर गर्दन ऊँची करके बादलों की तरफ देख रहे थे।

(2)

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'–
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के,
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवरे के।
क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

कठिन-शब्दार्थ–जुहार की = प्रणाम किया। सुधि लीन्हीं = याद किया। अकुलाई = व्याकुल। हरसाया = खुश हुआ। परात = थाल जैसा बड़ा बर्तन। क्षितिज = धरती और आकाश के मिलन-बिन्दु का भाग। अटारी = छत पर बना कमरा। दामिनि = बिजली। दमकी = चमकी। गाँठ खुल गई = भ्रम या रहस्य समाप्त हुआ। अश्रु = आँसू। ढरके = बह गए।

भावार्थ–कवि कहता है कि सजे-धजे मेहमान के रूप में बादल को आया देखकर बूढ़े पीपल ने गाँव के बुजुर्ग सम्मानित व्यक्ति के रूप में इस मेहमान का अभिवादन या स्वागत किया। गर्मी से व्याकुल लता ने दरवाजे की ओट में होकर उलाहना देते हुए कहा कि तुम्हें पूरे एक साल बाद मेरी याद आयी। मेघ को सज-धजकर आये मेहमान रूप में देखकर तालाब प्रसन्न हो उठा और वह परात में पानी भरकर (मेहमान के पैर धोने हेतु) लाया।

आकाश में उमड़ते हुए बादलों को देखकर कवि कहता है कि उसी समय आकाश के कोने रूपी अटारी पर मेघ छाने लगे और उन घने बादलों के मध्य में बिजली चमकने लगी। अब तक लोगों को भ्रम था कि पता नहीं बादल आयेंगे या नहीं, अबकी बार बरसेंगे या नहीं। परन्तु बिजली चमकने से अब वह भ्रम दूर हो गया। साथ ही प्रवासी मेहमान (दामाद) के अटारी पर पहुँचते ही उसकी नायिका का भी भ्रम समाप्त हो गया। तब उसने मेहमान से कहा कि 'आपके आगमन को लेकर मेरे मन में जो भ्रम था, अब वह मिट गया है। आप मुझे माफ कर दें।' यह सुनते ही मेहमान (बादल) के सब्र का बाँध टूट गया और उस मिलन-वेला में प्रिया-प्रिय के नेत्रों से अश्रुपात होने लगा, अर्थात् मूसलाधार वर्षा होने लगी। इस प्रकार मेघ बन-ठनकर मेहमान की तरह गाँव में आये।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर किसका स्वागत किया और क्यों?

प्रश्न 2. 'बरस बाद सुधि लीन्हीं'–किवाड़ की ओट लिए लता ने ऐसा क्यों कहा?

प्रश्न 3. ताल पानी की परात लेकर क्यों आया?

प्रश्न 4. भ्रम की कौन-सी गाँठ खुल गई है, जिसके लिए क्षमा माँगी गई है?

प्रश्न 5. बादल किस रूप में गाँव में आये थे?

प्रश्न 6. 'झर-झर मिलन के अश्रु ढरके' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर–1. बूढ़े पीपल ने गाँव का बुजुर्ग और सम्मानित व्यक्ति होने के नाते, मेहमान रूप में पधारे मेघ का स्वागत किया। क्योंकि बादल ऐसा प्रवासी मेहमान था, जो एक वर्ष बाद आया था। सब लोग उसके आगमन की प्रतीक्षा में थे।

2. वर्षा ऋतु या बरसात साल में एक बार आती है। लता रूपी नायिका कुछ लज्जित होकर, किवाड़ की ओट लिए अपने प्रवासी मेहमान (नायक) से बोली कि तुम्हें पूरे एक वर्ष बाद हमारी याद आयी है। लता रूपी युवती ने बादल रूपी प्रिय से हृदयगत शिकायत या उलाहने के रूप में ऐसा कहा।

3. भारत की प्राचीन संस्कृति में घर आये मेहमान के पैर धोने की परम्परा प्रचलित रही। आज भी देश के कुछ भागों में मेहमान के पैर धोए जाते हैं, मेहमान यदि दामाद हो, तो फिर उसे पूज्य माना जाता है। तालाब भी प्रसन्न होकर मेहमान रूप में आये मेघ के पैर धोने के लिए पानी की परात लेकर आया।

4. गाँव के लोगों को मेहमान रूपी बादलों के समय पर आने और बरसने को लेकर भ्रम था, परन्तु बादल ठीक समय पर आ गये। इस कारण गाँव वालों की और लता रूपी नायिका की यह भ्रान्ति मिट गई, उनका भ्रम समाप्त हो गया। इसी निमित्त मेहमान से मिलने पर क्षमायाचना की गई है।

5. बादल अतिथि के रूप में पूरे एक वर्ष बाद बन-ठन के एवं पूरी तरह सज-सँवर के आये थे।

6. इससे कवि का आशय है कि प्रेमी रूपी बादल एवं लता रूपी नायिका के मिलन से अश्रु या आँसू आ गये जिससे चारों तरफ अच्छी वर्षा होने लगी।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. बादलों के आने पर प्रकृति में जिन गतिशील क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है, उन्हें लिखिए।

उत्तर–प्रस्तुत कविता में प्रकृति की निम्न गतिशील क्रियाओं का चित्रण हुआ है—

(1) हवा का तेज चलना (2) पेड़ों का झुकना व उचकना (3) दरवाजे-खिड़कियाँ खुलना (4) आँधी चलना, धूल उड़ना (5) पीपल का डोलना (6) तालाब में लहरें उठना। (7) नदी का मानो बाँकी नजर उठा कर ठिठक जाना (8) क्षितिज पर बिजली चमकना (9) लताओं का छिपना (10) जल का बरसना, बाँधों का टूट जाना।

प्रश्न 2. निम्नलिखित किसके प्रतीक हैं?

(धूल, पेड़, नदी, लता, ताल)

उत्तर–धूल–किशोरी लड़कियों की प्रतीक है, जो भाग-भागकर मेहमान के आने की खबर दे रही है।

पेड़–गाँव के पुरुषों के।

नदी–गाँव की युवती की।

लता–नवविवाहिता, जिसका प्रवासी पति शहर से गाँव आया है।

ताल–घर का अन्तरंग सदस्य। मेहमान का स्वागतकर्त्ता।

प्रश्न 3. लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?

उत्तर–बादल रूपी मेहमान एक वर्ष बाद आया था इसलिए लता रूपी नव विवाहिता ने पेड़ रूपी किवाड़ की ओट में छिपकर देखा, क्योंकि बादल रूपी प्रियतम की दीर्घ प्रतीक्षा करने के बाद आने पर वह व्याकुल भी है और उन्हें बिना देखे रह भी नहीं पा रही है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की।

उत्तर–विरहिणी नायिका को भ्रम था कि उसका नायक एक वर्ष से उसकी सुध नहीं ले रहा है, वह उसे भूल गया है। पर साल भर बाद जब शहर से प्रवासी नायक लौट आया, तो नायिका ने उससे क्षमायाचना की कि मेरे मन में आपके बारे में जो गाँठ थी, वह खुल गई है। अतएव आप मुझे क्षमा करें।

ग्रामीणों को भ्रम था कि बादल आयेंगे या नहीं, बरसेंगे या नहीं, परन्तु बादल समय पर आ गये। इसलिए ग्रामीणों के मन की गाँठें खुल गईं और वे उससे क्षमा-याचना करने लगे। बादल के नियत समय पर आने से ग्रामीणों का भ्रम समाप्त हो गया।

(ख) बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

उत्तर–गाँवों की युवा वधुएँ घूँघट करती हैं। जब उन्हें मेहमान के आने की सूचना मिली, तो उनके मन में उसे देखने की उत्सुकता होने लगी। वे अपनी जगह ठिठक गईं और घूँघट सरका कर तिरछी नजर से उसे देखने लगीं।

नदी भी मेघ रूपी मेहमान को देखने के लिए उत्सुक थी। हवा के चलने से उसकी लहरों में परिवर्तन होने लगा, तब ऐसा लग रहा था कि मानो उसने अपना घूँघट कुछ सरका दिया और तिरछी नजरों से मेहमान (मेघ) को देख रही है।

प्रश्न 5. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर–मेघ रूपी मेहमान के आने से (1) हवा तेज चलने लगी, (2) हवा से दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगे, (3) पेड़ झुकने लगे, (4) बेलें हर्षित हुईं, (5) तालाब में लहरें उठने लगीं, (6) क्षितिज पर बादल उमड़ने और गरजने लगे, (7) बिजली चमकने लगी, (8) रिमझिम वर्षा होने लगी।

प्रश्न 6. मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर–मेघों के लिए बन-ठन के, सँवर के आने की बात इसलिए कही गयी है, क्योंकि उनके आने से गाँव वालों के मन में ठीक वैसा ही उल्लास छा जाता है जैसे किसी सजे-सँवरे दामाद के गाँव में आने पर छा जाता है।

प्रश्न 7. कविता में आये मानवीकरण तथा रूपक अलंकार के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर–मानवीकरण के उदाहरण–

(1) मेघ आए बड़े बन-ठन के, सँवर के।

(2) नाचती-गाती बयार चली।

(3) पेड़ झुकने लगे गरदन उचकाए।

(4) धूल भागी घाघरा उठाए, नदी ठिठकी।

(5) बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की।

(6) बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की।

(7) ताल लाया पानी परात भर के।

रूपक के उदाहरण–

(1) क्षितिज अटारी गहराई।

प्रश्न 8. कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर–कविता में ग्रामीण परिवेश में प्रचलित रीति-रिवाजों का सुन्दर चित्रण हुआ है। इसमें दर्शाया गया है कि दामाद अपनी ससुराल बन-ठनकर जाता है। दामाद का स्वागत सभी करते हैं। विवाहिता युवतियाँ प्रायः घूँघट निकालकर पुरुषों के सामने आती हैं। मेहमान के पैर धोने के लिए परात में पानी लाया जाता है। नवविवाहिता अपने पति से सबके सामने नहीं मिलती है और घूँघट की ओट में बात करती है। राजस्थान में ऐसे अतिथि का सत्कार पलक-पाँवड़े बिछाकर किया जाता है।

प्रश्न 9. कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान (दामाद) के आने का जो रोचक वर्णन किया है, उसे लिखिए।

उत्तर–आकाश में बादल का वर्णन–आकाश में नये बादल बन-ठन कर आ गये। उनके आने पर हवा सनसनाती हुई बहने लगी, तो गलियों में उसके वेग से दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं। धूल उड़ने लगी, पेड़ हिलने-डुलने लगे। तालाब में प्रसन्नता की लहरें उठने लगीं। नदी भी प्रसन्न हो गई। लताएँ बहुत व्याकुल थीं, उन्हें बादल के आने या न आने में सन्देह था, वह सन्देह दूर हुआ। क्षितिज पर बादलों की घटा छायी, बिजली चमकने लगी और रिमझिम वर्षा होने लगी।

गाँव में मेहमान का वर्णन–शहर से दामाद बन-ठनकर गाँव में पहुँचा। उसके आने की खबर हवा की तरह फैली। पुरुष उसे झुककर देखने लगे तो स्त्रियाँ भी घूँघट सरकाकर तिरछी नजर से देखने लगीं। किसी ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया, तो कोई पैर धोने के लिए पानी की परात ले आया। उसकी विरहिणी प्रियतमा को भ्रम था कि वह न जाने कब आयेगा। इसलिए वह आकुलता से सबके सामने नहीं अपितु किवाड़ की ओट में मिली। तब उसने प्रियतम से क्षमा माँगी और दोनों के मधुर-मिलन की बेला में उनके आँसू बहने लगे।

प्रश्न 10. काव्य-सौन्दर्य लिखिए–

> **पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के,**
> **मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।**

उत्तर–भाव-सौन्दर्य–गाँव में मेहमान (दामाद) के आने की तुलना बादलों से की गई है। दामाद शहर से बन-ठनकर आया है। इसमें बादलों के सौन्दर्य की कवि ने सुन्दर अभिव्यक्ति दी है।

शिल्प-सौन्दर्य–इसमें उत्प्रेक्षा अलंकार अनुप्रास अलंकार 'बड़े बन-ठन' के तथा मानवीकरण अलंकार बादलों पर मेहमान का आरोप करने में है। भाषा सरल, भावानुकूल एवं छन्द तुकान्त है।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 11. वर्षा के आने पर अपने आसपास के वातावरण में हुए परिवर्तनों को ध्यान से देखकर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर–वर्षा के आने से पहले धरती पर तपन, लू और शुष्कता थी, जो कि वर्षा आते ही एकदम समाप्त हो गई। पहली वर्षा होने से खेतों से मिट्टी की अनोखी गन्ध आने लगी। अमराइयों एवं वनावलियों में मोर की ऊँची केका सुनाई देने लगी। जो पेड़-पौधे, खेत-बगीचे पहले मुरझा रहे थे, वे अब लहलहाने लगे और उनमें नया जीवन आने लगा। दो-चार दिन की बरसात के बाद तो सारी धरती हरी-भरी हो गई, पेड़ों के पत्ते एकदम धुल गये, बेलें ऊपर की ओर उठने लगीं। बादल कभी सघन छा जाते, गर्जते एवं बिजली चमकाते और कभी शान्त होकर आकाश में सैर करते रहते। इस कारण सूर्य कभी चमकता और कभी बादलों के पीछे छिप जाता। बरसात होने से गाँव के तालाबों एवं कुँओं का जलस्तर बढ़ गया, पास में

बहने वाली सूखी नदी में भी पानी का वेग चढ़ने लगा। इस तरह वर्षा के आने पर आसपास के वातावरण में अनेक परिवर्तन दिखाई दिये।

प्रश्न 12. कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है? पता लगाइए।

उत्तर–पीपल का पेड़ आकार में बड़ा तथा लम्बी आयु वाला होता है। वह गाँव में सभी के लिए पूज्य होता है, क्योंकि पीपल के पेड़ में सभी देवता निवास करते हैं। वह हजारों पक्षियों, कीट-पतंगों एवं अन्य जीव-जन्तुओं को आश्रय देता है और उनका पोषण करता है। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण कवि ने पीपल को बुजुर्ग कहा है।

प्रश्न 13. कविता में मेघ को 'पाहुन' के रूप में चित्रित किया गया है। हमारे यहाँ अतिथि (दामाद) को विशेष महत्त्व प्राप्त है, लेकिन आज इस परम्परा में परिवर्तन आया है। आपको इसके क्या कारण नजर आते हैं? लिखिए।

उत्तर–हमारे समाज में आये इस परिवर्तन के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) अब पुरानी मान्यताओं को लोग कम महत्त्व देने लगे हैं।

(2) अब दामाद को पाहुन न मानकर घर का ही एक सदस्य मानते हैं।

(3) वर्तमान समय अर्थ-प्रधान युग है। खर्चे बढ़ने से न तो दामाद का इतना आकर्षण रह गया है और न ही उसकी मेहमाननवाजी करने में लोगों को ऐसी लगन रह गई है।

(4) व्यस्त जीवनचर्या के कारण सेवा-सत्कार करने का अवसर अब कम ही मिलता है।

(5) शिक्षा के प्रसार से दामाद और बेटी का पक्ष बराबर हो गया है।

(6) संयुक्त परिवार-परम्परा टूटने से अब व्यक्ति आत्मकेन्द्रित हो गया है।

(7) अब गाँवों में भी अतिथि सत्कार की पुरानी परम्परा का निरन्तर ह्रास हो रहा है।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 14. कविता में आये मुहावरों को छाँटकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर–सुधि लेना–अरे रमेश, कभी तो रिश्तेदारी में जाकर उनकी भी सुधि लेते रहो।

गाँठ खुलना–दोनों मित्रों में कुछ दिनों से जो गाँठ पड़ गई थी वह अब खुल गई।

बाँध टूटना–परीक्षाफल सुनने के लिए तो मेरी सब्र का बाँध टूट गया।

गरदन उचकाना–बार-बार खिड़की से दूसरों के घर में गरदन उचकाना ठीक नहीं है।

तिरछी नजरों से देखना–नवेली दुलहन तिरछी नजरों से पति को देखकर मन्द-मन्द मुस्काने लगी।

प्रश्न 15. कविता में प्रयुक्त आँचलिक शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर–बयार, पाहुन, घाघरा, बाँकी, जुहार, किवार, ओट, हरसाया, परात, भरम, बरस बाद सुधि लीन्हीं।

प्रश्न 16. 'मेघ आए' कविता की भाषा सरल और सहज है–उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–प्रस्तुत कविता में तीन-चार तत्सम शब्द आये हैं—दामिनी, मिलन, क्षितिज और अश्रु। इसमें सामासिक शब्दों का अभाव है। अति प्रचलित एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग भावानुरूप हुआ है। इसमें देशज शब्द भी हैं। इस तरह प्रस्तुत कविता की भाषा सरल और सहज है। यथा—

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की।
\+ + +
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।

पाठेतर सक्रियता–

● वसन्त ऋतु के आगमन का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–वसन्त ऋतु–वसन्त को ऋतुराज कहा जाता है। इस ऋतु के आगमन से शीत का प्रकोप शान्त हो जाता है; पेड़-पौधों में नव-जीवन का संचार होने लगता है। वसन्त-काल में न तो गर्मी रहती है, न सर्दी। मौसम एकदम गुलाबी हो जाता है। पेड़-पौधों में कोपलें आती हैं, कलियाँ एवं फूल खिल उठते हैं, पर्वतीय भूमि पर तो हजारों किस्म के फूल स्वयं ही खिल उठते हैं। रंगों का त्योहार होली, वसन्त पञ्चमी आदि के कारण जन-मानस में उल्लास छा जाता है। खेतों में चना-मटर पकने लगता है, गेहूँ-जौ की बालें पकने लगती हैं और सरसों के खेतों की पीली चादर सर्वत्र फैल जाती है। आम पर बौर आ जाता है। वृक्ष नवीन पत्ते धारण कर शोभा को बिखेरने लगते हैं तो वनों में महुआ महकने लगता है। सारा वातावरण वासन्ती सुषमा से व्याप्त हो जाता है। दक्षिण की हवा मन्द-

सुगन्ध बहती है, तो पूर्वा हवा का रुख भी मन्द रहता है। सभी जीवों, पशु-पक्षियों को भी वसन्त-ऋतु की मादकता का आभास हो जाता है और सभी के मानस में उल्लास, उमंग, मस्ती एवं मचलने की इच्छा समाई रहती है। वसन्त के आगमन से सब कुछ बदलकर नया हो जाता है।

● प्रस्तुत अपठित कविता के आधार पर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

धिन-धिन-धा धमक-धमक
मेघ बजे
दामिनि यह गई दमक
मेघ बजे
दादुर का कण्ठ खुला
मेघ बजे
धरती का हृदय खुला
मेघ बजे
पंक बना हरिचन्दन
मेघ बजे
हल का है अभिनन्दन
मेघ बजे
धिन-धिन-धा ....

प्रश्न 1. 'हल का है अभिनन्दन' में किसके अभिनन्दन की बात हो रही है और क्यों?
प्रश्न 2. प्रस्तुत कविता के आधार पर बताइये कि मेघों के आने पर प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन हुए?
प्रश्न 3. 'पंक बना हरिचन्दन' से क्या आशय है?
प्रश्न 4. पहली पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
प्रश्न 5. 'मेघ आए' और 'मेघ बजे' किस इन्द्रिय-बोध की ओर संकेत है?

उत्तर–1. इसमें वर्षा और हल के अभिनन्दन की बात हो रही है। वर्षा का अभिनन्दन सभी प्राणी एवं समस्त प्रकृति करती है। वर्षा होते ही किसान हल लेकर खेतों में चला जाता है, इसलिए हल का अभिनन्दन भी किया जाता है।

2. मेघों के आने पर बिजली चमकने लगी, मेंढ़क बोलने लगे, धरती धुली-धुली-सी लगने लगी। चारों ओर कीचड़ दिखाई देने लगा तथा कृषक अपने हल आदि कृषि उपकरणों को ठीक करने लगे। इस तरह प्रकृति में परिवर्तन होने लगे।

3. हरिचन्दन पवित्र होता है, यह देवताओं को लगाया जाता है। प्रसाद रूप में इसे मस्तक पर लगाते हैं तथा शरीर पर लेपते हैं। वर्षा आने से खेतों में मिट्टी गीली होकर कीचड़ बन गई जो कि कृषक के शरीर पर हरिचन्दन के समान लग गई। उस उपजाऊ मिट्टी के कीचड़ से उसका तन-मन पवित्र हो गया।

4. पहली पंक्ति में वर्णावृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

5. मेघ आए—नेत्र इन्द्रिय-बोध (दृश्य-बोध)
मेघ बजे—कर्ण इन्द्रिय बोध (श्रव्य-बोध)।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. मनोरम मेघों के आगे चलने वाले हैं—
(क) ग्रामीण जन (ख) ग्रामीण नवयुवतियाँ (ग) मस्त वायु (घ) आकाशचारी पक्षी
2. मेघों के स्वागत में झुक गये हैं—
(क) नदी (ख) तालाब (ग) लताएँ (घ) पेड़
3. ग्रामीणजनों को भय था—
(क) बादल समय पर नहीं आयेंगे

(ख) हवा नहीं चलेगी (ग) पाहुन नहीं आयेंगे
(घ) बिजली नहीं चमकेगी

4. मेघ किस रूप में आये हैं?
(क) अतिथि (ख) दामाद (ग) मेहमान (घ) उपर्युक्त सभी
5. मेघ रूपी पाहुन को बताया गया है—
(क) गाँव का (ख) शहर का (ग) देश का (घ) विदेश का
6. मेघों की किसने आगे बढ़कर जुहार की?
(क) नदी (ख) ताल (ग) पीपल (घ) पेड़
7. बड़े बन-ठन के संवर के कौन आया है?
(क) मेघ (ख) बादल (ग) जलद (घ) उपर्युक्त सभी
8. 'बरस बाद सुधि लीन्ही' यह किसने कहा?
(क) बयार (ख) हवा (ग) लता (घ) नदी
9. गली-गली दरवाजे-खिड़कियाँ किसे देखने को खुलने लगे?
(क) मेघ (ख) पाहुन (ग) अतिथि (घ) नभ
10. मेघों के आने पर आगे-आगे नाचते कौन चला?
(क) युवक (ख) युवती (ग) बयार (घ) आँधी

उत्तर-माला—1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (ख) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ग) 9. (क) 10. (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. पाहुन ज्यों आए हों गाँव में .... के।
2. बाँकी चितवन उठा .... ठिठकी, घूँघट सरके।
3. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर .... की
4. हरसाया .... लाया पानी परात भरके।
5. मेघ आए बड़े बन-ठन के .... के।
6. क्षमा करो गाँठ खुल गई अब .... की।

उत्तर-माला—1. शहर 2. नदी 3. जुहार 4. ताल 5. संवर 6. भरम।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. मेघों का आना गाँव वालों को कैसा लगता है?

उत्तर—मेघों को आते देख गाँव वाले प्रसन्नता एवं उत्साह से भर जाते हैं।

प्रश्न 2. गाँववालों ने मेघों के आगमन को किस रूप में स्वीकार किया?

उत्तर—गाँववालों ने मेघों को पाहुन (दामाद) के रूप में स्वीकार किया।

प्रश्न 3. गाँववासियों ने मेघ रूपी पाहुन को कहाँ का निवासी बताया?

उत्तर—गाँववासियों ने मेघ रूपी पाहुन को शहरवासी बताया।

प्रश्न 4. मेघों के आने पर कौन खुशी से नाचती-गाती चली?

उत्तर—मेघों के आने पर बयार (हवा) खुशी से नाचती-गाती चली।

प्रश्न 5. मेघों को देखकर पेड़ों ने उनका किस प्रकार अभिवादन किया?

उत्तर—मेघों को देखकर पेड़ों ने झुककर तथा गर्दन उचकाकर उनका अभिवादन किया।

प्रश्न 6. मेघों का स्वागत किसके द्वारा किया गया?

उत्तर—गाँव के बुजुर्ग बूढ़े पीपल ने मेघों का स्वागत आगे बढ़कर किया।

प्रश्न 7. लता रूपी नायिका की व्याकुलता का कारण क्या था?

उत्तर—पूरे एक वर्ष बाद मेघ रूपी नायक, लता रूपी नायिका से मिलने आये। समय-सीमा ही लता की व्याकुलता का कारण था।

प्रश्न 8. मेघ किस रूप में गाँव में आये थे?

उत्तर—मेघ बन-ठन संवर के गाजे-बाजे के साथ गाँव में आये थे।

प्रश्न 9. 'क्षमा करो अब गाँठ खुल गई भरम की' यह किसने, किससे कहा?

उत्तर–यह कथन लता रूपी नायिका ने, मेघ रूपी नायक से कहा।

प्रश्न 10. 'बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके' में 'अश्रु ढरके' से क्या आशय है?

उत्तर–'अश्रु ढरके' से आशय है कि खूब पानी बरसा और गाँव में चारों तरफ प्रसन्नता की लहर फैल गयी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'मेघ आए बड़े बन-ठन के....' कवि ने ऐसा चित्रण करते हुए किसका रूपक उतारा है?

उत्तर–कवि ने मेघ का ऐसा चित्रण करके शहर से आने वाले ऐसे अतिथि (दामाद) का रूपक उतारा है जो पूरी तरह सजा-सँवरा है और जिसके आगमन को लेकर सारे गाँव में बड़ी प्रतीक्षा की जा रही है तथा जिसका स्वागत करने के लिए गाँव के सभी लोग बड़ी उत्सुकता से खुशी प्रकट कर रहे हैं।

प्रश्न 2. 'दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली' इससे कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर–मेघ रूपी शहरी अतिथि या दामाद काफी दिनों के बाद आया है। अत: उसे देखने के लिए गाँव की स्त्रियों ने अपने घरों के दरवाजे-खिड़कियाँ खोल दी हैं। आशय यह है कि मेघ के आने से तथा वर्षा होने से उसका आनन्द लूटने के लिए गली-गली में दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं। गाँव के सभी लोग अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने लगे।

प्रश्न 3. 'मेघ आए' कविता में ग्रामीण संस्कृति का चित्रण किस रूप में हुआ है?

उत्तर–'मेघ आए' कविता में ग्रामीण संस्कृति का संवेदनात्मक चित्रण हुआ है। कवि ने मेघों के आने की तुलना सज-धजकर आये प्रवासी दामाद से की है। ग्रामीण संस्कृति में दामाद के आने पर सभी प्रसन्नता एवं उल्लास व्यक्त करते हैं, उसकी अगवानी करते हैं तथा पास-पड़ोस के सभी लोग उसे पूरे गाँव का मेहमान मानकर स्वागत करते हैं। इस तरह कवि ने मेघों के आने का सजीव वर्णन कर ग्रामीण परिवेश का उल्लासमय वातावरण चित्रित किया है।

प्रश्न 4. ग्रामीण परिवेश में मेघों का स्वागत किस प्रकार किया जाता है और क्यों?

उत्तर–ग्रामीण परिवेश में किसानों का मुख्य धन्धा खेती है। उनकी खेती पर ही सारा परिवार आश्रित रहता है। इसलिए जब आषाढ़ के आसपास आकाश में मेघ छाने लगते हैं, तो किसान उनका स्वागत विशिष्ट मेहमान की तरह करते हैं। कई क्षेत्रों में तो मेघ को देवता मानकर मनौती मनाते हैं। वस्तुत: मेघों के आने से ग्रामीण परिवेश में खुशी छा जाती है।

प्रश्न 5. बयार द्वारा मेघों का स्वागत किस प्रकार किया जाता है?

उत्तर–जब प्रथम बार बरसात के बादल आते हैं, तो उनके साथ तेज हवा भी चलती है। उस हवा से धूल उड़ती है, घरों की खिड़कियाँ खुल जाती हैं तथा सूखे तिनके-पत्ते उड़ जाते हैं। इस दृश्य को लक्ष्यकर कवि कहता है कि बादलों के आने से हवा को अतीव प्रसन्नता होती है और वह मेघ के आगे नाचती-गाती चलकर उसका स्वागत करने लगती है।

प्रश्न 6. मेघ के आने से गाँव के वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ने लगा?

उत्तर–मेघों के आने से गाँव का वातावरण बदलने लगता है। हवा चलने लगती है। पेड़ झुक-झुक कर हिलने लगते हैं। धूल उड़ने लगती है। बिजली चमकने लगती है और लताएँ झूमने लगती हैं। रिमझिम वर्षा होने लगती है और सारा वातावरण प्रसन्नता से भरकर उल्लसित हो जाता है।

प्रश्न 7. 'बाँध टूटा झर-झर'–वह कौनसा बाँध था जो टूट गया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–मेघ रूपी प्रवासी प्रियतम के आने पर प्रतीक्षा-आतुर लता रूपी नायिका ने पहले तो उलाहना दिया, फिर अपने भ्रम को लेकर क्षमा याचना की, फिर दोनों प्रेमी एक-दूसरे से मिले। उनके मिलन में अश्रुओं का बाँध टूटकर वर्षा के रूप में झर-झर बहने लगा। इस प्रकार विरहिणी नायिका के आनन्द से उद्वेलित अश्रुओं का बाँध था, वह टूट गया।

प्रश्न 8. लोगों ने किसलिए अपनी खिड़कियाँ और दरवाजे खोल दिए?

उत्तर–लोगों ने वर्षा रूपी शहरी मेहमान के आने पर उसकी सज-धज देखने के लिए अपने-अपने घरों की खिड़कियाँ और दरवाजे खोल दिए ताकि शहर से आने वाले मेहमान को अच्छी तरह देख सकें।

प्रश्न 9. मेघ के आगमन से क्षितिज का कैसा दृश्य उपस्थित हुआ?

उत्तर–बादलों के आ जाने के कारण क्षितिज रूपी अटारी के वातावरण में परिवर्तन हो गया। उस पर बादलों की घटाएँ छा गयीं। रह-रह कर बिजलियाँ चमकने लगीं। कुछ देर में ही क्षितिज रूपी अटारी का दृश्य मेघमय हो गया, फिर झर-झर वर्षा होने लगी। इस प्रकार वर्षा का दृश्य सुहावना हो गया और सभी को मनभावन लगने लगा।

प्रश्न 10. ताल द्वारा परात भरकर पानी लाने के द्वारा कवि ने किस भारतीय ग्रामीण सांस्कृतिक परम्परा की ओर संकेत किया है?

उत्तर–पहले हमारी ग्रामीण संस्कृति में मेहमान (दामाद) के आने पर उसके स्वागत में सर्वप्रथम पैर धोने की परम्परा थी। इस परम्परा का निर्वहन कामदार, नाई या कहार परात में जल भर कर लाते थे और पैर धोकर करते थे। पैर धुलाई में पैर धोने वाले को नेग मिलता था। कवि ने यहाँ इसी भारतीय ग्रामीण सांस्कृतिक परम्परा की ओर संकेत किया है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. मेघ के आगमन की तुलना किससे और क्यों की गई है?

उत्तर–मेघ के आगमन की तुलना सजे-सँवरे शहरवासी अतिथि (दामाद) से की गई है। बहुत दिनों के बाद आने वाले दामाद का उसकी ससुराल में काफी इन्तजार किया जाता है, उसी प्रकार जब लोग गर्मी के महिनों में तपन से काफी व्याकुल हो जाते हैं, तो वे गर्मी से छुटकारा पाने के लिए मेघ का इन्तजार करते हैं। किसान भी फसल की बुवाई-सिंचाई के लिए वर्षा लाने वाले मेघों का इन्तजार करते हैं। इस प्रकार पाहुन (दामाद) और मेघ दोनों की प्रतीक्षा बड़ी बेचैनी से की जाती है। इसी कारण मेघ की तुलना पाहुन से की गई है।

प्रश्न 2. 'मेघ आए' कविता में पीपल और ताल को किन-किन रूपों में चित्रित किया गया है?

उत्तर–'मेघ आए' कविता में पीपल को बुजुर्ग पेड़ के रूप में चित्रित किया गया है जो कि बड़े आदर से आगे बढ़कर मेहमान की अगवानी करता है। ताल को ऐसा व्यक्ति बताया है जो पाहुन (दामाद) को आया देखकर प्रसन्न होता है और उसके पैर धुलवाने के लिए परात लेकर खड़ा रहता है। अर्थात् पीपल का पेड़ तथा ताल दोनों को आये हुए अतिथि का स्वागत-सत्कार करने वाला चित्रित किया गया है।

प्रश्न 3. 'मेघ आए' कविता में मेहमान को आया देखकर लता को क्या-क्या प्रतिक्रिया करते दिखाया गया है?

अथवा

लता का मानवीकरण कर उससे क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करायी गई है?

उत्तर–'मेघ आए' कविता में लता को नवविवाहिता या नायिका का रूप दिया गया है, जो साल भर से अपने प्रवासी प्रियतम (मेघ) का इन्तजार कर रही है। जब मेघ रूपी प्रियतम आता है, तो लता सिहर उठती है, वह लाज के मारे दरवाजे की ओट में (पेड़ की टहनियों में) छिप जाती है। वह बड़े-बूढ़ों के सामने प्रियतम मेघ के पास जाने में शर्म महसूस करती है या मान करने से स्वयं सामने नहीं जाती है। उस समय उसमें व्याकुलता और नाराजगी दोनों है। वह सालभर बाद आये प्रियतम से मिलने को आतुर भी है, तो कुछ रुष्ट भी है। इसी से ओट में खड़ी होकर प्रियतम को देख रही है।

प्रश्न 4. 'मिलन के अश्रु ढरके' से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'मेघ आए' कविता में कवि ने यह भाव व्यक्त किया है कि सालभर तक इन्तजार करने के बाद प्रवासी प्रियतम अपनी विरहिणी नायिका से मिलने आया। तब व्याकुल लता रूपी नायिका ने उसे उलाहना दिया कि 'बरस बाद सुधि लीन्ही'। साथ ही उसने अपने मन के भ्रम के मिट जाने पर प्रसन्नता भी व्यक्त की और वह खुशी से प्रियतम से मिली। मिलन के उस मधुर-क्षण में उसके नेत्रों से खुशी के अश्रु बहने लगे अर्थात् उसने अपनी खुशी प्रकट की तथा उनके मिलन से खूब बारिश हुई जिससे चारों तरफ प्रसन्नता छा गई।

प्रश्न 5. 'गाँठ खुल गई अब भरम की'–लोगों का भ्रम क्या था जो टूट गया? 'मेघ आए' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर–ग्रीष्मकाल के बाद सभी जीव बेचैनी से वर्षा का इन्तजार करने लगे। परन्तु मेघों के आने में कुछ विलम्ब हो गया। तब सभी के मन में यह भ्रम उत्पन्न हो गया कि इस बार मेघ आयेंगे या नहीं आयेंगे, वर्षा होगी या नहीं होगी? लोगों का यह भ्रम चल ही रहा था कि तभी मेघ आ गये। इसलिए उनके भ्रम की गाँठ खुल गई, अर्थात् लोगों का भ्रम टूट गया और मेघों ने आने के पश्चात् खूब पानी बरसाकर सबको हर्षित कर दिया।

प्रश्न 6. मेघ के आने पर पेड़ अपनी प्रसन्नता कैसे व्यक्त करने लगे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कवि वर्णन करते हुए बताता है कि जब पेड़ों के पास से बयार चलने लगी तो उन्हें मेघ के आने की खबर मिल गई। उससे वे बहुत प्रसन्न हो गये। तब पेड़ अपनी गर्दन उचकाकर मेघ को देखने की कोशिश करने लगे। फिर वे प्रसन्नता से कुछ झुक गये और मेघ रूपी मेहमान के प्रति शिष्टाचार व्यक्त करने लगे। वे मेघ के स्वागत में अपनी डालियाँ हिलाने-डुलाने लगे, साथ ही आदर से उसे निहारने लगे।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'मेघ आए' कविता का सार अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–प्रस्तुत कविता में कवि ने मेघों के आने की तुलना सजकर आए अतिथि (दामाद) से की है। ग्रामीण संस्कृति में दामाद के आने पर उल्लास का जो वातावरण बनता है वह देखने योग्य होता है। दामाद किसी एक घर का नहीं माना जाता है वरन् पूरे गाँव का दामाद माना जाता है और गाँव का हर व्यक्ति अपनी-अपनी सुविधानुसार दामाद की सेवा में लग जाता है। 'मेघ आए' कविता में कवि ने मेघों को दामाद के रूप में प्रस्तुत किया है जिसके आने से आगे-आगे खुशी बिखेरती बयार चल रही है। गाजे-बाजे व मेघ (दामाद) के आने की खबर भर से गाँव के घरों की दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगी हैं ताकि वे अतिथि को भली-भाँति निहार सकें। उन्हें देखने को सभी उत्साहित हैं। मेघों के आने पर आँधी चलने लगती है तथा रास्ते की धूल रास्ता खाली कर देती है। नदी रूपी ग्राम वधू कुछ रुककर, ठिठककर, आँचल की ओट से मेघ को देखती है। पेड़ झुककर, उचककर अभिवादन करते हैं। गाँव के बुजुर्ग पीपल मेघ की अगवानी करते हैं। लता रूपी नायिका उलाहना देती है, फिर आपस में दोनों का मिलन होता है और खूब पानी बरसता है जिससे गाँव में आनन्द फैल जाता है। कवि ने प्रकृति के इस खेल के माध्यम से ग्रामीण संस्कृति की सजीव झाँकी को प्रस्तुत किया है।

रचनाकार का परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि सर्वेश्वर दयाल का जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर–कवि सर्वेश्वर दयाल का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में सन् 1927 में हुआ। उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक संघर्ष झेले। वे कई पत्रिकाओं के सम्पादक रहे जिनमें 'दिनमान' एवं 'पराग' का नाम प्रमुख है। काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द इनके काव्य-संग्रह हैं। इनके काव्य में ग्रामीण संवेदना के साथ शहरी मध्यवर्गीय जीवनबोध भी व्यक्त हुआ है। इनके काव्य-संग्रहों की भाषा सहज एवं लोक की महक लिये हुए है। इन्होंने अनेक उपन्यास, नाटक, कहानी, निबंध तथा बाल-साहित्य भी लिखा है। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। सन् 1983 में इनका आकस्मिक निधन हो गया।

13. राजेश जोशी

कवि-परिचय–राजेश जोशी हिन्दी के प्रमुख कवियों में माने जाते हैं। इनका जन्म मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़ जिले में सन् 1946 में हुआ। इन्होंने शिक्षा पूरी करने के बाद पत्रकारिता प्रारम्भ की और कुछ वर्षों तक अध्यापन भी किया। इन्होंने कविताओं के अतिरिक्त कहानियों, नाटकों तथा निबन्धों की भी रचना की। इनके कई काव्य-संग्रह प्रकाशित हैं। ये माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मध्यप्रदेश शिखर सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हैं।

पाठ-परिचय–पाठ्यक्रम में राजेश जोशी की कविता 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' संकलित है। सामाजिक-आर्थिक विडम्बना के कारण आज लाखों बच्चे काम पर जाने को विवश हैं। काम पर जाने वाले बच्चों से उनका बचपन छिन जाता है। वे बच्चे खेल, शिक्षा एवं जीवन की उमंग से वंचित हो जाते हैं। श्रमिक रूप में उनका हर तरह से शोषण-उत्पीड़न भी होता है। प्रस्तुत कविता में इसी आधार पर हार्दिक पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

बच्चे काम पर जा रहे हैं

(1)

कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह-सुबह
बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

कठिन-शब्दार्थ–भयानक = डरावना। विवरण = स्पष्ट या क्रमिक वर्णन।

भावार्थ–कवि भावुकता के साथ कहता है कि सुबह-सवेरे घने कोहरे से ढकी हुई सड़क पर भीषण ठंड से जूझते हुए बच्चे मजदूरी करने अपने काम पर जा रहे हैं। कवि कहता है कि यह हमारे समय की सबसे भयानक स्थिति है कि

बच्चों को खेलने-कूदने की जगह काम करना पड़ रहा है और इससे भी भयानक बात यह है कि इस समस्या को सामान्य वर्णन की तरह कहा जा रहा है। इस वर्णन को कहते हुए किसी की भी संवेदनाएँ इनके प्रति नहीं जागतीं और न किसी को क्रोध ही आता है। कहने का आशय है कि देश का सभ्य समाज, जिनके हाथों में कुछ कर सकने की शक्ति है उन्हें इस बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए और जितना हो सके उतना करना चाहिए। इस बात को तो प्रश्न रूप में लिखा जाना चाहिए, अर्थात् बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं, उनके सामने ऐसी क्या मजबूरी है? इस तरह प्रश्नात्मक रूप में लिखा जाना अपेक्षित है। इस उम्र में उन्हें तो स्कूल जाना चाहिए था, फिर क्यों उन्हें मजदूरी करनी पड़ रही है, क्यों अपना बचपन इस तरह बिताना पड़ रहा है? कवि के कहने का आशय है कि बच्चों की यह स्थिति किसी भी देश के लिए सही नहीं मानी जा सकती है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने 'भयानक पंक्ति' किसे बताया है?

प्रश्न 2. कवि ने प्रस्तुत कविता में किस समस्या की ओर संकेत किया है?

प्रश्न 3. 'लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह'—इसका आशय क्या है?

प्रश्न 4. कवि की पीड़ा क्या है?

प्रश्न 5. कवि ने देश की कौनसी गंभीर समस्या पर प्रकाश डाला है?

प्रश्न 6. 'बच्चों का काम पर जाना' किस विवशता को व्यक्त करता है?

उत्तर—1. कवि ने भयंकर सर्दी के इस मौसम में सुबह-सुबह बच्चों का काम पर जाने की विवशता को भयानक समस्या बताया है। ऐसे कथन को ही 'भयानक पंक्ति' बताया है।

2. प्रस्तुत कविता में कवि ने वर्तमानकाल की उस भयानक सामाजिक-आर्थिक समस्या की ओर संकेत किया है, जिससे निम्न-मध्यम वर्ग के बच्चों का बचपन छिन गया है। उन बच्चों को खेलने-कूदने, पढ़ने आदि से वंचित होकर कम उम्र में मजदूरी करने या धन कमाकर पेट-पूर्ति करने को विवश होना पड़ता है।

3. 'लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह' का आशय यह है—बाल मजदूरी की समस्या की गहराई में जाकर उसके कारणों को जानना और समाधान के उपाय करना।

4. कवि की पीड़ा यह है कि बच्चों को मजदूरी करने के लिए मजबूर होना और इस विषय में समाज का संवेदनाहीन होना है।

5. कवि ने देश की भयंकर समस्या गरीबी पर प्रकाश डाला है जिसके कारण छोटे-छोटे बच्चों को अपना पेट पालने के लिए काम पर जाना पड़ रहा है।

6. कवि बताना चाहते हैं कि खेलने-कूदने की उम्र में जब बच्चों को घर चलाने के लिए काम करना पड़े इसका अर्थ है कि उनके घर-परिवार की अत्यधिक मजबूरी है। पेट पालने के लिए बच्चे से उसका बचपन छीनकर काम करवाना परिवार की गुजर-बसर की विवशता को बताता है।

(2)

क्या अन्तरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग-बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकम्प में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक

कठिन-शब्दार्थ—अन्तरिक्ष = आकाश। भूकम्प = धरती का काँपना, भूचाल। ढह जाना = नष्ट होना। मदरसों = पाठशालाओं। एकाएक = अचानक।

भावार्थ—सुबह-सुबह घने कोहरे से ढकी सड़कों पर बच्चों को काम पर जाते देखकर कवि व्यथित होकर पूछता है कि आखिर ये बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं? क्या इन बच्चों के द्वारा खेली जाने वाली सारी गेंदें आकाश में गिर गई हैं अर्थात् खो गई हैं? गेंदें न मिलने से ये काम पर जा रहे हैं? क्या इन्हें शिक्षा-प्राप्ति में सहायक पुस्तकें नहीं मिल रही

हैं? क्या उन सारी रंग-बिरंगी पुस्तकों को दीमकों ने चट कर दिया है? क्या इनके खेलने में काम आने वाले सारे खिलौने किसी काले पहाड़ के नीचे दब गये हैं, जहाँ से उन्हें निकाल पाना संभव नहीं है? अथवा इन्हें ज्ञान-प्रदान करने वाली सारी पाठशालाओं की इमारतें किसी भूकम्प में नष्ट हो गई हैं? इन बच्चों को खेलने के लिए मैदान, बाग-बगीचे और घरों के आँगन चाहिए, परन्तु क्या ये सारे ही साधन अचानक नष्ट हो गये हैं? यदि ऐसा नहीं है तो फिर किस कारण ये बच्चे काम पर जा रहे हैं? किन कारणों से इन्हें मजदूरी करने को विवश होना पड़ रहा है? यह अत्यधिक चिन्तनीय विषय है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. 'अन्तरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें' इससे कवि क्या कहना चाहता है?

प्रश्न 2. 'काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं?'–कथन में 'काले पहाड़' किसका प्रतीक लगता है?

प्रश्न 3. कवि ने सारे विद्यालयों की इमारतों को भूकम्प में ढह जाने की बात क्यों की है?

प्रश्न 4. 'खत्म हो गए हैं एकाएक' कथन से कवि ने क्या भाव व्यक्त किया है?

प्रश्न 5. कवि ने रंग-बिरंगी किताबों के खत्म होने का क्या कारण बताया?

प्रश्न 6. काले पहाड़ के नीचे खिलौनों के दबने का तात्पर्य क्या है?

उत्तर–1. कवि यह प्रश्न कर रहा है कि खेलने की उम्र में इन्हें काम पर क्यों जाना पड़ रहा है? क्या इनके खेलने की सारी गेंदें अन्तरिक्ष में गिर गयीं? जिसके कारण ये काम पर जा रहे हैं कि इन्हें खेलने को कुछ नहीं मिल रहा।

2. इसमें काला पहाड़ भयंकर आर्थिक विषमता, शोषण-उत्पीड़न एवं स्वार्थपरता को बढ़ावा देने वाली विचारधारा का प्रतीक है। शोषक लोग ही इस समस्या के मूल कारण हैं, जिससे आर्थिक विषमता एक अतीव भयानक मजबूरी बन गई है।

3. अगर विद्यालयों की इमारतें होतीं, तो सारे बच्चे वहाँ पढ़ने जाते, वहाँ पर अपना बचपन ज्ञान-प्राप्ति में व्यतीत करते। परन्तु सुबह-सुबह सब बच्चे काम पर जा रहे हैं, इससे प्रतीत होता है कि विद्यालयों की इमारतें भूकम्प में ढह गई हैं। बच्चों को पढ़ने-लिखने का अवसर या सुविधा न मिलने से कवि ने ऐसा कहा है।

4. इस कथन से कवि कहना चाहते हैं कि बच्चों के खेलने के लिए सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन सभी क्या एक-एक करके खत्म हो गए हैं? क्यों नहीं बच्चे अपना बचपन खेल-कूद या पढ़ने में बिताते हैं?

5. कवि ने पूछा कि बच्चों के पढ़ने-लिखने की जो किताबें थीं क्या उन्हें दीमकों ने चट कर दिया है? आखिर क्यों बच्चे पढ़ाई न करके काम पर जा रहे हैं?

6. बच्चों के खिलौने उनकी इच्छाओं की तरह ही छोटे एवं नाजुक होते हैं। उनकी इच्छाओं का काले पहाड़ अर्थात् विषमता व अभाव के पहाड़ के नीचे दब जाने की भयावहता प्रकट करता है।

(3)

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल
पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

कठिन-शब्दार्थ–हस्बमामूल = यथावत्।

भावार्थ–कवि सोचता है कि यदि बच्चे सुबह-सुबह मजदूरी करने जा रहे हैं, तो इसका अर्थ है कि दुनिया में खिलौने, पुस्तकें, मनोरंजन के उपकरण, खेल के साधन एवं पाठशालाएँ आदि सब नष्ट हो चुके हैं। बच्चों के मनोरंजन एवं उपयोग की चीजें नहीं रहीं, तो फिर इस दुनिया में बचा ही क्या है? वस्तुत: यदि ऐसा है, तो कितनी बड़ी भयानक बात है? परन्तु सच तो यह है कि इस संसार में खेलने-कूदने और मनोरंजन की सारी चीजें ज्यों की त्यों उपलब्ध हैं फिर भी देश के बच्चे इनसे वंचित हैं, क्योंकि इस संसार की हजारों सड़कों पर अर्थात् सर्वत्र ही बहुत छोटे-छोटे बच्चे रोजाना काम पर जाते हैं। अर्थात् यह समस्या केवल हमारे देश की नहीं है, अपितु सारे विश्व के गरीब देशों की समस्या है। इस कारण बच्चों का सुखमय बचपन छिन रहा है और वे रोजाना काम पर जा रहे हैं। यह बाल-मजदूरी की समस्या वास्तव में ही चिन्ता का विषय है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. 'अगर ऐसा होता' कथन से कवि ने क्या संकेत किया है?

प्रश्न 2. इससे भी ज्यादा भयानक स्थिति क्या है?

प्रश्न 3. 'दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए' से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न 4. 'बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे' कथन से कवि ने क्या व्यंजना की है?

प्रश्न 5. 'हैं सारी चीजें हस्बमामूल' से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न 6. फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में? कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर–1. इससे कवि ने संकेत किया है कि अगर बच्चों के खेलने-कूदने के साधन, रंग-बिरंगी पुस्तकें, खिलौने, पढ़ने-लिखने के विद्यालय तथा बचपन के मनोरंजन के सारे उपकरण नष्ट हो जाते, तो तब इस दुनिया की स्थिति भयानक हो जाती और इसमें बचपन का सरस जीवन पूरी तरह बेजान हो जाता।

2. इससे भी अधिक भयानक स्थिति यह है कि बच्चों के मनोरंजन के सारे साधन, खिलौने, खेलने-कूदने आदि की सब चीजें संसार में उपलब्ध हैं, पर वे गरीब जरूरतमन्द बच्चों को नहीं मिल रही हैं, वे उनसे वंचित हो रहे हैं, क्योंकि उनके सामने पेट भरने की विकराल समस्या आ खड़ी हुई है।

3. इससे यह आशय है कि बच्चों का काम पर जाना किसी एक देश की समस्या नहीं है। बाल-श्रम की यह समस्या आर्थिक विषमता से ग्रस्त समस्त गरीब देशों में रहने वाले बच्चों की है इसलिए यह समस्त विश्व की भयानक मानवीय समस्या है।

4. इससे कवि ने यह व्यंजना की है कि आर्थिक विषमता से ग्रस्त समाज में बच्चों का किस तरह शोषण होता है, किस तरह उन्हें बचपन के सुखों से वंचित किया जाता है? बाल-श्रम की समस्या समाज पर कितना बड़ा कलंक है, मानव-समाज का कितना बड़ा अभिशाप है?

5. इससे कवि का आशय है कि दुनिया में बच्चों के खेलने की चीजें, पढ़ने के लिए किताबें तथा खेलने-कूदने के लिए मैदान-आँगन भी यथावत हैं अर्थात् सब हैं फिर भी बच्चों का काम पर जाना चिन्तनीय विषय है।

6. कवि अत्यन्त संवेदनशीलता के साथ कहते हैं कि अगर बच्चों के लिए संसार में सब कुछ खत्म हो गया है तो फिर इस दुनिया में क्या बचा है? किन्तु ऐसा नहीं है। समस्या तो बाल श्रम की है जो पूरे विश्व में व्याप्त है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है, उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

उत्तर–कविता की पहली दो पंक्तियाँ पढ़कर और विचार करने पर हमारे मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है वह करुणा और चिंता से पूरित है। करुणा इस बात को लेकर जागती है कि कहाँ तो इन बच्चों की खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने की अवस्था है। वह इस स्थिति से वंचित होकर अपने पेट की भूख मिटाने के लिए इतनी कड़ाके की सर्दी में बाल श्रमिक रूप में मजदूरी करने जा रहे हैं, जहाँ इनका शोषण हो रहा है। चिन्ता का भाव इसलिए उभरता है कि इनकी मजबूरी, विवशता और शोषण का जो चक्र दुनिया में चल रहा है, वह कब समाप्त होगा और उन्हें सम्पन्न लोगों के बच्चों की तरह कब जीवन जीने का अवसर प्राप्त होगा?

प्रश्न 2. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

उत्तर–किसी बात की सामान्य जानकारी, सूचना या क्रमिक वर्णन को विवरण कहा जाता है। विवरण को सरसरी दृष्टि से देखकर-पढ़कर भुला देते हैं या सुना-अनसुना भी कर देते हैं। विवरण उतना आकर्षक नहीं होता है। इसके विपरीत जब प्रश्न के रूप में पूछा जाता है, तो उसके उत्तर की अपेक्षा बनी रहती है तथा प्रश्न का मस्तिष्क पर असर बना रहता है। इसलिए ऐसा पूछा जाना चाहिए कि ये बच्चे स्कूल न जाकर मजदूरी करने क्यों जा रहे हैं? इनके सामने ऐसी क्या विवशता है? इन्हें बाल-श्रम जैसे अपराध में क्यों धकेला जा रहा है? ऐसा प्रश्न करने पर समस्या को लेकर चिन्तन किया जायेगा, समाधान खोजने का प्रयास होगा तथा उन बच्चों के बचपन को बचाया जा सकेगा।

प्रश्न 3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

उत्तर–सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे निम्नलिखित कारणों से वंचित हैं—

(1) समाज में आर्थिक विषमता के कारण गरीब बच्चों को ऐसे उपकरणों से वंचित रहना पड़ता है।

(2) गरीब परिवारों में बच्चों को काम पर जाकर कुछ कमाना जरूरी होता है, जिससे परिवार का खर्च चलाया जा सके।

(3) सरकार ने बाल-श्रम सम्बन्धी कठोर कानून बना रखा है, परन्तु उसके क्रियान्वयन में ढीलापन है।

(4) इस सामाजिक समस्या के निवारण के लिए न ही सरकार या समाज के पास इतने साधन हैं, न उपाय हैं और न ही इच्छा शक्ति है। इसलिए गरीब बच्चे इसी प्रकार बाल जीवन की सुख-सुविधाओं में वंचित होते रहेंगे।

प्रश्न 4. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर–बच्चों को काम पर जाते देखकर भी उस ओर उदासीनता रखने के अनेक कारण हो सकते हैं। इन कारणों में पहला कारण यह है कि अधिकतर लोग धन प्राप्ति की दौड़ में अपने आप में ही इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें दूसरों के सुख-दु:ख से कोई लेना-देना ही नहीं रहता है। दूसरा कारण यह है कि उनमें जागरूकता का अभाव है जिसके कारण अधिकतर लोग यह सोच ही नहीं पाते कि हर बच्चे को प्राथमिक सुख-सुविधा दिलाना सरकार का कर्त्तव्य है। इसलिए वे भगवान और भाग्य को दोष देकर कोई प्रयत्न करने से रह जाते हैं। साथ ही लोगों की अपनी विवशता भी होती है। वे केवल इतना ही सोचकर रह जाते हैं कि हम अकेले कुछ भी नहीं कर सकते। धीरे-धीरे उनकी विवशता उदासीनता में बदल जाती है।

प्रश्न 5. आपने अपने शहर में बच्चों को कब-कब और कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा है?

उत्तर–हमने अपने शहर में बच्चों को अनेक स्थलों पर काम करते देखा। जैसे—ढाबों पर, चाय की दुकानों पर, बीड़ी, माचिस, अगरबत्ती एवं आतिशबाजी के कारखानों पर, रेलवे स्टेशन, बस अड्डों पर चाय बेचते और बूट पालिश करते हुए, मोटर गैराजों और खराद मशीनों पर तथा सुबह-शाम मोहल्लों एवं गलियों में कचरा बीनने का काम करते हुए देखा।

प्रश्न 6. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर–बच्चों का काम पर जाना एक बड़े हादसे के समान इसलिए है कि उनकी जो अवस्था खेलने-कूदने और पढ़ने की होती है, उस अवस्था में गरीबी के कारण उन्हें अपने और अपने परिवार के पेटों की भूख मिटाने के लिए काम पर जाना पड़ता है। यह उनके साथ अन्याय है। इससे उनका भविष्य अंधकार में डूब जाता है। उनका बचपन में मजबूरी के कारण काम करना धरती के एक बड़े हादसे से कम नहीं है।

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 7. काम पर जाते किसी बच्चे के स्थान पर अपने-आप को रखकर देखिए। आपको जो महसूस होता है, उसे लिखिए।

उत्तर–सुबह काम पर जाते हुए बच्चों को देखकर जब मैं स्वयं को एक वैसा बच्चा मानकर सोचने लगता हूँ तो मुझे महसूस होता है कि स्कूल जाने वाले अन्य बच्चों की तरह मैं भी होता और ड्रेस पहनकर बैग लेकर स्कूल जाता। सुबह कोहरे में कई माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल-बस में बिठाने जाते हैं, कुछ उन्हें स्वयं स्कूल तक छोड़ने जाते हैं। उन्हें देखकर मेरा भी मन करता कि मैं किसी स्कूल में पढ़ूँ, रंग-बिरंगी किताबें देखूँ और मनोरंजन के साधनों से आनन्द प्राप्त करूँ। परन्तु परिवार की आमदनी में अपना योगदान बना रहे, अपनी पेट-पूर्ति की यथासम्भव व्यवस्था होती रहे, उस विचार से स्कूल की बजाय काम पर जाना अपने भाग्य का खेल मानता हूँ।

प्रश्न 8. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए?

उत्तर–मेरे विचार में बच्चों को काम पर भेजने की बजाय उन्हें स्कूल में पढ़ने के लिए भेजना चाहिए। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर योग्य बनावें, इससे उनके सुन्दर भविष्य का निर्माण करें। बच्चों की कच्ची उम्र होती है, कोमल भावनाएँ होती हैं, कमजोर शरीर होता है और भावुक मन होता है। अतएव उनका बचपन सुरक्षित सानन्द बनाने के लिए उन्हें पढ़ने-लिखने के साथ खेलने-कूदने के अवसर मिलने चाहिए। ऐसा करने से ही बच्चे भविष्य के श्रेष्ठतम नागरिक बन सकते हैं तथा अपनी, समाज की एवं देश की उन्नति में पूरा योगदान कर सकते हैं।

पाठेतर सक्रियता–

- **'वर्तमान युग में सभी बच्चों के लिए खेलकूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं'–इस विषय पर वाद-विवाद आयोजित कीजिए।**

उत्तर–पक्ष में विचार–वर्तमान काल में सभी बच्चों के लिए खेलकूद और शिक्षा के समान अधिकार प्राप्त हैं। सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान चला रखा है, जिसमें चौदह वर्ष तक के हरेक बच्चे को निःशुल्क शिक्षा सुविधा दी जा रही है। दोपहर का भोजन, पाठ्य-पुस्तकें तथा लेखन-सामग्री भी दी जा रही है। अब सरकारी स्कूलों में बारहवीं कक्षा तक शिक्षण-शुल्क नहीं लिया जाता है और पाठ्य-पुस्तकें भी निःशुल्क मिलती हैं। इस प्रकार सभी बच्चों को इन सभी सुविधाओं का लाभ उठाकर अपना बचपन सुधारना चाहिए।

विपक्ष में विचार–हमारे देश में शासन की ओर से सभी बच्चों को खेलकूद और शिक्षा के समान अवसर दिये गये हैं, परन्तु यह बात कुछ असंगत है। क्योंकि एकदम गरीब, बेसहारा या अनाथ बच्चों को पहले रोटी की चिन्ता रहती है। वे यदि काम न करें तो भूखे रह जाते हैं, उन्हें सहारा देने वाला कोई नहीं है। वे मैले-कुचैले, झोंपड़ियों या खुले आसमान में भूखे रहकर खेलकूद एवं शिक्षा की बात कैसे सोच सकते हैं? इन कारणों से वे मजबूरी में कोई काम करके जीवनयापन करते हैं। उनके लिए सर्वशिक्षा अभियान कोरा नारा है। जब तक गरीबी का कोई उपचार नहीं किया जायेगा तब तक बच्चे काम पर जाते रहेंगे।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. कवि ने अपने युग की सबसे भयानक समस्या माना है—
(क) बच्चों का पढ़ने न जाने को (ख) बच्चों द्वारा मजदूरी पर जाने को
(ग) बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को (घ) बढ़ती हुई महँगाई को
2. कवि की पीड़ा का विषय है—
(क) देश में बढ़ती हुई जनसंख्या (ख) देश में बढ़ती हुई बेरोजगारी
(ग) देश में बढ़ता हुआ शोषण-अन्याय (घ) देश में बच्चों को मजदूरी करने को विवश होना
3. बच्चे काम पर जाते हैं। इसका कारण है—
(क) खेल-कूद के साधनों का न होना (ख) विद्यालयों का ढह जाना
(ग) उनकी किताबों का फट जाना (घ) माँ-बाप का गरीब होना
4. कवि के अनुसार सबसे अधिक भयानक स्थिति है—
(क) बच्चों के न खेलने की (ख) बच्चों के न पढ़ने की
(ग) बच्चों के काम पर जाने की (घ) बच्चों के उद्दंड होने की
5. कवि ने सबसे भयानक पंक्ति किसे बताया है?
(क) बच्चे (ख) काम पर जाना
(ग) बच्चों का काम पर जाना (घ) उपर्युक्त सभी
6. कवि ने किस तरह लिखा जाना भयानक बताया है?
(क) विवरण (ख) प्रश्न (ग) उत्तर (घ) उपर्युक्त सभी
7. कवि ने बच्चों की गेंदों को कहाँ गिरने की आशंका बताई?
(क) नदी (ख) सागर (ग) अन्तरिक्ष (घ) आकाश
8. बच्चों के सारे खिलौनों को कहाँ दबा होना बताया है?
(क) पहाड़ के नीचे (ख) लाल पहाड़ के नीचे
(ग) काले पहाड़ के नीचे (घ) कोई नहीं
9. प्रस्तुत कविता में 'भूकम्प में क्या ढह गया' की स्थिति दर्शायी है—
(क) मकान (ख) दुकान (ग) मदरसा (घ) बाजार
10. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कवि ने यह भयानक स्थिति कहाँ की बताई है?
(क) देश की (ख) विदेश की (ग) विश्व की (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर-माला–1. (ख) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग) 6. (क) 7. (ग) 8. (ग) 9. (ग) 10. (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. हमारे समय की सबसे .... पंक्ति है यह।

2. क्या .... में गिर गई है सारी गेंदे?
3. क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे ....?
4. कितना .... होता अगर ऐसा होता?
5. पर दुनिया की हजारों .... से गुजरते हुए।
6. बच्चे, बहुत .... बच्चे, काम पर जा रहे हैं।

उत्तर-माला—1. भयानक 2. अन्तरिक्ष 3. खिलौने 4. भयानक 5. सड़कों 6. छोटे-छोटे।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने विश्व की कौनसी समस्या पर ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश की है?

उत्तर—कवि ने बाल-श्रम की विकराल समस्या की ओर ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश की है।

प्रश्न 2. कवि ने वर्तमान की सबसे भयानक पंक्ति किसे बताया है?

उत्तर—यही कि 'कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं।'

प्रश्न 3. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' प्रस्तुत कविता में कवि का कौनसा भाव व्यंजित होता है?

उत्तर—कवि का संवेदनशील भाव व्यंजित होता है जिसमें बच्चों से बचपन छीन लिए जाने की पीड़ा है।

प्रश्न 4. कवि के अनुसार 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' को किस तरह लिखा जाना चाहिए?

उत्तर—कवि के अनुसार 'बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं' को प्रश्नवाचक शैली में लिखा जाना चाहिए।

प्रश्न 5. रंग-बिरंगी किताबों को किसके द्वारा नष्ट होने की आशंका जताई है?

उत्तर—रंग-बिरंगी किताबों को दीमक द्वारा नष्ट किये जाने की आशंका बताई है।

प्रश्न 6. 'कितना भयानक होता अगर ऐसा होता' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर—कवि का आशय बच्चों के खेलने-कूदने व पढ़ने की सारी चीजें नष्ट हो जातीं तो कितना भयानक होता, से है।

प्रश्न 7. 'दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए बच्चे' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—कवि ने बताया है कि बाल-श्रम की समस्या सिर्फ हमारे देश में नहीं बल्कि विश्व में फैली हुई है।

प्रश्न 8. 'बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं?' कवि इसमें क्या जानना चाहते हैं?

उत्तर—कवि जानना चाहते हैं कि इन बच्चों की कौनसी ऐसी मजबूरी है जिसके कारण ये काम पर जा रहे हैं।

प्रश्न 9. बच्चों के काम पर जाने की जवाबदेही कवि किसकी मानते हैं?

उत्तर—कवि जवाबदेही सरकारी तंत्र की मानते हैं जिनकी सरकारी योजनाओं का लाभ वंचित वर्ग को नहीं मिल पा रहा है।

प्रश्न 10. 'काला पहाड़' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर—काला रंग निराशा, वेदना, पीड़ा व भ्रष्टाचार को इंगित करता है। भ्रष्टाचार के पहाड़ तले सरकारी योजनाओं व सुविधाओं के दब जाने से आशय है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. बच्चों को काम पर जाते देखकर कवि ने क्या-क्या प्रश्न उठाये?

उत्तर—सुबह-सुबह बच्चों को काम पर जाते देखकर कवि ने अनेक प्रश्न उठाए। उसने प्रश्न किये कि—

(1) क्या सारी गेंदें अन्तरिक्ष में गिर गई हैं?

(2) क्या रंगीन किताबों को दीमक चट कर गई है?

(3) क्या सारे खिलौने काले पहाड़ के नीचे दब गये हैं?

(4) क्या सारे स्कूल भूकम्प से नष्ट हो गये हैं?

(5) क्या सारे मनोरंजन के स्थल खत्म हो गये हैं?

प्रश्न 2. बच्चों को काम पर जाते देखकर कवि क्यों चिन्तित है?

उत्तर—बच्चों की उम्र पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने एवं मनोविनोद करने की होती है, लेकिन जब वे पेट की भूख मिटाने की मजबूरी के कारण काम पर जाते रहेंगे तो वे अनपढ़ रह जायेंगे। अनपढ़ता देश और समाज के लिए कलंक है। साथ ही उनका शारीरिक तथा मानसिक शोषण होता है। इन बातों को लेकर कवि चिन्तित हो रहा है।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार वर्तमान काल की सबसे भयानक समस्या क्या है?

उत्तर—कवि के अनुसार वर्तमान काल की सबसे भयानक समस्या बाल-श्रम की है। जो उम्र बच्चों के पढ़ने-लिखने की होती है उस अवस्था में वे विद्यालय न जाकर कारखानों, होटलों, ढाबों और दुकानों पर मजदूरी करने के लिए बेबसी में जाते हैं। यही बाल-मजदूरी वर्तमान काल की सबसे भयंकर समस्या है।

प्रश्न 4. बच्चे काम पर जा रहे हैं। यह एक भयानक प्रश्न क्यों बनता है?

उत्तर—खेलने-खाने और पढ़ने की उम्र में बच्चों का रोजी-रोटी के लिए काम पर जाना निश्चित रूप से एक भयानक प्रश्न या समस्या है। इस कारण उनका बचपन मारा जाता है और भविष्य अंधकारमय हो जाता है। इसलिए उनका काम पर जाना एक भयानक प्रश्न है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बाल मजदूरी रोकने के लिए समाज को जागरूक करना है जिससे बच्चों का बचपन उनसे न छिने और उन्हें पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद का सुअवसर प्राप्त हो सके। इस दृष्टि से कवि काम पर जाने वाले बच्चों के प्रति चिन्ता व्यक्त करता है। दूसरी ओर सरकार ने बाल-श्रम की रोकथाम के लिए कानून बना रखा है, परन्तु उसका पालन नहीं हो रहा है। कवि इस आशय से सरकारी-तन्त्र को और समाज को इस समस्या के निवारण हेतु सचेत कर बच्चों को उनका अधिकार दिलवाने की बात कहता है।

प्रश्न 2. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता में समाज के लिए क्या सन्देश दिया गया है?

अथवा

'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता में कवि ने समाज को किस तरह जगाने का प्रयास किया है?

उत्तर—प्रस्तुत कविता में कवि ने बच्चों के काम पर जाने की समस्या को प्रमुखता से उभारा है। इसे लक्ष्यकर कवि ने समाज को सजग करने का प्रयास किया है। गरीब बच्चों को लेकर समाज की संवेदनहीनता एवं भावशून्यता पर व्यंग्य किया गया है। कवि समाज में करुणा, कर्त्तव्य भावना एवं मानवीय संवेदना जगाना चाहता है, ताकि सब लोग बालश्रम को देखकर चिन्तित हों और सभी मिलकर ऐसे बच्चों को पढ़ने-लिखने का सुअवसर प्रदान करें।

प्रश्न 3. 'कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं'—इसमें बाल-श्रम की समस्या को सड़क पर क्यों दर्शाया गया है?

उत्तर—कवि बच्चों को काम पर जाते हुए किसी गाँव की पगडंडी पर नहीं देखता है, अपितु वह उन्हें कोहरे से ढँकी शहर की सड़क पर देखता है। गाँवों के लोग कुछ संवेदनशील एवं सहयोगी होते हैं, जबकि शहरी लोगों में सहृदयता तथा संवेदनशीलता का स्तर घटता जा रहा है। वे बच्चों से काम लेते हैं, परन्तु उन पर उतनी दया नहीं दिखाते हैं। शहर की सड़कों के आसपास ही प्रायः गरीबों की झोंपड़ियाँ होती हैं। वहाँ से बच्चे रोजाना काम पर जाते हैं। इस तरह कवि ने इसे शहरों या कस्बों की समस्या दर्शाया है।

प्रश्न 4. 'काले पहाड़ के नीचे दब गये हैं सारे खिलौने'—इससे किस व्यवस्था की ओर संकेत किया गया है? पठित कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर—कवि ने समाज में प्रचलित शोषण-उत्पीड़न की व्यवस्था को काला पहाड़ कहा है। गरीब बच्चों से काम तो पूरा लिया जाता है, परन्तु उन्हें न तो पूरी मजदूरी दी जाती है और न कोई सुविधा दी जाती है। कवि चाहता है कि समाज में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए ताकि बच्चे खेलें-कूदें और पढ़ें। वे खिलौनों से वंचित न होवें। वे बचपन में सुलभ मनोविनोद के सभी साधन प्राप्त करें। परन्तु हमारे समाज में इतनी सहृदयता एवं सुव्यवस्था नहीं है। स्वार्थी लोग शोषण करना ही जानते हैं। कवि ने ऐसी व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।

प्रश्न 5. बच्चों के काम पर जाने के वास्तविक कारण क्या हो सकते हैं? कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर—बच्चों के काम पर जाने का मुख्य कारण है, जीवन जीने की मजबूरी। जो बच्चे एकदम गरीब परिवार के होते हैं, कच्ची झोंपड़ियों या खुली जमीन पर कच्चे घरों में रात बिताते हैं, जो बच्चे अनाथ होते हैं या माता-पिता बीमार, बेरोजगार या असमर्थ होते हैं और आजीविका का कोई भी साधन नहीं रहता है, ऐसे बच्चे पेट भरने की खातिर, तन ढकने और जिन्दा रहने की मजबूरी से काम पर जाते हैं। अतः काम पर जाने का वास्तविक कारण बच्चों की हर तरह से विवशता ही होती है।

निबन्धात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. बच्चों के काम पर जाने की स्थिति समाज और देश के लिए भयानक कैसे है? इसके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर–बच्चों के लिए बचपन का समय खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने के लिए होता है। स्वाभाविक रूप से बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास हेतु उनका खेलना-कूदना एवं पढ़ना-लिखना सर्वथा उचित माना गया है। इससे ही उनके जीवन की नींव मजबूत होती है, व्यक्तित्व का सही विकास हो पाता है। परन्तु इसके विपरीत बच्चों को काम पर भेजा जाए, उनसे मजदूरी करायी जाए और बचपन को मजबूरी से दबा दिया जाए, तो उनका जीवन एकदम कष्टमय, असन्तुलित एवं तनावग्रस्त हो जायेगा और वे देश के श्रेष्ठ नागरिक नहीं बन पायेंगे। अत: बच्चों के काम पर जाने के परिणाम देश व समाज के लिए अच्छे नहीं रहेंगे।

प्रश्न 2. क्या बच्चों को काम पर भेजा जाना उचित है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर–यह सभी का मानना है कि बचपन खुशहाल होना चाहिए। बच्चों को बचपन में खेलने-कूदने तथा पढ़ने-लिखने का अवसर देना चाहिए। बचपन से ही धन कमाने या पेट की भूख शान्त करने के लिए उन्हें विवश नहीं किया जाना चाहिए। यदि बच्चों पर उनके परिवार का बोझ डाला जायेगा, तो उनका जीवन सदा कष्टमय एवं कुरूप बना रहेगा। उनके व्यक्तित्व का सही विकास नहीं हो पायेगा और वे अनेक बुराइयों से ग्रस्त हो जायेंगे। अतएव बच्चों को काम पर भेजा जाना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं रहता है।

प्रश्न 3. बच्चों को काम पर न भेजा जाए या उनसे काम न लिया जाए, इस सम्बन्ध में सरकार ने क्या नियम बनाए हैं?

उत्तर–हमारे संविधान के अनुच्छेद 24 में कारखानों, ढाबों, दुकानों आदि में बच्चों को काम पर नियुक्त करने का निषेध किया गया है। चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी कारखाने, खान या अन्य स्थानों पर काम करने या मजदूरी पर रखने के लिए कठोर प्रतिबन्ध है। कुछ लोग कम मजदूरी देने से या केवल पेटपूर्ति की विवशता रखने वाले बच्चों से मनचाहा काम लेते हैं। उन्हें बंधुआ श्रमिक बना लेते हैं और प्रताड़ना के साथ बेगार लेते हैं। सरकार ने इस तरह की स्थिति के लिए कठोर नियम बनाये हैं। इस तरह बच्चों से परिसंकटमय काम लेना कानूनी तौर पर अपराध माना गया है।

प्रश्न 4. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का मूल भाव या प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का मूल भाव बच्चों से बचपन छीन लिये जाने की पीड़ा व्यक्त करना है। बच्चों की जो उम्र खेलने-कूदने, पढ़ाई करने एवं निश्चिन्त खाने-पहनने की होती है, उस उम्र में उन्हें मजबूरी में काम पर जाना पड़े, यह हमारे समाज की घोर विडम्बना है। समाज की संवेदनशीलता मर गई है, घोर आर्थिक विषमता एवं शोषण का चक्र मानव को पशु जैसा हृदयहीन बना रहा है। प्रस्तुत कविता का प्रतिपाद्य ऐसी सामाजिक-आर्थिक विडम्बना की ओर इशारा या व्यंग्य करना है, जिसमें कुछ बच्चे खेल, शिक्षा एवं जीवन की उमंग से वंचित रह रहे हों। बच्चों का बचपन बचे, उनका शोषण न हो, यही इस कविता का कथ्य है। क्योंकि आज के बच्चे, कल का भविष्य हैं। इसी बात को याद दिलाने की भरपूर कोशिश कवि द्वारा की गई है।

रचनाकार का परिचय सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. कवि राजेश जोशी का जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर–कवि राजेश जोशी का जन्म सन् 1946 में मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़ में हुआ। राजेश जोशी ने पत्रकारिता के साथ-साथ अध्यापन भी किया। राजेश जोशी के अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए, जिनमें 'एक दिन बोलेंगे पेड़', 'मिट्टी का चेहरा', 'नेपथ्य में हँसी' आदि हैं। इनकी कविताएँ गहरे सामाजिक अभिप्राय वाली होती हैं। वे जीवन के गहरे संकट में भी गहरी आस्था उभारती हैं। उनकी कविताओं में स्थानीय बोली-बानी, मिजाज सभी व्याप्त हैं। उनके काव्यलोक में मनुष्यता को बचाए रखने की प्रबल आस है। उन्हें माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मध्यप्रदेश का शिखर-सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुका है।

❑❑❑

कृतिका : भाग-1

(पूरक पुस्तक)

1. इस जल प्रलय में

(फणीश्वरनाथ 'रेणु')

लेखक-परिचय—प्रसिद्ध कहानी-लेखक फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म गाँव औराही हिंगना, जिला पूर्णिया (बिहार) में सन् 1921 में हुआ। स्कूली शिक्षा नेपाल में प्राप्त कर सन् 1942 में स्वतंत्रता आन्दोलन के सेनानी रहे। इनका निधन सन् 1977 में हुआ। इनके द्वारा रचित अनेक आंचलिक कहानियाँ अतीव प्रसिद्ध हैं। इनके कहानी संग्रह, उपन्यास एवं रिपोर्ताज अपनी भाषा-शैली की विशिष्टता के लिए अनुपम माने जाते हैं।

पाठ-सार—प्रस्तुत रिपोर्ताज में लेखक ने सन् 1967 में पटना में आयी बाढ़ के भयानक दृश्यों को घटनावार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उस समय लेखक पटना के गोलंबर इलाके में रहता था। लगातार अठारह घण्टे वर्षा होने से पटना का पश्चिमी क्षेत्र पानी में डूब गया था। बाढ़ आने के कारण लोगों ने अपने-अपने घरों में खाने-पीने की जरूरी चीजों का इन्तजाम कर लिया था। लेखक अपने एक मित्र के साथ दिन में बाढ़ का जायजा लेने कॉफी हाउस तक गया। वहाँ से लौटते समय लेखक ने अफ़रा-तफ़री का माहौल देखा। वह मैगज़ीन कार्नर से कुछ पत्रिकाएँ लेकर घर लौटा। गोलंबर में जनसम्पर्क की गाड़ियों से लोगों को सावधान रहने की घोषणाएँ की जा रही थीं। सम्भावना के अनुसार उस क्षेत्र में बाढ़ का पानी बारह बजे रात तक आ सकता था। इस कारण लेखक रात में सो नहीं सका। सुबह पाँच बजे बाढ़ का पानी उस इलाके में आ गया था। उससे चारों ओर शोर हो रहा था, बाढ़ का पानी सब जगह भर गया था। लेखक उस दृश्य को मूवी कैमरे या टेपरिकार्डर में कैद करना चाहता था, परन्तु उसके पास ये चीजें नहीं थीं। उसकी कलम भी चोरी चली गई थी। वह बाढ़ के रोमांचक दृश्य को देखता रहा।

कठिन-शब्दार्थ—पनाह = शरण। सपाट = समतल। भंसने = फंसने। अविराम = लगातार। प्लावित = डूब गए। अनर्गल = निरर्थक। स्वगतोक्ति = अपने आप को कही गयी बात। एरिया = क्षेत्र। अस्फुट = अस्पष्ट। पटनियाँ = पटना के निवासी। उत्कर्ण = कान लगाकर, ध्यानपूर्वक। मुहर्रमी = दुःखी, निराशापूरित। अलमस्त = पूरी तरह से मस्त। कुकुर = कुत्ता। नटुआ = नट, कलाकार। झिंझिर = जल-विहार। वाल्यूम = आवाज। पनियाँ = बाढ़ का पानी। टुंग फुंग = आवाज। डोली = मुंडेर। रव = ध्वनि। रेला = धक्का, बहाव।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे?

उत्तर—बाढ़ की खबर सुनकर लोग नीचे का सामान ऊपर रखने लगे। जरूरी चीजों जैसे ईंधन, मोमबत्ती, दियासलाई, पीने का पानी आदि का संग्रह करने लगे ताकि बाढ़ से घिर जाने पर कुछ दिनों का गुजारा चल सके। कुछ निचले इलाकों के लोग अपना सामान रिक्शा, टमटम, टेम्पो आदि में लादकर अन्यत्र ले जा रहे थे।

प्रश्न 2. बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था?

उत्तर—लेखक ने अपने जीवन में बाढ़ के दृश्यों को कई बार देखा था और बाढ़ पीड़ितों की सहायता भी की थी लेकिन बाढ़ से स्वयं अब तक घिरा नहीं था। इसीलिए लेखक पटना में आयी बाढ़ की सही स्थिति जानने और उसका भयानक रूप देखने के लिए उत्सुक था।

प्रश्न 3. सबकी जबान पर एक ही जिज्ञासा—'पानी कहाँ तक आ गया है?'—इस कथन से जनसमूह की कौनसी भावनाएँ व्यक्त होती हैं?

उत्तर—इस कथन से जनसमूह की ये भावनाएँ व्यक्त होती हैं—

(1) कहीं बाढ़ का पानी ज्यादा तो नहीं आया? (आशंका)

(2) कितनी विकराल बाढ़ आयी होगी? (जिज्ञासा)

(3) बाढ़ से कितनी हानि होगी, कैसे सामना करना पड़ेगा? (उत्सुकता)

(4) बाढ़ यदि भयानक रूप धारण करे तो क्या होगा? (भय)

प्रश्न 4. 'मृत्यु का तरल दूत' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर—बाढ़ के गेरुआ-झाग-फेन से भरे पानी के तेज बहाव को 'मृत्यु का तरल दूत' कहा गया है, क्योंकि प्रतिवर्ष भीषण बाढ़ आने से हजारों प्राणियों की जीवन-लीला समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 5. आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ से कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर—बाढ़ जैसी आपदाओं से निपटने के लिए निम्नलिखित सुझाव कारगर हो सकते हैं—

(1) बाढ़ वाले क्षेत्रों में बड़े बाँधों का निर्माण करवाया जावे, ताकि पानी के बहाव को रोका जा सके।

(2) बड़े बाँधों से छोटी-छोटी नहरें निकाली जावें, ताकि पानी का दबाव कम हो।

(3) वृक्षारोपण को बढ़ावा देकर भूखनन एवं अवैध कटान पर रोक लगाई जावे।

(4) मकानों की नींवें एवं दीवारों का निर्माण मजबूत ढाँचे से किया जावे।

(5) बाढ़-नियंत्रण विभाग द्वारा समय-समय पर आपदा की सूचना उपलब्ध कराई जावे, ताकि जन-धन की हानि न हो सके।

(6) बाढ़ नियंत्रण विभाग को सभी संभावित खतरों से निपटने के लिए पूर्व में ही साधन तैयार रखने चाहिए ताकि जरूरत के समय उनका सदुपयोग किया जा सके।

(7) स्वयंसेवी संस्थाओं को आपदा से निपटने के लिए बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए और सहयोग करना चाहिए।

प्रश्न 6. 'ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए............अब बूझो!' इस कथन के द्वारा लोगों की किस मानसिकता पर चोट की गई है?

उत्तर—इस कथन से लोगों की उस मानसिकता पर चोट की गई है जिसमें संकट के समय लोग एक-दूसरे की सहायता करने की बजाय केवल निहित स्वार्थों को महत्त्व देते हैं और केवल अपने ही हित-सुख की चिन्ता करते हैं।

प्रश्न 7. खरीद-बिक्री बन्द हो चुकने पर भी पान की बिक्री अचानक क्यों बढ़ गई थी?

उत्तर—बाढ़ आने के कारण सामान्य दुकानों पर भी खरीद-बिक्री बन्द हो गई थी। परन्तु बाढ़ का हाल जानने, उसका दृश्य देखने के लिए लोग घरों से निकल कर पान की दुकानों के आसपास एकत्र होने लगे। वहाँ पर वे पान खाने के साथ ही बाढ़ की भीषणता पर चर्चा भी करते। इस कारण पान की बिक्री अचानक बढ़ गई थी।

प्रश्न 8. जब लेखक को यह एहसास हुआ कि उसके इलाके में भी पानी घुसने की संभावना है, तो उसने क्या-क्या प्रबन्ध किये?

उत्तर—बाढ़ का पानी अपने इलाके में घुस आने की संभावना से लेखक ने गृहस्वामिनी से पूछकर गैस, कोयला, तेल आदि के साथ आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, पीने का पानी तथा काम्पोज की गोलियों का इन्तजाम किया। इनके साथ ही उसने बाढ़ आने पर छत पर जाने का भी प्रबन्ध सुनिश्चित किया। तब वह बाढ़ का दृश्य देखने के लिए उत्सुक हो गया।

प्रश्न 9. बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में कौन-कौनसी बीमारियाँ फैलने की आशंका रहती है?

उत्तर—बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में प्राय: (1) हैजा, (2) आन्त्रशोथ एवं मलेरिया फैलने की आशंका रहती है। इसके साथ ही पकाही घाव की (पानी में पैर की अंगुलियाँ सड़ने की) बीमारी हो जाती है।

प्रश्न 10. नौजवान के पानी में उतरते ही कुत्ता भी पानी में कूद गया। दोनों ने किन भावनाओं के वशीभूत होकर ऐसा किया?

उत्तर—कुत्ता स्वामिभक्त जानवर होता है और वह अपने मालिक को बहुत चाहता है। जब डॉक्टर ने कुत्ते को साथ ले जाने से मना किया, तो बीमार नौजवान नाव से तुरन्त पानी में उतर गया। तब उसका स्वामिभक्त कुत्ता भी पानी में कूद गया। इस प्रकार उन दोनों ने आपसी लगाव एवं प्रेम-भावना के वशीभूत होकर ऐसा किया।

प्रश्न 11. "अच्छा है, कुछ भी नहीं। कलम थी वह भी चोरी चली गई। अच्छा है, कुछ भी नहीं—मेरे पास।" मूवी कैमरा, टेपरिकार्डर आदि की तीव्र उत्कण्ठा होते हुए भी लेखक ने अन्त में उपर्युक्त कथन क्यों कहा?

उत्तर—लेखक बाढ़ के उस भीषण दृश्य को मूवी कैमरा या टेपरिकार्डर में उतारना चाहता था, परन्तु उसके पास ये चीजें नहीं थीं। फिर उसने तुरन्त सोचकर कहा कि 'अच्छा हुआ, कुछ भी मेरे पास नहीं।' लेखक ने ऐसा इसलिए कहा कि बाढ़ का भीषण दृश्य किसी पर्यटक के लिए अवश्य रोमांचकारी हो सकता है, उसे देखकर भय एवं उत्सुकता हो सकती है। लेकिन लेखक संवेदनशील एवं भावुक व्यक्ति होने से न तो ऐसे दृश्य देख पाता है और न उसे लिख सकता है। दु:ख और विपत्ति के समय पर भयानक दृश्य को वह कैद भी नहीं कर सकता था।

प्रश्न 12. आपने भी देखा होगा कि मीडिया द्वारा प्रस्तुत की गई घटनाएँ कई बार समस्याएँ बन जाती हैं, ऐसी किसी घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—मार्च के महीने में वासन्ती नवरात्रि के अवसर पर जोधपुर में किले के एक हिस्से में देवी-पूजन का मेला भरता है। उस मेले में काफी भीड़ रहती है। एक समाचार चैनल ने ऐसा समाचार बार-बार प्रसारित किया कि अष्टमी के दिन मेले में भगदड़ मच गई, जिससे सैकड़ों-हजारों लोग दबकर मर गये। समाचार चैनल ने एक-दो सामान्य भीड़ वाले दृश्यों का प्रसारण भी किया और घायलों एवं हताहतों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत की। इससे राजस्थान सरकार और स्थानीय जनता को काफी परेशानी झेलनी पड़ी। लोग अपनों की तलाश में भगदड़ स्थल पर जाने लगे, पुलिस फोर्स एवं बड़े अधिकारी भी वहाँ पहुँचे। परन्तु जिस तरह से समाचार को बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया था, वैसा कुछ नहीं निकला। चार-पाँच लोग सीढ़ियों से फिसल कर घायल हो गये थे और जान-माल का नुकसान नहीं हुआ था। यह तो समाचार चैनल ने अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ऐसा कर दिया था। बाद में सरकार की ओर से उस समाचार चैनल को इस कारण खूब फटकार लगायी गई।

प्रश्न 13. अपनी देखी-सुनी किसी आपदा का वर्णन कीजिए।

उत्तर—दो साल पहले की बात है। जुलाई की अन्तिम तारीख थी, रविवार था और रात्रि के समय सारा गाँव काम-धन्धे से निवृत्त होकर सोने की तैयारी कर रहा था। मैं भी अपनी पढ़ाई बन्द करके लेट गया था। तभी लगभग साढ़े नौ बजे रात बादल उमड़ने-घुमड़ने और गरजने लगे। पहले तो हल्की बूँदा-बाँदी हुई, लेकिन फिर जोरदार वर्षा होने लगी। बादल चारों ओर से इस तरह उमड़-घुमड़ के आये कि सर्वत्र पानी ही पानी हो गया। ज्यों-ज्यों समय बीता वर्षा का जोर बढ़ने लगा। इस तरह वर्षा को देखकर गाँव के लोगों को आशंका होने लगी थी। इसलिए सभी लोग सावधान भी हो गये थे। रात्रि करीब साढ़े बारह बजे नदी का पानी गाँव की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ। पानी का वेग लगातार बढ़ रहा था। गाँव के समझदार लोगों ने एक घण्टे पहले ही अपने बाल-बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया था। परन्तु कुछ लोग इस काम में सफल नहीं रहे और वे बाढ़ की चपेट में आ गये। तब कुछ लोग ऊँचे पेड़ों पर चढ़ गये, कुछ लोग पक्के मकानों की छतों पर चढ़ गये। अधिकतर लोग गाँव के पंचायत भवन और स्कूल भवन में एकत्र हो गये। उस समय सभी को केवल अपनी सूझ रही था। रात का घनघोर अँधेरा, उसमें भय एवं त्रास से लोगों का हाहाकार, चीत्कार, घबराहट आदि से दृश्य बड़ा भयानक बन गया था। कहीं बाढ़ के वेग से पेड़ गिर रहे थे, तो कहीं कच्चे झोंपड़े बह रहे थे और कहीं बहते हुए मवेशी आत्म-रक्षार्थ व्यर्थ प्रयास कर रहे थे। सभी को इस प्राकृतिक आपदा ने विवश कर दिया था।

ऐसी विनाश-लीला के साये में अपने पाँच वर्षीय छोटे भाई को अपनी पीठ पर बाँधकर मैं एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और सारी रात काँपते-काँपते बाढ़ की इस विनाशलीला को अपनी कातर दृष्टि से देखता रहा। उस समय मुझे बार-बार ईश्वर का ध्यान आ रहा था। इस तरह सुबह पाँच बजे वर्षा बन्द हुई, कुछ समय के बाद नदी का वेग भी कुछ कम होने लगा। लोगों ने राहत की साँस ली। कुछ समय बाद दिन का उजाला फैल गया। जो लोग इस भीषण बाढ़ से बच गये थे, वे अपने-अपने घरों को लौट आये। आठ बजे तक नदी का पानी एकदम उतर गया था। गाँव के अधिकतर लोगों का सामान उसमें बह गया था। मैं भी पेड़ से उतरकर घर आ गया था। हम दोनों भाइयों को सकुशल देखकर परिवार के सभी लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने बाढ़ की ऐसी भीषण स्थिति पहले कभी नहीं देखी थी। आज उस भीषण बाढ़ का स्मरण होते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लोगों को ऐसी आपदा से भगवान् बचाये।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न—

1. बाढ़ के कारण दुकानों की खरीद-बिक्री बन्द हो चुकने पर भी किसकी बिक्री बढ़ गई थी?
   (अ) कोयला (ब) केरोसिन (स) पान (द) गैस
2. "अब कहाँ जाइएगा? कॉफी हाउस में तो 'अबले' पानी आ गया होगा।" यह बात किसने कही?
   (अ) नाव वाले ने (ब) रिक्शे वाले ने (स) तांगे वाले ने (द) कार वाले ने
3. पाठ के शीर्षक 'इस जल प्रलय में' जल प्रलय से क्या तात्पर्य है?
   (अ) अकाल (ब) तूफान (स) आर्द्रता (द) बाढ़
4. "हमार कुकुर नहीं जाएगा तो हम हुं नहीं जाएगा" बीमार नौजवान के इस कथन में 'कुकुर' शब्द किसके लिए आया है?
   (अ) दुकानदार (ब) कुत्ते (स) डॉक्टर (द) नाव

5. लेखक के गाँव में प्रतिवर्ष कौन शरण लेते हैं?
(अ) बाढ़ से पीड़ित (ब) अकाल से पीड़ित (स) निर्धन (द) बीमारी से पीड़ित
6. 1967 में कौनसी नदी का पानी पटना के राजेन्द्र नगर, कंकड़बाग तथा अन्य निचले हिस्सों में घुस आया था?
(अ) गंगा नदी (ब) महानदी (स) पुनपुन नदी (द) चम्बल नदी
7. लेखक किस पर बैठकर बाढ़ का पानी देखने निकला?
(अ) बस में (ब) कार में (स) रिक्शे में (द) तांगे में
8. मुसहरी जाति के लोग अपनी आजीविका कैसे चलाते हैं?
(अ) दोना-पत्तल बनाकर (ब) रिक्शा चलाकर (स) नाव चलाकर (द) खेती कर
9. 'मृत्यु के तरल दूत' से तात्पर्य है—
(अ) केरोसिन मिला पानी (ब) गेरुआ झाग वाला पानी
(स) दवा मिला पानी (द) तेलीय पानी
10. बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में कौन-कौनसी बीमारियों के फैलने की आशंका रहती है?
(अ) हैजा (ब) मलेरिया (स) उल्टी-दस्त (द) उपरोक्त सभी

उत्तर-माला—1. (स) 2. (ब) 3. (द) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स) 7. (स) 8. (अ) 9. (ब) 10. (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. 1967 में पटना में लगातार .... घण्टे की वर्षा के कारण बाढ़ आई थी।
2. वर्ष .... में मनिहारी के इलाके में गंगा नदी के पानी से बाढ़ आई थी।
3. 'पकाही घाव' में पानी में पैर की उँगलियाँ .... जाती हैं।
4. लेखक का गाँव .... जमीन पर स्थित है।
5. .... एक आदिवासी जाति है जो दोना-पत्तल बनाकर अपनी जीविका चलाती है।
6. लेखक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में .... का कार्य करता रहा है।

उत्तर—1. 18 2. 1947 3. सड़ 4. परती 5. मुसहरी 6. 'रिलीफ़ वर्कर'।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. लेखक को हाईस्कूल में किस विषय पर लेख लिखने पर प्रथम पुरस्कार मिला था?
उत्तर—'बाढ़' विषय पर लेख लिखने पर।
प्रश्न 2. 'इस जल प्रलय में' शीर्षक पाठ के लेखक कौन हैं?
उत्तर—फणीश्वर नाथ 'रेणु'।
प्रश्न 3. पाठ में 'पटनियाँ' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
उत्तर—पटना के रहने वाले लोगों के लिए।
प्रश्न 4. 'इस जल प्रलय में' पाठ में कौन-कौनसी नदियों के नाम आए हैं?
उत्तर—कोसी, पनार, महानंदा, गंगा, पुनपुन, परमान।
प्रश्न 5. 'बलवाही' से क्या तात्पर्य है?
उत्तर—'बलवाही' एक प्रकार का लोकनृत्य है।
प्रश्न 6. पाठ में 'आसन्नप्रसवा' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर—जिसे आजकल में ही बच्चा होने वाला हो।
प्रश्न 7. परती ज़मीन से क्या तात्पर्य है?
उत्तर—वह ज़मीन जो जोती-बोई न जाती हो।
प्रश्न 8. 'प्लावित' शब्द का अर्थ है—
उत्तर—जो जल में डूब गया हो।
प्रश्न 9. बाढ़ का पानी देखने वालों की आँखों में, जुबान पर क्या जिज्ञासा थी?
उत्तर—एक ही जिज्ञासा थी—"पानी कहाँ तक आ गया है?"
प्रश्न 10. गोलंबर के पास जन-सम्पर्क की गाड़ी से क्या ऐलान किया जाने लगा?
उत्तर—"भाइयो! ऐसी सम्भावना है कि बाढ़ का पानी रात्रि के बारह बजे तक घुस जाए। अतः आप लोग सावधान हो जाएँ।"

प्रश्न 11. लेखक ने सोचा एक सप्ताह की खुराक एक ही साथ ले लूँ। यहाँ खुराक से तात्पर्य है—

उत्तर—यहाँ खुराक से तात्पर्य पुस्तकों से है।

प्रश्न 12. मनिहारी के इलाके में गुरुजी के साथ गंगा मैया की बाढ़ से पीड़ित क्षेत्र में नाव पर जाते समय उन्होंने क्या हिदायत दी थी?

उत्तर—हर नाव पर 'पकाही घाव' की दवा, दियासलाई की डिबिया और केरोसिन तेल रखने की हिदायत दी थी।

प्रश्न 13. बाढ़ पीड़ितों को सबसे अधिक किस चीज की आवश्यकता थी?

उत्तर—बाढ़ पीड़ितों को सबसे अधिक आवश्यकता पकाही घाव पर लगाने वाली दवा की और दियासलाई की थी।

प्रश्न 14. लेखक चाह कर भी अपने स्वजनों और मित्रों से बात क्यों न कर सका?

उत्तर—लेखक चाह कर भी अपने स्वजनों और मित्रों से टेलीफोन बन्द होने के कारण बात नहीं कर सका।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. लेखक तैरना क्यों न सीख सका?

उत्तर—लेखक का गाँव परती जमीन पर था। वहाँ जल-साधनों का अभाव था। इसलिए वह गाँव के अन्य लोगों की तरह तैरना नहीं सीख सका।

प्रश्न 2. लेखक ने बाढ़ पर कौन-कौन से रिपोर्ताज लिखे? बताइये।

उत्तर—लेखक ने हाईस्कूल में पढ़ते समय 'बाढ़' पर एक लेख लिखकर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था। उसके बाद 'जय गंगा' (1947), 'डायन कोसी' (1948), 'हड्डियों का पुल' (1948) आदि छुटपुट रिपोर्ताज लिखे।

प्रश्न 3. लेखक ने बाढ़ को शहरी आदमी की हैसियत से कब भोगा?

उत्तर—लेखक ने सन् 1967 में शहरी आदमी की हैसियत से बाढ़ को भोगा जब 18 घंटे की अविराम वृष्टि के कारण पुनपुन नदी का पानी उसके निवास-स्थल राजेन्द्र नगर में घुस आया था।

प्रश्न 4. लेखक ने मुस्टंड और गँवार किसे कहा है और वह क्या बोल रहा था?

उत्तर—लेखक ने दानापुर के एक ग्रामीण अधेड़जन को मुस्टंड और गँवार कहा है जो जोर-जोर से बोल रहा था—"ईह ! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गये..........अब बूझो।"

प्रश्न 5. पान की दुकान के सामने खड़े लोग चुपचाप होकर क्या सुन रहे थे?

उत्तर—पान की दुकान के सामने खड़े लोग चुपचाप होकर यह खबर सुन रहे थे कि "पानी हमारे स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच गया है और किसी भी क्षण स्टूडियो में प्रवेश कर सकता है।"

प्रश्न 6. बाढ़ के बढ़ने का समाचार सुनकर भी लेखक ने सहज होने का प्रयत्न क्यों किया?

उत्तर—बाढ़ के बढ़ने का समाचार सुनकर खड़े लोगों का कलेजा धड़क उठा। उनके मन में भय बढ़ गया, लेकिन अधिकतर लोग परेशान नहीं दिख रहे थे। वे शान्त और सहज थे इसलिए लेखक ने भी स्वयं को सहज बनाने की कोशिश की।

प्रश्न 7. बाढ़ के बढ़ने का समाचार सुनकर मित्र से विदा लेते हुए लेखक ने क्या कहा था?

उत्तर—लेखक ने मित्र से विदा लेते हुए कहा था—"पता नहीं कल हम कितने पानी में रहें।..........बहरहाल जो कम पानी में रहेगा, वह ज्यादा पानी में फँसे मित्र की सुधि लेगा।"

प्रश्न 8. "पहचान लीजिए। यही है वह आम आदमी।" लेखक के अनुसार वह आम आदमी कौन था?

उत्तर—जब लेखक अपने मित्र के साथ गाँधी मैदान में बाढ़ का दृश्य देख रहा था तब वहीं पर एक अधेड़, गँवार, मुस्टण्ड आदमी जोर-जोर से चिल्ला कर बोल रहा था। लेखक के अनुसार वह ही आम आदमी था।

प्रश्न 9. "सारा शहर जगा हुआ है।" लेखक ने इसका क्या कारण बताया?

उत्तर—पटना शहर में पश्चिम दिशा से बाढ़ आने की सूचना पाकर लोग भय, आशंका और अनिष्ट होने की चिन्ता से घिरे हुए थे और वे बाढ़ आने की स्थिति जान रहे थे। इस कारण सारा शहर सावधान होकर जगा हुआ था।

प्रश्न 10. लेखक बाढ़ के पानी से घिरे द्वीप पर क्यों नहीं गया?

उत्तर—लेखक चहलकदमी करने तथा टाँगों की थकान मिटाने की चाहना रखते हुए भी द्वीप पर इसलिए नहीं गया क्योंकि वहाँ चींटी-चींटे, साँप-बिच्छु, लोमड़ी-सियार आदि एकत्र हो गए थे।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. बाढ़ को बढ़ता देखकर पटनावासियों की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर—बाढ़ को बढ़ता देखकर पटनावासी सहज थे। वे उत्साहित थे और उनके चेहरों पर हँसी थी। कुछ दुकानदार अवश्य हड़बड़ी में थे। वे अपना सामान कुछ ऊँचे स्थान पर रखने में लगे हुए थे। साथ ही कुछ लोगों के दिल की धड़कन

बढ़ी हुई थी। वे हताश और निराश भी थे। लोग घरों से बाहर जाकर बाढ़ के दृश्य को पास में जाकर देखने को लालायित रहे किन्तु वहाँ तक जा नहीं सके। घर में उचित खाद्य सामग्री की व्यवस्था करने लगे। बाजारों में भीड़ लग गयी।

प्रश्न 2. पटना में बाढ़ आने की सूचना मिलने पर लेखक ने क्या व्यवस्था की?

उत्तर–लेखक को जब पटना में बाढ़ आने की सूचना मिली, तो लेखक उस समय राजेन्द्र नगर चौराहे पर थे तो उन्होंने सोचा पता नहीं कल हम कितने पानी में रहें। पानी में फँस गये तो क्या होगा, इसलिए एक सप्ताह की खाद्य सामग्री (खुराक) एक ही साथ ले लूँ इसलिए घर में ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, सिगरेट, पीने का पानी और काम्पोज की गोलियों की व्यवस्था की, अर्थात् इनका संग्रह किया और बाढ़ आने की प्रतीक्षा करने लगा।

प्रश्न 3. मुसहरी जाति के बलवाही नृत्य को देखकर लेखक का मन क्यों प्रसन्न हो गया था?

उत्तर–1949 में महानंदा की बाढ़ से घिरे एक क्षेत्र मुसहरी (मुसहरों की बस्ती) में लेखक सहायता दल सहित राहत बाँटने गये वहाँ जाकर देखा कि एक ऊंची जगह 'मचान' बना हुआ है जो स्टेज के समान है जिस पर 'बलवाही' नाच हो रहा था। मुसहरी जाति के इस बलवाही नृत्य को देखकर लेखक का मन इसलिए प्रसन्न हो गया कि कीचड़-पानी में लथपथ भूखे-प्यासे नर-नारियों के झुण्ड में उनकी उन्मुक्त हँसी ही उन्हें बाढ़ की उस विपदा में भी नया जीवन दे रही थी। इसीलिए लेखक का मनप्रसन्न हो गया।

प्रश्न 4. प्रातःकाल उठते ही लेखक ने पश्चिम घाना की ओर कैसा दृश्य देखा?

उत्तर–प्रात:काल आँखें मलते हुए लेखक ने पश्चिम घाना की ओर देखा कि सामने सड़क पर मोटी डोली की शक्ल में झाग फेन लिए पानी आ रहा है। पानी के साथ-साथ चलता हुआ किलोल करता हुआ बच्चों के झुंड की तरह उछलकूद करता हुआ उधर पश्चिम-दक्षिण कोने पर दिनकर अतिथिशाला से और आगे बस्ती के पास पुलिस चौकी के पिछवाड़े में पानी का रेला आ रहा है। ब्लांक नंबर चार के नीचे सेठ की दुकान के बायीं तरफ लहरें नृत्य कर रही हैं।

प्रश्न 5. लेखक के पास यदि मूवी कैमरा या टेप-रिकॉर्डर होता तो क्या करता?

उत्तर–यदि लेखक के पास मूवी कैमरा या टेप रिकॉर्डर होता तो लेखक बाढ़ तो बचपन से देखता आया है किन्तु पानी का इस तरह आना पहली बार देख रहा जो यदि रात में आता तो भय से कांप जाता किन्तु अब तो उसकी नजरों के सामने क्षेत्र को डूबते हुए दृश्यों को देख रहा है। मूवी कैमरा होता तो इन दृश्यों की सजीवता को हमेशा के लिए कैद कर लेता है और टेपरिकॉर्डर में बाढ़ के दृश्यों की आवाज उसके रिकॉर्ड करके स्थायी कर लेता जिससे प्राकृतिक दृश्यों की एक मूवी बन जाती।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. आकाशवाणी से बाढ़ का समाचार सुनकर लोगों की क्या प्रतिक्रिया रही?

उत्तर–आकाशवाणी से समाचार प्रसारित हुआ कि 'पानी हमारे स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच चुका है और किसी भी क्षण स्टूडियो में प्रवेश कर सकता है।' इस समाचार को सुनकर लोगों की यह प्रतिक्रिया रही—

(1) इस समाचार से लोगों को अनिष्ट की आशंका एवं चिन्ता होने लगी।

(2) दुकानदारों ने हड़बड़ी में अपना सामान सँभालना प्रारम्भ किया और कुछ अपना सामान सुरक्षित जगहों पर भेजने लगे।

(3) दुकानों पर खरीद-बिक्री बन्द हुई। केवल पान की दुकानों पर लोग बाढ़ को लेकर बातें करने लगे।

(4) लेखक और उनके मित्र लोगों को सहज देखकर स्वयं को सँभालने लगे।

(5) इस समाचार से लोग अधिक परेशान नहीं हुए और सहज बने रहे।

प्रश्न 2. अपने फ्लैट की छत से लेखक ने बाढ़ का जो दृश्य देखा उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर–बाढ़ आने की प्रतीक्षा करते-करते जब लेखक की आँख लग गयी। ओई द्याखो-एसे गेछे जल! कह कर जब लेखक को जगाया गया। उस समय सुबह के साढ़े पाँच बज रहे थे। लेखक आँखें मलता हुआ उठा। उस समय पश्चिम में थाने के सामने वाली सड़क पर झागदार लहरों वाला पानी आ रहा था। लेखक दौड़कर अपनी फ्लैट की छत पर चला गया। उसने वहाँ जाकर देखा कि चारों ओर चीख, पुकार, शोरगुल, कलरव तथा पानी का कलकल सुनाई दे रहा था। सामने के फुटपाथ को पार कर पानी फ्लैट के पीछे शक्तिपूर्वक बह रहा था। गोलंबर पार्क में चारों ओर पानी था। देखते ही देखते लेखक के मोहल्ले में चारों ओर पानी ही पानी लहरा रहा था। तब लेखक का मन करने लगा कि वह ऐसे दृश्य का फोटो खींचना चाहता है, परन्तु अपने पास न तो कैमरा है और न टेप-रिकार्डर है, कलम भी नहीं है। इस कारण लेखक विवशता का अनुभव करने लगा।

प्रश्न 3. गाँधी मैदान की ओर से जाते समय लेखक ने क्या-क्या देखा?

उत्तर—लेखक बाढ़ का पानी देखने के लिए अपने मित्र के साथ रिक्शे पर बैठकर कॉफी हाउस के पास पहुँचा, उसके बन्द हो जाने से वह मित्र के साथ 'अप्सरा' सिनेमा हॉल के बगल में गाँधी मैदान की ओर चल पड़ा। पैलेस होटल और इण्डियन एयरलाइन्स दफ्तर के सामने पानी भर रहा था। पानी की तेज धारा पर लाल-हरे 'नियन' विज्ञापनों की परछाइयाँ सैकड़ों रंगीन साँपों के समान दिखाई दे रही थीं। गाँधी मैदान की रेलिंग के सहारे हजारों लोग खड़े होकर बाढ़ के बढ़ने का दृश्य देख रहे थे। वह दृश्य स्मृतियों के रूप में मन में भले ही उभर रहा था, परन्तु उन पर बाढ़ के पानी का गैरिक आवरण पड़ गया था। लेखक को बाढ़ के पानी के इस तरह के बहाव को देखने का यह अनुभव सर्वथा नया था।

प्रश्न 4. लेखक मुसहरी बस्ती में क्या करने गया था? उसने वहाँ कौनसा दृश्य देखा? वर्णित कीजिए।

उत्तर—लेखक मुसहरी बस्ती में सन् 1949 में महानंदा में आयी बाढ़ से प्रभावित लोगों को राहत बाँटने गया था। लेखक को खबर मिली थी कि मुसहरी की बस्ती के लोग कई दिनों से मछली और चूहों को झुलसा कर खा रहे हैं और किसी तरह जी रहे हैं लेकिन जब लेखक सेवा दल के साथ वहाँ पहुँचा तो उसने कुछ अलग ही दृश्य देखा कि मुसहरी बस्ती में ऊँचे पर एक मंच बना हुआ है और एक काला-कलूटा नट लाल साड़ी पहने हुए रूठी दुलहिन का अभिनय कर रहा है और पुरुष बना नट उसे मना रहा है। इस पद के साथ ही ढोलक पर द्रुत ताल बजने लगा। कीचड़-पानी में लथ-पथ भूखे-प्यासे नर-नारियों के झुंड में मुक्त खिलखिलाहट लहरें लेने लगी हैं। इस दृश्य को देखकर लेखक को लगा कि हम राहत सामग्री बाँटकर भी उन्हें ऐसी हँसी नहीं दे पायेंगे।

प्रश्न 5. पटना की बाढ़ में पिकनिक मनाने आए युवक-युवतियों के साथ कैसा बर्ताव हुआ और क्यों?

उत्तर—सन् 1967 में पटना में भीषण बाढ़ आयी थी और पुनपुन का पानी राजेन्द्र नगर में घुस गया था। सारा इलाका जलमग्न हो गया था। तभी कुछ मनचले युवक-युवतियों की टोली सज-धज कर नाव पर सवार होकर पानी पर उतरी। नाव पर स्टोव जल रहा था और उस पर केतली रखी थी। बिस्कुट के डिब्बे खुले हुए थे। एक युवती मनमोहक अदा में नैस्कैफे का पाउडर मथ रही थी। दूसरी युवती रंगीन पत्रिका मस्ती से पढ़ रही थी। एक युवक घुटनों पर कोहनी रखे मनमोहक डॉयलोग बोल रहा था। ट्रांजिस्टर बज रहा था। ऊँची आवाज में गाना सुनाई पड़ रहा था—'हवा में उड़ता जाए मेरा लाल दुपट्टा मलमल का।' युवक-युवतियों का यह आनन्द उत्सव राजेन्द्र नगर के लड़कों को पसन्द नहीं आया। उन्होंने ब्लॉक की छत से इतनी किलकारियाँ, सीटियाँ और फब्तियों की बौछार की कि वे लज्जित हो गये। उनके लाल होंठ काले पड़ गये।

2. मेरे संग की औरतें

(मृदुला गर्ग)

लेखिका-परिचय—समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य की अग्रणी लेखिका मृदुला गर्ग का जन्म सन् 1938 में कोलकाता में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. किया था। विभिन्न नगरों में रहने के बाद सन् 1974 से दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन में संलग्न रहकर अनेक कहानियों की रचना की। इन्होंने उपन्यास एवं निबन्ध भी लिखे हैं। सम्प्रति ये लेखन कर्म में प्रवृत्त हैं।

पाठ-सार—'मेरे संग की औरतें' शीर्षक कहानी में लेखिका ने सर्वप्रथम अपनी नानी की कहानी प्रस्तुत की। लेखिका की माँ की शादी होने से पहले ही उसकी नानी की मृत्यु हो गई थी। इस कारण लेखिका अपनी नानी को न देख सकी, परन्तु बाद में माँ से उसके विषय में सुनकर लेखिका को वास्तविकता ज्ञात हुई। नानी अनपढ़ थी, जबकि नाना विलायत से बैरिस्ट्री की डिग्री लेकर आये थे। नानी की इच्छानुसार लेखिका की माँ की शादी सुशिक्षित, गरीब एवं आजादी के सैनिक के साथ हुई। इस कारण उन्हें सादा जीवन जीना पड़ा। लेखिका ने बताया कि उसकी माँ अपनी बीमारी एवं अरुचि के कारण घर का काम नहीं करती थीं। वह किताबें पढ़ने या संगीत सुनने में रुचि रखती थीं। लेखिका की परदादी लीक से हटकर थीं। उन्होंने अपनी बहू के गर्भवती होने पर मन्दिर में जाकर भगवान् से लड़की पैदा होने की मन्नत माँगी थी। शायद उसका ही असर हुआ कि घर में पाँच कन्याएँ एक के बाद एक पैदा हुईं। लेखिका की परदादी ने एक चोर को सुधार दिया था।

लेखिका स्वतंत्रता-प्राप्ति के दिन बुखार से पीड़ित रही। इस कारण वह इण्डिया गेट के जश्न में नहीं जा सकीं। लेखिका की चारों बहनें भी लीक से हट कर चलती रहीं। इनका छोटा भाई राजीव हिन्दी में लेखन-कार्य करने लगा। शादी के बाद लेखिका को पहले तो बिहार के एक कस्बे में रहना पड़ा, फिर कर्नाटक के बागलकोट कस्बे में रहीं। वहाँ पर उन्होंने 'अंग्रेजी-हिन्दी-कन्नड़' तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला स्कूल खोला। लेखिका की छोटी बहिन रेणु हठी स्वभाव की थी।

वह एक बार भारी वर्षा होने पर भी अकेली ही स्कूल गई और लबालब पानी में पैदल चलकर घर लौटी। उस दिन का स्मरण कर लेखिका सोचने लगी कि रेणु को तब कैसा अनुभव हुआ होगा? वस्तुतः अकेलेपन का मजा कुछ और ही है।

कठिन-शब्दार्थ—परदानशीं = परदा करने वाली औरत। इज़हार = प्रकटीकरण। हुजूर = दरबार। हैरतअंगेज = हैरानीभरा। पुश्तैनी = खानदानी। गनीमत = कुशल, भलाई। शोहरत = प्रसिद्धि। परिकथा = परियों की कहानी। सनक = जिद। जादुई = हैरानी भरी। जुमला = कुल, सब। मुस्तैद = तैनात। खिसके = हटे। गैर-खायती = परंपरा के विरुद्ध। फ़ितूर = पागलपन। जुस्तजू = इच्छा। जुगराफ़िया = नक्शा। रोमांचक धंधा = चोरी का काम। पल्ले पड़ना = समझ में आना। नतीजतन = परिणामस्वरूप। खरामा-खरामा = धीरे-धीरे। शागिर्द = शिष्य। कगार = किनारा। दड़वा = समूह। बिशप = पादरी। कयामती = विनाशकारी। निचाट = बिल्कुल सूने में।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं, फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं?

उत्तर—लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा नहीं था लेकिन उनके बारे में सुना था कि वे अनपढ़ थीं, लेकिन उनके मन में देश-भक्ति की भावना भरी हुई थी। इसी कारण उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में अपने पति के मित्र क्रान्तिकारी प्यारेलाल शर्मा को बुलवाकर उनसे अपनी इच्छा प्रकट की थी कि वे हमारी बेटी की शादी किसी देशभक्त क्रान्तिकारी से करवाये, अंग्रेजों के किसी भक्त से नहीं। उनकी इस भावना में देश की आजादी का पवित्र भाव था। जीवन भर परदे में रहकर अपनी बेटी की शादी के लिए पर-पुरुष से बात करने की हिम्मत दिखाई। इससे उनके साहसी व्यक्तित्व और मन में समायी स्वतंत्रता की भावना का सहज पता चलता है। लेखिका उनके इन्हीं गुणों से प्रभावित थीं।

प्रश्न 2. लेखिका की नानी की आजादी के आन्दोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

उत्तर—लेखिका की नानी यद्यपि अनपढ़, परदा करने वाली और परम्परागत जीवन जीने वाली थीं और आजादी के आन्दोलन में उनका सक्रिय योगदान नहीं था, तथापि वे आजादी का महत्त्व समझती थीं। इसलिए वे अपनी इकलौती बेटी का विवाह 'आजादी के सिपाही' किसी नौजवान से ही कराना चाहती थीं। इसी कारण अपनी मृत्यु का आभास होने पर उन्होंने पति से अपने मित्र स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा को बुलाने का आग्रह किया। उनके आने पर लेखिका की नानी ने कहा कि "वचन दीजिए कि मेरी लड़की के लिए वर आप तय करेंगे।"..........आप अपनी तरह आजादी का सिपाही ढूँढ़कर इसकी शादी करवा दीजिएगा।" इस कारण उन्होंने एक ऐसे होनहार युवक से अपनी बेटी की शादी करवा दी थी, जो आजादी के आन्दोलन में भाग लेने के अपराध में आई.सी.एस. की परीक्षा में बैठने से रोक दिया गया था। इस प्रकार लेखिका की नानी की आजादी के आन्दोलन में परोक्ष भागीदारी रही।

प्रश्न 3. लेखिका की माँ परम्परा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थी। इस कथन के आलोक में—

(क) लेखिका की माँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

(ख) लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर-(क) लेखिका की माँ का व्यक्तित्व—अपने आप में असाधारण या उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं और गोपनीय बात को कभी दूसरे से नहीं कहती थीं। इसके साथ ही वे स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए काम करती थीं। इसके कारण घर में उनका सम्मान होता था। घर के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों में उनकी राय ली जाती थी और उसी को अन्तिम माना जाता था। उनका सारा समय किताबें पढ़ने, साहित्यचर्चा करने और संगीत सुनने में बीतता था। ये उनकी चरित्रगत विशेषताएँ थीं।

(ख) लेखिका की दादी के घर का माहौल—लेखिका की दादी के घर का माहौल परम्परागत नहीं था, उसमें परिवार के सदस्यों को बँधी-बँधाई लीक से हटकर चलने की छूट थी। स्वयं दादी पर अपरिग्रह की सनक सवार थी। लेखिका की परदादी को लड़की-लड़के में भेदभाव नहीं था। इसी कारण जब लेखिका की माँ गर्भवती हुई, तो परदादी ने मन्दिर में जाकर भगवान् से लड़की होने की मन्नत माँगी थी। इसी प्रकार लेखिका की दादी भी पहली मर्तबा में ही तैयार हो गई थी कि गोद में खेलेगी, तो पोती। इस प्रकार घर में वैचारिक समानता का वातावरण था।

लेखिका की माँ घर का कुछ भी काम न कर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेती थी, किताबें पढ़ती थी और संगीत सुनती थी। लेखिका के दादाजी अंग्रेजों के बड़े प्रशंसक थे। इतना सब होते हुए भी घर की स्त्रियाँ अपने तरीके से जीने के लिए स्वतन्त्र थीं।

प्रश्न 4. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी?

उत्तर—लेखिका की परदादी को कतार से बाहर चलने का शौक था, इस कारण वे स्वयं को सबसे अलग दिखाना चाहती थीं। समाज में अधिकतर लोगों की अभिलाषा रहती है कि घर में पहली सन्तान पुत्र हो। परन्तु परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत माँगी, क्योंकि वे पुत्री को पुत्र की अपेक्षा घर के काम में हाथ बँटाने वाली तथा बड़े-बूढ़ों की सेवा करने वाली मानती थीं। परदादी का विचार होगा कि बेटी बड़ी होकर घर-परिवार को अच्छी तरह चलाती है तथा उसकी शादी पर कन्यादान करने का पुण्य भी मिलता है। बेटी जन्मजात स्नेही स्वभाव की होती है। इस कारण भी परदादी ने लड़की पैदा होने की कामना की होगी।

प्रश्न 5. 'डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है'—पाठ के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—इस पाठ के आधार पर यह स्पष्ट है कि यदि कोई सगा-संबंधी गलत राह पर हो तो उसे डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव देने के बजाय उसके साथ सहजता से ही व्यवहार करना चाहिए। लेखिका की नानी ने भी यही किया। उन्होंने अपने पति की अंग्रेज-भक्ति का न तो मुखर विरोध किया और न समर्थन किया। वे जीवनभर अपने आदर्शों पर चलती रहीं। परिणामस्वरूप समय आने पर वे मनवांछित कार्य कर सकीं।

इसी प्रकार लेखिका की माँ ने चोर के साथ जो सहजता का व्यवहार कर उससे उन्होंने उसकी पूरी मानसिकता को ही बदल दिया और वह चोरी छोड़कर खेती करने लगा। अतएव यह कथन सत्य है कि डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही रास्ते पर लाया जा सकता है।

प्रश्न 6. 'शिक्षा बच्चों का जन्म-सिद्ध अधिकार है।' इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—यह बात सत्य है कि शिक्षा पाना बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसके प्रति सरकार और समाज को सजग रहना चाहिए। लेखिका ने भी बच्चों को शिक्षा दिलाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। लेखिका कर्नाटक के छोटे से कस्बे बागल कोट में जब पहुँची तो वहाँ उसके दो बच्चों को पढ़ाने की समुचित व्यवस्था नहीं थी। इसलिए उसने वहाँ एक अच्छा स्कूल खोलने की कोशिश की। इसके लिए उसने प्रयास रूप में कैथोलिक बिशप से प्रार्थना की कि वह वहाँ एक स्कूल खोले। परन्तु बिशप के तैयार न होने पर लेखिका ने अपने प्रयासों से कुछ उत्साही लोगों को साथ लेकर वहाँ प्राइमरी स्कूल खुलवाया जिसमें सामान्य वर्ग के साथ अफसरों तक के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला।

प्रश्न 7. पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा-भाव से देखा जाता है?

उत्तर—श्रद्धा का आधार सद्गुण ही होते हैं? सद्गुणी व्यक्ति के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है। पाठ के आधार पर निम्नलिखित जनों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा गया—लेखिका की नानी अपने जीवन में इसलिए श्रद्धेया बनीं क्योंकि उन्होंने परिवार और समाज से विरोध लेकर अपनी पुत्री का विवाह देश-प्रेमी क्रान्तिकारी से करने की बात कही। लेखिका की परदादी इसलिए श्रद्धेया बनीं क्योंकि उन्होंने दो धोतियों से अधिक संचय न करने का संकल्प किया था। उन्होंने परम्परा के विरुद्ध लड़के की बजाय लड़की होने की मन्नत माँगी थी। लेखिका की माता इसलिए श्रद्धेया बनीं क्योंकि उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए कार्य किया। कभी किसी से झूठ नहीं बोला और कभी किसी की गोपनीय बात किसी अन्य से नहीं कही। ये सभी जन अपने आप में सच्चे, दृढ़-निश्चयी थे इसलिए इनके प्रति श्रद्धा प्रकट की गई।

प्रश्न 8. 'सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है'—इस कथन के आधार पर लेखिका की बहिन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर—लेखिका और उसकी छोटी बहिन रेणु में अकेले अपने चुने रास्ते पर चलने का दृढ़ साहस था। लेखिका ने अपने साहस के बल पर बिहार के रूढ़िवादी लोगों के बीच रहकर नारी जागृति का कार्य किया। उन्होंने शादीशुदा औरतों को पर-पुरुषों के साथ नाटक में काम करने के लिए प्रेरित किया। बागल कोट में बच्चों के लिए एक प्राइमरी स्कूल खुलवाया। इसी प्रकार लेखिका की बहिन रेणु भी अपने हठी स्वभाव की धनी थी। वह स्कूल की बस न आने पर सबके मना करने पर भी भयंकर वर्षा के बीच पैदल ही स्कूल चली गयी। इससे सिद्ध होता है कि ये दोनों व्यक्तित्व स्वतन्त्र सोच के धनी थे और अपनी सोच के आधार पर अपनी राह पर चलने की हिम्मत रखते थे।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न—

1. लेखिका ने बागलकोट कस्बे में 'अंग्रेजी-हिन्दी-कन्नड़' तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला स्कूल खोला था, यह कस्बा कौनसे राज्य में स्थित था?
   (अ) बिहार (ब) राजस्थान (स) कर्नाटक (द) महाराष्ट्र
2. लेखिका को उसके पिताजी द्वारा कौनसा उपन्यास दिया गया था?

(अ) कर्मभूमि (ब) सेवासदन (स) गोदान (द) ब्रदर्स कारामजोव

3. जब आजादी पाने का जश्न मनाया गया तो लेखिका बीमारी के कारण जश्न में शामिल नहीं हो सकी थी, लेखिका पीड़ित थी—
(अ) टाइफाइड से (ब) टी.बी. से (स) केन्सर से (द) उदर रोग से
4. लेखिका की तीसरे नम्बर की बहन का नाम था—
(अ) उमा (ब) चित्रा (स) रेणु (द) अचला
5. लेखिका के स्वयं सहित कुल कितनी बहनें थीं?
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6
6. पाठ में 'परदानशीं' शब्द से तात्पर्य है—
(अ) परदा करने वाली स्त्री (ब) परदा नहीं करने वाली स्त्री
(स) खेती करने वाली स्त्री (द) व्यापार करने वाली स्त्री
7. लेखिका का स्वयं का घर का नाम था—
(अ) अचला (ब) चित्रा (स) रेणु (द) उमा
8. लेखिका की माँ रुचि रखती थी—
(अ) घरेलू काम-काज में (ब) किताबें पढ़ने व संगीत सुनने में
(स) सिलाई कार्य में (द) व्यापार करने में
9. लेखिका की नानी ने अपनी बेटी की शादी किसके साथ करने की इच्छा प्रकट की थी?
(अ) अंग्रेज अधिकारी (ब) डॉक्टर (स) स्वतन्त्रता सेनानी (द) उद्योगपति
10. लेखिका के नाना के क्रान्तिकारी मित्र का क्या नाम था?
(अ) विक्रम सिंह (ब) धन्ना राय (स) सोहनलाल (द) प्यारे लाल शर्मा

उत्तर-माला—1. (स) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ) 7. (द) 8. (ब) 9. (स) 10. (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. लेखिका के नाना विलायत से .... डिग्री लेकर आए थे?
2. स्कूल से घर वापसी पर जब गाड़ी लेखिका की छोटी बहन रेणु को लेने जाती तो वह इसमें बैठने से इन्कार कर देती है वह इसे .... का प्रतीक मानती थी।
3. लेखिका की परदादी का व्रत था कि उनके पास तीन धोतियाँ होते ही वह तीसरी को .... में दे देंगी।
4. लेखिका पाँच बहनों में .... नम्बर की बहन थी।
5. रेणु स्वभाव से बहुत .... थी।
6. परदादी ने मंदिर में जाकर .... के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत माँगी।

उत्तर—1. बैरिस्ट्री 2. सामंतशाही 3. दान 4. दूसरे 5. हठी 6. पतोहू।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'मेरे संग की औरतें' शीर्षक कहानी में लेखिका ने सर्वप्रथम किसकी कहानी प्रस्तुत की है?
उत्तर—लेखिका ने सर्वप्रथम अपनी नानी की कहानी प्रस्तुत की है।
प्रश्न 2. लेखिका स्वतन्त्रता प्राप्ति के दिन इण्डिया गेट पर आयोजित जश्न में शामिल क्यों नहीं हो सकीं?
उत्तर—बुखार से पीड़ित होने के कारण।
प्रश्न 3. लेखिका के नाना ने कौनसे विश्वविद्यालय से बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त की थी?
उत्तर—कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय।
प्रश्न 4. लेखिका के पिता को आई.सी.एस. की परीक्षा में बैठने से क्यों रोक दिया गया था?
उत्तर—स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भाग लेने के कारण।
प्रश्न 5. लेखिका की नानी अपनी बेटी की शादी किसी स्वतन्त्रता के सिपाही से क्यों करवाना चाहती थी?
उत्तर—क्योंकि वह किसी अंग्रेज भक्त और अंग्रेजों की गुलामी को पसन्द नहीं करती थी।
प्रश्न 6. "अब तुम्हारी मर्जी, चाहे चोरी करो या खेती।" यह बात किसने और किसको कही थी?
उत्तर—लेखिका की परदादी ने चोर को।
प्रश्न 7. लेखिका ने बताया पिताजी ने मुझे पढ़ने के लिए 'ब्रदर्स कारामजोव' उपन्यास दिया, किताबें पढ़ने का मुझे मिराक था। यहाँ 'मिराक' शब्द का क्या तात्पर्य है?

उत्तर–'मिराक' शब्द से तात्पर्य है मानसिक रोग।

प्रश्न 8. पिता से प्राप्त उपन्यास 'ब्रदर्स कारामजोव' का एक अध्याय लेखिका को पहली बार पढ़ने में ही कंठस्थ हो गया था, यह अध्याय किससे सम्बन्धित था?

उत्तर–यह अध्याय बच्चों पर होने वाले अनाचार-अत्याचार से सम्बन्धित था।

प्रश्न 9. लेखिका ने किस स्थान पर तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला प्राइमरी स्कूल खोला?

उत्तर–कर्नाटक के छोटे से कस्बे बागलकोट में।

प्रश्न 10. लेखिका की माँ का व्यक्तित्व कैसा था?

उत्तर–वह अत्यन्त सुन्दर, ईमानदार, सत्यप्रिय और निष्पक्ष थीं।

प्रश्न 11. लेखिका को लेखन के अलावा किस बात का शौक था?

उत्तर–उसको नाटकों में अभिनय का शौक था।

प्रश्न 12. गाड़ी में बैठना उसकी दृष्टि में सामंतशाही का प्रतीक था, यह बात किसके लिए कही गई है?

उत्तर–लेखिका की चौथी बहन रेणु के लिए।

प्रश्न 13. "वचन दीजिए कि मेरी लड़की के लिए वर आप तय करेंगे।" यह बात किसने, किसको कही थी?

उत्तर–लेखिका की नानी ने अपने पति के मित्र स्वतन्त्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा को।

प्रश्न 14. रेणु के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–रेणु के व्यक्तित्व की प्रमुख दो विशेषताएँ थीं—(1) वह अड़ियल स्वभाव की थी और (2) सत्यवादी थी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. लेखिका की नानी मरने से पहले मुँहजोर क्यों हो उठी थी?

उत्तर–लेखिका की नानी मरने से पहले मुँहजोर इसलिए हो उठी थी, क्योंकि उसे लगने लगा कि यदि उसकी पुत्री का विवाह उनकी तरह ही किसी अंग्रेज समर्थक से करवा दिया गया तो वह भी दूसरों के इशारों पर चलने को मजबूर हो जायेगी।

प्रश्न 2. लेखिका की नानी ने अपने अन्तिम समय में स्वतन्त्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा से मिलकर क्या कहा था और क्यों?

उत्तर–लेखिका की नानी ने स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा से मिलकर यह कहा था कि मेरी पुत्री का विवाह किसी आजादी के सिपाही को ढूँढ़कर करवा दीजिएगा, क्योंकि वह यह नहीं चाहती थी कि उसकी पुत्री की शादी साहबों के फरमाबरदारों से हो।

प्रश्न 3. 'मजे की बात यह थी।' लेखिका के अनुसार मजे की बात क्या थी?

उत्तर–मजे की बात यह थी कि हमारे देश में आजादी की जंग लड़ने वाले ही अंग्रेजों के सबसे बड़े प्रशंसक थे। चाहे गाँधी-नेहरू हों या फिर मेरे पिताजी के घर वाले।

प्रश्न 4. "हम हाथी से हल ना जुतवाया करते, हम पै बैल हैं।" यह कथन किसने, किसके लिए और क्यों कहा?

उत्तर–यह कथन लेखिका की दादी ने लेखिका की माँ के लिए कहा है, क्योंकि लेखिका की माँ घर का काम करना तो दूर, बच्चों के लालन-पालन में भी रुचि नहीं लेती थी। ये सब कार्य घर के अन्य सदस्य ही किया करते थे।

प्रश्न 5. लेखिका के घर में किस बात की छूट थी? उस छूट का क्या परिणाम निकला?

उत्तर–लेखिका के घर में निजत्व बनाये रखने की छूट थी। उस छूट का यह परिणाम निकला कि लेखिका सहित तीन बहिनें और छोटा भाई लेखन क्षेत्र में आ गये।

प्रश्न 6. लेखिका की परदादी ने क्या व्रत ले रखा था और क्यों?

उत्तर–लेखिका की परदादी अपरिग्रही थीं इसलिए उन्होंने व्रत ले रखा था कि यदि उनके पास कभी दो से ज्यादा धोतियाँ हो जायेंगी तो वे तीसरी का दान कर देंगी।

प्रश्न 7. लेखिका 15 अगस्त, 1947 के आजादी के जश्न में शामिल क्यों नहीं हो पायी थी?

उत्तर–लेखिका 15 अगस्त, 1947 के आजादी के जश्न में टाइफाइड से पीड़ित होने के कारण शामिल नहीं हो पायी थी, क्योंकि उसके चिकित्सक ने उसे बाहर जाने के लिए मना कर दिया था।

प्रश्न 8. चोर माँजी की किस बात से प्रभावित हुआ?

उत्तर–चोर माँजी की उदारता, सज्जनता, आत्मीयता और क्षमा भावना से प्रभावित हुआ और उनकी सद्भावना देखकर उसके मन में अपने प्रति ग्लानि और माँ के प्रति श्रद्धा जाग गयी।

प्रश्न 9. चोर ने चोरी का धन्धा क्यों छोड़ दिया था?

उत्तर–लेखिका की परदादी ने चोर से सद्भाव से पूर्ण होकर कहा था—"अब तुम्हारी मर्जी, चाहे चोरी करो या खेती।" तब से उसने खेती करना प्रारम्भ कर दिया था और चोरी का धन्धा छोड़ दिया था।

प्रश्न 10. लेखिका की किन-किन बहिनों ने लेखन कार्य नहीं किया?

उत्तर–लेखिका सहित पाँच बहिनों में से दो बहिनों ने लेखन कार्य नहीं किया। उन दो बहिनों के नाम चित्रा और रेणु हैं। इन दोनों के अलावा सभी बहिनों ने पूर्ण मनोयोग के साथ लेखन कार्य किया।

प्रश्न 11. पिताजी द्वारा भेजी गाड़ी जब बस अड्डे से रेणु को लेने जाती थी तब वह गाड़ी में बैठकर आने से इनकार क्यों कर देती थी?

उत्तर–रेणु पिताजी द्वारा उसे लाने भेजी गयी गाड़ी पर बैठकर आने से इनकार इसलिए कर देती थी, क्योंकि वह उस व्यवस्था को सामंतशाही की प्रतीक मानती थी जिसके वह खिलाफ थी।

प्रश्न 12. लेखिका के पिताजी अपनी बेटियों को स्कूल से लाने के लिए गाड़ी क्यों भेजते थे?

उत्तर–लेखिका के पिताजी अपनी बेटियों को स्कूल से लाने के लिए दो कारणों से गाड़ी भेजते थे—(i) एक तो वे लड़कियों को बहुत लाड़ करते थे। (ii) दूसरे वे रसोइए को जल्दी फ़ारिग करने की इच्छा से पूरित होते थे।

प्रश्न 13. चित्रा के इम्तिहान में कम अंक क्यों आते थे?

उत्तर–चित्रा खुद पढ़ने से ज्यादा दूसरों को पढ़ाने में दिलचस्पी ज्यादा रखती थी। इसलिए इम्तिहान में उसके कम अंक आते थे।

प्रश्न 14. "एक बात हममें एकसी रही।" लेखिका की बहनों में एकसमान बात क्या थी?

उत्तर–लेखिका की सभी बहिनें लीक से हटकर चलने वाली थीं। सभी ने शादी करके उसे निभाया। बात चाहे तलाक तक पहुँच गयी हो परन्तु वैसा किया नहीं। वे अपने मर्दों के साथ हमेशा पत्नियों की ही तरह रहीं।

प्रश्न 15. लेखिका के पिता आई. सी. एस. परीक्षा में क्यों नहीं बैठ पाये थे?

उत्तर–लेखिका के पिता क्रान्तिकारी विचारधारा के व्यक्ति थे। आजादी की लड़ाई में भाग लेने के कारण वे तत्कालीन नियमों के अनुसार आई. सी. एस. परीक्षा में नहीं बैठ पाये थे।

प्रश्न 16. लेखिका की दादी के उदार दृष्टिकोण तथा परम्परा-विरोधी स्वभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–उदार दृष्टिकोण–लेखिका की परदादी लड़के-लड़की में कोई भेद नहीं करती थी। उसी से वह पतोहू की पहली सन्तान को लेकर उदार दृष्टिकोण रखती थी तथा उसने सरेआम इस बात की घोषणा भी कर दी थी।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. लेखिका तथा उसकी बहिनें हीन-भावना की शिकार क्यों नहीं बन पायीं?

उत्तर–लेखिका तथा उसकी बहिनों को देशभक्त माँ तथा गौरवशाली नानी का विराट् व्यक्तित्व सुनने को मिला था जिनके मन में आजादी के प्रति लगाव था। माँ और नानी के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर वे देशभक्ति, निडरता, लेखन आदि के कार्य करते हुए संस्कारी बनीं। उन्होंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिससे उनके परिवार को नीचा देखना पड़े। पारिवारिक देखे और सुने इन सशक्त संस्कारों के कारण वे हीन-भावना की शिकार नहीं बन पायी थीं।

प्रश्न 2. 'लेखिका की रचनाओं को ससुराल में कोई नहीं पढ़ता था'–इस बात का लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर–लेखिका की रचनाओं को तमाम खानदान के सदस्य पढ़ा करते थे लेकिन ससुराल का कोई भी सदस्य नहीं पढ़ता था। यदि ससुराल पक्ष में कोई उनके लेखन को पढ़ता तो लेखिका का सम्मान करना पड़ता और उसमें कमी होती तो उस पर व्यंग्य करते, उसे हीन भावना से देखते। इसलिए ससुराल वाले तटस्थ रहे। अतः यह सोचकर लेखिका को पहले तो बुरा लगा लेकिन बाद में यह सोच कर अच्छा लगा कि चलो ससुराल में कोई उस पर आलोचना दृष्टि रखने वाला नहीं है।

प्रश्न 3. लेखिका ने पिताजी द्वारा दिया हुआ कौनसा उपन्यास पढ़ा था? उसका प्रतिफल लेखिका को क्या मिला?

उत्तर–लेखिका ने पिताजी द्वारा दिया गया 'ब्रदर्स कारामजोव' उपन्यास पढ़ा था। बार-बार पढ़ने पर भी वह लेखिका के इतने ही पल्ले पड़ा कि उसका पहला अध्याय जो बच्चों पर होने वाले अत्याचार-अनाचार पर था, लेखिका को पहली बार में लगभग कंठस्थ हो गया था। उम्र के हर पड़ाव पर वह लेखिका के साथ रहा और लेखिका के लेखन के एक महत्त्वपूर्ण भाग को प्रभावित करता रहा जैसे 'जादू का कालीन', 'मेरा नाटक नहीं', व 'तीन किलो की छोरी' जैसी कहानियाँ व 'कंठ गुलाब' उपन्यास के कई अंश आदि लेखन में सहयोगी बना।

प्रश्न 4. लेखिका की परदादी ने भगवान् से क्या मन्नत माँगी थी? उनकी माँगी मन्नत सबको चौंकाने वाली क्यों थी?

उत्तर–लेखिका की परदादी ने भगवान् से मन्नत माँगी थी कि वह अपनी पतोहू की गोद में पहली सन्तान के रूप में लड़की दे। यह गैर रवायती मन्नत माँग कर ही उन्हें चैन नहीं पड़ा। उसे भगवान और अपने बीच पोशीदा रखने के बजाय सरेआम उसका ऐलान कर दिया। लोगों के मुँह खुले के खुले रह गए। उसकी मन्नत सबको चौंका देने वाली

इसलिए थी कि उस काल में सभी लड़की की जगह लड़के की चाहत रखते थे। उनकी मान्यता है कि लड़के से वंशवृद्धि होती है लड़की से नहीं। इसलिए सभी आश्चर्यचकित थे।

प्रश्न 5. बिहार जाकर लेखिका ने कौनसा साहसिक कार्य किया?

उत्तर—लेखिका शादी के बाद में बिहार के ऐसे छोटे कस्बे (डालमिया नगर) में रही जहाँ मर्द-औरतें, चाहे पति पत्नी हो वे घर बाहर किसी भी कार्य में अलग-अलग सहभागिता निभाती थी। उन्होंने वहाँ की महिलाओं को हिम्मत दी जो महिलाएँ पिक्चर देखने में भी अपने-अपने पतियों से दूर बैठती थीं, उन्हें इस बात के लिए तैयार किया कि वे पराये पुरुषों के साथ नाटक में अभिनय करें। यह साहसिक कार्य कर नारी-चेतना जगाने का प्रयास किया और सालभर के भीतर उन्हीं शादीशुदा औरतों को पराये मर्दों के साथ नाटक करने के लिए मना लिया। अकालराहत कोष के लिए, उन्हीं के माध्यम से पैसा इकट्ठा किया।

प्रश्न 6. 'मेरी लड़की के लिए वर आप तय करेंगे।' लेखिका की नानी ने स्वतन्त्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा से ऐसा क्यों कहा? बताइये।

उत्तर—लेखिका की नानी ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उनके बैरिस्टर पति अपनी सोच और रहन-सहन के अनुसार ही अपनी पुत्री का विवाह करना चाहेंगे जबकि वे अपने मन में आजादी के प्रति गहरी आस्था और सोच रखती थी इसलिए वे अपनी पुत्री का विवाह किसी स्वतंत्रता-सेनानी से करवाना चाहती थीं ताकि उनकी पुत्री में देशभक्ति की भावना विद्यमान रहेगी जिससे उसे देश में कोई भी विसंगतियाँ कुरीति दिखाई देगी तो वह स्वतन्त्र रूप से उसका विरोध करेगी। उसे समाप्त करने हेतु सफलतम प्रयास करेगी।

प्रश्न 7. कर्नाटक के बिशप ने किस कारण स्कूल खोलने से मना किया? क्या उसकी वह सोच उचित थी?

उत्तर—कर्नाटक का बिशप क्रिश्चियनों की पढ़ाई के लिए ही स्कूल खोलना चाहता था, उसने अन्य धर्म के लोगों के लिए स्कूल खोलने से मना किया। वह ईसाइयों की सुविधा का पक्षपाती था। जब लेखिका ने गैर क्रिश्चियन बच्चों को भी शिक्षा पाने लायक सिद्ध करते हुए आग्रह किया तो उन्होंने लेखिका के सामने स्कूल खोलने के लिए स्कूल सौ साल तक चलने की शर्त रखी। बिशप साहब ने यह कहते हुए मना किया कि बच्चों के न पढ़ पाने की समस्या आपकी है, मेरी नहीं। बिशप साहब की ऐसी सोच सर्वथा अनुचित थी।

निबन्धात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'हमने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं पाया।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लेखिका की माँ भारतीय परम्परा में माँ की परम्परा निर्वहन करने वाली स्त्री नहीं थी, क्योंकि वह न तो अपने बच्चों को लाड़ करती थी, न उनके लिए खाना पकाती थी, और न अच्छी पत्नी और बहू होने की सीख देती थी। वह कुछ बीमार रहती थी और कुछ साहित्य-चर्चा एवं संगीत-चर्चा में रुचि रखने के कारण वह एक परम्परागत माँ का कर्त्तव्य संतान के प्रति नहीं निभा पाती थी। वह बिस्तर पर लेटे-लेटे किताब पढ़ने में अपना समय व्यतीत करती थी। उसे परिवार के किसी भी सदस्य से न तो कोई शिकायत थी और न वह किसी का अनादर करती थी। इस कारण लेखिका ने कहा कि "हमने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं पाया।"

प्रश्न 2. 'परदादी को कतार से बाहर चलने का शौक था।' पाठ के आधार पर सतर्क उत्तर दीजिए।

उत्तर—लेखिका की परदादी का स्वभाव अपने ही ढंग का था। वह पारम्परिक परम्पराओं से हटकर चलने वाली थी। इसलिए उसने व्रत ले रखा था कि जब भी उसके पास दो साड़ियों से ज्यादा हो जाएँगी तब वह तीसरी साड़ी दान कर देगी। इस प्रकार वह स्वभाव से अपरिग्रही थी। इसी प्रकार परम्परा मन्नत न माँगने की विरोधी थी। उसने पुत्र-प्राप्ति की अपेक्षा पतोहू की पहली संतान लड़की होने की ईश्वर से मन्नत ही नहीं माँगी थी बल्कि उसका सरेआम ऐलान भी कर दिया था। इस प्रकार लेखिका की परदादी लीक से हटकर चलने वाली नारी थी।

प्रश्न 3. लेखिका की नानी ने मरने से पहले प्यारेलाल शर्मा के समक्ष जो प्रस्ताव किया, उससे उनके किन गुणों का पता चलता है?

उत्तर—लेखिका की नानी ने अपनी मृत्यु नजदीक मानकर अपनी पन्द्रह वर्षीया पुत्री के विवाह के लिए प्यारेलाल शर्मा के समक्ष जो प्रस्ताव किया, उससे पता चलता है कि वे मरने से पहले परदानशीं होते हुए भी मुँहजोर हो गई थीं। अपने पति के रहन-सहन को वे अंग्रेजों जैसा मानती थीं। अत: वह किसी अंग्रेज समर्थक साहब से अपनी पुत्री का विवाह नहीं चाहती थीं। वह देश की आजादी का महत्त्व समझती थीं और आजादी के सिपाहियों का जीवन अनुकरणीय मानती थीं। वह ममतामयी माँ थीं, उनमें दूरदर्शिता थी और पति का विरोध करने की शालीनता भी थी। वह साहबों के फरमाबरदारों को गुलाम जैसा मानती थीं। इस तरह लेखिका की नानी ममतामयी, स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली, विवेकशील, दूरदर्शी एवं सच्ची देशभक्त थीं।

प्रश्न 4. चोर माँजी की किस बात से प्रभावित हुआ और उसने क्या किया? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर–लेखिका ने बताया कि घर के सब मर्द विवाह में गये थे और सभी औरतें रतजगा कर रही थीं। उस समय माँजी एक कमरे में सो रही थीं। चोर अन्दर घुसा, तो खटका सुनकर माँजी ने चोर से कहा कि वह कुएँ से पानी लाकर उसे पिलावे। जब चोर ने कहा कि वह चोर है, क्या उसके हाथ का पानी पी लोगी? तब माँजी ने सहमति दी और पानी पीकर कहा कि "एक लोटा पानी पीकर हम माँ-बेटे हुए। अब बेटा, चाहे तू चोरी कर, चाहे खेती।" माँजी ने उसे छोड़ दिया। तब चोर माँजी की उदारता, सज्जनता, आत्मीयता एवं क्षमा-भावना से प्रभावित हुआ और उनकी सद्भावना देखकर उसके मन में अपने प्रति ग्लानि और माँजी के प्रति श्रद्धा जाग गयी। तब से उसने खेती का धन्धा प्रारम्भ कर दिया और सालों-साल उसी में लगा रहा।

प्रश्न 5. लेखिका ने अपनी परदादी में जो गुण बताये उनमें से दो का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–लेखिका ने अपनी परदादी में जो गुण बताये, उनमें से दो गुण इस प्रकार हैं–

(i) ईश्वर में आस्था–लेखिका की परदादी की ईश्वर में पूरी आस्था थी। वह मन्दिर में जाकर पतोहू की पहली सन्तान लड़की होने की मन्नत माँग आयी थीं।

(ii) दानशीलता–परदादी ने यह व्रत ले रखा था कि उनके पास कभी दो से ज्यादा धोतियाँ हो जायेंगी तो वे तीसरी दान कर देंगी। इस तरह वे दानशील एवं अपरिग्रही थीं।

प्रश्न 6. 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर लेखिका की नानी की चारित्रिक विशेषताओं का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–'मेरे संग की औरतें' संस्मरणात्मक पाठ में लेखिका ने अपनी नानी के चरित्र की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया है, उनका मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है–

(i) स्वतन्त्र विचारों वाली–लेखिका की नानी अनपढ़, परदानशीं और पुराने विचारों की नारी थी, परन्तु वह आजादी का महत्व समझने वाली स्वतन्त्र विचारों की महिला भी थी। इसी से उसने साहबी रोबदाब वाले पति के जीवन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया था।

(ii) स्वतन्त्रता सेनानियों का सम्मान–लेखिका की नानी स्वतन्त्रता सेनानियों का सम्मान करती थीं, उन्हें आदर एवं महत्त्व देती थीं। इसी कारण उसने स्वतन्त्रता सेनानी प्यारेलाल शर्मा को अपनी इच्छा बतायी और अपनी बेटी की शादी किसी स्वतन्त्रता सेनानी से करवाने का आग्रह किया।

(iii) देशभक्ति–लेखिका की नानी उस समय चले रहे स्वतन्त्रता-संग्राम की पक्षधर थीं। उसमें देश की आजादी के प्रति जुनून था एवं देशभक्ति की भावना थी।

प्रश्न 7. लेखिका ने बिहार के डालमिया नगर में सामाजिक चेतना जगाने का काम किस प्रकार किया?

उत्तर–डालमिया नगर में पति-पत्नी सिनेमाहॉल में अलग-अलग बैठते थे, अर्थात् सारी स्त्रियाँ एक तरफ और सारे पुरुष एक तरफ बैठते थे। लेखिका ने वहाँ के इस सामाजिक चलन को बदलने का निश्चय किया। उन्होंने साल भर तक प्रयास किया और शादीशुदा औरतों को पराए मर्दों के साथ नाटक में अभिनय करने के लिए राजी कर लिया। इस तरह जो औरतें अपने पति के साथ बैठकर फिल्में भी नहीं देख पाती थीं, वे पराए मर्दों के साथ नाटक करने लगीं। लगभग चार साल तक लेखिका ने उनके साथ अनेक नाटकों का मंचन किया और अकाल राहत कोष के लिए धन एकत्र कर सामाजिक चेतना जगाने का प्रयास किया।

प्रश्न 8. "मैं अपनी नहीं, उन अदेवियों की बात करना चाहती हूँ"–इसमें किन अदेवियों की ओर संकेत किया गया है और उनकी किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

उत्तर–इसमें लेखिका ने अपनी तीनों छोटी बहिनों को 'अदेवियाँ' कहते हुए उनके स्वभाव आदि की ओर संकेत किया है। लेखिका की तीसरे नम्बर की बहिन चित्रा खुद पढ़ने में दिलचस्पी नहीं रखती थी। उसने अपनी पसन्द के लड़के से शादी की। चौथे नम्बर की बहिन रेणु जिद्दी स्वभाव की थी। उसे पिता की कार में बैठने, परीक्षा देने में परहेज था। उसने अपने लिए नहीं, पिता की खुशी के लिए बी.ए. की परीक्षा दी। वह अपनी बातों से लोगों को हँसा देती थी। सबसे छोटी बहिन अचला ने पिता के कहे अनुसार अर्थशास्त्र में एम.ए. किया, फिर पत्रकारिता में दाखिला लिया और पिता की पसन्द से शादी कर ली। इस प्रकार लेखिका की बहिन रेणु जिद्दी स्वभाव की, चित्रा मनमौजी एवं हठी तथा अचला सरल स्वभाव की बतायी गई है।

प्रश्न 9. 'मेरे संग की औरतें' संस्मरणात्मक पाठ का मूल प्रतिपाद्य या प्रमुख उद्देश्य क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'मेरे संग की औरतें' शीर्षक पाठ में लेखिका मृदुला गर्ग ने अपने परिवार की औरतों को लेकर संस्मरण रूप में अपने मनोभावों का प्रकाशन किया है। इस पाठ के मूल प्रतिपाद्य या प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार स्पष्ट किये जा सकते हैं—

(1) महिलाओं को परम्परावादी न होकर समयानुसार नयी प्रगतिवादी चेतना रखनी चाहिए। लेखिका की नानी और परदादी का आचरण इस दृष्टि से प्रेरणादायी बताया गया है।

(2) नारी होने की हीन भावना नहीं रखकर महिलाओं को अपने भविष्य का निर्माण करना चाहिए। लेखिका की पाँचों बहिनें हीन भावना से ग्रस्त नहीं रहीं।

(3) नारी-समाज में सामाजिक-चेतना का प्रसार कर समाज-सेवा में सहयोग करना चाहिए। लेखिका ने जीवन में ऐसा प्रयास किया।

(4) उदारता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा तथा आत्मीयता को जीवन में उतारना चाहिए। व्यक्तित्व का विकास स्वयं ही किया जाना चाहिए।

3. रीढ़ की हड्डी

(जगदीश चन्द्र माथुर)

लेखक-परिचय–प्रस्तुत एकांकी के लेखक जगदीशचन्द्र माथुर का जन्म सन् 1917 में खुर्जा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। बचपन से ही नाटकों में रुचि होने के कारण स्कूल-कॉलेज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नाट्य-लेखन, निर्देशन और अभिनय करते रहे। आगे चलकर अनेक प्रसिद्ध नाटकों का सृजन किया, जिनमें कोणार्क, पहला राजा, शारदीया आदि नाटक एवं भोर का तारा, ओ मेरे सपने आदि एकांकी-संग्रह प्रसिद्ध हैं। इनका निधन सन् 1978 में हुआ।

पाठ-सार–प्रस्तुत एकांकी में उमा बी.ए. पास एक समझदार एवं सच्चरित्र युवती प्रमुख पात्र है। उसे देखने के लिए लड़के वाले आते हैं। इस कारण उमा के पिता रामस्वरूप और माँ प्रेमा तैयारी करते हैं तथा प्रेमा को हिदायत देते हुए रामस्वरूप कहता है कि उमा को देखने के लिए शंकर और उसके पिता गोपाल प्रसाद आ रहे हैं। वे ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहते हैं, इसलिए उनके सामने उमा को बी.ए. पास मत बता देना। लड़का इस समय मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है।

समय पर गोपाल प्रसाद और शंकर आते हैं। विवाह को लेकर बातचीत होती है, उसे बिजनेस की तरह देखा जाता है। वे उमा से उसकी पढ़ाई-लिखाई, पेंटिंग, सिलाई-कढ़ाई एवं संगीत-ज्ञान आदि के बारे में पूछते हैं। उमा की आँखों पर चश्मा देखकर गोपाल प्रसाद को शक होता है। इसी प्रसंग में बातचीत आगे बढ़ती है। उमा उनके व्यवहार को देखकर कहती है कि लड़की को तो मेज-कुर्सी की तरह देखा जाता है, परन्तु उसकी इच्छा-अनिच्छा के बारे में कुछ नहीं पूछा जाता है। मैंने बी.ए. पास किया है परन्तु ये साहबजादे लड़कियों के हॉस्टल के आसपास घूमते हुए पकड़े गये थे। मुझे अपनी इज्जत का ख्याल है, परन्तु इनकी रीढ़ की हड्डी है भी कि नहीं? उमा के इस कथन पर गोपाल प्रसाद को गुस्सा आता है और हमारे साथ धोखा हुआ है–यह कहते हुए वे दोनों वहाँ से चले जाते हैं। उमा रोने लगती है।

कठिन-शब्दार्थ–गंदुमी = गेहुएँ रंग का। डाट = ढक्कन। जतन =कोशिश। ठठोली = मजाक। टीमटाम = दिखावा। कारबार = धंधा। इन्ट्रेन्स = कक्षा ग्यारह। तालीम = शिक्षा। कमबख्त = अभागा। फितरती = शरारती। मुखातिब = मुँह की ओर। मार्जिन = अन्तर, फासला। मुकाबला = होड़। तकदीर = भाग्य। बैकबोन = रीढ़ की हड्डी। रस्म = रिवाज। ज़ायका = स्वाद। काबिल = योग्य। तल्लीनता = डूबना। सकपकाना = घबराना। दगा करना = धोखा करना। रुलासापन = रोने का भाव। बेबसी = मजबूरी।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर ''एक हमारा जमाना था।''–कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस तरह की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?

उत्तर–मानव का यह स्वभाव है कि वह अतीत को अच्छा मानता है तथा वर्तमान काल से असन्तुष्ट रहता है। इसीलिए वह बात-बात पर अतीत की तुलना वर्तमान से करने लगता है। वस्तुतः इस प्रकार की तुलना करना उचित नहीं है, क्योंकि समय के साथ ही व्यक्ति एवं समाज में परिवर्तन होता रहता है। व्यक्ति का जीवन-स्तर, आचार-विचार एवं आदर्श आदि सब बातें सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती हैं। जो अतीत को अच्छा मानता है, वह वर्तमान को बुरा ही मानेगा। अतएव इस तरह की तुलना असंगत है।

प्रश्न 2. रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उसकी किस विवशता को उजागर करता है?

उत्तर–रामस्वरूप स्त्री-शिक्षा का समर्थक एवं प्रगतिशील विचारों वाला व्यक्ति है। वह अपनी बेटी उमा को सुशिक्षित कराने हेतु बी.ए. तक पढ़ाता है। परन्तु जब उमा के विवाह के लिए वर की तलाश करता है, तो लड़की की उच्च शिक्षा ही बाधा बन जाती है। उधर लड़का शंकर और उसका पिता गोपाल प्रसाद मैट्रिक से अधिक पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहते हैं, वे घर में बहू को मेम के रूप में देखने के विरोधी हैं। उनकी इच्छा का ध्यान रखकर रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा को छिपा लेता है।

वस्तुत: रामस्वरूप के उक्त आचरण का यह विरोधाभास उसकी इस विवशता को व्यक्त करता है कि प्रगतिशील विचारों वाला होने पर भी लड़की का पिता होने के नाते उसे रूढ़िग्रस्त लोगों के सामने झुकना पड़ता है। इसमें समाज में वधू पक्ष की विवशता तथा नारी जाति की शोचनीय स्थिति का भी पता चलता है।

प्रश्न 3. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?

उत्तर–रामस्वरूप चाहते हैं कि उनकी बेटी उमा लड़के वालों के सामने सज-धज कर आवे। वह बी.ए. पास होने की बात को छिपाये रखे और लड़के वालों के सामने अपने सभी गुणों का खुलकर बखान करे तथा स्वयं को हर तरह से योग्य बतावे। वस्तुत: उमा से इस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करना उचित नहीं है। क्योंकि सभ्य समाज में स्त्री और पुरुष में भेदभाव रखना असंगत है। लड़की को भेड़-बकरी की तरह अच्छी तरह देखने पर ही रिश्ता करना सर्वथा अमानवीय व्यवहार है।

विवाह में लड़की की पसन्द-नापसन्द का अधिकार उसे भी मिलना चाहिए और उसके गुणों को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए।

प्रश्न 4. गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिजनेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखें।

उत्तर–गोपाल प्रसाद विवाह को बिजनेस मानते हैं। इसीलिए वे बातचीत के बीच कहते हैं—चलो अब बिजनेस की बात कर ली जाए। शादी को व्यवसाय मानना उचित नहीं है, क्योंकि इससे मानवीय संबंधों की गरिमा घट जाती है और व्यवहारगत मधुरता नष्ट हो जाती है। रामस्वरूप द्वारा अपनी बेटी को बी.ए. पढ़ाना और वर पक्ष की चाहना के आधार पर उसकी शिक्षा को छिपाना भी गलत है। इन कारणों से दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं। गोपाल प्रसाद अधिक बड़ा अपराधी है, क्योंकि वह लड़की को मेज-कुर्सी की तरह सजावटी सामान मानता है और भेड़-बकरी की तरह सौदा पाटना चाहता है। रामस्वरूप विवशता में घिरे होने के कारण ऐसा करता है, फिर भी उसका कार्य अपराधपूर्ण ही कहा जायेगा।

प्रश्न 5. "..........आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं.................." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है?

उत्तर–रीढ़ की हड्डी शरीर को खड़ा रखने में तथा स्वस्थ रखने में महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इसी प्रकार व्यक्ति का जीवन उसकी शारीरिक एवं चारित्रिक विशेषताओं पर टिका रहता है। जिसके शरीर में रीढ़ की हड्डी नहीं है, उसकी कमर बेसहारा होकर झुक जाती है। शंकर की कमर भी कुछ झुकी रहती है, कॉलेज में उसके दोस्त उसका मजाक उड़ाते थे कि शंकर की 'बैकबोन' नहीं है। गर्ल्स हॉस्टल के चक्कर काटने से उसकी पिटाई भी हुई थी, इसलिए वह कमर झुका कर चलता था। साथ ही होस्टल की नौकरानी के पैरों पड़ कर वहाँ से भागा था, जिसके कारण वह चरित्र से भी कमजोर था। उमा इस बात को जानती थी। इसी कारण उसने ऐसा कहा। इससे वह शंकर की शारीरिक एवं चारित्रिक दुर्बलता की ओर संकेत कर बताना चाहती है कि वह न तो पति बनने के योग्य है और न विवाह करने के योग्य है।

प्रश्न 6. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की–समाज को कैसे व्यक्तित्व की जरूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर–हमारे समाज को रीढ़-विहीन, चरित्रहीन शंकर जैसे लड़कों की बिल्कुल जरूरत नहीं है। क्योंकि शंकर जैसे लड़के न तो समाज को और न परिवार को कुछ दे सकते हैं, उल्टे कलंकित ही कर सकते हैं। समाज को उमा जैसी लड़कियों की जरूरत है। ऐसी ही निर्भीक, साहसी और स्वाभिमानी लड़कियाँ रामप्रसाद जैसे विवाह को व्यापार समझने वाले भ्रष्ट, चालाक, व्यवहार-शून्य व्यक्ति को सबक सिखा कर समाज को एक नया रास्ता दिखा सकती हैं।

प्रश्न 7. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक और व्यंग्यात्मक है। इस एकांकी की मूल समस्या वर का व्यक्तित्वहीन होना है। यदि शंकर समझदार और व्यक्तित्व-सम्पन्न होता तो उसके पिता की यह हिम्मत नहीं होती कि भावी

जीवन की डोर में बँधने वाले दो प्राणियों के मध्य बैठकर इस प्रकार की फूहड़ बातें करता। कम पढ़ी-लिखी बहू की बात करके अशिक्षा को प्रोत्साहन देता। कम पढ़ी-लिखी बहू पिता की जरूरत हो सकती है, लेकिन पुत्र की नहीं। इसीलिए व्यक्तित्वविहीन शंकर पिता की हाँ में हाँ मिलाता है और अपनी कमजोरी तथा कायरता का प्रदर्शन करता है। इसीलिए उसे रीढ़ की हड्डी के बिना दिखाया गया है। अत: 'रीढ़ की हड्डी' सर्वथा सार्थक, व्यंग्यात्मक और सफल शीर्षक है।

प्रश्न 8. कथावस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?

उत्तर–यदि देखा जाये तो इस एकांकी में मूल में दो पात्र अन्य पात्रों की अपेक्षा प्रमुख हैं—शंकर और उमा। इन दोनों के विवाह को लेकर एकांकी के कथानक का विकास हुआ है। लेकिन शंकर का चरित्र और व्यक्तित्व गिरा हुआ है। इसलिए वह एकांकी का मुख्य पात्र नहीं माना जा सकता है। उमा ही एकमात्र एकांकी का ऐसा पात्र है जो अपनी प्रतिभा और साहस के बल पर विवाह में उठने वाली बातों का सफाया करके दर्शकों के मन पर अपना स्थायी प्रभाव जमा देती है और शंकर तथा उसके पिता को बेनकाब कर देती है। इसलिए उमा को ही एकांकी का प्रमुख पात्र कहना उचित है।

प्रश्न 9. एकांकी के आधार पर रामस्वरूप और गोपालदास की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–रामस्वरूप की चारित्रिक विशेषताएँ–'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में रामस्वरूप प्रमुख पुरुष पात्र है। वह उमा का पिता एवं अधेड़ उम्र का व्यक्ति है। रामस्वरूप अतीव मेहनती तथा प्रगतिशील विचारों वाला है। इसी कारण वह अपनी पुत्री उमा को उच्च शिक्षा दिलाता है। वह स्नेही पिता है। अपनी पुत्री के विवाह के लिए वह अत्यधिक चिन्तित रहता है और अपनी इसी इच्छा को पूरी करने के लिए लड़के वाले से अपनी पुत्री की योग्यता भी छिपा लेता है। वह पत्नी से हँसी-मजाक करने से विनोदप्रिय भी है। रामस्वरूप लड़के वालों की अनुचित बातों का विरोध करना चाहता है, परन्तु विवाह योग्य कन्या का पिता होने से विवश रहता है। इस प्रकार एकांकी में रामस्वरूप के चरित्र की अनेक विशेषताओं का चित्रण हुआ है।

गोपाल प्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ–शंकर का पिता गोपाल प्रसाद वैसे तो सुशिक्षित वकील है, वह अनुभवी एवं अधेड़ उम्र का व्यक्ति है। वकीली पेशे के कारण वह चालाक, स्वार्थी, दकियानूसी विचारों से पोषित व्यक्ति है। वह आजकल के सामाजिक वातावरण को अच्छी तरह से समझता है इसीलिए ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की को अपने परिवार की बहू बनाने का आकांक्षी नहीं है। वह शंकालु एवं तुच्छ विचारों वाला ऐसा पात्र है, जो शादी के सम्बन्ध को पूरी तरह 'बिजनेस' मानता है। वह नारी का सम्मान करना नहीं जानता है तथा रूढ़िवादी विचारों का पक्षपाती है। वह अतीत की खूब प्रशंसा करता है और अपने लड़के की सभी कमियों को जानता हुआ भी उन्हें छिपाने का प्रयास करता है। वह सच्चाई का सामना नहीं कर पाता है और अन्त में गुस्से से भरकर दूसरों को ही दोषी बताता है। इस प्रकार एकांकी में गोपाल प्रसाद का चरित्र दोषों से व्याप्त दिखाई देता है।

प्रश्न 10. इस एकांकी का क्या उद्देश्य है? लिखिए।

उत्तर–'रीढ़ की हड्डी' एकांकी सामाजिक खोखलेपन पर व्यंग्यात्मक ढंग से प्रकाश डालकर उसे दूर करने के उद्देश्य से लिखा गया है। हमारे समाज में लड़कियों के विवाह के सम्बन्ध में जो छान-बीन की जाती है, उन्हें जिस तरह नापा-तौला जाता है, वह एकदम अपमानजनक है। आज लड़की-लड़के दोनों में समानता का व्यवहार करने की चर्चा तो की जाती है, परन्तु ऐसा नहीं होता है। लड़के वाले स्वयं को निर्दोष, उच्च एवं सर्वगुण-सम्पन्न मानते हैं तथा लड़की-पक्ष को अपने से छोटा मानकर उनसे मनचाही फरमाइश करते हैं। अन्त में उमा द्वारा जो उत्तर दिया जाता है, उससे नारी-चेतना का स्पष्ट प्रकाशन हुआ है। इस तरह प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य नारी-चेतना को जागृत करना, नारी-सम्मान की भावना का प्रसार करना तथा रिश्ते को लेकर परम्परागत रूढ़ियों का विरोध करना रहा है।

प्रश्न 11. समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु आप कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं?

उत्तर–समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने के लिए अग्रलिखित प्रयास कर सकते हैं—

(1) लोगों के बीच सुशिक्षित नारी के लाभों का प्रचार किया जा सकता है।

(2) महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करें और माँ, बहिन एवं अन्य सभी नारियों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करें।

(3) सुशिक्षित कन्याओं को नौकरी दिलवाकर उन्हें पुरुषों के समान महत्त्व दिलवाया जा सकता है।

(4) कम पढ़ी-लिखी बहू चाहने वालों को समझा-बुझा कर प्रगति के रास्ते पर लाया जा सकता है।

(5) नारी-समाज के साथ हो रहे अत्याचार, शोषण आदि का पूरा विरोध कर संघर्ष में उनका साथ दें।

(6) दहेज-प्रथा एवं अनमेल विवाह का विरोध कर नारियों को उचित गरिमा प्रदान की जा सकती है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक पाठ है एक—

(अ) नाटक (ब) आत्मकथा (स) उपन्यास (द) एकांकी

2. गोपाल प्रसाद पेशे से था—
(अ) डॉक्टर (ब) व्यापारी (स) वकील (द) अध्यापक

3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का प्रमुख पात्र है—
(अ) प्रेमा (ब) उमा (स) रामस्वरूप (द) गोपाल प्रसाद

4. शंकर लखनऊ के कौनसे कॉलेज में पढ़ता है?
(अ) इन्जिनियरिंग कॉलेज (ब) लॉ कॉलेज (स) मेडिकल कॉलेज (द) बी.एड. कॉलेज

5. प्रेमा अपनी पढ़ाई के बारे में बताते समय कौनसी पुस्तक पढ़ने की बात करती है?
(अ) स्त्री-सुबोधिनी (ब) गीता (स) मधुशाला (द) भोर का तारा

6. एकांकी की पात्र उमा ने कहाँ तक की शिक्षा प्राप्त की थी?
(अ) आठवीं (ब) मैट्रिक (स) बी.ए. (द) एम.ए.

7. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के लेखक हैं।
(अ) फणीश्वरनाथ 'रेणु' (ब) जगदीशचन्द्र माथुर (स) मृदुला गर्ग (द) विद्यासागर

8. एकांकी में उमा को विवाह के लिए लड़के वाले कौन-कौन देखने आते हैं?
(अ) गोपाल प्रसाद-रामस्वरूप (ब) शंकर-रतन
(स) रामस्वरूप-रतन (द) शंकर-गोपाल प्रसाद

9. घरेलू नौकर रतन से चादर मँगवाने पर वह प्रेमा से भूलवश चादर की बजाय क्या माँगता है?
(अ) रजाई (ब) गद्दा (स) धोती (द) पर्दा

10. शंकर को नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर क्यों भागना पड़ा?
(अ) चोरी करते पकड़े जाने पर (ब) लड़ाई करते पकड़े जाने पर
(स) झूठ बोलते पकड़े जाने पर (द) लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द घूमते पकड़े जाने पर

उत्तर-माला—1. (द) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (स) 7. (ब) 8. (द) 9. (स) 10. (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक एकांकी की कथावस्तु का आधार .... है।
2. रामस्वरूप प्रेमा को ईश्वर का बनाया हुआ .... कहते हैं।
3. उमा की आँखों पर सोने के फ्रेम वाला चश्मा देखकर शंकर एवं गोपाल प्रसाद .... उठते हैं।
4. कॉलेज में शंकर के दोस्त उसका मजाक उड़ाते थे कि शंकर की .... नहीं है।
5. गोपाल प्रसाद स्त्रियों की उच्च शिक्षा का .... है।
6. गोपाल प्रसाद विवाह को एक .... मानता है।

उत्तर—1. आधुनिक नारी चेतना 2. ग्रामोफोन 3. चौंक 4. बेकबोन 5. घोर-विरोधी 6. बिजनेस।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के माध्यम से लेखक ने समाज की किस मानसिकता पर प्रहार किया है?
उत्तर—समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता पर प्रहार किया है।

प्रश्न 2. गोपाल प्रसाद के अनुसार आमदनी बढ़ाने के लिए सरकार को कौनसा टैक्स लगाना चाहिए?
उत्तर—खूबसूरती पर टैक्स लगाना चाहिए।

प्रश्न 3. लड़के वाले देखने आने पर उमा सितार पर कौनसा गीत गाती है?
उत्तर—मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।

प्रश्न 4. गोपाल प्रसाद किस विचार का व्यक्ति था?
उत्तर—रूढ़िवादी विचारों एवं दकियानूसी ख्यालों का।

प्रश्न 5. ''मेज-कुर्सी बिकती है तो दुकानदार उन्हें ग्राहक को दिखा देता है, ग्राहक मेज-कुर्सी से कुछ नहीं पूछता।'' यह बात किसने और कब कही?
उत्तर—उमा ने, जब शंकर एवं गोपाल प्रसाद विवाह के लिए उमा को देखने आते हैं।

प्रश्न 6. एकांकी के आधार पर उमा के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।
उत्तर—उमा एक सुशिक्षित, प्रगतिशील विचारों, सादगी पसन्द एवं स्वाभिमानी युवती है।

प्रश्न 7. गोपाल प्रसाद के अनुसार पढ़ना और काबिल होना किसका काम बताया गया है?

उत्तर—केवल मर्दों का।

प्रश्न 8. उमा का पिता रामस्वरूप किन विचारों वाला व्यक्ति था?

उत्तर—स्त्री शिक्षा का समर्थक एवं प्रगतिशील विचारों वाला।

प्रश्न 9. रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद क्या कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान से करते हैं।

उत्तर—'एक हमारा जमाना था'।

प्रश्न 10. इस एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' किस बात का प्रतीक है?

उत्तर—मौलिक विचारों तथा व्यक्तित्व का प्रतीक है।

प्रश्न 11. गोपाल प्रसाद पुरुषों की तुलना में महिलाओं को छोटा समझने के अपने विचार के पक्ष में क्या तर्क देता है?

उत्तर—'मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं। शेर के बाल होते हैं शेरनी के नहीं।'

प्रश्न 12. एकांकी में रामस्वरूप के अनुसार कितने प्रकार का ग्रामोफोन होता है और कौन-कौनसा?

उत्तर—दो तरह का, एक तो आदमी का बनाया हुआ दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. वह तुम्हारी लड़की तो मुँह फुलाकर पड़ी है। उमा के मुँह फुलाने का क्या कारण था?

उत्तर—उमा को लड़के वाले देखने आ रहे थे। माँ ने उसे सज-धज कर क्रीम-पाउडर लगाकर आने को कहा था। उसे बनाव-शृंगार पसन्द नहीं था। इस कारण वह माँ की बात सुनकर मुँह फुलाकर लेट गई थी।

प्रश्न 2. प्रेमा ने अपनी पुत्री को इंट्रेन्स तक ही पढ़ाने की बात क्यों कही?

उत्तर—प्रेमा का मानना था कि कम पढ़ी-लिखी लड़की के नखरे कम होते हैं। वह हर कही बात को सहजता से मान लेती है। जबकि अधिक पढ़ी-लिखी लड़कियाँ किसी बात को न तो सहजता से लेती हैं और न सुनती हैं।

प्रश्न 3. रामस्वरूप अपनी पत्नी के किस स्वभाव के कारण झुलझुला उठते हैं?

उत्तर—रामस्वरूप अपनी पत्नी के भुलक्कड़पन और वाचालता के कारण झुलझुला उठते हैं क्योंकि उन्होंने उसे समझाया था कि लड़की की पढ़ाई की बात उसके सामने जबान पर मत लाना और कम बोलना। पर वह यह बात भूल जाती है और बोलने पर चुप रहने का नाम नहीं लेती है।

प्रश्न 4. रामस्वरूप ने लड़के वाले के सामने उमा की पढ़ाई को क्यों छिपाया?

उत्तर—लड़के वाले कम पढ़ी-लिखी लड़की से अपने पुत्र का रिश्ता करना चाहते थे। इस बाधा के कारण और लड़की की शादी से होने वाली परेशानियों से बचने के लिए रामस्वरूप ने उमा की पढ़ाई को छिपाया।

प्रश्न 5. शंकर अपनी पढ़ाई में एकाध साल का मार्जिन क्यों रखता था?

उत्तर—शंकर पढ़ने के साथ-साथ आवारागर्दी भी करता था। इसलिए वह बीच-बीच में एकाध साल फेल भी हो जाता था। इस कारण वह पढ़ाई में एकाध साल का मार्जिन रखता था।

प्रश्न 6. वकील साहब अपने जमाने के मैट्रिक को आज के जमाने के एम.ए. से अच्छा क्यों मानते हैं?

उत्तर—वकील साहब अपने जमाने के मैट्रिक को आज के जमाने के एम.ए. से अच्छा मानते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि उस समय का मैट्रिक आज के एम.ए. से ज्यादा योग्य है।

प्रश्न 7. गोपाल प्रसाद ने सरकार को अपनी आमदनी बढ़ाने का क्या तरीका बताया?

उत्तर—गोपाल प्रसाद ने सरकार को अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए स्त्रियों की खूबसूरती पर टैक्स लगाने का तरीका बताया।

प्रश्न 8. "लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है।" इस संबंध में गोपाल प्रसाद ने क्या तर्क दिया?

उत्तर—गोपाल प्रसाद ने तर्क दिया कि "हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें लड़की की खूबसूरती के संबंध में राजी नहीं होती हैं।"

प्रश्न 9. गोपाल प्रसाद लड़कियों की पढ़ाई के पक्ष में क्यों नहीं हैं?

उत्तर—उनका मानना है कि यदि लड़की पढ़-लिख गयी और अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगी। पालिटिक्स आदि पर बहस करने लगी तो घर-गृहस्थी का काम कौन चलायेगा? इसलिए वे लड़कियों की पढ़ाई के पक्ष में नहीं हैं।

प्रश्न 10. उमा मीरां का भजन गाते-गाते एकाएक क्यों रुक गयी थी?

उत्तर—उमा की गाते-गाते जब एकाएक शंकर पर नजर गयी तब वह शंकर को पहचान गयी और उसने सोचा कि ऐसे आवारा लड़के के सामने उसे गाना गाना उचित नहीं लगा और वह गाते-गाते रुक गयी।

प्रश्न 11. उमा किसके सामने किसकी तुलना मेज़-कुर्सी से करती है?

उत्तर—उमा विवाह के लिए आने वाले गोपाल प्रसाद और शंकर के सामने अपनी और अपनी जैसी लाचार लड़कियों की तुलना मेज़-कुर्सी से करती है।

प्रश्न 12. ''क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो?'' इस बात का अनुमान गोपाल प्रसाद ने किस आधार पर लगाया होगा?

उत्तर–गोपाल प्रसाद ने इस बात का अनुमान उमा द्वारा शंकर के होस्टल के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने की कही बात सुनकर लगाया होगा।

प्रश्न 13. ''जी हाँ, कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है।'' उमा के उस कथन से उसके स्वभाव की कौनसी विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तर–उमा के उक्त कथन से उसके स्वभाव की विशेषताओं का पता चलता है कि वह बनावटीपन से दूर, स्पष्टवादिनी और सत्यवादी है। वह अपने बारे में कुछ भी छिपाना पसन्द नहीं करती है।

प्रश्न 14. ''आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं।'' उमा के इस कथन को सुनकर गोपाल प्रसाद पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर–अपने पुत्र की चारित्रिक कमजोरी जानकर गोपाल प्रसाद का चेहरा एकदम उतर गया। उसे उमा और रामस्वरूप पर गुस्सा भी आया लेकिन वह चुप रहा और अपने आपको अपमानित और लज्जित अनुभव करने लगा।

प्रश्न 15. ''उसकी आँखें शंकर को झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं।'' इससे उमा पर क्या असर पड़ा?

उत्तर–उमा ने शंकर को देखकर उसके बारे में सब कुछ समझ लिया। उसे उसके द्वारा होस्टल में चक्कर काटने की बात स्मरण हो आई और उसने शंकर और उसके पिता को खरी-खरी सुनानी शुरू कर दी।

प्रश्न 16. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में शंकर को कैसा युवक बताया गया है?

उत्तर–'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में शंकर को कमजोर चरित्रवाला और दुर्बल शरीर वाला कुचक्री नवयुवक बताया गया है। वह गिरे हुए चरित्र वाला और झेंपू स्वभाव वाला नवयुवक है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. गोपाल प्रसाद लड़कों और लड़कियों के अन्तर को किन तर्कों द्वारा स्पष्ट करते हैं?

उत्तर–गोपाल प्रसाद का मानना है कि लड़कों को पढ़-लिख कर योग्य बनना जरूरी है जबकि लड़कियों को सहज और सरल बनकर गृहस्थी चलाना जरूरी है। वे इस बात की पुष्टि के लिए मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं, तर्क देकर पुष्टि करते हैं। इनके ये तर्क दकियानूसी तर्क हैं। लड़के एवं लड़की का समानता का दर्जा दिया जाना चाहिए आज तो लडकियाँ लड़कों से बहुत आगे बढ़ रही हैं।

प्रश्न 2. उमा को देखते ही गोपाल प्रसाद और शंकर एकदम क्यों उछल पड़े थे?

उत्तर–उमा की आँखों में चश्मा लगा देखकर वे दोनों एकदम उछल पड़े थे। उन्हें लगा था कि उन्हें कम पढ़ी-लिखी लड़की बताई गयी थी जबकि यह लड़की अधिक पढ़ी-लिखी है, क्योंकि पढ़ने-लिखने के कारण ही इसके चश्मा लग गया है। उन्हें पढ़ी लिखी लड़की की आवश्यकता नहीं थी, उनका मानना था कि लड़की पढ़ी लिखी होगी तो वे उसका शोषण नहीं कर पायेंगे।

प्रश्न 3. ''बाबूजी चलिए'' शंकर ने अपने पिता से यह शब्द कब कहे और क्यों?

उत्तर–उमा ने जब शंकर के पिता से कहा कि आप अपने साहबजादे से पूछिए कि अभी फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से कैसे भगाए गये? यह सुनकर शंकर ने अपनी खुलती पोल का आभास कर अपने पिता से ''बाबूजी चलिए'' कहा। इससे शंकर अपमानित हो गया था उसके रीढ़ की हड्डी नहीं थी इसलिए अपने आत्मसम्मान को खोकर बाबूजी से चलने के लिए कहता है।

प्रश्न 4. गोपाल प्रसाद के दकियानूसी विचार क्या थे?

उत्तर–गोपाल प्रसाद स्वयं वकील थे। सभा-सोसाइटियों में आते-जाते थे पर अपने लड़के के लिए कम पढ़ी-लिखी लड़की चाहते थे। उनका विचार था ज्यादा पढ़ी लड़की के नाज-नखरे देखने को मिलेंगे। वह मेम बनी रहेगी और गृहस्थी चौपट हो जायेगी। यदि कम पढ़ी लिखी होगी तो उसे हम चाहें जैसे नाच नचवाते हैं, उसे घर की नौकरानी के रूप में भी काम करवा सकते हैं। यही उनके दकियानूसी विचार थे।

प्रश्न 5. 'रीढ़ की हड्डी एकांकी' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–जगदीश प्रसाद माथुर द्वारा लिखित एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' में यह किया गया है कि गोपाल प्रसाद जैसे स्त्री शिक्षा के विरोधी हैं वे कहते हैं कि लड़कियाँ कम पढ़ी लिखी ही होनी चाहिए, यदि लड़कियाँ पढ़ी लिखी होगी तो घर गृहस्थी का कार्य नहीं कर पायेंगी। चाहे उनके लड़के चरित्रहीन अशिक्षित ही क्यों न हो। अत: व्यंग्य के माध्यम यही बताया गया है कि लड़के एवं लड़की को समानता का दर्जा देना चाहिए, उनमें कोई भेदभाव न हो क्योंकि दोनों एक गाड़ी के दो पहियों के समान हैं। इसी कारण से आज हमारे परिवार टूटते जा रहे हैं।

प्रश्न 6. उमा किस प्रकार की युवती थी? आज की युवतियाँ उससे क्यां प्रेरणा ले सकती है?

उत्तर–जगदीश प्रसाद माथुर की एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' नायिका प्रधान एकांकी है जिसकी नायिका उमा है। वह पढ़ी लिखी शिक्षित युवती है जो चरित्रवान, स्वाभिमानी, स्पष्टवक्ता, परिश्रमी एवं सर्व कार्य दक्ष के रूप में उभरकर

सामने आयी है। आज युवतियाँ उमा से यही प्रेरणा ले सकती हैं कि हमें पढ़-लिखकर शिक्षित होना चाहिए। गृह कार्य में दक्षता के साथ-साथ चरित्रवान, स्वाभिमानी एवं परिश्रमी होकर समाज सम्मान प्राप्त करना चाहिए। ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे परिवार को हीन भावना महसूस करनी पड़े।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में सामाजिक खोखलेपन पर निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में लेखक ने समाज में व्याप्त बुराइयों को सीधे ढंग से व्यक्त न कर व्यंग्य के माध्यम से स्पष्ट किया है। रामस्वरूप लड़के वालों की इच्छा के अनुसार अपनी बी.ए. पास लड़की को मैट्रिक पास बताता है। लड़की वाला होने के कारण अपने आपको छोटा समझकर गोपाल प्रसाद की चापलूसी करता है। गोपाल प्रसाद को अपने लड़के के चरित्र एवं बैकबोन आदि कमजोरियों का ज्ञान होते हुए भी झूठ बोलता है, दकियानूसी विचार प्रकट करता है। वह कहता है कि "क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है?.......अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं, तो हो चुकी गृहस्थी।" इस प्रकार एकांकी में गोपाल प्रसाद एवं शंकर के माध्यम से विवाह के रिश्ते को लेकर जो सोच कुछ लोगों की है, उस पर व्यंग्य किया गया है।

प्रश्न 2. शादी को बिजनेस समझने वालों से निपटने का प्रस्तुत एकांकी में क्या उपाय बताया गया है?

उत्तर–प्रस्तुत एकांकी में शादी जैसे पवित्र रिश्ते को 'बिजनेस' बना डालने वालों से निपटने का उपाय भी सुझाया गया है। एकांकीकार बताना चाहता है कि लड़के की कमजोरियों की चिन्ता न करके, लड़की की भेड़-बकरी की तरह छानबीन करने वाले लड़के वालों को लड़कियाँ उमा की तरह आत्मबल से फटकार लगावें। वे यदि लड़के या उसके परिवार वालों में कमियाँ देखें, तो बिना झिझक के उसी तरह जवाब दें, कमियों को उजागर करें, जिस तरह लड़के वाले करते हैं। तभी 'बिजनेस' समझने वाले लड़के वालों का बुरा व्यवहार दूर होगा और लड़की वालों को राहत मिलेगी।

प्रश्न 3. उमा के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–उमा रामस्वरूप की बी.ए. पास सुशिक्षित पुत्री है। वह साहित्य, संगीत और कला में कुशल है। वह स्वभाव से संकोची और सादगी पसन्द है। इसलिए वह आज के प्रचलित सौन्दर्य-प्रसाधन की सामग्री का न तो उपभोग करती है और न उनमें विश्वास करती है। वह प्रगतिशील विचारधारा की स्वाभिमानी और स्पष्टवादी नवयुवती है। इसी कारण वह गोपालप्रसाद को खरी-खोटी सुनाकर निरुत्तर कर देती है। इतना ही नहीं वह स्पष्ट कह देती है—"ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भाल कर.....?"

प्रश्न 4. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किन सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य किया गया है? बताइए।

उत्तर–'रीढ़ की हड्डी' एक सामाजिक एकांकी है। इस एकांकी में पुत्री के विवाह से सम्बन्धित समस्या और कुरीतियों के बारे में बताया गया है। आज के जमाने में सुशिक्षित, घर के कार्यों में निपुण, कला-प्रेमी, पुत्री वाले पिता को भी अपनी पुत्री के विवाह के लिए किस प्रकार अयोग्य, नाकारा पुत्र वाले पिता के सामने छोटा बन कर झुकना पड़ता है। इस समस्या और विवाह से जुड़ी कुरीतियों को प्रभावी ढंग से रामस्वरूप, गोपाल प्रसाद, शंकर और उमा के माध्यम से उठाया गया है और प्रगतिशील विचारधारा की पोषिका उमा के द्वारा इसका अप्रत्यक्ष रूप से हल व्यंग्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 5. सिद्ध कीजिए कि 'रीढ़ की हड्डी' हास्य एकांकी है।

उत्तर–'रीढ़ की हड्डी' हास्य एकांकी है। एकांकी का प्रारूप ही हास्य-व्यंग्य पर आधारित मालिक और नौकर की नोक-झोंक से होता है। नौकर की मूर्खतापूर्ण बातें और मालिक रामस्वरूप के खरे उत्तर हँसी का वातावरण पैदा करते हैं। नौकर मालिक के आदेश का गलत अर्थ निकाल कर चादर की जगह धोती माँगना हास्य का स्वयं हेतु बन जाता है। गोपाल प्रसाद जानबूझकर हँसी के प्रसंग प्रस्तुत करता है। वह दर्जनों कचोड़ियाँ खाने की बात करता है। स्त्री की सुन्दरता पर टैक्स लगाने का सुझाव देता है। ये सभी संवाद हँसी उत्पन्न करते हैं। रामस्वरूप द्वारा अपनी पत्नी को मूर्ख और ग्रामोफोन कहना, उसी प्रकार नौकर और प्रेमा दोनों ही अपनी मूर्खता और नासमझी के कारण हँसी उत्पन्न करते रहते हैं। शंकर भी अपने फेल होने को 'मार्जिन रखना' कहकर हँसी में योग देता है। एकांकी का अन्त भी व्यंग्य से होता है जब उमा उसे देखने आए 'गोपाल प्रसाद और शंकर को आड़े हाथों लेती है' तो हँसी व्यंग्य में बदल जाती है। इस प्रकार इस एकांकी को हास्य एकांकी कहा जा सकता है।

❑❑❑

व्याकरण

1. शब्द-निर्माण

(उपसर्ग-प्रत्यय)

शब्द-रचना

शब्द-निर्माण या शब्द-रचना का आशय उसके रचना-प्रकारों से है। शब्द-रचना की दृष्टि से हिन्दी भाषा में तीन प्रकार के शब्द होते हैं—रूढ़, यौगिक और योगरूढ़। यौगिक शब्दों का निर्माण किसी शब्द में अन्य शब्द या शब्दांश का मेल होने से अथवा दो शब्दों के मेल से होता है। योगरूढ़ शब्द भी दो शब्दों के मेल से बनते हैं जो कि किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

शब्द-निर्माण के प्रकार—हिन्दी में शब्दों का निर्माण मुख्यतया चार प्रकार से होता है—

1. समास पद्धति
2. व्युत्पत्ति पद्धति
3. वर्णविपर्यय पद्धति
4. अर्थपरिवर्तन पद्धति।

1. समास पद्धति—दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर जब एक शब्द बनाया जाता है, तो उसे समास-पद्धति कहते हैं। इसमें शब्दों में सन्धि करके या समास करके नये शब्द बनाये जाते हैं।

2. व्युत्पत्ति पद्धति—हिन्दी में बहुत से 'मूल' शब्द हैं; उन शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय आदि लगाकर नये शब्द बनाये जाते हैं। शब्द-रचना के इस प्रकार को व्युत्पत्ति-पद्धति कहते हैं।

3. वर्णविपर्यय पद्धति—भाषा-विज्ञान के अनुसार वर्ण या अक्षर को आगे-पीछे कर देने या उनमें उलट-फेर करने से नये शब्द बन जाते हैं। इसे वर्ण-विपर्यय पद्धति कहते हैं। जैसे—पगला का पागल, जानवर का जनावर।

4. अर्थपरिवर्तन पद्धति—अन्य भाषाओं से शब्द लेकर नये अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए जब नये शब्द बनाये जाते हैं, तो उसे अर्थ-परिवर्तन पद्धति कहते हैं। जैसे—रेल + गाड़ी = रेलगाड़ी।

व्युत्पत्ति पद्धति से हिन्दी के मूल शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाये जाते हैं। इस पद्धति से अनेक नये शब्दों का निर्माण होता है तथा हिन्दी के शब्द-भण्डार में इससे पर्याप्त समृद्धि आयी है।

I. उपसर्ग

परिभाषा—जो शब्दांश शब्द के आरम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन उत्पन्न कर देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे—

'क्रम' एक शब्द है, इसके प्रारम्भ में अनु, परा, वि, प्र उपसर्ग जोड़ दिया जाए तो क्रमशः अनु + क्रम = अनुक्रम, परा + क्रम = पराक्रम, वि + क्रम = विक्रम, प्र + क्रम = प्रक्रम शब्द बनते हैं। उपसर्ग से जुड़े इन शब्दों के अर्थ में 'क्रम' शब्द के अर्थ से परिवर्तन आ गया है या विशेषता आ गई है। इसी प्रकार 'हार' शब्द के प्रारम्भ में आ, वि, प्र, उप, सम् उपसर्ग जोड़ने से क्रमशः आहार, विहार, प्रहार, उपहार, संहार शब्द की रचना होती है। उपसर्ग जुड़कर बने इन सभी शब्दों का अर्थ 'हार' शब्द से भिन्न है।

एक उपसर्ग के कई अर्थ हो सकते हैं अर्थात् उपसर्ग का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है, वे शब्द में जुड़ने के पश्चात् ही अर्थ देते हैं और ये अर्थ भिन्न-भिन्न शब्दों में अलग-अलग होते हैं। जैसे-

अ + मन - अमन (यहाँ पर अ उपसर्ग 'शान्ति' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है)

अ + चल - अचल (यहाँ पर 'नहीं' के अर्थ में)

हिन्दी में प्रचलित उपसर्गों को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

1. संस्कृत उपसर्ग
2. हिन्दी उपसर्ग
3. विदेशी उपसर्ग

1. संस्कृत के उपसर्ग :

संस्कृत के मुख्य 22 उपसर्ग हैं। इनमें से एकाध को छोड़कर शेष सभी का प्रयोग हिन्दी में होता है। इन्हें सोदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

उपसर्ग	अर्थ	शब्द-रूप
अति	अधिक	अत्यधिक, अतिरिक्त, अतिशय, अत्युक्ति, अतिचार, अत्यन्त, अतिक्रमण।
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिकृत, अधिस्नातक, अधिकरण, अधिपति, अधिनायक, अधिभार।
अनु	पीछे, समान	अनुज, अनुचर, अनुकरण, अनुगामी, अनुसरण, अनुगमन, अनुसार, अनुशासन, अनुराग, अनुरूप, अनुशीलन।
अभि	ओर, सामने	अभिमुख, अभिलाषा, अभिप्राय, अभिशाप, अभियोग, अभिभावक, अभियान, अभिमान, अभिनव, अभ्युदय।
अपि	निकट	अपिधान, अपिनद्ध।
अप	बुरा, हीन, अभाव	अपकीर्ति, अपव्यय, अपशकुन, अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपकर्ष, अपवाद, अपकार, अपयश।
अव	नीचे, हीन	अवशेष, अवकाश, अवगत, अवतरण, अवसान, अवनत, अवनति, अवलोकन, अवतार, अवज्ञा।
आ	सहित, तक	आकार, आमोद, आजन्म, आजीवन, आक्रोश, आकर्षण, आरोहण, आचरण, आक्रमण, आमरण, आभरण।
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्कर्ष, उत्थान, उत्पन्न, उत्साह, उत्कण्ठा, उत्तम, उद्देश्य, उद्यम, उद्योग।
उप	निकट, छोटा, सदृश	उपनाम, उपादेय, उपसंहार, उपचार, उपदेश, उपकार, उपभेद, उपवन, उपमंत्री, उपनिवेश, उपासना, उपकूल।
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्लभ, दुर्दशा, दुर्गम, दुर्जन, दुर्भिक्ष, दुर्गुण, दुराचार, दुर्गति, दुर्दिन।
दुस्	बुरा, कठिन	दुष्कर्म, दुस्साध्य, दुस्साहस, दुश्चरित्र, दुष्प्राप्य, दु:सह, दुष्कर।
नि	नीचे, निषेध	निरोध, नियोग, निदान, निपात, नियम, निवास, निरूपण, निवारण, निकृष्ट, निक्षेप, न्यास।
निर्	निषेध, रहित	निराकार, निर्दोष, निर्धन, निर्वाह, निर्जीव, निर्दय, निर्जल, निर्णय, निर्मल, निर्भय।
निस्	निषेध, रहित	निश्चय, निस्संतान, निश्छल, निस्संदेह, निस्तार, निस्संकोच, निस्सार, निश्चल, निश्चेष्ट।
परा	विपरीत, नाश, अनादर	पराकाष्ठा, पराभव, पराभूत, परामर्श, पराजय, पराक्रम, पराधीन।
परि	चारों ओर	परिक्रमा, परिपक्व, परिणय, परिवर्तन, परीक्षा, परिपूर्ण, परिणाम, परिधि, परिचय, परिचालक।
प्रति	हर एक, विरुद्ध	प्रतिक्षण, प्रत्यक्ष, प्रतिहिंसा, प्रतिवादी, प्रतिकूल, प्रतिनिधि, प्रतिध्वनि, प्रत्येक, प्रतीक्षा।
प्र	आगे, अतिशय	प्रपंच, प्रबन्ध, प्रयोग, प्रसार, प्रचार, प्रख्यात, प्रलय, प्रताप, प्रहार, प्रस्थान, प्रबल, प्रदर्शनी, प्रशिक्षण।
वि	विशेष, भिन्न	विनय, विजय, विलय, विषम, विभाग, विराम, विमर्श, वियोग, विज्ञान, विकास, विकार, विवाद, विशिष्ट, विहार, विस्मरण, विजन।
सम्	संयोग	सम्भव, संग्राम, संस्कार, संतोष, सम्पत्ति, संहार, संगम, संकल्प, सम्मेलन, संरक्षण।
सु	अच्छा	सुपुत्र, सुकर्म, सुकृत, सुभाषित, सुशिक्षित, सुगम, सुयश, स्वागत, सुशिक्षा, सुकवि।

उपसर्ग की तरह प्रयुक्त अव्यय

हिन्दी में संस्कृत के कुछ शब्दांश या अव्यय उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होते हैं। यहाँ ऐसे कुछ अव्यय सोदाहरण दिये जा रहे हैं—

अव्यय	अर्थ	शब्द-रूप
अ	अभाव, निषेध	अकाल, अभाव, अचर, अहिंसा, अधर्म, अनाथ, अज्ञात, अशुद्ध, अकृत्रिम, अप्राकृतिक, अगम्य, अज्ञान।
अन्	निषेध	अनन्त, अनादि, अनादृत, अनर्थ, अनादर, अनायास, अनागत, अनुचित।
अलम्	बहुत, काफी	अलंकार, अलंकृत, अलंकरण।
अध:	नीचे	अध:पतन, अधोलिखित, अधोमुख, अधोगति।

अन्तः	भीतर	अन्तःकरण, अन्तःप्रान्तीय, अन्तरात्मा, अन्तर्राष्ट्रीय।
आविः	प्रकट	आविर्भाव, आविष्कार।
इति	अन्त, ऐसा	इतिश्री, इतिवृत्त।
का	बुरा	कापुरुष।
कु	बुरा	कुकृत्य, कुख्यात, कुपुत्र, कुरूप, कुपात्र, कुयोग, कुमति।
तिरस्	हीन, बुरा	तिरोभाव, तिरस्कार, तिरोहित।
पुरस्	आगे	पुरस्कार, पुरोहित, पुरश्चरण।
प्रादुर्	प्रकट	प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत।
पुनः	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण, पुनरागमन, पुनरुक्ति।
चिर	बहुत	चिरकाल, चिरन्तन, चिरायु, चिरंजीव।
प्राक्	पहले	प्राक्कथन, प्राक्तन, प्राक्कृत।
पर	अन्य	परलोक, पराधीन, परमुखापेक्षी, परदेश।
बहिः	बाहर	बहिर्गमन, बहिर्मुखी, बहिरंग, बहिष्कृत।
न	अभाव	नकुल, नपुंसक, नास्तिक।
पुरा	प्राचीन	पुरातन, पुरातत्व, पुराचीन, पुरावृत्त।
सत्	सम्मान	सत्कार, सत्कर्म, सद्धर्म, सच्चरित्र, सज्जन।
स	सहित	सजल, सपत्नीक, सहर्ष, सोदाहरण।
स्व	अपना	स्वदेश, स्वधर्म, स्वनाम, स्वजाति, स्वतन्त्र, स्वशासन, स्वाभिमान।
स्वयं	अपने-आप	स्वयंवर, स्वयंसिद्ध, स्वयंसेवक, स्वयंभू।
सह	साथ	सहपाठी, सहचर, सहकर्मी, सहयोग, सहकारी, सहानुभूति, सहाध्यायी, सहयात्री।

2. हिन्दी के उपसर्ग :

हिन्दी में अनेक उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं, जिनमें नवीन शब्दों की रचना होती है। यहाँ हिन्दी के उपसर्ग सोदाहरण दिये जा रहे हैं—

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द-रूप**
अ	अभाव, निषेध	अचेत, अथाह, अमोल, अज्ञान, अपढ़, अलग, अछूता, अटल, अजन्मा, अभाव, अभय।
अन	अभाव, निषेध	अनपढ़, अनजान, अनबन, अनमोल, अनमेल, अनहित, अनहोनी, अनमना।
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधजला, अधकचरा, अधबीच।
उन	एक कम	उन्नीस, उनतीस, उनचास, उनसठ।
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघड़, औघट, औसर, औचक।
क, कु	बुरा	कपूत, कुटेव, कुचाल, कुपुत्र, कुपात्र, कुअवसर, कुख्यात।
चौ	चार	चौराहा, चौपट, चौमासा, चौपाल।
दु	बुरा, दो	दुबला, दुकाल, दुरंगा, दुभांत, दुपाया, दुराहा, दुभाषिया।
ति	तीन	तिराहा, तिकोन, तिरछा, तिरंगा, तिपाई।
नि	अभाव	निडर, निकम्मा, निहत्था, निपूता, निठल्ला।
बिन	रहित, निषेध	बिनब्याहा, बिनखाया, बिनबोया, बिनमाँगा।
पच	पाँच	पचमेल, पचरंगा, पचमढ़ी, पचराहा।
पर	दूसरा	परकाज, परकोटा, परदेश, परवश।
भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरकम, भरसक।
स	सहित	सपूत, सजग, सकाम, सरस, सरल, सजल।
सु	अच्छा	सुलेख, सुयोग, सुयश, सुशिक्षित, सुमन, सुगम, सुपुत्र, सुशील, सुजान।

3. विदेशी उपसर्ग :

हिन्दी में विदेशी भाषाओं के उपसर्ग भी प्रयुक्त होते हैं। विशेष रूप से उर्दू और अंग्रेजी के कई उपसर्ग अपनाये जाते हैं। इनमें से कतिपय इस प्रकार हैं—

(क) उर्दू के उपसर्ग :

कम	थोड़ा, हीन	कमजोर, कमकीमत, कमअक्ल।
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशकिस्मत, खुशदिल।
दर	में	दरअसल, दर-दर, दरहकीकत।
ना	अभाव	नाराज, नादान, नापसन्द, नाकारा।
बा	साथ	बाकायदा, बाइज्जत, बामुलाहिजा।
बे	बिना	बेहिसाब, बेमिसाल, बेअक्ल, बेहाल, बेवकूफ, बेदाग, बेकसूर, बेपरवाह, बेकार, बेकाम।
बद	बुरा	बदनाम, बदहजमी, बदचलन, बदबू, बदमाश, बदनाम।
ला	बिना	लाचार, लापता, लाजवाब, लाइलाज।
सर	मुख्य	सरपंच, सरहद, सरताज, सरनाम।
हर	प्रत्येक	हरदम, हररोज, हरबात, हरचीज, हरवक्त।
हम	समान	हमराह, हमदर्द, हमउम्र, हमसफर, हमशक्ल, हमदम।

(ख) अंग्रेजी के उपसर्ग :

सब	छोटा	सब-रजिस्ट्रार, सब-इन्स्पेक्टर।
हेड	प्रमुख	हेडमास्टर, हेडऑफिस, हेडकांस्टेबिल।
एक्स	मुक्त	एक्सप्रेस, एक्स-प्रिंसिपल, एक्स-कमिश्नर।

विशेष—एक शब्द के साथ कभी-कभी एक से अधिक उपसर्ग जुड़ सकते हैं तथा उनसे अर्थ में विशेषता आ जाती है। जैसे—

सम् + आ + लोचना — समालोचना
प्रति + उप + कार — प्रत्युपकार
सत् + आ + चार — सदाचार
परि + आ + वरण — पर्यावरण
सु + प्र + सिद्ध — सुप्रसिद्ध।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. मूल शब्द में जुड़ा हुआ सही उपसर्ग है—
   (क) स्वः + अवलम्बन (ख) स्व + अवलम्बन
   (ग) स्वा + अवलम्बन (घ) स्व + आवलम्बन।
2. मूल शब्द में जोड़ा गया सही उपसर्ग है—
   (क) प्रा + कथन (ख) प्रा + क्कथन
   (ग) प्राक् + कथन (घ) प्र + अक्कथन।
3. 'परीक्षा' शब्द में कौनसा उपसर्ग जुड़ा है?
   (क) प्र (ख) परि (ग) पर (घ) परा।
4. मूल शब्द में जुड़ा हुआ सही उपसर्ग है—
   (क) सदा + आचार (ख) सत् + आचार
   (ग) सद + आ + आचार (घ) सत् + आ + चार।
5. सही उपसर्गयुक्त शब्द-रचना है—
   (क) बहिः + मुखी (ख) बहिम् + मुखी
   (ग) बही + मुखी (घ) बहि + मुखी।
6. 'सन्तोष' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?
   (क) सु (ख) सम् (ग) सन् (घ) सः।

7. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'अ' उपसर्ग नहीं लगा है?
(क) अकथ (ख) अभेद (ग) अचूक (घ) अनुज।
8. 'दुकाल' में कैसा उपसर्ग है?
(क) उर्दू (ख) फ़ारसी (ग) हिन्दी (घ) अरबी।
9. 'उत्कर्ण' शब्द में सही उपसर्ग का चयन कीजिए-
(क) उत (ख) उद (ग) उप (घ) अ।
10. उपसर्ग को कहते हैं-
(क) शब्दांश (ख) वाक्यांश (ग) शब्द (घ) पद।

उत्तर–1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क) 6. (ख) 7. (घ) 8. (ग) 9. (क) 10. (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. अति + आवश्यक का योग होगा ....। (अत्यावश्यक/अतिवाश्यक)
2. शब्दों के आरम्भ में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करने वाले शब्दांश .... कहलाते हैं। (प्रत्यय/उपसर्ग)
3. आचार के पूर्व 'अति' उपसर्ग जोड़कर बनेगा ....। (अत्याचार/सदाचार)
4. 'प्रतिक्षण' शब्द में उपसर्ग .... है। (प्र/प्रति)
5. 'नि:' उपसर्ग युक्त शब्द .... है। (निर्मल/नियम)
6. लोगों ने उसे मार-मार कर 'अधमरा' कर दिया। इस वाक्य में अधमरा .... है। (प्रत्यय/उपसर्ग)
7. निर् + बल का योग होगा ....। (निर्बल/निरबल)
8. दुर् + आत्मा का योग होगा ....। (दुरत्मा/दुरात्मा)
9. ग्राम के पूर्व सम् उपसर्ग जोड़कर बनेगा ....। (संग्राम/सम्ग्राम)
10. 'संश्रुत्य' शब्द में उपसर्ग .... है। (सम्/स)
11. संस्कृत के उपसर्गों को .... उपसर्ग भी कहा जाता है। (संस्कृत/तत्सम)
12. विदेशी उपसर्गों को .... उपसर्ग भी कहा जाता है। (विदेशी/आगत)

उत्तर–1. अत्यावश्यक, 2. उपसर्ग, 3. अत्याचार, 4. प्रति, 5. निर्मल, 6. उपसर्ग, 7. निर्बल, 8. दुरात्मा, 9. संग्राम, 10. सम्, 11. तत्सम, 12. आगत।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'हीन' और 'अभाव' अर्थ को दर्शाने वाला उपसर्ग कौनसा है?
उत्तर–'अव' उपसर्ग।
प्रश्न 2. 'प्रत्याशा' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है?
उत्तर–'प्रत्याशा' शब्द में 'प्रति' उपसर्ग है।
प्रश्न 3. 'अन्' उपसर्ग किसका द्योतक है?
उत्तर–अन् उपसर्ग 'निषेध' का द्योतक है।
प्रश्न 4. व्यवस्था से पूर्व कौन-सा उपसर्ग लगायें कि उसका अर्थ विपरीत हो जाए?
उत्तर–'व्यवस्था' में 'अ' उपसर्ग लगाने पर → अ + व्यवस्था - अव्यवस्था।
प्रश्न 5. 'बेईमान' शब्द में 'बे' क्या है?
उत्तर–'बेईमान' शब्द में 'बे' उपसर्ग है।
प्रश्न 6. 'प्रत्यर्पण' शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द क्या है?
उत्तर–प्रत्यर्पण (प्रति + अर्पण) शब्द में प्रति उपसर्ग और 'अर्पण' मूल शब्द है।
प्रश्न 7. 'स्वाभिमान' शब्द में उपसर्ग है?
उत्तर–'स्वाभिमान' शब्द में 'स्व' उपसर्ग है।
प्रश्न 8. 'कु' उपसर्ग के योग से बने दो शब्द बताइए।
उत्तर–कुरूप - कु + रूप, कुकर्म - कु + कर्म।
प्रश्न 9. 'उत्कर्ष' शब्द में कौनसा उपसर्ग लगा है?

उत्तर–उत्कर्ष शब्द में 'उद्' उपसर्ग है।

प्रश्न 10. 'उद्योग' शब्द में कौनसा उपसर्ग है?

उत्तर–'उद्योग' शब्द में उत् उपसर्ग है।

प्रश्न 11. 'अन्' उपसर्ग से युक्त कोई दो उदाहरण बताइए।

उत्तर–अनिच्छा, अनुचित।

प्रश्न 12. 'निर्निमेष' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

उत्तर–'निर्निमेष' शब्द में निर् उपसर्ग है।

प्रश्न 13. 'अभि' उपसर्ग किस अर्थ में प्रयुक्त होता है?

उत्तर–'अभि' उपसर्ग सामने, पास और विशेष आदि अर्थ में प्रयुक्त होता है।

प्रश्न 14. 'जय' शब्द में कौनसा उपसर्ग लगाने पर अर्थ पलट जाता है?

उत्तर–'जय' शब्द में परा उपसर्ग लगाने पर 'पराजय' शब्द बनता है।

प्रश्न 15. 'संस्कार' शब्द में कौनसा उपसर्ग है?

उत्तर–'संस्कार' शब्द में सम् उपसर्ग है।

प्रश्न 16. 'कु' उपसर्ग किस अर्थ में प्रयुक्त होता है?

उत्तर–'कु' उपसर्ग 'बुरा' अर्थ में प्रयुक्त होता है।

प्रश्न 17. 'इति' उपसर्ग किस अर्थ में प्रयुक्त होता है?

उत्तर–'इति' उपसर्ग अन्त और ऐसा अर्थ में प्रयुक्त होता है।

प्रश्न 18. 'दु' उपसर्ग से बने कोई दो शब्द बताइए।

उत्तर–दुबला, दुकाल।

प्रश्न 19. 'उज्ज्वल' शब्द में कौनसा उपसर्ग है?

उत्तर–'उज्ज्वल' शब्द में 'उत्' उपसर्ग है।

प्रश्न 20. 'प्राचार्य' शब्द में कौनसा उपसर्ग है?

उत्तर–'प्राचार्य' शब्द में 'प्र' उपसर्ग है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. कोई पाँच शब्द बताइए जिनमें दो उपसर्गों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर–कुछ शब्दों में दो उपसर्गों का भी प्रयोग होता है, जैसे–

1. निर् + आ + करण = निराकरण
2. सु + सम् + कृत = सुसंस्कृत
3. अन् + आ + हार = अनाहार
4. अ + सु + रक्षित = असुरक्षित
5. सु + सम् + गठित = सुसंगठित

प्रश्न 2. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए–

वि, दुस्, उत्, अव, सम्

उत्तर–वि → विमर्श, वियोग

दुस् → दुस्साहस, दुष्प्राप्य

उत् → उत्साह, उत्थान

अव → अवतरण, अवसान

सम् → संहार, सम्मेलन

प्रश्न 3. सही उपसर्ग सामने बॉक्स में लिखें।

1. निराकार	☐	2. अभिलाषा	☐
3. अपहरण	☐	4. प्रलय	☐
5. संतोष	☐	6. विषम	☐

7. परिपूर्ण	☐	8. सुयश	☐
9. स्वागत	☐	10. दुर्दशा	☐

उत्तर–1. निर्, 2. अभि, 3. अप, 4. प्र, 5. सम्, 6. वि, 7. परि, 8. सु, 9. सु, 10. दुर्।

प्रश्न 4. उपसर्ग की परिभाषा बताइए।

उत्तर–उपसर्ग वे शब्दांश हैं, जो किसी शब्द के पूर्व (पहले) जुड़कर उसके अर्थ में कुछ परिवर्तन कर देते हैं अथवा उसके अर्थ को पूरी तरह बदल देते हैं। जैसे- जय शब्द का अर्थ है- जीत। किन्तु 'जय' शब्द से पहले परा उपसर्ग जोड़ देने से नया शब्द बनता है- पराजय, जिसका अर्थ पहले के अर्थ से ठीक उल्टा हो गया है- हार।

प्रश्न 5. हिन्दी में कितने प्रकार के उपसर्ग होते हैं?

उत्तर–हिन्दी में मुख्यत: तीन प्रकार के उपसर्ग होते हैं–

1. (क) संस्कृत उपसर्ग - जो संस्कृत से ज्यों के त्यों हिन्दी में ले लिए गए हैं।

(ख) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त अव्यय - हिन्दी में संस्कृत के कुछ शब्दांश या अव्यय उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होते हैं।

2. हिन्दी उपसर्ग - जो संस्कृत के उपसर्गों या शब्दों से ध्वनि की दृष्टि से कुछ परिवर्तन होकर विकसित हुए हैं।

3. विदेशी उपसर्ग - जो उपसर्ग विदेशी भाषाओं से आए हैं।

प्रश्न 6. 'वि' उपसर्ग से बने कुछ शब्द बताइए।

उत्तर–विराम, विपक्ष, विनय, विजय, विज्ञान, विख्यात, विज्ञप्ति, विकार, विवाद, विदेश, विनाश, सुयोग, विशिष्ट, विरोध, विकास, विभाग, विजय, विलक्षण, विज्ञान, विधवा, विवाद, विशेष, विस्मरण, विराम, वियोग, विभाग, विकार, विमुख, विनय, विनाश आदि।

प्रश्न 7. निम्न उपसर्गों से नवीन शब्द बनाइये–

कु, उप, परा, भर, स

उत्तर–कु — कुमार, कुचाल, कुचैला, कुचक्र

उप — उपसंहार, उपचार, उपदेश, उपकार

परा — पराभव, पराभूत, परामर्श, पराक्रम

भर — भरपेट, भरपूर, भरकम, भरसक

स — सजग, सकाम, सरस, सरल

प्रश्न 8. निम्न उपसर्ग किस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं–

उप, अनु, अध:, पर

उत्तर–उपसर्ग **अर्थ**

उप — निकट, छोटा, सदृश

अनु — पीछे, समान

अध: — नीचे

पर — दूसरा

प्रश्न 9. निम्नलिखित उपसर्गों के योग से चार-चार शब्द बनाइए—

अनु, अव, अध, बे, सम्।

उत्तर–अनु—अनुसार, अनुक्रम, अनुज, अनुगामी।

अव—अवकाश, अवगत, अवनति, अवतार।

अध—अधमरा, अधपका, अधजला, अधबीच।

बे—बेमेल, बेहिसाब, बेकार, बेहाल।

सम्—संस्कार, सम्मान, संहार, सम्पत्ति।

प्रश्न 10. निम्नलिखित शब्दों में जो उपसर्ग लगे हैं, उन्हें बताइए—

अलंकार, उत्साह, अभ्यास, नाचीज, पचरंगा, लाचार, अत्यन्त, निर्जल।

उत्तर–अलंकार-अलम्। उत्साह-उत्। अभ्यास-अभि। नाचीज-ना। पचरंगा-पच। लाचार-ला। अत्यन्त-अति। निर्जल-निर्।

II. प्रत्यय

परिभाषा—वे शब्दांश जो किसी शब्द के अन्त में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करते हैं, उन्हें प्रत्यय (प्रति + अय = बाद में आने वाला) कहते हैं। जैसे—

रंग + ईला = रंगीला। लघु + अव = लाघव। लोहा + आर = लोहार।

इन उदाहरणों में शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर नये शब्द बनाये गये हैं, जो अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर रहे हैं। इसी प्रकार संज्ञा, विशेषण और क्रिया में प्रत्यय जोड़ने पर हिन्दी में असंख्य शब्दों की रचना की जाती है।

हिन्दी में संस्कृत के, हिन्दी के और विदेशी भाषाओं के अनेक प्रत्यय जुड़ते हैं, जिनसे अनेक नवीन शब्दों का निर्माण होता है।

संस्कृत के प्रत्यय—

संस्कृत के प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—(1) कृदन्त और (2) तद्धित।

1. कृदन्त प्रत्यय—जो शब्दांश धातुओं के अन्त में जुड़ते हैं, उन्हें कृत् या कृदन्त प्रत्यय कहते हैं। धातु या क्रिया के अन्त में प्रत्यय के जुड़ने से बनने वाले शब्द संज्ञा या विशेषण होते हैं। कृदन्त (कृत्) प्रत्यय मूल धातु रूप के साथ लगाकर संज्ञा और विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं। कृदन्त प्रत्यय के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(1) कर्त्तृवाचक कृदन्त (2) विशेषणवाचक कृदन्त (3) भाववाचक कृदन्त।

(1) कर्त्तृवाचक कृदन्त :

प्रत्यय	**निर्मित-शब्द**
तृ (ता)	दाता, वक्ता, कर्त्ता, नेता, भ्राता, पिता।
अक	पाठक, लेखक, पालक, विचारक।

(2) विशेषणवाचक कृदन्त :

त	आगत, लिखित, पठित, कृत, विगत।
तव्य	कर्तव्य, गन्तव्य, ध्यातव्य।
य	नृत्य, योग्य, पूज्य, स्तुत्य, खाद्य, पेय, देय।
अनीय	पठनीय, पूजनीय, स्मरणीय, उल्लेखनीय।

(3) भाववाचक कृदन्त :

अन	लेखन, सम्पादन, हवन, गमन, श्रवण, चलन, जलन।
ति	गति, मति, रति, कृति, शक्ति।
अ	जय, समझ, लेख, विचार।
आवा	भुलावा, छलावा, दिखावा, चढ़ावा।
आन	उड़ान, मिलान, उठान, चढ़ान।

2. तद्धित प्रत्यय—जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों के अन्त में जुड़ते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं और उनसे बनने वाले शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं। तद्धित प्रत्यय के कुछ प्रमुख भेद इस प्रकार हैं—

(1) भाववाचक तद्धित प्रत्यय (2) सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय
(3) अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय (4) पूर्णतावाचक तद्धित प्रत्यय
(5) तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय (6) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय
(7) ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय

(1) भाववाचक तद्धित प्रत्यय : भाववाचक तद्धित से भाव प्रकट होता है। इसमें प्रत्यय लगने पर आदि-स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे—

प्रत्यय	**निर्मित-शब्द**
अव	लाघव, गौरव, पाटव।

त्व महत्त्व, गुरुत्व, लघुत्व, अपनत्व, स्त्रीत्व, अमरत्व।
ता गुरुता, मनुष्यता, समता, कविता, मानवता
इमा महिमा, गरिमा, अणिमा, लघिमा, कालिमा।
य पांडित्य, चातुर्य, माधुर्य, सौन्दर्य।

(2) सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय : सम्बन्धवाचक तद्धित से सम्बन्ध का बोध होता है। इसमें भी कहीं पर आदि-स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे—

प्रत्यय	**निर्मित-शब्द**
अ	शैव, वैष्णव, तैल, पार्थिव।
इक	लौकिक, धार्मिक, वार्षिक, ऐतिहासिक।
इम	स्वर्णिम, अन्तिम, रक्तिम।
इत	लिखित, पीड़ित, प्रचलित, दु:खित, मोहित।
इल	जटिल, फेनिल, सलित, पंकिल, धूमिल।
ईय	राष्ट्रीय, राजकीय, प्रान्तीय, नाटकीय, भवदीय।

(3) अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय : इनमें अपत्य अर्थात् सन्तान या वंश में उत्पन्न हुए व्यक्ति का बोध होता है। अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय में भी कहीं पर आदि स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे—

अ	पार्थ, पाण्डव, कौशिक, भार्गव।
इ	दाशरथि, मारुति, सौमित्रि।
य	गालव्य, पौलस्त्य, मांडूक्य।
एय	वार्ष्णेय, कौन्तेय, गांगेय, राधेय।

(4) पूर्णतावाचक तद्धित प्रत्यय : इसमें संख्या की पूर्णता सूचित की जाती है। जैसे—

म	प्रथम, पंचम, सप्तम, नवम, दशम।
थ	चतुर्थ।
तीय	द्वितीय, तृतीय।
षष् + ठ	षष्ठ।

(5) तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय : दो या दो से अधिक वस्तुओं में श्रेष्ठता बतलाने के लिए तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय लगता है। जैसे—

तर	अधिकतर, गुरुतर, लघुतर।
तम	सुन्दरतम, अधिकतम, लघुतम।
ईय	गरीय, वरीय, लघीय।
इष्ठ	गरिष्ठ, वरिष्ठ, कनिष्ठ।

(6) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय : गुणवाचक तद्धित से संज्ञा शब्द गुणवाची बन जाते हैं। जैसे—

वान	धनवान, गुणवान, बलवान, विद्वान।
मान	बुद्धिमान, शक्तिमान, गतिमान, आयुष्मान।
त्य	पाश्चात्य, पौर्वात्य, दाक्षिणात्य।
आलु	कृपालु, दयालु, शंकालु।
ई (इन्)	क्रोधी, धनी, लोभी, मानी।

विशेष—'वान' और 'मान' प्रत्यय के पुल्लिंग रूप धनवान, बलवान, श्रीमान् आदि होते हैं, उसके स्त्रीलिंग के रूप 'वती' और 'मती' जोड़कर बनाये जाते हैं। जैसे—धनवती, गुणवती, बलवती, श्रीमती, बुद्धिमती, शक्तिमती, आयुष्मति आदि।

(7) ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन प्रत्यय शब्दों से लघुता, प्रियता, हीनता का पता चलता हो उसे ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे—

इया	बुढ़िया, लुटिया, खटिया, डिबिया।
ई	टोपी, कोठरी, टोकनी, ढोलकी।
ड़ी	पगड़ी, टुकड़ी, टंगड़ी।

हिन्दी के प्रत्यय :

संस्कृत की तरह ही अनेक प्रत्यय हिन्दी के भी प्रयुक्त होते हैं। ये प्रत्यय यद्यपि कृदन्त और तद्धित की तरह जुड़ते हैं, परन्तु मूल शब्द हिन्दी के तद्भव या देशज होते हैं। हिन्दी के सभी प्रत्ययों को निम्न वर्गों में सम्मिलित किया जाता है—

(1) कर्तृवाचक	(2) भाववाचक	(3) सम्बन्धवाचक
(4) ऊनतावाचक	(5) गणनावाचक	(6) सादृश्यवाचक
(7) गुणवाचक	(8) स्थानवाचक।	

(1) कर्तृवाचक : जिनसे किसी कार्य के करने वाले का बोध होता है, वे कर्तृवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

प्रत्यय	**निष्पन्न शब्द-रूप**
आर	सोनार, लोहार, चमार, कुम्हार।
आरी	पुजारी, जुआरी, भिखारी।
ओरा	चटोरा, खदोरा, नदोरा।
इया	दुखिया, सुखिया, रसिया, गड़रिया।
इयल	मरियल, सड़ियल, दढ़ियल।
एरा	सपेरा, लुटेरा, कसेरा, चटेरा।
कार	कथाकार, चित्रकार, कलाकार, स्वर्णकार, पत्रकार, नाटककार।
वाला	घरवाला, ताँगेवाला, झाड़ूवाला, मोटरवाला।
वैया (ऐया)	गवैया, नचैया, रखवैया, खिवैया।
हारा	लकड़हारा, पनिहारा।

(2) भाववाचक : जिनसे किसी भाव का बोध होता है, वे भाववाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

आ	प्यासा, भूखा, मूर्खता, लघुता।
आई	मिठाई, रंगाई, सिलाई, सफाई, पढ़ाई, भलाई।
आका	धमाका, धड़ाका, भड़ाका।
आपा	मुटापा, बुढ़ापा, रँडापा, पुजापा।
आहट	चिकनाहट, कड़वाहट, घबड़ाहट, गरमाहट।
आस	मिठास, खटास, निरास, भड़ास।
ई	गरमी, सर्दी, मजदूरी, पहाड़ी, गरीबी, खेती।
पन	लड़कपन, बचपन, गँवारपन।

(3) सम्बन्धवाचक : जिनसे सम्बन्ध का भाव व्यक्त होता है, वे सम्बन्धवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

आई	बहनोई, ननदोई, रसोई, पण्डिताई।
आड़ी	खिलाड़ी, पहाड़ी, अनाड़ी।
एरा	चचेरा, ममेरा, कसेरा, फुफेरा, लखेरा, सपेरा।
एड़ी	भँगेड़ी, गँजेड़ी, नशेड़ी।
आरी	लुहारी, सुनारी, मनिहारी।
आल	ननिहाल, ससुराल।

(4) ऊनतावाचक : जिससे लघुता या न्यूनता का बोध होता है, वे ऊनतावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

ई	रस्सी, टोकरी, कटोरी, ढोलकी, गरीबी, घंटी, चाची।
इया	बिटिया, खटिया, लुटिया, डिबिया, पुड़िया।
ड़ा	मुखड़ा, दुखड़ा, चमड़ा।
ओला	खटोला, मझोला।
ड़ी	टुकड़ी, पगड़ी, बछड़ी।

(5) गणनावाचक : जिनसे गणनावाचक संख्या का बोध होता है, वे गणनावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

था	चौथा।

रा	दूसरा, तीसरा।
ला	पहला।
वाँ	पाँचवाँ, दसवाँ, सातवाँ।
हरा	इकहरा, दुहरा, तिहरा।

(6) सादृश्यवाचक : जिनसे सादृश्य या समता का बोध होता है, उन्हें सादृश्यवाचक प्रत्यय कहते हैं। जैसे—

सा	मुझ-सा, तुझ-सा, नील-सा, चाँद-सा, गुलाब-सा।
हरा	दुहरा, तिहरा, चौहरा, रूपहरा, सुनहरा।

(7) गुणवाचक : जिनसे किसी गुण का बोध होता है, वे गुणवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

आ	मीठा, ठंडा, प्यासा, भूखा, प्यारा।
ईला	लचीला, गँठीला, सजीला, रंगीला, चमकीला, रसीला।
ऐला	मटमैला, कषैला, विषैला।
आऊ	बटाऊ, पंडिताऊ, नामधराऊ, खटाऊ।
वन्त	कलावन्त, कुलवन्त, दयावन्त।

(8) स्थानवाचक : जिनसे स्थान का बोध होता है, वे स्थानवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

ई	पंजाबी, गुजराती, मराठी, अजमेरी, बीकानेरी, बनारसी, कानपुरी, कोल्हापुरी, जोधपुरी।
इया	अमृतसरिया, जयपुरिया, भरतपुरिया।
आना	हरियाना, राजपूताना, तेलंगाना।

विदेशी प्रत्यय :

हिन्दी में उर्दू के ऐसे प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, जो मूल रूप से अरबी और फारसी भाषा से अपनाये गये हैं। ऐसे कुछ प्रत्यय यहाँ दिये जा रहे हैं—

इश	फ़रमाइश, पैदाइश।
गर	जादूगर, कारीगर, बाजीगर, शोरगर।
चा	गलीचा, बगीचा, चमचा।
ची	खजांची, मशालची, तोपची।
खाना	दवाखाना, छापाखाना, डाकखाना।
दार	मालदार, दुकानदार, जमींदार।
दान	कलमदान, पीकदान, धूपदान।
वान	कोचवान, बागवान, दरवान।
बाज	नशेबाज, दगाबाज, धोखेबाज।
मन्द	दौलतमन्द, जरूरतमन्द, अक्लमन्द।
गीर	राहगीर, उठाईगीर।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. मूल शब्द में जुड़े हुए प्रत्यय का सही विकल्प है—
   (क) मानव + ईय + ता (ख) मानव + ईयता
   (ग) मान + वीय + ता (घ) मानवी + यता।
2. मूल शब्द और उसमें जुड़े प्रत्यय का सही विकल्प है—
   (क) लौक + इकता (ख) लोक + इक + ता
   (ग) लौकिक + इता (घ) लौकिकता + आ।
3. 'इन' प्रत्यय जुड़ने से बना हुआ शब्द है—
   (क) मानिनी (ख) चिन्तन (ग) लुहारिन (घ) सुहावन।

4. मूल शब्द में जुड़ने योग्य सही प्रत्यय है—
(क) पण्डित + त्य (ख) पण्डित + त्व
(ग) पण्डित + य (घ) पण्डित + ईय।

5. 'ई' प्रत्यय से निष्पन्न शब्द है—
(क) जयपुरी (ख) टुकड़ी (ग) बुहारी (घ) देवरानी।

6. प्रत्यय जुड़ते हैं?
(क) शब्द के अन्त में (ख) शब्द के शुरुआत में
(ग) शब्द के शुरू तथा अन्त दोनों में (घ) उक्त कोई नहीं।

7. भगौड़ा शब्द में प्रत्यय है?
(क) ड़ा (ख) आ (ग) औड़ा (घ) अ।

8. प्रत्यय के योग से बना शब्द कौनसा है?
(क) सुगंध (ख) अपमान (ग) मालिन (घ) अनुकूल।

9. भूगोल शब्द में 'इक' प्रत्यय जुड़ने से प्रत्य युक्त शब्द होगा?
(क) भूगोलिक (ख) भूगोलीक (ग) भौगोलिक (घ) भूगौलीक।

10. तद्धित प्रत्यय से निर्मित शब्द है?
(क) सुनार (ख) खिंचाव (ग) उठान (घ) बेलन।

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (क) 6. (क) 7. (ग) 8. (ग) 9. (ग) 10. (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. शब्दांश जो किसी शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं उन्हें .... कहते हैं। (उपसर्ग/प्रत्यय)
2. जो प्रत्यय संज्ञा शब्दों के अन्त में लगाकर नए शब्द बनाते हैं उन्हें .... प्रत्यय कहते हैं। (कृत्/तद्धित)
3. 'मुखड़ा' शब्द में प्रत्यय का प्रकार है। (ऊनतावाचक/कर्तृवाचक)
4. 'चरवाहा' पद में प्रत्यय .... है। (वाहा/आ)
5. 'मरियल' शब्द में प्रत्यय .... है। (इयल/अल)
6. प्रत्यय .... प्रकार के होते हैं। (दो/तीन)
7. जो प्रत्यय धातुओं के अन्त में लगते है, उसे .... कहते हैं। (कृत प्रत्यय/गणवाचक)
8. .... शब्द में तद्धित प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। (वार्षिक/लड़ाई)
9. जिनसे भाव का बोध होता है वे .... प्रत्यय कहलाते हैं। (भाववाचक/सम्बन्धवाचक)
10. जिनसे किसी गुण का बोध होता है वे .... प्रत्यय कहलाते हैं। (गुणवाचक/गणवाचक)
11. 'विचार' में 'इक' प्रत्यय जोड़ने से .... शब्द बनेगा। (वैचारिक/विचारिक)
12. 'लेखक' शब्द में .... प्रत्यय है? (क/अक)
13. कृदन्त प्रत्यय .... शब्दों के साथ जुड़ते हैं। (संज्ञा/क्रिया)
14. प्रत्यय .... होता है। (शब्दांश/वाक्यांश)

उत्तर–1. प्रत्यय, 2. तद्धित, 3. ऊनतावाचक, 4. वाहा, 5. इयल, 6. दो, 7. कृत, 8. वार्षिक, 9. भाववाचक, 10. गुणवाचक, 11. वैचारिक, 12. अक, 13. क्रिया, 14. शब्दांश।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1. प्रभावित, प्रामाणिक में प्रयुक्त प्रत्यय और मूल शब्द लिखिए।
उत्तर–प्रभावित = प्रभाव + इत
प्रामाणिक = प्रमाण + इक

प्रश्न 2. महत्त्व, उपचार शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर शब्द रचना कीजिए।
उत्तर–महत्त्व + पूर्ण = महत्त्वपूर्ण, उपचार + इक = औपचारिक।

प्रश्न 3. 'सूखा' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?
उत्तर–'सूखा' शब्द में 'आ' प्रत्यय है।

प्रश्न 4. 'लड़ाई' शब्द में कौनसा प्रत्यय है?
उत्तर–'लड़ाई' शब्द में 'आई' प्रत्यय है।
प्रश्न 5. 'छलिया' शब्द में कौनसा प्रत्यय है?
उत्तर–'छलिया' शब्द में 'इया' प्रत्यय है।
प्रश्न 6. 'कृत्' प्रत्यय का योग होता है?
उत्तर–क्रिया या धातु के साथ।
प्रश्न 7. प्रत्ययों के प्रयोग से क्या होता है?
उत्तर–प्रत्ययों के प्रयोग से नये शब्दों का निर्माण होता है।
प्रश्न 8. 'सिंह' शब्द को स्त्रीलिंग में बदलने हेतु किस प्रत्यय की आवश्यकता है?
उत्तर–'नी' प्रत्यय की।
प्रश्न 9. 'ऐल' प्रत्यय से शब्द बनाइए।
उत्तर–मूँछैल।
प्रश्न 10. 'पुराण' में 'इक' प्रत्यय लगने पर शब्द रूप होगा?
उत्तर–पुराण + इक = पौराणिक।
प्रश्न 11. 'लघुता' शब्द में जुड़ा प्रत्यय है?
उत्तर–'ता' प्रत्यय।
प्रश्न 12. 'चरित्र' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?
उत्तर–'चरित्र' शब्द में 'इत्र' प्रत्यय है।
प्रश्न 13. 'सावधानी' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?
उत्तर–'सावधानी' शब्द में 'ई' प्रत्यय है।
प्रश्न 14. 'कृत' प्रत्यय कहाँ जुड़ते हैं?
उत्तर–कृत प्रत्यय क्रिया शब्दों के पश्चात् जुड़ते हैं।
प्रश्न 15. 'तद्धित' प्रत्यय कहाँ लगते हैं?
उत्तर–'तद्धित' प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण में लगते हैं।
प्रश्न 16. चर्मकार, प्रभाकर में कौनसा प्रत्यय निहित है?
उत्तर–चर्मकार में 'कार' और प्रभाकर में 'कर' प्रत्यय है।
प्रश्न 17. 'अज' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग करेंगे?
उत्तर–'अज' शब्द में आ प्रत्यय जोड़ने पर 'अजा' स्त्रीवाचक शब्द बनता है।
प्रश्न 18. 'आल' प्रत्यय से बने कोई तीन उदाहरण बताइए।
उत्तर–ससुराल, ननिहाल, ददिहाल।
प्रश्न 19. ऊनतावाचक प्रत्यय किसे कहते हैं?
उत्तर–जिससे न्यूनता और लघुता का बोध होता है वे ऊनतावाचक प्रत्यय कहलाते हैं।
प्रश्न 20. तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं?
उत्तर–दो या दो से अधिक वस्तुओं में श्रेष्ठता बतलाने वाले प्रत्यय तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
प्रश्न 21. सादृश्यवाचक प्रत्यय किसे कहते हैं?
उत्तर–जिनसे सादृश या समता का बोध होता है, उन्हें सादृश्यवाचक प्रत्यय कहते हैं।
प्रश्न 22. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय बताइए—
राष्ट्रीय, बुढ़ापा, जयपुरिया, पूजनीय, पठित, महिमा।
उत्तर–राष्ट्रीय—ईय। बुढ़ापा—आपा। जयपुरिया—इया। पूजनीय—अनीय। पठित—इत। महिमा—इमा।
प्रश्न 23. 'आई' प्रत्यय के योग से पाँच शब्द बनाइए—
उत्तर–रंगाई, मिठाई, सफाई, सिलाई, पढ़ाई।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द एवं प्रत्यय पृथक् कीजिए-

औद्योगिक, क्रोधित, वास्तविक, पढ़ाकू, अंकित, मिलान

उत्तर–औद्योगिक — उद्योग + इक

क्रोधित — क्रोध + इत

वास्तविक — वास्तव + इक

पढ़ाकू — पढ़ + आकू

अंकित — अंक + इत

मिलान — मिल + आन

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्दों की रचना कीजिए-

आई, ता, दार, ईय, त्व, मान

उत्तर–आई — बुनाई, पढ़ाई

ता — सफलता, स्वच्छता

दार — पहरेदार, हवादार

ईय — भारतीय, अनुकरणीय

त्व — महत्त्व, गुरुत्व

मान — शक्तिमान, श्रीमान

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों में से प्रत्यय युक्त शब्दों को रेखांकित कीजिए।

(क) तहसीलदार का काम जमीन का लेखा-जोखा रखना भी है।

(ख) मेरा पड़ोसी कश्मीरी है।

(ग) शोभित की लिखावट पढ़ी नहीं जाती।

(घ) हल्दीराम हलवाई की नमकीन बहुत प्रसिद्ध है।

उत्तर–(क) तहसीलदार (ख) कश्मीरी

(ग) लिखावट (घ) हलवाई

प्रश्न 4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर वाक्य पूरे कीजिए।

(क) सबको .... (मीठा) बांटी गई।

(ख) क्या मैं तुम्हारे कमरे की .... (तलाश) ले सकता हूँ।

(ग) .... (मानव) की ओर हमारा ध्यान कम ही जाता है।

(घ) गांधीजी की .... (लिख) अक्सर समझ नहीं आती थी।

उत्तर–(क) मिठाई (ख) तलाशी

(ग) मानवता (घ) लिखावट

प्रश्न 5. कृत प्रत्यय किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर–क्रिया अथवा धातु के बाद जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्यय के मेल से बने शब्दों को कृदन्त कहते हैं। उदाहरण-

अक — लेखक, नायक

अक्कड़ — भुलक्कड़, घुमक्कड़

आक — तैराक, लड़ाक

प्रश्न 6. तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर–संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के अन्त में लगने वाले प्रत्यय को तद्धित प्रत्यय कहा जाता है। तद्धित प्रत्यय के मेल से बने शब्द को तद्धितांत कहते हैं। उदाहरण-

लघु + ता = लघुता बड़ा + आई = बड़ाई

सुन्दर + ता = सुन्दरता बुढ़ा + आपा = बुढ़ापा

प्रश्न 7. प्रत्यय किसे कहते हैं?

उत्तर–प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं जो शब्दों के अन्त में जुड़कर, अपनी प्रकृति के अनुसार शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- प्रति + अय। 'प्रति' का अर्थ होता है 'साथ में',

पर बाद में और 'अय' का अर्थ होता है 'चलने वाला'। अत: प्रत्यय का अर्थ होता है साथ में पर बाद में चलने वाला जैसे- गाड़ी + वान - गाड़ीवान।

प्रश्न 8. निम्नलिखित प्रत्ययों के योग से चार-चार शब्द बनाइए—

ता, इमा, इक, ईय, तम, इया, मान्, गर।

उत्तर–ता–गुरुता, मनुष्यता, समता, कविता।

इमा—महिमा, गरिमा, लघिमा, अणिमा।

इक—लौकिक, शारीरिक, वार्षिक, सामाजिक।

ईय—राजकीय, प्रान्तीय, नाटकीय, भवदीय।

तम—सुन्दरतम, लघुत्तम, महत्तम, अधिकतम।

इया—लुटिया, डिबिया, खटिया, पुड़िया।

मान—शक्तिमान, बुद्धिमान, आयुष्मान, गतिमान।

गर—जादूगर, बाजीगर, कारीगर, शोरगर।

प्रश्न 9. उपसर्ग और प्रत्यय में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–शब्द के आरम्भ में जुड़ने वाले शब्दांश या अव्यय उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे- अप + व्यय - अपव्यय, कु + पुत्र - कुपुत्र। यहाँ पर 'अप ' और 'कु' प्रत्यय हैं। जबकि शब्द के अन्त में जुड़ने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे- मानस + इक - मानसिक, प्यास + आ - प्यासा। यहाँ पर 'इक' और 'आ' प्रत्यय हैं।

प्रश्न 10. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक प्रत्यय-युक्त शब्द लिखिए—

(क) दाढ़ी वाला (ख) धर्म से सम्बन्धित

(ग) गुणों वाला (घ) घूमने वाला

(ङ) समाज की (च) सुनार की पत्नी

उत्तर–(क) दाढ़ी वाला—दढ़ियल

(ख) धर्म से सम्बन्धित—धार्मिक

(ग) गुणों वाला—गुणवान

(घ) घूमने वाला—घुमक्कड़

(ङ) समाज की—सामाजिक

(च) सुनार की पत्नी—सुनारिन।

2. विशेषण

(लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव)

विशेषण

विशेषण किसी भी व्यक्ति, वस्तु को उसकी विशेष बात से दर्शाता है या उसकी विशेषता बताता है।

परिभाषा–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे—मोहन **अच्छा** बालक है। रमा ने **पीली** साड़ी पहन रखी है। बाजार से **पाव भर** दही लाओ। हिमालय सबसे **ऊँचा** पर्वत है। इन वाक्यों में अच्छा, पीली, पावभर और ऊँचा शब्द विशेषण हैं। ये क्रमश: मोहन, साड़ी, दही और हिमालय की विशेषता बता रहे हैं।

विशेषण और विशेष्य :

विशेषण शब्द जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता व्यक्त करते हैं, उसे **विशेष्य** कहते हैं। जैसे—

(i) **काली गाय** चर रही है।

(ii) वह **एक किलो फल** लाया।

(iii) **बुद्धिमान छात्र** सदा सफल रहते हैं।

इन वाक्यों में काली, एक किलो और बुद्धिमान विशेषण हैं। गाय, फल और छात्र विशेष्य हैं, क्योंकि इनकी विशेषता बताई गई है।

ध्यातव्य—वाक्य में विशेषण शब्द प्राय: विशेष्य से पहले आता है। परन्तु कभी-कभी यह विशेष्य के बाद भी प्रयुक्त होता है। विशेष्य से पहले प्रयुक्त विशेषण को **उद्देश्य-विशेषण** कहते हैं, जबकि विशेष्य के बाद प्रयुक्त विशेषण को **विधेय-विशेषण** कहते हैं।

विशेषण चाहे उद्देश्य-विशेषण हो या विधेय-विशेषण, दोनों ही स्थितियों में उसका रूप संज्ञा या सर्वनाम के अनुसार बदलता है।

प्रविशेषण :

जो विशेषण विशेषणों की भी विशेषता बतलाते हैं, अथवा उनकी विशेषता में वृद्धि करते हैं, उन्हें **प्रविशेषण** कहते हैं। जैसे—

(i) रमेश **अत्यधिक** परिश्रमी छात्र है।
(ii) महानगरों में **बहुत** अधिक शोर होता है।
(iii) वह बालक **पूर्ण** स्वस्थ है।
(iv) रमा ने **सुर्ख** लाल साड़ी पहनी।
(v) हिमालय **सर्वाधिक** ऊँचा पर्वत है।

इन वाक्यों में अत्यधिक, बहुत, पूर्ण, सुर्ख एवं सर्वाधिक शब्द प्रविशेषण हैं, क्योंकि ये क्रमश: परिश्रमी, अधिक, स्वस्थ, लाल और ऊँचा विशेषण की विशेषता में वृद्धि कर रहे हैं। विशेषणों की विशेषता बतलाने से ये सब प्रविशेषण हैं।

विशेषण के भेद

रचना-प्रयुक्ति के अनुसार विशेषण के मुख्यत: पाँच भेद होते हैं—

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण (संकेतवाचक)
5. व्यक्तिवाचक

1. गुणवाचक विशेषण—जो शब्द किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के रूप, रंग, आकार, अवस्था, स्वभाव, दिशा या गुण सम्बन्धी विशेषता को प्रकट करते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—यह **सुन्दर** गाय है। यह **लाल** फूल है। उमाकान्त **चतुर** विद्यार्थी है। इन वाक्यों में 'सुन्दर', 'लाल' व 'चतुर' शब्द गुणवाचक विशेषण हैं।

गुणवाचक विशेषण में संज्ञा के गुण या दोष का बोध कराया जाता है। इस कारण इसके कई उपभेद किये जा सकते हैं। यथा—

गुण-दोष	अच्छा, बुरा, परिश्रमी, ईमानदार, झूठा, दयालु, दानी, कृपण आदि।
रंग	काला, पीला, नीला, हरा, लाल, सुनहरा, चमकीला आदि।
आकार	छोटा, बड़ा, मोटा, गोल, ऊँचा, तिकोना, चौकोर, लम्बा आदि।
स्वाद	खट्टा, मीठा, कड़वा, नमकीन, मधुर, कसैला आदि।
स्पर्श	नरम, कठोर, कोमल, खुरदरा, चिकना, स्निग्ध आदि।
गन्ध	खुशबूदार, बदबूदार, सुगन्धित, दुर्गन्धपूर्ण, सोंधा आदि।
दिशा	उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी, ऊपरी, बाहरी आदि।
दशा	नया, पुराना, फटा, जर्जर, रोगी, स्वस्थ आदि।
अवस्था	युवा, बूढ़ा, अधेड़, प्रौढ़, तरुण आदि।
स्थान	भारतीय, जापानी, पंजाबी, महाराष्ट्री, बनारसी, जयपुरी आदि।
काल	प्राचीन, आधुनिक, ताजा, पुराना, बासी, भावी आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

इस विशेषण के द्वारा निश्चित या अनिश्चित संख्या का बोध होता है। इस कारण संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं—

(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण—जो विशेषण निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे—पाँच, सात, पहला, दूसरा आदि। उदाहरण— मैदान में पाँच लड़के खेल रहे हैं। निश्चित संख्यावाचक विशेषण के चार उपभेद होते हैं।

(i) गणनावाचक—जिसमें गणना का बोध होता है। जैसे—एक, दो, चार, पाँच आदि।

(ii) क्रमवाचक—जिससे क्रम का बोध हो। जैसे—पहला, दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ आदि।

(iii) आवृत्तिवाचक—जिससे यह पता लगता है कि विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) कितने गुना है। जैसे—दूना, चौगुना आदि।

(iv) समुदायवाचक—जिससे संज्ञा के समूह का बोध हो। जैसे—दोनों, तीनों, पाँचों आदि।

(2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण—जो विशेषण किसी निश्चित संख्या का बोध न करायें, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—कई, कुछ, सब, बहुत, थोड़े आदि। उदाहरण— कक्षा में पाँच लड़के खेल रहे हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषण—जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की नाप-तौल सम्बन्धी विशेषताओं का ज्ञान होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—थोड़ा दूध, पाव भर चीनी, गज भर कपड़ा आदि।

परिमाण भी निश्चित और अनिश्चित हो सकता है। इस कारण परिमाणवाचक विशेषण के निम्नलिखित दो भेद माने जाते हैं—

(1) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण—एक, चार, दस आदि।

(2) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण—कुछ, थोड़ा, बहुत आदि।

4. सार्वनामिक विशेषण (संकेतवाचक)—जो सर्वनाम संज्ञा के विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे—**वह** भवन गिर जायेगा। इसमें 'वह' सर्वनाम शब्द 'भवन' की विशेषता बतला रहा है। यह पुस्तक बड़ी मोटी है। इसमें 'यह' सर्वनाम शब्द पुस्तक की ओर संकेत कर रहा है। अतएव यह सार्वनामिक विशेषण है।

ध्यातव्य—सार्वनामिक विशेषण को ही संकेतवाचक विशेषण भी कहा जाता है। इसमें सर्वनाम शब्दों के द्वारा संज्ञा शब्दों की ओर संकेत किया जाता है। ये विशेषण सर्वनाम शब्दों से बनते हैं, इस कारण इन्हें संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

सार्वनामिक विशेषण के चार भेद होते हैं—

(i) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण—जो विशेषण संज्ञा की ओर निश्चयात्मक संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयात्मक या संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे—**वह** किताब, **यह** लड़की, **उस** शाला में, **वे** सुनहरे दिन।

(ii) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण—जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की ओर अनिश्चयात्मक संकेत करते हैं, उन्हें अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे—**कोई** आदमी, **कुछ** लोग।

(iii) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण—जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्धित प्रश्नों का बोध कराते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे—**कौन** लड़का रो रहा था? **किस** घर में मौत हुई? आप **क्या** काम करेंगे?

(iv) सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण—जो विशेषण एक संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जोड़ते हैं, उन्हें सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे—कल **जो** लड़का आया था **वह** चला गया। उसे **उसकी** पुस्तक वापस कर दो। **वह** लड़का भागने लगा **जिसने** कल फूल तोड़े थे।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण—जो विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—**जयपुरी** रजाई, **बीकानेरी** भुजिया, **जापानी** गुड़िया, **कश्मीरी** सेब आदि।

विशेष—एक अन्य भेद भी माना जाता है, जो इस प्रकार है—

भिन्नतावाचक विशेषण—जो विशेषण संज्ञा शब्दों की भिन्नता प्रकट करते हुए विशेषता बतलाते हैं, उन्हें भिन्नतावाचक विशेषण कहते हैं। इन्हें ही विभागवाचक विशेषण भी कहा जाता है। जैसे—इस घर के **प्रत्येक** व्यक्ति को निमन्त्रण दो। देश का **हर एक** नागरिक ईमानदार बने। इन वाक्यों में 'प्रत्येक' और 'हरएक' भिन्नतावाचक विशेषण हैं।

तुलना की दृष्टि से विशेषणों की अवस्थाएँ

विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। जिन वस्तुओं की विशेषता बतलाई जाती है उनमें न्यूनाधिक्य होना स्वाभाविक है। इस न्यूनाधिक्य को तुलना के रूप में समझा जा सकता है। तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं—

(1) मूलावस्था—विशेषण शब्द की मूल दशा को जिसमें वह सामान्य रूप में रहता है, मूलावस्था कहते हैं। जैसे—लघु, प्रिय, श्रेष्ठ आदि शब्द। उदाहरण— राम सुन्दर है।

(2) उत्तरावस्था–जहाँ दो वस्तुओं या दो व्यक्तियों की तुलना करके एक-दूसरे से अधिक या कम बताया जाता है, वहाँ विशेषण की उत्तरावस्था होती है। जैसे—लघुतर, प्रियतर, श्रेष्ठतर। अथवा यों कहा जाए कि पिताजी सुरेश को महेश से श्रेष्ठतर समझते हैं।

(3) उत्तमावस्था–यह विशेषण की वह अवस्था है जिसमें अनेक वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक या सबसे कम श्रेष्ठ बताया जाता है। जैसे—लघुतम, प्रियतम, श्रेष्ठतम। जैसे—रमेश सभी छात्रों में चतुरतम है। गाय सभी पशुओं में श्रेष्ठतम पशु है।

विशेष—(i) विशेषण की उक्त तीनों अवस्थाएँ केवल गुणवाचक विशेषण में होती हैं।

(ii) विशेषण की मूलावस्था में वह मूल रूप में रहता है, उत्तरावस्था में दूसरे की तुलना में एक को श्रेष्ठ या विशिष्ट बतलाया जाता है, लेकिन उत्तमावस्था में सबसे श्रेष्ठ या उत्तम बताया जाता है।

(iii) तत्सम शब्दों की उत्तरावस्था में विशेषण के मूल रूप के साथ 'तर' और उत्तमावस्था में 'तम' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

विशेषण की तीनों अवस्थाओं के रूप :

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
लघु	लघुतर	लघुतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
बहुत	बहुतर	बहुतम
चतुर	चतुरतर	चतुरतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
महत्	महत्तर	महत्तम
दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
ज्येष्ठ	ज्येष्ठतर	ज्येष्ठतम
कनिष्ठ	कनिष्ठतर	कनिष्ठतम
कुटिल	कुटिलतर	कुटिलतम
पटु	पटुतर	पटुतम
निकृष्ट	निकृष्टतर	निकृष्टतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
मृदु	मृदुतर	मृदुतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
उत्कृष्ट	उत्कृष्टतर	उत्कृष्टतम
उष्ण	उष्णतर	उष्णतम

विशेषणों की रचना

हिन्दी में कुछ शब्द मूल रूप में ही विशेषण होते हैं, परन्तु कुछ विशेषणों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया या अव्यय शब्दों के साथ प्रत्ययों को जोड़कर की जाती है। यहाँ इस तरह के उदाहरण दिये जा रहे हैं—

संज्ञा शब्दों से निर्मित विशेषण–

स्वतंत्र रूप में विशेषणों की संख्या कम है। आवश्यकतानुसार संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय से ही विशेषणों को बनाया जाता है।

संज्ञा शब्द	प्रत्यय	निर्मित विशेषण
अंक	इत	अंकित
अलंकार	इक	आलंकारिक
अंश	इक	आंशिक
इतिहास	,,	ऐतिहासिक
क्रम	,,	क्रमिक
दिन	,,	दैनिक
धर्म	,,	धार्मिक
निमित्त	,,	नैमित्तिक
नीति	,,	नैतिक
पक्ष	,,	पाक्षिक
परिवार	,,	पारिवारिक
बुद्धि	,,	बौद्धिक
शरीर	,,	शारीरिक
साहित्य	,,	साहित्यिक
साहस	,,	साहसिक
सत्त्व	,,	सात्त्विक
समाज	,,	सामाजिक
कुरु	अव	कौरव
पल्लव	इत	पल्लवित
कुसुम	इत	कुसुमित
तरंग	,,	तरंगित
आत्मा	ईय	आत्मीय
जाति	,,	जातीय
भारत	,,	भारतीय
शास्त्र	,,	शास्त्रीय
स्थान	,,	स्थानीय
जटा	इल	जटिल
पंक	,,	पंकिल
फेन	,,	फेनिल
आदि	इम	आदिम
रक्त	,,	रक्तिम
स्वर्ण	,,	स्वर्णिम
ईर्ष्या	आलु	ईर्ष्यालु
कृपा	,,	कृपालु
दया	,,	दयालु
सुख	मय	सुखमय
आनन्द	,,	आनन्दमय
रोग	ई	रोगी
संयम	,,	संयमी
जयपुर	,,	जयपुरी
बीकानेर	,,	बीकानेरी
बुद्धि	मान्/वान्	बुद्धिमान्
श्री	,,	श्रीमान्

गुण	''	गुणवान्
रूप	मती/वती	रूपवती
श्री	''	श्रीमती
गुण	''	गुणवती

सर्वनाम शब्दों से निर्मित विशेषण–

सर्वनाम शब्द	**निर्मित विशेषण**
यह	ऐसा, इस
ये	ऐसे, इन
वह	वैसा, उस
वे	वैसे, उन
मैं	मेरा, मुझसा
तुम	तुम-सा, तुम्हारा-सा
आप	आप-सा
हम	हम-सा, हम-जैसा
जो	जैसा, जिस

क्रिया से निर्मित विशेषण–

क्रिया	**प्रत्यय**	**निर्मित विशेषण**
आस्ति	इक	आस्तिक
नास्ति	''	नास्तिक
क्षुधा	इत	क्षुधित
निन्द्	य	निन्द्य
पूज्	''	पूज्य
स्तुत्	''	स्तुत्य
खाद्	''	खाद्य
दृश्	अनीय	दर्शनीय
पूज्	''	पूजनीय
वन्दना	ईय	वन्दनीय
अड़ना	इयल	अड़ियल
डरना	आवना	डरावना
कमाना	आऊ	कमाऊ
खेलना	आड़ी	खिलाड़ी
झगड़ना	आलू	झगड़ालू
त्यागना	य	त्याज्य
बिकना	आऊ	बिकाऊ
लड़ना	आकू	लड़ाकू
लड़ना	आका	लड़ाका
चलना	आऊ	चलाऊ
टिकना	आऊ	टिकाऊ
पीना	अक्कड़	पियक्कड़
भूलना	''	भुलक्कड़
स्वर्ण	इम्	स्वर्णिम
भाग्य	शाली	भाग्यशाली
देव	इक	दैविक

अव्यय से निर्मित विशेषण–

अव्यय	प्रत्यय	निर्मित विशेषण
आगे	ला	अगला
पीछे	”	पिछला
नीचे	”	निचला
अग्र	इम	अग्रिम
भीतर	ई	भीतरी
बाहर	”	बाहरी
ऊपर	”	ऊपरी
नजदीक	”	नजदीकी
दूर	स्थ	दूरस्थ
निकट	”	निकटस्थ
समीप	”	समीपस्थ

ध्यातव्य–इसी प्रकार संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि से विभिन्न प्रत्ययों को जोड़ने से विविध विशेषण शब्दों का निर्माण किया जाता है।

लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव

विशेषण विकारी होते हैं, उनमें निम्न तीन कारणों से विकार आते हैं—

1. लिंग-भेद के कारण
2. वचन-भेद के कारण
3. कारक-भेद के कारण।

पाठ्यक्रमानुसार लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव यहाँ समझाया जा रहा है—

1. लिंग का विशेषण पर प्रभाव–विशेषण का लिंग-निर्धारण उसके विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) के लिंग के अनुसार होता है। इसके कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं—

(i) यदि मूल विशेषण आकारान्त हो तो वह स्त्रीलिंग विशेष्य के अनुसार ईकारान्त हो जाता है। जैसे—

यह **अच्छा** लड़का है। (पुल्लिंग)	यह **अच्छी** लड़की है। (स्त्रीलिंग)
यह **भोला** बालक है। ”	यह **भोली** बालिका है।
यह **काला** घोड़ा है।	यह **काली** घोड़ी है।

(ii) यदि मूल विशेषण आकारान्त नहीं है तो विशेष्य चाहे पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग, इसका विशेषण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। तब वह अपने मूल रूप में ही रहता है। जैसे—

वह अत्यन्त सुन्दर युवा है। (पुल्लिंग)

वह अत्यन्त सुन्दर युवती है। (स्त्रीलिंग)

(iii) यदि विशेषण में प्रत्यय लगा हो और वह आकारान्त नहीं भी हो, तो तब लिंग के अनुसार विशेषण का प्रत्यय-रूप बदला जाता है। जैसे—

गुणवान पुत्र।	(पुल्लिंग)	गुणवती पुत्री।	(स्त्रीलिंग)
बुद्धिमान बालक।	”	बुद्धिमती बालिका।	”
आदरणीय पिताजी।	”	आदरणीय माताजी।	”

(iv) यदि विशेषण आकारान्त हो तो विशेष्य के स्त्रीलिंग होने पर उसका रूप परिवर्तित होकर ईकारान्त हो जाता है। जैसे—

आज का दिन बहुत बुरा था। (पुल्लिंग)	यह घड़ी बहुत बुरी थी। (स्त्रीलिंग)
रमेश शर्मीला लड़का है। ”	रीता शर्मीली लड़की है। ”
मेरा कुरता छोटा हो गया है। ”	मेरी पेंट छोटी हो गई। ”

अन्य महत्त्वपूर्ण उदाहरण

पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण	पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण
भला	भली	ठिगना	ठिगनी
बुरा	बुरी	खुरदरा	खुरदरी
छोटा	छोटी	सुरीला	सुरीली
नीला	नीली	चिकना	चिकनी
पीला	पीली	मीठा	मीठी
काला	काली	खट्टा	खट्टी
ठण्डा	ठण्डी	रंगीला	रंगीली
पुराना	पुरानी	खर्चीला	खर्चीली
गीला	गीली	पथरीला	पथरीली
लम्बा	लम्बी	कैसा	कैसी
मोटा	मोटी	पाँचवाँ	पाँचवीं
बिगड़ा	बिगड़ी	कोटा वाला	कोटा वाली
आठवाँ	आठवीं	भगोड़ा	भगोड़ी
गरिमामय	गरिमामयी	सब्जी वाला	सब्जी वाली
सुनहरा	सुनहरी	तिहरा	तिहरी
मैला	मैली	चौगुना	चौगुनी

2. वचन का विशेषण पर प्रभाव—विशेषण विकारी शब्द होने से वचन के कारण भी इसके रूप में परिवर्तन आता है। विशेष्य के वचन के अनुसार ही विशेषण का वचन निर्धारित होता है। इसके कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं—

(i) यदि विशेषण आकारान्त पुल्लिंग हो तो बहुवचन होने पर उसमें परिवर्तन हो जाता है। जैसे—

पीला कपड़ा (पु. एकवचन) – **पीले** कपड़े (पु. बहुवचन)
लम्बा आदमी (पु. एकवचन) – **लम्बे** आदमी (पु. बहुवचन)
छोटा बच्चा (पु. एकवचन) – **छोटे** बच्चे (पु. बहुवचन)

(ii) यदि विशेष्य स्त्रीलिंग हो तो बहुवचन हो जाने पर भी विशेषण के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे—

पीली साड़ी (स्त्री. एकवचन) – **पीली** साड़ियाँ (स्त्री. बहुवचन)
छोटी लड़की (स्त्री. एकवचन) – **छोटी** लड़कियाँ (स्त्री. बहुवचन)
गुणवती स्त्री (स्त्री. एकवचन) – **गुणवती** स्त्रियाँ (स्त्री. बहुवचन)

(iii) यदि विशेष्य स्त्रीलिंग हो तो आकारान्त विशेषण ईकारान्त रूप में परिवर्तित हो जाता है। जैसे—

अच्छा लड़का – अच्छी लड़की
अच्छे बच्चे – अच्छी बच्चियाँ

अन्य महत्त्वपूर्ण उदाहरण

विशेषण	पुल्लिंग बहुवचन	स्त्रीलिंग बहुवचन
पूरा	पूरे	पूरी
हरा	हरे	हरी
गोरा	गोरे	गोरी
गन्दा	गन्दे	गन्दी
भला	भले	भली
लम्बा	लम्बे	लम्बी
ऊँचा	ऊँचे	ऊँची
चमकीला	चमकीले	चमकीली
बर्फीला	बर्फीले	बर्फीली

अगला	अगले	अगली
जानेवाला	जानेवाले	जानेवाली
दूधवाला	दूधवाले	दूधवाली
ऐसा	ऐसे	ऐसी
कैसा	कैसे	कैसी

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. कालांकित शब्द के स्त्रीलिंग रूप के सही विकल्प को चुनकर वाक्य पूरा कीजिए—
फिल्मोत्सव में सर्वश्रेष्ठ **अभिनेता** और..........को पुरस्कार प्रदान किये गये।
(क) अध्यापिका (ख) विदुषी
(ग) अभिनेत्री (घ) खलनायिका।
2. कालांकित शब्द के विशेषण रूप से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—
इतिहास के छात्र............घटनाओं को जानते हैं।
(क) इतिहास (ख) ऐतिहासिक
(ग) सामाजिक (घ) सांसारिक।
3. निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए सही सार्वनामिक विशेषण चुनिए—
मत भूलो कि..............देश हमारा है।
(क) वह (ख) जो (ग) यह (घ) ऐसा।
4. रेखांकित का विशेषण रूप है—
<u>इलाहाबाद</u> के आम प्रसिद्ध हैं।
(क) इलाहाबादी (ख) इलाहाबाद (ग) इलाहाबादियाँ (घ) इलाहाबादों।
5. सरकार प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ शिक्षक और..........को सम्मानित करती है।
इस वाक्य के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए सही विकल्प है—
(क) छात्रा (ख) कर्मचारी (ग) शिक्षिका (घ) नायिका।
6. निम्न में से गुणवाचक विशेषण शब्द है—
(क) थोड़ा (ख) चौगुना (ग) अच्छा (घ) प्रत्येक।
7. व्यक्तिवाचक विशेषण शब्द है—
(क) जयपुरी (ख) वह (ग) दानी (घ) पाँचवाँ।
8. विशेषण की तीनों अवस्थाएँ होती हैं—
(क) संख्यावाचक विशेषण में (ख) परिमाणवाचक विशेषण में
(ग) व्यक्तिवाचक विशेषण में (घ) गुणवाचक विशेषण में।
9. किसी व्यक्ति के रूप-गुण आदि को व्यक्त करने वाले विशेषण को क्या कहते हैं?
(क) गुणवाचक विशेषण (ख) व्यक्तिवाचक विशेषण
(ग) परिमाणवाचक विशेषण (घ) सार्वनामिक विशेषण।
10. सातवाँ-आठवाँ आदि विशेषण किस भेद के अन्तर्गत आते हैं?
(क) परिमाणवाचक विशेषण (ख) सार्वनामिक विशेषण
(ग) संख्यावाचक विशेषण (घ) गुणवाचक विशेषण।

उत्तर–1. (ग), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क), 5. (ग), 6. (ग), 7. (क), 8. (घ), 9. (क), 10. (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. महान, महानतर और महानतम शब्द .... की अवस्थाएँ है। (विशेषण/सर्वनाम)
2. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द .... कहलाते हैं। (वाक्य/विशेषण)
3. रोग का विशेषण .... है। (रोग/रोगग्रस्त)

4. साहस में .... विशेषण है। (गुणवाचक/दशावाचक)
5. 'लक्ष्मण एक कुशल कार्यकर्ता है' वाक्य में विशेषण .... है। (कुशल/कार्यकर्ता)
6. 'पशु' शब्द का विशेषण .... है। (पाशविक/पशुपति)
7. ''वह दसवीं कक्षा में पढ़ता है'' वाक्य में .... विशेषण है। (निश्चित संख्यावाचक/अनिश्चित संख्यावाचक)
8. विशेष्य से पहले आने वाले विशेष्य को .... कहते हैं। (उद्देश्य/विधेय)
9. यही लड़का गवैया है, वाक्य में यही .... विशेषण है। (सार्वनामिक/संख्यावाचक)
10. करेले का स्वाद .... होता है। (कड़वा/नमकीन)
11. गाय का .... दूध पीना चाहिए। (ताजा/स्वादिष्ट)
12. उस .... भवन को देखो। (विशाल/अजनबी)
13. वर्ष में .... महीने होते हैं। (दस/बारह)
14. गन्ने का रस .... होता है। (कसैला/मीठा)

उत्तर– 1. विशेषण, 2. विशेषण, 3. रोगग्रस्त, 4. गुणवाचक, 5. कुशल, 6. पाशविक, 7. निश्चित संख्यावाचक, 8. उद्देश्य, 9. सार्वनामिक, 10. कड़वा, 11. ताज़ा, 12. विशाल, 13. बारह, 14. मीठा।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1. 'अच्छा विद्यार्थी' में विद्यार्थी शब्द क्या है?
उत्तर– 'अच्छा विद्यार्थी' में 'विद्यार्थी' शब्द विशेष्य है।
प्रश्न 2. प्रविशेषण किसे कहते हैं?
उत्तर– जो शब्द विशेषण की विशेषता बताता है उसे प्रविशेषण कहते हैं।
प्रश्न 3. सार्वनामिक विशेषण कब आते हैं?
उत्तर– सार्वनामिक विशेषण संज्ञा के बाद आते हैं।
प्रश्न 4. अर्थ के आधार पर विशेषण के कितने प्रकार हैं?
उत्तर– अर्थ के आधार पर विशेषण के पांच प्रकार हैं।
प्रश्न 5. अर्थ का विशेषण क्या होता है?
उत्तर– आर्थिक।
प्रश्न 6. कल्पना का विशेषण क्या होता है?
उत्तर– काल्पनिक।
प्रश्न 7. 'सारस की तरह लम्बी गर्दन बड़ी अजीब लगती है' में विशेषण पदबन्ध क्या है?
उत्तर– सारस की तरह लम्बी गर्दन।
प्रश्न 8. 'जल्दी चलो' में कौन-सा विशेषण है?
उत्तर– क्रिया-विशेषण है।
प्रश्न 9. 'मोहन बाजार से चार किलो चावल लाया' में कौनसा विशेषण है?
उत्तर– निश्चित परिमाणवाचक विशेषण।
प्रश्न 10. 'ईमानदार व्यक्ति का सम्मान होता है' इस वाक्य में विशेषण क्या है?
उत्तर– ईमानदार।
प्रश्न 11. संख्यावाचक विशेषण क्या होता है?
उत्तर– वह विशेषण, जो अपने विशेष्यों की निश्चित या अनिश्चित संख्याओं का बोध कराए, संख्यावाचक विशेषण कहलाता है।
प्रश्न 12. पापी में कौनसा विशेषण है?
उत्तर– गुणवाचक विशेषण।
प्रश्न 13. 'मधुरतम' शब्द विशेषण की कौनसी अवस्था है?
उत्तर– उत्तमावस्था।
प्रश्न 14. 'दया' का विशेषण शब्द क्या है?
उत्तर– दयालु।

प्रश्न 15. प्रतिभा का विशेषण क्या है?
उत्तर– प्रतिभाशाली।
प्रश्न 16. विशेषण के कितने भेद होते हैं?
उत्तर– विशेषण के मुख्यत: पांच भेद होते हैं।
प्रश्न 17. 'दुष्ट' कौनसा विशेषण है?
उत्तर– गुणवाचक विशेषण।
प्रश्न 18. बहुत धन में कौनसा विशेषण है?
उत्तर– अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण है।
प्रश्न 19. 'नटखट बालक' में कौनसा विशेषण है?
उत्तर– गुणवाचक विशेषण।
प्रश्न 20. 'पशु' का विशेषण क्या होगा?
उत्तर– पाशविक।
प्रश्न 21. 'अफ्रीकी शेर दहाड़ता है' इस वाक्य में विशेषण शब्द है?
उत्तर– अफ्रीकी।
प्रश्न 22. 'राहुल ने लाल कमीज पहनी है' इस वाक्य में विशेषण शब्द है?
उत्तर– 'लाल' एक विशेषण शब्द है।
प्रश्न 23. 'सोहन एक अच्छा लड़का है' इस वाक्य में विशेषण है?
उत्तर– 'अच्छा' शब्द विशेषण है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. व्याकरण के परिवार में विशेषण का क्या महत्त्व है?
उत्तर– व्याकरण के परिवार में विशेषण का बहुत बड़ा महत्त्व है। विशेषण संज्ञा और सर्वनाम की विशेषताओं और उनके गुणों को बताने वाला शब्द है। विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं- 1. सामान्य अवस्था, 2. उतरावस्था, 3. उत्तमावस्था। जैसे- विशाल, विशालतर, विशालतम।
प्रश्न 2. क्रिया-विशेषण, विशेषण से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर– क्रिया-विशेषण द्वारा किसी वाक्य की क्रिया, उसमें प्रयुक्त विशेषण अथवा दूसरी क्रिया-विशेषण की विशेषता बताई जाती है। जबकि विशेषण अपने वाक्य में प्रयुक्त किसी संज्ञा या सर्वनाम की ही विशेषता स्पष्ट करता है।
प्रश्न 3. संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण में क्या अन्तर है?
उत्तर– संख्यावाचक में गणना होती है जबकि परिमाणवाचक में नापा या तौला जाता है। संख्यावाचक में संख्या के बाद कोई संज्ञा या सर्वनाम शब्द होता है जबकि परिमाणवाचक में संख्या के बाद नाप, तौल की इकाई होती है।
प्रश्न 4. विशेषण की विशेषता बताइए।
उत्तर– 1. विशेषण एक विकारी शब्द है।
2. इसके द्वारा किसी भी वाक्य का स्वरूप स्पष्ट किया जा सकता है।
3. विशेषण का प्रयोग वस्तु को सजीव व मूर्तिमय रूप प्रदान करता है।
4. विशेषण के द्वारा किसी व्यक्ति या वस्तु की विशेषता बताई जाती है।
5. विशेषण द्वारा अर्थ को सीमित रूप प्रदान किया जा सकता है, आदि विशेषताएँ हैं।
प्रश्न 5. गुणवाचक विशेषण क्या है? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर– जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का पता चलता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। ये विशेषण भाव, रंग, दशा, आकार, समय, स्थान, काल आदि से संबंधित होते हैं। जैसे- अच्छा, बुरा, सफेद, काला, रोगी, मोटा, पतला, लम्बा, चौड़ा, नया, पुराना, ऊँचा, मीठा, चीनी, नीचा, प्रात:कालीन आदि।
प्रश्न 6. नीचे दिए गए वाक्यों में से विशेषण और विशेष्य छाटिएँ–
1. मुझे काला घोड़ा अच्छा लगता है।

2. नीला आसमान सुन्दर लग रहा है।
3. भोजन बहुत स्वादिष्ट है।
4. उस मोटे लड़के को बलाओ।

उत्तर– 1. विशेषण - काला, विशेष्य - घोड़ा
2. विशेषण - नीला, विशेष्य - आसमान
3. विशेषण - स्वादिष्ट, विशेष्य - भोजन
4. विशेषण - मोटे, विशेष्य - लड़के

प्रश्न 7. दिए गए वाक्यों में संकेतवाचक विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए–
1. वह लड़का आज नहीं आएगा।
2. इस विद्यालय में उन्होंने भी पढ़ाया था।
3. यह किताब मेरी है।
4. ये लड़के कल मुझे मिले थे।

उत्तर– 1. वह लड़का आज नहीं आएगा।
2. इस विद्यालय में उन्होंने भी पढ़ाया था।
3. यह किताब मेरी है।
4. ये लड़के कल मुझे मिले थे।

प्रश्न 8. निम्नलिखित को विशेषणों में बदलिए—

(i) पुस्तक (ii) चमक (iii) परिश्रम (iv) दिन (v) अपमान (vi) स्वाद (vii) परिवर्तन (viii) विवाह (ix) ऊपर (x) जंगल।

उत्तर–(i) पुस्तक—पुस्तकीय (ii) चमक—चमकीला (iii) परिश्रम—परिश्रमी (iv) दिन—दैनिक (v) अपमान—अपमानित (vi) स्वाद—स्वादिष्ट (vii) परिवर्तन—परिवर्तनीय (viii) विवाह—वैवाहिक (ix) ऊपर—ऊपरी (x) जंगल—जंगली।

प्रश्न 9. विशेषण का लिंग बदलकर लिखिए—

(i) प्यासा (ii) अगली (iii) छोटा (iv) गुणवान (v) महिमामयी (vi) शर्मीला (vii) बुरी।

उत्तर–(i) प्यासा—प्यासी (स्त्री.) (ii) अगली—अगला (पु.) (iii) छोटा—छोटी (iv) गुणवान—गुणवती (v) महिमामयी—महिमामय (vi) शर्मीला—शर्मीली (vii) बुरी—बुरा।

प्रश्न 10. रेखांकित विशेषण का वचन बदलकर वाक्य पुन: लिखिए—
(i) अच्छा कवि कौन है?
(ii) लोग प्यासे बैठे हैं।
(iii) नदी का किनारा रेतीला है।
(iv) वह लड़का शर्मीला है।
(v) वहाँ पर सब्जीवाला बैठे है।
(vi) रमेश ने मीठा फल खाया।

उत्तर–(i) अच्छे कवि कौन हैं?
(ii) व्यक्ति प्यासा बैठा है।
(iii) नदी के किनारे रेतीले हैं।
(iv) वे लड़के शर्मीले हैं।
(v) वहाँ पर सब्जीवाले बैठे हैं।
(vi) रमेश ने मीठे फल खाये।

प्रश्न 11. निम्नलिखित विशेषणों की उत्तरा एवं उत्तमा अवस्था बताइए—
बहुत, महत्, कनिष्ठ, श्रेष्ठ, मधुर, कुटिल।

उत्तर–बहुत—बहुतर, बहुतम। महत्—महत्तर, महत्तम

कनिष्ठ—कनिष्ठतर, कनिष्ठतम। श्रेष्ठ—श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम।
मधुर—मधुरतर, मधुरतम। कुटिल—कुटिलतर, कुटिलतम।

प्रश्न 12. निम्नलिखित रेखांकित पदों के विशेषण रूप लिखिए—
(i) कश्मीर के सेब मीठे होते हैं।
(ii) बीकानेर की भुजिया स्वादिष्ट होती है।

उत्तर–(i) कश्मीरी सेब मीठे होते हैं।
(ii) बीकानेरी भुजिया स्वादिष्ट होती है।

3. परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

परसर्ग

परिभाषा–वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के कारकीय सम्बन्ध को प्रकट करने वाले चिह्नों को **परसर्ग** कहते हैं।

परसर्ग को कारक-चिह्न अथवा विभक्ति भी कहा जाता है। जैसे—"सचिन तेंदुलकर ने क्रिकेट को काफी ऊँचाई पर पहुँचाया।" यहाँ पहुँचाना क्रिया का अन्य पदों सचिन तेन्दुलकर, क्रिकेट, ऊँचाई आदि से संबंध है। वाक्य में ने, को और पर का प्रयोग हुआ है। इन्हें कारक चिन्ह, विभक्ति चिन्ह या परसर्ग कहते हैं। इसी प्रकार-

(i) शिक्षक ने छात्रों को पाठ पढ़ाया।
(ii) यह रमा की पुस्तक है।

इन वाक्यों में 'ने', 'को' तथा 'की' के द्वारा वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दूसरे शब्दों से जोड़ा गया है। इसलिए परसर्ग अर्थात् कारक चिह्न हैं।

कारक

संज्ञा या सर्वनाम का विकार कारक कहलाता है अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप के द्वारा उसका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों (विशेषकर क्रिया) के साथ जाना जाता है, उसे **कारक** कहते हैं।

कारक-भेद–हिन्दी में कारक आठ माने जाते हैं। प्रत्येक कारक के लिए **परसर्ग** अर्थात् विभक्ति-चिह्न प्रयुक्त होते हैं। उनका स्वरूप इस प्रकार है—

कारक	परसर्ग (विभक्ति-चिह्न)
1. कर्त्ता	ने (या कोई भी चिह्न नहीं)
2. कर्म	को (या कोई भी चिह्न नहीं)
3. करण	से, द्वारा, के द्वारा, के साथ
4. सम्प्रदान	के लिए, को
5. अपादान	से (अलग होने अर्थ में)
6. सम्बन्ध	का, की, के, रा, रे, री
7. अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	हे, अरे, ओ, अजी

परसर्ग 'ने' का प्रयोग

परसर्ग 'ने' का प्रयोग कर्त्ताकारक में होता है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे—

(i) मोहन ने मीठा फल खाया।
(ii) मैंने खाना खा लिया था।
(iii) लता दूध पीती है।

इन वाक्यों में 'मोहन ने' तथा 'मैंने' में 'ने' परसर्ग का प्रयोग हुआ है, परन्तु 'लता दूध' में परसर्ग 'ने' लुप्त है, अर्थात् उसका प्रयोग नहीं हुआ है।

इस तरह परसर्ग 'ने' का कभी प्रयोग नहीं होता है, फिर भी उसका कर्त्ताकारक रूप बना रहता है। परसर्ग 'ने' का क्रिया पर क्या प्रभाव रहता है, यह क्रिया के स्वरूप से ज्ञात हो जाता है।

क्रिया

क्रिया की परिभाषा–जिस शब्द से किसी काम का करना अथवा होना पाया जाये, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे–लड़का पढ़ता है। रामू सोता है। बच्चा खेल रहा है। इन वाक्यों में 'पढ़ता है', 'सोता है' और 'खेल रहा है' क्रिया के बोधक हैं और इनसे कार्य होने का बोध हो रहा है।

क्रिया पदबन्ध की रचना दो प्रकार के अंशों से मिलकर होती है। एक अंश तो वह है जो उस क्रिया पदबन्ध को मुख्य अर्थ प्रदान करता है। इसे मुख्य क्रिया कहा जाता है तथा मुख्य क्रिया के अलावा जो भी अंश शेष रह जाता है वह सहायक क्रिया का अंश होता है।

1. लड़कियाँ गाना गा चुकी हैं।
2. वह हँस रहा है।
3. अब आप जा सकते हैं।

मुख्य क्रिया - गा, हँस, जा।

सहायक क्रिया - चुकी हैं, रहा है, सकते हैं।

क्रिया का निर्माण–क्रिया का निर्माण 'धातु' से होता है। अर्थात् क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे–खाना, पीना, पढ़ना, बुझना, टूटना आदि। इन क्रिया शब्दों में क्रमशः खा, पी, पढ़, बुझ, टूट आदि धातुएँ हैं। हिन्दी के सभी क्रिया शब्दों के अन्त में 'ना' प्रत्यय होता है। जैसे–खाना, पढ़ना, लिखना आदि।

क्रिया के भेद–कर्म के आधार पर क्रिया के मुख्य दो भेद होते हैं–

1. सकर्मक क्रिया–जिन क्रियाओं के व्यापार या कार्य का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। इस तरह की क्रिया में कर्म अवश्य रहता है। जैसे–

(i) रमाकान्त पुस्तक पढ़ता है।

(ii) बालक दूध पीता है।

पहले वाक्य में 'पढ़ता है' क्रिया का फल 'पुस्तक' पर पड़ रहा है, इसलिए 'पुस्तक' कर्म है और 'पढ़ता है' सकर्मक क्रिया है। दूसरे वाक्य में 'पीता है' क्रिया का फल 'दूध' पर पड़ रहा है, इसलिए 'दूध' कर्म है और 'पीता है' सकर्मक क्रिया है।

इसी प्रकार देखना, सुनना, खेलना, बुलाना, गाना, आना, जाना, बेचना, लिखना आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं।

2. अकर्मक क्रिया–जिस क्रिया के साथ कर्म प्रयुक्त न हो तथा क्रिया का व्यापार और फल दोनों कर्त्ता पर ही पड़ें, अर्थात् वे कर्त्ता तक ही सीमित रहें और उनसे केवल कार्य का होना ज्ञात हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–

(i) सुरेश सोता है। (ii) घोड़ा दौड़ता है। (iii) वह गिरता है।

इन वाक्यों में 'सोता है', 'दौड़ता है' तथा 'गिरता है' क्रिया का फल कर्म पर नहीं पड़ रहा है, इसलिए ये अकर्मक क्रियाएँ हैं। अर्थात् इनमें कोई कर्म नहीं है। इसी प्रकार लगना, हँसना, रोना, गिरना, टूटना एवं बिछुड़ना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

विशेष–सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को पहचानने का सबसे सरल तरीका यह है कि क्रिया के पहले 'क्या' अथवा 'किसको' लगाकर देखा जाए। यदि उत्तर में कुछ आये, तो क्रिया सकर्मक होगी और यदि उत्तर में कुछ न आये तो क्रिया अकर्मक होगी। जैसे–गीता रोती है। इस वाक्य में 'क्या रोती है' का उत्तर नकारात्मक है। अतः यहाँ 'रोती है' अकर्मक क्रिया है। गीता दूध पीती है। इस वाक्य में 'पीती है' क्रिया है। क्या पीती है ? 'दूध' पीती है। अतः यहाँ 'दूध' कर्म या 'पीती है' सकर्मक क्रिया है।

क्रिया के अन्य भेद–प्रयोग तथा संरचना की दृष्टि से क्रिया के अन्य पाँच भेद माने जाते हैं—

1. संयुक्त क्रिया
2. नामधातु क्रिया
3. प्रेरणार्थक क्रिया
4. पूर्वकालिक क्रिया
5. आज्ञार्थक क्रिया

1. संयुक्त क्रिया–जो क्रिया दो या दो से अधिक भिन्नार्थ क्रियाओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे–मोहन ने दूध पी लिया होगा। इस वाक्य में 'पी लिया होगा' संयुक्त क्रिया है, क्योंकि यह 'पीना', 'लेना' और 'होना' नामक भिन्नार्थक क्रियाओं के योग से बनी है। संयुक्त क्रियाएँ मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया और संयोजी क्रिया के योग से बनती हैं।

2. नामधातु क्रिया–जो क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों में धातु की तरह प्रत्यय लगाकर बनायी जाती हैं, उन्हें नामधातु क्रियाएँ कहते हैं। जैसे–हाथ, दु:ख, झूठ, लात, फिल्म आदि शब्दों से क्रमश: हथियाना, दु:खाना, झुठलाना, लतियाना, फिल्माना आदि नामधातु क्रियाएँ बनती हैं।

(i) संज्ञा शब्दों से निर्मित नामधातु क्रिया–

रंग	रंगना, रंगाना	लाज	लजाना
बात	बतियाना	खरीद	खरीदना
ठग	ठगना	खर्च	खर्चना

(ii) सर्वनाम शब्द से नामधातु क्रिया–

अपना	अपनाना

(iii) विशेषण शब्दों से नामधातु क्रिया–

मोटा	मुटाना	गरम	गरमाना
दुहरा	दुहराना	चिकना	चिकनाना

3. प्रेरणार्थक क्रिया–जहाँ कर्त्ता स्वयं कार्य न करके अपनी प्रेरणा द्वारा अन्य किसी से करवाता है, वहाँ प्रयुक्त क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे–रमेश अपना पत्र पोस्टमैन से पढ़वाता है। इस वाक्य में 'पढ़वाता है' क्रिया यद्यपि पोस्टमैन करता है किन्तु वह ऐसा रमेश की प्रेरणा से करता है, अत: यहाँ 'पढ़वाता' प्रेरणार्थक क्रिया है।

विशेष–प्रेरणार्थक क्रिया स्वयं के द्वारा तथा दूसरों को प्रेरणा देने से दो प्रकार होती है। यथा—

	प्रेरणार्थक एक	**प्रेरणार्थक दो**
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना
जागना	जगाना	जगवाना

4. पूर्वकालिक क्रिया–जब एक क्रिया के समाप्त होने के बाद फिर एक दूसरी क्रिया का होना पाया जाये तथा जिसका काल दूसरी क्रिया से प्रकट हो उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे—मैं पढ़कर उठा हूँ।

इस वाक्य में पढ़ने के बाद उठने की क्रिया हुई है। अत: 'पढ़कर' पूर्वकालिक क्रिया है। सामान्यत: पूर्वकालिक क्रिया की धातु के अन्त में 'के', 'कर' या 'करके' लगा दिया जाता है। इसी का एक भेद **तात्कालिक क्रिया** है। इसमें एक क्रिया की समाप्ति के बाद दूसरी पूर्ण क्रिया प्रयुक्त होती है। जैसे–शेर के आते ही वह बेहोश हो गया। इसमें 'आते ही' तात्कालिक क्रिया है।

5. आज्ञार्थक क्रिया–जिस क्रिया का प्रयोग आज्ञा, अनुमति और प्रार्थना आदि के लिए किया जाता है, वह आज्ञार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे–

(i) तुम सब घर चले जाओ। (ii) सारे देशवासी, राष्ट्रभाषा का सम्मान करें।

(iii) आप खाना खाइए। (iv) जरा चुप बैठो।

इन वाक्यों में आज्ञा या निवेदन का भाव व्यक्त हुआ है, इसलिए ये आज्ञार्थक क्रियाएँ हैं।

क्रिया के काल

जिस समय जो क्रिया सम्पन्न होती है, वही उसका 'काल' कहलाता है। इस प्रकार क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय ज्ञात होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद–मुख्यत: क्रिया के तीन काल माने जाते हैं—

1. भूतकाल 2. वर्तमानकाल तथा 3. भविष्यत्काल।

1. भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। इसके छ: भेद होते हैं—

(i) सामान्य भूत – मैंने पत्र लिखा।

(ii) आसन्न भूत - रमेश सुबह आया है।
(iii) पूर्ण भूत - रमेश कल आया था।
(iv) अपूर्ण भूत - सुरेश पत्र लिख रहा था।
(v) सन्दिग्ध भूत - मोहन आया होगा।
(vi) हेतुहेतुमद्भूत - यदि लता आती तो मैं भी उसके साथ जाता।

2. वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से उसके व्यापार का वर्तमान समय में होना ज्ञात हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। इसके चार भेद होते हैं—

(i) सामान्य वर्तमान - वह पुस्तक पढ़ता है।
(ii) अपूर्ण वर्तमान - कृष्णा लेख लिख रही है।
(iii) सन्दिग्ध वर्तमान - कृष्णा लेख लिख रही होगी।
(iv) सम्भाव्य वर्तमान - कृष्णा शायद लिख रही हो।

3. भविष्यत् काल—क्रिया के जिस रूप से उसका व्यापार आने वाले समय में ज्ञात हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं—

(i) सामान्य भविष्यत् - कृष्णा खाना पकायेगी।
(ii) सम्भाव्य भविष्यत् - वह कल विद्यालय में पढ़े।

परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

परसर्ग 'ने' सदा कर्त्ता के साथ ही आता है। इसके प्रयोग से क्रिया के रूप में अनेक परिवर्तन आ जाते हैं। इसके कुछ नियम इस प्रकार हैं—

(1) कर्त्ता की क्रिया 'ने' के प्रयोग के कारण सदा भूतकाल की होती है। जैसे—
(i) राम ने रावण का संहार किया।
(ii) राम ने रावण का संहार किया था।
(iii) राम ने रावण का संहार किया होगा।

(2) कर्त्ता के साथ 'ने' आने से क्रिया सदा सकर्मक होती है। जैसे—
(i) बालक ने दूध पिया।
(ii) गाँधीजी ने अन्याय का विरोध किया।
(iii) रमाकान्त ने पत्र पढ़ा।

(3) परसर्ग 'ने' का प्रयोग होने पर क्रिया सदा कर्तृवाच्य में होती है। जैसे—
(i) सुधा से गिलास टूट गया सुधा ने गिलास तोड़ दिया।
(ii) पाकिस्तान से भारत जीत गया। पाकिस्तान को भारत ने जीत लिया।

(4) अकर्मक क्रिया होने पर परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं होता है, अर्थात् 'ने' के प्रयोग से क्रिया सकर्मक ही प्रयुक्त होती है। जैसे—
(i) गुरुजी ने आगमन किया — गुरुजी आये।
(ii) भिखारी ने आर्त-प्रार्थना की — भिखारी आर्त-प्रार्थना करने लगा।

(5) परसर्ग 'ने' के कारण वाक्य में 'कर चुका', 'कर लिया' आदि का प्रयोग परिवर्तित हो जाता है। जैसे—
(i) मोहन खाना खा चुका है। मोहन ने खाना खा लिया है।
(ii) अतिवृष्टि खेती को नष्ट कर चुकी। अतिवृष्टि ने खेती को नष्ट कर दिया।
(iii) धोबी कपड़ा धो चुका। धोबी ने कपड़े धो लिये।
(iv) रमेश विश्राम कर चुका। रमेश ने विश्राम कर लिया।

(6) परसर्ग 'ने' के प्रयोग या अप्रयोग से वर्तमान काल के क्रिया-रूपों में अन्तर आ जाता है। वर्तमानकाल व भविष्यकाल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ 'ने' नहीं लगता है। यथा—

'ने' का प्रयोग	**'ने' का अप्रयोग**
(i) रामू ने खाना पका लिया है।	रामू खाना पका चुका।

(ii) हाथी ने पेड़ तोड़ दिया।	हाथी पेड़ को तोड़ चुका।
(iii) पाश्चात्य सभ्यता ने हमें पतित कर दिया है।	पाश्चात्य सभ्यता हमें पतित कर रही है।

(7) परसर्ग 'ने' के प्रयोग से भविष्यत्कालीन क्रिया-रूप बदल जाते हैं। जैसे—

(i) रमा खाना खा गई होगी।	रमा ने खाना खा लिया होगा।
(ii) दिनेश किताब रख गया होगा।	दिनेश ने किताब रख दी होगी।
(iii) रमेश धोती पहने हुए होगा।	रमेश ने धोती पहनी हुई होगी।

(8) परसर्ग 'ने' के प्रयोग से अपूर्णतावाची क्रियाएँ पूर्णतावाची बन जाती हैं। जैसे—

(i) वह बच्चों से मार-पीट करता रहा।	उसने बच्चों से मारपीट की थी।
(ii) वह कूड़ा सड़क पर फेंकता रहा।	उसने कूड़ा सड़क पर फेंका।
(iii) मैं वह प्राकृतिक दृश्य देखता रहा।	मैंने वह प्राकृतिक दृश्य देखा।

परसर्ग 'ने' के कुछ अन्य उदाहरण—

ने-रहित कर्त्ता पद	**ने-सहित कर्त्ता-पद**
1. मैं पढ़ने का निश्चय करता हूँ।	मैंने पढ़ने का निश्चय किया है।
2. प्रतिभा कविता लिखती थी।	प्रतिभा ने कविता लिखी।
3. बालक कहानियाँ सुनता रहा।	बालक ने कहानियाँ सुनीं।
4. माँ पुत्र को दूध पिला चुकी है।	माँ ने पुत्र को दूध पिला लिया है।
5. वह सारे अंगूर खा चुका होगा।	उसने सारे अंगूर खा लिए होंगे।
6. वीर कभी हार नहीं मानते।	वीरों ने कभी हार नहीं मानी।
7. छात्र प्रतिदिन व्यायाम करते थे।	छात्रों ने प्रतिदिन व्यायाम किया।
8. कवि कविता लिखता रहा।	कवि ने कविता लिखी।
9. कबीर उनकी आलोचना करते रहे।	कबीर ने उनकी आलोचना की।
10. मैं उत्सव में जाने का निश्चय कर चुका हूँ।	मैंने उत्सव में जाने का निश्चय कर लिया है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. परसर्ग 'ने' के कारण क्रिया सदा..........में होती है—
   (क) सामान्य वर्तमान काल (ख) भूतकाल
   (ग) सन्दिग्ध वर्तमान काल (घ) भविष्यत्काल
2. परसर्ग 'ने' से युक्त क्रिया में होता है—
   (क) पूर्णता का भाव (ख) निरन्तरता का भाव
   (ग) अपूर्णता का भाव (घ) सम्भाव्यता का भाव
3. निम्नलिखित वाक्य में 'ने' परसर्ग के प्रयोग में जो परिवर्तन आया है, उसके परिवर्तित रूप का सही विकल्प बताइए—
   'मोहन खाना खा चुका है।'
   (क) मोहन ने खाना खाया। (ख) मोहन ने खाना खा लिया था।
   (ग) मोहन ने खाने को खा लिया। (घ) मोहन ने खाना खा लिया है।
4. 'सुधा से गिलास टूट गया।' इस वाक्य में परसर्ग 'ने' का प्रयोग करने से क्या परिवर्तन आयेगा?
   (क) सुधा से गिलास को तोड़ा गया। (ख) सुधा ने गिलास तोड़ दिया।
   (ग) सुधा द्वारा गिलास तोड़ा गया। (घ) सुधा ने गिलास को तोड़ा।
5. 'रमेश खाना खा चुका।' इस वाक्य में 'ने' परसर्ग का प्रयोग करने पर बनने वाले विकल्प को चुनिये—

(क) रमेश से खाना खाया गया। (ख) रमेश ने खाना खाया होगा।
(ग) रमेश ने खाना खा लिया। (घ) रमेश ने खाने को खाया।

6. परसर्ग 'ने' का अशुद्ध प्रयोग किसमें हुआ है?
(क) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन किया होगा। (ख) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन किया था।
(ग) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन किया। (घ) गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन करा था।

7. परसर्ग 'ने' के योग से शुद्ध वाक्य-रचना है—
(क) मैं जाने का निश्चय किया। (ख) मैंने खाने का निश्चय किया।
(ग) पिता ने पुत्र से पत्र लिख दिया। (घ) दूधिया ने दूध गिराया होगा।

8. 'उस जगह एक सभा होने जा रही है।' रेखांकित पद में कौन-सा परसर्ग है—
(क) करण (ख) अधिकरण (ग) सम्प्रदान (घ) अपादान

9. 'पर' किस कारक का परसर्ग है?
(क) सम्प्रदान (ख) अपादान (ग) सम्बन्ध (घ) अधिकरण

10. माता-पिता अपने बच्चों के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। रेखांकित शब्द क्या है?
(क) विशेषण (ख) परसर्ग (ग) सर्वनाम (घ) संज्ञा

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग) 6. (घ) 7. (ख) 8. (ख) 9. (घ) 10. (ख)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. परसर्ग .... कहते हैं। (कारक चिन्हों को/प्रत्यय को)
2. परसर्ग 'ने' के कारण क्रिया सदा .... में होती है। (भूतकाल/वर्तमान काल)
3. 'मेरे हाथ में लेखनी है' वाक्य में .... परसर्ग है। (अपादान/अधिकरण)
4. 'से', 'के द्वारा' .... कारक का परसर्ग है? (करण/सम्प्रदान)
5. जादूगर .... अपने जीवन में कई बड़े-बड़े करतब दिखाए। (के/ने)
6. काल के आधार पर क्रिया के .... भेद होते हैं। (दो/तीन)
7. क्रिया के जिस रूप के द्वारा जारी समय में किसी कार्य के होने का बोध हो .... कहलाती है। (भूतकालिक क्रिया/वर्तमानकालिक क्रिया)
8. हिन्दी में कारक के .... भेद होते हैं। (पाँच/आठ)
9. लोगों .... चोर को मारा। (ने/से)
10. वाक्य में जिस शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है उसे .... कहते हैं। (कर्मकारक/कर्ताकारक)
11. तुमने क्या ....। (किया/कर डाला)
12. माँ ने पुत्र को दूध ....। (पिला चुकी है/पिला दिया है)
13. परसर्ग 'ने' के प्रयोग से अपूर्णतावाची क्रियाएँ .... बन जाती हैं। (पूर्णतावाची/अकर्मक)

उत्तर–1. कारक चिन्हों को, 2. भूतकाल, 3. अधिकरण, 4. करण, 5. ने, 6. तीन, 7. वर्तमानकालिक क्रिया, 8. आठ, 9. ने, 10. कर्म कारक, 11. किया, 12. पिला दिया है, 13. पूर्णतावाची।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. वाक्य में 'ने' परसर्ग किसके साथ आता है?
उत्तर–'ने' परसर्ग हमेशा कर्त्ता के साथ आता है।

प्रश्न 2. 'ने' परसर्ग के प्रयोग से क्रिया किस काल में होती है?
उत्तर–'ने' परसर्ग के प्रयोग से क्रिया सदैव भूतकाल में ही होती है।

प्रश्न 3. कौनसी क्रिया के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता?
उत्तर– अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

प्रश्न 4. कर्ता कारक ('ने' परसर्ग) किसे कहते हैं?
उत्तर–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं।

प्रश्न 5. कर्ता के साथ 'ने' आने से क्रिया कौनसी होती है?
उत्तर–कर्ता के साथ 'ने' आने से क्रिया सदा सकर्मक होती है।

प्रश्न 6. 'राम ने रोटी खाई' में कौन-सा कारक है?

उत्तर–कर्ता कारक।

प्रश्न 7. क्रिया किसे कहते हैं?

उत्तर–जिस शब्द अथवा शब्द-समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

प्रश्न 8. अकर्मक क्रिया क्या होती है?

उत्तर–जिस क्रिया में कर्ता के काम करने का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़े, वह अकर्मक क्रिया होती है।

प्रश्न 9. 'गाय मीठा दूध देती है।' वाक्य में क्रिया कौनसे काल की है?

उत्तर–सामान्य वर्तमान काल।

प्रश्न 10. 'पण्डित जी ने फूल और प्रसाद बाँटे' में कौन-सी क्रिया है?

उत्तर–सकर्मक।

प्रश्न 11. रचना की दृष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं?

उत्तर–रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं— 1. सकर्मक क्रिया, 2. अकर्मक क्रिया।

प्रश्न 12. 'कारक' का क्या अर्थ होता है?

उत्तर–कारक का अर्थ - करने वाला।

प्रश्न 13. 'कारक' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला चिन्ह क्या कहलाता है?

उत्तर–विभक्ति।

प्रश्न 14. व्याकरण में कर्ता कारक किसे कहते हैं?

उत्तर–क्रिया करने वाले को कर्ता कारक कहते हैं।

प्रश्न 15. कर्ता कारक का चिन्ह होता है?

उत्तर–कर्ता कारक का 'ने' चिन्ह होता है।

प्रश्न 16. 'विभक्ति' को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर–'विभक्ति' को परसर्ग के नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्न 17. 'राधा ने नृत्य किया' इस वाक्य में परसर्ग है?

उत्तर–इस वाक्य में 'ने' परसर्ग है।

प्रश्न 18. 'अध्यापिका बच्चों को शिमला घुमाने ले गई।' इस वाक्य में 'ने' परसर्ग का प्रयोग कीजिए।

उत्तर–'अध्यापिका ने बच्चों को शिमला घुमाया।'

प्रश्न 19. 'दर्ज़िन चिड़िया सुन्दर घोंसला बनाती है।' इस वाक्य में 'ने' परसर्ग का प्रयोग कीजिए।

उत्तर–दर्ज़िन चिड़िया ने सुन्दर घोंसला बनाया।

प्रश्न 20. 'बच्चे चुपचाप अपना काम कर रहे हैं।' 'ने' परसर्ग का प्रयोग करो।

उत्तर–बच्चों ने चुपचाप अपना काम किया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. निम्नलिखित परसर्गों का उचित और सार्थक प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए-

के लिए, पर, से, को

उत्तर– के लिए- नेताजी ने बाढ़पीड़ितों के लिए भोजन भिजवाया।

पर - बिल्ली चूहे पर झपटी।

से - छोटा बच्चा साँप से डर गया।

को - लकड़हारा पेड़ को काट रहा है।

प्रश्न 2. प्रेरणार्थक क्रिया को समझाइये।

उत्तर–वह क्रिया जिसके द्वारा यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता हो, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है, जैसे-शिक्षक ने मुझसे पाठ पढ़वाया। इसमें शिक्षक की प्रेरणा से पाठ पढ़ा है।

प्रश्न 3. सकर्मक क्रिया को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—वह क्रिया जिसके साथ कर्म होता हो या कर्म होने की सम्भावना होती हो तथा जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- 'राम आम खाता है।' इसमें 'खाना' क्रिया के साथ 'आम' कर्म है। 'मोहन पुस्तक पढ़ता है।' यहाँ 'पढ़ना' क्रिया के साथ 'पुस्तक' कर्म है।

प्रश्न 4. पूर्वकालिक क्रिया क्या होती है?

उत्तर—वह क्रिया जिसके द्वारा कर्ता एक क्रिया को समाप्त कर दूसरी क्रिया को प्रारम्भ करता है। तब पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहा जाता है। जैसे- श्याम भोजन करके सो गया। यहाँ 'भोजन करके' पूर्वकालिक क्रिया है, जिसे करने के बाद दूसरी क्रिया 'सो जाना' सम्पन्न की जाती है।

प्रश्न 5. कारक के कितने भेद होते हैं?

उत्तर—कारक के आठ भेद होते हैं-

1. कर्ता कारक	2. कर्म कारक
3. करण कारक	4. सम्प्रदान कारक
5. अपादान कारक	6. सम्बन्ध कारक
7. अधिकरण कारक	8. सम्बोधन कारक

प्रश्न 6. नीचे दिये वाक्यों में कौन-सी क्रिया है? सकर्मक या अकर्मक, लिखिए-

(क) उन्होंने वही हाथ पकड़ लिया। ....

(ख) फिर चोरों-सा जीवन काटने लगा। ....

(ग) शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। ....

(घ) मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। ....

(ङ) समय की पाबन्दी पर निबंध लिखो। ....

उत्तर—(क) सकर्मक, (ख) अकर्मक, (ग) सकर्मक, (घ) सकर्मक, (ङ) सकर्मक।

प्रश्न 7. अकर्मक क्रिया को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया द्वारा होने वाले व्यापार का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। अकर्मक का अर्थ कर्म रहित होता है। अकर्मक क्रिया में कर्म का प्रयोग किए बिना ही वाक्य का पूर्ण भाव स्पष्ट हो जाता है। जैसे- 'लड़का चलता है।' इस वाक्य में क्रिया का व्यापार और उसका फल वाक्य के कर्ता 'लड़का' पर पड़ रहा है।

प्रश्न 8. परसर्ग 'ने' का प्रयोग करके पाँच वाक्य लिखिए।

उत्तर— 1. राधा ने भोजन कर लिया होगा।
2. मोहन ने कविताएँ सुनीं।
3. गीता ने मटका फोड़ दिया।
4. उसने सभी बेर खा लिए होंगे।
5. गाँधी जी ने अन्याय का विरोध किया।

प्रश्न 9. सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में क्या अन्तर है?

उत्तर—1. सकर्मक क्रिया में कर्ता, क्रिया और कर्म तीनों उपस्थित होते हैं, जबकि अकर्मक क्रिया में कर्ता और क्रिया तो होते हैं, लेकिन कर्म नहीं होता है।

2. सकर्मक क्रिया में कर्ता द्वारा किए गए कार्य से कोई दूसरी चीज प्रभावित होती है, जबकि अकर्मक क्रिया में कर्ता द्वारा किए गए कार्य से किसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रश्न 10. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता के साथ परसर्ग 'ने' लगाकर वाक्य पुन: लिखिए—

(i) उससे गेंद खो गई। (ii) कोयल गाना गा चुकी है।

(iii) उससे यह पाप हो गया। (iv) राम वन को प्रस्थान कर गये।

(v) आखिरकार भारत मैच जीत गया।

(vi) राम श्याम को मारता था।

उत्तर—(i) उसने गेंद खो दी। (ii) कोयल ने गाना गाया। (iii) उसने यह पाप किया। (iv) राम ने वन को प्रस्थान किया। (v) आखिरकार भारत ने मैच जीत लिया। (vi) राम ने श्याम को मारा था।

प्रश्न 11. निम्नलिखित वाक्यों में से परसर्ग 'ने' को हटाकर वाक्यों की पुनः रचना कीजिए—

(i) महिला ने उन्हें राजी कर लिया था।

(ii) उन्होंने एक घण्टे भाषण दिया।

(iii) मोहन ने केले खाये।

(iv) मैंने दसवीं कक्षा में प्रवेश लिया।

(v) सैनिक ने अन्त तक हिम्मत नहीं हारी।

उत्तर–(i) महिला उन्हें राजी कर चुकी थी।

(ii) वे एक घण्टे बोलते रहे/भाषण देते रहे।

(iii) मोहन केले खाता है।

(iv) मैं दसवीं कक्षा में प्रविष्ट हुआ।

(v) सैनिक अन्त तक हिम्मत नहीं हारा।

4. वाक्य-रचना

(सरल और संयुक्त वाक्य)

वाक्य विभिन्न पदों या शब्दों का समुच्चय होता है जिसमें सभी पद अपना-अपना पृथक् अर्थ रखते हुये भी सामूहिक होकर एक मंतव्य प्रकट करते हैं। वाक्य व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से सबसे बड़ी इकाई और भाषा व्यवस्था की दृष्टि से सबसे छोटी इकाई है।

वाक्य की परिभाषा–पूर्ण अर्थ प्रकट करने वाले एवं विशेष क्रम से संयोजित सार्थक शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं। वास्तव में बोलने या लिखने का पूरा अभिप्राय जिस शब्द-समूह से प्रकट होता है, वह वाक्य कहलाता है। जैसे—

(1) रमा प्रतिदिन विद्यालय जाती है।

(2) वर्तमान में महँगाई उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

वाक्य के अंग

प्रत्येक वाक्य की रचना में शब्दों या पदों को उचित क्रम से रखने पर ध्यान दिया जाता है। वाक्य में पदों का क्रम किस तरह हो, इसके लिए हिन्दी में वाक्य के दो अंगों का ज्ञान आवश्यक है। वे दोनों अंग हैं—(1) उद्देश्य और (2) विधेय।

1. उद्देश्य–वाक्य में जिस व्यक्ति या वस्तु के संबंध में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे-राम पुस्तक पढ़ रहा है। इस वाक्य में 'राम' के विषय में 'पुस्तक पढ़ रहा है' बात कही गयी है। अतः यहाँ राम उद्देश्य है।

उद्देश्य के उदाहरण- 1. राम ने रावण को मारा।
2. रवि दौड़ रहा है।
3. आत्मा अमर है।

उपरोक्त तीनों वाक्यों में 'राम ने', 'रवि' और 'आत्मा' उद्देश्य हैं, क्योंकि वाक्यों में इनके विषय में कुछ न कुछ कहा गया है।

वाक्य में उद्देश्य प्रायः संज्ञा या संज्ञा की तरह प्रयुक्त शब्द होता है, अर्थात् वाक्य में कर्त्ता ही उद्देश्य होता है, कभी-कभी केवल विशेषण का भी प्रयोग होता है अथवा कर्त्ता के साथ विशेषण भी रहता है, उस दशा में वे दोनों उद्देश्य ही माने जाते हैं। वाक्य में उद्देश्य इन रूपों में आ सकते हैं—

(i) **संज्ञा—रमेश** पढ़ता है।

(ii) **सर्वनाम—वह** पढ़ रहा है।

(iii) **विशेषण—घमण्डी** का आदर नहीं होता है।

(iv) **वाक्यांश—आपस में झगड़ना** अच्छा नहीं रहता।

(v) **क्रियार्थक—घूमना** स्वास्थ्य के लिए हितकर रहता है।

उद्देश्य का विस्तार–वाक्य में कर्त्ता के साथ जो शब्द उसके अंग रूप में अथवा विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे उसके पूरक अथवा उद्देश्य का विस्तार कहलाते हैं। जैसे—

(i) **दुष्ट व्यक्ति** सदा अहित सोचता है।

(ii) **पढ़ते-पढ़ते बालक** सो गया था।

इन वाक्यों में 'दुष्ट' एवं 'पढ़ते-पढ़ते' शब्द उद्देश्य के विस्तार रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

2. विधेय–उद्देश्य (कर्त्ता) के संबंध में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त क्रिया या क्रिया का पूरक पद 'विधेय' होता है। वाक्य में विधेय अंश को ही मुख्य माना जाता है। जैसे–उद्देश्य के उदाहरण वाक्य में 'पुस्तक पढ़ रहा है।' वाक्यांश विधेय है, क्योंकि उद्देश्य 'राम' के सम्बन्ध में यह बात कही गई है।

विधेय का विस्तार–क्रिया के साथ उसकी विशेषता बताने वाले पदों को विधेय का 'पूरक' या 'विस्तार' कहते हैं। विधेय अर्थात् क्रिया-पद के 'पूरक' ये शब्द हो सकते हैं–

(i) क्रियाविशेषण।

(ii) क्रियाविशेषण की भाँति प्रयुक्त विशेषण।

(iii) संज्ञा या सर्वनाम के सहित सम्बन्ध सूचक अव्यय।

(iv) अधिकरण, करण और अपादान कारक के चिह्न।

(v) पूर्वकालिक आदि कृदन्त पद।

वाक्य के तत्त्व या गुण

किसी भी वाक्य में सार्थक शब्दों का विन्यास रहता है। इसके लिए उन पदों या शब्दों में 1. आकांक्षा, 2. योग्यता और 3. आसत्ति की आवश्यकता होती है। हिन्दी वाक्य-रचना में तीन तत्त्व और माने जाते हैं। वे हैं– 1. सार्थकता, 2. अन्वय और 3. पदक्रम। इस प्रकार ये सभी छः तत्त्व वाक्य-रचना के परिचायक होते हैं।

1. आकांक्षा–किसी वाक्य के पूर्ण भाव को समझने के लिए किसी पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने की इच्छा 'आकांक्षा' कहलाती है। जहाँ वाक्य में आकांक्षा की पूर्ति हो, वहाँ वाक्य-रचना ठीक समझनी चाहिए। जैसे–

(1) रमेश, महेश, लता, कविता थी।

(2) सो रहा था।

इन दोनों वाक्यों में अर्थ की पूर्ति नहीं हो रही है, क्योंकि इन वाक्यों में अन्य पदों को सुनने की आकांक्षा पूरी नहीं हो रही है। इसलिए ये दोनों वाक्य दोषपूर्ण हैं। प्रथम वाक्य में 'पढ़ रही थी' या 'सो रही थी' आदि शब्दों की योजना करने पर अर्थ की आकांक्षा पूर्ण हो जाती है। द्वितीय वाक्य में संज्ञा 'बालक' या सर्वनाम 'वह' शब्द का प्रयोग करने से वाक्य के भाव की पूर्ति हो जाती है।

2. योग्यता–योग्यता का तात्पर्य शक्ति अथवा सामर्थ्य से है। वाक्य में प्रयुक्त सभी शब्दों में अन्वय एवं परस्पर अर्थगत सम्बन्ध का सुसंगत विन्यास ही योग्यता है। यदि वाक्य के व्यक्त अर्थ में असंगति रहती है, तो वाक्य अपूर्ण ही कहा जाता है। जैसे–

(1) आग से सींचता है। (2) बालक पानी खाता है।

यहाँ प्रथम वाक्य में 'आग से सींचने का कार्य' नहीं हो सकता और इनका अन्वय भी नहीं बैठ रहा है। इसलिए यह वाक्य-रचना अनुचित है। 'जल से सींचता है'–यह वाक्य-रचना इसके स्थान पर उचित है। इसी प्रकार 'पानी खाता है' की अपेक्षा 'पानी पीता है' वाक्य-रचना संगत लगती है। इस तरह वाक्य में पदों का प्रयोग अर्थ की संगति के अनुरूप होना ही योग्यता तत्त्व माना जाता है।

3. आसत्ति–वाक्य के शब्दों को बोलने अथवा लिखते समय पदों में आसत्ति (निकटता) आवश्यक है। यदि एक शब्द प्रातःकाल कहा जाये और उससे संबंधित अन्य शब्द एक-दो दिन बाद कहे जायें, तो उन शब्दों में निकटता नहीं रहने से वाक्य-रचना संगत नहीं हो सकती है। इसी प्रकार पुस्तक के एक पृष्ठ पर 'महात्मा गांधी भारत के' लिखकर फिर पचास पृष्ठों के बाद 'राष्ट्रपिता थे' यह लिखा जाये तो निकटता के अभाव में इन पदों को सार्थक होते हुए भी वाक्य नहीं माना जायेगा। इस प्रकार पढ़ने या सुनने में पद-बन्धों के निरन्तर प्रयोग से उनके मध्य बुद्धि का विच्छेद नहीं होने पर ही वे वाक्य हो सकते हैं।

4. सार्थकता–वाक्य में हमेशा सार्थक शब्दों का ही महत्त्व रहता है। निरर्थक शब्दों की वाक्य-रचना में कोई उपयोगिता नहीं मानी जाती है। ऐसे शब्दों से अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती है। जैसे—

(1) मानव इस समस्त सृष्टि का श्रेष्ठ प्राणी है।

(2) भारत का अतीत गौरवमय था।

5. अन्वय–हिन्दी में वाक्य-रचना के अन्तर्गत कर्त्ता, कर्म, संबंध, क्रिया आदि का क्रमानुसार प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार कारक और क्रिया का प्रयोग होता है। इस तरह वाक्य में पदों को उचित क्रम से रखने को अन्वय कहते हैं। जैसे—

(1) राम प्रतिदिन प्रात: नौ बजे अपने काम पर जाता है।

(2) वह निरन्तर परिश्रम करता रहता है।

इन दोनों वाक्यों में पदों का क्रम अन्वय के अनुरूप है। इस कारण अर्थ की प्रतीति में भ्रम नहीं हो रहा है।

6. पदक्रम–वाक्य में आये पदों का व्याकरण के अनुसार निश्चित क्रम होना चाहिये। शब्दों को उनके अर्थ और कारक आदि के संबंध को ध्यान में रखकर यथास्थान प्रयुक्त करने से वाक्य-रचना शुद्ध हो जाती है। इस तरह की रचना को पद-क्रम से युक्त कहते हैं। उचित पद-क्रम न रहने से वाक्यार्थ अस्पष्ट रहता है। जैसे—

(1) नेताजी को एक फूल की माला पहनाई। (2) वह जाता है जयपुर शहर को।

इन दोनों वाक्यों में पदक्रम सही नहीं है। प्रथम वाक्य में 'एक' शब्द का प्रयोग 'माला' के साथ होना चाहिए। द्वितीय वाक्य में 'जाता है' क्रिया का प्रयोग अन्त में होना चाहिए।

पदक्रम के नियम—(1) हिन्दी में वाक्य-रचना करते समय सर्वप्रथम कर्त्ता, फिर कर्म तथा अन्त में क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

रमेश ने फल खाये।

शिवाजी ने अनेक युद्ध लड़े।

(2) सम्बोधन और भावबोधक पद कर्त्ता से पहले प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

अरे सुरेश ! तुम कहाँ गये थे?

अहा! कितना सुन्दर दृश्य है।

(3) कर्त्ता का विस्तार सदा कर्त्ता से पहले प्रयुक्त होता है। यथा—

दशरथ-पुत्र राम ने धनुष उठाया।

(4) द्विकर्मक क्रिया में गौण कर्म (या सम्प्रदान) मुख्य कर्म से पहले रखा जाता है। यथा—

पिता ने **पुत्र को** पर्याप्त **धन** दिया।

(5) यदि वाक्य में कई कारक हों तो क्रम—अधिकरण-अपादान-सम्प्रदान-करण कारक होता है।

(6) प्रश्नवाचक वाक्य में क्या वाक्य के प्रारम्भ में और आग्रहात्मक 'न' वाक्य के अन्त में आता है। यथा—

क्या आप जयपुर जा रहे हैं?

पहले आप भोजन कीजिए **न**।

(7) पदक्रम के लिए कर्त्ता-क्रिया एवं कर्म-क्रिया के अन्वय के साथ ही निरपेक्ष अन्वय का ध्यान रखना पड़ता है।

(8) पदक्रम में सर्वनाम संज्ञा का अन्वय, विशेष्य-विशेषण का अन्वय तथा सम्बन्ध-सम्बन्धी का अन्वय लिंग, वचन एवं कारक के अनुसार प्रयुक्त रहता है।

वाक्य के भेद

क्रिया, अर्थ और रचना की दृष्टि से वाक्यों के भिन्न-भिन्न भेद और उपभेद माने जाते हैं। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

क्रिया की दृष्टि से वाक्य के भेद

क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। जैसे—

कर्तृवाच्य–रमेश पुस्तक पढ़ता है।

कर्मवाच्य–रमेश से पुस्तक पढ़ी जाती है।

भाववाच्य–मोहन से सोया जाता है।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद

जैसा पूर्व में बताया गया है कि आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति, अन्वय, पदक्रम आदि के द्वारा ही वाक्य का अर्थ पूर्णतया स्पष्ट होता है। इस दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—

(1) विधानार्थक या विधि वाक्य–जिसमें किसी बात का होना पाया जाता है, उसे विधि वाक्य कहते हैं। यथा–मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

(2) निषेधार्थक वाक्य–जिस वाक्य द्वारा किसी का अभाव या निषेध सूचित होता हो, वह निषेधार्थक वाक्य कहलाता है। यथा–मैं पुस्तक नहीं पढ़ता हूँ।

(3) आज्ञार्थक वाक्य–जिस वाक्य से आज्ञा, विनती या उपदेश सूचित होता हो, वह आज्ञार्थक वाक्य होता है। यथा–तुम हमेशा व्यायाम करो।

(4) प्रश्नार्थक वाक्य–प्रश्न का बोध कराने वाला वाक्य प्रश्नार्थक वाक्य होता है। जैसे–तुम घर कब जा रहे हो ?

(5) विस्मयादिबोधक वाक्य–जिससे आश्चर्य, विस्मय, सन्देह आदि भाव प्रकट होते हैं, वह विस्मयादिबोधक वाक्य होता है। यथा–हाय ! ओलों की मार से फसल बरबाद हो गई !

(6) इच्छाबोधक वाक्य–जिस वाक्य से इच्छा या आशीर्वाद सूचित हो, वह इच्छा-बोधक वाक्य कहलाता है। यथा–तुम्हारा भला हो। सब लोग सुखी रहें।

(7) सन्देहसूचक वाक्य–जिस वाक्य से सन्देह या सम्भावना प्रकट हो वह सन्देहसूचक वाक्य होता है। यथा–सम्भवत: आज आँधी आयेगी।

(8) संकेतार्थक वाक्य–जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो वह संकेतार्थक वाक्य होता है। यथा–यदि तुम आते तो मैं भी तुम्हारे साथ चलता।

अर्थ-परिवर्तन के लिए विधि वाक्य को निषेध, आज्ञा या प्रश्नार्थ में प्रयुक्त किया जा सकता है। इसी प्रकार इन वाक्यों का परस्पर परिवर्तन हो सकता है। यथा—

विधि वाक्य	**आज्ञार्थक वाक्य**
वह रोज पढ़ता है।	वह रोज पढ़ा करे।
रमा खेलने जाती है।	रमा! तुम खेलने जाया करो।

रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं—

(1) सरल या साधारण वाक्य, (2) संयुक्त वाक्य और (3) मिश्र वाक्य। वाक्य के तीनों भेदों तथा इनसे सम्बन्धित उपवाक्यों का परिचयात्मक विवेचन यहाँ दिया जा रहा है—

1. सरल या साधारण वाक्य–

जिस वाक्य में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। यदि किसी वाक्य में एक से अधिक कर्ता हों तथा उनकी क्रिया भी समान हो तो उस वाक्य को साधारण या सरल वाक्य ही माना जाता है। जैसे—

(1) राहुल सोता है।

(2) वह पुस्तक पढ़ता है।

(3) महेश, रमेश व सुरेश पढ़ एवं लिख रहे हैं।

इन वाक्यों में 'राहुल' और 'वह' उद्देश्य हैं तथा 'सोता है' और 'पढ़ता है' विधेय अंश हैं।

2. संयुक्त वाक्य–

जिस वाक्य में एक से अधिक साधारण या मिश्र वाक्य हों और वे किसी संयोजक अव्यय (किन्तु, परन्तु, बल्कि, और, अथवा, तथा आदि) द्वारा जुड़े हों, तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं। संयुक्त वाक्य में प्रयुक्त सभी उपवाक्य स्वतन्त्र होते हैं, अर्थात् किसी भी उपवाक्य को हटा देने से शेष वाक्यों के अर्थ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे—

(1) राम पढ़ रहा था परन्तु रमेश सो रहा था।

(2) शीला खेलने गई और रीता नहीं गई।

इन दोनों वाक्यों में 'परन्तु' व 'और' अव्यय पदों के द्वारा दोनों साधारण वाक्यों को जोड़ा गया है।

3. मिश्र वाक्य–

जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और उस मुख्य उपवाक्य के आश्रित एक अथवा एक से अधिक उपवाक्य होते हैं, वह मिश्रित वाक्य कहलाता है। जैसे—

रेखा उमाकान्त की बड़ी बहिन है, जो विवेक विहार में रहती है।

इस वाक्य में 'रेखा उमाकान्त की बड़ी बहिन है'-प्रधान उपवाक्य है। 'जो विवेक विहार में रहती है'-आश्रित उपवाक्य है।

उपवाक्य

एक वाक्य में पूर्ण विचार या अर्थ को व्यक्त करने के लिए तीन तरह के उपवाक्य प्रयुक्त होते हैं। वे इस प्रकार हैं-

(1) स्वतन्त्र उपवाक्य-किसी वाक्य में जो उपवाक्य किसी अन्य वाक्य के आश्रित नहीं होता है और अन्य उपवाक्य के समान अधिकार रखता है, उसे स्वतंत्र उपवाक्य कहते हैं।

(2) प्रधान उपवाक्य-मिश्र वाक्य में दो या दो से अधिक उपवाक्य होते हैं। इनमें जो उपवाक्य मुख्य उद्देश्य और विधेय से बना होता है, उसे प्रधान उपवाक्य कहते हैं। जैसे- 1. गांधीजी ने कहा कि सदा सत्य बोलो, हिंसा मत करो। 2. रवि ने कहा कि वह मुम्बई जा रहा है। यहाँ पर 'गाँधीजी ने कहा' और 'रवि ने कहा' प्रधान उपवाक्य हैं।

(3) आश्रित उपवाक्य-जिस उपवाक्य का अर्थ प्रधान उपवाक्य पर आश्रित रहता है, उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं। जैसे- रवि ने कहा कि वह मुम्बई जा रहा है। यहाँ पर 'वह मुम्बई जा रहा है' आश्रित उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य के भेद-आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार का होता है-

1. संज्ञा उपवाक्य-जो अपने प्रधान उपवाक्य की क्रिया का (1) कर्म या (2) पूरक या (3) कर्त्ता, कर्म या पूरक का समानाधिकरण होता है, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। प्राय: संज्ञा उपवाक्य समुच्चयबोधक अव्यय 'कि' से जुड़ा रहता है। जैसे—मेरा विश्वास था कि वह अवश्य उत्तीर्ण होगा।

2. विशेषण उपवाक्य-जो अपने प्रधान उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं। विशेषण उपवाक्य में 'जो' सर्वनाम या उससे बने 'जहाँ' और 'जब' क्रिया-विशेषण प्रयुक्त होते हैं, विशेषण उपवाक्य कभी प्रधान उपवाक्य के पहले आता है और कभी पीछे। जैसे-जो बात सुनो उसको समझो। जो विद्वान होते हैं, उनका सभी आदर करते हैं।

3. क्रिया विशेषण उपवाक्य-जो अपने प्रधान उपवाक्य के क्रिया शब्द की विशेषता बताता है या उस क्रिया शब्द की विशेषता बताने वाले किसी क्रिया-विशेषण शब्द का समानाधिकरण रहता है, उसे क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं। क्रिया-विशेषण उपवाक्य कभी प्रधान वाक्य के पूर्व आता है और कभी पीछे। जैसे-उसको सफलता मिलेगी, क्योंकि वह परिश्रमी है। यदि मोहन मेहनत करता, तो अवश्य सफल होता।

4. समानाधिकरण उपवाक्य-जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य या आश्रित उपवाक्य के समान अधिकरण वाला हो, अर्थात् एक पूर्ण वाक्य में दो उपवाक्य हों और दोनों ही प्रधान हों, उसे समानाधिकरण उपवाक्य कहते हैं। समानाधिकरण उपवाक्य में संयोजक अव्यय शब्दों का प्रयोग होता है। यथा-मोहन निर्धन है किन्तु है ईमानदार। बुरी संगत मत करो वरना तुम पछताओगे।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न-

1. निम्नलिखित वाक्यों को चार भागों में विभाजित किया गया है, इन चारों भागों में से एक भाग में त्रुटि है, उस भाग को चुनकर बताइए—

   (i) (क) आज (ख) देश में (ग) सर्वस्व (घ) शान्ति है।

   (ii) (क) गुलाब के पौधे पर (ख) मैंने (ग) कई फूल (घ) को देखा।

   (iii) (क) आज बाजार में (ख) एक भी (ग) दुकान (घ) नहीं खुला।

   (iv) (क) रामचरितमानस (ख) पढ़कर (ग) पाठक की (घ) आँख खुल गई।

2. वाक्य के प्रारम्भ में कौन-सा कारक-पद रहता है?

   (क) कर्म (ख) कर्त्ता (ग) करण (घ) कर्म-विशेषण

3. किसान रात-दिन परिश्रम करते हैं।

   इस वाक्य में उद्देश्य-पद है—

   (क) रात-दिन (ख) किसान (ग) परिश्रम (घ) करते हैं।

4. जिस वाक्य से किसी का अभाव या निषेध सूचित होता है, उसे कहते हैं—
(क) निषेधार्थक वाक्य (ख) विधानार्थक वाक्य (ग) प्रश्नार्थक वाक्य (घ) संकेतार्थक वाक्य
5. जिस वाक्य से सन्देह या सम्भावना प्रकट हो, उसे कहते हैं—
(क) संकेतार्थक वाक्य (ख) इच्छार्थक वाक्य
(ग) विस्मयादिबोधक वाक्य (घ) सन्देहसूचक वाक्य
6. रचना की दृष्टि से साधारण वाक्य है—
(क) भिखारी लोगों से भीख माँगता रहा। (ख) श्याम पढ़ता रहा, परन्तु रमेश सोता रहा।
(ग) किसान अपने खेत में था और मजदूर काम कर रहा था।
(घ) नेहा अभिलाषा की बड़ी बहिन है जो कक्षा चार में पढ़ती है।
7. पदक्रम की दृष्टि से सही वाक्य है—
(क) पुत्र को पिता ने पर्याप्त धन दिया। (ख) पिता ने पर्याप्त धन पुत्र को दिया।
(ग) पिता ने पुत्र को पर्याप्त धन दिया। (घ) दिया पिता ने पुत्र को पर्याप्त धन।
8. अन्वय की दृष्टि से सही वाक्य है—
(क) आम बच्चों को काटकर खिलाओ। (ख) बच्चों को खिलाओ आम काटकर।
(ग) आम काटकर बच्चों को खिलाओ। (घ) बच्चों को आम काटकर खिलाओ।
9. 'मुझसे उठा नहीं गया' वाक्य में कौन-सा वाच्य है?
(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य (घ) इनमें से कोई नहीं
10. अर्थ के अनुसार वाक्य का भेद नहीं है-
(क) सरल वाक्य (ख) विधि वाक्य (ग) निषेध वाक्य (घ) प्रश्न वाक्य

उत्तर–1. (i) (ग), (ii) (ग), (iii) (घ), (iv) (घ) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (घ) (6) (क) 7. (ग) 8. (घ) 9. (ग) 10. (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. 'राम फल खाता है', वाक्य में उद्देश्य .... है। (राम/फल)
2. 'बच्चे पढ़ रहे हैं', वाक्य में विधेय .... है। (बच्चे/पढ़ रहे हैं)
3. राम विद्यालय नहीं जा सका, क्योंकि वह बीमार है। यह वाक्य .... के अन्तर्गत आता है। (मिश्र वाक्य/संयुक्त वाक्य)
4. सीता गाना नहीं गाएगी, यह .... वाक्य है। (निषेधवाचक/सन्देहवाचक)
5. वाक्य में शब्दों का क्रम .... निर्धारित होता है। (भाषा से/पदक्रम से)
6. 'जहाँ-जहाँ वह गया उसका बहुत सम्मान हुआ।' रेखांकित अंश .... है। (विशेषण उपवाक्य/क्रिया विशेषण उपवाक्य)
7. उद्देश्य और विधेय .... के अंग है। (वाक्य/रचना)
8. 'ईश्वर तुम्हें सफलता दे' यह .... वाक्य है। (इच्छावाचक/आज्ञावाचक)
9. हिन्दी वाक्य में .... अंगों का ज्ञान आवश्यक है। (दो/तीन)
10. उद्देश्य के संबंध में जो कुछ कहा जाता है, उसे .... कहते हैं। (उद्देश्य विस्तार/विधेय)
11. दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को .... कहते हैं। (वाक्य/पद)
12. क्रिया की दृष्टि से वाक्य .... प्रकार के होते हैं। (आठ/तीन)

उत्तर–1. राम, 2. पढ़ रहे हैं, 3. मिश्रवाक्य, 4. निषेधवाचक, 5. पदक्रम से, 6. क्रिया विशेषण उपवाक्य, 7. वाक्य, 8. इच्छावाचक, 9. दो, 10. विधेय, 11. वाक्य, 12. तीन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1. वाक्यों का वर्गीकरण कितने आधारों पर किया गया है?

उत्तर–वाक्यों का वर्गीकरण तीन आधारों पर किया गया है।

प्रश्न 2. जिन वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर–उसे सरल वाक्य कहते हैं।

प्रश्न 3. 'राम आया; भाई से मिला और तुरन्त लौट गया।' यह वाक्य है।

उत्तर–यह वाक्य संयुक्त वाक्य है।

प्रश्न 4. मिश्र वाक्य किसे कहते हैं?

उत्तर–जिन वाक्यों में एक साधारण वाक्य तथा उसके अधीन दूसरा उपवाक्य हो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।

प्रश्न 5. 'गुरुजन का सम्मान करना सीखो।' यह किस प्रकार का वाक्य है।

उत्तर–यह आज्ञार्थक वाक्य है।

प्रश्न 6. 'पद' की परिभाषा क्या है?

उत्तर–वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाते हैं।

प्रश्न 7. 'क्रिया-विशेषण उपवाक्य' का एक उदाहरण बताइए।

उत्तर–'जब बारिश हो रही थी तब मैं घर में था।'

प्रश्न 8. 'शायद मानसी बीमार हो गई' यह किस प्रकार का वाक्य है?

उत्तर–यह सन्देहार्थक या सन्देहवाचक वाक्य है।

प्रश्न 9. विस्मयादिबोधक वाक्य किसे कहते हैं?

उत्तर–जिस वाक्य से हर्ष, शोक, आश्चर्य, भय, घृणा आदि मन का भाव प्रकट हो, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।

प्रश्न 10. इच्छार्थक वाक्य का एक उदाहरण बताइए।

उत्तर–इच्छार्थक वाक्य- 'भगवान तुम्हारा भला करे'।

प्रश्न 11. 'राम के अनुज लक्ष्मण ने परशुराम का क्रोध भड़का दिया।' इस वाक्य में उद्देश्य है?

उत्तर–इस वाक्य में उद्देश्य 'राम के अनुज लक्ष्मण' है।

प्रश्न 12. संयुक्त वाक्य क्या है?

उत्तर–संयुक्त वाक्य वह है जिसमें दो या दो से अधिक सरल या मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त होते हैं।

प्रश्न 13. आश्रित वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर–आश्रित वाक्य 3 प्रकार के होते हैं- संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रिया-विशेषण उपवाक्य।

प्रश्न 14. संकेतार्थक वाक्य किसे कहते हैं?

उत्तर–वह वाक्य जिससे शर्त के भाव का बोध हो, उसे संकेतार्थक वाक्य कहते हैं। जैसे- यदि तुम पढ़ते तो पास हो जाते।

प्रश्न 15. आज्ञार्थक वाक्य किसे कहते हैं?

उत्तर–वह वाक्य जिससे आज्ञा या आदेश के भाव का बोध हो उसे आज्ञार्थक वाक्य कहते हैं। जैसे- खिड़की खोल दो।

प्रश्न 16. "बादल खूब गरजे परन्तु वर्षा नहीं हुई।"

उपर्युक्त वाक्य रचना के आधार पर किस प्रकार का वाक्य है ? उसकी परिभाषा लिखिए।

उत्तर–यह संयुक्त वाक्य है। जिस वाक्य में एक से अधिक साधारण या मिश्रवाक्य किसी संयोजक अव्यय से जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

प्रश्न 17. रचना की दृष्टि से वाक्य के कितने प्रकार होते हैं?

उत्तर–रचना की दृष्टि से वाक्य के मुख्य तीन प्रकार होते हैं—

(1) साधारण वाक्य, (2) संयुक्त वाक्य और (3) मिश्र वाक्य।

प्रश्न 18. शुद्ध वाक्य-रचना के लिए किसका ध्यान रखा जाता है?

उत्तर–शुद्ध वाक्य-रचना के लिए अन्वय एवं पदक्रम का ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न 19. वाक्य-रचना के सामान्य नियम क्या हैं? बताइए।

उत्तर–वाक्य-रचना करते समय सर्वप्रथम कर्त्ता का और उसके बाद कर्म का प्रयोग करना चाहिए। अन्त में क्रिया का पूरक और क्रिया रखनी चाहिए।

प्रश्न 20. उद्देश्य और विधेय किसे कहते हैं?

उत्तर–वाक्य-रचना में कर्त्ता एवं उसके विस्तारक को उद्देश्य और क्रिया एवं उसके पूरक को विधेय कहते हैं।

प्रश्न 21. साधारण वाक्य की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

उत्तर–जिस वाक्य में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे— किसान अनाज उगाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. वाक्य विचार को परिभाषित कीजिए।

उत्तर–मनुष्य अपने भावों या विचारों को वाक्य में ही प्रकट करता है। ऐसा शब्द समूह जो अपना अर्थ स्पष्ट कर दे, वाक्य कहलाता है। वाक्य भाषा की एक सम्पूर्ण इकाई होता है। वाक्य के अंग कर्ता और क्रिया वाक्य के अनिवार्य अंग हैं। इनके बिना वाक्य नहीं बनते। वाक्य में और भी अनेक तत्व होते हैं परन्तु वाक्यों की रचना के लिए इन दो तत्वों का होना आवश्यक हैं।

प्रश्न 2. वाक्य के कितने अंग हैं? परिभाषित कीजिए।

उत्तर–वाक्य के दो अंग होते हैं- 1. उद्देश्य 2. विधेय

उद्देश्य:- वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते है। जैसे- 'राम फल खाता है' इस वाक्य में 'राम' उद्देश्य है।

विधेय:- वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है वह विधेय कहलाता है। जैसे- 'राम फल खाता है' यहाँ पर 'फल खाता है' विधेय है।

प्रश्न 3. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों के उदाहरण बताइए–

विस्मयवाचक, निषेधवाचक, इच्छावाचक, सन्देहवाचक

उत्तर– विस्मयवाचक वाक्य - 'ओह! ऐसी भयंकर गर्मी।'
निषेधवाचक वाक्य - 'तुम इधर मत बैठो।'
इच्छावाचक वाक्य - 'ईश्वर आपका कल्याण करे।'
सन्देहवाचक वाक्य - 'सम्भवत: वह आज आ जाए।'

प्रश्न 4. निम्नलिखित विधानवाचक वाक्यों को निषेधवाचक वाक्यों में बदलिए–

1. चोरों ने चोरी कर लिया।
2. मजदूर ने काम पूरा किया।
3. माली ने फूल तोड़े।
4. रश्मि संस्कृत बोल सकती है।
5. किसान बैंक से कर्ज लेते हैं।

उत्तर– 1. चोरों ने चोरी नहीं की।
2. मजदूर ने काम पूरा नहीं किया।
3. माली ने फूल नहीं तोड़े।
4. रश्मि संस्कृत नहीं बोल सकती।
5. किसान बैंक से कर्ज नहीं लेते हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य तथा विधेय को अलग कीजिए–

1. कोमल अपना काम स्वयं करती है।
2. मेघ शीतल जल देता है।
3. गंगा एक पूजनीय नदी है।
4. चाचीजी ने भोजन बनाया।
5. अर्पित सबकी मदद करता है।

उत्तर– 1. उद्देश्य - कोमल, विधेय - अपना काम स्वयं करती है।
2. उद्देश्य - मेघ, विधेय - शीतल जल देता है।
3. उद्देश्य - गंगा, विधेय - एक पूजनीय नदी है।

4. उद्देश्य - चाचीजी, विधेय - भोजन बनाया।

5. उद्देश्य - अर्पित, विधेय - सबकी मदद करता है।

प्रश्न 6. इच्छार्थक वाक्य किसे कहते हैं?

उत्तर– वह वाक्य जिससे इच्छा के भाव का बोध हो उसे इच्छार्थक वाक्य कहते हैं। आशीर्वाद, दुआ, गाली, शाप, बद्दुआ आदि भावों का बोध करवाने वाले वाक्य भी इच्छार्थक वाक्य होते हैं। उदाहरण- 'मेरी इच्छा है कि मैं अभिनेता बन जाऊँ।'

प्रश्न 7. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद बताइए।

उत्तर–अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं–

1. विधानार्थक वाक्य 2. सन्देहार्थक वाक्य
3. निषेधात्मक वाक्य 4. आज्ञार्थक वाक्य
5. प्रश्नार्थक वाक्य 6. संकेतार्थक वाक्य
7. इच्छार्थक वाक्य 8. विस्मयबोधक वाक्य

प्रश्न 8. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में निर्दिष्ट प्रकार में बदलिए—

(1) शिक्षक कक्षा में नियमित पढ़ाते हैं। (प्रश्नवाचक)

(2) भगवान् सबका भला करता है। (इच्छावाचक)

(3) तुम प्रतिदिन व्यायाम करते हो। (आज्ञार्थक वाक्य)

(4) हाय! सारी फसल सूख गई! (निषेधार्थक)

(5) वह पुस्तक पढ़ता है। (सन्देहसूचक)

उत्तर–(1) क्या शिक्षक कक्षा में नियमित पढ़ाते हैं?

(2) भगवान् सबका भला करे।

(3) तुम प्रतिदिन व्यायाम करो।

(4) अहा ! सारी फसल नहीं सूखी।

(5) सम्भवत: वह पुस्तक पढ़ता हो।

प्रश्न 9. निम्नलिखित वाक्यों में कर्त्ता, कर्त्ता का विस्तारक, पूरक, क्रिया और क्रिया का विस्तारक बताइए—

(1) गुलाबी नगरी जयपुर की राजधानी है।

(2) मेरा भाई प्रशान्त अच्छी पुस्तकें पढ़ता है।

(3) हमें नियमित विद्यालय जाना चाहिए।

(4) हमारा देश समृद्धिशाली है।

उत्तर–(1) कर्त्ता—जयपुर, कर्त्ता का विस्तारक—नगरी, पूरक—गुलाबी, राजधानी, क्रिया—है।

(2) कर्त्ता—प्रशान्त, कर्त्ता का विस्तारक—मेरा भाई, कर्म—पुस्तकें, विस्तारक—अच्छी, क्रिया—पढ़ता है।

(3) कर्त्ता—हमें, विस्तारक—विद्यालय, क्रिया—जाना चाहिए, क्रिया का विस्तारक—नियमित।

(4) कर्त्ता—देश, कर्त्ता का विस्तारक—हमारा, क्रिया—है, पूरक पद—समृद्धिशाली।

प्रश्न 10. निम्न संयुक्त वाक्यों का विश्लेषण कीजिए—

(1) आँधी आ रही थी इसलिए कल मैं तुम्हारे घर नहीं आ सका।

(2) हम कोई काम करना चाहते हैं, परन्तु उसको जानते नहीं हैं।

उत्तर–(1) आँधी आ रही थी—प्रधान उपवाक्य। यह अन्य वाक्य से संयुक्त है। **इसलिए मैं कल तुम्हारे घर नहीं आ सका**—परिणामबोधक उपवाक्य।

प्रधान उपवाक्य का दूसरा वाक्य समानाधिकरण है। इन दोनों में 'इसलिए' संयोजक शब्द है।

(2) हम कोई काम करना चाहते हैं—प्रधान उपवाक्य। अन्य वाक्य से संयुक्त। **परन्तु उसको जानते नहीं हैं**—विरोधसूचक उपवाक्य।

प्रधान उपवाक्य द्वितीय उपवाक्य का समानाधिकरण है। इन दोनों के मध्य में 'परन्तु' संयोजक शब्द है।

5. पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

हिन्दी भाषा का शब्द-भण्डार अत्यन्त समृद्ध एवं विशाल है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बँगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के शब्दों के साथ ही अनेक विदेशी शब्द प्रयुक्त होते हैं। प्रयोग और अर्थ की दृष्टि से हिन्दी में विविध प्रकार के शब्द दिखाई देते हैं। उनमें से कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें अर्थ के भेद से वर्गीकरण किया जा सकता है। अर्थ-भेद की दृष्टि से हिन्दी के शब्दों का वर्गीकरण निम्न रूप में किया जाता है—

1. पर्यायवाची शब्द
2. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द-युग्म
3. विलोम शब्द
4. एकार्थक शब्द-युग्म
5. अनेकार्थक शब्द
6. वाक्यांश के लिए एक शब्द।

अ. पर्यायवाची शब्द

समान अर्थ प्रकट करने वाले एक से अधिक शब्दों को 'पर्यायवाची' या 'समानार्थी' शब्द कहते हैं। सुन्दर, सशक्त और सुगठित वाक्य-रचना के लिए पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान आवश्यक है। यहाँ कुछ पर्यायवाची शब्द दिये जा रहे हैं—

1. **अलि-** भ्रमर, मधुप, मधुकर, षट्पद, भौंरा, मिलिन्द।
2. **अश्व-** घोड़ा, तुरंग, हय, वाजि, घोटक, तुरंगम, सैन्धव।
3. **अग्नि-** अनल, पावक, कृशानु, हुताशन, वह्नि, वैश्वानर, आग।
4. **अमृत-** सुधा, पीयूष, अमिय, अमी, सुरभोग।
5. **आँख-** नेत्र, चयन, चक्षु, दृग्, लोचन, अक्षि।
6. **असुर-** दैत्य, दानव, राक्षस, निशाचर, रजनीचर।
7. **आकाश-** व्योम, गगन, नभ, अम्बर, अनन्त, शून्य।
8. **आम-** रसाल, सहकार, आम्र।
9. **अरण्य-** वन, जंगल, कानन, विपिन, अटवी, कान्तार।
10. **अन्धकार-** अँधेरा, तम, तिमिर, तमिस्र।
11. **अतिथि-** मेहमान, पाहुन, आगन्तुक, अभ्यागत।
12. **अलंकार-** आभूषण, भूषण, विभूषण, गहना।
13. **आत्मा-** चैतन्य, ब्रह्म, सर्वज्ञ, विभु, क्षेत्रज्ञ।
14. **आयु-** अवस्था, वय, वयस्, उम्र, जीवनकाल।
15. **आनन्द-** उल्लास, मोद, प्रसन्नता, आह्लाद, प्रमोद, प्रहर्ष।
16. **अर्जुन-** सव्यसाची, पार्थ, धनंजय, गुडाकेश, गाण्डीवधारी।
17. **इच्छा-** अभिलाषा, कामना, मनोरथ, वांछा, स्पृहा, लिप्सा।
18. **इन्द्र-** सुरपति, देवराज, मघवा, पुरन्दर, शचीपति, सुरेश, पाकशासन, गोत्रभित्, पुरुहूत, शक्र।
19. **ईश्वर-** परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, परमेश्वर, भगवान्।
20. **ईर्ष्या-** स्पर्धा, मत्सर, डाह, जलन, कुढ़न।
21. **उन्नति-** उत्थान, उत्कर्ष, प्रगति, अभ्युदय, विकास।
22. **उत्पत्ति-** उद्भव, जन्म, उद्गम, जनन, आविर्भाव।
23. **उपवन-** बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, आराम।
24. **उपकार-** परोपकार, भेंट, नजराना, कल्याण, आभार।
25. **औषधि-** दवा, दवाई, भेषज।
26. **ऊँट-** उष्ट्र, क्रमेलक, लम्बोष्ठ, महाग्रीव।
27. **कान-** कर्ण, श्रवणेन्द्रिय, श्रुति।
28. **कपोत-** कबूतर, पारावत, हारीत, रक्तलोचन।
29. **कोयल-** कोकिल, पिक, परभृत्, श्यामा, वनप्रिय।

30. **कुत्ता-** श्वान, शुनक, कुक्कुर, सारमेय, मृगारि, कूकर, सोनहा।
31. **कृष्ण-** माधव, मुकुन्द, दामोदर, गोपीनाथ, वासुदेव, कंसारि, मुरलीधर, मधुसूदन, यदुराज, द्वारिकाधीश।
32. **कौआ-** काक, वायस, बलिपुष्ट, करट, पिशुन, करटक।
33. **कुबेर-** यक्षराज, धनाधिप, राजराज, धनद, वित्तेश।
34. **कोष-** निधि, भण्डार, आकर, निकर, आगार।
35. **कमल-** जलज, पंकज, पद्म, उत्पल, सरोज, कंज, नलिन, पुष्कर, शतपत्र, अरविन्द, सरसिज, कुवलय, नीरज।
36. **कनक-** सोना, स्वर्ण, कंचन, हेम, हिरण्य, हाटक।
37. **कपड़ा-** वस्त्र, वसन, चीर, अम्बर, पट, परिधान।
38. **कल्पवृक्ष-** देवदारु, सुरतरु, मन्दार, पारिजात।
39. **कष्ट-** दुःख, वेदना, पीड़ा, व्यथा, खेद, क्लेश।
40. **कामदेव-** मन्मथ, मनोज, मार, अनंग, मनसिज, कन्दर्प, मदन।
41. **किरण-** रश्मि, कर, अंशु, मयूख, मरीचि, दीधिति।
42. **कर-** हाथ, हस्त, बाहु, पाणि, भुज।
43. **कर्त्तव्य-** कर्म, कृत्य, विधेय।
44. **किनारा-** तट, कूल, तीर, फलिन।
45. **केश-** बाल, कच, कुन्तल, चिकुर, शिरोरुह।
46. **क्रोध-** रोष, रिस, अमर्ष, कोप।
47. **खर-** रासभ, गर्दभ, गधा, वैशाखनन्दन।
48. **खल-** दुष्ट, दुर्जन, धूर्त, कुटिल, नीच, पामर।
49. **खेल-** क्रीड़ा, केलि, तमाशा, करतब।
50. **गंगा-** भागीरथी, जाह्नवी, देवगंगा, त्रिपथगा, सुरसरि, मन्दाकिनी।
51. **गणेश-** विनायक, गजवदन, गणपति, गजानन, लम्बोदर, गणनायक।
52. **गृह-** घर, निकेतन, निकेत, सदन, आलय, आवास, मन्दिर, निलय।
53. **गर्व-** अभिमान, घमण्ड, दर्प, मद, अहंकार।
54. **गुरु-** आचार्य, अध्यापक, शिक्षक, उपाध्याय।
55. **गौ-** गाय, धेनु, सुरभि, माहेयी, पयस्विनी, दोग्धी।
56. **चन्द्रमा-** इन्दु, शशि, विधु, सोम, मयंक, सुधाकर, कलानिधि, सुधांशु।
57. **चरण-** पैर, पाद, पग, पद, पाँव।
58. **चतुर-** दक्ष, निपुण, कुशल, प्रवीण, चालाक।
59. **चरित्र-** आचरण, व्यवहार, आचार, शील, चाल-चलन।
60. **चोर-** तस्कर, रजनीचर, मोषक, दस्यु।
61. **छल-** कपट, धोखा, ब्याज, ठगी, शठता।
62. **जल-** नीर, सलिल, तोय, वारि, पय, अप, अम्बु, उदक, जीवन।
63. **जगत्-** भव, जग, संसार, विश्व, जगती, लोक, दुनिया।
64. **जन-** मनुष्य, व्यक्ति, मनुज, नर, मानव।
65. **जिह्वा-** जीभ, जबान, रसिका, रसना।
66. **जहर-** हलाहल, विष, गरल, कालकूट, गर।
67. **तरु-** वृक्ष, पेड़, भूरुह, विटप, द्रुम, शाखी।
68. **तलवार-** खड्ग, असि, कृपाण, करवाल, खंग।
69. **तालाब-** ताल, जलाशय, तड़ाग, सरोवर, पुष्कर, सर, कासार।
70. **तारा-** तारक, नक्षत्र, तारिका, नखत, उडुगन।
71. **तोता-** शुक, सुआ, सुग्गा, कोर, सुअरा।

72. **देवता-** अजर, अमर, विबुध, देव, सुर, त्रिदश, दिवौकस, अमर्त्य, निर्जर।
73. **दूध-** पय, क्षीर, दुग्ध, गोरस।
74. **धन-** वित्त, द्रव्य, अर्थ, सम्पदा, सम्पत्ति, विभव।
75. **धनुष-** धनु, कोदण्ड, शरासन, चाप, धन्वा, कार्मुक।
76. **नदी-** सरिता, तटिनी, आपगा, स्रोतस्विनी, तरंगिणी, शैवालिनी, निर्झरिणी, सरित्।
77. **नाश-** ध्वंस, क्षय, प्रलय, अवसान, विनाश, नष्ट।
78. **निर्मल-** स्वच्छ, अमल, पवित्र, पावन, विमल, शुद्ध।
79. **नाव-** नौका, तरी, तरणी, जलयान, नौ।
80. **निशा-** रात्रि, रात, त्रियामा, रजनी, यामिनी, विभावरी, क्षपा, शर्वरी, दोष।
81. **पक्षी-** विहग, विहंग, खग, द्विज, खेचर, नभचर, पतंग, शकुन्त।
82. **पवन–** वायु, हवा, बयार, वात, अनिल, समीर, मारुत।
83. **पत्थर-** पाषाण, प्रस्तर, उपल, अश्म, पाहन।
84. **पति-** स्वामी, भर्त्ता, वल्लभ, प्राणेश, हृदयेश।
85. **पत्नी-** गृहिणी, सहचरी, भार्या, सहधर्मिणी, दारा, प्रिया।
86. **पहाड़-** पर्वत, अचल, गिरि, नग, भूधर, महीधर, शैल।
87. **पिता-** तात, जनक, जनयिका, बाप, पितृ।
88. **प्रिया-** प्रेयसी, प्यारी, वल्लभा, प्रभात।
89. **पृथ्वी-** भू, भूमि, धरा, अवनी, अचला, वसुन्धरा, धरणी, रसा, भेदिनी।
90. **पुष्प-** प्रसून, सुमन, सुम, फूल।
91. **पुत्र-** बेटा, सुत, सुअन, तनय, आत्मज, तनुज।
92. **पुत्री-** सुता, तनुजा, आत्मजा, बेटी, दुहिता, नन्दिनी, तनया।
93. **प्रकाश-** ज्योति, दीप्ति, द्युति, प्रभा, आलोक, तेज, छवि।
94. **प्रेम-** स्नेह, प्रणय, राग, अनुराग, प्रीति।
95. **बाण-** शर, तीर, सायक, नाराच, विशिख, शिलीमुख, पत्री।
96. **बादल-** मेघ, घन, वारिद, जलद, पयोद, पयोधर, जलधर, नीरद।
97. **बिजली-** विद्युत्, चपला, तडित, चंचला, सौदामिनी, मेघशिखा।
98. **बन्दर-** मर्कट, कपि, वानर, प्लवंगम, हरि, शाखामृग।
99. **ब्रह्मा-** विधि, चतुरानन, विरंचि, अज, विधाता, प्रजापति।
100. **बसन्त-** ऋतुराज, ऋतुपति, मधुमास, कुसुमाकर।
101. **बगीचा-** बाग, उपवन, वाटिका, उद्यान, निकुंज।
102. **मछली-** मीन, मकर, मत्स्य, शफरी, पाठीन, झष।
103. **मदिरा-** सुरा, हाला, मद्य, वारुणी, कादम्बरी।
104. **माता-** माँ, अम्बा, जननी, प्रसू, जन्मदायिनी।
105. **मोक्ष-** मुक्ति, निर्वाण, अपवर्ग, कैवल्य, अमृतपद।
106. **मोर-** मयूर, केकी, नीलकण्ठ, सारंग, कलापी, शिखी, बर्ही।
107. **यम-** काल, धर्मराज, यमराज, महाकाल, मृत्यु।
108. **यमुना-** सूर्यजा, रवितनया, कालिन्दी, जमुना, तरणि-तनूजा।
109. **राजा-** नरेश, भूप, भूपति, महीपति, नृपति, महीप, भूपाल।
110. **लक्ष्मी-** श्री, कमला, सिन्धुजा, पद्मा, इन्दिरा, रमा।
111. **विष-** जहर, गरल, हलाहल, कालकूट, गर।
112. **शत्रु-** अरि, रिपु, बैरी, विपक्षी, आरति, अमित्र।
113. **शरीर-** काया, कलेवर, वपु, गात, विग्रह, तनु।
114. **समुद्र-** सागर, सिन्धु, रत्नाकर, जलधि, पयोधि, पयोनिधि, नदीश, अर्णव, अब्धि, उदधि, जलनिधि, वारिनिधि।

115. **सिंह-** केहरी, केसरी, मृगराज, हरि, नाहर, पंचानन, मृगेन्द्र।
116. **सूर्य-** दिनकर, भानु, दिवाकर, मार्तण्ड, हंस, रवि, सविता।
117. **सरस्वती-** शारदा, भारती, वाणी, गिरा, वीणापाणि।
118. **साँप-** सर्प, अहि, व्याल, भुजंग, भुजंगम, नाग, विषधर, उरग, फणी।
119. **सिर-** मस्तिष्क, माथा, शिर, मुण्ड, मौलि, शीश।
120. **सेना-** कटक, अनी, चमू, अनीकिनी, सैन्य, वाहिनी।
121. **स्वर्ग-** नाक, सुरलोक, दिव, देवलोक, त्रिदिव, द्युलोक, द्यौ।
122. **स्तन-** कुच, पयोधर, उरोज, वक्षोज, थन।
123. **सुगन्ध-** सुरभि, सौरभ, सुवास, इष्टगन्ध, खुशबू।
124. **संसार-** विश्व, जगत, जगती, भव, इहलोक, नरलोक।
125. **सुबह-** सवेरा, प्रभात, प्रातः, भोर, उषा।
126. **सेना-** चमू, कटक, वाहिनी, अनी, फौज, दल।
127. **सेवक-** नौकर, भृत्य, दास, चाकर, परिचर।
128. **स्त्री-** नारी, महिला, कामिनी, वामा, सुन्दरी, वनिता।
129. **हनुमान्-** पवनसुत, आंजनेय, कपीश, महावीर, बजरंगबली, अंजनिपुत्र, केसरीनन्दन।
130. **हरिण-** मृग, सारंग, कुरंग, कृष्णसार, चमरी, हिरण।
131. **हाथ-** कर, भुजा, बाहु, भुज, हस्त, पाणि।
132. **हाथी-** गज, दन्ती, कुंजर, हस्ती, मतंग, नाग, करी, इभ, वारण।
133. **हंस-** मराल, कलहंस, चक्रांग, कारंडव।
134. **हिमालय-** हिमप्रस्थ, हिमांचल, हिमाद्रि, कुलिश।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्नः

1. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित शब्द का सही पर्यायवाची शब्द बताइए—
   सीता रामचन्द्रजी की पत्नी थी।
   (क) प्रिया (ख) सखी (ग) स्त्री (घ) जीवनसंगिनी।
2. "पुष्प पर अलि मँडरा रहा है।" रेखांकित शब्द का सही पर्यायवाची है—
   (क) पक्षी (ख) भौंरा (ग) तितली (घ) निशाकर।
3. किस समूह में सभी शब्द पर्यायवाची हैं?
   (क) मधुप, मधुकर, गयन्द, मधुकर। (ख) उरग, व्याल, अहि, पन्नग।
   (ग) सरोज, कमल, मयंक, पद्म। (घ) चन्द्र, शशि, विधु, मयंक।
4. किस समूह में सभी पद पर्यायवाची हैं?
   (क) तरु, पादप, भूरुह, भूधर (ख) मयूर, शिखी, कलापी, कोकिल
   (ग) नभ, गगन, व्योम, अम्बर (घ) वायु, हवा, अनल, बयार।
5. इनमें से कौनसा शब्द 'धनुष' का पर्यायवाची नहीं है-
   (क) विशिख (ख) कोदण्ड (ग) चाप (घ) शरासन
6. किस समूह में सभी शब्द सही पर्यायवाची हैं-
   (क) माधव, केशव, पीताम्बर (ख) सहोदर, भ्राता, रण
   (ग) कीनाश, अन्तक, मध्वरि (घ) सिंधुसुता, वृषभानुजा, वीचि
7. इनमें 'पूजा' शब्द का समानार्थी शब्द नहीं है-
   (क) अर्चना (ख) आराधना (ग) विकास (घ) वंदना
8. हाथी एक विशाल जानवर है। रेखांकित शब्द का सही पर्यायवाची है-

(क) तुरंग (ख) विहंगम (ग) मंदार (घ) कुंजर

9. भौंरा गुनगुनाता है। रेखांकित शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

(क) मधुकर (ख) अलि (ग) मधुप (घ) मीन

10. 'उद्यत' का पर्यायवाची शब्द है-

(क) गरीब (ख) अभ्युदय (ग) ताप (घ) तत्पर

उत्तर–1. (घ) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क) 6. (क) 7. (ग) 8. (घ) 9. (घ) 10. (घ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. धरती का पर्यायवाची .... है। (वसुधा/भारती)
2. मंदाकिनी व जाह्नवी का .... पर्यायवाची शब्द है। (गंगा/धरती)
3. 'पवन' का पर्यायवाची .... नहीं है। (समीर/अनल)
4. 'तरु' का पर्यायवाची .... नहीं है। (द्रुम/पग)
5. सहोदरा, भगिनी शब्द .... पर्यायवाची है। (बिजली/बहिन)
6. 'बादल' का पर्यायवाची .... है। (वारिधि/जलद)
7. 'किरण' का पर्यायवाची .... है। (प्रभा/रवि)
8. 'पहाड़' का पर्यायवाची .... नहीं है। (शैवाल/नग)
9. लोचन, चक्षु शब्द .... पर्यायवाची है। (आँख/दृष्टि)
10. रुधिर, शोणित शब्द .... पर्यायवाची है। (रक्त/कासर)
11. वाणी, सरस्वती शब्द .... पर्यायवाची है। (शारदा/कमला)
12. 'विभावरी' शब्द का पर्यायवाची शब्द .... है। (क्षणदा/तपसा)

उत्तर–1. वसुधा, 2. गंगा, 3. अनल, 4. पग, 5. बहिन, 6. जलद, 7. प्रभा, 8. शैवाल, 9. आँख, 10. रक्त, 11. शारदा, 12. तपसा।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. 'नदी' के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–नदी - सरिता, वाहिनी, अपगा, तटिनी, शैलजा।

प्रश्न 2. 'सूर्य' के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–सूर्य - दिनकर, दिवाकर, भास्कर, आदित्य, सविता।

प्रश्न 3. 'नीरस' शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–नीरस - फीका, बेरस, बेजायका, अस्वाद।

प्रश्न 4. 'श्याम रात को भोजन करता हैं' रेखांकित शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए।

उत्तर–रात - रात्रि, रजनी, यामिनी, विभावरी।

प्रश्न 5. 'आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं।' रेखांकित शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए।

उत्तर–आकाश - नभ, आसमान, व्योम, गगन, अम्बर।

प्रश्न 6. 'मैं घर जा रहा हूँ।' रेखांकित शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–घर - आलय, आवास, गृह, सदन, निवास, भवन।

प्रश्न 7. 'फूल खिल रहे हैं।' फूल शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–पुष्प, कुसुम, पुहुप, सुमन, प्रसून।

प्रश्न 8. 'कमल' शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–कमल - पंकज, राजीव, पद्म, सरोज, नलिन।

प्रश्न 9. 'पेड़' शब्द के चार पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–पेड़ - वृक्ष, पादप, शाखी, तरु।

प्रश्न 10. 'पानी' शब्द के चार पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–पानी - नीर, तोय, पय, वारि।

प्रश्न 11. 'हवा' का पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–हवा - वायु, अनिल, समीर, पवन।

प्रश्न 12. '<u>राजा</u> प्रजा का रक्षक होता है।' रेखांकित शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–राजा - क्षत्र, क्षत्री, नृप, पार्थिव, नाभि।

प्रश्न 13. '<u>आम</u> फलों का राजा होता है।' रेखांकित शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–आम - रसाल, आम्र, सहकार, फलराज।

प्रश्न 14. 'दिन' शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–अहः, दिवस, वासर, दिवा, वार।

प्रश्न 15. 'हाथी' शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–हाथी- गज, हस्ती, मतंग, द्विरद, गयंद।

प्रश्न 16. पर्यायवाची शब्द किन्हें कहते हैं?

उत्तर–जब भिन्न-भिन्न शब्दों के अर्थ समान हो, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

प्रश्न 17. 'शिक्षक' शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–शिक्षक - गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।

प्रश्न 18. 'दास' शब्द के चार पर्यायवाची शब्द लिखिए?

उत्तर–दास - अनुचर, चाकर, सेवक, नौकर।

प्रश्न 19. 'ऊष्मा' शब्द के चार पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–ऊष्मा - तपन, गर्मी, ताप, जलन।

प्रश्न 20. 'मोहन बहुत <u>चतुर</u> है।' रेखांकित शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए?

उत्तर–चतुर - विज्ञ, निपुण, नागर, पटु, कुशल।

प्रश्न 21. बासर, दिवस शब्द किसके पर्यायवाची हैं?

उत्तर–दिन के।

प्रश्न 22. भृत्य, चाकर शब्द किसके पर्यायवाची हैं?

उत्तर–अनुचर के।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का उनके उचित पर्यायवाची शब्द से मिलान कीजिए-

(1) पक्षी	(क) शशांक, शशि
(2) मित्र	(ख) सखा, सहचर
(3) बिजली	(ग) पवन, समीर
(4) हवा	(घ) खग, विहग
(5) चन्द्रमा	(ङ) दामिनी, चपला

उत्तर–1. घ, 2. ख, 3. ङ, 4. ग, 5. क।

प्रश्न 2. नीचे लिखे शब्दों में से सही पर्यायवाची शब्दों पर गोला लगाइए-

(1) तालाब - सरोवर, ताल, सरिता

(2) पेड़ - जंगल, तरु, वृक्ष

(3) समीप - दूर, पास, निकट

(4) मित्र - दोस्त, परिवार, सखा

उत्तर– (1) तालाब - (सरोवर), (ताल), सरिता

(2) पेड़ - जंगल, (तरु), (वृक्ष)

(3) समीप - दूर, (पास), (निकट)

(4) मित्र - (दोस्त), परिवार, (सखा)

प्रश्न 3. पर्यायवाची शब्द से क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर–ऐसे शब्द जिनके अर्थ समान हों अर्थात् किसी शब्द-विशेष के लिए प्रयुक्त समानार्थक शब्दों को पर्यायवाची

शब्द कहते हैं। जैसे— गौ- गाय, धेनु, सुरभि, माहेयी, पयस्विनी, दोग्धी।
जगत- भव, जग, संसार, विश्व, जगती, लोक, दुनिया।
गणेश- विनायक, गजानन, लम्बोदर, गणनायक, गणपति।
प्रश्न 4. देवता, लक्ष्मी चपला में से किन्हीं दो के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–देवता—देव, सुर, अमर, विबुध।
लक्ष्मी—रमा, पद्मा, श्री, कमला।
चपला—विद्युत्, तड़ित, सौदामिनी, बिजली।
प्रश्न 5. आँख, पर्वत, बादल में से किन्हीं दो शब्दों के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–आँख—नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु।
पर्वत—गिरि, शैल, भूधर, नग।
बादल—मेघ, घन, पयोद, जलद।
प्रश्न 6. जल, बादल, नयन में से किन्हीं दो शब्दों के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–जल—पानी, तोय, वारि, सलिल।
बादल—घन, पयोद, पयोधर, जलद।
नयन—नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग्।
प्रश्न 7. सागर, पृथ्वी, पक्षी में से किन्हीं दो के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–सागर—समुद्र, जलधि, पयोधि, रत्नाकर।
पृथ्वी—धरती, अचला, धरा, मेदिनी।
पक्षी—विहग, खेचर, नभचर, पखेरू।
प्रश्न 8. अमृत, हिरण और आकाश के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–अमृत—सुधा, पीयूष, अमिय, सुरभोग।
हिरण—कुरंग, सारंग, मृग, चमरी, कृष्णसार।
आकाश—नभ, व्योम, गगन, अम्बर।
प्रश्न 9. पुत्र, चन्द्रमा और संसार के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–पुत्र—सुत, आत्मज, तनुज, तनय।
चन्द्रमा—शशि, विधु, मयंक, सुधांशु।
संसार—जगत्, भव, जग, विश्व।
प्रश्न 10. घर, कपड़ा और रात के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर–घर—गृह, निकेतन आवास, सदन।
कपड़ा—वस्त्र, वसन, अम्बर, पट।
रात—निशा, रजनी, विभावरी, यामिनी।

ब. विलोम शब्द

विलोम शब्द का अर्थ है- उल्टा या विपरीत। ऐसे शब्द जो परस्पर विरोधी या विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे—अमृत का विलोम शब्द विष है।

यहाँ पर कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्द दिये जा रहे हैं—

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अन्त	आदि	अथ	इति
अनुकूल	प्रतिकूल	अनुग्रह	विग्रह
अनुराग	विराग	अनुज	अग्रज
अर्वाचीन	प्राचीन	अस्त	उदय
अपकार	उपकार	अधम	उत्तम
आय	व्यय	आकाश	पाताल

आशा	निराशा	आस्तिक	नास्तिक
अधिक	न्यून	अगला	पिछला
अतीत	वर्तमान	अदेह	सदेह
अनाथ	सनाथ	अर्थ	अनर्थ
अक्षम	सक्षम	अल्प	अति
अधुनातन	पुरातन	अमृत	विष
अघ	अनघ	असीम	ससीम
अचेत	सचेत	आकर्षण	विकर्षण
आगत	अनागत	आदान	प्रदान
आदर	अनादर	आर्य	अनार्य
आस्था	अनास्था	आचार	अनाचार
आज्ञा	अवज्ञा	आयात	निर्यात
आरोह	अवरोह	आतुर	अनातुर
आधा	पूरा	आरोप	प्रत्यारोप
आहूत	अनाहूत	आरम्भ	समाप्ति
आदर्श	यथार्थ	आर्द्र	शुष्क
आसक्ति	अनासक्ति	आत्म	अनात्म
आविर्भाव	तिरोभाव	आमिष	निरामिष
आवृत	अनावृत	आगमन	निर्गमन
आलस्य	अनालस्य	इष्ट	अनिष्ट
ईश्वर	अनीश्वर	इहलोक	परलोक
इच्छा	अनिच्छा	उन्नति	अवनति
उत्थान	पतन	उदार	अनुदार
उत्कृष्ट	निकृष्ट	उष्ण	शीत
उद्धत	विनीत	ऐक्य	अनैक्य
एकान्त	अनेकान्त	कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कृश	स्थूल	कृपण	उदार
कृतज्ञ	कृतघ्न	कोमल	कठोर
अपना	पराया	अलभ्य	लभ्य
अदेय	देय	अजेय	जेय
अग्र	पश्च	अपेक्षित	अनपेक्षित
अनुलोम	प्रतिलोम	अपयश	सुयश
अक्षम	सक्षम	अपेक्षा	उपेक्षा
अर्थ	अनर्थ	अकाल	सुकाल
आधार	निराधार	अपराध	निरपराध
अल्पायु	दीर्घायु	अकर्मक	सकर्मक
अल्पज्ञ	बहुज्ञ	कर्कश	सुशील
कसूर	बेकसूर	क्रय	विक्रय
कामी	ब्रह्मचारी	कृष्ण	शुक्ल
कमी	बाहुल्य	कृत्रिम	प्राकृत
खण्डन	मण्डन	ख्यात	कुख्यात
खरा	खोटा	गुरु	लघु
गौण	मुख्य	घात	प्रतिघात

चेतन	जड़	चंचल	स्थिर
चपल	गम्भीर	चर	अचर
चतुर	मूर्ख	जय	पराजय
जन्म	मृत्यु	जातीय	विजातीय
जीवन	मरण	जंगम	स्थावर
तन्द्रा	जागरण	तेजस्वी	निस्तेज
त्वरि	मंथर	तीव्र	मन्थर
त्याग	भोग	दुर्जन	सज्जन
दु:ख	सुख	दुर्गम	सुगम
नूतन	पुरातन	निद्रा	जागरण
निन्दा	स्तुति	निराकार	साकार
प्रत्यक्ष	परोक्ष	पण्डित	मूर्ख
बंधुत्व	शत्रुत्व	बुराई	भलाई
बेडौल	सुडौल	मलिन	निर्मल
मिथ्या	सत्य	ममत्व	परत्व
वाद	प्रतिवाद	विधवा	सधवा
शुभ	अशुभ	सृष्टि	प्रलय
सापेक्ष	निरपेक्ष	स्वाधीन	पराधीन
स्वस्थ	अस्वस्थ	सार्थक	निरर्थक
स्थावर	जंगम	सात्विक	तामसिक
स्वकीय	परकीय	सुलभ	दुर्लभ
स्थिर	अस्थिर	सुगम	दुर्गम
सुगन्ध	दुर्गन्ध	सुकर	दुष्कर
संन्यासी	गृहस्थ	सुमति	कुमति
साकार	निराकार	सुबोध	दुर्बोध
सौभाग्य	दुर्भाग्य	सन्धि	विग्रह
सृजन	संहार	समष्टि	व्यष्टि
स्वार्थ	परार्थ	हर्ष	शोक
हित	अहित	हिंसा	अहिंसा
ह्रस्व	दीर्घ	होनी	अनहोनी
हार	जीत	हेय	प्रेय
हास	रोदन	हानि	लाभ
ह्रास	वृद्धि	क्षुद्र	विराट्
क्षमा	दण्ड	क्षर	अक्षर
क्षणिक्	शाश्वत	ज्ञात	अज्ञात
ज्ञान	अज्ञान	ज्ञेय	अज्ञेय
ज्ञानी	अज्ञानी	श्राप	आशीर्वाद
श्रोता	वक्ता		

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. मैं निरामिष नहीं..................भोजन पसन्द करता हूँ।

रेखांकित का सही विलोम शब्द बताइए—
(क) मांसाहारी (ख) शाकाहारी (ग) फलाहारी (घ) सामिष।
2. 'सृष्टि' और..................विधाता के खेल हैं।
रेखांकित का सही विलोम शब्द बताइए—
(क) विनाश (ख) प्रलय (ग) विध्वंस (घ) मरण।
3. जीवन में सुख और..................मिलता रहता है।
रेखांकित का सही विलोम शब्द बताइए—
(क) कष्ट (ख) व्याधि (ग) दुःख (घ) वेदना।
4. यह पुस्तक सुबोध है जबकि वह..................है।
रेखांकित शब्द का विलोमार्थी बताइए—
(क) दुर्बोध (ख) दुर्जेय (ग) दुर्गम्य (घ) क्लिष्ट।
5. इस संसार में कुछ लोग आस्तिक होते हैं और कुछ..................।
रेखांकित शब्द का विपरीतार्थक लिखिए—
(क) अनास्था (ख) नास्तिक (ग) निन्दक (घ) नादान।
6. 'अर्वाचीन' का सही विलोम शब्द चुनिये—
(क) नूतन (ख) नव्य (ग) प्राचीन (घ) नवीन।
7. 'कृपण' का उपयुक्त विलोम शब्द चुनें—
(क) परोपकारी (ख) दानी (ग) भिखारी (घ) स्वार्थी।
8. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'जड़' शब्द का विलोम है?
(क) पेड़ (ख) पहाड़ (ग) चेतन (घ) संसार।
9. 'अपने सहोदर को साथ देखकर उसका साहस द्विगुणित हो गया।' रेखांकित शब्द का विलोम शब्द है—
(क) कुधर (ख) अधर (ग) परोदर (घ) अन्योदर्य।
10. 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' रेखांकित शब्द का विलोम शब्द है—
(क) वाचक (ख) वाचिक (ग) प्रतिघात (घ) वाचाल।
उत्तर—1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख) 6. (ग) 7. (ख) 8. (ग) 9. (ग) 10. (घ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. व्यक्ति की पहचान उसके अभिजात अथवा .... कुल में उत्पन्न होने से नहीं, उसके गुणों से होती है। 'अभिजात' का विलोम होगा? (अवजात/अभिहार)
2. स्वयं हलाहल का घूंट पीकर वे दूसरों को .... ही पिलाते रहे। 'हलाहल' का विलोम शब्द है। (अमृत/गरल)
3. 'आग्रह' शब्द का विलोम शब्द .... है। (अनाग्रह/दुराग्रह)
4. इष्ट शब्द का विलोमार्थी .... है। (अभिलाषा/अनिष्ट)
5. गाँधी जी के अनुसार अत्याचार का उत्तर .... से देना ही मनुष्यता है। अत्याचार का विलोम शब्द है। (शिष्टाचार/सदाचार)
6. 'चेतन' का विलोम .... है। (जड़/अस्थिर)
7. 'भग्न' का विपरीतार्थक .... है। (अक्षत/ध्वंस)
8. 'शान्त' का विपरीतार्थक .... है। (गम्भीर/उद्विग्न)
9. मौन का विलोम शब्द .... है। (मुखर/मौखिक)
10. 'गमन' शब्द का विपरीतार्थक बनाने के लिए आप .... उपसर्ग का प्रयोग करेंगे। (आ/अनु)
11. 'स्पृश्य' शब्द को विलोमार्थक बनाने के लिए आप .... उपसर्ग का प्रयोग करेंगे। (नि/अ)
12. राजन अपव्ययी है जबकि उसका भाई अजय .... है। अपव्ययी का विपरीतार्थक है। (कृपण/मितव्ययी)

उत्तर—1. अवजात, 2. अमृत, 3. दुराग्रह, 4. अनिष्ट, 5. सदाचार, 6. जड़, 7. अक्षत, 8. उद्विग्न, 9. मुखर, 10. आ, 11. अ, 12. मितव्ययी।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. गृहस्थी के बन्धन के कारण मैं कहीं आ-जा नहीं सकता। रेखांकित शब्द का विलोम शब्द क्या है?

उत्तर–मुक्ति।

प्रश्न 2. सज्जन मृदुभाषी होते हैं? रेखांकित शब्द का विलोम शब्द क्या है?

उत्तर–कटु भाषी।

प्रश्न 3. सुनीता का प्रफुल्ल मन एकाएक .... हो गया। प्रफुल्ल का विलोम शब्द क्या है?

उत्तर–उदास।

प्रश्न 4. 'आदमी स्वयं समस्या पैदा करता है।' 'समस्या' का विलोम शब्द क्या है?

उत्तर–समाधान।

प्रश्न 5. 'झूठ' और 'आयोजन' का विलोम क्या है?

उत्तर–सच और वियोजन।

प्रश्न 6. विलोम शब्द किसे कहते हैं?

उत्तर–किसी भी शब्द का उल्टा या विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

प्रश्न 7. 'निर्दय' का विपरीतार्थक क्या है?

उत्तर–सहृदय।

प्रश्न 8. 'जड़' का उल्टा क्या है?

उत्तर–चेतन।

प्रश्न 9. 'साकार' का विलोम शब्द क्या होता है?

उत्तर–निराकार।

प्रश्न 10. 'आयात' के विपरीतार्थक क्या है?

उत्तर–निर्यात।

प्रश्न 11. 'अमृत' का उल्टा क्या है?

उत्तर–विष।

प्रश्न 12. 'व्यष्टि' का विलोम शब्द क्या होगा?

उत्तर–समष्टि।

प्रश्न 13. 'अनुरक्त' का उपयुक्त विलोम है?

उत्तर–विरक्त

प्रश्न 14. 'उत्थान' शब्द का विपरीतार्थक क्या होगा?

उत्तर–पतन

प्रश्न 15. वह अपने विषय का पूर्ण अभिज्ञ है, रेखांकित शब्द का विलोम है?

उत्तर–अनभिज्ञ।

प्रश्न 16. तिमिर और दुर्गति शब्दों का विलोम क्या होगा?

उत्तर–आलोक और सुगति।

प्रश्न 17. 'संकीर्ण मानसिकता के व्यक्ति आगे नहीं बढ़ पाते।' रेखांकित शब्द का विलोम क्या होगा?

उत्तर–विस्तीर्ण।

प्रश्न 18. 'अनुज' का विपरीतार्थक शब्द है?

उत्तर–अग्रज।

प्रश्न 19. 'संयोजिता' का उल्टा क्या है?

उत्तर–विभाजिता।

प्रश्न 20. 'ग्रामीण विकास होना जरूरी है।' रेखांकित शब्द का विलोम क्या है?

उत्तर–ह्रास।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. दिए गए शब्दों के सही विलोम शब्दों को उनके सामने रखें–

(1) दिन	(क) सस्ता
(2) ईमानदार	(ख) झूठा
(3) सच्चा	(ग) दण्ड
(4) पुरस्कार	(घ) बेईमान
(5) महँगा	(ङ) रात

उत्तर—1. रात, 2. बेईमान, 3. झूठा, 4. दण्ड, 5. सस्ता।

प्रश्न 2. सही विलोम शब्द चुनिए।

ससीम, अवज्ञा, नीचे, ठण्डा, बाहर, उधर, बुरा, गन्दा

(1) अन्दर – [ ]	(2) ऊपर – [ ]
(3) गरम – [ ]	(4) इधर – [ ]
(5) साफ – [ ]	(6) अच्छा – [ ]
(7) असीम – [ ]	(8) आज्ञा – [ ]

उत्तर—1. बाहर, 2. नीचे, 3. ठण्डा, 4. उधर, 5. गन्दा, 6. बुरा, 7. ससीम, 8. अवज्ञा।

प्रश्न 3. उल्टे अर्थ वाले शब्दों का मिलान कीजिए-

(1) कृपण	(क) भोग
(2) अकाल	(ख) उदार
(3) ममत्व	(ग) परोक्ष
(4) प्रत्यक्ष	(घ) परत्व
(5) त्याग	(ङ) सुकाल

उत्तर—1. ख, 2. ङ, 3. घ, 4. ग, 5. क।

प्रश्न 4. निम्न के उल्टे अर्थ वाले शब्द लिखिए।

(1) उष्ण	(5) तीव्र ....
(2) ऐक्य	(6) निन्दा ....
(3) गौण	(7) ईश्वर ....
(4) चतुर	(8) उत्कृष्ट ....

उत्तर—1. शीत, 2. अनैक्य, 3. मुख्य, 4. मूर्ख, 5. मन्थर, 6. स्तुति, 7. अनीश्वर, 8. निकृष्ट ।

प्रश्न 5. सही विलोम शब्द पर गोला लगाइए-

(1) मुश्किल – आसान, नरम, कठिन

(2) अपना – सपना, दूसरा, पराया

(3) सफलता – निराशा, असफलता, सफल

(4) स्वर्ग – नरक, परलोक, देवलोक

उत्तर—1. आसान, 2. पराया, 3. असफलता, 4. नरक ।

प्रश्न 6. रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द बताइए-

(1) पत्थर कठोर होता है।

(2) हमें हमेशा दूसरों का भला करना चाहिए।

(3) चाँदी के दाम महँगे हो गए हैं।

(4) कृष्ण धनी थे।

(5) क्रिकेट के मैच में भारत की टीम जीत गई।

उत्तर—1. कोमल, 2. बुरा, 3. सस्ते, 4. निर्धन, 5. हार।

प्रश्न 7. रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) दिल्ली में अनेक प्राचीन और .... इमारतें हैं।

(2) हमें लोगों की बुराई नहीं .... के बारे में सोचना चाहिए।
(3) व्यवसाय में लाभ या .... तो होती ही रहती है।
(4) करेला कड़वा होता है लेकिन आम .... होता है।

उत्तर—1. नवीन, 2. भलाई, 3. हानि, 4. मीठा।

प्रश्न 8. नीचे लिखे शब्दों के आगे कोष्ठक में उनके विलोम शब्द लिखिए—

1. घात	( )	2. उद्धत	( )
3. जीवन	( )	4. अवनति	( )
5. आलस्य	( )	6. निद्रा	( )

उत्तर—1. प्रतिघात, 2. विनीत, 3. मरण, 4. उन्नति, 5. अनालस्य, 6. जागरण।

प्रश्न 9. निम्नांकित वाक्यों में कालांकित पदों के विपरीतार्थक शब्द द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—
(1) उसने अपना काम **आकाश** व ....एक करके पूरा कर लिया।
(2) **पण्डित** समझदारी से और......................नासमझी से कार्य करते हैं।
(3) सज्जन व्यक्ति **शत्रु** और......................को समान समझते हैं।
(4) महापुरुष **ममत्व** तथा......................की भावना नहीं रखते हैं।
(5) संसार में **सुख** और.................., **जन्म** और..............का क्रम बना रहता है।

उत्तर—(1) पाताल, (2) मूर्ख, (3) मित्र, (4) परत्व, (5) दुःख, मृत्यु।

स. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द ध्वनि और उच्चारण की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं। ऐसे शब्दों के प्रायः युग्म-रूप होते हैं तथा इनमें समानार्थकता-एकार्थकता का आभास होता है। ऐसे शब्दों को—(1) समोच्चरित एकार्थक तथा (2) एकार्थ भिन्नार्थक कहा जाता है।

(1) श्रुति समभिन्नार्थक (समोच्चरित) शब्द

यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द दिये जा रहे हैं—

	शब्द	**अर्थ**		**शब्द**	**अर्थ**
1.	अनल	आग	2.	अनु	पीछे
	अनिल	हवा		अणु	छोटा
3.	अविराम	लगातार	4.	अर्चन	पूजा
	अभिराम	सुन्दर		अर्जन	संग्रह
5.	अंस	कन्धा	6.	अवलम्ब	सहारा
	अंश	हिस्सा		अविलम्ब	शीघ्र
7.	अविज्ञ	मूर्ख	8.	अन्त	समाप्त
	अभिज्ञ	विद्वान्		अन्त्य	अन्तिम
9.	अन्य	दूसरा	10.	अविहित	अनुचित
	अन्न	अनाज		अभिहित	कथित
11.	अभिनय	अनुकरण	12.	अलि	भौंरा
	अभिनव	नया		आली	सखी
13.	अम्बुज	कमल	14.	आकर	खजाना
	अम्बुद	बादल		आकार	बनावट
15.	अभय	निडर	16.	अम्ब	आम्र वृक्ष
	उभय	दोनों		अम्भ	जल
17.	आभरण	गहना	18.	आदि	प्रारम्भ
	आवरण	ढकना		आदी	आदत

19.	अनिष्ट	बुरा	20.	अर्घ	अंजलि भर जल देना
	अनिष्ठ	निष्ठाहीन		अर्घ्य	बहुमूल्य
21.	अरि	शत्रु	22.	अशक्त	कमजोर
	अरी	सम्बोधन (स्त्री.)		आसक्त	मोहित
23.	आसन	बिछौना	24.	अहि	सर्प
	आसन्न	समीप		अह	दिन
25.	अचार	आम आदि का अचार	26.	अचल	पर्वत
	आचार	आचरण		अचला	पृथ्वी
27.	इति	समाप्ति	28.	उधार	ऋण
	ईति	दैवी आपत्ति		उद्धार	मुक्ति
29.	उद्धत	उद्दण्ड	30.	उर	हृदय
	उद्यत	तैयार		उरु	विस्तृत, बड़ा
31.	उद्योत	प्रकाश	32.	एव	ही
	उद्योग	उपाय		एवं	और
33.	ओर	तरफ	34.	कटक	सेना
	और	दूसरा		कंटक	काँटा
35.	कच	बाल	36.	कुल	वंश
	कुच	स्तन		कूल	किनारा
37.	कृत	किया हुआ	38.	कोर	किनारा
	क्रीत	खरीदा हुआ		कौर	ग्रास
39.	कृती	चतुर	40.	क्रम	सिलसिला
	कृति	रचना		कर्म	कार्य
41.	कीट	कीड़ा	42.	केसर	सिंह की जटा
	कटि	कमर		केशर	सुगन्धित पत्तियाँ
43.	कोश	म्यान	44.	कोशल	अवध प्रदेश
	कोष	खजाना		कौशल	नैपुण्य
45.	कलि	कलियुग	46.	खर	गधा
	कली	कोंपल		खुर	पशु के खुर
47.	गृह	घर	48.	गर्व	घमण्ड
	ग्रह	नक्षत्र		गर्भ	आन्तरिक भाग
49.	घन	बादल	50.	चर्म	चमड़ा
	घना	गाढ़ा		चरम	अन्तिम
51.	चरण	पैर	52.	छत	छत/छान, छापर
	चारण	एक जाति		क्षत	घाव
53.	चिता	मुर्दा जलाने वाली	54.	छात्र	विद्यार्थी
	चिन्ता	सोचनीय भाव		क्षात्र	क्षत्रिय सम्बन्धी
55.	ज़रा	थोड़ा	56.	जलद	बादल
	जरा	बुढ़ापा		जलज	कमल
57.	तरंग	लहर	58.	तरणि	सूर्य
	तुरंग	घोड़ा		तरणी	नाव
59.	तर्क	बहस	60.	तोष	सन्तुष्टि
	तक्र	छाछ		तोश	हिंसा
61.	दारा	स्त्री	62.	द्रव	तरल पदार्थ
	द्वारा	माध्यम		द्रव्य	धन

63.	दिन	दिवस	64.	दग्ध	जला हुआ
	दीन	गरीब		दुग्ध	दूध
65.	द्विप	हाथी	66.	दशा	अवस्था
	द्वीप	टापू		दिशा	ओर
67.	धरा	पृथ्वी	68.	धनी	धनवान्
	धारा	प्रवाह		धणी	स्वामी
69.	धान	अन्न विशेष	70.	नीर	पानी
	धन्य	सराहना		नीड़	घोंसला
71.	नारी	स्त्री	72.	निर्झर	झरना
	नाड़ी	नब्ज		निर्जर	देवता
73.	निधन	मृत्यु	74.	निन्दा	बुराई
	निर्धन	गरीब		निद्रा	नींद
75.	निर्माण	रचना	76.	नक्र	मगरमच्छ
	निर्वाण	मोक्ष		नर्क	नरक
77.	नम	गीला	78.	नम्र	विनीत
	नमः	नमस्कार		नरम	कोमल
79.	प्रकार	तरीका	80.	प्रसाद	कृपा
	प्राकार	परकोटा		प्रासाद	महल
81.	पावस	वर्षा	82.	पथ	रास्ता
	पायस	खीर		पथ्य	स्वास्थ्यप्रद वस्तु
83.	प्रवाह	बहाव	84.	पुरुष	मनुष्य
	प्रभाव	महत्त्व		परुष	कठोर
85.	प्रणीत	रचित	86.	प्रथा	परम्परा
	परिणीत	विवाहित		पृथा	कुन्ती
87.	पाणि	हाथ	88.	प्रकृत	यथार्थ
	पानी	जल		प्रकृति	स्वभाव
89.	पवन	हवा	90.	पीड़ा	दर्द
	पावन	पवित्र		पीढ़ा	चौकी
91.	प्रहार	चोट	92.	प्रतिहार	द्वारपाल
	परिहार	समाधान		प्रत्याहार	निवारण
93.	प्रमाण	सबूत	94.	प्रमत्त	मदमस्त
	प्रणाम	नमस्कार		प्रमदा	स्त्री
95.	पता	स्थान-सूचक	96.	परिणाम	नतीजा
	पत्ता	पेड़ का पत्ता		परिमाण	मात्रा
97.	बहन	सहोदर	98.	भाग	हिस्सा
	वहन	ढोना		भाग्य	तकदीर
99.	बलि	भेंट	100.	भवन	घर
	बली	बलवान्		भुवन	संसार
101.	बहु	अत्यधिक	102.	मद	अभिमान
	बहू	पुत्रवधू		मद्य	शराब
103.	मूल	जड़	104.	मातृ	माता
	मूल्य	कीमत		मात्र	केवल
105.	लक्ष	लाख	106.	वसन	वस्त्र
	लक्ष्य	निशाना		व्यसन	बुरी आदत

107.	विष	जहर	108.	व्रत	उपवास
	विस	कमलनाल		वृत्त	घेरा
109.	वृन्द	समूह	110.	व्यंजन	खाद्य वस्तुएँ
	वृन्त	डण्ठल		व्यजन	पंखा
111.	वाम	टेढ़ा	112.	वारिद	बादल
	वामा	स्त्री		वारिधि	समुद्र
113.	व्याध	शिकारी	114.	शकल	मुँह की बनावट
	व्याधि	रोग		सकल	सब
115.	शंकर	शिव	116.	शर	बाण
	संकर	मेल		सर	तालाब
117.	शुल्क	फीस	118.	स्व	स्वयं
	शल्क	छाल		श्वा	कुत्ता
119.	शिति	श्याम	120.	शची	इन्द्राणी
	सित	सफेद		शुची	पवित्र
121.	शूर	वीर	122.	शव	लाश
	सूर	सूर्य		सब	सम्पूर्ण
123.	शम	शान्ति	124.	शील	सदाचरण
	सम	समान		सिल	पत्थर
125.	श्वजन	कुत्ता	126.	समान	बराबर
	स्वजन	अपना व्यक्ति		सम्मान	आदर
127.	समिति	सभा	128.	सर्ग	सृष्टि
	सम्मति	सलाह		स्वर्ग	देवलोक
129.	सुधि	याद	130.	सिर	मस्तक
	सुधी	विद्वान्		सीर	हल
131.	सुअन	पुत्र	132.	स्वपच	ब्राह्मण
	सुमन	पुष्प		श्वपच	चाण्डाल
133.	स्रोत	प्रवाह	134.	स्वेद	पसीना
	श्रोत्र	कान		श्वेत	सफेद
135.	संग	साथ	136.	हरण	ले जाना
	संघ	समूह		हिरण	मृग
137.	हितू	उपकारी	138.	हत	मरा हुआ
	हेतु	कारण		हित	उपकार
139.	हृद्	हृदय	140.	हास	हँसी
	ह्रद	तालाब		ह्रास	कमी
141.	हय	घोड़ा	142.	हरि	विष्णु
	हेय	त्याज्य		हर	शिव
143.	हिम	बर्फ	144.	हाट	बाजार
	हेम	सोना		हाड़	हड्डी
145.	हस्त	हाथ	146.	क्षात्र	क्षत्रिय धर्म
	हस्ती	हाथी		क्षेत्र	स्थान
147.	श्रवण	सुनना, कान	148.	श्रद्धा	पूज्य भाव
	श्रमण	भिक्षु		श्राद्ध	पितरों का श्राद्ध

149.	सुत	पुत्र	150.	सुर	देवता
	सूत	धागा, सारथि		सूर	सूर्य
151.	स्वान	कोलाहल	152.	शाला	स्थान, भवन
	श्वान	कुत्ता		साला	पत्नी का भाई
153.	स्वगत	अपने आप	154.	हरित	हरा
	स्वागत	सम्मान		हृत	चुराया हुआ
155.	हाल	दशा	156.	सदेह	शरीर सहित
	हाला	मदिरा		सन्देह	संशय
157.	शारद	शरत्कालीन	158.	शमी	एक पेड़
	शारदा	सरस्वती		समीर	वायु
159.	सील	मुहर	160.	सारंग	मोर
	शील	सदाचरण		सारंगी	एक वाद्य-यन्त्र

(2) एकार्थ-भिन्नार्थक

यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिये जा रहे हैं, जिनमें सूक्ष्म अर्थ-भेद रहता है, परन्तु उन शब्द-युग्मों से एकार्थ की प्रतीति होती है—

1. **अस्त्र**—फेंककर प्रहार करने का हथियार, जैसे—बाण।
   शस्त्र—हाथ से पकड़कर प्रहार करने का हथियार, जैसे—तलवार।
2. **अभिभाषण**—लिखित भाषण।
   व्याख्यान—मौखिक भाषण।
3. **अनुरोध**—विनयपूर्वक हठ।
   आग्रह—हठ।
4. **अहंकार**—स्वयं को उचित से अधिक मानना।
   अभिमान—गुण होने का घमण्ड होना।
5. **आधि**—मानसिक कष्ट।
   व्याधि—शारीरिक कष्ट या रोग।
6. **ईर्ष्या**—बिना कारण के शत्रुता रखना।
   द्वेष—कारणवश किसी से शत्रुता रखना।
7. **उत्साह**—किसी कार्य विशेष को करने की उमंग।
   साहस—साधन के अभाव में भी कार्य करने की लगन।
8. **उद्यम**—किसी कार्य में निरन्तर लगे रहना।
   उद्योग—परिश्रम या उपाय करना।
9. **उपहार**—अन्य को दिया जाने वाला।
   भेंट—बड़ों को दी जाने वाली।
10. **नमस्कार**—बराबर वालों के प्रति नम्रता दिखाना।
    अभिवादन—आदर के लिए खड़ा होना।
11. **मूर्ख**—जो समझाने पर भी नहीं समझे।
    अज्ञ—समझदार, किन्तु किसी विषय-विशेष में अनजान।
12. **रीति**—अपने कुल या वंश में प्रचलित प्रथा।
    नीति—लोक-हित के लिए समाज द्वारा बनाये हुए नियम।
13. **सहानुभूति**—दूसरों के सुख-दु:ख को अपना समझना।
    संवेदना—दूसरों को दु:खी देखकर दु:ख प्रकट करना।
14. **प्रयत्न**—मानसिक या शारीरिक श्रम।
    प्रयास—मन लगाकर कोई कार्य करने की चेष्टा करना।

15. **भय**—कारणवश किसी अनिष्ट की आशंका से डरना।
त्रास—किसी के द्वारा दिये जाने वाले कष्ट की कल्पना।
16. **लज्जा**—किसी भी बुरे कार्य के हो जाने पर दूसरों से शर्म।
ग्लानि—किसी गलत काम के हो जाने पर दिल में दु:खी होना।
17. **पाप**—धर्म-सम्बन्धी नियमों का उल्लंघन।
अपराध—सामाजिक या नैतिक नियमों का उल्लंघन।
18. **सेवा**—देवता या पूज्य व्यक्तियों को सन्तुष्ट करने के लिए कार्य करना।
शुश्रूषा—रोगी या वृद्ध-जनों की सहायता-सेवा करना।
19. **अति**—बहुत अधिक।
अधिक—सामान्यत: अधिक।
20. **आचार**—सच्चा आचरण।
व्यवहार—व्यक्तिगत आचरण।
21. **अवस्था**—जीवन का एक भाग।
आयु—सम्पूर्ण जीवन का समय।
22. **अन्त**—समाप्त, आखिर।
इति—विनाश, समाप्ति।
23. **कष्ट**—शारीरिक दु:ख।
क्लेश—मानसिक दु:ख।
24. **कारण**—फल का मूल रूप, निमित्त।
हेतु—अभिप्राय, प्रयोजन।
25. **कर्त्तव्य**—नैतिक बन्धनयुक्त कार्य।
कार्य—सामान्य काम।
26. **खेद**—ग्लानि, मन की उदासीनता व्यक्त करना।
शोक—मृत्यु पर दु:ख प्रकट करना।
27. **नमस्ते**—छोटों का बड़ों के लिए अभिवादन करना।
नमस्कार—बराबर वालों को अभिवादन करना।
28. **निर्णय**—फैसला।
न्याय—सत्य-असत्य प्रकट करना।
29. **निवेदन**—नम्रतापूर्वक कहना।
प्रार्थना—छोटों द्वारा बड़ों को नम्रतापूर्वक कहना।
30. **प्रेम**–किसी व्यक्ति से स्वाभाविक प्रेम करना।
स्नेह–बड़ों को छोटों के प्रति प्रेम रखना।
31. **मति**—मन की मनन करने की श्रेष्ठ वृत्ति का नाम।
बुद्धि—मन की विवेकयुक्त इच्छा-शक्ति का नाम।
32. **मुनि**—धर्म का आचार-विचार करने वाला साधु।
ऋषि—वेदों का ज्ञाता तपस्वी।
33. **राजा**—साधारण राजा।
सम्राट्—राजाओं का राजा, चक्रवर्ती राजा।
34. **लोभ**—दूसरे की वस्तु ग्रहण करने की भावना।
लालसा—तीव्र इच्छा रखना।
35. **शंका**—सन्देह करना।
आशंका—कोई दु:खमय कल्पना करना।

36. **सरल**—काम का बहुत आसान होना।
सुगम—कठिनाई होते हुए भी कठिन न लगना।
37. **साहस**—भय रहित शक्ति।
वीरता—प्राकृतिक शक्ति।
38. **वेदना**—शारीरिक पीड़ा होना।
व्यथा—मानसिक कष्ट होना।
39. **श्रद्धा**—महापुरुषों के प्रति आदर भाव।
भक्ति—ईश्वर के प्रति प्रेमभाव।
40. **सहसा**—अचानक घटित होना।
अकस्मात्—अचानक घटित होने के बारे में जान न सकें।
41. **सन्देह**—निश्चित ज्ञान न होना।
भ्रम—मिथ्या ज्ञान होना।
42. **प्रमाण**—सबूत, उचित निदर्शन।
परिमाण—नाप-तौल की मात्रा।
43. **कुल**—वंश या कुटुम्ब।
कूल—नदी-तालाब का किनारा।
44. **आलस्य**—शरीर का ढीलापन, सुस्ती।
प्रमाद—जान-बूझकर काम न करना।
45. **अभिज्ञ**—कुशल या पूर्ण जानकार।
अविज्ञ—अज्ञानी, नासमझ।
46. **अगम**—जहाँ पहुँचा न जा सके।
दुर्गम—जहाँ पहुँचना अतीव कठिन हो।
47. **शोक**—किसी की मृत्यु पर होने वाली मनोव्यथा।
दुःख—साधारण मानसिक पीड़ा।
48. **निद्रा**—गहरी नींद आना।
तन्द्रा—ऊँघना, जागने और सोने के बीच की दशा।
49. **महोदय**—अपने से बड़ों के लिए प्रयुक्त।
महाशय—सामान्य सम्मानित लोगों के प्रति सम्बोधन।
50. **संस्कृति**—आध्यात्मिक उन्नति।
सभ्यता—भौतिक उन्नति।
51. **नाप**—लम्बाई-चौड़ाई में नापना।
माप—वजन करना या तरल पदार्थ को मापना।
52. **प्रज्ञा**—अन्तर्दृष्टि से सम्पन्न बुद्धि।
प्रतिभा—जन्मजात विशिष्ट योग्यता एवं नवोन्मेष की बुद्धि।
53. **अपेक्षा**—तुलना अर्थ में बनिस्पत।
उपेक्षा—तिरस्कार या अवज्ञा करना।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों के लिए सही विकल्प चुनिए–

1. प्रकृति ईश्वर की..................है।
(क) लेन (ख) देन (ग) मेल (घ) खेल।

2. वन प्रकृति का..................उपहार है।
(क) अनुपम (ख) अपार (ग) अगठित (घ) अटूट।
3. मनुष्य और प्रकृति आदिकाल से ही एक-दूसरे पर..................रहे हैं।
(क) आश्रित (ख) पूरक (ग) सहयोगी (घ) विरोधी।
4. वह प्रकृति की..................गोद में पला-बढ़ा।
(क) स्वच्छ (ख) मलिन (ग) लघु (घ) सुरम्य।
5. यह कृति तुलसीदास द्वारा..................है।
(क) कृती (ख) कृत (ग) कृति (घ) क्रीत।
6. इस सामाजिक कार्य की..................मत करो।
(क) अपेक्षा (ख) प्रवाह (ग) उपेक्षा (घ) अवस्था।
7. हमें देश की..................ठीक करनी चाहिए।
(क) दिशा (ख) अवस्था (ग) व्यवस्था (घ) दशा।
8. परिश्रम करने का अच्छा..................रहेगा।
(क) प्रमाण (ख) परिणाम (ग) परिमाण (घ) परिणय।
9. 'तरणि' का श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द क्या है?
(क) तरणी (ख) चाप (ग) द्वीप (घ) द्रव्य।
10. 'अम्बुज-अम्बुद' शब्द-युग्म के सही अर्थ-भेद का चयन कीजिए।
(क) बादल-कमल (ख) समुद्र-बादल (ग) कमल-बादल (घ) भ्रमर-मकरन्द।

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (क) 4. (घ) 5. (ख) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ख) 9. (क) 10. (ग)।

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मीरा .... राम सगे भाई-बहन हैं। (ओर/और)
2. हमे अपने राष्ट्रीय ध्वज का .... करना चाहिए। (सम्मान/सामान)
3. राम के स्थान पर कोई .... व्यक्ति आ गया। (अन्न/अन्य)
4. शास्त्रीय संगीत की .... लोकगीत अधिक प्रसिद्ध होते जा रहे हैं। (उपेक्षा/अपेक्षा)
5. खेल प्रतियोगिता का .... देखकर सभी बच्चे उछल पड़े। (प्रणाम/परिणाम)
6. भारत में गर्मी के मौसम में हिन्द महासागर से उठी नम हवाओं के उत्तर .... में चलने से बारिश होती है। (दिशा/दशा)
7. जो व्यक्ति ....-दुखी व्यक्ति की मदद करता है ईश्वर सदैव उसके साथ होता है। (दिन/दीन)
8. चन्द्रमा एक .... है। (उपगृह/उपग्रह)
9. किसी की .... नहीं करनी चाहिए। (अपेक्षा/उपेक्षा)
10. नौका नदी के .... डूब गई। (मध्य/मद्य)
11. भयंकर गर्मी के कारण पानी के सभी .... सूख गये हैं। (स्रोत/श्रोत)
12. दो माह बाद भी नहीं टूटी प्रशासन की ....। (निद्रा/तन्द्रा)

उत्तर–1. और, 2. सम्मान, 3. अन्य, 4. अपेक्षा, 5. परिणाम, 6. दिशा, 7. दीन, 8. उपग्रह, 9. उपेक्षा, 10. मध्य, 11. स्रोत, 12. निद्रा।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. शरीर के साथ-शक का युग्म शब्द क्या है?
उत्तर–सदेह-संदेह।
प्रश्न 2. विचारों का आदान प्रदान-क्रोध का युग्म शब्द क्या है?
उत्तर–विमर्श-विमर्ष।
प्रश्न 3. एक पक्षी-हँसना का युग्म शब्द क्या है?
उत्तर–हंस-हँस।
प्रश्न 4. सौ वर्ष-पतिव्रता स्त्री का युग्म शब्द क्या है?

उत्तर—शती-सती।

प्रश्न 5. नव-नव्य युग्म का क्या अर्थ है?

उत्तर—नौ-नया।

प्रश्न 6. भव-भव्य समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर—संसार-सुन्दर।

प्रश्न 7. बुद्धि-ज्ञान एकार्थ शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए?

उत्तर— बुद्धि- इससे कर्त्तव्य का निश्चय होता है।
ज्ञान- इन्द्रियों द्वारा प्राप्त हर अनुभव।

प्रश्न 8. 'अपना बेटा' और 'कोई भी लड़का' इन शब्दों का एकार्थ शब्द बताइए।

उत्तर—पुत्र-बालक।

प्रश्न 9. 'आध्यात्मिक उन्नति' और 'भौतिक उन्नति' इन शब्दों का एकार्थ शब्द बताइए।

उत्तर—संस्कृति और सभ्यता।

प्रश्न 10. 'चिन्ह' और 'लक्षण' एकार्थ भिन्नार्थक शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर—निशान और विशेषताएँ।

प्रश्न 11. 'काल' और 'युग' शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर—समय की सता और समय की सीमा।

प्रश्न 12. 'कृति-कृती' शब्दों को वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए?

उत्तर— कृति- 'रामचरितमानस' एक महान कृति है।
कृती- अनूप जलोटा कृती गायक है।

प्रश्न 13. 'मूल और मूल्य' शब्दों को वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए?

उत्तर— मूल- सुनील सारी झंझटों का मूल है।
मूल्य- मूल्य वृद्धि से उपभोक्ता परेशान हैं।

प्रश्न 14. 'लक्ष्य-लक्ष' शब्दों का अर्थगत अन्तर बताइए?

उत्तर— लक्ष्य- उद्देश्य- मेरे जीवन का लक्ष्य सुयोग्य डॉक्टर बनना है।
लक्ष- लाख- राजा ने मंत्री को दो लक्ष मुद्रायें दीं।

प्रश्न 15. 'यथेष्ट-स्थेष्ट' एकार्थ शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर— यथेष्ट- जैसा चाहा हो गया।
स्थेष्ट- अत्यन्त दृढ़।

प्रश्न 16. 'मास-मांस' युग्म शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर— मास - महीना।
मांस - गोश्त।

प्रश्न 17. 'सुत-सूत' शब्दों में क्या अन्तर है?

उत्तर— सुत - बेटा।
सूत - सारथि।

प्रश्न 18. 'स्वक्ष और स्वच्छ' शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके अन्तर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर— स्वक्ष - सुन्दर आँख - उनके स्वक्षों में जादू है।
स्वच्छ - साफ - स्वच्छ पानी पीना चाहिए।

प्रश्न 19. 'शुचि-सूची' युग्म शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर— शुचि - पवित्र।
सूची - सूई।

प्रश्न 20. 'कष्ट और क्लेश' एकार्थ भिन्नार्थक शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर— कष्ट - शारीरिक दुःख।
क्लेश - मानसिक दुःख।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. निम्नलिखित श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखो–

1. कर्म - क्रम 2. गृह - ग्रह
3. शकल - सकल 4. वृन्द - वृन्त

उत्तर– 1. कर्म - कार्य ; क्रम - सिलसिला
2. गृह - घर ; ग्रह - नक्षत्र
3. शकल - मुँह की बनावट ; सकल - सब
4. वृन्द - समूह ; वृन्त - डण्ठल

प्रश्न 2. उचित श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–
दिन, दिशा, ग्रह, गृह, और, ओर, नीर, कपाट, नीड़

1. पक्षी पेड़ पर अपना .... बनाते हैं।
2. सूर्य प्रातः पूर्व .... से उगता हैं।
3. मन्दिर के .... बन्द हैं।
4. राम .... आदित्य मित्र हैं।
5. घर का पर्यायवाची .... है।

उत्तर– 1. पक्षी पेड़ पर अपना नीड़ बनाते हैं।
2. सूर्य प्रातः पूर्व दिशा से उगता है।
3. मन्दिर के कपाट बन्द हैं।
4. राम और आदित्य मित्र हैं।
5. घर का पर्यायवाची गृह है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित समोच्चरित भिन्नार्थक शब्दों का वाक्यों द्वारा अन्तर स्पष्ट कीजिए–
(1) बाग - बाघ (2) पूछ - पूँछ (3) पिला - पीला

उत्तर– 1. बाग - बाग में फूल खिले हुए हैं।
बाघ - बाघ जंगल में रहता है।
2. पूछ - राहुल का पता साहिल से पूछ लो।
पूँछ - कुत्ता पूँछ हिलाता है।
3. पिला - थोड़ा पानी पिला दो।
सूरजमुखी का फूल पीला है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित एकार्थ भिन्नार्थक शब्दों का अर्थगत अन्तर स्पष्ट कीजिए–
सूचना-सन्देश, हत्या-बलिदान, योग्यता-क्षमता

उत्तर– 1. सूचना - विशेष घटना का समाचार
सन्देश - व्यक्तिगत सूचना
2. हत्या - प्राण लेना
बलिदान - देश व धर्म के लिए प्राण देना
3. योग्यता - गुणयुक्त योग्यता
क्षमता - शारीरिक क्षमता

प्रश्न 5. नीचे दिए गए एकार्थ भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ बताइए–
अर्चना - पूजा, अशुद्धि - भूल, अनुशीलन - अध्ययन

उत्तर– 1. अर्चना - बाह्य सत्कार। नैवेद्य
पूजा - मानसिक एवं बाह्य दोनों
2. अशुद्धि - लिखने व बोलने में गलती
भूल - सब प्रकार की गलती
3. अनुशीलन - सूक्ष्म एवं गहन चिन्तन
अध्ययन - सामान्य पढ़ना

प्रश्न 6. 'सामान-समान' और 'व्यजन-व्यंजन' युग्म-शब्दों का अर्थगत अन्तर बताइए?

उत्तर– सामान - पदार्थ - विवाह में लगने वाले सामानों की सूची तैयार करनी है।
समान - बराबर - गाँधीजी के समान अहिंसा के प्रेमी बहुत ही कम होंगे।
व्यजन - पंखा - गर्मी में व्यजन से राहत मिलती है।
व्यंजन - सब्जी, तरकारी - कल दीदी ने स्वादिष्ट व्यंजन बनाये थे।

प्रश्न 7. निम्नांकित समोच्चरित भिन्नार्थक शब्दों में अर्थगत अन्तर बताइए—
ईशा-ईषा, अर्घ-अर्घ्य, स्वपच-श्वपच, स्रोत-श्रोत्र।

उत्तर–ईशा - ऐश्वर्य। ईषा - हल की लम्बी लकड़ी।
अर्घ - अंजलि भर जल देना। अर्घ्य - बहुमूल्य।
स्वपच - ब्राह्मण। श्वपच - चाण्डाल।
स्रोत - झरना। श्रोत्र - कान।

प्रश्न 8. 'पावस-पायस' समोच्चरित भिन्नार्थक शब्दों और 'स्त्री-पत्नी' एकार्थी शब्दों का इस प्रकार वाक्य-प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए।

उत्तर–पावस—पावस ऋतु में मेघ खूब गरजते-बरसते हैं।
पायस—गाय के दूध की पायस स्वादिष्ट होती है।
स्त्री—हमारे देश में स्त्री-समाज अभी तक पिछड़ा हुआ है।
पत्नी—सीता श्रीरामचन्द्र की पत्नी थी।

प्रश्न 9. निम्नलिखित शब्दों को भिन्न-भिन्न वाक्यों में इस प्रकार प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए—कृपा, दया एवं श्रद्धा, भक्ति।

उत्तर–कृपा—महापुरुष अपने अनुयायियों पर सदैव कृपा रखते हैं।
दया—भिखारी की दुर्दशा देखकर दया आ ही जाती है।
श्रद्धा—सत्य, अहिंसा और मानव-प्रेम के कारण गाँधीजी पर सभी लोग श्रद्धा रखते थे।
भक्ति—आस्तिक व्यक्ति ईश्वर-भक्ति में प्रवृत्त होता है।

प्रश्न 10. '**अविज्ञ**' और '**अभिज्ञ**'/ '**नाप**' और '**माप**' युग्म-शब्दों में अर्थगत अन्तर बताइए।

उत्तर–अविज्ञ—अज्ञानी, नासमझ।
अभिज्ञ—कुशल या पूर्ण जानकार।
नाप—लम्बाई-चौड़ाई में नापना, जैसे कपड़ा नापना।
माप—वजन या दूध आदि तरल पदार्थ को मापना।

6. मुहावरे

मुहावरे–'मुहावरा' शब्द का अर्थ है—'अभ्यास'। जब कोई शब्द-समूह या वाक्यांश निरन्तर अभ्यास के कारण सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ का बोध कराये अर्थात् ऐसे सुगठित शब्द समूह जिनसे लक्षणाजन्य और कभी-कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है, तो उसे मुहावरा कहते हैं। जैसे—अँगूठा दिखाना, आँखें खुलना आदि।

मुहावरों का प्रयोग करने से भाषा में सरसता, रोचकता, भावात्मकता तथा लालित्य का समावेश हो जाता है। मुहावरे से वाक्यार्थ में विशेष चमत्कार और व्यंग्यार्थ उत्पन्न होता है। मुहावरे का शाब्दिक अर्थ न लेकर उसका भावार्थ लिया जाता है। मुहावरों का मूल रूप अपरिवर्तित रहता है तथा इसके अन्त में क्रिया-पद प्रयोग अवश्य किया जाता है। वाक्य-रचना में मुहावरा अपना विशिष्ट अर्थ व्यक्त करता है जो कि कई बार विभिन्न अर्थों की व्यंजना करता है।

यहाँ प्रमुख मुहावरे **अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग** सहित दिये जा रहे हैं—

1. **अंग-अंग टूटना**—अत्यधिक थक जाना।
   वाक्य-प्रयोग—किसान दिनभर खेतों में काम करके जब घर लौटता है, तो उसके अंग-अंग टूट जाते हैं।
2. **अपना उल्लू सीधा करना**—अपना स्वार्थ पूरा करना।
   वाक्य-प्रयोग—आज नेतागण देशहित नहीं सोचते, सब अपना-अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं।

3. **अँगूठा दिखाना**—निराश करना या तिरस्कारपूर्वक मना करना।
वाक्य-प्रयोग—मन्त्री महोदय ने कहा कि मेरे कार्यालय में आना, तुम्हारी माँगें पूरी कर देंगे, परन्तु वहाँ जाने पर माँग पूरी करने के बदले उन्होंने अँगूठा दिखा दिया।
4. **आँखों का तारा**—बहुत प्रिय।
वाक्य-प्रयोग—बालक श्रवण अपने माता-पिता के लिए आँखों का तारा था।
5. **अंगारे उगलना**—क्रोध में कठोर शब्द बोलना।
वाक्य-प्रयोग—अपनी सन्तान का अहित करने वाले के प्रति माता-पिता अंगारे उगलते हैं।
6. **आँखों में धूल झोंकना**—धोखा देना।
वाक्य-प्रयोग—आजकल कई ऐसे ठग शहर में घूम रहे हैं जो जनता की आँखों में धूल झोंककर चम्पत हो जाते हैं।
7. **आसमान पर चढ़ना**—बहुत अभिमान करना।
वाक्य-प्रयोग—रमाकांत को थोड़ा-सा सम्मान और उच्च पद क्या मिला, वह तो आसमान पर चढ़ गया।
8. **आग-बबूला होना**—गुस्से में भर जाना।
वाक्य-प्रयोग—अपने अधीनस्थ लोगों की थोड़ी-सी गलती पर रमेश आग-बबूला हो जाता है।
9. **आँखें खुलना**—समझ में आ जाना।
वाक्य-प्रयोग—देशी घी में वनस्पति की मिलावट करने की बात उजागर होने से हमारी आँखें खुल गईं।
10. **आस्तीन का साँप होना**—महान् धोखेबाज।
वाक्य-प्रयोग—छोटे भाई की डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए मैंने रात-दिन परिश्रम किया, लेकिन उसने डॉक्टर बनते ही मुझसे मुँह फेर लिया, वह तो पूरा आस्तीन का साँप निकला।
11. **आँख दिखाना**—गुस्से से देखना।
वाक्य-प्रयोग—जो मुझे आँख दिखाएगा, मैं उसकी आँख फोड़ दूँगा।
12. **आँखें चुरा लेना**—अनदेखा करना।
वाक्य-प्रयोग—कर्जदार हमेशा ऋणदाता से आँखें चुराने का प्रयास करता है।
13. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना**—अपनी बड़ाई आप करना।
वाक्य-प्रयोग—ओछे स्वभाव के व्यक्ति प्रायः अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने के आदी होते हैं।
14. **अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना**—जानबूझकर अपना नुकसान करना।
वाक्य-प्रयोग—लगातार समझाने पर भी रमेश ने जर्दा नहीं छोड़ा और उसे गले का कैंसर हो गया, ऐसा करके तो उसने अपने पाँव पर स्वयं कुल्हाड़ी मारी है।
15. **अक्ल पर पत्थर पड़ना**—कुछ समझ में न आना।
वाक्य-प्रयोग—उस समय मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे, जबकि मैं बाढ़ से घिर गया था।
16. **अपना राग अलापना**—अपनी ही बातों पर बल देना।
वाक्य-प्रयोग—कश्मीर समस्या को लेकर पाकिस्तान अपना ही राग अलाप रहा है।
17. **आँखें बिछाना**—सत्कार करना।
वाक्य-प्रयोग—राजस्थानी लोग मेहमान के आगमन पर आँखें बिछा देते हैं।
18. **आकाश के तारे तोड़ना**—असम्भव कार्य करना।
वाक्य-प्रयोग—नेताजी ने विदेशों में रहकर आजाद हिन्द फौज का गठन कर आकाश के तारे तोड़ना जैसा काम किया।
19. **आकाश-पाताल एक करना**—कठिन प्रयत्न करना।
वाक्य-प्रयोग—परीक्षा का समय समीप आने पर छात्र आकाश-पाताल एक कर देते हैं।
20. **आड़े हाथ लेना**—खरी-खरी सुनाना।
वाक्य-प्रयोग—पत्नी की बातों में आकर बूढ़े माँ-बाप को घर से निकालने वाले कालू को पड़ोसियों ने आड़े हाथों लिया।

21. **आसमान सिर पर उठाना**—बहुत शोर करना।
वाक्य-प्रयोग—विपक्षी नेता सरकार की छोटी-सी गलती पर आसमान सिर पर उठा लेते हैं।
22. **आँच न आने देना**—थोड़ा भी कष्ट न होने देना।
वाक्य-प्रयोग—प्रत्येक स्नेही माता-पिता अर्थाभाव में भी अपनी अबोध सन्तान पर आँच नहीं आने देते हैं।
23. **ईंट से ईंट बजाना**—समूल नष्ट-भ्रष्ट कर देना।
वाक्य-प्रयोग—शिवाजी ने मुगलों की ईंट से ईंट बजाने की प्रतिज्ञा की थी।
24. **ईद का चाँद होना**—बहुत दिनों बाद दिखाई देना।
वाक्य-प्रयोग—रमेश तो आजकल ईद का चाँद हो गया है जो कि मिलना-जुलना भी बन्द कर दिया।
25. **ईंट का जवाब पत्थर से देना**—कड़ाई से पेश आना।
वाक्य-प्रयोग—पाकिस्तानी सेना द्वारा घुसपैठ करने पर भारतीय सेना ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।
26. **इधर-उधर की हाँकना**—गप्पें मारना।
वाक्य-प्रयोग—बातूनी लोग सदा इधर-उधर की हाँका करते हैं।
27. **उल्टी गंगा बहाना**—नियम के विरुद्ध कार्य करना।
वाक्य-प्रयोग—वह रात में तो जागता है और दिन में सोता रहता है, वह हमेशा उल्टी गंगा बहाता है।
28. **उल्टी माला फेरना**—बुरा सोचना या अहित चाहना।
वाक्य-प्रयोग—दुष्ट प्रकृति के लोग सदा उल्टी माला फेरते हैं।
29. **उल्लू बनाना**—मूर्ख बनाना।
वाक्य-प्रयोग—ठगी करने वाले लोग आसानी से दूसरों को उल्लू बनाकर अपना काम साध लेते हैं।
30. **उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना**—धीरे-धीरे पराई वस्तु पर अधिकार जमाना।
वाक्य-प्रयोग—बंगलादेशी शरणार्थी कुछ समय के लिए सरकारी पार्क में क्या रहे कि वे अब वहाँ से हटने का नाम नहीं ले रहे, इसी को कहते हैं उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना।
31. **उल्टे उस्तरे से मूँडना**—ठगना या हानि पहुँचाना।
वाक्य-प्रयोग—काला धन्धा करने वाले कुछ व्यापारी ग्राहकों को उल्टे उस्तरे से मूँडते हैं।
32. **उँगली उठाना**—लांछन लगाना या दोषारोपण करना।
वाक्य-प्रयोग—बेटी को हॉस्टल भेजते समय पिताजी ने समझाया कि ऐसा कोई काम न करना जिससे लोग उंगली उठायें।
33. **उँगली पर नचाना**—वश में करना।
वाक्य-प्रयोग—मुनीम काम-धन्धे में इतना चतुर है कि सेठजी को उँगली पर नचाता है।
34. **एक लाठी से हाँकना**—समान व्यवहार करना।
वाक्य-प्रयोग—पुलिस वाले कभी-कभी सज्जन और दुर्जन का विचार न करके सबको एक लाठी से हाँकते हैं।
35. **एड़ी-चोटी का जोर लगाना**—पूरी शक्ति लगाकर कार्य करना।
वाक्य-प्रयोग—कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना ने एड़ी-चोटी का जोर लगाया, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली।
36. **ओंठ चबाना**—क्रोध प्रकट करना।
वाक्य-प्रयोग—अपना अपमान होते देखकर हर कोई ओंठ चबाने लगता है।
37. **ओखली में सिर देना**—जान-बूझकर विपत्ति में फँसना।
वाक्य-प्रयोग—भले आदमी द्वारा किसी अपराधी को पनाह देना ओखली में सिर देना जैसा है।
38. **कमर कसना**—तैयार हो जाना।
वाक्य-प्रयोग—कमर कस लो; न जाने कब शत्रुओं से लोहा लेना पड़े।
39. **काम आना**—युद्ध में मारा जाना।
वाक्य-प्रयोग—रूस-यूक्रेन युद्ध में दोनों तरफ के अनेक सैनिक काम आये।

40. **काम तमाम कर देना**—मार देना।
वाक्य-प्रयोग—अपराधियों ने छोटी-सी बात पर अपने ही एक साथी का काम तमाम कर दिया।
41. **कलेजा मुँह को आना**—घबरा जाना।
वाक्य-प्रयोग—पिताजी को दिल का दौरा पड़ने की सूचना मिलते ही उसका तो कलेजा मुँह को आ गया।
42. **कसौटी पर कसना**—परखना।
वाक्य-प्रयोग—उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्तियाँ कसौटी पर कसकर करनी चाहिए।
43. **कमर टूटना**—कमजोर पड़ जाना।
वाक्य-प्रयोग—मूल्य वृद्धि के कारण साधारण जनता की तो कमर ही टूटने लगी।
44. **काल के वश में होना**–मौत के शिकंजे में होना।
वाक्य-प्रयोग–प्राणी जन्म लेते ही काल के वश में हो जाता है।
45. **कलई खुलना**—भेद खुल जाना।
वाक्य-प्रयोग—एक आतंकवादी के पकड़े जाने से दिल्ली में बम विस्फोट करने की कलई खुल गई।
46. **कान कतरना**—बहुत चतुराई दिखाना।
वाक्य-प्रयोग—कई व्यापारी सौदा बेचने में अपने ग्राहकों के कान कतर लेते हैं।
47. **कौड़ी के मोल बिकना**—अत्यधिक सस्ता होना।
वाक्य-प्रयोग—इस साल सरसों की फसल इतनी अधिक हुई कि वह कौड़ी के मोल बिकी।
48. **कान भरना**—झूठी-सच्ची शिकायत करना।
वाक्य-प्रयोग—कुछ चापलूस लोग अपने बड़े अधिकारियों के कान भरते रहते हैं।
49. **कागज काला करना**—व्यर्थ की बातें करना या लिखना।
वाक्य-प्रयोग—कागज काला करना अलग बात है और सत्कवि बनना अलग।
50. **कमर सीधी करना**—विश्राम करना।
वाक्य-प्रयोग—बूढ़ा किसान दिनभर खेतों में काम करके शाम को ही कमर सीधी कर पाता है।
51. **कान खड़े करना**—चौकन्ना रहना।
वाक्य-प्रयोग—रात में लूटपाट का हल्ला होने पर पड़ोसियों ने कान खड़े कर दिये।
52. **खटाई में पड़ना**—झंझट में पड़ना, व्यवधान होना।
वाक्य-प्रयोग—प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति होने वाली थी, परन्तु न्यायालय से रोक का आदेश आने से सारा मामला खटाई में पड़ गया।
53. **खून खौलना**—बहुत क्रोध आना।
वाक्य-प्रयोग—अपने पिताजी के हत्यारों का नाम सुनते ही उसका खून खौलने लगा।
54. **खेत रहना**—मारा जाना।
वाक्य-प्रयोग—चीनी आक्रमण के समय हथियारों की कमी से हमारे कई सैनिक खेत रहे।
55. **गजभर की छाती होना**—अत्यधिक साहसी होना।
वाक्य-प्रयोग—अगाध समुद्र में गोताखोरी के लिए गजभर की छाती होनी चाहिए।
56. **गुलछर्रे उड़ाना**—मौज-मस्ती में रहना।
वाक्य-प्रयोग—सहकारी बैंक से ऋण लेकर कुछ भ्रष्ट लोग गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।
57. **गड़े मुर्दे उखाड़ना**—पिछली बुरी बातें याद करना।
वाक्य-प्रयोग—अगर भविष्य में प्रेमपूर्वक रहना है, तो गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं।
58. **गले का हार होना**—अत्यन्त प्रिय।
वाक्य-प्रयोग—प्रत्येक माता अपनी अबोध सन्तान को गले का हार मानकर छाती से चिपकाये रहती है।
59. **गुड़-गोबर करना**—किया-कराया नष्ट करना।
वाक्य-प्रयोग—बारात में अच्छी रौनक थी, परन्तु कुछ बरातियों ने शराब पीकर सारे माहौल को गुड़-गोबर कर दिया।

60. **गागर में सागर भरना**—थोड़े में बहुत कुछ कर दिखाना।
वाक्य-प्रयोग—बिहारी के दोहों में इतने भाव भरे हैं कि जैसे गागर में सागर भरा हो।

61. **घड़ों पानी पड़ना**—अत्यन्त लज्जित होना।
वाक्य-प्रयोग—पुलिस इन्स्पेक्टर को जब पता चला कि चोरी करने वालों में उसका छोटा भाई भी शामिल था तो उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

62. **घी के दिए जलाना**—खुशियाँ मनाना।
वाक्य-प्रयोग—भगवान् श्रीराम के अयोध्या लौटने पर अयोध्यावासियों ने घी के दिए जलाए थे।

63. **घर फूँक तमाशा देखना**—अपने नुकसान पर प्रसन्न होना।
वाक्य-प्रयोग—हरी-भरी खेती को पाला मारने पर कौन किसान ऐसा होगा जो घर फूँक तमाशा देखेगा।

64. **घोड़े बेचकर सोना**—निश्चिन्त होना।
वाक्य-प्रयोग—घर की पहरेदारी पर चार सिपाही नियुक्त करके अधिकारी घोड़े बेचकर सो जाता है।

65. **चाँदी का जूता मारना**—रिश्वत लेकर काम बनाना।
वाक्य-प्रयोग—अनेक कार्यालयों में भ्रष्टाचार फैलने से चाँदी का जूता मारने से ही काम बनता है।

66. **चिकना घड़ा होना**—अत्यन्त बेशर्म, निर्लज्ज होना।
वाक्य-प्रयोग—नरेश को कितना ही समझाओ-धमकाओ, वह सुधरने वाला नहीं, वह तो चिकना घड़ा हो गया है।

67. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**—लज्जा का अनुभव करना।
वाक्य-प्रयोग—रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़े जाने पर पटवारी की दशा चुल्लू भर पानी में डूब मरने वाली हो गई।

68. **छठी का दूध याद आना**—घोर संकट में पड़ना।
वाक्य-प्रयोग—बांगलादेश की आजादी के युद्ध में जब शत्रु-सेना भारतीय सेनाओं से घिर गई, तो उन्हें छठी का दूध याद आ गया।

69. **छाती पर मूँग दलना**—खूब परेशान करना।
वाक्य-प्रयोग—आजकल के आवारा लड़के अपनी करतूतों से परिवार वालों की छाती पर मूँग दलते हैं।

70. **छाती पर साँप लोटना**—ईर्ष्या होना।
वाक्य-प्रयोग—दूसरों की तरक्की देखकर कुछ लोगों की छाती पर साँप लोट जाता है।

71. **जान पर खेलना**—साहसपूर्ण कार्य करना।
वाक्य-प्रयोग—जान पर खेलने वाले ही हिमालय की बर्फीली चोटियों पर आरोहण करने में सफल रहते हैं।

72. **जीती मक्खी निगलना**—जानबूझकर बेईमानी करना।
वाक्य-प्रयोग—कई भ्रष्ट व्यापारी जीती मक्खी निगलने में संकोच नहीं करते हैं।

73. **जमीन पर पैर न रखना**—अत्यधिक घमण्ड करना।
वाक्य-प्रयोग—ओछे व्यक्ति को यदि कोई उच्च सम्मान मिल जाता है, तो वह जमीन पर पैर नहीं रखता है।

74. **जहर का घूँट पीना**—असह्य बात सहन कर लेना।
वाक्य-प्रयोग—सास की जली-कटी बातें सुनकर बहू जहर का घूँट पीकर रह गयी।

75. **जूतियाँ चटकाना**—मारे-मारे फिरना या निरर्थक इधर-उधर घूमना।
वाक्य-प्रयोग—वर्तमान में कई शिक्षित युवक रोजगार की तलाश में जूतियाँ चटकाते फिरते हैं।

76. **झक मारना**—व्यर्थ परिश्रम करना।
वाक्य-प्रयोग—झक मारने से तो आराम करना ठीक रहता है।

77. **टक्कर लेना**—मुकाबला करना।
वाक्य-प्रयोग—आम चुनाव में प्रतिपक्षी उम्मीदवारों से कड़ी टक्कर लेने पर भी उसे पराजय ही मिली।

78. **टोपी उछालना**—बेइज्जती करना।
वाक्य-प्रयोग—दहेज लेने वालों की तो सरे आम टोपी उछालनी चाहिए।
79. **टाँग अड़ाना**—अवांछित व्यवधान डालना।
वाक्य-प्रयोग—कुछ लोग नेकी का काम तो करते नहीं और दूसरों के कामों में टाँग अड़ाते रहते हैं।
80. **डंके की चोट कहना**—स्पष्ट कहना।
वाक्य-प्रयोग—सत्यवादी व्यक्ति अपनी बात डंके की चोट से कहता है।
81. **डकार जाना**—किसी का धन या चीज लेकर हड़प जाना।
वाक्य-प्रयोग—देश में कई ऐसे गिरोह हैं जो विदेशों में नौकरी दिलाने के नाम पर युवकों से बड़ी रकम डकार जाते हैं।
82. **ढोल में पोल होना**—थोथा या सारहीन।
वाक्य-प्रयोग—चुनाव के अवसर पर की गई नेताओं की बड़ी-बड़ी घोषणाएँ ढोल में पोल होती हैं।
83. **ढपोर शंख होना**—झूठा या गप्पी आदमी, काम न करना।
वाक्य-प्रयोग—प्रमोद तो कुछ न कुछ बकता रहता है, वह तो ढपोर शंख है।
84. **ढिंढोरा पीटना**—अति प्रचारित करना।
वाक्य-प्रयोग—मन्दिर-निर्माण के लिए जो चन्दा देना हो, चुपचाप दो, उसका ढिंढोरा मत पीटो।
85. **तलवे चाटना**—खुशामद करना।
वाक्य-प्रयोग—कुछ लोग अपना स्वार्थ साधने के लिए नेताओं के तलवे चाटते रहते हैं।
86. **तीन-तेरह होना**—अलग-अलग होना।
वाक्य-प्रयोग—सामूहिक उत्पात मचाकर सभी गुण्डे भागकर तीन-तेरह हो गये।
87. **तूती बोलना**—खूब प्रभाव होना।
वाक्य-प्रयोग—एशिया महाद्वीप में अब भारत की तूती बोल रही है।
88. **तिल का ताड़ करना**—बढ़ा-चढ़ाकर बात करना।
वाक्य-प्रयोग—समाज में अफवाह फैलाने वाले लोग तिल का ताड़ कर देते हैं।
89. **तोते उड़ जाना**—आश्चर्यचकित होना या स्तब्ध हो जाना।
वाक्य-प्रयोग—जंगल में शेर की दहाड़ सुनते ही लकड़हारों के तोते उड़ गये।
90. **थूककर चाटना**—बात कहकर बदल जाना।
वाक्य-प्रयोग—मन्दिर-निर्माण के लिए सुरेश ने चन्दा देने की घोषणा कर दी, परन्तु बाद में वह थूककर चाट गया।
91. **थाह लेना**—भेद जानना या पता लगाना।
वाक्य-प्रयोग—अब मतदाता किसको वोट देगा, इसकी थाह लेना आसान नहीं है।
92. **दाल गल जाना**—काम बन जाना।
वाक्य-प्रयोग—यद्यपि पाकिस्तानी एजेण्टों ने भारत में अराजकता फैलाने की कोशिशें कीं, परन्तु उनकी दाल नहीं गली।
93. **दाँतों तले उँगली दबाना**—आश्चर्य करना।
वाक्य-प्रयोग—जादूगर द्वारा एक हाथ से हाथी को उठाने का करतब दिखाने पर सभी ने दाँतों तले उँगली दबा ली।
94. **दाँत खट्टे करना**—पराजित करना।
वाक्य-प्रयोग—भारतीय सैनिकों ने शत्रु-सेना के दाँत खट्टे कर दिये।
95. **दाल में काला होना**—सन्देहपूर्ण वस्तु होना।
वाक्य-प्रयोग—भारत में रहकर पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वाले व्यक्ति के चाल-चलन से लग रहा था कि दाल में कुछ काला है।

96. **दाँत पीसकर रह जाना**—क्रोध पीकर चुप रहना।
वाक्य-प्रयोग—लल्लू ने दादागीरी दिखाते हुए रमेश को थप्पड़ मार दिया, परन्तु वह बेचारा दाँत पीसकर रह गया।

97. **दाई से पेट छिपाना**—परिचित से रहस्य छिपाये रखना।
वाक्य-प्रयोग—एड्स रोग से ग्रस्त होने पर भी डॉक्टर से सामान्य बुखार का बहाना बनाना दाई से पेट छिपाना जैसा है।

98. **दिन-रात एक करना**—खूब परिश्रम करना।
वाक्य-प्रयोग—मेहनती छात्र परीक्षा के दिनों में दिन-रात एक कर देते हैं।

99. **दुम दबाकर भागना**—डर के मारे भागना।
वाक्य-प्रयोग—शेर की दहाड़ सुनकर सियार दुम दबाकर भाग जाते हैं।

100. **दोनों हाथों में लड्डू होना**—सब तरफ से लाभ या आनन्द होना।
वाक्य-प्रयोग—उसी दिन रामदीन के नाम एक लाख की लॉटरी खुली और उसी दिन उसकी सरकारी नौकरी लगी। इस तरह उसके दोनों हाथों में लड्डू हो गये।

101. **धाक जमाना**—रोब या प्रभाव जमाना।
वाक्य-प्रयोग—नेतागीरी में यदि आपकी धाक जम गई, तो प्रशासन भी आपकी बात मान लेगा।

102. **धूल में मिल जाना**—नष्ट हो जाना।
वाक्य-प्रयोग—इस संसार में यह पंच-भौतिक शरीर अन्त में धूल में मिल जाता है।

103. **नौ-दो ग्यारह होना**—भाग जाना।
वाक्य-प्रयोग—पुलिस के सिपाही को आते देखकर चोर नौ-दो ग्यारह हो गया।

104. **नमक-मिर्च लगाना**—बात बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
वाक्य-प्रयोग—कुछ लोग सामान्य बात को नमक-मिर्च लगाकर कहते हैं।

105. **नाकों चने चबाना**—बहुत परेशान करना या कष्ट झेलना।
वाक्य-प्रयोग—कुछ लोग विवाह हो जाने के बाद लड़की वालों से तरह-तरह की फरमाइश कर उन्हें नाकों चने चबाने को मजबूर करते हैं।

106. **नानी याद आना**—बहुत अधिक घबरा जाना।
वाक्य-प्रयोग—जोश में पहले तो दर्शनशास्त्र जैसा कठिन विषय ले लिया, अब पढ़ने में इतना श्रम करना पड़ता है कि नानी याद आ रही है।

107. **नाक रगड़ना**—खुशामद करना।
वाक्य-प्रयोग—स्वार्थी लोग अपना काम निकालने के लिए नाक रगड़ने में संकोच नहीं करते हैं।

108. **नाक कटना**—इज्जत जाना।
वाक्य-प्रयोग—चोरी के अपराध में अदालत की ओर से दंडित होने पर उसकी नाक कट गई।

109. **पानी का मोल होना**—बहुत सस्ता।
वाक्य-प्रयोग—अत्यधिक उपज हो जाने से अब मोटा अनाज पानी के मोल हो गया है।

110. **पहाड़ टूटना**—विपत्ति में पड़ना।
वाक्य-प्रयोग—राकेश के परिवार के चार लोगों की कार-दुर्घटना में मृत्यु हो गई, इससे उस पर पहाड़ टूट गया।

111. **पापड़ बेलना**—बेगार भुगतना या काफी संघर्ष करना।
वाक्य-प्रयोग—अब बेरोजगारी के कारण अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी पापड़ बेलने को मजबूर हैं।

112. **पेट में चूहे कूदना**—तेज भूख लगना।
वाक्य-प्रयोग—भोजन आज विलम्ब से मिलने के कारण मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

113. **पौ बारह होना**—पूरा लाभ मिलना, प्रसन्नता प्राप्त करना।
वाक्य-प्रयोग—व्यापार में सब ओर से सफल रहने वाले की पौ बारह होती है।

114. **पेट में दाढ़ी होना**—दिखने में सीधा पर चालाक।
वाक्य-प्रयोग—आप रामू को निरा गँवार मान रहे हैं, जबकि यह पेट में दाढ़ी लेकर पैदा हुआ है।
115. **पेट में बात न पचना**—कोई बात गुप्त न रख पाना।
वाक्य-प्रयोग—तुम मनीष को यह रहस्य मत कह देना, क्योंकि वह पेट में बात नहीं पचा पाता है।
116. **पानी-पानी होना**—शर्मिन्दा होना।
वाक्य-प्रयोग—दूध में पानी मिलाते पकड़े जाने पर दूधिया पानी-पानी हो गया।
117. **फूला न समाना**—अत्यधिक प्रसन्न होना।
वाक्य-प्रयोग—आठवीं बोर्ड की परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान पर उत्तीर्ण होने से रमा फूली नहीं समा रही है।
118. **फूटी आँख न सुहाना**—अच्छा न लगना।
वाक्य-प्रयोग—श्यामू की सौतेली माँ को वह फूटी आँख नहीं सुहाता है।
119. **बाल की खाल निकालना**—नुक्ता-चीनी करना।
वाक्य-प्रयोग—तुम्हें तो बात-बात पर बाल की खाल निकालने की आदत पड़ गई है।
120. **बाल बाँका न होना**—कुछ भी नुकसान न होना।
वाक्य-प्रयोग—आतंकवादियों ने गणतन्त्र दिवस समारोह में बम-विस्फोट की धमकी दी थी, परन्तु पुलिस की सतर्कता से बाल भी बाँका नहीं हुआ।
121. **बल्लियों उछलना**—बहुत प्रसन्न होना।
वाक्य-प्रयोग—एक लाख की लॉटरी मिलने से वह बल्लियों उछलने लगा।
122. **भंडा फोड़ना**—भेद खोल देना।
वाक्य-प्रयोग—पुलिस द्वारा कठोरता से पेश आने पर चोर ने अपने साथियों का भंडा फोड़ दिया।
123. **भाड़ झोंकना**—तुच्छ कार्य करना।
वाक्य-प्रयोग—वर्षों तक शिक्षण संस्था में रहे, परन्तु क्या वहाँ भाड़ झोंकते रहे या कुछ ज्ञान भी हासिल किया ?
124. **बर्र के छत्ते में हाथ देना**—किसी झगड़ालू व्यक्ति को छेड़ना।
वाक्य-प्रयोग—वह औरत तो बोलने में ही पत्थर मारती है, उसे समझाने-मनाने की बात तो बर्र के छत्ते में हाथ देना जैसा है।
125. **भीगी बिल्ली बनना**—मजबूरी में शान्त-सहमा रहना, कायर बनना।
वाक्य-प्रयोग—रणजीत वैसे तो तीसमारखाँ बनता था, परन्तु आज न जाने क्यों भीगी बिल्ली बना बैठा है !
126. **मुट्ठी गरम करना**—रिश्वत देना।
वाक्य-प्रयोग—ईमानदार लोग मुट्ठी गरम करने में विश्वास नहीं करते हैं।
127. **मुँह में खून लगना**—बुरी आदत पड़ जाना।
वाक्य-प्रयोग—घासीलाल के मुँह में तो खून लग गया है, जब तक नोट न दिखाओ वह फाइल आगे ही नहीं बढ़ाता है।
128. **मुँह में पानी आना**—जी ललचाना।
वाक्य-प्रयोग—मधुर एवं स्वादिष्ट पकवानों को देखकर सभी के मुँह में पानी आ जाता है।
129. **मुँह की खाना**—हार मानना।
वाक्य-प्रयोग—कारगिल युद्ध में पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी।
130. **रंग में भंग पड़ना**—आनन्दपूर्ण कार्य में बाधा पड़ना।
वाक्य-प्रयोग—रामदीन के विवाह के दिन अचानक उसके दादाजी का निधन हो गया, इससे वहाँ रंग में भंग पड़ गया।
131. **राई का पहाड़ बनाना**—जरा सी बात को खूब बढ़ाना।
वाक्य-प्रयोग—कुछ लोग साम्प्रदायिक दंगों में अफवाहें फैलाकर राई का पहाड़ बनाते हैं।
132. **रफूचक्कर हो जाना**—भाग जाना।
वाक्य-प्रयोग—पुलिस को आते देखकर उपद्रवी वहाँ से रफूचक्कर हो गये थे।

133. **रोंगटे खड़े होना**—डर से रोमांचित होना।
वाक्य-प्रयोग—रणथम्भौर अभयारण्य की सैर करते समय अचानक शेर को सामने देखकर हमारे रोंगटे खड़े हो गये थे।

134. **लोहा मानना**—बहादुरी स्वीकार करना।
वाक्य-प्रयोग—भारतीय सेना का सभी लोग लोहा मानते हैं।

135. **लोहे के चने चबाना**—कठिन काम करना।
वाक्य-प्रयोग—जोजीला दर्रे को पार करना लोहे के चने चबाना जैसा है।

136. **लुटिया डुबोना**—बरबाद करना।
वाक्य-प्रयोग—आजादी के बाद देश के विकास की सारी सम्भावनाएँ थीं, परन्तु राजनेताओं ने इसकी लुटिया डुबो दी।

137. **लोहा लेना**—टक्कर लेना।
वाक्य-प्रयोग—प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की बाधाओं से लोहा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए।

138. **विष उगलना**—जली-कटी बातें कहना।
वाक्य-प्रयोग—कल तक जो भाई-भाई थे, वे आज एक-दूसरे के लिए विष उगल रहे हैं।

139. **शेर की सवारी करना**—कठिन कार्य करना।
वाक्य-प्रयोग—आजकल जनता का प्रतिनिधित्व करना शेर की सवारी करना जैसा है, पता नहीं कब जनता नाराज होकर विरोध कर दे।

140. **सब्जबाग दिखाना**—लोभ देकर बहकाना।
वाक्य-प्रयोग—चुनावी सभाओं में नेतागण जनता को विकास कार्यक्रमों के सब्जबाग दिखाते हैं।

141. **सिर आँखों पर रखना**—आदर सहित आज्ञा मानना।
वाक्य-प्रयोग—प्रत्येक माँग का उचित समाधान करने वाले नेता को जनता अपने सिर आँखों पर रखती है।

142. **सितारा चमकना**—भाग्यशाली होना।
वाक्य-प्रयोग—जिस व्यक्ति का सितारा चमकता है, उसका हर काम लाभकारी रहता है।

143. **सिर पर कफन बाँधना**—मरने को प्रस्तुत होना।
वाक्य-प्रयोग—क्रान्तिकारी देशभक्त सिर पर कफन बाँधकर विदेशी सत्ता का विरोध करते थे।

144. **सिर पर हाथ होना**—सहारा होना, वरदहस्त होना।
वाक्य-प्रयोग—अगर किसी राजनेता का आपके सिर पर हाथ है, तो फिर राजकाज में आपको कोई दिक्कत नहीं रहेगी।

145. **हाय तौबा करना**—बड़ा परेशान होना।
वाक्य-प्रयोग—परीक्षा में फेल होने के कारण रमेश हाय तौबा करने लगा।

146. **हवा से बातें करना**—बहुत तेज दौड़ना।
वाक्य-प्रयोग—मैराथन दौड़ में हवा से बातें करने वाला ही विजयी रहता है।

147. **हवा लगना**—संगति का असर होना।
वाक्य-प्रयोग—अपनी सहेलियों की देखादेखी आजकल सीमा भी फैशनपरस्त हो गई है, आखिर उसे भी हवा लग गई।

148. **हाथ मलना**—पछताना।
वाक्य-प्रयोग—पहले पढ़ाई तो की नहीं, फलस्वरूप परीक्षा में फेल हो जाने से हाथ मलना पड़ेगा ही।

149. **हक्का-बक्का रहना**—आश्चर्यचकित होना।
वाक्य-प्रयोग—दूरदर्शन पर सुनामी की भयंकर लहरों को देखकर हम सब हक्के-बक्के रह गये।

150. **हाथ-पाँव मारना**—प्रयास करना।
वाक्य-प्रयोग—बेरोजगारी के कारण प्रत्येक युवक आजीविका के लिए हाथ-पाँव मार रहा है।

151. **हाथ को हाथ न सूझना**—घना अन्धकार होना।
वाक्य-प्रयोग—काले घने बादलों की छटा से घिरी अमावस्या की रात में हाथ को हाथ नहीं सूझता है।

152. **हाथ खींचना**—सहायता बन्द कर देना।
वाक्य-प्रयोग—यदि अमेरिका पाकिस्तान की मदद करने से हाथ खींच दे, तो वह मुसीबत में रहेगा।

153. **हाथ साफ करना**—चोरी करना।
वाक्य-प्रयोग—रेलगाड़ी में अपने सामान का पूरा ध्यान रखना, वरना कोई उस पर हाथ साफ कर देगा।

154. **हवा हो जाना**—भाग जाना।
वाक्य-प्रयोग—चोर-उचक्के अपना काम कर लेने के बाद हवा हो जाते हैं।

155. **हाथ पीले करना**—लड़की का विवाह करना।
वाक्य-प्रयोग—लड़की जब पढ़-लिखकर योग्य हो जावे, तभी उसके हाथ पीले करने चाहिए।

156. **हथियार डाल देना**—हार मान लेना।
वाक्य-प्रयोग—बांगलादेश की आजादी के युद्ध में पाक-सैनिकों ने अन्ततः हथियार डाल दिये थे।

157. **हाथ धोकर पीछे पड़ना**—बुरी तरह पीछा करना।
वाक्य-प्रयोग—आजकल कुछ ठग विदेशी पर्यटकों के हाथ धोकर पीछे पड़ जाते हैं।

158. **हाथ लगना**—अचानक प्राप्त होना।
वाक्य-प्रयोग—विरोधी पार्टियों को महँगाई का मुद्दा ऐसा हाथ लगा कि सरकारी पक्ष घबरा गया।

159. **हाथ मलते रह जाना**–पछताना।
वाक्य-प्रयोग—समय रहते परीक्षा की पूरी तैयारी नहीं की, अब हाथ मल रहे हो।

160. **हुड़दंग मचाना**—अशान्ति फैलाना।
वाक्य-प्रयोग—कर्मचारियों की हड़ताल के दौरान कुछ लोग हुड़दंग मचाते रहते हैं।

यहाँ कुछ मुहावरे अर्थसहित दिये जा रहे हैं—

1. **आँखें लाल होना**—गुस्से से देखना।
2. **आग-बबूला होना**—गुस्से से भर जाना।
3. **आटे-दाल का भाव मालूम होना**—कठिनाई में पड़ जाना।
4. **आँख का काँटा होना**—बुरा लगना।
5. **आग में घी डालना**—क्रोधी का क्रोध अधिक बढ़ाना।
6. **आग से खेलना**—जानबूझकर मुसीबत में फँसना।
7. **आसमान से बातें करना**—ऊँची कल्पना करना।
8. **अपना-सा मुँह लेकर रहना**—लज्जित होना।
9. **अरमान निकालना**—मन का गुब्बार पूरा करना।
10. **आँसू पीकर रह जाना**—भीतर-ही-भीतर दुःखी होना।
11. **आग पर पानी डालना**—उत्तेजित व्यक्ति को शान्त करना।
12. **आगा-पीछा करना**—सोच में पड़कर हिचकिचाना।
13. **उधेड़-बुन में पड़ना**—सोच-विचार करना।
14. **उड़ती चिड़िया पहचानना**—किसी की बात जान लेना।
15. **उल्टे उस्तरे से मूँडना**—ठगना।
16. **एक और एक ग्यारह होना**—मेल में शक्ति होना।
17. **कंधे से कंधा मिलाकर चलना**—पूरा साथ देना।
18. **कच्चा चिट्ठा खोलना**—भेद खोलना।
19. **कुएँ में बाँस डालना**—बहुत दूर तक खोज करना।
20. **काँटों का ताज होना**—सुन्दर पर कष्टदायी वस्तु होना।
21. **काटो तो खून नहीं**—कोई आश्चर्यकारी बात सुनकर दंग रहना।

22. **कानों में उँगली देना**—कोई बात न सुनना।
23. **कान पकड़कर निकालना**—अपमानित करना।
24. **काल के गाल में जाना**—मृत्यु की ओर बढ़ना।
25. **कान खड़े करना**—चौकन्ना रहना।
26. **काला नाग होना**—बुरा आदमी बनना।
27. **खाक में मिलना**—बर्बाद होना।
28. **खाका खींचना**—मजाक उड़ाना।
29. **गाल बजाना**—अपनी प्रशंसा स्वयं करना।
30. **गिरगिट की तरह रंग बदलना**—बहुत जल्दी निश्चय बदलना।
31. **घाव पर नमक छिड़कना**—दु:खी को और दु:ख देना।
32. **घाव हरा होना**—भूला हुआ दु:ख याद आना।
33. **घुटने टेक देना**—हार मान लेना।
34. **घाट-घाट का पानी पीना**—देश-देशान्तर में घूमकर अनुभव पाना।
35. **घर फूँककर तमाशा देखना**—अपने नुकसान पर प्रसन्न होना।
36. **चूड़ियाँ पहनना**—औरतों की तरह कायरता दिखाना।
37. **चोली-दामन का साथ**—अत्यन्त घनिष्ठता।
38. **चींटी के पर निकलना**—घमण्ड करना।
39. **छोटे मुँह बड़ी बात करना**—अपनी हैसियत से ज्यादा बात करना।
40. **छक्के छूट जाना**—घबरा जाना या हिम्मत हारना।
41. **जबानी जमा-खर्च करना**—कोरा आश्वासन देना, गप्पें मारना।
42. **जबान पर लगाम लगाना**—कम बोलना।
43. **जान के लाले पड़ना**—संकट में फँस जाना।
44. **झगड़ा मोल लेना**—विवाद में जान-बूझकर फँसना।
45. **टका-सा जवाब देना**—रूखा उत्तर देना या मना करना।
46. **टस से मस न होना**—जरा भी विचलित न होना।
47. **टेक निभाना**—वचन पूरा करना।
48. **टट्टी की ओट में शिकार खेलना**—छिपकर षड्यन्त्र रचना।
49. **डींग हाँकना**—झूठी बड़ाई करना।
50. **डोरी ढीली छोड़ना**—नियन्त्रण में ढील देना।
51. **तीन-पाँच करना**—झगड़ा करना या आनाकानी करना।
52. **दिन में तारे दिखाई देना**—घबड़ा जाना।
53. **दो टूक जवाब देना**—स्पष्ट कहना।
54. **दाने-दाने को तरसना**—अत्यन्त निर्धन होना।
55. **नाक में दम करना**—परेशान करना।
56. **निन्यानवे के फेर में पड़ना**—लोभ में फँसना, मोह होना।
57. **नाक पर मक्खी न बैठने देना**—शान पर बट्टा न लगने देना।
58. **नाक का बाल होना**—किसी के ज्यादा निकट होना।
59. **पाँचों उँगलियाँ घी में होना**—सब ओर से लाभ होना।
60. **प्राण हथेली पर लिए फिरना**—जीवन की परवाह न करना।
61. **फूटी आँख न सुहाना**—अच्छा न लगना।
62. **फूँक-फूँककर कदम रखना**—सावधानी बरतना।
63. **बाँसों उछलना**—प्रसन्न होना।

64. **बाँह पकड़ना**—सहारा देना।
65. **बेड़ा पार करना**—संकट से उबारना।
66. **बोझ हल्का करना**—संकट से मुक्त करना।
67. **मिट्टी में मिल जाना**—बर्बाद होना।
68. **मुट्ठी गरम करना**—रिश्वत देना।
69. **रोम-रोम खिल उठना**—प्रसन्न होना।
70. **लाल-पीला होना**—क्रोधित होना।
71. **लोटपोट होना**—बहुत प्रसन्न होना।
72. **लहू का घूँट पीना**—अपमान सहन करना।
73. **शहद लगाकर चाटना**—तुच्छ वस्तु को महत्त्व देना।
74. **सूरज को दीपक दिखाना**—अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना।
75. **सोने की चिड़िया हाथ से निकलना**—लाभपूर्ण वस्तु से वंचित रहना।
76. **सिक्का जमाना**—अधिकार या रौब स्थापित करना।
77. **हवाई किले बनाना**—थोथी कल्पना करना।
78. **होश फाख्ता होना**—घबरा जाना।
79. **होश सँभालना**—समझदार होना।
80. **होम करते हाथ जलना**—भला करते समय भला करने वाले का बुरा होना।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. 'मुट्ठी गरम करना' मुहावरे का अर्थ है—
   (क) अपमान करना (ख) हाथ तोड़ देना
   (ग) रिश्वत देना (घ) हथेली पर आग रखना।
2. 'जीती मक्खी निगलना' मुहावरे का अर्थ है—
   (क) मक्खी का धोखे से गले में पहुँच जाना
   (ख) मक्खी से घबरा जाना (ग) अपना अपराध छिपाना
   (घ) जानबूझकर बेईमानी करना।
3. 'घड़ों पानी पड़ जाना' मुहावरे का अर्थ है—
   (क) लज्जा से दब जाना (ख) चिन्ता में डूब जाना
   (ग) पसीने से भीग जाना (घ) वर्षा में भीगना।
4. 'छाती पर मूँग दलना' मुहावरे का अर्थ है—
   (क) कड़वी बात बोलना (ख) घोर संकट में पड़ना
   (ग) खूब परेशान करना (घ) मारे-मारे फिरना।
5. 'काम बिगाड़ना' अर्थ किस मुहावरे का है?
   (क) आसमान सिर पर उठाना (ख) लुटिया डुबोना
   (ग) कच्चा चिट्ठा खोलना (घ) इतिश्री करना।
6. 'घोर संकट में पड़ना' का अर्थबोधक मुहावरा है—
   (क) छठी का दूध याद आना (ख) टोपी उछालना
   (ग) जहर का घूँट पीना (घ) मुँह की खाना।
7. 'भय से रोमांचित हो जाना' का अर्थ-बोधक मुहावरा है—
   (क) दाँत खट्टे करना (ख) रोंगटे खड़े होना
   (ग) मुँह की खाना (घ) शेर की सवारी करना।

8. 'बिजली गिरना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है—
(क) घोर विपत्ति आना (ख) रोषपूर्वक बिगड़ना
(ग) चकाचौंध होना (घ) दिखाई नहीं देना।

9. 'गंगा नहाना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है—
(क) कठिन कार्य पूरा होना (ख) सदाचार का पालन करना
(ग) पवित्र होना (घ) कार्य को अधूरा छोड़ना।

10. 'वचन को निभाने वाला' मुहावरे का सही अर्थ क्या है—
(क) नाक रख लेना (ख) चेहरे से भोलापन झलकना
(ग) नासमझ होना (घ) लालची होना।

उत्तर—1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख) 6. (क) 7. (ख) 8. (क) 9. (क) 10. (क)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. मैं तो तुम पर बहुत विश्वास करता था, पर तुम तो .... निकले। (रंगे सियार/आँखों के तारे)
2. .... हो गया? किसी बात पर तो दृढ़ रहो। (मोटी अक्ल का/बेपैंदी का लोटा)
3. पढ़ाई में मेहनत कर मैं .... हो सकता हूँ। (अंधों में काना राजा/पैरों पर खड़ा होना)
4. जब पिता की मृत्यु हो गई तो राकेश को .... गया। (आटे-दाल का भाव मालूम/दुनियादारी का ज्ञान)
5. जब बहुत मेहनत करने के बाद भी मनोनुकूल परिणाम नहीं मिलता तो .... स्वाभाविक है। (हौसला पस्त होना/हतोत्साहित होना)
6. रमाकांत की बेटी ने अन्तर्जातीय विवाह किया तो सारे गाँव के लोगों ने उसका .... दिया। (हुक्का-पानी बंद कर/जाति से बाहर कर)
7. करोड़पति दीनानाथ की लॉटरी भी निकल आई। इसे कहते हैं ....। (सोने पे सोना होना/सोने पे सुहागा)
8. गरीब माँ-बाप अपना .... कर बच्चों को पढ़ाते हैं और वे चिन्ता नहीं करते। (गला-काट/पेट-काट)
9. युवकों को .... पर ही विवाह करना चाहिए। (अपने पैरों पर खड़े हो जाना/आग बबूला होने पर)
10. रामू मात्र आठवीं पास है, फिर भी उसकी सरकारी नौकरी लग गई। इसी को कहते हैं ....। (किस्मत चमकना/अंधे के हाथ बटेर लगना)
11. आज कर्ण की .... गए तभी तो दस लाख का मकान दो लाख में बेच दिया। (अक्ल पर धूल पड़ना/बुद्धि पर पत्थर पड़ना)
12. महेश मुझे बात-बात पर धमकी देता है यदि मैं उसकी बात नहीं मानूँगा तो वह मेरा .... देगा। (पर्दाफाश करना/भेद खोलना)

उत्तर—1. रंगे सियार, 2. मोटी अक्ल का, 3. पैरों पर खड़ा होना, 4. आटे-दाल का भाव मालूम होना, 5. हौसला पस्त होना, 6. हुक्का-पानी बन्द कर, 7. सोने पर सुहागा, 8. पेट-काट, 9. अपने पैरों पर खड़े हो जाना, 10. अंधे के हाथ बटेर लगना, 11. बुद्धि पर पत्थर पड़ना, 12. पर्दाफाश करना।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1. 'अंगूठा दिखाना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—इस मुहावरे का अर्थ है- 'साफ इनकार कर देना।'

प्रश्न 2. 'अपना उल्लू सीधा करना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—इस मुहावरे का अर्थ है- 'स्वार्थ सिद्ध करना।'

प्रश्न 3. 'गुस्से से देखना' यह अर्थ किस मुहावरे का है?
उत्तर—'आँख दिखाना' मुहावरे का।

प्रश्न 4. 'बहुत आदर करना' यह अर्थ किस मुहावरे का है?
उत्तर—'बहुत आदर करना' यह अर्थ 'आँखें बिछाना' मुहावरे का है।

प्रश्न 5. 'आँसू पोंछना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—सांत्वना देना।

प्रश्न 6. 'आसमान पर चढ़ना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—बहुत अभिमान करना।
प्रश्न 7. 'आग बबूला होना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—गुस्से से भर जाना।
प्रश्न 8. 'आकाश को छूना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—इस मुहावरे का अर्थ है- 'बहुत परिश्रम करना।'
प्रश्न 9. 'आँच न आने देना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—इस मुहावरे का अर्थ है- 'थोड़ा भी कष्ट न होने देना।'
प्रश्न 10. 'अँगूठी का नगीना' मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए।
उत्तर—अकबर के नवरत्नों में बीरबल तो जैसे **अंगूठी का नगीना** थे।
प्रश्न 11. 'अंग-अंग फूले न समाना' मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए।
उत्तर—राम के अभिषेक की बात सुनकर कौशल्या का **अंग-अंग फूले नहीं समाया**।
प्रश्न 12. 'अन्धी सरकार' मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए।
उत्तर—कालाबाजारी खूब फल-फूल रही है, किन्तु **अन्धी सरकार** उन्हीं का पोषण करने में लगी है।
प्रश्न 13. 'नींद न आना' अर्थ प्रकट करने वाले मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए।
उत्तर—तुम्हारे वियोग में मैं रातभर **अम्बर के तारे गिनता** रहा।
प्रश्न 14. 'मूर्ख' अर्थ प्रकट करने वाले मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए।
उत्तर—वह लड़का तो अक्ल का अन्धा है, उसे कितना ही समझाओ।
प्रश्न 15. 'अगर-मगर करना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—इस मुहावरे का अर्थ है- 'बचने का बहाना ढूँढ़ना।'
प्रश्न 16. 'अपना उल्लू सीधा करना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—इस मुहावरे का अर्थ है- 'अपना काम निकालना।'
प्रश्न 17. 'संकोच न करना' अर्थ किस मुहावरे का है?
उत्तर—'संकोच न करना' यह अर्थ 'अपना घर समझना' मुहावरे का है।
प्रश्न 18. 'आकाश-पाताल एक करना' मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए।
उत्तर—वानरों ने सीताजी की खोज के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।
प्रश्न 19. 'आँख चुराना' मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।
उत्तर—मुझसे रुपये उधार लेने के बाद मोहन निरन्तर आँख चुराता है, मेरे सामने नहीं आता।
प्रश्न 20. 'कलेजे पर पत्थर रखना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
उत्तर—इस मुहावरे का अर्थ है- 'धैर्य धारण करना।'

लघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'फूँक-फूँककर पाँव रखना' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।
उत्तर—फूँक-फूँककर पाँव रखना = सावधानी बरतना।
वाक्य-प्रयोग—जब किसी काम में अपयश या असफलता मिलती है, तब व्यक्ति उस काम को फिर से करने में फूँक-फूँककर पाँव रखता है।
प्रश्न 2. 'अपना उल्लू सीधा करना' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।
उत्तर—अपना उल्लू सीधा करना = स्वार्थ साधना।
वाक्य-प्रयोग—वर्तमान काल में सभी राजनीतिक दल जनता को धोखे में रखकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं।
प्रश्न 3. 'आँखें बिछाना' और 'आटा गीला होना' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।
उत्तर— आँखें बिछाना = सत्कार करना।
वाक्य-प्रयोग—वर्षों बाद प्रिय मित्र के आ जाने पर रमेश ने खुशी में उसके लिए आँखें बिछा दीं।
आटा गीला होना = कठिनाई/मुश्किल में पड़ना।
वाक्य-प्रयोग—सीता को तनख्वाह न मिलने के कारण आर्थिक तंगी से उसका आटा गीला हो गया।

प्रश्न 4. 'कान पर जूँ न रेंगना' मुहावरे का वाक्य में किस अर्थ में प्रयोग होता है ?

उत्तर–कान पर जूँ न रेंगना = कुछ भी असर या प्रभाव न होना।

वाक्य-प्रयोग—माता-पिता ने रमेश को बहुत समझाया कि पढ़ने में रुचि लो, परन्तु उसके कान पर जूँ तक न रेंगी।

प्रश्न 5. 'मुट्ठी गरम करना' और 'मुट्ठी में करना' मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–मुट्ठी गरम करना = रिश्वत देना।

वाक्य-प्रयोग–ईमानदार लोग मुट्ठी गरम करके अपना काम निकालना पाप-कर्म मानते हैं।

मुट्ठी में करना = वश में करना।

वाक्य-प्रयोग–कहने को तो रोशन उनका ड्राइवर है, लेकिन उसने पूरे परिवार को अपनी मुट्ठी में कर रखा है।

प्रश्न 6. 'घर बैठे गंगा आना' और 'घी के दीपक जलाना' मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अलग-अलग वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर–घर बैठे गंगा आना = अनायास कार्य हो जाना।

वाक्य-प्रयोग–आपका हमारे पास आना तो घर बैठे गंगा आना जैसा है।

घी के दीपक जलाना = बहुत खुशी मनाना।

वाक्य-प्रयोग–चौदह वर्ष तक वन में रहकर जब श्रीराम, सीता व लक्ष्मण अयोध्या लौटे, तो अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाये।

प्रश्न 7. 'घुटने टेकना' और 'आकाश में उड़ना' मुहावरों का अर्थ लिखिए तथा वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि आशय स्पष्ट हो जाए।

उत्तर–घुटने टेकना = पराजय स्वीकार करना।

वाक्य-प्रयोग–अमेरिकी सेना के आक्रमण से तालिबान के सैनिकों को अन्ततः घुटने टेकने ही पड़े।

आकाश में उड़ना = कल्पना/ख्याब में घूमना।

वाक्य-प्रयोग–बिना पैसे के कोई भी व्यापार करना आकाश में उड़ना है।

प्रश्न 8. 'हाथ पसारना' और 'छक्के छुड़ाना' मुहावरों का अर्थ लिखिए तथा वाक्य में इस प्रकार प्रयुक्त कीजिए कि आशय स्पष्ट हो जाए।

उत्तर–हाथ पसारना = याचना के लिए हाथ फैलाना।

वाक्य-प्रयोग–मैं इतना गया-बीता नहीं हूँ कि हर किसी के सामने हाथ पसारता रहूँ।

छक्के छुड़ाना = बुरी तरह हराना।

वाक्य-प्रयोग–कुरुक्षेत्र के युद्ध में पाण्डवों ने कौरवों की सेना के छक्के छुड़ा दिए थे।

प्रश्न 9. मुहावरे क्या हैं? परिभाषा एवं उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर–ऐसे सुगठित शब्द समूह जिनसे लक्षणाजन्य और कभी-कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है मुहावरे कहलाते हैं। ये शब्द समूह कई बार व्यंग्यात्मक भी हो सकते हैं। मुहावरे भाषा को जीवन्त, प्रभावशाली, गतिशील और रोचक बनाते है, जैसे- सीता का पुत्र उसके लिए **आँख का तारा** है।

प्रश्न 10. 'जान तोड़ मेहनत करना' और 'दबे पाँव आना' मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–जान तोड़ मेहनत करना = खूब परिश्रम करना।

वाक्य-प्रयोग–परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए सभी विद्यार्थियों द्वारा जान तोड़ मेहनत की गयी थी।

दबे पाँव आना = चोरी-चोरी आना।

वाक्य-प्रयोग–समीर ने दबे पाँव आकर अपने मालिक की सोने की घड़ी को साफ कर दिया।

अपठित-बोध

अपठित–भाषा-ज्ञान के लिए पाठ्यक्रम में कुछ पुस्तकें निर्धारित होती हैं। इन पुस्तकों को पाठ्य-पुस्तक कहा जाता है। परीक्षा में पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्य-पुस्तकों से प्रश्न पूछे जाते हैं, परन्तु प्रश्न-पत्र में एक प्रश्न ऐसा भी पूछा जाता है जिसका सम्बन्ध पाठ्य-पुस्तकों से न होकर बाहरी पुस्तकों से होता है। इसलिए इसे अपठित कहा जाता है। अपठित का अर्थ है—अ+पठित अर्थात् जो पढ़ा नहीं गया हो।

अपठित गद्यांश या पद्यांश का स्तर पाठ्य-पुस्तकों के स्तर से प्रायः अधिक नहीं होता है। अपठित गद्यांश या पद्यांश बिना पढ़ा होने के कारण इससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने में विद्यार्थियों के मन में भय रहता है। यदि विद्यार्थी थोड़ा धैर्य रखकर बुद्धि का प्रयोग इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने में करें, तो उन्हें अवश्य सफलता मिल जाती है। यहाँ पर अपठित से सम्बन्धित प्रश्नों को हल करने के लिए कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं—

1. अपठित के प्रश्नों को हल करने से पूर्व दिए अपठित को दो, तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ लेना चाहिए।
2. प्रश्नों के उत्तर दिए गए अपठितांश के आधार पर देने चाहिए, परन्तु भाषा उस अंश की नहीं होनी चाहिए। भाषा अपनी हो और विचार उस अंश के।
3. उत्तर में विचारगत मौलिकता की आवश्यकता नहीं, भाषा और शैली की मौलिकता आवश्यक है।
4. शीर्षक छोटे से छोटा होना चाहिए। शीर्षक का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि शीर्षक के शब्दों में उस गद्यांश या पद्यांश का पूरा आशय आ जाए। शीर्षक के शब्दों से यह पता चल जाए कि पूछे गये गद्यांश या पद्यांश में क्या दिया गया है।

1. अपठित गद्यांश

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(1)

भारतीय दर्शन सिखाता है कि जीवन का एक आशय और लक्ष्य है, उस आशय की खोज हमारा दायित्व है और अन्त में उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना, हमारा विशेष अधिकार है। इस प्रकार दर्शन जो कि आशय को उद्घाटित करने की कोशिश करता है और जहाँ तक उसे इसमें सफलता मिलती है, वह इस लक्ष्य तक अग्रसर होने की प्रक्रिया है। कुल मिलाकर आखिर यह लक्ष्य क्या है? इस अर्थ में यथार्थ की प्राप्ति वह है जिसमें पा लेना, केवल जानना नहीं है, बल्कि उसी का अंश हो जाना है। इस उपलब्धि में बाधा क्या है? बाधाएँ कई हैं। पर इनमें प्रमुख है—अज्ञान। अशिक्षित आत्मा नहीं है, यहाँ तक कि यथार्थ संसार भी नहीं है। यह दर्शन ही है जो उसे शिक्षित करता है और अपनी शिक्षा से उसे उस अज्ञान से मुक्ति दिलाता है, जो यथार्थ दर्शन नहीं होने देता। इस प्रकार एक दार्शनिक होना एक बौद्धिक अनुगमन करना नहीं है, बल्कि एक शक्तिप्रद अनुशासन पर चलना है, क्योंकि सत्य की खोज में लगे हुए सही दार्शनिक को अपने जीवन को इस प्रकार आचरित करना पड़ता है ताकि उस यथार्थ से एकाकार हो जाए जिसे वह खोज रहा है। वास्तव में, यही जीवन का एकमात्र सही मार्ग है और सभी दार्शनिकों को इसका पालन करना होता है, और दार्शनिक ही नहीं, बल्कि सभी मनुष्यों को, क्योंकि सभी मनुष्यों के दायित्व और नियति एक ही हैं।

प्रश्न– 1. भारतीय दर्शन किस लक्ष्य की ओर संकेत करता है?

(क) यथार्थ के साथ एकाकार हो जाना (ख) यथार्थ की प्राप्ति कर लेना
(ग) शिक्षित हो जाना (घ) जीवन का एक आशय और एक लक्ष्य है।

2. जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

(क) अशिक्षित होना (ख) ज्ञान का अभाव
(ग) यथार्थ दर्शन (घ) अनुशासनहीनता।

3. मानव-जीवन का एकमात्र उद्देश्य क्या है?

(क) एक शक्तिप्रद अनुशासन पर चलना (ख) बौद्धिक अनुगमन करना
(ग) शिक्षित होना (घ) अज्ञान से मुक्त होना।

4. एक दार्शनिक को अपना जीवन किस प्रकार आचरित करना पड़ता है?
(क) सत्य की खोज करने में (ख) यथार्थ से एकाकार करने में
(ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) 'क' और 'ख' दोनों ही नहीं।
5. भारतीय दृष्टि में दर्शन किस प्रक्रिया को कहते हैं?
(क) बौद्धिक अनुगमन करना (ख) लक्ष्य को उद्घाटित कर उसकी ओर अग्रसर होना
(ग) आत्मा और परमात्मा का एकाकार (घ) इनमें से कोई नहीं।
6. अज्ञान से मुक्ति कौन दिलाता है?
(क) भारतीयता से सम्पन्न व्यक्ति (ख) अशिक्षित व्यक्ति
(ग) आत्मज्ञान से सम्पन्न व्यक्ति (घ) सत्य की खोज करने वाला व्यक्ति।
7. 'अनुशासन' शब्द में उपसर्ग का सही विकल्प है-
(क) अन + उशासन (ख) अ + नुशासन (ग) अनु + शासन (घ) अनुशा + सन्।
8. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-
(क) जीवन दर्शन (ख) दार्शनिकता (ग) सत्य की खोज (घ) भारतीय दर्शन।

उत्तर–1. (घ) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख) 6. (ग) 7. (ग) 8. (घ)।

(2)

मानव जाति ने अपने उद्भवकाल से ही प्रकृति की गोद में ही जन्म लिया और उसी से अपने भरण-पोषण की सामग्री प्राप्त की। सभी प्रकार के वन्य या प्राकृतिक उपादान ही उसके जीवन और जीविका के एकमात्र साधन थे। प्रकृति ने ही मानव जीवन को संरक्षण प्रदान किया। रामचन्द्र, सीता व लक्ष्मण ने भी पंचवटी नामक स्थान पर कुटिया बनाकर वनवास का लम्बा समय व्यतीत किया था।

वृक्षों की लकड़ी से मानव अनेक प्रकार के लाभ उठाता है। उसने लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया। इससे मकान व झोंपड़ियाँ बनाईं। इमारती लकड़ी से भवन-निर्माण, कृषि यन्त्र, परिवहन, जैसे—रथ, ट्रक, रेलों के डिब्बे तथा फर्नीचर आदि बनाए जाते हैं। कोयला भी लकड़ी का प्रतिरूप है। वृक्षों की लकड़ी तथा उसके उत्पाद; जैसे—नारियल का जूट, लकड़ी का बुरादा, चीड़ की लकड़ी आदि विभिन्न वस्तुओं का प्रयोग फल, काँच के बर्तन आदि नाजुक पदार्थों की पैकिंग के लिए किया जाता है।

इस प्रकार वृक्षों से विभिन्न प्रत्यक्ष लाभों के अतिरिक्त परोक्ष फायदे भी हैं। जीवन-दायिनी ऑक्सीजन पेड़ों से प्राप्त होती है। वृक्षों के आधिक्य से बाढ़ नियन्त्रण में सहायता मिलती है।

प्रश्न– 1. आदिकाल में मानव जीवन किस पर आधारित था?
(क) ईश्वर पर (ख) प्राकृतिक उपादानों पर
(ग) जीव-जन्तुओं पर (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. वनवास काल में राम, सीता व लक्ष्मण ने कहाँ पर निवास किया था?
(क) लंका में (ख) अयोध्या में (ग) पंचवटी में (घ) जनकपुरी में।
3. इमारती लकड़ी का क्या उपयोग है-
(क) भवन निर्माण में (ख) कृषि यन्त्र बनाने में
(ग) परिवहन में (घ) उपरोक्त सभी।
4. लकड़ी का प्रतिरूप किसे बताया गया है?
(क) लकड़ी के कोयले को (ख) लकड़ी के बुरादे को
(ग) चीड़ की लकड़ी को (घ) इमारती लकड़ी को।
5. संसार में मानव-जीवन को सर्वप्रथम किसने संरक्षण दिया है?
(क) पृथ्वी ने (ख) पर्वत ने (ग) प्रकृति ने (घ) ईश्वर ने।
6. वृक्षों से प्रत्यक्ष लाभ मिलता है-
(क) ऑक्सीजन मिलना (ख) बाढ़ नियंत्रण
(ग) इमारती लकड़ी प्राप्त होना (घ) उपरोक्त सभी।
7. 'पंचवटी' शब्द में समास है-
(क) द्विगु समास (ख) बहुब्रीहि समास (ग) तत्पुरुष समास (घ) कर्मधारय समास।

8. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
   (क) मानव जाति (ख) मानव जीवन एवं प्रकृति
   (ग) प्रकृति की गोद (घ) वृक्षों की लकड़ी।

उत्तर–1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग) 6. (घ) 7. (क) 8. (ख)।

(3)

भारतीय मनीषा ने कला, धर्म, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में नानाभाव से महत्त्वपूर्ण फल पाये हैं और भविष्य में भी महत्त्वपूर्ण फल पाने की योग्यता का परिचय वह दे चुकी है। परन्तु नाना कारणों से समूची जनता एक ही धरातल पर नहीं है। जल्दी में कोई फल पा लेने की आशा से अटकलपच्चू सिद्धान्त कायम कर लेना और उसके आधार पर कार्यक्रम बनाना अभीष्ट सिद्धि में सब सहायक नहीं होगा। विकास की नाना सीढ़ियों पर खड़ी जनता के लिए नाना प्रकार के कार्यक्रम आवश्यक होंगे। उद्देश्य की एकता ही इन विविध कार्यक्रमों में एकता ला सकती है, परन्तु इतना निश्चित है कि जब तक हमारे सामने उद्देश्य स्पष्ट नहीं हो जाता, तब तक कोई भी कार्य कितनी भी व्यापक शुभेच्छा के साथ क्यों न आरम्भ किया जाये, वह फलदायक नहीं होगा। बहुत-से लोग हिन्दू-मुस्लिम एकता को या हिन्दू-संघटन को ही लक्ष्य मानकर उपाय सोचने लगते हैं। वस्तुतः हिन्दू-मुस्लिम एकता भी साधन है, साध्य नहीं। साध्य है मनुष्य को पशु-सामान्य स्वार्थी धरातल से ऊपर उठाकर 'मनुष्यता' के आसन पर बैठाना। हिन्दू-मुस्लिम-मिलन का उद्देश्य है मनुष्य को दासता, जड़िमा, मोह, कुसंस्कार और परमुखापेक्षिता से बचाना, मनुष्य को क्षुद्र स्वार्थ और अहमिका की दुनिया से ऊपर उठाकर सत्य, न्याय और औदार्य की दुनिया में ले जाना। अतएव मनुष्य का सामूहिक कल्याण ही हमारा लक्ष्य हो सकता है।

प्रश्न– 1. देश की जनता के लिए बनाया गया एक ही कार्यक्रम सबके लिए कारगर क्यों नहीं है?
   (क) जनता की आर्थिक स्थिति एक-सी न होने के कारण
   (ख) जनता की सोच अलग-अलग होने से
   (ग) सबकी सामाजिक स्थिति समान न होने से
   (घ) क, ख, ग तीनों।

2. अनुमान के आधार पर जल्दबाजी में बनाए गए कार्यक्रम का क्या परिणाम होगा?
   (क) जनता को जल्दी लाभ मिलेगा (ख) हमारा लक्ष्य शीघ्र पूरा होगा
   (ग) अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होने में सन्देह होगा (घ) अभीष्ट सिद्धि जल्द ही हाथ लग जाएगी।

3. कार्यक्रम फलदायक सिद्ध हो, इसके लिए आवश्यक है कि-
   (क) कार्यक्रम शुभेच्छा से बनाए जाएँ (ख) कार्यक्रम में सभी का ध्यान रखा जाए
   (ग) कार्यक्रम में जनता की भागीदारी की जाए (घ) कार्यक्रम का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए।

4. हिन्दू-मुस्लिम एकता किसी बड़े लक्ष्य को पाने का एकमात्र है-
   (क) साध्य (ख) साधन (ग) उपकरण (घ) कार्यक्रम।

5. हिन्दू-मुस्लिम मिलन का उद्देश्य क्या है?
   (क) मनुष्य को कुसंस्कार से बचाना (ख) मनुष्य को क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठाना
   (ग) मनुष्य को दासता एवं जड़ता से बचाना (घ) क, ख, ग तीनों।

6. मनुष्य का सर्वोत्तम प्राप्य क्या है?
   (क) अधिकाधिक धन कमाना (ख) मनुष्य को एक करना
   (ग) मनुष्य का सामूहिक कल्याण (घ) मनुष्य का व्यक्तिगत कल्याण।

7. 'अभीष्ट' शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द है-
   (क) अ + भीष्ट (ख) अभी + ष्ट (ग) अभि + इष्ट (घ) अभी + ईष्ट

8. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा-
   (क) भारतीय मनीषा की योग्यता (ख) भारतीयों की चिन्तन दृष्टि
   (ग) हिन्दू-मुस्लिम एकता का लक्ष्य (घ) हिन्दू-दृष्टिकोण का विकास।

उत्तर–1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ) 6. (ग) 7. (ग) 8. (ग)।

(4)

धन की आवश्यकता तथा उपयोग को स्वीकार करते हुए भी हम यह बतलाना चाहते हैं कि इसके प्रति लोगों ने जो दृष्टिकोण अपना रखा है, वह वास्तव में सही नहीं है। अर्थ-प्रधान दृष्टिकोण के कारण संसार का उत्थान होने के बजाय वह एक बड़ी दुर्दशा में फँस गया है। धन के लोभ ने मनुष्य में सैकड़ों प्रकार के दुर्गुण पैदा कर दिये हैं और अनेक मानवीय विशेषताओं को समाप्त कर दिया है। चोरी, हिंसा, बेईमानी, ईर्ष्या, द्वेष, अविश्वास, दम्भ आदि अनेक दोषों की वृद्धि का कारण धन का यह अनुचित महत्त्व ही है। लोग धन को सुख का साधन मानते हैं, पर जरा गहराई में उतरकर विचार किया जाये तो आज धन ने सब लोगों के जीवन को विपत्ति-ग्रस्त और दु:खी बना दिया है। धनवानों को अपने धन की रक्षा की चिन्ता रहती है, वे सभी को अपने धन पर ताक लगाये समझकर अविश्वास करने लगते हैं और इस कल्पना से बड़ा दु:ख पाते रहते हैं कि यदि किसी कारणवश हमारा धन जाता रहा तो हमारी क्या दशा होगी? दूसरी तरफ गरीब धन के अभाव में अपनी किसी तरह की भी उन्नति करने में असमर्थ रहते हैं, उनके विकास की गति रुक जाती है। उनको बाल्यावस्था से ही पढ़-लिखकर एक सभ्य नागरिक बनने की अपेक्षा किसी तरह कुछ कमाकर पेट के गड्ढे को भरने की चिन्ता लगी रहती है। फिर वे धन के अभाव में अनेक प्रकार के असत्य व्यवहार करने को विवश हो जाते हैं और अमीरों की खुशामद करना, परस्पर लड़ना-झगड़ना आदि अनुचित कार्यों का आश्रय लेने लगते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि धन को जो सर्वोच्च स्थान दे दिया गया है, वह गलत है।

प्रश्न— 1. संसार की प्रगति रुकने का क्या कारण है?
(क) मोह-माया में फँसना (ख) शिक्षा का व्यवसायीकरण
(ग) अर्थ प्रधान दृष्टिकोण (घ) उच्च शिक्षा अर्जन का दृष्टिकोण।

2. धन के अनुचित महत्त्व से कौनसे दोष बढ़ रहे हैं?
(क) चोरी और हिंसा (ख) बेईमानी और अविश्वास
(ग) ईर्ष्या और द्वेष (घ) उपरोक्त सभी।

3. धनवानों को किसकी सर्वाधिक चिन्ता रहती है?
(क) दान करने की (ख) अत्यधिक धन कमाने की
(ग) धन की रक्षा की (घ) पुण्य कमाने की।

4. धन के अभाव में गरीब व्यक्ति को किसकी चिन्ता रहती है?
(क) कुछ कमाकर पेट भरने की (ख) अमीरों की खुशामद करने की
(ग) शहरों में जाने की (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. मानवीय विशेषताओं का विनाश किस कारण हो रहा है?
(क) धनार्जन की इच्छा न रखने के कारण (ख) प्रबल धन लोभ के कारण
(ग) परस्पर लड़ाई-झगड़ा करने के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) धन की उपयोगिता (ख) अमीर और गरीब
(ग) धन और मानवीयता (घ) धन की सर्वोच्चता।

7. बाल्यावस्था का सन्धि विच्छेद होगा-
(क) बाल्या + अवस्था (ख) बाल + अवस्था
(ग) बाल्या + वस्था (घ) बाल्या + अवस्था।

8. संसार में आज कौनसा दृष्टिकोण प्रधान है?
(क) आर्थिक दृष्टिकोण (ख) मानवीयता का दृष्टिकोण
(ग) धनार्जन का दृष्टिकोण (घ) आध्यात्मिक दृष्टिकोण।

उत्तर—1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख) 6. (क) 7. (ख) 8. (ग)।

(5)

आचरण का विकास जीवन का परमोद्देश्य है। आचरण के विकास के लिए नाना प्रकार के सम्प्रदायों का, जो संसार-सम्भूत शारीरिक, प्राकृतिक, मानसिक और आध्यात्मिक जीवन में वर्तमान है, उन सबकी (सबका)—क्या एक पुरुष और क्या एक जाति के आचरण के विकास के साधनों के सम्बन्ध में—विचार करना होगा। आचरण के विकास के लिए जितने कर्म हैं, उन सबको आचरण के संघटन—कर्त्ता धर्म के अंग मानना पड़ेगा। चाहे कोई कितना ही बड़ा महात्मा

क्यों न हो, वह निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता कि यों ही करो और किसी तरह नहीं, आचरण की सभ्यता की प्राप्ति के लिए वह सबको एक पथ नहीं बता सकता। आचरणशील महात्मा स्वयं भी किसी अन्य की बनाई हुई सड़क से नहीं आया, उसने अपनी सड़क स्वयं ही बनाई थी। इसी से, उसके बनाये हुए रास्ते पर चलकर, हम भी अपने आचरण को आदर्श के ढाँचे में नहीं ढाल सकते। हमें अपना रास्ता अपने जीवन की कुदाली की एक-एक चोट से रात-दिन बनाना पड़ेगा और उसी पर चलना पड़ेगा। हर किसी को, अपने देश-कालानुसार, राम-प्राप्ति के लिए अपनी नैया आप ही बनानी पड़ेगी और आप ही चलानी भी पड़ेगी। वस्तुत: कोई भी धर्म-सम्प्रदाय आचरण-रहित पुरुषों के लिए कल्याणकारक नहीं हो सकता, और आचरण वाले पुरुषों के लिए सभी धर्म-सम्प्रदाय कल्याणकारक हैं, सच्चा साधु धर्म को गौरव देता है, धर्म किसी को गौरवान्वित नहीं करता।

प्रश्न— 1. आचरण रहित पुरुषों के लिए क्या कल्याणकारक नहीं हो सकता?
(क) जाति और समाज (ख) धर्म और सम्प्रदाय
(ग) परिवार और संसार (घ) मित्र और हितैषी।

2. आचरण के विकास के लिए क्या जरूरी है?
(क) अत्यधिक धन एकत्रित करना (ख) दान-पुण्य करना
(ग) शारीरिक व्यायाम (घ) श्रेष्ठ कर्मों का पालन।

3. आचरणशील महात्माओं की क्या विशेषता है?
(क) अन्य के बताए हुए रास्ते पर चलना (ख) अपने कर्म पथ का स्वयं निर्माण करना
(ग) सामाजिक परम्पराओं का निर्वाह करना (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. मानव-जीवन का परम उद्देश्य क्या है?
(क) उच्च अध्ययन करना (ख) धन प्राप्त करना
(ग) आचरण का विकास (घ) भजन-कीर्तन करना।

5. लेखक ने आचरण का संघटनकर्ता किसे बताया है?
(क) कर्म को (ख) धर्म को (ग) महान व्यक्तियों को (घ) जाति को।

6. सभी धर्म-सम्प्रदाय किसके लिए कल्याणकारक होते हैं?
(क) आचरणशील मानव के लिए (ख) महात्माओं के लिए
(ग) आचरणरहित मनुष्य के लिए (घ) साधु-संन्यासियों के लिए।

7. 'महात्मा' शब्द में कौनसा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) द्विगु (ग) बहुब्रीहि (घ) कर्मधारय।

8. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।
(क) आचरण और जीवन (ख) आचरण का विकास
(ग) जीवन का उद्देश्य (घ) धर्म-सम्प्रदाय।

उत्तर—1. (ख) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख) 6. (क) 7. (घ) 8. (ख)।

(6)

राष्ट्रभाषा की आवश्यकता राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से भी है। वस्तुत: राष्ट्र की अस्मिता, गरिमा एवं प्रभुशक्ति-सम्पन्नता के लिए भी राष्ट्रभाषा का विशेष महत्त्व है। अपने को एक ही राष्ट्र का निवासी मानने वाले दो व्यक्ति किसी विदेशी भाषा में बात करें, यह हास्यास्पद असंगति है। यह इस बात का द्योतक भी है कि उस देश में कोई समुन्नत भाषा नहीं है। दूसरे के सामने हाथ पसारना समृद्धि का नहीं, दरिद्रता का चिह्न है। दूसरे की भाषा से काम चलाना भी बहुत कुछ वैसा ही है। जिसकी अपनी भाषा है वह दूसरे की भाषा क्यों उधार ले? इससे राष्ट्रीय सम्मान को बट्टा लगता है। विदेशों में जाने पर कभी-कभी इस बात का कड़ा अनुभव होता है कि अपने को भारतीय कहने वाले दो व्यक्ति अपने देश की किसी भाषा में बात न कर अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा में बात करते हैं और उन्हें देखकर वहाँ के निवासी आश्चर्य के साथ पूछ बैठते हैं कि क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं है? इसका क्या किया जाए? भाषाएँ तो इस देश में अनेक हैं, एक से एक समृद्ध, एक से एक सुन्दर, पर एक भी भाषा इस कोटि तक नहीं पहुँच सकी जो सामान्य संचार का साधन बन सके। वैसे भाषा के अभाव में पराधीनता की याद ताजा बनी रहती है, दूसरे देशवासियों के समक्ष हीनभावना रहती है और भारत की साहित्यिक और भाषिक समृद्धि पर सन्देह का अवसर मिलता है।

प्रश्न– 1. दूसरों के सामने हाथ पसारना किसका द्योतक है?

(क) समृद्धि (ख) दरिद्रता (ग) मित्रता (घ) शत्रुता।

2. राष्ट्रीय सम्मान को कब बट्टा लगता है?

(क) अपनी भाषा को महत्त्व देने पर (ख) विदेशों में जाने पर

(ग) विदेशी भाषा को महत्त्व देने पर (घ) अंग्रेजी भाषा में बात न करने पर।

3. पराधीनता का परिचायक किसे माना गया है?

(क) शत्रु के सामने हार मानना (ख) युद्ध लड़ने से पीछे हटना

(ग) अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह रखना (घ) विदेश जाने से मना करना।

4. राष्ट्रभाषा का महत्त्व किस दृष्टि से विशिष्ट माना जाता है?

(क) राष्ट्र की अस्मिता से (ख) राष्ट्र की गरिमा से

(ग) प्रभु शक्ति सम्पन्नता से (घ) उपरोक्त सभी।

5. राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से क्या आवश्यक है?

(क) विदेशी भाषा में बात करना (ख) अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाना

(ग) हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना (घ) दूसरों की भाषा को अपनाना।

6. भारत की भाषिक समृद्धि पर कब सन्देह होने लगता है?

(क) अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने पर (ख) विदेशी भाषा को अपनाने पर

(ग) दो भारतीयों का अंग्रेजी में बात करने पर (घ) उपरोक्त सभी।

7. 'हास्यास्पद' शब्द में समास है-

(क) तत्पुरुष (ख) अव्ययीभाव (ग) द्विगु (घ) कर्मधारय।

8. गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) राष्ट्रीय सम्मान (ख) राष्ट्रभाषा और अंग्रेजी

(ग) राष्ट्रभाषा की आवश्यकता (घ) राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयता।

उत्तर–1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग) 6. (घ) 7. (क) 8. (ग)।

(7)

भारतीय साहित्य की एकता पर जोर देने की आवश्यकता इसलिए भी है कि आज संसार के समक्ष भविष्य की स्थिति बहुत कुछ डाँवाडोल हो गई है। विघटन की शक्तियाँ इतनी बलवती हो गई हैं कि यह नहीं समझ पड़ता कि नया विकास और नया संगठन किस प्रकार होगा। नयी सभ्यता के इस संक्रान्ति काल में भारतवर्ष अपना सन्तुलन खो दे, यह उचित न होगा। इसके विपरीत यह अधिक आवश्यक है कि वह अपने साहित्य, अपनी कला और अपने जीवन-दर्शन द्वारा संसार को एक नया आलोक अथवा एक नवीन दिशा-ज्ञान देने की चेष्टा करे। संसार के बड़े-बड़े विचारक भी आज प्रकाश के लिए इधर-उधर टोह लगा रहे हैं। उनमें कुछ की यह भी धारणा है कि भारतीय साहित्य और भारतीय जीवन-दर्शन उन्हें नया मार्ग-निर्देश दे सकते हैं। ऐसी स्थिति में नई प्रगति को दौड़कर अपनाने की अपेक्षा अपने साहित्यिक वैभव की ओर दृष्टिपात करना अधिक अच्छा होगा।

यदि हम अपने देश के प्राचीन साहित्य को देखें, तो उसमें एक मूलभूत एकता दिखाई देगी। इसका एक बड़ा प्रमाण यह है कि हमारे कतिपय महान साहित्यिकों के जन्म-स्थान का पता न होने पर भी समस्त प्रान्तों में उनका प्रचलन है और उन्हें सम्मान प्राप्त है। इस तरह हमारे देश में विविधता में एकता लाने की चेष्टा चिरकाल से की गई है और इस कार्य में हमारे साहित्यिकों ने विशेष योग दिया है।

प्रश्न– 1. आज संसार के समक्ष भविष्य की स्थिति कैसी हो गई है?

(क) बहुत अच्छी हो गई (ख) बहुत खराब हो गई

(ग) बहुत कुछ डाँवाडोल हो गई (घ) कल्पना मात्र हो गई

2. हमें प्रगति की दौड़ की अपेक्षा किसे अपनाना चाहिए?

(क) हमारी संस्कृति को (ख) साहित्यिक वैभव को

(ग) हमारी परम्पराओं को (घ) राष्ट्र के नियमों को

3. हमारे देश में विविधता में एकता लाने में विशेष योगदान किसका रहा है?
(क) साधु-संन्यासियों (ख) साहित्यिकों
(ग) स्वतंत्रता सेनानियों (घ) देश के नेताओं का
4. आज भारत में किसकी आवश्यकता है?
(क) साहित्य की एकता (ख) सामाजिक सन्तुलन
(ग) 'क' और 'ख' दोनों ही (घ) केवल 'क'।
5. वर्तमानकाल में कौनसी शक्तियाँ बलवती हो गई है?
(क) नई प्रगति की दौड़ को अपनाने की (ख) समाज एवं देश में विघटनकारी शक्तियाँ
(ग) नवीन दिशा-ज्ञान देने की शक्तियाँ (घ) साहित्य एकता की शक्तियाँ।
6. संसार को नया आलोक अथवा एक नवीन दिशा-ज्ञान किसके माध्यम से मिल सकती है?
(क) अपने साहित्य द्वारा (ख) अपनी कला द्वारा
(ग) अपने जीवन-दर्शन द्वारा (घ) उपरोक्त सभी।
7. 'प्रगति' शब्द में उपसर्ग व मूल शब्द है-
(क) प्र + गति (ख) प्रग + ति (ग) पर + गति (घ) प्रगत + इ
8. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।
(क) भारतीय साहित्य (ख) भारतीय साहित्य की एकता
(ग) भारतीय जीवन-दर्शन (घ) साहित्यिक वैभव।

उत्तर-1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख) 6. (घ) 7. (क) 8. (ख)।

(8)

किसी विदेशी संस्कृति की संवाहक भाषा एक स्वतन्त्र राष्ट्र की संस्कृति के लिए कितनी खतरनाक हो सकती है, इसे हमारे देश में अंग्रेजी के वर्चस्व से समझा जा सकता है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद से तो हमने मुक्ति पा ली, पर आजादी के साठ वर्ष बाद भी हम अंग्रेजी भाषा के रूप में विदेशी सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को गले लगा रहे हैं। जिस अंग्रेजी भाषा को ब्रिटिश शासन काल में हमारी भाषा और संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने की एक सुनियोजित चाल के रूप में अपनाया गया था, उसे आज हम राष्ट्रीय स्वाभिमान के अभाव में स्वयं अपना रहे हैं। आज देश में सबसे अधिक सांस्कृतिक प्रदूषण अंग्रेजी के कारण फैल रहा है, जो इस बात का सबूत है कि हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की जड़ें भीतर तक खोखली हो रही हैं। हमारे देश में भाषायी आतंकवाद पैदा करने में अंग्रेजी की प्रभावी भूमिका है। सम्पूर्ण देश में भावात्मक एकता का शंखनाद करने वाली हिन्दी की उपेक्षा कर अंग्रेजी को अपनाना हमारी मानसिक दासता का परिचायक है। हमारे देश की भाषिक विविधता में सांस्कृतिक एकता का बोध सम्पर्क भाषा हिन्दी के माध्यम से ही जगाया जा सकता है। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर इस सत्य को जितनी जल्दी आत्मसात् किया जाये उतना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है।

प्रश्न-1. स्वतंत्र राष्ट्र की संस्कृति के लिए किसे खतरनाक बताया गया है?
(क) भारतीय संस्कृति को भूलना (ख) ब्रिटिश साम्राज्य
(ग) अंग्रेजी भाषा (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. हम आज भी अंग्रेजी को क्यों अपना रहे हैं?
(क) यह बोलने में अच्छी लगती है इसलिए (ख) राष्ट्रीय स्वाभिमान के अभाव के कारण
(ग) विदेशी संस्कृति को अपनाने के कारण (घ) अपने को अच्छा दिखाने के कारण
3. भारत में किसके कारण भाषायी अलगाववाद पनप रहा है?
(क) आतंकवादियों के कारण (ख) विदेशी सम्पर्क के कारण
(ग) अंग्रेजी भाषा के कारण (घ) हिन्दी भाषा के कारण
4. देश में सांस्कृतिक एकता का बोध किससे हो सकता है?
(क) अंग्रेजी भाषा को अपनाने से (ख) हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने से
(ग) विदेशी संस्कृति को अपनाने से (घ) भाषायी अलगाववाद को बढ़ाने से।
5. हम विदेशी सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को किस रूप में अपना रहे हैं?

(क) विदेशी संस्कृति के रूप में (ख) विदेशी वस्तुओं के रूप में
(ग) अंग्रेजी भाषा के रूप में (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर हमें कौनसे सत्य को जल्दी आत्मसात कर लेना चाहिए।
(क) सांस्कृतिक एकता का बोध हिन्दी (ख) भावात्मक एकता का बोध हिन्दी
(ग) विदेशी सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की प्रतीक अंग्रेजी
(घ) उपरोक्त सभी।

7. 'सुनियोजित' पद में प्रत्यय है-
(क) 'इत' प्रत्यय (ख) 'सु' प्रत्यय (ग) 'नि' प्रत्यय (घ) 'त' प्रत्यय।

8. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।
(क) विदेशी संस्कृति और अंग्रेजी (ख) राष्ट्रभाषा और संस्कृति
(ग) राष्ट्र की संस्कृति (घ) भाषिक विविधता।

उत्तर–1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ग) 6. (घ) 7. (क) 8. (ख)।

(9)

मानवतावादी विचारधारा का आगम मध्ययुगीन धार्मिक व्यवस्था की समाप्ति के बाद हुआ। एक प्रकार से मानववाद की यह विचारधारा जिसे आज का नव-मानववाद और वैज्ञानिक मानववाद का नाम दिया जाता है, उन धार्मिक मान्यताओं का विरोध करने के लिए आई, जिससे मानव का व्यक्तित्व गौण और किसी कल्पित अज्ञात दिव्य सत्ता के अस्तित्व को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता था। विकासवाद के सिद्धान्त और विज्ञान की प्रगति ने मानव को चिन्तन की नई दिशाओं की ओर उन्मुख किया है। विज्ञान की सहायता से मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को ज्यों-ज्यों समझने लगा, त्यों-त्यों उसमें आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन, आत्म-विश्वास और तर्क आदि की प्रवृत्तियाँ विकसित होने लगीं। मनुष्य ने देवी-देवताओं की उपासना और अज्ञात ईश्वर की सत्ता में विश्वास को छोड़कर अपनी शक्ति पर विश्वास रखना आरम्भ कर दिया। उसका नवीन बोध रूढ़ियों और अन्धविश्वासों को तिरस्कृत करने में जुट गया। आज स्थिति यह है कि मनुष्य धर्म को ढकोसला समझता है, अपरोक्ष सत्ता की हँसी उड़ाता है और परम्पराओं को तुच्छ समझता है। आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मानव की यथार्थ बुद्धि और सुख-सुविधाओं का इतना विकास किया है कि मनुष्य अपने आध्यात्मिक रूप को असत्य मानने लगा है। मानवतावादी विचारधारा के विकास का यह एक कारण है।

प्रश्न– 1. मानवतावादी विचारधारा का प्रादुर्भाव कब हुआ?
(क) मध्ययुगीन धार्मिक व्यवस्था की समाप्ति के बाद
(ख) मध्ययुगीन सामाजिक परम्पराओं की समाप्ति के बाद
(ग) मध्ययुगीन राजनैतिक प्रवृत्तियों की समाप्ति के बाद
(घ) मध्ययुगीन सांस्कृतिक परम्पराओं के बाद।

2. विज्ञान की प्रगति से मानव किस ओर प्रवृत्त हुआ है?
(क) पाश्चात्य संस्कृति की ओर (ख) चिन्तन की नई दिशाओं की ओर
(ग) दिखावे की प्रवृत्ति की ओर (घ) वैज्ञानिक खोज की ओर।

3. विज्ञान की सहायता से मनुष्य क्या समझने लगा है?
(क) नयी-नयी मशीनें बनाना (ख) मनुष्य की समस्याओं को समझना
(ग) प्रकृति के रहस्यों को जानना (घ) अपने आप को महान समझना।

4. धार्मिक मान्यताओं में किसे सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है?
(क) मानवतावाद को (ख) परोपकार को
(ग) विज्ञान की प्रगति को (घ) अपरोक्ष सत्ता को।

5. मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को ज्यों-ज्यों समझने लगा, त्यों-त्यों उसमें कौनसी प्रवृत्तियाँ विकसित होने लगीं।
(क) आत्मनिर्भरता की (ख) स्वावलम्बन की
(ग) आत्मविश्वास की (घ) उपरोक्त सभी।

6. विज्ञान ने मानव की किस विचारधारा का विकास किया है?
(क) मानवतावादी विचारधारा (ख) आध्यात्मिक विचारधारा
(ग) सामाजिक विचारधारा (घ) बौद्धिक विचारधारा।

7. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।
   (क) मानवतावादी विचारधारा (ख) मानवतावाद का प्रसार
   (ग) नव-मानववाद (घ) वैज्ञानिक मानववाद।
8. 'आत्मविश्वास' पद में कौनसा समास है?
   (क) कर्मधारय समास (ख) तत्पुरुष समास
   (ग) द्वन्द्व समास (घ) बहुव्रीहि समास।

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (घ) 6. (क) 7. (ख) 8. (ख)।

(10)

प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मनुष्यों के हृदय का आदर्श रूप है। जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या परिप्लुत रहती है, वे सब उसके भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रगट हो सकते हैं। मनुष्य का मन जब शोक-संकुल, क्रोध से उद्दीप्त या किसी प्रकार की चिन्ता से दोचित्ता रहता है, तब उसकी मुखच्छवि तमसाच्छन्न, उदासीन और मलिन रहती है, उसकी कण्ठ से जो ध्वनि निकलती है वह भी बेलय या विकृत स्वर-संयुक्त होती है। वही जब चित्त आनन्द की लहरी से उद्वेलित हो नृत्य करता है और सुख की परम्परा में मग्न रहता है, उस समय मुख विकसित कमल-सा प्रफुल्लित, नेत्र मानो हँसता-सा और कण्ठ-ध्वनि भी बसन्त-मदमत्त कोकिला के कण्ठ-रव से भी अधिक मीठी और सोहावनी मन को भाती है। मनुष्य के सम्बन्ध में इस अनुल्लंघनीय प्राकृतिक नियम का अनुसरण प्रत्येक देश का साहित्य भी करता है, जिसमें कभी क्रोधपूर्ण, भयंकर गर्जन, कभी प्रेम का उच्छवास, कभी शोक और परितापजनित हृदय-विदारी करुणा-निस्वन, कभी वीरता-गर्व से बाहुबल के दर्प में भरा हुआ सिंहनाद, कभी भक्ति के उन्मेष से चित्त की द्रवता का परिणाम अश्रुपात आदि अनेक प्रकार के प्राकृतिक भावों का उद्गार देखा जाता है। इसलिए साहित्य को यदि जन-समूह के चित्त का चित्रपट कहा जाए तो संगत है। साहित्य के अनुशीलन से ही उस समाज के आन्तरिक भावों का अभिव्यंजन होता है।

प्रश्न– 1. किसी भी जाति के समस्त भाव किससे प्रकट होते हैं?
   (क) प्राचीन शिलाओं से (ख) पंचों के समूह से
   (ग) उसके उस समय के साहित्य से (घ) बुजुर्गों की बातों से।
2. साहित्य को किसका चित्रपट कहना संगत है?
   (क) प्राचीन परम्पराओं का (ख) प्राकृतिक सौन्दर्य का
   (ग) धार्मिक आस्थाओं का (घ) जन-समूह के चित्त का।
3. मनुष्य की मुखच्छवि तमसाच्छन्न, उदासीन और मलिन कब रहती है?
   (क) उसका मन जब शोक-संकुल रहता है (ख) क्रोध से उद्धिप्त रहता है तब
   (ग) किसी प्रकार की चिन्ता से दोचित्ता रहता है तब
   (घ) उपरोक्त सभी।
4. साहित्य को समाज का आदर्श रूप क्यों कहा जाता है?
   (क) साहित्य हमें भक्ति भावना की ओर अग्रसर करता है इसलिए
   (ख) साहित्य हमें आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है इसलिए
   (ग) समाज की प्रत्येक दशा का यथार्थ चित्रण होने से
   (घ) साहित्य में राजाओं, नेताओं की गाथा का चित्रण होने से
5. किसी समाज के आन्तरिक भावों का प्रकाशन किससे होता है?
   (क) दो गुटों में आपस में लड़ाई होने पर (ख) सामाजिक मेले और त्यौहारों पर
   (ग) सामाजिक मान्यताओं को अपनाने पर (घ) साहित्य के अनुशीलन पर
6. अनुल्लंघनीय प्राकृतिक नियम में किस प्रकार का भाव रहता है?
   (क) कभी क्रोधपूर्ण (ख) कभी प्रेम का उच्छ्वास
   (ग) कभी शोक और परितापजनित (घ) उपरोक्त सभी।
7. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(क) साहित्य-समाज का दर्पण (ख) साहित्य और जाति
(ग) साहित्य का अनुशीलन (घ) सामाजिक जीवन।

8. 'अनुल्लंघनीय' पद में कौनसा प्रत्यय है?
(क) अनीय (ख) इय (ग) ईय (घ) नीय।

उत्तर–1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ) 6. (घ) 7. (क) 8. (ग)।

(11)

'संस्कृति' शब्द का सम्बन्ध संस्कार से है, जिसका अर्थ है—संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना। संस्कार व्यक्ति के भी होते हैं और जाति के भी। जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं। संस्कृति एक समूह-वाचक शब्द है। जलवायु के अनुकूल रहन-सहन की विधियाँ और विचार-परम्पराएँ जाति के लोगों में दृढ़मूल हो जाने से जाति के संस्कार बन जाते हैं। इनको प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी प्रकृति के अनुकूल न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त करता है। ये संस्कार व्यक्ति के घरेलू जीवन तथा सामाजिक जीवन में परिलक्षित होते हैं। मनुष्य अकेला रहकर भी इनसे छुटकारा नहीं पा सकता। ये संस्कार दूसरे देश में निवास करने अथवा दूसरे देशवासियों के सम्पर्क में आने से कुछ परिवर्तित भी हो सकते हैं और कभी-कभी दब भी जाते हैं, किन्तु अनुकूल वातावरण प्राप्त करने पर फिर उभर आते हैं।

संस्कृति का बाह्य पक्ष भी होता है और आन्तरिक भी। उसका बाह्य पक्ष आन्तरिक प्रतिबिम्ब नहीं तो उससे सम्बन्धित अवश्य रहता है। हमारे बाह्य आचार हमारे विचारों और मनोवृत्तियों के परिचायक होते हैं। संस्कृति एक देश-विशेष की उपज होती है, इसका सम्बन्ध देश के भौतिक वातावरण और उसमें पालित, पोषित एवं परिवर्द्धित विचारों से होता है। इसी कारण संस्कृति को जन का मस्तिष्क, राष्ट्र का तीसरा अंग और देश का श्वास-प्रश्वास माना जाता है। संस्कृति में ही जीवन का सौन्दर्य एवं यश अन्तर्निहित है।

प्रश्न– 1. 'संस्कार' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) संशोधन करना (ख) उत्तम बनाना (ग) परिष्कार करना (घ) उपरोक्त सभी।

2. संस्कृति किसे कहते हैं?
(क) हमारी परम्पराओं को (ख) प्राचीन रूढ़ियों को
(ग) सामाजिक भावनाओं को (घ) जातीय संस्कारों को।

3. संस्कृति के कौनसे दो पक्ष हैं?
(क) सामाजिक और आर्थिक (ख) आभ्यान्तरिक एवं बाह्य
(ग) समाज और संस्कृति (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. व्यक्ति के संस्कार कहाँ परिलक्षित होते हैं?
(क) उसके व्यवहार में (ख) घरेलू जीवन में
(ग) सामाजिक जीवन में (घ) उपरोक्त सभी में।

5. 'पैतृक सम्पत्ति' का आशय क्या है?
(क) जो पूर्वजों से प्राप्त होती है (ख) जो समाज द्वारा प्राप्त होती है
(ग) जो सरकार द्वारा प्राप्त होती है (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. संस्कृति को क्या-क्या माना जाता है?
(क) जन का मस्तिष्क (ख) राष्ट्र का तीसरा अंग
(ग) समाज या देश का श्वास-प्रश्वास (घ) उपरोक्त सभी।

7. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-
(क) संस्कृति आत्मा का गुण (ख) संस्कृति की महत्ता
(ग) संस्कृति और संस्कार (घ) संस्कृति और जीवन।

8. 'न्यूनाधिक' पद में समास है?
(क) द्विगु समास (ख) द्वन्द्व समास (ग) तत्पुरुष समास (घ) कर्मधारय समास।

उत्तर–1. (घ) 2. (घ) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क) 6. (घ) 7. (ख) 8. (ख)।

(12)

आज यदि आप संसार की सारी समस्याओं का विश्लेषण करें तो इनके मूल में एक ही बात पायेंगे—मनुष्य की तृष्णा। यह अद्‌भुत तृष्णा कहीं समाप्त होने का नाम नहीं लेती। मनुष्य में सर्वत्र अभाव भर गया है। जीवन की वह पूर्णता कम हो गई है जो मनुष्य को याचक न बनाकर दाता बनाती है। आज उत्पादन बढ़ाने की धूम है, जीवन का स्तर ऊँचा उठाने का संकल्प मुखर है, परन्तु जीवन में वह उच्छलित आनन्द कैसे आएगा जो मनुष्य को संयत, सन्तुष्ट और वदान्य बना सके, इसकी चिन्ता किसी को नहीं है। हम भौतिक समृद्धि के प्रयत्नों को छोटा बनाने के उद्देश्य से यह बात नहीं कह रहे। उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है, जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयत्न भी श्लाघ्य है, पर इतने से समस्या का हल नहीं हो जाता। तृष्णा वह आग है जिसके पेट में जितना भी झोंक दीजिए वह भस्म हो जाएगा। उस वस्तु की खोज होनी चाहिए जो मनुष्य को छोटे प्रयोजनों में बाँधने के बदले उसे प्रयोजनातीत सत्य की ओर उन्मुख करे। साहित्य और संगीत यही काम करते हैं, कला और सौन्दर्य उसे इसी ओर ले जाते हैं।

नितान्त उपयोगिता की दृष्टि से भी विचार किया जाए तो मनुष्य समाज की स्थिति के लिए—सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए ही—यह आवश्यक हो गया है कि मनुष्य अपने उस महान् उन्नायक धर्म की उपेक्षा न करे जो क्षुद्रता और संकीर्णता से ऊपर उठाते हैं। भौतिक समृद्धि के बढ़ाने का प्रयत्न होना चाहिए पर उसे सन्तुलित करने के लिए साहित्य और संगीत आदि का भी बहुत प्रचार वांछनीय है।

प्रश्न– 1. जीवन की परिपूर्णता क्या मानी गई है?
(क) तृष्णा का भाव (ख) तृष्णा का अभाव
(ग) ज्ञान प्राप्ति (घ) उदारता का भाव।

2. भौतिक समृद्धि एवं जीवन में संतुलन कब आ सकता है?
(क) साहित्य एवं संगीत के प्रसार से (ख) परिवार नियोजन से
(ग) धन-सम्पत्ति की बढ़ोतरी से (घ) अत्यधिक उत्पादन बढ़ाने से।

3. मनुष्य को किस वस्तु की खोज करनी है?
(क) खनिज-सम्पदा की (ख) प्रयोजनातीत सत्य की
(ग) प्रकृति के रहस्य की (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. आज मानव में कौनसी प्रवृत्ति बढ़ रही है?
(क) परोपकार की (ख) संस्कृति के प्रसार की
(ग) भौतिक सुख भोग की (घ) सत्य बोलने की।

5. संसार में समस्त समस्याओं के मूल में क्या कारण दिखाई देता है?
(क) अहिंसा (ख) तृष्णा (ग) असत्य (घ) भौतिक सुख।

6. मनुष्य को प्रयोजनातीत सत्य की ओर कौन उन्मुख कर रहा है?
(क) साहित्य और संगीत (ख) कला और सौन्दर्य
(ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं।

7. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-
(क) साहित्य एवं संगीत का महत्त्व (ख) सभ्यता और संस्कृति
(ग) कला और सौन्दर्य (घ) मनुष्य की तृष्णा।

8. 'प्रयोजनातीत' शब्द में संधि है?
(क) गुण सन्धि (ख) यण सन्धि (ग) दीर्घ सन्धि (घ) अयादि सन्धि।

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख) 6. (ग) 7. (क) 8. (ग)।

(13)

श्रद्धा एक सामाजिक भाव है, इससे अपनी श्रद्धा के बदले में हम श्रद्धेय से अपने लिए कोई बात नहीं चाहते। श्रद्धा धारण करते हुए हम अपने को उस समाज में समझते हैं जिसके अंश पर—चाहे हम व्यष्टि रूप में उसके अन्तर्गत न भी हों—जान-बूझकर उसने कोई शुभ प्रभाव डाला। श्रद्धा स्वयं ऐसे कर्मों के प्रतिकार में होती है, जिसका शुभ प्रभाव अकेले हम पर ही नहीं, बल्कि सारे मनुष्य समाज पर पड़ सकता है। श्रद्धा एक ऐसी आनन्दपूर्ण कृतज्ञता है, जिसे हम

केवल समाज के प्रतिनिधि रूप में प्रकट करते हैं। सदाचार पर श्रद्धा और अत्याचार पर क्रोध या घृणा प्रकट करने के लिए समाज ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिनिधित्व प्रदान कर रखा है। यह काम उसने इतना भारी समझा है कि उसका भार सारे मनुष्यों को बाँट दिया है, दो-चार मानवीय लोगों के सिर पर नहीं छोड़ रखा है। जिस समाज में सदाचार पर श्रद्धा और अत्याचार पर क्रोध प्रकट करने के लिए जितने ही अधिक लोग तत्पर पाये जायेंगे, उतना ही वह समाज जागृत समझा जायेगा। श्रद्धा की सामाजिक विशेषता एक इसी बात से समझ लीजिए कि जिस पर हम श्रद्धा रखते हैं उस पर चाहते हैं कि और लोग भी श्रद्धा रखें। पर जिस पर हमारा प्रेम होता है उससे और दस-पाँच आदमी प्रेम रखें। इसकी हमें परवाह क्या, इच्छा ही नहीं होती, क्योंकि हम प्रिय पर लोभवश एक प्रकार का अनन्य अधिकार या इजारा चाहते हैं।

प्रश्न— 1. श्रद्धा की सामाजिक विशेषता है-

(क) श्रद्धेय से सब श्रद्धा-भाव रखें (ख) श्रद्धेय से सब प्रेम-भाव रखें

(ग) श्रद्धेय से सब क्रोध-भाव रखें (घ) श्रद्धेय से सब स्नेह-भाव रखें।

2. श्रद्धालु अपने भाव में किसको शामिल करना चाहता है?

(क) स्वयं को (ख) दूसरों को (ग) परिजनों को (घ) संसार को

3. प्रिय पर लोभवश अनन्य अधिकार चाहते हैं-

(क) भक्ति में (ख) श्रद्धा में (ग) प्रेम में (घ) उपर्युक्त सभी।

4. समाज के प्रतिनिधि रूप में प्रकट की जाती है?

(क) भक्ति (ख) नीति (ग) श्रद्धा (घ) प्रेम।

5. श्रद्धा उत्पन्न होती है-

(क) कर्मों के प्रतिकार रूप में (ख) कर्मों के अपकार रूप में

(ग) कर्मों के शुभ प्रभाव में (घ) 'क' और 'ग' दोनों रूपों में।

6. श्रद्धा और प्रेम में किसका अधिक महत्त्व है?

(क) श्रद्धा का (ख) प्रेम का (ग) दोनों का (घ) दोनों का समान महत्त्व।

7. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) श्रद्धा और प्रेम (ख) श्रद्धा का महत्त्व

(ग) सदाचार और श्रद्धा (घ) प्रेम का महत्त्व।

8. 'प्रतिनिधि' शब्द में समास है-

(क) अव्ययीभाव समास (ख) तत्पुरुष समास

(ग) कर्मधारय समास (घ) द्विगु समास।

उत्तर—1. (क) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ) 6. (क) 7. (ख) 8. (क)।

(14)

भारतीय संस्कृति की पावन-परम्परा में नारी को सदैव सम्माननीय स्थान प्राप्त रहा है। वैदिक काल से नारी की प्रतिष्ठापना अर्द्धांगिनी के रूप में की गई है। नारी को सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा का रूप माना जाता है। अतएव प्राचीन भारत में सर्वत्र नारी का देवी रूप पूज्य था। यज्ञ आदि अवसरों पर पुरुष के साथ नारी की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। उसके बिना कोई भी मांगलिक कार्य अधूरा माना गया था। परन्तु वैदिक काल से नारी की सामाजिक स्थिति में गिरावट आने लगी तथा उसका अस्तित्व घर की चहारदीवारी तक सीमित रहने लगा। इसी कारण नारी-जीवन को लेकर अनेक कुप्रथाओं और रूढ़ियों का प्रसार हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुई, तब नारी की उस चिन्तनीय स्थिति में परिवर्तन आने लगा। ज्ञान-विज्ञान का प्रसार होने, नव-जागरण का स्वर उभरने से समाज-सुधारक महापुरुषों ने नारी-समाज के उत्थान के अनेक कार्य किये और नारी को जन-नेतृत्व का प्रशस्त पथ दिखाया।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद हम यहाँ पर नारी के दो रूप देखते हैं, एक तो वे जो देहातों में रहती हैं, अशिक्षित अथवा कम शिक्षित एवं गरीब हैं और मेहनत-मजदूरी करके संघर्षशील जीवन बिताती हैं तथा दूसरी वे जो शहरों-कस्बों में रहती हैं, शिक्षित, सम्पन्न एवं समर्थ हैं। देहातों में शिक्षा के अभाव में अभी भी सामाजिक कुरीतियाँ व्याप्त हैं। शहरों की नारियाँ शिक्षित होकर सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं यद्यपि अब ग्रामीण क्षेत्रों की नारियाँ भी शहरी क्षेत्रों की नारियों के साथ कदमताल मिला रही हैं। शहरों में भौतिकता एवं पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भी देखा जा रहा है।

प्रश्न– 1. प्राचीन भारत में नारी को किस रूप में नहीं माना जाता था?
(क) सरस्वती (ख) दासी (ग) लक्ष्मी (घ) दुर्गा।
2. अर्द्धांगनी के रूप में नारी की प्रतिष्ठापना कब से की गई?
(क) वैदिक काल (ख) मध्यकाल (ग) आधुनिक काल (घ) ब्रिटिश काल।
3. देहातों की नारियाँ कैसा जीवन बिताती हैं?
(क) अशिक्षित एवं गरीब (ख) मेहनत-मजदूरी करके
(ग) संघर्षशील जीवन (घ) उपरोक्त सभी।
4. शहरों में किस चीज का प्रभाव देखा जा रहा है?
(क) अनेक कुप्रथाओं और रूढ़ियों का प्रसार (ख) शिक्षा का व्यवसायीकरण
(ग) दिखावेपन और भ्रष्टाचार का वातावरण (घ) भौतिक और पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव।
5. नारी-समाज के उत्थान में किसने अनेक प्रयास किये?
(क) समाज और परिवार ने (ख) समाज-सुधारक महापुरुषों ने
(ग) ब्रिटिश साम्राज्य ने (घ) राजनैतिक नेताओं ने
6. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी के रूप देखे जाते हैं-
(क) देहातों की अशिक्षित अथवा कम शिक्षित नारी
(ख) शहरों की सुशिक्षित नारी
(ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं।
7. उक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-
(क) भारतीय संस्कृति (ख) भारतीय नारी का स्वरूप
(ग) वैदिक काल (घ) नारी समाज का उत्थान।
8. 'सम्माननीय' शब्द में प्रत्यय है-
(क) नीय (ख) इय (ग) ईय (घ) अनीय।

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ख) 6. (ग) 7. (ख) 8. (घ)।

(15)

भारत में प्राचीन काल में सभी धर्मों में सद्भाव था। सम्राट् अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था, परन्तु वह सभी धर्मों का समान आदर करता था। बादशाह अकबर इस्लाम-धर्मानुयायी होते हुए भी यहाँ के सभी धर्मों में समन्वय स्थापित करना चाहता था और वह फतेहपुर-सीकरी के 'दीवाने-खास' में सभी धर्मों के रहस्य जानने के लिए उनके आचार्यों से शास्त्रचर्चा करता था। भारतीय संस्कृति प्रारम्भ से ही सहिष्णु और उदार रही है। यहाँ हूण, मंगोल, तातार, यवन, ईसाई एवं पारसी आदि सभी धर्मों के लोग समय-समय पर बाहर से आये तथा वे यहीं के निवासी बन गये। अति प्राचीन काल में आर्य और द्रविड़ लोगों में परस्पर मेल हुआ। इन सभी अवसरों पर भारतीयों ने सभी धर्मों को पर्याप्त आदर देकर सर्वधर्म-सद्भाव का परिचय दिया। भारतीय विद्वानों ने सभी धर्मों को सम्मान की दृष्टि से देखा। आधुनिक काल में तो गाँधीजी तथा अन्य मनीषियों ने भारत में सर्वधर्म सद्भाव पर अत्यधिक जोर दिया।

वस्तुत: यह मानवतावादी चिन्तन है। जब समाज में धार्मिक सद्भाव रहेगा या धार्मिक कट्टरता नहीं रहेगी, तो अन्धविश्वास और रूढ़ियाँ भी नहीं रहेंगी। जनता जितना आदर अपने धर्म को दे, उतना ही सम्मान अन्य धर्मों को भी दे। इससे समाज में सौमनस्य, समन्वय, एकता और सहयोग की भावना का प्रसार होगा। इससे मानवता की भावना बढ़ेगी और साम्प्रदायिकता का उन्माद दब जायेगा, उस दशा में इस धरती पर सच्चा ईश्वरीय राज्य स्थापित हो जाएगा। इस उपदेश का आशय यही है कि यदि मानव केवल मानवता अपनावे और मानव द्वारा कल्पित धर्मों का दुराग्रह छोड़ दे तथा धार्मिक कुत्सित कट्टरता न रखे तो तब सच्चे मानव-धर्म का प्रसार हो सकता है।

प्रश्न– 1. बादशाह अकबर सभी धर्माचार्यों से क्या जानना चाहता था?
(क) धर्माचार्यों का व्यवहार (ख) धर्माचार्यों का ज्ञान
(ग) सभी धर्मों का रहस्य (घ) सभी धर्मों का पतन।
2. भारतीय संस्कृति की क्या विशेषता बताई गई है?

(क) सर्वधर्म-सद्भाव से रहित (ख) धार्मिक कट्टरता से युक्त
(ग) सहिष्णु और उदारता से युक्त (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. सर्वधर्म सद्भाव का सुपरिणाम क्या रहेगा?
(क) समाज में सौमनस्य और समन्वय का प्रयास
(ख) एकता और सहयोग की भावना का प्रसार
(ग) सच्चे मानव धर्म की स्थापना (घ) उपरोक्त सभी।

4. सम्राट अशोक की क्या विशेषता थी?
(क) वह कमजोर शासक था (ख) सभी धर्मों का अनादर करना
(ग) सभी धर्मों का समान आदर करना (घ) केवल बौद्ध धर्म को मानना।

5. मानव द्वारा केवल मानवता अपनाने पर क्या होगा?
(क) धार्मिक दुराग्रह नहीं रहेगा (ख) समाज मानवता की भावना से भर जायेगा
(ग) समाज सुखमय जीवन व्यतीत करेगा (घ) उपरोक्त सभी।

6. मानवतावादी भावना के प्रसार से क्या लाभ होगा?
(क) साम्प्रदायिकता का उन्माद कम होगा (ख) धार्मिक कट्टरता बढ़ेगी
(ग) मानवता की भावना का प्रसार होगा (घ) 'क' और 'ग' दोनों।

7. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) भारत में सर्वधर्म सद्भाव (ख) भारतीय संस्कृति
(ग) मानवता का महत्त्व (घ) धर्म का महत्त्व।

8. 'अत्यधिक' शब्द में उपसर्ग है-
(क) अ (ख) आ (ग) अति (घ) अत्य।

उत्तर–1. (ग) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ) 6. (घ) 7. (क) 8. (ग)।

2. अपठित काव्यांश

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(1)

कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ठोकर मार, पटक मत माथा
तेरी राह रोकते पाहन
कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ले-देकर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने तुझको सींचा
बहा युगों तक खून-पसीना।
कुछ न करेगा? किया करेगा—
रे मनुष्य—बस कातर क्रंदन?
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

प्रश्न– 1. प्रस्तुत काव्यांश में कवि क्या करने की प्रेरणा दे रहा है?
(क) कायर बनने की (ख) ठोकर खाने की
(ग) पुरुषार्थी बनने की (घ) माथा पटकने की।

2. 'ले-देकर जीना, क्या जीना?' इससे कवि ने क्या भाव व्यक्त किया है?
   (क) लेन-देन करके जीवन व्यतीत करना (ख) मारपीट करके जीवन व्यतीत करना
   (ग) समझौतावादी बनकर जीना उचित नहीं (घ) समझौतावादी बनकर जीवन जीना।
3. हमें किसे अपना सर्वस्व अर्पण करना चाहिए।
   (क) कायर मनुष्य को (ख) समझौतावादी व्यक्ति को
   (ग) मानवता के पक्षधर को (घ) दुष्ट व्यक्ति को।
4. कातर क्रन्दन कौन करता है?
   (क) दुष्ट व्यक्ति (ख) जो उद्यमी नहीं होता
   (ग) पुरुषार्थी व्यक्ति (घ) जो धैर्य से कार्य करता है।
5. 'कुछ भी बन, बस कायर मत बन' कवि ने ऐसा क्यों कहा है?
   (क) क्योंकि कायर मनुष्य का जीवन व्यर्थ है
   (ख) क्योंकि कायर मनुष्य को हर कोई दबाता-सताता है
   (ग) क्योंकि कायर मनुष्य का हर कोई रास्ता रोकता है
   (घ) उपरोक्त सभी।
6. 'आत्म-समर्पण' शब्द में कौनसा समास है?
   (क) तत्पुरुष समास (ख) द्विगु समास (ग) कर्मधारय समास (घ) अव्ययीभाव समास।
7. प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
   (क) मानवता (ख) बस कायर मत बन
   (ग) कुछ भी बन (घ) आत्म-समर्पण।

उत्तर–1. (ग) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ख) 5. (घ) 6. (क) 7. (ख)।

(2)

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
        फिर भर दो-
        बादल, गरजो!
विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन, आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
        शीतल कर दो-
        बादल, गरजो!

प्रश्न–1. कवि बादल से क्या करने के लिए कहता है?
   (क) वर्षा नहीं करने के लिए (ख) यहाँ से जाने के लिए
   (ग) घनघोर गर्जना करने के लिए (घ) छाया करने के लिए।
2. धरा किस कारण तप्त बतायी गयी है?
   (क) बादल की गर्जना से (ख) अत्यधिक गर्मी एवं लू से
   (ग) ज्वालाग्नि के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं।
3. कवितांश में बादल की उपमा किससे दी गई है?
   (क) कवि से (ख) अज्ञात दिशा से
   (ग) नूतन कविता से (घ) बाल-कल्पना से।

4. 'निदाघ' शब्द से क्या तात्पर्य है?
(क) जलना (ख) ग्रीष्म ऋतु (ग) बादल (घ) दाग रहित।
5. निम्न में से 'बादल' शब्द का पर्यायवाची नहीं है-
(क) मेघ (ख) जलद (ग) घन (घ) पय।
6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) बादल गरजो (ख) नवजीवन (ग) विश्व के निदाघ (घ) नूतन कविता।
7. 'विकल विकल, उन्मन थे उन्मन' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?
(क) यमक अलंकार (ख) श्लेष अलंकार (ग) उपमा अलंकार (घ) अनुप्रास अलंकार।

उत्तर–1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ) 6. (क) 7. (क)।

(3)

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग-मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारा-मण्डन है।
बन्दीजन खग-वृन्द, शेष-फन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस देश की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की॥
जिसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक-सरककर खड़े हुए हैं।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल-भरे हीरे कहलाये।
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख क्यों न हों मोद में॥

प्रश्न– 1. कवि किसके बारे में वर्णन कर रहा है?
(क) मातृभूमि (ख) बचपन (ग) देवभूमि (घ) नीलाम्बर।
2. कवि ने पृथ्वी का परिधान किसको बताया है?
(क) रत्नाकर को (ख) नीलाम्बर को (ग) चन्द्र को (घ) नदियों को।
3. धूलभरे हीरे किसे कहा गया है?
(क) मातृभूमि की अमूल्य सन्तान को (ख) धूल मिट्टी उड़ाने वाले
(ग) धूल में खेलने वाले (घ) धूल से भरे हीरे।
4. मातृभूमि का सिंहासन किसे बताया गया है?
(क) नीलाम्बर को (ख) तारा-मण्डल को
(ग) रत्नाकर को (घ) शेषनाग के फन को।
5. 'करते अभिषेक पयोद है' 'पयोद' शब्द का अर्थ है-
(क) सागर (ख) बादल (ग) नदियाँ (घ) अमृत।
6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है-
(क) नीलाम्बर (ख) मातृभूमि (ग) बलिहारी इस देश की (घ) प्राकृतिक सौन्दर्य।
7. 'नीलाम्बर' शब्द में कौनसा समास है-
(क) कर्मधारय समास (ख) बहुव्रीहि समास
(ग) द्विगु समास (घ) तत्पुरुष समास।

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (घ) 5. (ख) 6. (ख) 7. (क)।

(4)

है अनिश्चित किस जगह पर
सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर

बाग वन सुन्दर मिलेंगे,
किस जगह यात्रा खतम हो
जायगी, यह भी अनिश्चित
है अनिश्चित, कब सुमन कब
कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जायेंगे
मिलेंगे कौन सहसा
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले,
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

प्रश्न– 1. 'बाग वन सुन्दर मिलेंगे' में 'बाग एवं वन' किसके प्रतीक हैं?
(क) सुखदायक स्थितियों के (ख) दु:खदायक स्थितियों के
(ग) हरियाली से युक्त उपवन के (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. 'किस जगह यात्रा खतम हो जाएगी', यहाँ पर किस यात्रा की चर्चा की गयी है?
(क) तीर्थस्थल पर जाने की (ख) जीवन-पक्ष पर चलने की
(ग) मंजिल पर पहुँचने की (घ) उपवन में पहुँचने की।
3. 'ऐसी आन कर ले' कवि कैसी आन करने के लिए कह रहा है?
(क) जीवन-पक्ष पर निरन्तर चलने की (ख) परिस्थितियों से न घबराने की
(ग) हमेशा आगे बढ़ने की (घ) उपरोक्त सभी।
4. इस काव्यांश में कवि क्या संदेश दे रहा है?
(क) जीवन-पथ की पूर्व पहचान करने की (ख) जीवन-पथ पर उतावलापन न रखने की
(ग) कष्टों और बाधाओं से न घबराने की (घ) उपरोक्त सभी।
5. 'सरित' शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है-
(क) सूर्य (ख) नदी (ग) आपगा (घ) निम्नगा।
6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) अनिश्चितता (ख) बटोही (ग) पथ की पहचान (घ) पहचान।
7. 'अनिश्चित' शब्द में उपसर्ग है-
(क) आ (ख) अन् (ग) निश् (घ) अ + निस्

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (घ) 5. (क) 6. (ग) 7. (घ)।

(5)

हे ग्राम देवता! नमस्कार!
सोने-चाँदी से नहीं किन्तु,
तुमने मिट्टी से किया प्यार।
हे ग्राम देवता! नमस्कार!
तुम जन-मन के अधिनायक हो,
तुम हँसो कि फूले-फले देश।
आओ सिंहासन पर बैठो,
यह राज्य तुम्हारा है अशेष।
उर्वरा भूमि के नये खेत,
ये नये धान्य से सजे वेश।
तुम भू पर रहकर भूमि भार,
धारण करते हो मनुज-शेष।

प्रश्न– 1. प्रस्तुत काव्यांश के आधार पर बताइए कि कवि ने ग्राम-देवता किसे कहा है?
(क) गाँवों के देवता को (ख) किसान को
(ग) गाँव के लोगों को (घ) ईश्वर को।
2. ग्राम देवता किससे प्यार करते हैं?
(क) सोने-चाँदी से (ख) अपने प्राणों से
(ग) राज-द्वार से (घ) मिट्टी से।
3. प्रस्तुत काव्यांश निम्न में से किससे सम्बन्धित है?
(क) ग्रामीण परिवेश से (ख) गाँव की झोपड़ियों से
(ग) किसान से (घ) जड़-चेतन से।
4. 'तुम हँसो' का क्या तात्पर्य है-
(क) ईश्वर के हँसने से (ख) खिलखिलाकर हँसने से
(ग) किसान की प्रसन्नता से (घ) इनमें से कोई नहीं।
5. जन-मन का अधिनायक किसे कहा गया है?
(क) ईश्वर को (ख) किसान को (ग) कवि को (घ) गाँव के देवता को।
6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) नमस्कार (ख) ग्राम-देवता किसान
(ग) तुम्हारा राज्य (घ) भूमि।
7. 'अधिनायक' शब्द में उपसर्ग है-
(क) अधि (ख) अ (ग) अधी (घ) अधिन।

उत्तर–1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ख) 6. (ख) 7. (क)।

(6)

मंजिल को बाँधो मत चलना रुक जाएगा
जीवन थक जाएगा।
बोलो अठपाखी मलयानिल
कब हरी किस वातायन में
बोलो कब चपला किरण बँधी
दहरी वाले किस आँगन में
केवल दो पल की
उम्र हुआ करती पाहुन मनुहारों की
पायल को रोको मत रुनुझुन रुक जाएगी
सरगम घुट जाएगा।
भरमों को बाँधो मत उलझन उग आएगी
संगम मिट जायेगा
मंजिल को बाँधो मत, चलना रुक जायेगा
जीवन थक जायेगा।

प्रश्न– 1. कविता के अनुसार जीवन कब थक जायेगा?
(क) जब लक्ष्य सीमित रहेगा (ख) जब उद्देश्य अनिश्चित रहेगा
(ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) 'क' और 'ख' दोनों नहीं।
2. प्रस्तुत काव्यांश में क्या सन्देश निहित है?
(क) मंजिल को नहीं बाँधने का (ख) लक्ष्य के प्रति गतिशील बने रहने का
(ग) लक्ष्य को सीमित करने का (घ) इनमें से कोई नहीं।
3. मनुहारों की उपमा किससे दी गई है?
(क) पणिहारी (ख) मेहमान (ग) राहगीर (घ) श्रमिक।

4. कविता में 'अठपारखी मलयानिल' किसका प्रतीक है?
   (क) निरन्तर प्रगतिशीलता का (ख) लक्ष्य-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील का
   (ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) 'क' और 'ख' दोनों नहीं।
5. 'मंजिल को बाँधो मत' कथन का क्या आशय है?
   (क) लक्ष्य को बढ़ाने का (ख) जीवन के उद्‌देश्य को सीमित न करने का
   (ग) कर्मठता का संचार करना (घ) उपरोक्त सभी।
6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
   (क) मंजिल को बाँधो मत (ख) जीवन थक जायेगा
   (ग) चलना रुक जाएगा (घ) लक्ष्य और जीवन।
7. 'मलयानिल' शब्द में कौनसा समास है-
   (क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) तत्पुरुष (घ) कर्मधारय।

उत्तर–1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (घ) 6. (क) 7. (ग)।

(7)

हे भाइयो! सोये बहुत, अब तो उठो, जागो अहो!
देखो जरा अपनी दशा, आलस्य को त्यागो अहो!
कुछ पार है क्या-क्या समय के उलट-फेर न हो चुके,
अब भी सजग होंगे न क्या? सर्वस्व तो हो खो चुके।
जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गये हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम देव के सिर दोष अपना मढ़ रहे।
पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।
आओ, मिलें सब देश-बान्धव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख-शान्तिमय उद्देश्य के।
क्या साम्प्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो,
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो।

प्रश्न– 1. इस काव्यांश में किसे सन्देश दिया गया है?
   (क) राजनेताओं को (ख) श्रमिकों को
   (ग) भारतीयों को (घ) किसानों को।
2. इस काव्यांश में क्या सन्देश दिया गया है?
   (क) आलस्य त्यागने का (ख) आगे बढ़ने का
   (ग) प्रगति करने का (घ) उपरोक्त सभी।
3. अपने भाग्य पर दोष कौन मढ़ते हैं?
   (क) निराशा से ग्रस्त भाग्यवादी (ख) आलस्य रहित व्यक्ति
   (ग) कर्मठ व्यक्ति (घ) इनमें से कोई नहीं।
4. समय की परिवर्तनशीलता को लक्ष्य कर क्या कहा गया है?
   (क) समय सदा एक-सा नहीं रहता (ख) समय में उलट-फेर होता रहता है
   (ग) समय के रहते विपरीत परिस्थितियों का अनुकूल बनना
   (घ) उपरोक्त सभी।
5. साम्प्रदायिक भेदभाव से क्या हानि होती है?
   (क) देश और समाज की एकता का कमजोर पड़ना
   (ख) भाईचारे की हानि होना
   (ग) सुख और शान्तिमय उद्‌देश्य पूर्ण होना
   (घ) 'क' और 'ख' दोनों।

6. इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(क) उठो, आगे बढ़ो, ऊँचा चढ़ो (ख) साम्प्रदायिकता
(ग) देश-बान्धव (घ) आलस्य और भारतवासी।
7. 'साम्प्रदायिक' शब्द में प्रत्यय है?
(क) अक (ख) इक (ग) सम् (घ) ईक।

उत्तर—1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (घ) 5. (घ) 6. (क) 7. (ख)।

(8)

ओ हिमानी चोटियों के सजग प्रहरी
तंग सूनी घाटियों के सबल रक्षक,
तू न एकाकी समझना आपको
देश तेरे साथ अन्तिम श्वास तक!
जानते हम पंथ है दुर्लंघ्य तेरा,
जानते हम कर्म का काठिन्य तेरा,
मौत का है सामने तेरे अंधेरा,
किन्तु पीछे आ रहा जगता सवेरा।
तू सिपाही सत्य का स्वातन्त्र्य का है,
न्याय का और शान्ति का है तू सिपाही,
प्राण देकर प्राण के ओ' प्रबल प्रहरी!
जा रहा तू देशहित बलि पंथ राही!
जा कि तेरे साथ है इस देश का बल,
साथ तेरी विजय की शुभ कामना है।

प्रश्न— 1. सजग प्रहरी किसकी पहरेदारी कर रहा है?
(क) अपने घर की (ख) हिमालय और पथ की
(ग) हिमालय के सीमान्त भाग की (घ) अपने गाँव की।
2. प्रहरी के साथ देशवासियों की क्या शुभ भावना है?
(क) सजग होकर सीमान्त की रक्षा करें (ख) शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें
(ग) सबल होकर देश भ्रमण करें (घ) 'क' और 'ख' दोनों।
3. इस काव्यांश में किस भाव की प्रधानता है?
(क) देश-रक्षा के भाव की (ख) देश-भक्ति के भाव की
(ग) त्याग और शौर्य के भाव की (घ) उपरोक्त सभी।
4. 'किन्तु पीछे आ रहा जगता सवेरा' इससे क्या आशय है?
(क) देश में प्रगति का प्रकाश फैलना (ख) प्रात:कालीन समय का होना
(ग) मौत का अन्धकारमय वातावरण होना (घ) रात्रि का समय खत्म होना।
5. सजग प्रहरी को किसका सिपाही बताया गया है?
(क) देश की स्वतंत्रता का (ख) न्यायप्रिय का
(ग) शान्ति और सत्य का (घ) उपरोक्त सभी।
6. इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए-
(क) सजग प्रहरी (ख) सबल रक्षक (ग) सीमान्त के प्रहरी (घ) प्रबल प्रहरी।
7. 'दुर्लंघ्य' शब्द में उपसर्ग है-
(क) दु (ख) दुर् (ग) दुम् (घ) दुल

उत्तर—1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ) 6. (ग) 7. (ख)।

(9)

विदित किसे है नहीं भला वह, भारत भू की ढाल महान्,
शौर्य-वीर्य का अविरल निर्झर पुण्यतीर्थ वह राजस्थान,
था चित्तौड़ दुर्ग-सा उसका दुर्विजेय विजयोन्नत भाल,
झुका नहीं वह कभी देह पर पाकर भी प्रहार विकराल।
    यह आड़ावल अचल दुर्ग-सा इसका सजग सबल प्रहरी,
    जिसकी सुखछाया में रह-रह सह पाया यह दोपहरी।
    यह नीचे हल्दीघाटी है वसुधा विश्रुत रणस्थली,
    जहाँ शूरवीरों के रज से रक्त नदी थी उमड़ चली।
बलि चढ़ गये मातृ-चरणों पर यहीं यहीं अगणित प्राणी,
काश कि हम सुन सकते इन मूक शिलाओं की वाणी,
न्यौछावर जिसके चरणों में शत शत शूर हुए बाँके,
उसी रत्न-गर्भा भू का क्या जड़ लेखनी मूल्य आँके!

प्रश्न– 1. राजस्थान को किसका पुण्य-तीर्थ बताया गया है?
(क) शौर्य-वीर्य के प्रवाह का (ख) वीरभूमि का
(ग) देवताओं की भूमि का (घ) रणस्थली का।

2. राजस्थान का भाल किसके समान है?
(क) हिमालय के समान (ख) चित्तौड़ दुर्ग के समान
(ग) शिलाओं के समान (घ) स्तम्भों के समान।

3. हल्दीघाटी किस कारण प्रसिद्ध रही है?
(क) पीली-पीली घाटियाँ होने के कारण (ख) महाराणा प्रताप के युद्ध क्षेत्र के रूप में
(ग) वीर-योद्धाओं की स्थली होने के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. 'भारत भू की ढाल महान्' किसे बताया गया है?
(क) हिमालय को (ख) हल्दीघाटी को
(ग) वीरभूमि राजस्थान को (घ) चित्तौड़ दुर्ग को।

5. लेखनी से किसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता?
(क) राजस्थान के सौन्दर्य का (ख) चित्तौड़ दुर्ग का
(ग) मातृभूमि की महिमा का (घ) देशभक्तों के त्याग का।

6. प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) हल्दीघाटी (ख) राजस्थान-गरिमा (ग) चित्तौड़ दुर्ग (घ) वीरों की रणस्थली।

7. 'शौर्य-वीर्य' में समास है-
(क) द्वन्द्व समास (ख) द्विगु समास (ग) तत्पुरुष समास (घ) कर्मधारय समास।

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ग) 5. (घ) 6. (ख) 7. (क)।

(10)

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौनसा है?
जिसका चरण निरन्तर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौनसा है?
    नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
    सींचा हुआ सलोना, वह देश कौनसा है?
    जिसके बड़े रसीले, फल, कन्द, नाज, मेवे,
    सब अंग में सजे हैं, वह देश कौनसा है?

जिसमें सुगन्ध वाले, सुन्दर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौनसा है?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकतीं
आनन्दमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसकी अनन्त धन से, धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?

प्रश्न– 1. भारत का मुकुट बताया गया है–
(क) जम्मू-कश्मीर को (ख) हिमालय को
(ग) प्रकृति को (घ) रत्नेश को।

2. यह काव्यांश है–
(क) श्रृंगार से संबंधित (ख) करुणा से युक्त
(ग) निवेद भाव से मुक्त (घ) देशभक्ति से सम्बन्धित।

3. दिन-रात कौन हँस रहा है?
(क) मनुष्य (ख) हिमालय
(ग) सुन्दर पुष्प (घ) सूर्य-चन्द्रमा।

4. भारत की धरती किससे भरी पड़ी है?
(क) अनन्त निधियों से (ख) बहुमूल्य धातुओं से
(ग) खनिज पदार्थों व रत्नों से (घ) उपरोक्त सभी।

5. निम्न में से 'सुधा' शब्द का अर्थ नहीं है–
(क) अमृत (ख) पीयूष (ग) मधु (घ) गरल।

6. प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए–
(क) भारत देश (ख) वह देश कौनसा है
(ग) भारतभूमि और प्रकृति (घ) संसार का शिरोमणि।

7. 'हिमालय' शब्द में समास है–
(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु (ग) तत्पुरुष (घ) कर्मधारय।

उत्तर–1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (घ) 6. (क) 7. (ग)।

(11)

धन-बल से हो जहाँ न जन-श्रम-शोषण,
पूरित भव-जीवन के निखिल प्रयोजन!
जहाँ दैन्य जर्जर, अभाव ज्वर पीड़ित,
जीवन-यापन हो न मनुज को गर्हित
युग-युग के छायाभासों से त्रासित
मानव के प्रति मानव मन हो न सशंकित!
मुक्त जहाँ मन की गति, जीवन में रति,
भव-मानवता से जन-जीवन परिणति
संस्कृति वाणी, भाव, कर्म, संस्कृत मन,
सुन्दर हो जन वास, वसन सुन्दर तन!
ऐसा स्वर्ग धरा पर हो समुपस्थित,
नव मानव-संस्कृति किरणों से ज्योतित!

प्रश्न– 1. कवि धरती पर कैसा जीवन-यापन करना चाहता है?
(क) ज्वर और पीड़ा से रहित (ख) अभाव और गरीबी से रहित
(ग) सम्मानित जीवन-यापन (घ) उपरोक्त सभी।

2. जगत का जीवन किसमें परिणत होवें?
   (क) धन-बल में (ख) मानव कल्याण में
   (ग) जीवन में रति (घ) जन-श्रम में।
3. मानव का मन प्राय: किससे सशंकित नहीं रहता है?
   (क) युग-युग के छायाभासों से (ख) अज्ञात आशंकाओं से
   (ग) श्रेष्ठ आचरणों से (घ) परम्परागत रूढ़ियों से।
4. 'संस्कृत मन' किसे कहा गया है?
   (क) श्रेष्ठ आचरणों से युक्त मन (ख) श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त मन
   (ग) पूर्णतया शुद्ध मन (घ) उपरोक्त सभी।
5. 'भव' शब्द का अर्थ है-
   (क) सागर (ख) संसार (ग) भूमि (घ) नाव।
6. प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक है-
   (क) नव-मानव संस्कृति (ख) जीवन और मनुष्य
   (ग) जीवन और संस्कृति (घ) जन-जीवन।
7. 'परिणति' शब्द में उपसर्ग बताइए-
   (क) पर् उपसर्ग (ख) परि उपसर्ग (ग) प उपसर्ग (घ) पइ उपसर्ग।

उत्तर–1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख) 6. (क) 7. (ख)।

(12)

यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि।
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि॥
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं।
हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आये थे नहीं॥
जातियों का उत्थान-पतन, आँधियाँ, झड़ी, प्रचण्ड समीर।
खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर॥
चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा सम्पन्न।
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न॥
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव।
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।
वही है शान्ति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-सन्तान।।
जियें तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे, यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष॥

प्रश्न– 1. हम अपना सर्वस्व किस पर न्यौछावर कर दें?
   (क) भारतीय संस्कृति पर (ख) धार्मिक आस्था में
   (ग) भारतवर्ष पर (घ) मानव कल्याण पर।
2. 'अतिथि थे सदा हमारे देव' कथन का आशय क्या है?
   (क) अतिथि को देवता समान मानना
   (ख) अतिथि का पवित्र हृदय से सत्कार करना
   (ग) जिसके आने की तिथि निश्चित न हो उसका आदर करना
   (घ) उपरोक्त सभी।
3. हम भारतीय किसकी संतान हैं?
   (क) ईश्वर की सन्तान (ख) आर्यों की सन्तान
   (ग) किसान की सन्तान (घ) धरती माता की सन्तान।

4. भारत-भूमि की क्या विशेषता व्यक्त हुई है?
(क) भारत भूमि प्रकृति का पालना है (ख) मानवता का देश है
(ग) पवित्र संस्कृति का स्त्रोत है (घ) उपरोक्त सभी।
5. भारत ने चीन को क्या दिया?
(क) दया का दान (ख) सदाचार का भाव
(ग) धर्म की दृष्टि (घ) रत्नों का भण्डार।
6. प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) हमारा प्यारा भारतवर्ष (ख) भारतवर्ष और प्रकृति
(ग) हमारी जन्मभूमि (घ) आर्य-सन्तान।
7. 'उत्थान-पतन' में समास है-
(क) द्वन्द्व समास (ख) तत्पुरुष समास (ग) कर्मधारय समास (घ) बहुव्रीहि समास।

उत्तर–1. (ग) 2. (घ) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग) 6. (क) 7. (क)।

(13)

सोचता हूँ, मैं कब गरजा था?
जिसे लोग मेरा गर्जन समझते हैं,
वह असल में गाँधी का था,
उस आँधी का था, जिसने हमें जन्म दिया था।
तब भी हमने गाँधी के
तूफान को ही देखा
गाँधी को नहीं।
वे तूफान और गर्जन के
पीछे बसते थे।
सच तो यह है
कि अपनी लीला में
तूफान और गर्जन को
शामिल होते देख
वे हँसते थे।

प्रश्न– 1. 'जिसने हमें जन्म दिया था' इस आधार पर गाँधीजी को क्या कहा गया?
(क) महात्मा (ख) मोहनदास (ग) राष्ट्रपिता (घ) कर्मचन्द।
2. गाँधीजी को किस बात में हँसी आती थी?
(क) आन्दोलन में जनता से मिले पूर्ण सहयोग से
(ख) सत्याग्रह आन्दोलन के आह्वान पर
(ग) राष्ट्रपिता कहलाने पर (घ) आँधी-तूफान आने पर।
3. प्रस्तुत काव्यांश से क्या सन्देश दिया गया है?
(क) केवल शान्त-सहिष्णुता का जीवन व्यतीत करना
(ख) हमेशा सरलता का व्यवहार अपनाना
(ग) जरूरत के अनुसार प्रचण्ड तेजस्विता अपनाना
(घ) इनमें से कोई नहीं।
4. इस काव्यांश में गाँधीजी को किस रूप में याद किया गया है?
(क) राष्ट्रपिता के रूप में (ख) महात्मा गाँधी के रूप में
(ग) प्रचण्ड आँधी-तूफान रूप में (घ) इनमें से कोई नहीं।
5. 'जिसने जन्म दिया था' - इसका क्या आशय है?
(क) जिसने गुलामी की दासता से मुक्ति दिलायी
(ख) जिसने भारत को गणतन्त्र राष्ट्र के रूप में खड़ा किया
(ग) जिसने देश को स्वतंत्रता दिलायी
(घ) उपरोक्त सभी।

6. निम्न में से 'आँधी' का पर्यायवाची नहीं है-
(क) झंझावत (ख) प्रभंजन (ग) तूफान (घ) गर्जन।
7. प्रस्तुत काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-
(क) तूफान और गर्जन (ख) मैं कब गरजा था?
(ग) गाँधी जी का व्यक्तित्व (घ) महात्मा गाँधी।

उत्तर–1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ) 6. (घ) 7. (ग)।

(14)

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।
उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखण्ड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।
सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही॥

प्रश्न– 1. मनुष्य को मृत्यु से क्यों नहीं डरना चाहिए?
(क) मनुष्य मरणधर्मा है यह जानने के कारण (ख) ईश्वर की कृपा होने के कारण
(ग) भारतवर्ष में जन्म लेने के कारण (घ) मानवता का आचरण अपनाने के कारण।
2. अमर कौन हो जाता है?
(क) परोपकार करने वाला (ख) तपस्या करने वाला
(ग) राज करने वाला (घ) पशु के समान जीवन जीने वाला।
3. कवि के अनुसार मनुष्य कौन है?
(क) जो अपने लिए जीता है (ख) जो अपने परिवार के लिए मरता है
(ग) जो मनुष्य के लिए जीता-मरता है (घ) जो किसी के लिए कुछ नहीं करता।
4. पशु-प्रवृत्ति क्या है?
(क) दूसरों के लिए जीना-मरना (ख) हमेशा परोपकार करना
(ग) जंगलों में घूमना-फिरना (घ) केवल अपने लिए ही जीना।
5. कैसी मृत्यु सुमृत्यु होती है?
(क) जिसमें कष्ट होता है (ख) जिसमें कष्ट नहीं होता
(ग) जिसमें मरने के बाद भी लोग याद करते हैं
(घ) जिसमें मरने के बाद कोई याद नहीं करता।
6. प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-
(क) मनुष्यता (ख) परोपकार
(ग) उदारता (घ) जीवन और मृत्यु।
7. 'सहानुभूति' पद में उपसर्ग है-
(क) सह (ख) अनु (ग) सह और अनु (घ) सहानु।

उत्तर–1. (क) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग) 6. (क) 7. (ग)।

(15)

हाय रे मानव, नियति के दास!
हाय रे मनुपुत्र, अपना ही उपहास!
प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत,
सिन्धु से आकाश तक सबको किये भयभीत,
सृष्टि को निज बुद्धि से करता हुआ परिमेय,
चीरता परमाणु की सत्ता असीम, अजेय,
बुद्धि के पवमान में उड़ता हुआ असहाय,
जा रहा तू किस दिशा की ओर को निरुपाय?
लक्ष्य क्या? उद्देश्य क्या? क्या अर्थ?
यही नहीं यदि ज्ञात तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ।
सुन रहा आकाश चढ़ ग्रह-तारकों का नाद;
एक छोटी बात ही पड़ती न तुझको याद।
एक छोटी, एक सीधी बात,
विश्व में छायी हुई है वासना की रात।

प्रश्न– 1. कवि ने मनुष्य को किसका दास बताया है?

(क) नियति का (ख) विज्ञान का
(ग) ईश्वर का (घ) वासनाओं का।

2. वर्तमान काल में विज्ञान ने किसे जीत लिया है?

(क) मनुष्य की बुद्धि को (ख) मनुष्य के लक्ष्यों को
(ग) प्रकृति के रहस्यों को (घ) सम्पूर्ण पृथ्वी को।

3. सिन्धु से आकाश तब सब ओर किसका भय बना हुआ है?

(क) शत्रुओं के आक्रमण का (ख) भोग-वासनाओं का
(ग) प्रकृति के विध्वंस का (घ) परमाणु अस्त्रों के विध्वंस का।

4. आज विश्व में किसकी रात छायी हुई है?

(क) अन्धविश्वासों की (ख) वासनाओं की
(ग) परम्परागत रूढ़ियों की (घ) अन्याय और अत्याचार की।

5. 'विज्ञान का श्रम व्यर्थ' से क्या आशय है-

(क) मानव को अपने आविष्कारों का उद्देश्य ज्ञान न होना
(ख) सृष्टि-हित का अर्थ नहीं समझना
(ग) मानव का अत्यधिक बौद्धिकता से युक्त होना
(घ) उपरोक्त सभी।

6. इस काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए-

(क) विज्ञान का अभिशाप (ख) नियति का दास
(ग) मानव और विज्ञान (घ) इनमें से कोई नहीं।

7. निम्न में से 'सिन्धु' शब्द का पयार्यवाची नहीं है-

(क) समुद्र (ख) जलधि (ग) चन्द्रमा (घ) पयोधि।

उत्तर–1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ) 6. (क) 7. (ग)।

रचना

निबन्ध-लेखन

'निबन्ध' गद्य-साहित्य की प्रमुख विधा है। निबन्ध को 'गद्य की कसौटी' कहा गया है। अंग्रेजी में निबन्ध को एस्से (Essay) कहते हैं। नि + बन्ध = निबन्ध का शाब्दिक अर्थ है—अच्छी प्रकार से बँधा हुआ अर्थात् वह गद्य-रचना जिसमें सीमित आकार के भीतर निजीपन, स्वच्छता, सौष्ठव, सजीवता और आवश्यक संगति से किसी विषय का वर्णन किया जाता है। शब्दों का चयन, वाक्यों की संरचना, अनुच्छेद का निर्माण, विचार एवं कल्पना की एकसूत्रता, भावों की क्रमबद्धता आदि सब कुछ निबंध का शरीर निर्मित करते हैं। भाषा की सरलता, स्पष्टता, कसावट और विषयानुकूलता निबंध के शरीर को सजाने में अपना योगदान देती हैं।

अच्छे निबन्ध की विशेषताएँ–

(1) निबंध में विषय का वर्णन आवश्यक संगति तथा सम्बद्धता से किया गया हो।

(2) निबंध में मौलिकता, सरसता, स्पष्टता और सजीवता होनी चाहिए।

(3) निबंध की भाषा सरल, प्रभावशाली तथा व्याकरणसम्मत होनी चाहिए।

(4) निबंध संकेत बिन्दुओं के आधार पर अनुच्छेदों में लिखा जाना चाहिए।

(5) निबंध लेखन से पूर्व रूपरेखा तय कर संकेत-बिन्दु बना लेने चाहिए।

(6) निबंध निश्चित शब्द-सीमा में ही लिखा जाना चाहिए।

(7) निबंध-लेखन में उद्धरणों, सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों एवं काव्य-पंक्तियों का आवश्यकतानुसार यथास्थान प्रयोग किया जाना चाहिए।

निबंध के अंग–निबंध को लिखते समय इसी विषय-वस्तु को सामान्य रूप से निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है—

(1) भूमिका, प्रस्तावना या आरम्भ–निबंध का प्रारम्भ जितना आकर्षक और प्रभावशाली होगा निबंध उतना ही अच्छा माना जाता है। निबंध का प्रारम्भ किसी सूक्ति, काव्य-पंक्ति और विषय की प्रकृति को ध्यान में रखकर भूमिका के आधार पर किया जाना चाहिए।

(2) मध्य भाग या प्रसार–इस भाग में निबंध के विषय को स्पष्ट किया जाता है। लेखक को भूमिका के आधार पर अपने विचारों और तथ्यों को रोचक ढंग से अनुच्छेदों में बाँट कर प्रस्तुत करते हुए चलना चाहिए या उप-शीर्षकों में विभक्त कर मूल विषय-वस्तु का ही विवेचन करते हुए चलना चाहिए। ध्यान रहे सभी उप-शीर्षक निबंध-विकास की दृष्टि से एक-दूसरे से जुड़े हों और विषय से सम्बद्ध हों।

(3) उपसंहार या अंत–प्रारम्भ की भाँति निबंध का अन्त भी अत्यन्त प्रभावशाली होना चाहिए। अंत अर्थात् उपसंहार एक प्रकार से सारे निबंध का निचोड़ होता है। इसमें अपनी सम्मति भी दी जा सकती है।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्यात्मक निबन्ध

1. मेक इन इंडिया अथवा स्वदेशी उद्योग

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. मेक इन इंडिया—प्रारम्भ एवं उद्देश्य 3. स्वदेशी उद्योग 4. योजना के लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–किसी भी देश की समृद्धि एवं विकास का मुख्य आधार उसकी आर्थिक एवं उत्पादन क्षमता होती है। वर्तमान में आर्थिक सम्पन्नता की दृष्टि से भारत विश्व के प्रगतिशील देशों में अग्रणी बनता जा रहा है। इसके लिए स्वदेशी की भावना निरन्तर प्रत्येक भारतीय के हृदय में विकसित होना आवश्यक है।

2. मेक इन इंडिया—प्रारम्भ एवं उद्देश्य–भारत को सुख-सुविधा सम्पन्न और समृद्ध बनाने, अर्थव्यवस्था के विकास की गति बढ़ाने, औद्योगीकरण और उद्यमिता को बढ़ावा देने और रोजगार का सृजन करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 2014 में

वस्तुओं और सेवाओं को देश में ही बनाने के लिए 'मेक इन इंडिया' (स्वदेशी उद्योग) नीति की शुरुआत की थी। भारत सरकार का प्रयास है कि विदेशों में रहने वाले सम्पन्न भारतीय तथा अन्य उद्योगपति भारत में आकर अपनी पूँजी से उद्योग लगायें। वे अपने उत्पादन को भारतीय बाजार तथा विदेशी बाजारों में बेचकर मुनाफा कमा सकेंगे तथा भारत को भी इससे लाभ होगा।

3. स्वदेशी उद्योग—मेक इन इंडिया का ही स्वरूप स्वदेशी उद्योग है। वर्तमान में कोरोना महामारी के बाद तो इसके स्वरूप को और अधिक विस्तृत करते हुए इसे 'आत्मनिर्भर भारत' नाम दिया गया है, जिसका प्रमुख लक्ष्य अपने देश को पूर्णतया आत्मनिर्भर बनाते हुए विदेशी पूँजी को भी भारत में लाना तथा रोजगार के अवसर विकसित करना है।

4. योजना के लाभ—'मेक इन इंडिया' अथवा 'स्वदेशी उद्योग' की योजना के द्वारा सरकार विभिन्न देशों की कम्पनियों को भारत में कर छूट देकर अपना उद्योग भारत में ही लगाने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे भारत का आयात बिल कम हो सके और देश में रोजगार का सृजन हो सके। इस योजना से निर्यात और विनिर्माण में वृद्धि होगी जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार होगा, साथ ही भारत में रोजगार सृजन भी होगा।

5. उपसंहार—आज भारत 'स्वदेशी उद्योग' अथवा 'मेक इन इंडिया' नीति के कारण रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक, हार्डवेयर आदि क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनता हुआ विश्व का एक सम्पन्न और समृद्ध राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है।

2. आत्मनिर्भर भारत

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. आत्मनिर्भर भारत 3. आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तम्भ 4. आत्मनिर्भरता के उपाय एवं लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—देश को समृद्ध व सुखी बनाने के लिए तथा कोरोना महामारी का मुकाबला करने के लिए भारत के प्रधानमन्त्री ने 12 मई, 2020 को 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान शुरू करने की घोषणा की।

2. आत्मनिर्भर भारत—आत्मनिर्भर भारत का तात्पर्य स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने के साथ-साथ विदेशी निवेश को भी बढ़ावा देना है, जिससे यहाँ रोजगार के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध हो सकें एवं भारत की आर्थिक समृद्धि के साथ ही विश्व का भी कल्याण हो सके।

3. आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तम्भ—प्रधानमन्त्री महोदय के अनुसार आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तम्भ इस प्रकार हैं—1. अर्थव्यवस्था, जो वृद्धिशील परिवर्तन नहीं, बल्कि लम्बी छलाँग सुनिश्चित करती है। 2. बुनियादी ढाँचा, जिसे भारत की पहचान बन जाना चाहिए। 3. प्रणाली (सिस्टम), जो 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्थाओं पर आधारित हो। 4. उत्साहशील आबादी, जो आत्मनिर्भर भारत के लिए हमारी ऊर्जा का स्रोत है। 5. माँग, जिसके तहत हमारी माँग एवं आपूर्ति शृंखला (सप्लाई चेन) की ताकत का उपयोग पूरी क्षमता से किया जाना चाहिए।

4. आत्मनिर्भरता के उपाय एवं लाभ—आत्मनिर्भरता के लिए भूमि, श्रम, तरलता और कानूनों पर फोकस करते हुए कुटीर उद्योग, एमएसएमई, मजदूरों, मध्यम वर्ग तथा उद्योगों सहित विभिन्न वर्गों की जरूरतों को पूरा करना आवश्यक है। इसके लिए आर्थिक सहायता के रूप में भारत सरकार ने विभिन्न चरणों में विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की है, जो विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता और गुणवत्ता बढ़ाने, गरीबों, मजदूरों, प्रवासियों इत्यादि को सशक्त बनाने में सहायक होगा। आत्मनिर्भरता भारत को वैश्विक आपूर्ति शृंखला में कड़ी प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगी। इसके लिए लोकल (स्थानीय या विदेशी) उत्पादों का गर्व से प्रचार करने और इन लोकल उत्पादों को वैश्विक बनाने में मदद करने की आवश्यकता है। इन उपायों को करने से भारत न केवल आर्थिक दृष्टि से सशक्त होगा, अपितु विश्व में विकासशील देशों में अग्रणी बन सकेगा।

5. उपसंहार— आत्मनिर्भरता ही सभी तरह के संकटों का सामना करने का सशक्त हथियार है, जिसके बल से हम आर्थिक संकट रूपी युद्ध को जीत सकते हैं। अत: विश्व में भारत की महत्ता एवं सम्पन्नता को बनाये रखने के लिए आत्मनिर्भर भारत की अति आवश्यकता है।

3. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी

अथवा

कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. कोरोना वायरस—लक्षण एवं बचाव के तरीके 3. कोरोना वायरस महामारी का सामाजिक प्रभाव 4. आर्थिक प्रभाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—हाल ही में कोरोना वायरस के रूप में जो महामारी फैली, उसने सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख दिया। इस महामारी के कारण विश्व के समृद्ध से समृद्ध देशों की स्थिति दयनीय हो गई। वर्ष 2019 के अन्त में चीन के वुहान शहर

में पहली बार प्रकाश में आए कोरोना वायरस संक्रमण ने विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने घातक कोरोना वायरस का आधिकारिक नाम **कोविड-19** रखा है।

2. कोरोना वायरस–लक्षण एवं बचाव के तरीके–

लक्षण–इसके लक्षण फ्लू से मिलते-जुलते हैं, संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, साँस लेने में तकलीफ, नाक बहना, सिर में तेज दर्द, सूखी खाँसी, गले में खराश व दर्द आदि समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

बचाव के तरीके–स्वास्थ्य मन्त्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक हाथों को बार-बार साबुन से धोना चाहिए, इसके लिए अल्कोहल आधारित हैंड वॉश का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। खाँसते व छींकते समय अपने मुँह और नाक को टिशु/रूमाल से ढककर रखें। अपने हाथों से बार-बार आँख, नाक या मुँह न छुएँ। भीड़-भाड़ वाले स्थान पर न जाएँ। बाहर जाते समय या किसी से बात करते समय मास्क का प्रयोग करें। टीकाकरण भी अवश्य करायें। संक्रमण के कोई भी लक्षण दिखलाई देने, संक्रमित व्यक्ति या स्थान से सम्पर्क होने पर तुरन्त स्वास्थ्य की जाँच करायें तथा कुछ दिनों तक स्वयं को होम आइसोलेशन में रखें।

3. कोरोना वायरस महामारी का सामाजिक प्रभाव–इस वैश्विक महामारी से बचाव, रोकथाम, उपचार एवं पुनर्वास हेतु विश्व के लगभग सभी देशों में लॉक डाउन, आइसोलेशन, क्वॅरेनटाइन की नीति अपनाई गई, संक्रमण के भय से लगभग समस्त सामाजिक गतिविधियाँ, उत्सव आदि बन्द हो गए। लोगों के रोजगार एवं आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इससे खाद्य असुरक्षा में वृद्धि, उत्पादन में कमी आदि से सामाजिक जीवन अत्यधिक प्रभावित हुआ है।

4. आर्थिक प्रभाव–कोरोना वायरस महामारी से निपटने के लिए सभी देशों, राज्यों द्वारा लगाए गए लॉकडाउन, संक्रमित व्यक्तियों के उपचार, सम्भाव्य रोगियों/कैरियर्स के आइसोलेशन, जाँच प्रक्रिया, दवा, क्वॅरेनटाइन की व्यवस्था; वंचित एवं अरक्षित समूहों को राहत पहुँचाने, टीकाकरण आदि के कारण सार्वजनिक व्यय में भारी वृद्धि तथा कर राजस्व में कमी होने से, व्यापार, उद्योग आदि बन्द हो जाने से सभी क्षेत्रों में आर्थिक मन्दी आई। वस्तुत: इस महामारी ने सारे विश्व में वैश्विक अर्थव्यवस्था को तोड़कर रख दिया। वर्तमान में कोविड-19 का प्रकोप कम होने से इस स्थिति में सुधार हुआ है।

5. उपसंहार–कोरोना वायरस जो 21वीं सदी की भयंकर महामारी है, इसने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। इस महामारी से स्वयं को बचाते हुए प्रत्येक नागरिक दूसरों का भी हित चिन्तन करे तथा 'जान भी है जहान भी है' इस कथन को सिद्ध करते हुए देश व समाज की समृद्धि में सभी को योगदान देना चाहिए।

4. समाज में नारी का स्थान
अथवा
भारतीय नारी तब और अब
अथवा
राष्ट्र के उत्थान में नारी की भूमिका

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. प्राचीन एवं मध्यकाल में नारी की स्थिति 3. वर्तमान युग में नारी 4. स्वतन्त्र भारत में नारी की भूमिका 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–भारतीय संस्कृति की पावन परम्परा में नारी को सदैव सम्माननीय स्थान प्राप्त रहा है। नारी प्रेम, दया, त्याग व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है और ये आदर्श मानव-जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। किसी देश की अवनति अथवा उन्नति वहाँ के नारी समाज पर अवलम्बित होती है। जिस देश की नारी जागृत और शिक्षित होती है, वही देश संसार में सबसे अधिक उन्नत माना जाता है।

2. प्राचीन एवं मध्यकाल में नारी की स्थिति–प्राचीन भारत में सर्वत्र नारी का देवी रूप पूज्य था। फिर मध्यकाल में पर्दा प्रथा, जौहर प्रथा, सती प्रथा आदि का जन्म हुआ। परिणामस्वरूप कुरीतियों, कुप्रथाओं और रूढ़ियों ने समाज में अपने पैर जमा लिए। जिससे नारी के लिए शिक्षा के दरवाजे बन्द हो गये।

3. वर्तमान युग में नारी–21वीं शताब्दी में स्त्री-शिक्षा का तीव्र गति से प्रचार-प्रसार हुआ। शिक्षा-प्राप्ति के क्षेत्र में नारी आगे बढ़ी। शिक्षा के अनेक क्षेत्रों में सहभागिता निभाते हुए नारी जाति का सर्वांगीण विकास हुआ।

4. स्वतन्त्र भारत में नारी की भूमिका–भारतीय नारी ने स्वतन्त्र भारत में जो प्रगति की है, उससे देश उन्नत होता जा रहा है। अब नारी पुरुष के समान राष्ट्रपति, मन्त्री, डॉक्टर, वकील, जज, शिक्षिका, प्रशासनिक अधिकारी आदि सभी पदों और सभी क्षेत्रों में कुशलता से काम कर रही हैं। सारे देश में नारी सशक्तीकरण के अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों और अन्धविश्वासों का निवारण करने में शिक्षित नारी की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

5. उपसंहार—हमारे देश में प्राचीन काल में नारी को अतीव पूज्य स्थान प्राप्त था, परन्तु मध्यकाल में वह पुरुष की दासी बनकर रह गई। स्वतन्त्र भारत में नारी पुनः अपने गौरव एवं आदर्शों की प्रतिष्ठा करने लग गई है। हमारे राष्ट्रीय उत्थान में नारी की भूमिका सर्वमान्य है।

5. राष्ट्र-निर्माण में युवकों का योगदान
अथवा
राष्ट्रीय उत्थान में युवा-वर्ग का योगदान
अथवा
राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना—समाज की वर्तमान स्थिति 2. युवा पीढ़ी का वर्तमान रूप 3. युवकों का दायित्व 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—युवक देश के कर्णधार होते हैं। देश और समाज का भविष्य उन्हीं पर निर्भर होता है। परन्तु आज हमारे देश की दशा अत्यन्त शोचनीय है। समाज में एकता, जागरूकता, राष्ट्रीय चेतना, कर्त्तव्य-बोध, नैतिकता आदि की कमी है। शिक्षा प्रणाली भी दोषपूर्ण है। राजनीतिक कुचक्र एवं भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है। स्वार्थ-भावना की वृद्धि, कर्त्तव्यबोध की कमी, कोरा दिखावा एवं अन्धविश्वास आदि समाज को जकड़े हुए हैं। ऐसी स्थिति में युवकों का दायित्व निश्चय ही बढ़ जाता है।

2. युवा पीढ़ी का वर्तमान रूप—आज की युवा पीढ़ी दिशाहीन है। इसलिए उसमें कुण्ठा, निराशा, तोड़-फोड़ की प्रवृत्ति, दायित्वहीनता आदि अधिक व्याप्त हैं। पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण करने के कारण उनके मन में भारतीय संस्कृति की परम्परागत मान्यताओं के प्रति रुचि नहीं है। अश्लील चलचित्र, अशिष्ट व्यवहार और फैशनपरस्ती के प्रति उनकी रुचि अधिक है। अधिकतर नवयुवक पढ़ाई में मन नहीं लगाते हैं, मेहनत से भागते हैं तथा सफेदपोश साहब बनने के सपने देखते हैं।

3. युवकों का दायित्व—अतः युवा पीढ़ी के जहाँ समाज के प्रति दायित्व हैं, वहीं अपने जीवन-निर्माण के प्रति भी उसे कुछ सावधानी बरतनी अपेक्षित है। पहले युवक-युवती स्वयं को सुधारें, स्वयं को शिक्षित करें, स्वयं जिम्मेदार नागरिक बनें और स्वयं को चरित्रवान् बनायें, तभी वे समाज की प्रगति में सहायक हो सकते हैं। साथ ही समाज में शान्ति और व्यवस्था बनाये रखना, समाज विरोधी कार्य की रोकथाम करना, उनका दायित्व है। धर्म व नीति की मर्यादाओं को बनाये रखना भी उनका कर्त्तव्य है। समाज में ऊँच-नीच की भावना का विरोध करना, अन्याय और अनीतियों का विरोध करना, सामाजिक सौहार्द्र बनाये रखना भी उनका कर्त्तव्य है। इसके साथ ही भौतिकता के प्रभाव से बचे रहना भी उनका कर्त्तव्य है।

4. उपसंहार—उक्त सभी पक्षों को व्यावहारिक रूप देकर ही युवा पीढ़ी समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूरा कर सकती है। इसी दशा में समाज सुखमय बन सकता है। नवयुवक भारत की भावी आशाएँ हैं, उन्हें यथासम्भव समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए।

6. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक थैली : क्षणिक लाभ—दीर्घकालीन हानि
अथवा
प्लास्टिक थैली को ना, पर्यावरण को हाँ
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. प्लास्टिक कचरे का प्रसार 3. प्लास्टिक थैलियों से पर्यावरण प्रदूषण 4. प्लास्टिक थैलियों पर प्रतिबन्ध 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—मानव द्वारा निर्मित चीजों में प्लास्टिक थैली ही ऐसी है जो माउंट एवरेस्ट से लेकर सागर की तलहटी तक सब जगह बिखरी मिल जाती है। लगभग तीन दशक पहले किये गये इस आविष्कार ने ऐसा प्रभाव जमा दिया है कि आज प्रत्येक उत्पाद प्लास्टिक की थैलियों में मिलता है और घर आते-आते ये थैलियाँ कचरे में तब्दील होकर पर्यावरण को हानि पहुँचा रही हैं।

2. प्लास्टिक कचरे का प्रसार—प्लास्टिक थैलियों का इस्तेमाल इतनी अधिक मात्रा में हो रहा है कि सारे विश्व में एक साल में दस खरब प्लास्टिक थैलियाँ काम में लेकर फेंक दी जाती हैं। अकेले जयपुर में रोजाना पैंतीस लाख लोग प्लास्टिक का कचरा बिखेरते हैं और सत्तर टन प्लास्टिक का कचरा सड़कों, नालियों एवं खुले वातावरण में फैलता है। केन्द्रीय पर्यावरण नियन्त्रण बोर्ड के एक अध्ययन के अनुसार एक व्यक्ति प्रतिवर्ष छह से सात किलो प्लास्टिक कचरा फेंकता है।

3. प्लास्टिक थैलियों से पर्यावरण प्रदूषण—पर्यावरण विज्ञानियों ने प्लास्टिक के बीस माइक्रोन या इससे पतले उत्पाद को पर्यावरण के लिए बहुत घातक बताया है। ये थैलियाँ मिट्टी में दबने से फसलों के लिए उपयोगी कीटाणुओं को मार देती हैं। इन थैलियों के प्लास्टिक में पॉलि विनाइल क्लोराइड होता है, जो मिट्टी में दबे रहने पर भू-जल को जहरीला बना देता है। इस प्लास्टिक कचरे से नालियाँ बन्द हो जाती हैं, धरती की उर्वरा शक्ति समाप्त हो जाती है। रंगीन प्लास्टिक थैलियों से कैंसर जैसे असाध्य रोग हो जाते हैं। इस तरह प्लास्टिक थैलियों से पर्यावरण को हानि पहुँचती है।

4. प्लास्टिक थैलियों पर प्रतिबन्ध—प्लास्टिक थैलियों के उत्पादनकर्ताओं को कुछ लाभ हो रहा हो तथा उपभोक्ताओं को भी सामान ले जाने में सुविधा मिल रही हो, परन्तु यह क्षणिक लाभ पर्यावरण को दीर्घकालीन हानि पहुँचा रहा है। कुछ लोग बीस माइक्रोन से पतले प्लास्टिक पर प्रतिबन्ध लगाने की वकालत कर उससे अधिक मोटे प्लास्टिक को रिसाइक्लड करने का समर्थन करते हैं, परन्तु वह रिसाइक्लड प्लास्टिक भी एलर्जी, त्वचा रोग एवं पैकिंग किये गये खाद्य पदार्थों को दूषित कर देता है। इसीलिए राजस्थान सहित अन्य दूसरे राज्यों ने प्लास्टिक थैलियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।

5. उपसंहार—प्लास्टिक थैलियों का उपयोग पर्यावरण की दृष्टि से सर्वथा घातक है। यह असाध्य रोगों को बढ़ाता है। इससे अनेक हानियाँ होने से इसे पर्यावरण का शत्रु भी कहा जाता है।

7. कन्या-भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या
अथवा
कन्या-भ्रूण हत्या पाप है : इसके जिम्मेदार आप हैं
अथवा
कन्या-भ्रूण हत्या : एक चिन्तनीय विषय
अथवा
कन्या-भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. कन्या-भ्रूण हत्या के कारण 3. कन्या-भ्रूण हत्या की विद्रूपता 4. कन्या-भ्रूण हत्या के निषेधार्थ उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—परमात्मा की सृष्टि में मानव का विशेष महत्त्व है, उसमें नर के समान नारी का समानुपात नितान्त वांछित है। परन्तु वर्तमान काल में अनेक कारणों से नर-नारी के मध्य लिंग-भेद का वीभत्स रूप सामने आ रहा है, जो कि पुरुष-सत्तात्मक समाज में कन्या-भ्रूण हत्या का पर्याय बनकर असमानता बढ़ा रहा है। हमारे देश में कन्या-भ्रूण हत्या आज अमानवीय कृत्य बन गया है जो कि चिन्तनीय विषय है।

2. कन्या-भ्रूण हत्या के कारण—हमारे यहाँ मध्यमवर्गीय समाज में कन्या-जन्म अमंगलकारी माना जाता है, क्योंकि कन्या को पाल-पोष कर, शिक्षित कर उसका विवाह करना पड़ता है। इस निमित्त और विवाह में दहेज के कारण बहुत सारा धन खर्च करना पड़ता है। इसीलिए कन्या को पराया धन मानकर उपेक्षा की जाती है और पुत्र को वंश-वृद्धि का कारक, वृद्धावस्था का सहारा मानकर उसकी चाहना की जाती है।

3. कन्या-भ्रूण हत्या की विद्रूपता—वर्तमान में अल्ट्रासाउण्ड मशीन वस्तुत: कन्या-संहार का हथियार बन गया है। लोग इस मशीन की सहायता से जन्म पूर्व लिंग ज्ञात कर कन्या-भ्रूण को गिराकर नष्ट कर देते हैं। जिसके कारण लिंगानुपात का संतुलन बिगड़ गया है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में प्रतिदिन लगभग ढाई हजार कन्या-भ्रूणों की हत्या की जाती है। हरियाणा, पंजाब तथा दिल्ली में इसकी विद्रूपता सर्वाधिक दिखाई देती है।

4. कन्या-भ्रूण हत्या के निषेधार्थ उपाय—भारत सरकार ने कन्या-भ्रूण हत्या को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए अल्ट्रासाउण्ड मशीनों से लिंग-ज्ञान पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है। इसके लिए 'प्रसवपूर्व निदान तकनीकी अधिनियम (पी.एन.डी.टी.), 1994' के रूप में कठोर दण्ड-विधान किया गया है। आजकल तो लिंग जाँच पर पूरी तरह से प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। साथ ही नारी सशक्तीकरण, बालिका नि:शुल्क शिक्षा, पैतृक उत्तराधिकार, समानता का अधिकार आदि अनेक उपाय अपनाये गये हैं।

5. उपसंहार—भारत सरकार ने लिंगानुपात को ध्यान में रखकर कन्या-भ्रूण हत्या पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया है। वस्तुत: कन्या-भ्रूण हत्या का यह नृशंस कृत्य पूरी तरह समाप्त होना चाहिए। यदि भारतीय समाज में पुत्र-पुत्री जन्म में अन्तर न माना जाए और पुत्री-जन्म को घर की लक्ष्मी मानकर स्वागत किया जाए तो लोगों की मानसिकता बदलने से कन्या-भ्रूण हत्या पर स्वत: प्रतिबन्ध लग जायेगा।

8. आतंकवाद : एक विश्व समस्या
अथवा
आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या
अथवा
विश्व चुनौती : बढ़ता आतंकवाद
अथवा
आतंकवाद : समस्या एवं समाधान

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. आतंकवाद के कारण 3. आतंकवादी घटनाएँ एवं दुष्परिणाम 4. आतंकवादी चुनौती का समाधान 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—आज आतंकवाद विश्व के समक्ष एक भयानक चुनौतीपूर्ण समस्या बन गया है। इसके सन्त्रास से आज संसार के अधिकतर देश जूझ रहे हैं। यह सम्पूर्ण मानवता एवं सहअस्तित्व के लिए खतरा है। आज धार्मिक एवं सांस्कृतिक वर्चस्व को लेकर आतंकवादी-नस्लवादी लोग व्यापक स्तर पर आतंक फैला रहे हैं।

2. आतंकवाद के कारण—जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म तथा नस्ल के नाम पर तथा व्यक्तिगत सत्तासुख की लालसा से अलग राष्ट्र की माँग करने से विभिन्न देशों में अलग-अलग नामों से आतंकवाद का प्रसार हुआ। इसके मुख्य कारण राजनीतिक, धार्मिक अथवा वैचारिक उद्देश्यों की प्राप्ति करना है।

3. आतंकवादी घटनाएँ एवं दुष्परिणाम—आतंकवाद को कुछ राष्ट्रों से अप्रत्यक्ष सहयोग मिल रहा है। इस कारण आतंकवादियों के पास अत्याधुनिक घातक हथियार मौजूद हैं। वे भौतिक, रासायनिक, जैविक एवं मानव बमों का प्रयोग कर रहे हैं। अमेरिका में ट्विन टावर विध्वंस काण्ड, भारतीय संसद् पर हमला, बाली में बम विस्फोट, मुम्बई पर आतंकवादियों का हमला; आदि विश्व आतंकवाद की प्रमुख घटनाएँ हैं।

4. आतंकवादी चुनौती का समाधान—आतंकवाद के बढ़ते खतरे का समाधान कठोर कानून व्यवस्था के नियन्त्रण से ही हो सकता है। इसके लिए अवैध संगठनों पर प्रतिबन्ध, प्रशासनिक सुधार के साथ ही काउन्टर टेररिज्म एक्ट अध्यादेश तथा संघीय जाँच एजेन्सी आदि को अति प्रभावी बनाना अपेक्षित है। अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया द्वारा जो कठोर कानून बनाया गया है तथा सेना व पुलिस को इस सम्बन्ध में जो अधिकार दे रखे हैं, उनका अनुसरण करने से भी इस चुनौती का मुकाबला किया जा सकता है।

5. उपसंहार—निर्विवाद कहा जा सकता है कि आतंकवाद के कारण विश्व मानव-सभ्यता पर संकट आ रहा है। यह अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है। इसके समाधानार्थ एक विश्व-व्यवस्था की जरूरत है, सभी राष्ट्रों में समन्वय तथा एकजुटता की आवश्यकता है।

9. रोजगार गारंटी योजना : मनरेगा
अथवा
मनरेगा : गाँवों में रोजगार योजना
अथवा
गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. मनरेगा के कार्यक्रम 3. मनरेगा से रोजगार सुविधा 4. मनरेगा से सामाजिक सुरक्षा एवं प्रगति 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—भारत सरकार ने ग्रामीण विकास एवं सामुदायिक कल्याण की दृष्टि से राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार अधिनियम फरवरी, 2006 में लागू किया। इस योजना का संक्षिप्त नाम 'नरेगा' रखा गया। अक्टूबर, 2009 से इसके साथ महात्मा गाँधी का नाम जोड़कर इसका संक्षिप्त नाम 'मनरेगा' पड़ा। इसके अन्तर्गत अकुशल ग्रामीण वयस्क स्त्री-पुरुष को ग्राम पंचायतों के माध्यम से रोजगार दिया जाता है। काम न देने पर बेरोजगारी भत्ता दिया जाता है।

2. मनरेगा के कार्यक्रम—मनरेगा योजना के अन्तर्गत विविध कार्यक्रम चलाये जाते हैं; जैसे—(1) जल-संरक्षण एवं जल-शस्य संचय, (2) वनरोपण एवं वृक्षारोपण, (3) इन्दिरा आवास योजना एवं अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों

के लिए भूमि सुधार, (4) लघु सिंचाई कार्यक्रम, (5) तालाब आदि का नवीनीकरण,(6) बाढ़-नियन्त्रण एवं जल-निकास, (7) ग्रामीण मार्ग-सड़क निर्माण तथा (8) अनुसूचित जन्य विविध कार्य इस योजना में चलाये जा रहे हैं। सरकार द्वारा जिला पंचायत, विकास खण्ड तथा ग्राम पंचायत को इस योजना के क्रियान्वयन का भार दिया गया है। इसमें ग्राम पंचायत की मुख्य भूमिका रहती है।

3. मनरेगा से रोजगार सुविधा—इस योजना में ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार माँगने वाले वयस्क व्यक्ति को ग्राम पंचायत से एक कार्ड दिया जाता है। पन्द्रह दिन के अन्तर्गत रोजगार उपलब्ध कराना पड़ता है। रोजगार न दिये जाने पर उसे बेरोजगारी भत्ता देना पड़ता है। वयस्क व्यक्ति को गाँव के पाँच किलोमीटर की सीमा में रोजगार दिया जाता है तथा कार्यस्थल पर प्राथमिक चिकित्सा सुविधा और महिला मजदूरों के छोटे बच्चों की देखभाल की सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।

4. मनरेगा से सामाजिक सुरक्षा एवं प्रगति—मनरेगा कार्यक्रम में आमजन की भागीदारी होने से गाँवों का विकास स्वत: होने लगा है। इससे महिलाओं तथा अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति के लोगों में से वंचितों को रोजगार मिलने लगा है। इससे महिला सशक्तीकरण पर भी बल दिया गया है। इस तरह मनरेगा से सामाजिक एवं आर्थिक सुधार की प्रक्रिया को गति मिल रही है।

5. उपसंहार—मनरेगा कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्र के विकास तथा बेरोजगार लोगों को रोजगार देने का जनहितकारी प्रयास है। इसका उत्तरोत्तर प्रसार हो रहा है तथा भारत सरकार इस योजना के लिए काफी धन उपलब्ध करा रही है। इस योजना की सफलता ग्राम पंचायतों की सक्रियता पर निर्भर है।

10. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. जल-संकट की स्थिति 3. जल-संकट के कारण 4. संकट के समाधान हेतु सुझाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—राजस्थान प्रदेश का अधिकतर भू-भाग जल-संकट से हमेशा ही ग्रस्त रहता है। वर्षा न होने से यह संकट और भी बढ़ जाता है।

2. जल-संकट की स्थिति—राजस्थान में जलाभाव के कारण जल-संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। चम्बल एवं माही नदियाँ जो इसके दक्षिणी-पूर्वी भाग में बहती हैं वे इस भाग को ही हरा-भरा रखती हैं। इसकी पश्चिम-उत्तर की भूमि तो एकदम निर्जल है। इस कारण यहाँ रेगिस्तान की निरन्तर वृद्धि हो रही है। पंजाब से श्रीगंगानगर जिले में से होकर इन्दिरा गाँधी नहर के द्वारा जो जल राजस्थान के पश्चिमोत्तर भाग में पहुँचाया जा रहा है, उसकी स्थिति भी सन्तोषप्रद नहीं है। पूर्वोत्तर राजस्थान में हरियाणा से जो पानी मिलता है, वह भी जलापूर्ति नहीं कर पाता है। इस कारण राजस्थान में जल-संकट की स्थिति सदा ही बनी रहती है।

3. जल-संकट के कारण—राजस्थान में पहले ही शुष्क मरुस्थलीय भू-भाग होने से जलाभाव है, फिर उत्तरोत्तर आबादी बढ़ रही है और औद्योगिक गति भी बढ़ रही है। यहाँ के शहरों एवं बड़ी औद्योगिक इकाइयों में भूगर्भीय जल का दोहन बड़ी मात्रा में हो रहा है। खनिज सम्पदा यथा संगमरमर, ग्रेनाइट, इमारती पत्थर, चूना पत्थर आदि के विदोहन से भी धरती का जल स्तर गिरता जा रहा है। दूसरी ओर वर्षा काल में सारा पानी बाढ़ के रूप में बह जाता है। पिछले कई वर्षों से वर्षा कम मात्रा में होने के कारण बाँधों, झीलों, तालाबों आदि में भी पानी कम हो गया है जिसके कारण जल-संकट गहराता जा रहा है।

4. संकट के समाधान हेतु सुझाव—(1) भूगर्भ के जल का असीमित विदोहन रोका जावे। (2) खनिज सम्पदा के विदोहन को नियन्त्रित किया जावे। (3) शहरों में वर्षा के जल को धरती के गर्भ में डालने की व्यवस्था की जावे। (4) बाँधों एवं एनीकटों का निर्माण, कुओं एवं बावड़ियों को अधिक गहरा और कच्चे तालाबों-पोखरों को अधिक गहरा-चौड़ा किया जावे। (5) पंजाब-हरियाणा-गुजरात में बहने वाली नदियों का जल राजस्थान में लाने के प्रयास किये जावें।

5. उपसंहार—सरकार को तथा समाज-सेवी संस्थाओं को विविध स्रोतों से सहायता लेकर राजस्थान में जल-संकट के निवारणार्थ प्रयास करने चाहिए। ऐसा करने से ही यहाँ की धरती मंगलमय बन सकती है।

11. बाल-विवाह : एक अभिशाप

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. बाल-विवाह की कुप्रथा 3. बाल-विवाह का अभिशाप 4. समस्या के निवारणार्थ उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कारों में विवाह-संस्कार का विशेष महत्त्व है। अन्य संस्कारों की अपेक्षा विवाह-संस्कार पर काफी धन व्यय किया जाता है। परन्तु इस पवित्र संस्कार में धीरे-धीरे अनेक विकृतियाँ आयीं,

जिनके फलस्वरूप देश में बाल-विवाह का प्रचलन हुआ, जो अब हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के लिए घोर अभिशाप बन गया है।

2. बाल-विवाह की कुप्रथा—बाल-विवाह की कुप्रथा का प्रचलन हमारे देश में मध्यकाल में हुआ। आक्रमणकारियों ने अपनी वासना पूर्ति के लिए कन्या अपहरण की कुचाल चली। जिसके कारण लोगों ने बालपन में ही अपनी कन्या का विवाह करना उचित समझा। फिर दहेज आदि से बचने के कारण बाल-विवाह का प्रचलन हुआ। इस कारण यह कुप्रथा निम्न-मध्यम वर्ग में विशेष रूप से प्रचलित हुई।

3. बाल-विवाह का अभिशाप—विवाह-संस्कार में कन्यादान पवित्र माँगलिक कार्य माना जाता है। इस अवसर पर कन्या पक्ष की ओर से कुछ उपहार भी दिया जाता रहा है। लेकिन समय के प्रवाह में इस उपहार की देन में विकृति आ गयी। परिणामस्वरूप दहेज माँगने की समस्या खड़ी हो गयी और माता-पिता के लिए कन्या भार बन गयी। दहेज से मुक्ति पाने के उपाय के तौर पर बाल विवाह प्रचलित हुआ जो स्वयं में एक समस्या थी, इससे और समस्याएँ उत्पन्न हो गयीं। जल्दी शादी होने से जनसंख्या में आशातीत वृद्धि होने लगी। जीवन-स्तर में गिरावट आने लगी। स्वास्थ्य की समस्या खड़ी हो गयी और बाल-विवाह एक अभिशाप बन गया।

4. समस्या के निवारणार्थ उपाय—बाल-विवाह की बुराइयों को देखकर समय-समय पर समाज-सुधारकों ने जन-जागरण के उपाय किये। भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में कठोर कानून बनाया है और लड़कियों का अठारह वर्ष से कम तथा लड़कों का इक्कीस वर्ष से कम आयु में विवाह करना कानूनन निषिद्ध कर रखा है। फिर भी चोरी छिपे बाल-विवाह निरन्तर हो रहे हैं। वैशाख मास में अक्षय तृतीया को हजारों बाल-विवाह होते हैं। इस समस्या का निवारण जन-जागरण से ही सम्भव है।

5. उपसंहार—बाल-विवाह ऐसी कुप्रथा है, जिससे वर-वधू का भविष्य अन्धकारमय बन जाता है। इससे समाज में कई विकृतियाँ आ जाती हैं। समाज को इस अभिशाप से मुक्त कराया जाना चाहिए।

12. आतंकवाद : भारत के लिए चुनौती
अथवा
आतंकवाद : भारत की विकट समस्या

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. भारत में आतंकवाद 3. आतंकवादी घटनाएँ 4. आतंकवाद का दुष्परिणाम 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—'आतंक' का शाब्दिक अर्थ है—भय, त्रास या अनिष्ट बढ़ाना। नागरिकों पर हमले करना, सामूहिक नरसंहार करना, भय का वातावरण बनाना अथवा तुच्छ स्वार्थ की खातिर अमानवीय आचरण कर वर्चस्व बढ़ाना आतंकवाद कहलाता है। आतंकवाद कट्टर धार्मिकता, जातीयता एवं नस्लवादी उन्माद से उपजता है तथा शत्रु राष्ट्रों के द्वारा अप्रत्यक्ष पोषण करने से बढ़ता है। वर्तमान में भारत में आतंकवाद एक विकट समस्या बन गया है।

2. भारत में आतंकवाद—आतंकवाद से प्रभावित देशों में भारत का प्रमुख स्थान है। इस बढ़ते आतंकवाद को बढ़ावा देने में हमारे पड़ोसी देश का प्रमुख स्थान है। हमारे पड़ौसी देश में 'जेहाद' के नाम पर आतंकवादियों को तैयार किया जाता है, उन्हें प्रशिक्षण देकर विस्फोटक सामग्री और अत्याधुनिक हथियार देकर हमारी सीमा में भेजा जाता है। इससे हमारे देश में आतंकवाद निरन्तर अपने पैर पसार रहा है और हम आतंकी हमलों के शिकार हो रहे हैं। यह अतीव चिन्ता का विषय है।

3. आतंकवादी घटनाएँ—पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी समय-समय पर भारत के विभिन्न भागों में अमानवीय घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। दिल्ली के लाल किले पर, कश्मीर विधानसभा भवन पर, संसद् भवन पर, गाँधीनगर अक्षर धाम पर, अयोध्या एवं मुम्बई पर, उरी एवं पुलवामा में आतंकवादियों ने जो हमले किये, इसी प्रकार विभिन्न स्थानों पर बम-विस्फोट करके जान-माल की जो हानि पहुँचाई और भयानक क्रूरता का परिचय दिया, वह राष्ट्र के लिए एक चुनौती है। जम्मू-कश्मीर में भाड़े के आतंकवादियों के साथ हमारे सैनिकों की मुठभेड़ें होती रहती हैं।

4. आतंकवाद का दुष्परिणाम—वर्तमान में आतंकवाद शत्रु-राष्ट्रों के कूटनीतिक इशारों पर छद्म-युद्ध का रूप धारण करने लगा है। जिसका दुष्परिणाम यह है कि भारत को अपनी सम्पूर्ण पश्चिमी सीमा एवं पूर्वोत्तर सीमा पर सेना तैनात करनी पड़ रही है। आतंकवादियों का मुकाबला करने में काफी धन व्यय हो रहा है तथा राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया जा रहा है। इस समस्या का समाधान कठोर कानून-व्यवस्था एवं कमाण्डो आपरेशन से ही हो सकता है।

5. उपसंहार—आतंकवाद रोकने के लिए सरकार गम्भीरता से प्रयास कर रही है। सेनाएँ एवं विशेष पुलिस दस्ते आतंकवादियों की चुनौतियों का उचित जवाब दे रहे हैं। आतंकवाद अब विश्व-समस्या बन गया है। मानवता के हित में इसका नामोनिशान मिटाना परमावश्यक कर्त्तव्य है।

13. दहेज-प्रथा
अथवा
समाज का कलंक : दहेज-प्रथा
अथवा
समाज का अभिशाप : दहेज-प्रथा

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. दहेज-प्रथा एक कलंक 3. दहेज-प्रथा के दुष्परिणाम 4. उन्मूलन हेतु उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—भारतीय संस्कृति में सभी संस्कारों में विवाह संस्कार को विशेष स्थान प्राप्त है। विवाह संस्कार में कन्यादान को अन्य दानों की अपेक्षा प्रमुख दान माना जाता है। इस संस्कार में माता-पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार नयी गृहस्थी के संचालन हेतु वस्त्र, आभूषण तथा अन्य जरूरी सामान दहेज के रूप में देते हैं।

2. दहेज-प्रथा एक कलंक—वर्तमान काल में दहेज प्रथा ने विकराल रूप धारण कर लिया है और इसके फलस्वरूप नारी समाज के साथ अमानवीय व्यवहार होता है। कन्या का विवाह एक जटिल समस्या बन गई है। माता-पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार दहेज देना चाहते हैं जबकि वर पक्ष वाले मुँह-माँगा दहेज लेना चाहते हैं। इस स्थिति में असहाय माता-पिता अपनी योग्य पुत्री का विवाह करने के लिए दूसरों से कर्ज लेते हैं। फिर दहेज के चक्कर में वे आजीवन लिये गये कर्ज के भार को ढोते रहते हैं। मुँह-माँगा दहेज न दे पाने पर कभी-कभी दरवाजे पर आयी बारात भी लौट जाती है और कन्या बिन-ब्याही रह जाती है।

3. दहेज-प्रथा के दुष्परिणाम—इस कुप्रथा के कारण ब्याही कन्या और उसके माता-पिता को अनेक असह्य यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। विवाहित कन्या को उचित दहेज न मिलने के कारण ससुराल पक्ष द्वारा परेशान किया जाता है, उसे अनेक यातनाएँ दी जाती हैं। कभी-कभी उसे जलाकर भी मार डाला जाता है। बेटी ससुराल में खुश रह सके इस हेतु दहेज पूर्ति के लिए माता-पिता को अपना घर-मकान आदि बेचना पड़ जाता है।

4. उन्मूलन हेतु उपाय—सन् 1975 में दहेज उन्मूलन कानून भी बनाया गया है। सरकार ने दहेज विरोधी कानून को प्रभावी बनाने के लिए एक संसदीय समिति का गठन किया है। सन् 1983 में दहेज से सम्बन्धित नये कानून प्रस्तावित किये गये, इसके अनुसार जो दहेज के लालच में युवती को आत्महत्या के लिए विवश करे, उस व्यक्ति को भी दण्डित किया जाए। सरकार इस प्रथा के उन्मूलन के लिए सचेष्ट है तथा कुछ सामाजिक संगठन भी इस समस्या के उन्मूलन का प्रयास कर रहे हैं।

5. उपसंहार—इस समस्या के कारण नारी समाज पर अत्याचार हो रहे हैं। उनको अमानवीय व्यवहार सहन करने पड़ते हैं। अत: समाज में अभिशाप बनी इस प्रथा से नारी को मुक्ति मिले, यह मानवीय दृष्टिकोण नितान्त अपेक्षित है।

14. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई की मार
अथवा
बढ़ती महँगाई : एक विकराल समस्या

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. महँगाई के कारण 3. महँगाई का दुष्प्रभाव 4. मूल्यवृद्धि समस्या का समाधान 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—अनेक समस्याओं से आक्रान्त हमारा देश वर्तमान में महँगाई की समस्या से ग्रस्त है। बढ़ती हुई महँगाई की मार से प्राय: सभी वस्तुओं के भाव आसमान छूने लगे हैं और सामान्य वेतनभोगी एवं श्रमिक वर्ग के लोगों की आर्थिक दशा अतीव चिन्तनीय बन गई है।

2. महँगाई के कारण—(1) जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि और उत्पादन कम, (2) जमाखोरी और मुनाफाखोरी, (3) सरकार की गलत आर्थिक नीति, (4) भ्रष्ट सरकारी-तन्त्र और भ्रष्ट व्यावसायियों की साँठ-गाँठ, (5) रुपये की कमजोर क्रय शक्ति, (6) शहरीकरण और औद्योगीकरण से उपजाऊ भूमि का समाप्त होना, (7) प्राकृतिक आपदा—अतिवृष्टि और अनावृष्टि आदि।

3. महँगाई का दुष्प्रभाव—महँगाई के निरन्तर बढ़ते रहने से सामाजिक जीवन में आपाधापी मच रही है। सम्पन्न लोग अधिक सम्पन्न होते जा रहे हैं और गरीबों में भुखमरी फैल रही है। महँगाई के कारण जब पेटपूर्ति नहीं हो रही है, तो लूटपाट, हत्या, डकैती, राहजनी, चोरी तथा तोड़फोड़ आदि अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं। सामान्य उपयोग की वस्तुओं के भाव आसमान छू रहे हैं, इससे सामाजिक जीवन में अस्थिरता बढ़ रही है। अनेक अपराधों का मूल कारण यही महँगाई की मार है।

4. मूल्यवृद्धि समस्या का समाधान—इस समस्या का समाधान पूर्व में बताये गये कारणों पर नियन्त्रण रखने से ही हो सकता है। जनसंख्या पर नियन्त्रण रहे, उत्पादन भी बढ़े, व्यापारियों की मुनाफे की प्रवृत्ति को रोका जावे, सरकार आर्थिक नीति में सुधार करे तथा काला-बाजारी पर नियन्त्रण रखे। सरकार आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों पर नियन्त्रण रखे और उनकी वितरण व्यवस्था स्वयं करे। इस समस्या के समाधानार्थ कठोर नियम बनाये जावें, साथ ही जन-जागरण भी इस दृष्टि से आवश्यक है।

5. उपसंहार—शारीरिक एवं मानसिक विकृतियों से यदि देश और समाज को बचाना है, आर्थिक विषमता एवं दिखावे की प्रवृत्ति से यदि मुक्त होना है और कल्याणकारी राज्य का प्रसार करना है, तो महँगाई पर नियन्त्रण रखना जरूरी है। आम जनता का हित महँगाई पर नियन्त्रण रखने में ही है।

15. पर्यावरण प्रदूषण
अथवा
बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. पर्यावरण प्रदूषण का कुप्रभाव 3. प्रदूषण-निवारण के उपाय 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—आज भारत ही नहीं, सारा संसार पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से ग्रस्त है। वर्तमान में पानी, हवा, रेत-मिट्टी आदि के साथ-साथ पेड़-पौधे, खेती एवं कृमि-कीट आदि सभी पर्यावरण प्रदूषण से प्रभावित हो रहे हैं। गैस, धुआँ, धुंध, कर्णकटु ध्वनि एवं विषाक्त अपशिष्टों की भरमार आदि तरीकों से हर तरह का प्रदूषण देखने को मिल रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रतिवर्ष पाँच जून को पर्यावरण दिवस भी मनाया जाता है, परन्तु पर्यावरण प्रदूषण कम नहीं हो रहा है।

2. पर्यावरण प्रदूषण का कुप्रभाव—निरन्तर जनसंख्या की वृद्धि, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय दोहन होने से पर्यावरण में निरन्तर प्रदूषण बढ़ रहा है। इससे मानव के साथ ही वन्य-जीवों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण का सबसे अधिक कुप्रभाव मानव-सभ्यता पर पड़ रहा है जो कि आगे चलकर इसके विनाश का कारण हो सकता है। धरती के तापमान की वृद्धि तथा असमय ऋतु-परिवर्तन होने से प्राकृतिक वातावरण नष्ट होता जा रहा है।

3. प्रदूषण-निवारण के उपाय—विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रदूषण रोकने के अनेक उपाय कर रहा है। भारत सरकार भी पर्यावरण-निवारण के लिए कई प्रयास कर रही है। जैसे—हरियाली को बढ़ावा देना, वृक्ष उगाना, शोर पर नियंत्रण करना तथा पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जनचेतना को जाग्रत करना आदि। खुले में शौच करने, नालियों का गन्दा जल फैलने तथा कारखानों से निकलने वाले विषैले अपशिष्टों से पर्यावरण को बचाने के अनेक उपाय किये जा रहे हैं। सीवरेज ट्रीटमेण्ट प्लाण्ट लगाये जा रहे हैं, घर-घर में शौचालय बनाये जा रहे हैं। नदियों की स्वच्छता का अभियान चलाया जा रहा है।

4. उपसंहार—हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकार द्वारा अनेक कदम उठाये जा रहे हैं। देश में पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किया गया हैं। बड़े उद्योगों को प्रदूषण रोकने के उपाय अपनाने के लिए कहा जा रहा है। इन सब उपायों से पर्यावरण में सन्तुलन रखने का प्रयास किया जा रहा है।

16. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या
अथवा
भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य
अथवा
देश में व्याप्त भ्रष्टाचार

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. भ्रष्टाचार के कारण 3. भ्रष्टाचार का कुप्रभाव 4. समाधान या निराकरण के उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही हमारे देश में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं। इनमें भी भ्रष्टाचार की समस्या इतनी विकराल हो गयी है कि इसका निवारण करना अत्यन्त जटिल हो गया है।

2. भ्रष्टाचार के कारण—भ्रष्टाचार का सबसे प्रमुख कारण हमारा नैतिक पतन होना है, जिससे हम अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए सब कुछ किसी भी तरीके से करने के लिए तत्पर रहते हैं, बस धन मिलना चाहिए। भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए आज का मानव लालायित है इसलिए वह उचित-अनुचित कोई भी तरीका निस्संकोच अपनाता है। हमारे राजनेता देशभक्ति छोड़कर भ्रष्टाचार की भक्ति में ही लग गये हैं। साथ ही बढ़ती महँगाई, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि आदि भी लोगों को आवश्यकता पूर्ति हेतु भ्रष्टाचारी बना रही है।

3. भ्रष्टाचार का कुप्रभाव—भ्रष्टाचार के कारण आज हमारे देश में राष्ट्रीय चरित्र तथा सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इससे सामाजिक जीवन में नैतिकता का लोप होने लगा है। स्वार्थ और प्रलोभन के चक्कर में हम अपने आदर्शों को भूलते जा रहे हैं। भ्रष्टाचार की खातिर झूठ बोलना, धोखाधड़ी और रिश्वतखोरी करना, मिलावट करना, पैंतरेबाजी दिखाना आदि सबकुछ जायज हो गया है। आज सारे भारत में भ्रष्टाचार का अँधेरा फैला हुआ है, जिससे हमारा चरित्र एकदम कलंकित हो रहा है।

4. समाधान या निराकरण के उपाय—भ्रष्टाचार का निवारण करने के लिए यद्यपि सरकार ने पृथक् से भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग बना रखा है और इसे व्यापक अधिकार दे रखे हैं। समय-समय पर अनेक कानून बनाये जा रहे हैं और इसे अपराध मानकर कठोर दण्ड-व्यवस्था का भी विधान है, तथापि देश में भ्रष्टाचार बढ़ ही रहा है। इसके निराकरण के लिए सर्वप्रथम जन-जागरण की आवश्यकता है तथा कर्त्तव्यनिष्ठा व ईमानदारी की जरूरत है। अत: भ्रष्टाचार के उपर्युक्त सभी कारणों को पूरी तरह समाप्त करना जरूरी है।

5. उपसंहार—भारत जैसे नव-स्वतन्त्र, विकासशील लोकतन्त्र में भ्रष्टाचार का होना एक विडम्बना है। इसके खात्मे के लिए राजनेताओं, सरकारी-तन्त्र और जनता का पारस्परिक सहयोग अपेक्षित है, तभी यह राक्षसी प्रवृत्ति समाप्त हो सकती है।

17. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. जनसंख्या वृद्धि के कारण 3. जनसंख्या वृद्धि का प्रसार 4. जनसंख्या नियन्त्रण के उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—वर्तमान में हमारा देश अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। जैसे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महँगाई, आतंकवाद, पड़ोसी देशों से कलह तथा जनसंख्या वृद्धि आदि। परन्तु इन सभी समस्याओं के बीच सबसे प्रबल समस्या है, जनसंख्या वृद्धि की समस्या। इस समस्या का हल हम अभी तक निकाल नहीं पा रहे हैं।

2. जनसंख्या वृद्धि के कारण—जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं। आजादी प्राप्त करने के बाद इस पर नियन्त्रण नहीं किया और न परिवार नियोजन के कोई साधन ही उपलब्ध कराये गये। भारत के कुछ अशिक्षित एवं धर्मान्ध लोग सन्तान को ईश्वर की देन या खुदा की नियामत मानते हैं। छोटी अवस्था में विवाह होने से भी सन्तान-वृद्धि हो जाती है। समशीतोष्ण जलवायु के प्रभाव से भी अधिक सन्तानें हो जाती हैं। गरीब परिवारों में कमाने वाले हाथ अधिक हों, इस तरह की मानसिकता से भी जनसंख्या वृद्धि पर ध्यान नहीं दिया गया। इन प्रमुख कारणों से जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि हुई।

3. जनसंख्या वृद्धि का प्रसार—आजादी के समय हमारे देश की जनसंख्या लगभग तैंतीस करोड़ थी, परन्तु आज यह एक अरब तीस करोड़ से भी अधिक हो गयी है। जनसंख्या की इस अप्रत्याशित वृद्धि से रोजगार के अवसर ही कम नहीं हुए, खेत-खलिहान और वन भी कम हुए हैं। सुविधाएँ जुटाने में अपार धनराशि व्यय की जा रही है। बेरोजगारी, महँगाई और भ्रष्टाचार भी इसी कारण बढ़ रहे हैं।

4. जनसंख्या नियन्त्रण के उपाय—जनसंख्या की तीव्रगति से वृद्धि को देखकर सरकार ने अनेक कदम उठाये। प्रारम्भ में परिवार नियोजन के साधनों का प्रसार किया गया, फिर पुरुष एवं स्त्री नसबन्दी कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। जनता में परिवार नियोजन की चेतना जागृत की गई। सरकारी नौकरियों में दो सन्तान से अधिक पर स्वैच्छिक प्रतिबन्ध लगाया गया। कम उम्र में युवक-युवतियों के विवाह को रोकने का कानून बनाया गया। इस तरह के उपाय करने से जनसंख्या वृद्धि पर कुछ हद तक अंकुश लगा है।

5. उपसंहार—जनसंख्या की असीमित वृद्धि से हमारे देश की अर्थव्यवस्था गड़बड़ा गई है। विभिन्न विकास-योजनाएँ भी लाभकारी नहीं दिखाई दे रही हैं। जब प्रत्येक व्यक्ति परिवार-नियोजन को प्राथमिकता देगा, तभी जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लग सकेगा। अपने समाज और देश की खुशहाली के लिए यह नियन्त्रण जरूरी है।

18. बढ़ती भौतिकता : घटते मानवीय मूल्य
अथवा
भौतिकता-व्यामोह से मानव-मूल्यों का पतन

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. भौतिकता का व्यामोह 3. बढ़ती भौतिकता का कुप्रभाव 4. भौतिकता से मानवीय मूल्यों का ह्रास 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–आज के वैज्ञानिक युग में उपभोक्तावादी संस्कृति बढ़ रही है। भौतिकवादी प्रवृत्ति के बढ़ने के कारण मौज-मस्ती, फैशनपरस्ती, ऐशो-आराम की जिन्दगी को श्रेष्ठ माना जा रहा है। बढ़ती भौतिकवादी प्रवृत्ति के कारण मानवीय मूल्यों का पतन तीव्र गति से हो रहा है।

2. भौतिकता का व्यामोह–भौतिकतावादी प्रवृत्ति वस्तुतः चार्वाक् मत का नया रूप है। आज हर आदमी अपनी जेब का वजन न देखकर सुख-सुविधा हेतु भौतिक साधनों को जुटाने की जुगाड़ में लगा रहता है। बैंकों से कर्ज लेकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है। इसीलिए फैशन के अनुसार कपड़े पहनना, बनावटी प्रदर्शन करना, क्लबों और पार्टियों में जाना आदि को इज्जत का प्रतीक मानना आज जीवन का मुख्य सिद्धान्त बन गया है। इस प्रकार निम्न-मध्य वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक भौतिकता का व्यामोह फैल रहा है।

3. बढ़ती भौतिकता का कुप्रभाव–भौतिकता के साधनों की पूर्ति करने से अनेक कुप्रभाव देखे जा रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति मोटर, स्कूटर, मोबाइल फोन, टी.वी., फ्रिज आदि भौतिक संसाधनों की लालसा रखकर किश्तों में भौतिक सुविधा की वस्तुएँ खरीद रहा है। इससे निम्न-मध्यमवर्गीय परिवारों पर ऋण-बोझ बढ़ रहा है। इस कारण भी सब ओर अशान्ति, कलह, मानसिक तनाव, आपसी संबंधों में कड़वाहट, कुण्ठा आदि अनेक कुप्रभाव देखने को मिल रहे हैं। भ्रष्टाचार का बढ़ना भौतिकता का ही कुप्रभाव है।

4. भौतिकता से मानवीय मूल्यों का ह्रास–भौतिकता की प्रवृत्ति के कारण सर्वाधिक हानि मानवीय मूल्यों की हुई है। अब राह चलती महिलाओं से छीना-झपटी करना, भाई-बन्धुओं की सम्पत्ति हड़पने का प्रयास करना, बलात्कार, धोखाधड़ी, मक्कारी, असत्याचरण, खाद्य पदार्थों में मिलावट करना आदि अनेक बुराइयों से सामाजिक सम्बन्ध तार-तार हो रहे हैं। इसी प्रकार आज सभी पुराने आदर्शों एवं मानव-मूल्यों का पतन हो रहा है।

5. उपसंहार–आज भौतिकतावाद का युग है। भौतिकता की चकाचौंध में मानव इतना विमुग्ध हो रहा है कि वह मानवीय अस्मिता को भूल रहा है। इस कारण मानव-मूल्यों एवं आदर्शों का लगातार ह्रास हो रहा है। यह स्थिति मानव सभ्यता के लिए चिन्तनीय है।

19. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन
अथवा
वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. वाहन-वृद्धि के कारण 3. वाहन-वृद्धि से लाभ 4. बढ़ते वाहनों का कुप्रभाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–मानव-सभ्यता के प्रगति-पथ पर एक लम्बे समय तक रथ, बैलगाड़ी, बग्घी, पालकी, इक्का-ताँगा, रिक्शा आदि ने वाहन के रूप में अपना दायित्व निभाया। वहीं वैज्ञानिक मानव ने द्रुतगामी वाहनों का निर्माण कर आज स्कूटर, मोटर साइकिल, कार, बस, टू सीटर आदि वाहनों की सड़कों पर रेलमपेल मचा दी है। जिससे सड़क पर पैदल चलने तक की जगह नहीं रह गयी है।

2. वाहन-वृद्धि के कारण–इस यांत्रिक युग में जनसंख्या वृद्धि और समय के बदलते रूप के कारण द्रुतगामी परिवहन साधनों का आविष्कार हुआ। इन साधनों में दुपहिया वाहनों से लेकर चौपहिया वाहनों की भरमार हो गयी। इस तरह वाहनों की असीमित वृद्धि यद्यपि यातायात-परिवहन आदि सुख-सुविधाओं की दृष्टि से ही हुई, तथापि ऐसी असीमित वाहन वृद्धि पर्यावरण एवं जनस्वास्थ्य की दृष्टि से जटिल समस्या बन रही है।

3. वाहन-वृद्धि से लाभ–वाहन-वृद्धि से अनेक लाभ हुए हैं। आवागमन की सुविधा बढ़ी। कम समय में यात्रा पूरी होने लगी। माल भी कम समय में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने लगा। इससे जनता को सुविधाएँ मिलीं और वाहनों का निर्माण करने वाले बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना होने से लाखों लोगों को रोजगार भी उपलब्ध हुआ।

4. बढ़ते वाहनों का कुप्रभाव–यान्त्रिक वाहनों के संचालन में पेट्रोल-डीजल का उपयोग होता है। इससे वाहनों द्वारा विषैली कार्बन-गैस छोड़ी जाती है, जिससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैल रही हैं। इससे पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। वाहन वृद्धि के कारण सड़कों पर भीड़-भाड़ रहती है। अनेक दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। पेट्रोल-डीजल की अधिक खपत होने के कारण मूल्य वृद्धि हो रही है। इस तरह बढ़ते वाहनों से लाभ के साथ ही हानि भी हो रही है और इनके कुप्रभाव से जीवन-धन क्षीण हो रहा है।

5. उपसंहार–यान्त्रिक वाहनों का विकास भले ही मानव-सभ्यता की प्रगति अथवा देशों के औद्योगिक विकास का परिचायक है, तथापि वर्तमान में वाहनों की असीमित वृद्धि से मानव-जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

20. राजस्थान का अकाल

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. राजस्थान में अकाल की समस्या 3. अकाल के दुष्परिणाम 4. अकाल रोकने के उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–भारत मौसम की दृष्टि से भी विभिन्नताओं का देश है। इस दृष्टि से जहाँ इसके कई भागों में खूब वर्षा होती है, तो कई भागों में कम। पर राजस्थान में प्राय: कई भागों में अवर्षण की स्थिति बनी रहती है। इस कारण यहाँ अकाल या सूखा पड़ जाता है।

2. राजस्थान में अकाल की समस्या–राजस्थान का अधिकतर भू-भाग शुष्क मरुस्थलीय है। इसके पश्चिमोत्तर भाग में मानसून की वर्षा प्राय: कम होती है और यहाँ पेयजल एवं सिंचाई सुविधा का नितान्त अभाव है। समय पर वर्षा न होने के कारण राजस्थान में अकाल की काली छाया हर साल मण्डराती रहती है। राजस्थान का प्राय: कोई न कोई जिला हर वर्ष अकाल की चपेट में रहता ही है।

3. अकाल के दुष्परिणाम–अकालग्रस्त क्षेत्रों के लोग अपने घर का सारा सामान बेचकर या छोड़कर पलायन कर जाते हैं। जो लोग वहाँ रह जाते हैं, उन्हें कई बार भूखे ही सोना पड़ता है। जो लोग काम-धन्धे की खोज में दूसरे शहरों में चले जाते हैं, उन्हें भी अनेक कष्टों तथा आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है और उनकी जीवनी-शक्ति क्षीण हो जाती है।

4. अकाल रोकने के उपाय–सरकार समय-समय पर अनेक जिलों को अकालगस्त घोषित कर सहायता कार्यक्रम चलाती रहती है। सन् 1981-82 से लेकर अब तक राजस्थान सरकार ने समय-समय पर केन्द्र सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त कर अनेक राहत कार्य चलाये तथा रियायती दर पर अनाज उपलब्ध कराया। वर्षा जल संरक्षण के कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं। गत वर्ष भी कई जिलों में अकाल राहत के कार्यक्रम चलाये गये। इस प्रकार राज्य सरकार अकाल की विभीषिका से निपटने के पूरे प्रयास कर रही है।

5. उपसंहार–राजस्थान की जनता को निरन्तर कई वर्षों से कहीं न कहीं अकाल का सामना करना पड़ता है। दीर्घकालीन योजनाएँ प्रारम्भ करने तथा जन-सहयोग मिलने से ही अकाल का स्थायी समाधान हो सकता है।

21. बेरोजगारी : समस्या और समाधान
अथवा
रोजगार के घटते साधन

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. बेरोजगारी की समस्या 3. रोजगार घटने के कारण 4. निराकरण के उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—आजादी प्राप्ति के उपरान्त सभी नागरिकों को अपनी आर्थिक दशा सुधर जाने की आशा होने लगी। परन्तु प्रथम पंचवर्षीय योजना के साथ ही शरणार्थी समस्या, जनसंख्या वृद्धि तथा उचित विकास दर न रहने से रोजगार की समस्या बढ़ने लगी और नागरिकों को योग्यता एवं श्रम शक्ति के अनुरूप रोजगार न मिलने से बेरोजगारी का भयंकर रूप सामने आने लगा।

2. बेरोजगारी की समस्या—विकासशील भारत में जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ी उसके अनुरूप रोजगार के साधनों में वृद्धि नहीं हुई। परिणामस्वरूप शिक्षित और अशिक्षित बेरोजगारी में वृद्धि हुई। जिसके कारण नयी पीढ़ी में असंतोष, अशान्ति और अराजकता का भयंकर प्रसार हुआ और बेरोजगारी एक ज्वलंत समस्या बन गयी।

3. रोजगार घटने के कारण—(1) जनसंख्या की अप्रत्याशित वृद्धि होने से रोजगार के उतने साधन नहीं हैं। (2) लघु-कुटीर उद्योगों का ह्रास तथा मशीनीकरण का प्रसार भी इसका प्रमुख कारण है। (3) व्यावसायिक शिक्षा एवं स्वरोजगार की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया गया है। (4) जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा अन्य कारणों से नौकरी के लिए आरक्षण का गलत तरीका अपनाया जा रहा है। (5) सार्वजनिक उद्योगों की घाटे की स्थिति और उत्पादकता का न्यून प्रतिशत रहने से रोजगार के नए अवसर नहीं मिल रहे हैं। (6) शासन-तंत्र पर स्वार्थी राजनीति एवं भ्रष्टाचार हावी हो रहा है। (7) पंचवर्षीय योजनाओं में मानव-श्रम शक्ति का सही नियोजन नहीं हो पाया है।

4. निराकरण के उपाय—जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगायी जाए। लघु-कुटीर उद्योगों एवं कृषि-प्रधान हस्तकलाओं को प्रोत्साहन दिया जाए। शिक्षा को स्वरोजगारोन्मुखी और व्यावसायिक क्षमता प्रदान की जाए। आरक्षण व्यवस्था को समाप्त कर योग्यता को प्राथमिकता दी जाए। शासन तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता आदि पर अंकुश लगाया जाए और रोजगार के साधनों में वृद्धि की जाये।

5. उपसंहार—इस प्रकार के कारगर उपाय करने पर बेरोजगारी की समस्या पर अंकुश लगाया जा सकता है और इस समस्या का समाधान सरकारी तथा गैर सरकारी सभी स्तरों पर प्रयास करने से ही हो सकता है।

22. नारी सशक्तीकरण

संकेत बिन्दु–1. नारी सशक्तीकरण से आशय 2. वर्तमान समाज में नारी की स्थिति 3. नारी सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे प्रयास 4. नारी सशक्तीकरण का प्रभाव 5. उपसंहार।

1. नारी सशक्तीकरण से आशय–नारी सशक्तीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष लाकर उन्हें स्वावलम्बी बनाया जा सके। अत: नारी सशक्तीकरण से तात्पर्य है महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में निर्णय एवं सहभागी बनाने की स्वायत्तता प्रदान करना।

2. वर्तमान समाज में नारी की स्थिति–वर्तमान काल में बढ़ते शिक्षा स्तर में भी नारी की स्थिति शोचनीय है। महिलाओं के विरुद्ध दिनों-दिन बढ़ते अपराध के आँकड़े इसकी पुष्टि करते हैं। यद्यपि आज नारी विविध क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रही है, फिर भी नारी उत्पीड़न के आँकड़ों में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय महिलाएँ पोषण, साक्षरता व लिंगानुपात तीनों ही क्षेत्रों में अत्यन्त शोचनीय स्थिति में हैं।

3. नारी सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे प्रयास–नारी सशक्तीकरण का प्रारम्भ संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1975 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के दौरान 8 मार्च को आधिकारिक रूप से महिला दिवस मनाने से माना जा सकता है। भारत में नारी सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे कतिपय प्रयास निम्नलिखित हैं—(1) संवैधानिक एवं कानूनी संरक्षण; (2) महिला विकास सम्बन्धी नीतियाँ एवं क्रियान्वयन, जैसे—स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति-2001 आदि; (3) महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु कार्यक्रम, जैसे—महिला उत्थान योजना, स्वास्थ्य सखी योजना, महिला स्वाधार योजना, किशोरी शक्ति योजना, वंदेमातरम् योजना, कन्यादान योजना, राजलक्ष्मी योजना आदि; (4) राजनीतिक सशक्तीकरण के प्रयास।

4. नारी सशक्तीकरण का प्रभाव—हमारे देश में अनेक ऐसी नारियाँ हैं जिन्होंने सशक्त महिला का दर्जा प्राप्त किया है, जैसे—इन्दिरा गाँधी, सोनिया गाँधी, सुषमा स्वराज, निर्मला सीतारमण, सुमित्रा महाजन, वसुन्धरा राजे एवं ममता बनर्जी आदि नाम उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार स्मृति ईरानी, किरण बेदी, सानिया मिर्जा, बछेन्द्रीपाल, साइना नेहवाल आदि महिलाओं के नाम भी सशक्त महिलाओं के रूप में लिए जा सकते हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में देश को गौरवान्वित किया है।

5. उपसंहार–संक्षेप में कहा जा सकता है कि नारी सशक्तीकरण की दिशा में अनेक ठोस कदम उठाये गए हैं। अनेक क्षेत्रों में आरक्षण व्यवस्था भी की गई है। फिर भी इस दिशा में अभी निरन्तर प्रयास अपेक्षित है।

शिक्षा एवं विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध

23. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. वर्तमान में समाज की बदली मानसिकता 3. लिंगानुपात में बढ़ता अन्तर 4. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ–अभियान एवं उद्देश्य 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–वर्तमान काल में अनेक कारणों से लिंग-भेद का अन्तर सामने आया है, जो कन्या-भ्रूण हत्या का पर्याय बनकर बालक-बालिका के समान अनुपात को बिगाड़ रहा है। इसी कारण आज 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नारा दिया जा रहा है।

2. वर्तमान में समाज की बदली मानसिकता–वर्तमान में मध्यमवर्गीय समाज बालिकाओं को पढ़ाने में अपनी परम्परावादी सोच को ही मान्यता देता चला आ रहा है, क्योंकि वह बेटी को पराया धन मानता है। इसलिए बेटी को पालना-पोसना, पढ़ाना-लिखाना, उसकी शादी करना आदि को भार मानता है। इस दृष्टि से कुछ स्वार्थी सोच वाले लोग गर्भावस्था में ही लिंग-परीक्षण करवाकर कन्या-जन्म को रोक देते हैं। परिणामस्वरूप बेटी या कन्या को बचाना तथा उसे संरक्षण देना हमारा प्रथम कर्त्तव्य बन गया है।

3. लिंगानुपात में बढ़ता अन्तर–आज के समाज की बदली मानसिकता के कारण लिंगानुपात घटने की जगह बढ़ता ही जा रहा है। सन् 2011 की जनगणना के आधार पर हमारे देश में बालक और बालिका का अनुपात एक हजार में लगभग 918 तक पहुँच गया है।

4. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ—अभियान एवं उद्देश्य—'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के सम्बन्ध में हमारे राष्ट्रपति ने लोकसभा को जून, 2014 में सम्बोधित किया। जिसमें इस आवश्यकता पर बल दिया गया कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', उनका संरक्षण और सशक्तीकरण किया जाए। इसके बाद यह निश्चय किया गया कि महिला एवं बाल विकास विभाग इस अभियान का मुख्य मंत्रालय होगा, जो कि परिवार कल्याण और मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के साथ मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ाएगा। इस अभियान में लिंग परीक्षण व बालिका भ्रूण-हत्या को रोकना, बालिकाओं को पूर्ण संरक्षण देना तथा बालिकाओं के विकास के लिए शिक्षा से सम्बन्धित सभी गतिविधियों में उनकी पूर्ण भागीदारी रहेगी। साथ ही उनको शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं कौशल विकास को प्रोत्साहित किया जायेगा।

5. उपसंहार—'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति हमारे समाज में जागरूकता आनी चाहिए और हमारी रूढ़िवादी सोच का परित्याग होना चाहिए। ईश्वर के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए हमें यह सोचना चाहिए कि कन्या भी ईश्वर की देन है। इस परिवर्तित सोच से ही बिगड़ते लिंगानुपात में परिवर्तन आयेगा और बेटियों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा। हम समझ जायेंगे कि बेटी घर का भार नहीं, घर की रोशनी ही होती है।

24. सर्वशिक्षा अभियान
अथवा
सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ

संकेत बिन्दु— 1. प्रस्तावना 2. सर्वशिक्षा अभियान 3. अभियान की सफलता के लिए सुझाव 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति बहुत कुछ शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। आजादी मिलने के बाद सरकार ने अशिक्षा को दूर करने के लिए जगह-जगह विद्यालय खोले और प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की। फिर भी देश में साक्षरता प्रतिशत आनुपातिक दृष्टि से कम ही है। इस समस्या के समाधान के लिए अब देश में सर्वशिक्षा अभियान चलाया जा रहा है।

2. सर्वशिक्षा अभियान—सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा एवं साक्षरता अभियान को पहले 'शिक्षा आपके द्वार पर' कार्यक्रम चलाया, फिर इसे सर्वशिक्षा अभियान का रूप दिया है। पिछले दस सालों से इस अभियान को तेज गति से चलाया जा रहा है। इसके लिए गाँवों, ढाणियों, कस्बों, कच्ची बस्तियों एवं पिछड़े क्षेत्रों में नये विद्यालय खोले गये हैं। राजीव गाँधी विद्यालय योजना तथा साक्षरता अभियान के रूप में बेरोजगार शिक्षित युवकों को 'शिक्षा मित्र' रूप में नियुक्त किया गया है। इसमें बालकों को निःशुल्क पाठन-सामग्री के साथ दोपहर का भोजन भी दिया जा रहा है। इसमें महिला शिक्षा पर काफी जोर दिया जा रहा है।

3. अभियान की सफलता के लिए सुझाव—इस अभियान को सफल बनाने के लिए ग्राम पंचायतों को पर्याप्त आर्थिक सहायता दी जाए। इसमें नियुक्त शिक्षा-मित्रों को पूरा वेतन दिया जाए तथा प्रभावी निरीक्षण और पर्यवेक्षण की व्यवस्था की जाये। इसमें नैतिक शिक्षा, योग, स्वरोजगारपरक शिक्षा और दस्तकारी की शिक्षा का भी समावेश किया जावे।

4. उपसंहार—इस प्रकार सर्वशिक्षा अभियान से सारे राष्ट्र से निरक्षरता को दूर किया जा सकता है। सरकार इस ओर विशेष ध्यान दे तथा जन सहयोग लेकर भी अभियान को आगे बढ़ावे। निरक्षरता का दाग मिटाना ही इस अभियान की सफलता है।

25. शिक्षित नारी : सुख-समृद्धिकारी
अथवा
नारी-शिक्षा का महत्त्व

संकेत बिन्दु— 1. प्रस्तावना 2. शिक्षित नारी का समाज में स्थान 3. शिक्षित नारी आदर्श गृहिणी 4. शिक्षित नारी से सुख-समृद्धि का प्रसार 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—हमारे पुरुषप्रधान देश में समाज में पहले पुरुष की अपेक्षा नारी को कम महत्त्व दिया जाता था। इसलिए उसकी शिक्षा की ओर कम ध्यान दिया जाता था। परन्तु स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद सरकार नारी-शिक्षा पर ध्यान दे रही है, फिर भी अभी शिक्षित नारियों का प्रतिशत बहुत ही कम है।

2. शिक्षित नारी का समाज में स्थान—शिक्षित नारी का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। गृहिणी के रूप में वह अपने घर-परिवार का संचालन कुशलता से कर सकती है। वह अपनी सन्तान को सभी दृष्टियों से योग्य बना सकती है।

सुशिक्षित नारी माँ के रूप में श्रेष्ठ गुरु, पत्नी के रूप में आदर्श गृहिणी और बहिन के रूप में श्रेष्ठ मार्गदर्शिका होती है। यदि नारी शिक्षित है तो वह विभिन्न पदों पर आसीन होकर अपने दायित्व का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सकती है और देश व समाज की प्रगति में अपना योगदान अच्छी तरह से दे सकती है।

3. शिक्षित नारी आदर्श गृहिणी—शिक्षित नारी घर-गृहस्थी का संचालन, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की पहचान, अच्छे-बुरे का ज्ञान और सन्तान के भविष्य का निर्माण अच्छी तरह से कर सकती है। आमदनी के आधार पर व्यय-अपव्यय का ध्यान रख सकती है। सामाजिक-सम्बन्धों में प्रगाढ़ता ला सकती है। परिवार और समाज को व्याप्त अंधविश्वासों और रूढ़ियों से मुक्त कर सकती है। अपनी गृहस्थी को सुख-समृद्धशाली बना सकती है।

4. शिक्षित नारी से सुख-समृद्धि का प्रसार—शिक्षित नारी से ही सुख और समृद्धि का प्रसार होता है, क्योंकि वही परिवार के सदस्यों में आत्मीयता तथा एकता की भावना जाग्रत करती है। वह परिवार का कुशलता से संचालन करती है। अपने व्यवहार में सन्तुलन बनाये रखती है। शिक्षित नारी पति की सच्ची सहधर्मिणी एवं सन्तान की सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शिका होती है। उसी के कारण सन्तान का भविष्य उज्ज्वल हो पाता है, घर-परिवार का वातावरण सुख-सम्पन्नता से परिपूर्ण हो जाता है और समाज उचित प्रभाव भी ग्रहण करता है।

5. उपसंहार—संक्षेप में कहा जा सकता है कि उचित एवं अनुकूल शिक्षा प्राप्त करके नारी अपने व्यक्तित्व का निर्माण तो करती ही है, वह अपने समाज और घर-परिवार में सुख का संचार करती है। जिस राष्ट्र की नारियाँ शिक्षित होती हैं, वह राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है, इसी कारण 'शिक्षित नारी : सुख-समृद्धिकारी' कहा गया है।

26. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व
अथवा
कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. कम्प्यूटर शिक्षा का प्रसार 3. कम्प्यूटर का विविध क्षेत्रों में उपयोग 4. कम्प्यूटर शिक्षा से लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—वर्तमान में पूरे विश्व में अधिकांश कार्य कम्प्यूटर की सहायता से किये जाने लगे हैं। ऐसे में कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व तथा उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गई है।

2. कम्प्यूटर शिक्षा का प्रसार—कम्प्यूटर की उपयोगिता को देखते हुए कम्प्यूटर शिक्षा का स्वतन्त्र पाठ्यक्रम बनाया गया है और इसकी शिक्षा का सभी देशों में अत्यधिक प्रसार हो रहा है। कम्प्यूटर से गणितीय कार्य के साथ ही विविध भाषाओं में मुद्रण, ध्वनि-संप्रेषण, शब्द-भण्डारण एवं प्रत्यक्ष-चित्र संयोजन आदि जटिल कार्य आसानी से हो रहे हैं। इन सभी के ज्ञान के लिए अब कम्प्यूटर शिक्षा का प्रसार अनिवार्य रूप से होने लगा है।

3. कम्प्यूटर का विविध क्षेत्रों में उपयोग—कम्प्यूटर का सामान्य प्रयोग के अलावा, कम्प्यूटर शिक्षा में दक्ष व्यक्ति इसका उपयोग विविध प्रकार से करता है। कम्प्यूटर से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, साक्षात्कार करना, मौसम की पूर्व सूचना देना, समुद्रीय लहरों की भविष्यवाणी करना, दूरसंचार का प्रसार करना, इण्टरनेट आदि का संचालन करना आदि अनेक क्षेत्रों में इसका कुशलता से उपयोग किया जा रहा है। रेल-हवाई जहाज के टिकटों का वितरण-आरक्षण, दूरसंवेदी उपग्रहों का संचालन, परमाणु आयुधों का निर्माण, जटिल यान्त्रिक इकाइयों का पर्यवेक्षण एवं व्यवस्थापन, बड़ी मात्रा में समाचार-पत्रों एवं पुस्तकों का मुद्रण, पानी-बिजली-टेलीफोन के लाखों बिलों और परीक्षा-परिणामों का संगठन-प्रतिफलन, बैंकिंग कार्य करने में कम्प्यूटर का उपयोग आज निर्बाध गति से हो रहा है।

4. कम्प्यूटर शिक्षा से लाभ—जैसाकि कम्प्यूटर की विविध क्षेत्रों में उपयोगिता ऊपर दिखाई गई है, यह सब कम्प्यूटर शिक्षा से ही सम्भव है। अब कार्यालयीय कार्यों के लिए तथा व्यावसायिक क्षेत्र की सफलता के लिए कम्प्यूटर का ज्ञान अति आवश्यक बन गया है। इसी से वर्तमान में दूरस्थ शिक्षा तथा ऑन लाईन एजूकेशन के कार्यक्रम चल रहे हैं। फलस्वरूप इससे बौद्धिक-शारीरिक श्रम, समय तथा धन आदि की बचत हो रही है।

5. उपसंहार—कम्प्यूटर शिक्षा का वर्तमान में सर्वाधिक महत्त्व है। इसकी सभी क्षेत्रों में उपयोगिता बढ़ रही है। आज के व्यस्ततम जीवन में कम्प्यूटर से प्रत्येक सामान्य शिक्षित व्यक्ति लाभान्वित हो रहा है। अब कार्यालयीय कार्यों के लिए तथा कम्प्यूटर केवल संगणक न रहकर सर्व-कार्य सम्पादक बन गया है।

27. शिक्षा-सुधार में विद्यार्थियों की भूमिका

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. वर्तमान में शिक्षा का स्तर 3. विद्यार्थियों के द्वारा सुधार के उपाय 4. शिक्षा-सुधार से लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–हमारे देश की शिक्षा पद्धति में यद्यपि नागरिक कर्त्तव्यों का समावेश किया गया है तथापि विद्यार्थियों को इसका सम्यक् ज्ञान नहीं है। यदि आज का शिक्षार्थी ज्ञानार्जन की भावना रखकर शिक्षा के स्तर में सुधार करना चाहे तो वह अपनी शक्ति को हड़ताल, तोड़फोड़ जैसी गतिविधियों में न लगाकर शिक्षा क्षेत्र की कमियों को दूर करने में लगाये तो निश्चित ही हमारे शिक्षा-स्तर में सुधार हो सकता है।

2. वर्तमान में शिक्षा का स्तर–हमारे देश में वर्तमान में शिक्षा-प्रणाली का स्वरूप कोरे किताबी ज्ञान पर आधारित होने के कारण अव्यवस्थित एवं निम्न स्तरीय है। यह काफी श्रम-साध्य एवं व्यय-साध्य है। साथ ही व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वरोजगारोन्मुखता का अभाव होने से उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी युवा वर्ग बेकारी और बेरोजगारी के शिकार बन रहे हैं। यह स्थिति अतीव चिन्तनीय है।

3. विद्यार्थियों के द्वारा सुधार के उपाय–वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के स्वरूप एवं स्तर में सुधार लाने के लिए युवा-शक्ति का समुचित उपयोग नितान्त अपेक्षित है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं—(1) शिक्षा-प्रणाली में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जावे। (2) विद्यार्थी व्यावहारिक एवं व्यावसयिक ज्ञान प्राप्त करें। (3) शिक्षा-स्तर में अनुशासन एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का विशेष ध्यान रहे। (4) ज्ञान-साधना को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना जावे। (5) राष्ट्रीय एवं सामाजिक दायित्व-निर्वाह के प्रति जागृत किया जावे। (6) शिक्षा को आदर्श चरित्र एवं संस्कार-निर्माण का साधन समझा जावे। (7) शिक्षा-प्रणाली के समस्त दोषों का निवारण किया जावे।

4. शिक्षा-सुधार से लाभ–शिक्षा स्तर में सुधार करने से विद्यार्थियों में स्वावलम्बन की भावना पनपेगी। वे अपना सम्यक् चारित्रिक-बौद्धिक विकास करने के साथ ही सामाजिक दायित्वों का विकास अच्छी तरह से कर सकेंगे। शिक्षा सुधार से बेकारी-बेरोजगारी नहीं रहेगी और वे अच्छे नागरिक की भूमिका निभा सकेंगे।

5. उपसंहार–विद्यार्थियों के प्रयासों से ही शिक्षा में सुधार और उचित परिणाम सामने आ सकता है। अतएव पहले विद्यार्थी स्वयं जागृत होवें, फिर शिक्षा-सुधार में संलग्न रहें, तो निस्सन्देह हमारी शिक्षा का स्तर उच्च कोटि का बन सकता है।

28. निरक्षरता : एक अभिशाप

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. निरक्षरता का दुष्प्रभाव 3. निरक्षरता निवारण अभियान 4. निरक्षरता निवारण के लिए सुझाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—बिना पढ़ा-लिखा व्यक्ति भले ही लौकिक ज्ञान से पूरित रहता है, लेकिन न तो वह अपने व्यक्तित्व का विकास कर पाता है और न वह समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बन पाता है। इसलिए निरक्षरता को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए अभिशाप कहा गया है।

2. निरक्षरता का दुष्प्रभाव—हमारे देश में पराधीनता के काल में शिक्षण-सुविधाओं का नितान्त अभाव था। दूसरी ओर गरीबी, शोषण, अन्धविश्वासों और रूढ़ियों की भी अधिकता थी। इन सभी कारणों से भारतीय सामाजिक जीवन का विकास नहीं हो पाया। आजादी के बाद साक्षरता के अनेक कार्यक्रमों का संचालन किया गया, फिर भी आज शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में निरक्षरता का प्रतिशत अधिक है। इस व्याप्त निरक्षरता के अनेक दुष्प्रभाव दिखाई देते हैं।

3. निरक्षरता निवारण अभियान—स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी स्तर पर निरक्षरता दूर करने के अनेक प्रयास किए जाते हैं। इस दृष्टि से शिक्षण संस्थाओं का विस्तार किया गया और राष्ट्रीय स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा नीति के अन्तर्गत साक्षरता कार्यक्रम चलाए जाने लगे। ग्रामीण और कस्बायी क्षेत्रों में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों और विद्यालयों की स्थापना की गयी। समाज कल्याण के सहयोग से साक्षरता अभियान को आगे बढ़ाया गया। अब राजस्थान में राजीव गाँधी पाठशाला योजना, लोक जुम्बिश परिषद् और सन्धान संस्था द्वारा पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय खोले जा रहे हैं और आठ से चौदह वर्ष के बालक-बालिकाओं को साक्षर करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में प्रचलित सर्वशिक्षा अभियान के द्वारा साक्षरता के लक्ष्य के प्रति काफी आशाएँ हैं।

4. निरक्षरता निवारण के लिए सुझाव—हमारे देश से निरक्षरता का कलंक तभी मिट सकता है, जब सारे देश में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जावे और बालकों को अशिक्षित रखना कानूनी अपराध माना जावे। इसके लिए जगह-जगह पर विद्यालय खोले जावें और गरीब जनता के बालकों को हर तरह की सुविधाएँ उपलब्ध करायी जावें।

वयस्कों के लिए प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से चलाया जावे। वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित सर्वशिक्षा अभियान को अधिक प्रभावशाली बनाया जावे और प्रचार-साधनों एवं दूरदर्शन का इसके लिए पूरा उपयोग किया जावे।

5. उपसंहार—निरक्षरता मानव-समाज पर एक कलंक है, यह मानवता के लिए एक अभिशाप है। इस अभिशाप से मुक्ति आवश्यक है और यह कार्य साक्षरता के आलोक से ही हो सकता है।

29. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
नैतिक शिक्षा का महत्त्व
अथवा
नैतिक शिक्षा की महती आवश्यकता

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. नैतिक शिक्षा का स्वरूप 3. नैतिक शिक्षा का समायोजन 4. नैतिक शिक्षा की उपयोगिता 5. उपसंहार।

1 प्रस्तावना–हमारे देश में स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा-क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है फिर भी एक कमी यह है कि यहाँ नैतिक शिक्षा पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता है। इससे भारतीय युवा पीढ़ी संस्कारहीन और कोरी भौतिकतावादी बन रही है।

2. नैतिक शिक्षा का स्वरूप–प्राचीन काल में हमारे देश में नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाता था, जिससे उस समय विद्यार्थियों में नैतिक आदर्शों को अपनाने की होड़ लगी रहती थी। लेकिन भारत गुलामी के कारण नैतिक शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ गया और जब आजाद हुआ तब शिक्षा का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण न होकर अर्थोपार्जन भर रह गया। जिसके कारण मानवीय मूल्यों का ह्रास ही नहीं हुआ बल्कि चारित्रिक पतन भी हुआ। इस स्थिति की ओर ध्यान देकर अब प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा-स्तर पर पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा का समावेश किया जा रहा है।

3. नैतिक शिक्षा का समायोजन–भारतीय संस्कृति के उपासक लोगों ने वर्तमान शिक्षा पद्धति के गुण-दोषों का चिन्तन कर नैतिक शिक्षा के प्रसार का समर्थन किया। परिणामस्वरूप पाठ्यक्रम में स्तरानुकूल नैतिक शिक्षा का समायोजन किया जा रहा है। वस्तुत: विद्यार्थी जीवन आचरण की पाठशाला है। इसलिए विद्यार्थी को जैसी शिक्षा दी जायेगी, आगे चलकर वह वैसा ही बनेगा। इस बात को ध्यान में रखकर नैतिक शिक्षा का समायोजन किया गया है।

4. नैतिक शिक्षा की उपयोगिता–नैतिक शिक्षा की उपयोगिता व्यक्ति, समाज और राष्ट्र इन सभी के लिए है। विद्यार्थी जीवन में तो नैतिक शिक्षा का विशेष महत्त्व और उपयोगिता है। नैतिक शिक्षा के द्वारा ही विद्यार्थी अपने चरित्र एवं व्यक्तित्व का सुन्दर निर्माण कर सकते हैं और अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं। अतएव प्रशस्य जीवन-निर्माण के लिए नैतिक शिक्षा की विशेष उपयोगिता है।

5. उपसंहार–नैतिक शिक्षा मानव-व्यक्तित्व के उत्कर्ष का, संस्कारित जीवन का तथा समस्त समाज-हित का प्रमुख साधन है। इससे भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, प्रमाद, लोलुपता, छल-कपट तथा असहिष्णुता आदि दोषों का निवारण होता है। मानवतावादी चेतना का विकास भी इसी से सम्भव है।

30. इन्टरनेट : वरदान या अभिशाप
अथवा
इन्टरनेट की उपयोगिता
अथवा
इन्टरनेट : लाभ और हानि
अथवा
इन्टरनेट : ज्ञान का भण्डार
अथवा
विद्यार्थी-जीवन में इन्टरनेट की भूमिका
अथवा
सूचना एवं संचार की महाक्रान्ति : इन्टरनेट

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना–नवीनतम प्रौद्योगिकी 2. इन्टरनेट प्रणाली 3. इन्टरनेट का प्रसार 4. इन्टरनेट से लाभ एवं हानि 5. आधुनिक जीवन में उपयोगिता 6. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—वर्तमान में सूचना एवं दूर-संचार प्रौद्योगिकी का असीमित विस्तार हो रहा है। अब कम्प्यूटर एवं सेलफोन के द्वारा सूचना एवं मनोरंजन का एक सुन्दर साधन बन गया है, जिसे इन्टरनेट कहते हैं। इन्टरनेट नवीनतम संचार प्रौद्योगिकी है। इससे अल्प समय में समस्त जानकारियाँ सरलता से मिल जाती हैं।

2. इन्टरनेट प्रणाली—यह ऐसे कम्प्यूटरों एवं सेलफोनों की प्रणाली है, जो सूचना लेने और देने अर्थात् उनका आदान-प्रदान करने के लिए आपस में जुड़े रहते हैं। इन्टरनेट का आशय विश्व के करोड़ों कम्प्यूटरों को जोड़ने वाला ऐसा अन्तर्जाल है, जो क्षण-भर में समस्त जानकारियाँ उपलब्ध करा देता है।

3. इन्टरनेट का प्रसार—इन्टरनेट का प्रारम्भ सन् 1960 के दशक में अमेरिका में हुआ। फिर इसका प्रसार भारत तथा अन्य देशों में धीरे-धीरे बढ़ता गया। 'डिजिटल इंडिया' के आधार पर जीवन के हर क्षेत्र के लोग इससे जुड़ते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप आज सारे विश्व में करोड़ों वेबसाइटों के रूप में इन्टरनेट का संजाल फैल गया है। इसके कारण सूचना एवं संचार-क्षेत्र में महाक्रान्ति आ गयी है।

4. इन्टरनेट से लाभ एवं हानि—इन्टरनेट से अनेक लाभ हैं। परस्पर विचार-विमर्श, सूचनाओं का आदान-प्रदान, ज्ञान-प्रसार एवं विविध मनोरंजन के साधन इससे प्राप्त हो जाते हैं। विद्यार्थियों की ज्ञान-वृद्धि के लिए यह अतीव उपयोगी है। परन्तु इन्टरनेट से कई हानियाँ भी हैं। इस पर कई बार मनपसन्द सामग्री के फ्री-डाउनलोड करते ही ऐसे खतरे आते हैं जो कम्प्यूटर सिस्टम को तो तबाह करते ही हैं, निजी सूचना-तन्त्र में भी सेंध लगाते हैं, 'साइबर क्राइम' फैलाते हैं। इससे समय, धन एवं उपकरणों का नुकसान झेलना पड़ता है।

5. आधुनिक जीवन में उपयोगिता—आज इन्टरनेट की सभी के लिए नितान्त उपयोगिता है। व्यापारिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा व्यक्तिगत कार्यों में इसकी सहायता से सारे काम साधे जा सकते हैं। मनोरंजन की दृष्टि से भी इसकी बहुत उपयोगिता है। विद्यार्थियों के लिए तो यह ज्ञान का भण्डार है।

6. उपसंहार—वर्तमान काल में इन्टरनेट का द्रुतगति से विकास हो रहा है और इस पर कई तरह के सॉफ्टवेयर मुफ्त में डाउनलोड किये जा सकते हैं। भले ही इन मुफ्त के डाउनलोडों से अनेक बार हानियाँ उठानी पड़ती हैं, फिर भी सूचना-संचार के अनुपम साधन के साथ सामाजिक-आर्थिक प्रगति में इनकी भूमिका अपरिहार्य बन गई है।

31. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप
अथवा
मोबाइल फोन का प्रचलन एवं प्रभाव
अथवा
मोबाइल फोन : छात्र के लिए वरदान या अभिशाप

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. मोबाइल फोन से लाभ : वरदान 3. मोबाइल फोन से हानि : अभिशाप 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—आधुनिक युग में विज्ञान द्वारा अनेक आश्चर्यकारी आविष्कार किये गये, जिनमें कम्प्यूटर एवं मोबाइल या सेलफोन का विशेष महत्त्व है। मोबाइल फोन का जिस तेजी से प्रसार हुआ है, वह संचार-माध्यम के क्षेत्र में चमत्कारी आविष्कार है। आज इसका उपयोग छोटे से लेकर बड़ा आदमी तक बड़े गर्व के साथ कर रहा है।

2. मोबाइल फोन से लाभ : वरदान—मोबाइल फोन अतीव छोटा यन्त्र है, जिसे व्यक्ति अपनी जेब में अथवा मुट्ठी में रखकर कहीं भी ले जा सकता है और कभी भी कहीं से दूसरों से बात कर सकता है। इससे समाचार का आदान-प्रदान सरलता से होता है और देश-विदेश में रहने वाले अपने लोगों के सम्पर्क में लगातार रहा जा सकता है। व्यापार-व्यवसाय में तो यह लाभदायक एवं सुविधाजनक है ही, शिक्षा आदि अन्य क्षेत्रों में भी यह वरदान बन रहा है। असाध्य रोगी की तुरन्त सूचना देने, मनचाहे गाने या रिंग टोन सुनने, केलकुलेटर का कार्य करने के साथ मनचाही फिल्म देखने तक अनेक लाभदायक और मनोरंजक कार्य इससे किये जा सकते हैं। इससे अनेक फारमेटों एवं डाटा पैकों के माध्यम से संचार-तंत्रों से जुड़ा जा सकता है। छात्रों के लिए शिक्षा की दृष्टि से यह काफी उपयोगी तथा वरदान सिद्ध हो रहा है।

3. मोबाइल फोन से हानि : अभिशाप—प्रत्येक वस्तु के अच्छे और बुरे दो पक्ष होते हैं। मोबाइल फोन से भी अनेक हानियाँ हैं। वैज्ञानिक शोधों के अनुसार मोबाइल उपयोग करते समय रेडियो किरणें निकलती हैं, जो व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक होती हैं। इससे लगातार सुनने पर कान कमजोर हो जाते हैं, मस्तिष्क में चिड़चड़ापन आ जाता है। अपराधी प्रवृत्ति के लोग इसका दुरुपयोग करते हैं, जिससे समाज में अपराध बढ़ रहे हैं। इन सब कारणों से मोबाइल फोन हानिकारक एवं अभिशाप भी है।

4. उपसंहार—मोबाइल फोन दूरभाष की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण आविष्कार है तथा इसका उपयोग उचित ढंग से तथा आवश्यक कार्यों के सम्पादनार्थ किया जावे, तो यह वरदान ही है। लेकिन अपराधी लोगों और युवाओं में इसके दुरुपयोग की प्रवृत्ति बढ़ रही है, यह सर्वथा अनुचित है। मोबाइल फोन का सन्तुलित उपयोग किया जाना ही लाभदायक है।

32. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी
अथवा
भारत में सूचना क्रान्ति का प्रसार
अथवा
संचार माध्यम व उसके बढ़ते प्रभाव
अथवा
सूचना क्रान्ति के युग में भारत

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी या संचार-क्रान्ति 3. सूचना प्रौद्योगिकी का विकास या संचार-माध्यमों का प्रसार 4. सूचना प्रौद्योगिकी या संचार-माध्यमों से लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—वर्तमान काल नवीनतम वैज्ञानिक आविष्कारों का युग है। अब कम्प्यूटर के आविष्कार के साथ टेलीफोन, मोबाइल, टेलीविजन आदि अनेक इलेक्ट्रोनिक उपकरणों के आविष्कारों से इस क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति हुई है। इससे आज के मानव का दैनिक जीवन काफी प्रभावित हो रहा है। आज संचार-साधनों से समाज का हर वर्ग लाभान्वित हो रहा है।

2. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी या संचार-क्रांति—हमारे देश में सन् 1984 में केन्द्र सरकार द्वारा कम्प्यूटर नीति की घोषणा होते ही संचार क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। संचार सुविधा की दृष्टि से जगह-जगह माइक्रोवेव टावर एवं दूरदर्शन टावर स्थापित किये गये। इसके फलस्वरूप दूरदर्शन के चैनलों तथा मोबाइल सेवाओं का विस्तार हुआ। साथ ही टेलेक्स, ई-मेल, ई-कामर्स, फैक्स, इन्टरनेट आदि संचार-साधनों का असीमित विस्तार होने से संचार-तंत्र से जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार हुआ है, वहाँ संचार-सुविधाओं में आश्चर्यजनक क्रान्ति आ गई है।

3. सूचना प्रौद्योगिकी का विकास या संचार-माध्यमों का प्रसार—वर्तमान में संचार-माध्यमों के प्रसार में जो क्रान्ति आयी है उससे विभिन्न यातायात के साधनों के टिकटों का आरक्षण, वेबसाइट पर विभिन्न परिणामों का प्रसारण, रोजगार समाचारों एवं व्यापार-जगत् का उतार-चढ़ाव अविलम्ब पता चल जाता है। फैक्स, ई-मेल, टेलीप्रिन्टर आदि इलेक्ट्रॉनिक साधनों से संचार-सुविधाओं का तीव्र गति से प्रसार हुआ है। भू-उपग्रहों की सहायता से विश्व की प्रमुख घटनाओं और अन्तरिक्ष की गतिविधियों को भी सरलता से देखा जाने लगा है। यह सब संचार क्रान्ति के प्रसार से ही संभव हो सका है।

4. सूचना प्रौद्योगिकी या संचार-माध्यमों से लाभ—संचार-माध्यमों से समाज एवं देश को अनेक लाभ हुए हैं। शिक्षा-क्षेत्र में साइबर शिक्षा, दूरदर्शन चैनल से शिक्षा एवं ऑनलाइन एजुकेशन का प्रसार हुआ है। सर्वाधिक लाभ समाचार-पत्रों को हुआ है। इंजीनियरिंग क्षेत्र में नये क्षेत्रों का सृजन हुआ है तथा देश के बड़े औद्योगिक परिसरों का विस्तार हुआ है। इनका लाभ जनता को प्रत्यक्ष रूप से मिल रहा है।

5. उपसंहार—वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप संचार-क्षेत्र में जो क्रान्ति आयी है, उससे व्यक्ति के दैनिक जीवन तथा सामाजिक जीवन को अनेक लाभ मिल रहे हैं। इससे रोजगार की उपलब्धता के साथ ही ज्ञान-विज्ञान एवं व्यवसाय आदि में भी अनेक सुविधाएँ बढ़ी हैं। निस्सन्देह संचार-क्रांति की आश्चर्यजनक प्रगति सभी के लिए लाभकारी रहेगी।

33. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव
अथवा
कम्प्यूटर के बढ़ते चरण

संकेत बिन्दु— 1. प्रस्तावना–परिचय 2. कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 3. कम्प्यूटर के विविध प्रयोग एवं प्रभाव 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–परिचय—वर्तमान में विज्ञान की आश्चर्यजनक प्रगतियों में कम्प्यूटर का आविष्कार सबसे अधिक चमत्कारी घटना है। वैज्ञानिकों ने अनुसंधान करके मानव मस्तिष्क के रूप में कम्प्यूटर का आविष्कार किया। कम्प्यूटर तीव्र गति से प्रोसेसिंग कर एक सेकण्ड में तीस लाख तक की गणना कर सकता है। साथ ही हजारों मानवों के मस्तिष्कों का कार्य एक साथ कुछ ही सेकण्डों में कर सकता है।

2. कम्प्यूटर के बढ़ते चरण—वर्तमान काल में कम्प्यूटर का उपयोग मुद्रण, वैज्ञानिक अनुसन्धान, अन्तरिक्ष विज्ञान एवं कृत्रिम उपग्रहों के प्रक्षेपण के साथ ही अनेक कार्यों में किया जा रहा है। इससे सूचना एवं संचार के क्षेत्र में क्रान्तिकारी प्रगति हो रही है। यह शुद्ध गणना के लिए अचूक साधन है। आज बैंकों, रेलवे कार्यालयों, औद्योगिक इकाइयों के संचालन, सैन्य-गतिविधियों, पोस्ट ऑफिसों, संचार माध्यमों, खगोलीय गणना, ज्योतिष गणना, मौसम की भविष्यवाणी आदि में इसको विशेष रूप से अपनाया जा रहा है। आज के भौतिक जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर की निरन्तर उपयोगिता बढ़ती जा रही है।

3. कम्प्यूटर के विविध प्रयोग एवं प्रभाव—आज कम्प्यूटर का उपयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हो रहा है। साथ ही चिकित्सा के क्षेत्र में, परमाणु आयुधों के निर्माण में, उनके संचालन में तथा श्रम-कौशल के संवर्द्धन में इसे अपनाया जा रहा है। विभिन्न परीक्षाओं के अंकन-कार्य, परिणाम प्रदर्शन, पानी-बिजली आदि के लाखों बिल बनाने में इसका उपयोग अनिवार्य-सा हो गया है। इस तरह कम्प्यूटर का विविध क्षेत्रों में प्रयोग होने से मानव-शक्ति का विकास उत्तरोत्तर हो रहा है।

4. उपसंहार—कम्प्यूटर विज्ञान का क्रान्तिकारी आविष्कार है। यह मानव का परिष्कृत एवं शक्तिशाली मस्तिष्क जैसा है। इसमें हजारों संकेतों एवं गणनाओं को विशुद्ध रूप से संग्रह-स्मरण करने की क्षमता है। इसलिए आज के जीवन में इसका शिक्षण-प्रशिक्षण प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक एवं उपयोगी है।

34. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप

अथवा

युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. दूरदर्शन का महत्त्व 3. दूरदर्शन विज्ञान का वरदान 4. दूरदर्शन का दुष्प्रभाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—आज दूरदर्शन हमारे जीवन में मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय साधन है। यह ज्ञानवर्धक अनोखा आविष्कार भी है। दूरदर्शन अर्थात् टेलीविजन का सर्वप्रथम प्रयोग इंग्लैण्ड के एक इंजीनियर जॉन बेयर्ड ने किया था। इसका उत्तरोत्तर विकास होता रहा और अनेक कार्यों में इसकी उपयोगिता भी बढ़ी। हमारे देश में सन् 1959 से दूरदर्शन का प्रसारण प्रारम्भ हुआ और आज यह सारे भारत में प्रसारित हो रहा है।

2. दूरदर्शन का महत्त्व—वर्तमान में दूरदर्शन का ज्ञान-वर्द्धन और मनोरंजन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज हम दूरदर्शन के माध्यम से घर बैठे दुनिया में घटने वाली घटनाओं को तुरन्त जान लेते हैं। वहीं ज्ञान-विज्ञान, समाज-शिक्षा, खेती-बाड़ी, भविष्य-दर्शन, मौसम विज्ञान आदि के सम्बन्ध में जानकारी हासिल कर लेते हैं और सैकड़ों चैनलों से प्रसारित होने वाले सीरियलों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के मनोरंजन कर लेते हैं।

3. दूरदर्शन विज्ञान का वरदान—सामाजिक जीवन में दूरदर्शन की उपयोगिता को देखकर इसे विज्ञान का वरदान माना जाता है। दूरदर्शन पर विश्व में घटने वाली प्रमुख घटनाओं के समाचार तत्काल मिल जाते हैं। रोगों के निवारण, जन-जागरण, जनसंख्या नियन्त्रण तथा सामाजिक कुप्रवृत्तियों को रोकने में भी इसकी काफी उपयोगिता है। महिलाओं को दस्तकारी एवं गृह-उद्योग के सम्बन्ध में इससे जानकारी दी जाती है। सूचना-प्रसारण एवं विज्ञापन-व्यवसाय के लिए यह एक उत्कृष्ट माध्यम है। शिक्षा के क्षेत्र में तो यह विज्ञान का श्रेष्ठ वरदान है।

4. दूरदर्शन का दुष्प्रभाव—दूरदर्शन का बुरा प्रभाव यह है कि इसे देखते रहने से बच्चे पढ़ाई से जी चुराते हैं। साथ ही इस पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों और मारधाड़ वाली फिल्मों से युवा पीढ़ी पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। चोरी, डकैती, बलात्कार और फैशनपरस्ती की प्रवृत्तियाँ इसके प्रभाव से बढ़ रही हैं। इस तरह के दुष्प्रभावों के कारण दूरदर्शन को अभिशाप भी माना जा रहा है।

5. उपसंहार—आज के युग में मनोरंजन की दृष्टि से दूरदर्शन की विशेष उपयोगिता है। इससे संसार की नवीनतम घटनाओं, समाचारों आदि की जानकारी मिलती है तथा लोगों के ज्ञान का विकास होता है। परन्तु इसके कुप्रभावों से युवाओं को मुक्त रखा जावे, यह भी अपेक्षित है।

35. मानव के लिए विज्ञान–वरदान या अभिशाप

अथवा

विज्ञान के बढ़ते कदम

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. विज्ञान के बढ़ते कदम 3. विज्ञान मानव के लिए वरदान 4. विज्ञान मानव के लिए अभिशाप 5. समाधान एवं उपसंहार।

1. प्रस्तावना—आधुनिक युग विज्ञान का युग है। विज्ञान आज मानव जीवन से इस प्रकार घुल-मिल गया है कि उसे जीवन से पृथक् करना असम्भव हो गया है। ऐसी स्थिति में यह आज एक विचारणीय प्रश्न उत्पन्न हो गया है कि यह विज्ञान मानवता को लाभान्वित कर रहा है अथवा पतन के गर्त की ओर ले जा रहा है ? इस सम्बन्ध में बुद्धिजीवियों एवं चिन्तकों में मतभेद हैं।

2. विज्ञान के बढ़ते कदम—आज विज्ञान के क्षेत्र में मानव ने अभूतपूर्व प्रगति की है। इसीलिए वह बैलगाड़ियों और घोड़ों पर बैठकर यात्रा करने की बात भूल गया है। आज वह वैज्ञानिक साधनों के सहारे सैकड़ों मीलों की यात्रा मिनटों में पूरी करने लगा है। इतना ही नहीं वह सैकड़ों मील दूर के दृश्य घर बैठे ही देखने लगा है। विश्व के किसी कोने में रह रहे अपने संबंधी से बात आसानी से करने लगा है। सामरिक क्षेत्र में विज्ञान की सहायता से ऐसे बम और राकेट तैयार कर लिए गये हैं जो पलक झपकाते ही दूर स्थित दुश्मन को नष्ट कर सकते हैं। ये सब विज्ञान के बढ़ते कदमों के ही प्रमाण हैं।

3. विज्ञान मानव के लिए वरदान—विज्ञान से समाज और व्यक्ति दोनों समान रूप से उपकृत हुए हैं। आज आवागमन, सुख-सुविधा, भोग-विलास, स्वास्थ्य-रक्षा, संचार-व्यवस्था आदि सभी क्षेत्रों में विज्ञान मानव के लिए वरदान बन गया है। आज अगर राजस्थान में अकाल पड़ता है तो पंजाब से वहाँ के लिए गेहूँ पहुँच जाता है। पहले यह सम्भव नहीं था। यह सब विज्ञान के द्वारा ही वरदान रूप में संभव हुआ है।

4. विज्ञान मानव के लिए अभिशाप—विज्ञान ने मनुष्य के महत्त्व और कार्यक्षेत्र का अपरिमित विस्तार करके उसे स्वचालित यंत्र जैसा बना दिया है। विज्ञान के द्वारा जुटाये सुख के साधन इतने मोहक तथा लुभावने हैं कि उन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति अपना मनुष्यत्व भूल जाता है। इसी से भ्रष्टाचार की असीमित वृद्धि हो रही है। विज्ञान ने अणु-आयुधों एवं विषाक्त गैसों का निर्माण करके मानव-जाति के समूल विनाश का भय उत्पन्न कर दिया है। यह मानव-जाति के लिए अभिशाप दिखाई दे रहा है। अत: विज्ञान का अति भौतिकवादी प्रयोग हानिकारक ही है।

5. समाधान एवं उपसंहार—आज इस तरह के चिन्तन की जरूरत है कि विज्ञान की प्रगति मानवीय दृष्टि से समन्वित रहे। विज्ञान हमारी सुविधा के लिए है, हम विज्ञान की सुविधा के लिए नहीं हैं। अत: विज्ञान को अभिशाप न बनाने का उत्तरदायित्व बुद्धिमान् और विवेकशील लोगों पर है। इसलिए विज्ञान के सुपरिणामों को सही रूप में प्राप्त करने का प्रयास करना अपेक्षित है।

विचारात्मक निबन्ध

36. समय का सदुपयोग

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. समय के सदुपयोग की जरूरत 3. समय के सदुपयोग से लाभ 4. समय के दुरुपयोग से हानि 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—मानव-जीवन में समय सबसे अधिक मूल्यवान है। साथ ही यह निरन्तर गतिशील, क्षणभंगुर और परिवर्तनशील है। इसीलिए कहा जाता है कि कालचक्र का पहिया हमेशा घूमता रहता है। समय सदैव आगे बढ़ता रहता है। अत: जो समय के साथ गतिमान रहता है, वही अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है। जो समय की दौड़ में पिछड़ जाता है, समय उसे लात मार कर दूर कर देता है। इसीलिए कहा गया है ''समय चूकि पुनि का पछिताने।''

2. समय के सदुपयोग की जरूरत—मानव-जीवन की सफलता का रहस्य समय के सदुपयोग में छिपा हुआ है। समय के सदुपयोग से सामान्य व्यक्ति भी महान् बन जाता है। उदाहरण के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और पण्डित नेहरू समय के बहुत पाबन्द थे। इसी कारण उन्होंने जीवन में सफलता ही प्राप्त नहीं की, बल्कि दुनिया में अपना नाम भी कमाया। इसलिए समय का सदुपयोग करने वाला ही सफल जीवन जीता है।

3. समय के सदुपयोग से लाभ—जीवन में समय के सदुपयोग से अनेक लाभ मिलते हैं। इससे व्यक्ति आलसी नहीं रहता है। प्रत्येक काम उचित समय पर करने से बाद में पछताना नहीं पड़ता है। समय के सदुपयोग से अपना हित तथा समाज व देश का हित-कार्य भी सध जाता है। समय के सदुपयोग की आदत पड़ने से दैनिक जीवनचर्या सुव्यवस्थित हो जाती है तथा किसी भी काम में हानि या नुकसान नहीं उठाना पड़ता है। अत: समय का सदुपयोग करना सब तरह से लाभकारी रहता है।

4. समय के दुरुपयोग से हानि—समय का उचित उपयोग न करने से जीवन में निराशा, असफलता, असन्तोष और हानि ही हाथ लगती है। समय का दुरुपयोग करने वाला व्यक्ति आलसी, गप्पी, व्यर्थ घूमने वाला, नासमझ एवं कर्त्तव्यहीन होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में असफल रहता है और वह अभावों एवं कष्टों से घिरा रहता है। उसका दूसरों की निगाहों में कोई मूल्य नहीं होता है।

5. उपसंहार—वर्तमान में समय को लेकर भारतीय लोग बदनाम हैं। प्राय: भारतीयों को समय का महत्त्व न समझने वाला माना जाता है। समय का सदुपयोग करने से न केवल व्यक्ति का, अपितु समस्त समाज एवं राष्ट्र का हित होता है। इससे उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। समय का सदुपयोग ही सभी सफलताओं का मूलमन्त्र है।

37. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व

अथवा

जल-संरक्षण की आवश्यकता एवं उपाय

अथवा

जल संरक्षण : जीवन सुरक्षण

अथवा

जल है तो जीवन है

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. जल-चेतना हमारा दायित्व 3. जल-संकट के दुष्परिणाम 4. जल-संरक्षण के उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—सृष्टि के पंचभौतिक पदार्थों में जल का सर्वाधिक महत्त्व है और यही जीवन का मूल आधार है। कहा भी गया है—'जल है तो जीवन है' या 'जल ही अमृत है'। धरती पर जलाभाव की समस्या अब उत्तरोत्तर बढ़ रही है। अतएव धरती पर जल-संरक्षण का महत्त्व मानकर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने सन् 1992 में विश्व जल-दिवस मनाने की घोषणा की, जो प्रतिवर्ष 22 मार्च को मनाया जाता है।

2. जल-चेतना हमारा दायित्व—हमारी प्राचीन संस्कृति में जल-वर्षण उचित समय पर चाहने के लिए इन्द्र और वरुण का पूजन किया जाता था। नदियों का स्तवन किया जाता था। प्राचीन काल में हमारे राजा और समाजसेवी श्रेष्ठि-वर्ग पेयजल हेतु कुओं, तालाबों आदि का निर्माण करवाते थे और जल-संचय करवाते थे। लेकिन आजकल स्वार्थी मनोवृत्ति के कारण जल का ऐसा विदोहन किया जा रहा है जिससे पेयजल संकट उत्पन्न हो गया है। इसलिए हमारा दायित्व है कि हम जल को संरक्षण प्रदान करें।

3. जल-संकट के दुष्परिणाम—आजकल हमारे यहाँ भूजल का अतिशय दोहन होने के कारण जल-संकट उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप न तो खेती की सिंचाई हेतु पानी मिल रहा है, न पेयजल की उचित पूर्ति हो पा रही है। जल-संकट के कारण तालाब और कुएँ सूख रहे हैं। नदियों का जल-स्तर घट रहा है। धरती के अन्दर भी जल-स्तर कम हो रहा है। इस तरह जल-संकट के अनेक दुष्परिणाम देखने में आ रहे हैं।

4. जल-संरक्षण के उपाय—जिन कारणों से जल-संकट बढ़ रहा है, उनका निवारण करने से यह समस्या कुछ हल हो सकती है। इसके लिए भूगर्भीय जल का विदोहन रोका जावे। वर्षा के जल का संचय कर भूगर्भ में डाला जावे, बरसाती नालों पर बाँध या एनीकट बनाये जावें, तालाबों-पोखरों व कुओं को अधिक गहरा-चौड़ा किया जावे और बड़ी नदियों को आपस में जोड़ने का प्रयास किया जावे। इस तरह के उपायों से जल-संकट का समाधान हो सकता है।

5. उपसंहार—जल को जीवन का आधार मानकर समाज में नयी जागृति लाने का प्रयास किया जावे। 'अमृतं जलम्' जैसे जन-जागरण के कार्य किये जावें। इससे जल-चेतना की जागृति लाने से जल-संचय एवं जल-संरक्षण की भावना का प्रसार होगा तथा इससे धरती का जीवन सुरक्षित रहेगा।

38. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है

अथवा

विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन

अथवा

विद्यार्थी एवं अनुशासन

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व 3. अनुशासनप्रियता के सुपरिणाम 4. अनुशासनहीनता के दुष्परिणाम 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—अनुशासन का अर्थ है नियन्त्रण या संयमपूर्वक रहना। अनुशासन एक मानवीय गुण है; जिसके कारण जीवन नियमित, संयमित होता है तथा समय की बचत होती है। इसलिए राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन में अनुशासन का विशेष महत्त्व है।

2. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व—वैसे तो जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन अति आवश्यक है लेकिन विद्यार्थी जीवन में इसका विशेष महत्त्व है, क्योंकि विद्यार्थी जीवन वह अवधि है जिसमें नये संस्कार और आचरण एक नींव की भाँति विद्यार्थी के मन को प्रभावित करते हैं। इस अवस्था में वह जैसा व्यवहार और आचरण सीख लेता है, वही

उसके भावी जीवन का अंग बन जाता है। इसलिए अनुशासन विद्यार्थी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। विद्यार्थी के चरित्र-निर्माण तथा शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अनुशासन का होना एक अनिवार्य शर्त है।

3. अनुशासनप्रियता के सुपरिणाम—जीवन में सफलता का रहस्य अनुशासन की भावना रखना है। जिस राष्ट्र के लोगों को अनुशासन का महत्त्व स्वीकार्य है, जो उत्तरदायित्व को समझते हैं, वे अपना तथा अपने राष्ट्र का गौरव बढ़ाते हैं। विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन की विशेष उपयोगिता है, क्योंकि आज का विद्यार्थी राष्ट्र का भावी सुनागरिक है। अनुशासनप्रिय छात्र ही परिश्रमी, कर्त्तव्यपरायण और विनयशील हो सकता है और जीवन में प्रगति-पथ पर स्वत: अग्रसर हो सकता है।

4. अनुशासनहीनता के दुष्परिणाम—वर्तमान में हमारे देश में अनुशासनहीनता के दुष्परिणाम स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। विद्यार्थी ज्ञान-प्राप्ति के प्रति उदासीन हो रहे हैं, वे गुरुजनों का आदर नहीं करते हैं तथा तोड़-फोड़, आन्दोलन आदि का सहारा लेकर शिक्षा-जगत् को दूषित कर रहे हैं। राजनीतिक दलों के सदस्य भी स्वयं अनुशासित नहीं रहते हैं और वे विद्यार्थियों को गलत रास्ते पर भटकाने का कार्य करते हैं। सरकारी कर्मचारी भी अनुशासनहीन हो रहे हैं।

5. उपसंहार—अनुशासन एक ऐसी प्रवृत्ति या संस्कार है, जिसे अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन सफल बना सकता है। इससे अनेक श्रेष्ठ गुणों का विकास होता है। अनुशासित रहकर छात्र अपनी और राष्ट्र की प्रगति कर सकता है, अत: अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है।

39. स्वावलम्बन का महत्त्व

अथवा

स्वावलम्बन की एक झलक पर, न्यौछावर कुबेर का कोष

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. जीवन में स्वावलम्बन की उपयोगिता 3. स्वावलम्बन के लाभ 4. देश एवं समाज-हित के लिए स्वावलम्बन आवश्यक 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—एक नीतिकार का यह कथन 'स्वावलम्बन की एक झलक पर, न्यौछावर कुबेर का कोष' अक्षरश: सत्य है। स्वावलम्बन का गुण ऐसा रत्न है कि उसके सामने धन-दौलत की आवश्यकता नहीं रहती। यह आत्मविश्वास एवं धैर्य जगाता है और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की ललक पैदा करता है। इस तरह जीवन में स्वावलम्बन का अपरिहार्य महत्त्व है।

2. जीवन में स्वावलम्बन की उपयोगिता—जीवन में स्वावलम्बन ऐसा सम्बल है, जिससे व्यक्ति प्रगति-पथ पर बढ़ सकता है। अपने पैरों पर खड़ा होने वाला व्यक्ति प्रत्येक कार्य उत्साह और आत्मविश्वास के साथ कर जीवनगत उद्देश्य को आसानी से प्राप्त करता है जबकि आलसी, निकम्मे, अविवेकी जन अपने हाथ-पैर न हिलाकर, उद्देश्य में असफलता मिलने पर भाग्य और ईश्वर को दोष देते हैं। भाग्य पर रोना और पछताना उनकी नियति बन जाती है। इन कमजोरियों का निवारण स्वावलम्बन से ही किया जा सकता है।

3. स्वावलम्बन के लाभ—जीवन में उन्नति, प्रगति, कीर्ति एवं सुख-सम्पन्नता की प्राप्ति स्वावलम्बन से ही संभव है। स्वावलम्बन से सुख मिलता है, आत्मनिर्भरता आती है, जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति होती है, आलस्य और निकम्मेपन का नाश होता है। इस प्रकार स्वावलम्बन के अनेक लाभ हैं।

4. देश एवं समाज-हित के लिए स्वावलम्बन आवश्यक—स्वावलम्बी व्यक्ति अपने हित के साथ अपने देश और समाज का भी हित करता है। वह अपने आचरण से दूसरों को भी स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता की प्रेरणा देता है। स्वावलम्बन की भावना का प्रसार होने से हमारा देश स्वतन्त्र हुआ और अल्प समय में विकासशील देशों में अग्रणी ही नहीं बन गया, बल्कि प्रगति-पथ पर निरन्तर बढ़ता भी जा रहा है।

5. उपसंहार—हमारे देश में कुछ लोग अपना सामान उठाकर चलने में हीनता समझते हैं, अपने हाथों काम करने में उन्हें लज्जा आती है। इस तरह बड़प्पन का कोरा दिखावा करने वाले स्वावलम्बन का महत्त्व नहीं समझते हैं। अतएव जीवन में सुख-शान्ति, यश-वैभव प्राप्त करने, देश और समाज का हित-सम्पादन करने हेतु स्वावलम्बन अपनाना आवश्यक है।

40. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता

अथवा

राष्ट्रीय एकता

अथवा

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. स्वतन्त्र भारत में राष्ट्रीय एकता 3. राष्ट्रीय एकता की समस्या 4. वर्तमान में राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—वर्तमान काल में कौमी एकता अथवा राष्ट्रीय एकता को लेकर काफी विवाद चल रहा है। इस विवाद के कारण ही वर्तमान काल में धार्मिक आस्था, भाषावाद, जातिवाद, वर्गवाद, सांस्कृतिक नस्लवाद एवं क्षेत्रवाद आदि का राजनीतिक कुचक्र चलने से राष्ट्रीय एकता की जो स्थिति है, वह अत्यन्त शोचनीय है।

2. स्वतन्त्र भारत में राष्ट्रीय एकता—स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद हमारे देश में लोकतन्त्र की प्रतिष्ठा हुई। शासन-व्यवस्था में किसी जाति-विशेष या धर्म-विशेष को प्रमुखता न देकर सभी देशवासियों को समानता का अधिकार दिया गया और राजनीतिक, वैचारिक एवं आर्थिक समानता का सिद्धान्त अपनाकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया गया। हमारी एकता की स्थिति को निहार कर पड़ोसी देशों के मन में ईर्ष्या का भाव जाग गया और वे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हमारी एकता को कमजोर करने का कुचक्र रचते रहते हैं। लेकिन जब भी भारत पर आक्रमण हुए, भारतीयों ने सभी भेदभावों को भुलाकर एकता तथा राष्ट्रीयता का परिचय दिया। इससे हमारी राष्ट्रीय एकता मजबूत हुई।

3. राष्ट्रीय एकता की समस्या—इतना सब कुछ होने के बाद भी हमारी राष्ट्रीय एकता को कमजोर करने की कुचालें चली जा रही हैं। कुछ राष्ट्रों की खुफिया एजेन्सियाँ आतंकवाद को बढ़ावा दे रही हैं। कहीं साम्प्रदायिक दंगे करवाये जाते हैं तो कहीं जातिगत विद्वेष भड़काया जाता है। इन कारणों से आज हमारी राष्ट्रीय एकता समस्याग्रस्त बन गयी है।

4. वर्तमान में राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता—वर्तमान में कुछ शत्रु देश आतंकियों को माध्यम बनाकर हमारी राष्ट्रीय एकता को खण्डित करना चाहते हैं। कुछ देश भारत को विकासशील एवं समृद्ध नहीं देखना चाहते हैं। साथ ही आंतरिक-विभेद, प्रान्तवाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता एवं आतंकवाद आदि विभिन्न कारणों से देश की एकता को हानि पहुँचाई जा रही है। परन्तु हमें अभी सावधान रहना चाहिए। लोकतन्त्र की स्थिरता, स्वतन्त्रता की रक्षा और राष्ट्र के सर्वतोमुखी विकास के लिए राष्ट्रीय एकता की महती आवश्यकता है।

5. उपसंहार—संक्षेपत: भारत में जब-जब राष्ट्रीय एकता की न्यूनता रही, तब-तब विदेशी शक्तियों ने यहाँ अपने पैर जमाने की चेष्टा की है। अब स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनेकता में एकता का स्वर गूँजने लगा है। उसकी रक्षा के लिए आज राष्ट्रीय एकता की महती आवश्यकता है।

41. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. समाचार-पत्रों का स्वरूप 3. समाचार-पत्रों का महत्त्व 4. हानियाँ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—मनुष्य अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण संसार में घटने वाली प्राकृतिक, राजनैतिक और सामाजिक आदि सभी घटनाओं के साथ अन्य बातों की जानकारी तुरन्त प्राप्त करना चाहता है। इन्हें जानने का मुख्य साधन समाचार-पत्र ही हैं।

2. समाचार-पत्रों का स्वरूप—समाचार-पत्रों में आज समाज के सभी वर्गों के लिए उपयोगी सामग्री का प्रकाशन होने लगा है। छात्र वर्ग के लिए ज्ञानवर्द्धक सामग्री, युवाओं के लिए रोजगार सम्बन्धी सूचनाएँ, खेल-प्रेमियों के लिए खेल जगत्, व्यापारियों और किसानों के लिए बाजार भाव, ग्राहकों के लिए विभिन्न वस्तुओं के विज्ञापन, रोगियों के लिए विभिन्न रोगों से सम्बन्धी विज्ञापन; इनके अतिरिक्त मौसम विज्ञान, योग, ज्योतिष आदि विषयों पर भी समाचार प्रचारित होने लगे हैं। स्वरूप की दृष्टि से समाचार जन-मानस की जिज्ञासाओं के प्रमुख साधन हैं।

3. समाचार-पत्रों का महत्त्व—वर्तमान काल में समाचार पत्रों का विशेष महत्त्व है। ये लोकतन्त्र के सजग प्रहरी हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए इनकी अपनी उपयोगिता है। चाहे वह छात्र हो, युवा हो, किसान हो, व्यापारी हो, खिलाड़ी हो, राजनीतिज्ञ हो, धार्मिक हो, ग्राहक हो, सामाजिक हो आदि सभी वर्गों के लिए उपयोगी सामग्री समाचार-पत्रों में प्राप्त हो जाती है। इसलिए लोकतंत्र के इस चौथे स्तम्भ का जन-जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

4. हानियाँ—समाचार-पत्रों से कुछ हानियाँ भी हैं। कभी-कभी कुछ स्वार्थी लोग दूषित एवं साम्प्रदायिक विचारधारा को समाचार-पत्रों में प्रकाशित कराते हैं। इससे समाज में अशान्ति फैलती है। कुछ सम्पादक चटपटे समाचार प्रकाशित करने के मोह में ऐसी खबरें छापते हैं, जिनसे दंगे तक हो जाते हैं। इसी प्रकार भ्रामक विज्ञापनों, अश्लील दृश्यों एवं असभ्य चित्रों के प्रकाशन से भी सामाजिक वातावरण को हानि पहुँचती है।

5. उपसंहार—हमारे देश में स्वतन्त्रता संग्राम में समाचार-पत्र-पत्रिकाओं का अद्वितीय योगदान रहा। सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना की दृष्टि से आज के युग में समाचार-पत्रों का अत्यधिक महत्त्व है।

42. कटते जंगल : घटता मंगल

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. पर्यावरण के रक्षक : वन 3. कटते जंगल : एक समस्या 4. कटते वनों की रोकथाम के प्रयास 5. समाधान एवं उपाय 6. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—मानव के जीवन को मंगलमय एवं स्वस्थ बनाये रखने के लिए केवल धन और भोजन ही पर्याप्त नहीं है, अपितु इसके लिए शुद्ध वातावरण अर्थात् मंगलकारी भौगोलिक परिवेश भी अपेक्षित है। परन्तु वर्तमान काल में जंगलों की बेतहाशा कटाई से मानव-मंगल तथा पर्यावरण की समस्या उत्पन्न हो गई है।

2. पर्यावरण के रक्षक : वन—पर्यावरण की रक्षा करने वाले प्राकृतिक साधनों में वनों का विशेष महत्त्व है। वन या पेड़ अशुद्ध वायु अर्थात् कार्बन डाइ-आक्साइड को सोखकर प्राणवायु अर्थात् ऑक्सीजन का वमन करते हैं जिससे हमारे प्राणों की रक्षा होती है। वनों से हमें वर्षा की प्राप्ति होती है। इस प्रकार वन और वृक्ष पर्यावरण के रक्षक माने जाते हैं।

3. कटते जंगल : एक समस्या—वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि के कारण वनों की कटाई हो रही है। उसके लिए आवास-व्यवस्था, औद्योगिक इकाइयों का विस्तार, ईंधन व्यवस्था, यातायात हेतु सड़क निर्माण आदि सभी दृष्टियों से वनों, पेड़-पौधों को काटा जा रहा है जिसके कारण वन और पेड़-पौधे घटते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप कटते जंगल पर्यावरण के लिए एक भारी समस्या बन गये हैं।

4. कटते वनों की रोकथाम के प्रयास—वर्तमान में कुछ सामाजिक संगठन, पर्यावरण प्रदूषण निवारक संस्थाएँ तथा कुछ सरकारी विभाग वनों की सुरक्षा एवं वृक्षारोपण का अभियान चला रहे हैं। उत्तरांचल में 'चिपको आन्दोलन', कर्नाटक में 'आप्पिको आन्दोलन' के द्वारा वनों की कटाई का विरोध किया जा रहा है। राजस्थान में विश्नोई समाज ने वृक्षों की कटाई के विरोध में कई बलिदान दिये हैं। देश के अन्य राज्यों में भी वनों की कटाई रोकने के प्रयास हो रहे हैं।

5. समाधान एवं उपाय—कटते जंगलों की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा अनेक कानूनी उपाय किये जा सकते हैं। सरकार को इस संबंध में कठोर दण्ड व्यवस्था करनी चाहिए। वन-रक्षण हेतु अलग से सतर्कता दल नियुक्त करने चाहिए। जन-जाग्रति हेतु प्रयास तेज करने चाहिए। सरकार और सामाजिक संगठनों द्वारा अधिक से अधिक पौधारोपण हेतु जन-मानस को प्रेरित किया जाना चाहिए।

6. उपसंहार—वर्तमान में वनों की अन्धाधुन्ध कटाई होने से पर्यावरण प्रदूषण का भयानक रूप उभर रहा है। इस दिशा में कुछ मानवतावादी चिन्तकों एवं पर्यावरणविद् वैज्ञानिकों का ध्यान गया है। उन्होंने कटते जंगल और घटते मंगल को एक ज्वलन्त समस्या मानकर इसके निवारण के सुझाव भी दिये हैं।

पर्व-त्योहार सम्बन्धी निबन्ध

43. ऋतुराज वसन्त
अथवा
प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. ऋतुराज कहलाने का कारण 3. प्राकृतिक सौन्दर्यपूर्ण वातावरण 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—भारत भूमि पर विधाता की विशेष कृपा-दृष्टि प्रतीत होती है, क्योंकि यहाँ पर समय की गति के साथ ऋतुओं का चक्र घूमता रहता है। इससे यहाँ प्राकृतिक परिवेश में निरन्तर परिवर्तन एवं गतिशीलता दिखाई देती है। पर्यावरणीय विकास की दृष्टि से भारत में ऋतु-परिवर्तन का विशेष महत्त्व माना जाता है। इसमें भी वसन्त ऋतु का अपना विशिष्ट सौन्दर्य सभी को आनन्ददायी लगता है।

2. ऋतुराज कहलाने का कारण—प्रत्येक ऋतु का अपना अलग महत्त्व है, परन्तु वसन्त ऋतु का विशेष महत्त्व है। इस ऋतु में समस्त प्रकृति में सौन्दर्य एवं उल्लास छा जाता है। धरती का नया रूप सज जाता है, प्रकृति अपना श्रृंगार-सा करती है तथा समस्त प्राणियों के हृदय उमंग, उत्साह एवं मादकता से भर जाते हैं। इस ऋतु का आरम्भ माघ शुक्ल पञ्चमी से होता है, होली का त्यौहार इसी ऋतु में पड़ता है। नये संवत्सर का आरम्भ भी इसी से माना जाता है। इन सब कारणों से वसन्त को ऋतुराज अर्थात् ऋतुओं का राजा कहा जाता है। कवियों एवं साहित्यकारों ने इस ऋतु की अनेकशः प्रशंसा की है।

3. प्राकृतिक सौन्दर्यपूर्ण वातावरण—वसन्त ऋतु में सभी पेड़-पौधे नयी कोंपलों, कलियों एवं नये पत्तों-पुष्पों से लद जाते हैं। शीतल, मन्द एवं सुगन्धित हवा चलती है। न गर्मी और न सर्दी रहती है अर्थात् समशीतोष्ण वातावरण रहता है। कोयल कूकने एवं भौंरे गुंजार करने लगते हैं। होली, फाग एवं गणगौर का उत्सव किशोर-किशोरियों को उमंगित करता है। सारा ही प्राकृतिक वातावरण अतीव सुन्दर, मनमोहक और मादक बन जाता है। कवियों के कण्ठ से श्रृंगार रस झरने लगता है। दूर-दूर तक वनों, उपवनों एवं खेतों में नवीन पीताभ सुषमा फैल जाती है।

4. उपसंहार–भारत में वैसे सभी ऋतुओं का महत्त्व है, सभी उपयोगी हैं और समय-परिवर्तन के साथ प्राकृतिक परिवेश की शोभा बढ़ाती हैं। परन्तु सभी ऋतुओं में वसन्त का सौन्दर्य सर्वोपरि रहता है। इसी से इसे ऋतुराज कहा जाता है। यह ऋतु कवियों, प्रकृति-प्रेमियों एवं भावुकजनों को अतिशय प्रिय लगती है।

44. त्योहारों का महत्त्व
अथवा
त्योहार : जनमंगल के आधार

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. प्रमुख त्योहार 3. त्योहारों का महत्त्व एवं उद्देश्य 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–मानव-समाज में उत्सव एवं त्योहारों का विशेष महत्त्व है। सभी धर्मों और जातियों के लोग अपने-अपने त्योहारों और उत्सवों को उत्साह के साथ मनाते चले आ रहे हैं। त्योहार-उत्सव जीवन में समायी कटुता में सरसता तथा माधुर्यता लाते हैं। त्योहार हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

2. प्रमुख त्योहार–हमारा देश त्योहारों-उत्सवों का देश है। कोई महीना ऐसा नहीं है, जिसमें कोई बड़ा-छोटा त्योहार नहीं पड़ता है। भारतवर्ष में मनाये जाने वाले प्रमुख त्योहार हैं—दीपावली, होली, रक्षाबंधन, ईद, बैसाखी, गुरुनानक जयन्ती, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, विजयादशमी, मकर संक्रान्ति, शिवरात्रि, गणेश चतुर्थी, श्रावणी तीज, दुर्गाष्टमी, बसन्त पंचमी। दीपावली व होली ऋतु परिवर्तन के समारोह हैं तथा इनका सम्बन्ध धार्मिक आस्था से भी है। कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी ये दो महान् अवतारी पुरुषों के जन्मदिन हैं। इस प्रकार सभी त्योहार हमारी संस्कृति एवं धर्म से जुड़े हुए हैं।

3. त्योहारों का महत्त्व एवं उद्देश्य–भारतीय जीवन में त्योहारों का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक महत्त्व है। इन त्योहारों को सभी अमीर और गरीब अपनी-अपनी स्थिति के आधार पर बिना किसी भेदभाव से मिलकर मनाते हैं। इन त्योहारों से आपसी कटुता जहाँ दूर होती है वहीं आपसी सहयोग, एकता और सद्भावना के भावों की जागृति होती है। इन त्योहारों के अलावा अन्य अनेक छोटे-छोटे त्योहार मनाये जाते हैं।

4. उपसंहार–त्योहार हमारी संस्कृति के सजीव रूप हैं। ये हमें उसकी अखण्डता एवं विशुद्धता स्थिर रखने के लिए जागरूक रखते हैं और कर्त्तव्य-कर्म में शिथिलता आने पर हममें स्फूर्तिमय चेतना भर देते हैं। त्योहार जीवन में विशृंखलता को दूर कर एकसूत्रता स्थापित करते हुए मंगल-भावना का प्रसार करते हैं।

45. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. राजस्थान के प्रमुख पर्व-त्योहार 3. राजस्थान के प्रमुख उत्सव-मेले 4. प्रमुख पर्वोत्सवों से लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—भारत के विभिन्न प्रदेशों में राजस्थान का विशिष्ट महत्त्व है। प्रचलित परम्पराओं के आधार पर यहाँ अनेक पर्व और त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। वस्तुतः इन राजस्थानी पर्वों के द्वारा यहाँ की सांस्कृतिक झाँकी, जन-जीवन में व्याप्त धार्मिक आस्था एवं रीति-रिवाजों का आसानी से परिचय मिल जाता है।

2. राजस्थान के प्रमुख पर्व-त्योहार—देश में मनाए जाने वाले प्रायः सभी त्योहार तो यहाँ मनाए ही जाते हैं। अन्य पर्वों और त्योहारों में 'गणगौर' राजस्थान का प्रमुख त्योहार है। इस त्योहार पर कुँवारी कन्या अच्छा वर पाने के लिए तथा विवाहित स्त्रियाँ अखण्ड सौभाग्य के लिए गणगौर की पूजा करती हैं। इस त्योहार की तरह ही श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को तीज का पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस पर्व पर कन्याएँ और स्त्रियाँ झूला झूलती हैं और श्रावण के गीत गाती हैं। इनके अलावा गणेश चतुर्थी, शीतलाष्टमी, दशहरा, आखातीज आदि त्योहार भी बड़े उत्साह से मनाये जाते हैं।

3. राजस्थान के प्रमुख उत्सव-मेले—उपर्युक्त प्रमुख पर्वों एवं त्योहारों के अतिरिक्त राजस्थान में विशेष धार्मिक पर्वों पर मेले भी भरते हैं। इन मेलों में पुष्कर, तिलवाड़ा, परबतसर, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, गोगामेड़ी आदि के मेले प्रसिद्ध हैं।

4. प्रमुख पर्वोत्सवों से लाभ—राजस्थान में मनाये जाने वाले विभिन्न पर्वों और मेलों से हमें अनेक लाभ हैं। इनसे सांस्कृतिक परम्परा निरन्तर चलती रहती है और लोगों में अपनी धार्मिक आस्थाओं के प्रति विश्वास बढ़ता है। समाज में परस्पर मेल-मिलाप, भाई-चारा, सहयोग तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है और कुटीर एवं गृह उद्योगों से बनी वस्तुओं का व्यापार होता है जिससे ग्रामीण जनता लाभान्वित होती है।

5. उपसंहार—पर्वों, त्योहारों एवं मेलों की दृष्टि से राजस्थान का विशिष्ट स्थान है। गणगौर, तीज, शीतलाष्टमी आदि कुछ ऐसे पर्व हैं, जिन्हें केवल राजस्थान के लोग ही मनाते हैं। इन पर्वों के द्वारा यहाँ के जातीय जीवन की झाँकी देखने को मिलती है।

स्वास्थ्य एवं खेलकूद सम्बन्धी निबन्ध

46. स्वच्छ भारत अभियान
अथवा
राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. स्वच्छता अभियान का उद्देश्य 3. स्वच्छता अभियान का व्यापक क्षेत्र 4. स्वच्छता अभियान से लाभ 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—महात्मा गाँधी के सपने को सन्देश रूप में लेकर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रव्यापी स्वच्छ भारत अभियान प्रारम्भ किया। इस अभियान से सफाई एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों को गन्दगी से मुक्त करने का सन्देश दिया गया है।

2. स्वच्छता अभियान का उद्देश्य—हमारे देश में शहरों के आसपास की कच्ची बस्तियों में, गाँवों एवं ढाणियों में शौचालय नहीं हैं। विद्यालयों में भी पेयजल एवं शौचालयों की कमी है। इससे खुले में शौच करने से गन्दगी बढ़ती है तथा पेयजल के साथ ही वातावरण भी दूषित होता है। गन्दगी के कारण स्वास्थ्य खराब रहता है और अनेक बीमारियों पर नागरिकों को काफी खर्चा करना पड़ता है। अत: स्वच्छता अभियान का पहला उद्देश्य शौचालयों का निर्माण करना तथा स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करना है और देश को गन्दगी से मुक्त कराना है।

3. स्वच्छता अभियान का व्यापक क्षेत्र—केन्द्रीय सरकार ने इस स्वच्छता अभियान को आर्थिक स्थिति से जोड़ा है। यदि स्वच्छता रहेगी तो बीमारियाँ नहीं होंगी और गरीब लोगों को अनावश्यक व्यय-बोझ नहीं झेलना पड़ेगा। इस दृष्टि से सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों एवं विद्यालयों में शौचालय-निर्माण के लिए अनुदान देना प्रारम्भ कर दिया है। इसके साथ गाँवों में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था पर जोर दिया जा रहा है। गंगा-यमुना नदियों की स्वच्छता का अभियान चलाया जा रहा है। इस कार्य में देश के अनेक प्रतिष्ठित लोग सक्रिय सहयोग कर रहे हैं।

4. स्वच्छता अभियान से लाभ—स्वच्छता अभियान से सबसे बड़ा लाभ स्वास्थ्य के क्षेत्र में रहेगा। लोगों को बीमारियों से मुक्ति मिलेगी, दवाइयों पर अपव्यय नहीं करना पड़ेगा। सारा भारत स्वच्छ बन जायेगा, तो देशों में भारत की स्वच्छ छवि उभरेगी। प्रदूषण का स्तर एकदम घट जायेगा और जल-मल के उचित निस्तारण से पेयजल भी शुद्ध बना रहेगा। साथ ही कृषि-उपजों में भी स्वच्छता बनी रहेगी।

5. उपसंहार—स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश को स्वच्छ भारत के रूप में प्रस्तुत करना है। सरकार के इस पुनीत अभियान में जनता का सक्रिय सहयोग नितान्त अपेक्षित है। प्रतिबद्धता रहेगी तो सफलता अवश्य मिलेगी।

47. खुला-शौचमुक्त गाँव

संकेत बिन्दु—1. खुला-शौचमुक्त से आशय 2. सरकारी प्रयास 3. जन-जागरण 4. हमारा योगदान 5. उपसंहार।

1. खुला-शौचमुक्त से आशय—गाँवों, ढाणियों एवं कच्ची बस्तियों में लोग खुले स्थान पर शौच करते हैं, पेशाब तो किसी भी गली या रास्ते पर कर देते हैं। इस बुरी आदत से सब ओर गन्दगी रहती है। पेयजल, भूमि एवं वायु में गन्दगी बढ़ जाती है। इससे उन क्षेत्रों में भयानक संक्रामक बीमारियाँ फैल जाती हैं। अत: खुला-शौचमुक्त का आशय लोगों को इस बुरी आदत से छुटकारा दिलाना और खुले में मल-मूत्र त्याग न करना है।

2. सरकारी प्रयास—प्रधानमन्त्री मोदीजी ने 'ग्रामीण स्वच्छता मिशन' के माध्यम से गाँवों को खुला-शौचमुक्त करने का नारा दिया गया। केन्द्र सरकार ने गाँवों के बी.पी.एल., लक्षित, लघु सीमान्त किसान एवं भूमिहीन श्रमिक आदि को घर में शौचालय बनाने के लिए प्रति परिवार बारह हजार रुपये देना प्रारम्भ किया है। साथ ही गाँवों में शिशु मल-निस्तारण तथा गन्दा-जल निवारण पर जोर दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों एवं आँगनबाड़ी केन्द्रों में शौचालय-निर्माण हेतु आर्थिक सहायता दी जा रही है। सरकार के इस प्रयास से अनेक गाँवों में शत-प्रतिशत शौचालय बन गये हैं। सारे भारत के गाँवों को सन् 2022 तक पूरी तरह खुला-शौचमुक्त करने का लक्ष्य रखा गया है।

3. जन-जागरण—गाँवों में खुले में मल-मूत्र-त्याग के निवारण हेतु जन-जागरण जरूरी है। 'स्वच्छ ग्रामीण मिशन' एवं ग्राम-पंचायतों के माध्यम से प्रयास किये जा रहे हैं। ग्रामीण स्त्रियों को स्वच्छता का महत्त्व बताकर प्रोत्साहित

किया जा रहा है। इस कारण अब नव-युवतियाँ उसी घर से विवाह का रिश्ता स्वीकार करती हैं जहाँ शौचालय बने हैं। इस कार्य में सभी प्रदेश सरकारें, समाज के प्रतिष्ठित लोग और बड़े कार्पोरेट सेक्टर सहयोग-सहायता दे रहे हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के प्रति उत्साह दिखाई दे रहा है।

4. हमारा योगदान—देश के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम स्वयं खुले में मल-मूत्र का त्याग न करें। लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागृत करें तथा खुला-शौचमुक्त होने के लाभ बतावें। स्वास्थ्य-रक्षा की दृष्टि से इसका महत्त्व समझावें।

5. उपसंहार—आम जनता के स्वास्थ्य, रहन-सहन, स्वच्छता आदि की दृष्टि से ग्रामीण क्षेत्रों में खुला-शौचमुक्त होने की सर्वाधिक आवश्यकता है। इससे पर्यावरण प्रदूषण भी कम होगा और गाँधीजी का 'क्लीन इण्डिया' का सपना भी साकार होगा। सरकार के इस अभियान में हम सभी का और गाँवों की जनता का सहयोग जरूरी है।

48. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
अथवा
योग की उपादेयता
अथवा
योग : स्वास्थ्य की कुंजी
अथवा
योग भगाए रोग

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. योग से आशय 3. योग का महत्त्व 4. वर्तमान में योग की स्थिति 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—हमारे ऋषियों, मुनियों और मनीषियों ने मानव-जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक उपाय किए हैं। इन उपायों में से एक उपाय है—योग। योग मानव-जाति के लिए भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार है।

2. योग से आशय—'योग' शब्द संस्कृत के 'युज्' धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—जोड़ना। किसी वस्तु को अपने से जोड़ना अर्थात् किसी अच्छे कार्य में अपने आपको लगाना। कार्य शारीरिक, मानसिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। मन और शरीर से जो कार्य किया जायेगा, उसे ही योग कहते हैं।

3. योग का महत्त्व—योग से मनुष्य को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक दृष्टि से अनेक लाभ हैं। इससे सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसको रोजाना करने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। वह दीर्घजीवी होता है। उसके शरीर और मस्तिष्क में वृद्धि के साथ-साथ सोच में भी शुचिता आती है। अत: हमें शारीरिक, मानसिक, धार्मिक व आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योग की कोई न कोई क्रिया रोज पन्द्रह-बीस मिनट नियमित रूप से करनी चाहिए, क्योंकि योग स्वस्थ जीवन जीने की एक कला है।

4. वर्तमान में योग की स्थिति—वर्तमान में 'योग' शब्द अनजाना नहीं रहा है, क्योंकि जहाँ देखो वहीं योग का प्रचार-प्रसार विभिन्न माध्यमों से हो रहा है। साथ ही बहुत सारी संस्थाएँ योग सिखा रही हैं। असाध्य रोगों की प्राकृतिक दवा योग है, इसीलिए कहा गया है कि 'योग भगाए रोग', क्योंकि आज का मनुष्य अनियमित दिनचर्या के कारण अनेक शारीरिक और मानसिक बीमारियों से पीड़ित है। वह इन बीमारियों से मुक्त रहने के लिए योग का सहारा लेने लगा है। योग की उपादेयता को समझते हुए हमारे देश की कई प्रादेशिक सरकारों ने इसे शिक्षा पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने का प्रयास किया है और कई सरकारों ने इसे प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रमों में अनिवार्यता प्रदान की है।

5. उपसंहार—योग भारतीय संस्कृति का एक अनुपम उपहार है। यह आज के मनुष्य के व्यस्ततम और तनावग्रस्त जीवन की एक अमूल्य औषधि है। योग स्वास्थ्य की कुंजी है। इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य सौ वर्ष तक जीवित रह सकता है। इसीलिए आज सभी के लिए योग लाभदायक सिद्ध हो रहा है।

49. शिक्षा में खेल-कूद का महत्त्व
अथवा
जीवन में खेल-कूद की आवश्यकता

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. शिक्षा और क्रीड़ा का सम्बन्ध 3. विद्यालय में क्रीड़ा के विभिन्न रूप 4. शिक्षा में क्रीड़ा का महत्त्व 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—स्वास्थ्य जीवन की आधारशिला है। स्वस्थ मनुष्य ही अपने जीवन के सभी कार्यों को अच्छी तरह से कर सकता है। इसीलिए कहा गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन व मस्तिष्क वास करता है। स्वस्थ जीवन हमें व्यायाम और खेल-कूद से प्राप्त होता है। इस सम्बन्ध में यह भी कहा गया है कि पहला सुख नीरोगी काया।

2. शिक्षा और क्रीड़ा का सम्बन्ध—शिक्षा यदि मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है तो खेलकूद उस विकास का पहला अंग है। इसीलिए प्रत्येक विद्यालय में पुस्तकीय शिक्षा के साथ-साथ खेल-कूद और व्यायाम की शिक्षा भी अनिवार्य रूप से दी जाती है। इसके लिए अलग से व्यायाम प्रशिक्षक की नियुक्ति की जाती है।

3. विद्यालयों में क्रीड़ा के विभिन्न रूप—शरीर को शक्तिशाली, स्फूर्तिमय, लचीला और ओजस्वी बनाने के लिए जो कार्य निष्पादित किए जाते हैं, उन्हें हम खेल-कूद कहते हैं। खेल-कूद से शरीर में रक्त का संचार तेजी से होता है। विद्यालयों में कबड्डी, फुटबाल, क्रिकेट, बैडमिण्टन, टेनिस, हॉकी, दौड़, कुश्ती आदि विभिन्न प्रकार के खेल इसी दृष्टि से खेले जाते हैं। इन्हीं खेलों से सम्बन्धित विभिन्न स्तरों पर प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं।

4. शिक्षा में क्रीड़ा का महत्त्व—विस्तृत अर्थ में शिक्षा का कार्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। इसके अन्तर्गत बालक का मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास आता है। मानसिक विकास का आधार यदि पुस्तक है तो शारीरिक विकास का आधार खेल-कूद और व्यायाम है, फिर भी मानसिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास में भी खेल-कूद और व्यायाम का विशेष योगदान है। तन-मन की स्वस्थता खेल-कूद और व्यायाम पर ही निर्भर होती है। इसलिए शिक्षा में क्रीड़ा का विशेष महत्त्व है।

5. उपसंहार—खेल-कूद से शरीर स्वस्थ रहता है। शक्ति का संचार होता है। जीवन में उत्साह, जोश और उत्साह समाया रहता है। शिक्षा प्राप्ति या कुछ करने की रुचि बनी रहती है। इसीलिए सरकार ने 'खेल मंत्रालय' की स्थापना कर शारीरिक शिक्षा को विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों तक इसे अनिवार्य कर रखा है।

50. जब मैंने क्रिकेट मैच देखा
अथवा
आँखों देखे मैच का वर्णन

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. क्रिकेट मैच का आयोजन 3. खेल का वर्णन 4. अन्तिम परिणाम एवं पुरस्कार वितरण 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है और स्वस्थ शरीर के लिए व्यायाम तथा खेल परमावश्यक है। उससे मनोरंजन के साथ-साथ मानसिक-शारीरिक विकास भी होता है। इस कारण मेरी भी खेलकूद में अत्यधिक रुचि है। मुझे हॉकी, फुटबाल तथा क्रिकेट का मैच खेलने तथा देखने में बड़ा आनन्द आता है।

2. क्रिकेट मैच का आयोजन—गत वर्ष मार्च माह की पच्चीस तारीख को जयपुर में भारत और इंग्लैण्ड की टीमों में एक दिवसीय क्रिकेट मैच का आयोजन रखा गया था। मैच के दिन प्रातः आठ बजे मैं और मेरा मित्र दोनों सवाई मानसिंह स्टेडियम मैच देखने के लिए पहुँचे।

3. खेल का वर्णन—सर्वप्रथम टॉस इंग्लैण्ड टीम के कप्तान ने जीता और बल्लेबाजी को चुना। मैच प्रारम्भ हुआ। भारत की ओर से गेंदबाजी की शुरुआत बुमराह और ईशान्त ने की। इन दोनों की सधी गेन्दबाजी से इंग्लैण्ड के बल्लेबाजों को रन जोड़ने कठिन हो गए। दूसरे ओवर में बुमराह ने दो विकेट लिए और चौथे ओवर में ईशान्त ने भी एक कीमती विकेट लिया। कुल पचास ओवरों में इंग्लैण्ड की पूरी टीम दो सौ उनतीस रन बनाकर आउट हो गई।

लंच के बाद खेल पुनः प्रारम्भ हुआ। भारतीय टीम को जीतने के लिए लक्ष्य कठिन नहीं था, परन्तु प्रारम्भ में इंग्लैण्ड के गेन्दबाजों ने ऐसी सधी हुई गेंदें फेंकीं कि भारतीय बल्लेबाज खुलकर नहीं खेल सके। तीस ओवरों के बाद धोनी और पाण्ड्या की जोड़ी ने बेधड़क बल्लेबाजी की तथा चौके और छक्के जमाकर सैंतालीस ओवरों में भारत को विजयी लक्ष्य तक पहुँचा दिया। इससे दर्शकों को बहुत ही प्रसन्नता हुई और सभी दर्शक खिलाड़ियों को तालियाँ बजाकर साधुवाद देते रहे।

4. अन्तिम परिणाम एवं पुरस्कार वितरण—इस रोमांचकारी मैच में विजय भारतीय टीम की रही। सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में धोनी के नाम की घोषणा की गई। राजस्थान के मुख्यमंत्री ने सभी खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण किया। इंग्लैण्ड के खिलाड़ियों को स्मृति-चिह्न दिये गये। पुरस्कार वितरण के बाद सभी लोग अपने-अपने घरों को चले गये।

5. उपसंहार—वस्तुतः खेल के मैदान में हजारों लोगों की भीड़ में एक दर्शक बनकर खिलाड़ियों को अपने सामने खेलते देखना काफी आनन्ददायी लगता है।

संस्कृति एवं पर्यटन सम्बन्धी निबन्ध

51. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता

संकेत बिन्दु–1. लोकदेवता का आशय 2. प्रमुख लोकदेवताओं का संक्षिप्त परिचय 3. लोकदेवता के जनहितकारी कार्य 4. लोकदेवता और लोक-आस्था 5. उपसंहार।

1. लोकदेवता का आशय–ऐसे महापुरुषों को स्थानीय जनता द्वारा लोकदेवता माना जाता है जो मानव रूप में जन्म लेकर भी जनता की भलाई के अनोखे कार्य करते हुए अपना जीवन समर्पित करते हैं तथा दैविक अंश की तरह प्रतीक रूप में पूज्य होते हैं।

2. प्रमुख लोकदेवताओं का संक्षिप्त परिचय–राजस्थान के प्रमुख लोकदेवताओं में बाबा रामदेव, गोगाजी, देवनारायणजी, तेजाजी, पाबूजी, भौमियाजी, डूँगजी, जवाहरजी, कल्लाजी, हड़बूजी, देवबाबाजी, केसरियाजी, झूँझारजी, बिग्गाजी आदि की विशेष मान्यता है। रामदेवजी जैसलमेर जिले के रुणीचा गाँव में रहते थे। इस स्थान को अब रामदेवरा और रामदेवजी को 'रामसा पीर' कहते हैं। मारवाड़ के पाँच पीरों में गोगाजी के नोहर में गोगामेड़ी मेला भरता है। देवनारायणजी गुर्जर जाति के लोकदेवता हैं, उनका पूजा-स्थल आसींद तथा देवधाम जोधपुरिया है। तेजाजी सारे राजस्थान में पूज्य हैं, नागौर जिले के परबतसर में इनका मेला भरता है। पाबूजी का फलौदी के कोलू गाँव में, देवबाबा का भरतपुर के नँगला जहाज में, हड़बूजी का भूंडेल (नागौर) में मेला भरता है। भौमियाजी सारे राजस्थान के भूमि-रक्षक देव के रूप में पूजे जाते हैं।

3. लोकदेवता के जनहितकारी कार्य–अनेक लोकहितकारी एवं जनरक्षक चमत्कारी कार्य करने से लोकदेवताओं की पूजा की जाती है। रामदेवजी ने जाति-पाँति, छुआछूत आदि का विरोध कर हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित की। गोगाजी सर्पदंश का अचूक उपचार करते थे। तेजाजी कृषि कार्यों के उपकारक थे। देवनारायणजी ने गोबर और नीम का औषधि रूप में महत्त्व बताया। हड़बूजी और बिग्गाजी गौ-रक्षक थे। पाबूजी गायों एवं ऊँटों के रक्षक थे।

4. लोकदेवता और लोक-आस्था–राजस्थान में ये लोकदेवता अपने चमत्कारी कार्यों से जनता के रक्षक रूप में माने जाते हैं। इसी कारण लोकजीवन में इन पर घनिष्ठ आस्था है। प्रत्येक लोकदेवता के जन्म-दिवस अथवा समाधि-स्थल पर निश्चित मास-तिथि-वार को मेले लगते हैं और बड़ी आस्था से इनका पूजन एवं यात्राओं-जुलूसों का आयोजन होता है। इनके 'पदों' और 'वाणियों' का गायन भी होता है तथा रात्रि-जागरण भी किया जाता है।

5. उपसंहार–राजस्थान के ग्रामीण जीवन में लोकदेवताओं पर विशेष आस्था दिखाई देती है। इसी से यहाँ प्रतिवर्ष अनेक मेले-उत्सव आदि के आयोजन पूरी श्रद्धा से किये जाते हैं।

52. राजस्थान के लोकगीत

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. राजस्थान के लोकगीतों का वर्गीकरण 3. प्रमुख लोकगीतों का परिचय 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–प्रत्येक देश एवं समाज में लोक-भावों की अभिव्यंजना के लिए अलग-अलग अवसर पर कई प्रकार के गीत प्रचलित रहते हैं। समयानुसार इन लोक गीतों को सुनकर श्रोता भाव-विभोर ही नहीं हो जाता है बल्कि आत्मिक सुख की भी अनुभूति करता है। ये लोकगीत सामाजिक जीवन में उल्लास और आनन्दानुभूति का प्रसार करते हैं।

2. राजस्थान के लोकगीतों का वर्गीकरण–राजस्थानी लोकगीतों में जीवन का विशद चित्रण दिखाई पड़ता है। उनका क्षेत्र व्यापक है, इसी कारण उनको कई वर्गों में रखा जाता है; जैसे—संस्कारों से सम्बन्धित लोकगीत, ऋतुओं से सम्बन्धित लोकगीत, त्योहारों से सम्बन्धित लोकगीत, विविध लोकगीत।

3. प्रमुख लोकगीतों का परिचय–राजस्थान में विवाह, नामकरण, कृषि, ऋतु, धार्मिक आस्था आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं। परिवार में शादी-विवाह, नामकरण, यज्ञोपवीत आदि संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। इन अवसरों पर अलग-अलग तरह के गीत गाये जाते हैं। महिलाएँ अनेक व्रत-उपवास रखती हैं और उन अवसरों से धार्मिक गीत गाती हैं। खाटू श्यामजी, कैलादेवीजी, पाबूजी, रामदेवजी, गोगाजी, तेजाजी, संतोषी माँ आदि से सम्बन्धित बहुत से गीत गाँवों में प्रचलित हैं। राजस्थान में निर्धारित समयानुसार अनेक त्योहार और पर्व मनाये जाते हैं। इन त्योहारों और पर्वों को धूम-धाम से मनाया जाता है और उनके अनुकूल ही मनोहारी लोकगीत गाए जाते हैं। राजस्थान में और भी अनेक प्रकार के गीत प्रचलित हैं। अमरसिंह राठौड़, गोरबन्द, रतन राणा, पाबूजी के पावड़े खूब गाये जाते हैं। लाखा, मूमल, घुड़लो, सियालो, प्रपीड़ा, नींदड़ली, घूमर, भैंरू आदि से सम्बन्धित बहुत प्रकार के गीत प्रदेश के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं।

4. उपसंहार—अपनी सांस्कृतिक विशेषता के समान ही राजस्थान लोकगीतों की दृष्टि से भी विशेष महत्त्वशाली है। यहाँ के लोकगीतों में हृदयगत भावों की स्वाभाविक एवं निश्छल अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इनमें हमारे सांस्कृतिक भाव तथा सामाजिक अनुभूतियाँ समाविष्ट हैं।

53. नखरालो राजस्थान

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. राजस्थान का रंगीला रूप 3. राजस्थान की सुरंगी संस्कृति 4. राजस्थान की नखराली छटा 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—राजस्थान प्राचीन काल से ही वीरता एवं शौर्य का क्षेत्र रहा है। यहाँ पर रंग-बिरंगी परम्पराओं, अनेक रीति-रिवाजों और आंचलिक विशेषताओं की अनोखी छटा है। इसी कारण इसे जीवन्त संस्कृति वाला और विविध परम्पराओं का रंगीला प्रदेश कहा जाता है।

2. राजस्थान का रंगीला रूप—प्राकृतिक दृष्टि से राजस्थान का पश्चिमोत्तर भाग रेतीली धरती के कारण सुनहरा दिखाई देता है, तो दक्षिण-पूर्वी भाग हरी-भरी छटा वाला है। यहाँ अरावली पर्वतमाला की सुरम्यता है तथा अनेक ऐतिहासिक दुर्ग-किले, गढ़-महल, स्मारक, मन्दिर एवं तीर्थस्थल हैं जो शौर्य, पराक्रम, भक्ति भावना, धार्मिक आस्था तथा रंग-बिरंगी लोक संस्कृति के प्रतीक हैं।

3. राजस्थान की सुरंगी संस्कृति—राजस्थान की संस्कृति अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। यहाँ अतिथि सत्कार की जहाँ विशिष्ट परम्परा है वहीं यहाँ धार्मिक व्रत-त्योहारों की अधिकता है। यहाँ तीज-त्योहार आदि धूम-धाम से मिलकर मनाये जाते हैं, वहीं अनेक स्थानों पर लोक देवताओं के मेले भरते हैं। यहाँ पर विभिन्न ऋतुओं में गींदड़ों, गैरों, रमतों, घूमरों, धमालों, ख्यालों, सांग-तमाशों आदि के खेल एवं कड़क नजारे देखने को मिलते हैं। इसी प्रकार घूमर, खड़ताली, फाग एवं कालबेलिया नृत्य देखने को मिलते हैं। इस कारण हर मौसम में राजस्थान प्रदेश के विविध अंचलों का पूरा वातावरण रंगीला बन जाता है।

4. राजस्थान की नखराली छटा—राजस्थान का धरातल ऊपर से शुष्क है, परन्तु इसके भूगर्भ में ताँबा, सीसा, अभ्रक, जस्ता आदि धातुओं के साथ चूना-सीमेन्ट एवं इमारती कीमती पत्थर बहुतायत से मिलता है। यहाँ पर अनेक सुन्दर स्मारक, विजय-तोरण, बावड़ियाँ, पोखर एवं छतरियाँ विद्यमान हैं। पुरा-सम्पदाओं एवं भवनों पर कलापूर्ण भित्ति चित्र, नक्काशी की वस्तुएँ, मीनाकारी, मूर्तिकला, मिट्टी व लाख के खिलौने आदि अनेक कलापूर्ण चीजें देखने को मिल जाती हैं। इन सब कारणों से राजस्थान की नखराली छटा सभी को आकर्षित कर लेती है।

5. उपसंहार—राजस्थान प्रदेश अपनी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परम्पराओं, लोक-आस्थाओं, शिल्प-मूर्ति, स्थापत्य-चित्रकलाओं तथा विविध रंगों की चटकीली वेश-भूषाओं आदि से जहाँ अतीव रंगीला दिखाई देता है, वहाँ यह जन-जीवन की जीवन्तता तथा आंचलिकता की छाप के कारण अत्यन्त नखराला लगता है।

संस्मरणात्मक निबन्ध

54. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना
अथवा
विद्यार्थी जीवन की अविस्मरणीय घटना
अथवा
आँखों देखी वह दुर्घटना
अथवा
जीवन की वह चिरस्मरणीय घटना

संकेत बिन्दु— 1. प्रस्तावना 2. पुष्कर यात्रा एवं घाट का दृश्य 3. घटित घटना एवं अविस्मरणीय दृश्य 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—हमारे जीवन-काल में अनेकानेक घटनाएँ घटित होती रहती हैं। इनमें कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं, जो हमारे मानस पटल पर अपना प्रभाव हमेशा बनाए रखती हैं। इसी प्रकार की आँखों देखी एक घटना का यहाँ वर्णन किया जा रहा है जिसको भुलाया नहीं जा सकता।

2. पुष्कर यात्रा एवं घाट का दृश्य—हम पुष्कर सरोवर के एक घाट पर पहुँचे। उसी घाट पर कुछ ग्रामीण परिवार भी स्नान कर रहे थे। मैंने देखा कि एक महिला ने पहले स्वयं स्नान किया, फिर वह लगभग आठ वर्ष के

अपने बालक को नहलाने लगी। बालक की कुचपलता तथा माता के हाथों की शिथिलता से बच्चा हाथ से छूट गया और गहरे पानी की ओर बहकर डूबने लगा। माँ अपने बच्चे को अपने पैरों के नीचे ही देख रही थी, परन्तु उसे बालक को पकड़ने में सफलता नहीं मिल रही थी। माता के करुण क्रन्दन ने मंगल में अमंगल कर दिया।

3. घटित घटना एवं अविस्मरणीय दृश्य–बालक के डूबने का समाचार वहाँ चारों ओर फैल गया। सारे दर्शनार्थी और सभी स्नानार्थी सरोवर के चारों ओर खड़े होकर पानी में नजर लगाये खड़े थे। कई गोताखोरों ने भी पानी में बच्चे की तलाश की। दमकल विभाग की मोटर भी आयी, लेकिन सारे प्रयत्न असफल रहे। बालक के माता-पिता बुरी तरह चीख-चिल्ला रहे थे। इतने में ही सरोवर के लगभग मध्य में कुछ काली-सी वस्तु दिखाई दी। तैराक उस वस्तु की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहे थे कि थोड़ी दूर पर बच्चे का हाथ दिखाई दिया और दूसरे क्षण देखा गया कि एक मगर बालक को मुँह में दबाये ऊपर आया और एकदम अन्दर चला गया। उस दृश्य को देखकर माता बेहोश हो गई। उस घटना को देखकर हम सभी अत्यधिक व्यथित हो गये औरा मुँह लटकाये वापस आ गये।

4. उपसंहार–मैंने जीवन में अनेक घटनाएँ देखीं, परन्तु ऐसी करुण घटना केवल एक ही बार देखी। बार-बार भुलाने का प्रयत्न करने पर भी वह दृश्य मेरी आँखों के सामने आ जाता है और मैं शोक-विह्वल हो जाता हूँ।

55. गुरुजी जिन्हें मैं भुला नहीं सकता
अथवा
मेरे आदरणीय गुरुजी
अथवा
मेरे आदर्श शिक्षक

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. आदरणीय गुरुजी : व्यक्तित्व और स्वभाव 3. गुरुजी का अनुकरणीय जीवन 4. गुरुजी का छात्रों पर प्रभाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–प्राचीन काल से हमारे समाज में गुरु का महत्त्व सर्वोपरि रहा है। गुरु अपने शिष्यों के व्यक्तित्व का निर्माण कर उनके मन में ज्ञान का आलोक भरता है। इसीलिए कबीर ने गुरु को ईश्वर से बड़ा बताया है। वस्तुत: मानव-जीवन का निर्माता, हमारे समाज और राष्ट्र का निर्माता गुरु या शिक्षक ही होता है।

2. आदरणीय गुरुजी : व्यक्तित्व और स्वभाव–मेरे आदरणीय गुरुजी का व्यक्तित्व एवं स्वभाव अत्यन्त प्रभावशाली है। इन गुरुजी का नाम श्री ज्ञानप्रकाश शर्मा है। गुरुजी हमारे विद्यालय में हिन्दी के वरिष्ठ अध्यापक हैं। वे हमेशा खादी की धोती और सफेद कुर्ता पहनते हैं। वे सादा जीवन, उच्च विचार के पोषक हैं। हमारे गुरुजी जहाँ विनम्र, सत्यवादी, मृदुभाषी और कर्मठ हैं वहीं स्नेहिल व्यवहार के धनी हैं। बच्चों से क्या, वे अध्यापकों और कर्मचारियों से भी मृदुल व्यवहार करते हैं। हमारे गुरुजी में एक श्रेष्ठ एवं आदर्श अध्यापक की सभी विशेषताएँ मौजूद हैं।

3. गुरुजी का अनुकरणीय जीवन–मेरे गुरुजी की जीवनचर्या अनुकरणीय है। वे प्रतिदिन प्रात:काल उठकर और नित्यकर्म से निवृत्त होकर नियमित रूप से भ्रमण के लिए जाते हैं। फिर स्नानादि कर सन्ध्योपासना करते हैं और भोजन करके विद्यालय में आ जाते हैं। विद्यालय की प्रार्थना सभा का संचालन वे ही करते हैं। प्रार्थना के बाद पाँच मिनट के लिए वे प्रतिदिन नये-नये विषयों को लेकर शिक्षापूर्ण व्याख्यान देते हैं। तत्पश्चात् वे अपने कालांशों में नियमित रूप से अध्यापन कराते हैं। सायंकाल घर आकर वे स्वाध्याय करते हैं। रविवार के दिन वे अभिभावकों से सम्पर्क करने की कोशिश करते हैं तथा एक-आध घण्टा समाज-सेवा में लगाते हैं। इस तरह गुरुजी की दिनचर्या नियमित एवं निर्धारित है।

4. गुरुजी का छात्रों पर प्रभाव–छात्रों पर उनका काफी प्रभाव दिखाई देता है। छात्र उनसे आदरपूर्वक मिलते हैं, अपनी समस्याएँ उनके सामने रखते हैं और उनसे शंकाओं का समाधान पाकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। छात्रों के प्रति गुरुजी का व्यवहार आत्मीयता से पूर्ण रहता है। गरीब और असहाय छात्रों की वे भरपूर सहायता करते हैं। वे अतीव अनुशासनप्रिय और सदाचारी व्यक्ति हैं। उनके आदर्श चरित्र से हम सभी प्रभावित रहते हैं।

5. उपसंहार–"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाँय, बलिहारी गुरु आपणे गोविन्द दियो बताय"—कबीर की इस उक्ति के अनुसार वे हमारे आदरणीय गुरुजी मेरे लिए आदर्श शिक्षक हैं और हमें ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ सदाचरण के उपदेशक हैं।

56. विद्यालय का अन्तिम दिन

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. विद्यालय का अन्तिम दिन 3. विदाई की बेला 4. विद्यालय-परिवार के प्रति आभार 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–किसी कार्य की समाप्ति पर उसके कर्त्ता के लिए वह अन्तिम दिन होता है, जब वह लक्ष्य के अन्तिम छोर को पार कर लेता है। मेरे पिताजी आज से दस वर्ष पहले मुझे उँगली पकड़कर विद्यालय में ले गये थे और निरन्तर अध्ययन करते हुए दसवीं कक्षा तक की शिक्षा पूर्ण करके जब मैं अपने विद्यालय से विदा होने लगा, तो इस कारण वह मेरे लिए अपने विद्यालय का अन्तिम दिन था।

2. विद्यालय का अन्तिम दिन–हमारा विद्यालय माध्यमिक स्तर तक का होने के कारण दसवीं हमारी अन्तिम कक्षा थी। बोर्ड परीक्षा होने के कारण नियमानुसार परीक्षा तैयारी का अवकाश मिल गया था। नौवीं कक्षा के छात्रों ने हमारी कक्षा को विदाई देने के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया। निश्चित समय और तिथि पर हम सब विदाई समारोह में शामिल होने के लिए विद्यालय सभागार में नौवीं कक्षा के छात्रों और गुरुजनों के बीच उपस्थित हुए। विदाई समारोह में सर्वप्रथम सरस्वती वंदना की गई। गुरुजनों और प्रधानाध्यापकजी के द्वारा आशीर्वाद के साथ जीवन में सफलता प्राप्त करने की शुभकामनाएँ दी गईं। अनुजों ने भी हमारे प्रति सद्भावों की सहज अभिव्यक्ति की।

3. विदाई की बेला–तत्पश्चात् प्रधानाध्यापक महोदय ने हमें गुलाब के फूल दिये और नौवीं कक्षा के मॉनिटर ने हमें पुष्पमालाएँ पहनाईं। उस समय जिस प्रेम-भाव का परिचय हमारे सहपाठियों ने दिया, उससे हम सभी की आँखें नम हो गयी थीं। इसके बाद हमारी कक्षा के दो-तीन छात्रों ने नौवीं कक्षा के प्रति आभार प्रकट किया। उस समय का वातावरण इतना भावुकता से पूर्ण हो गया था कि आज तक मैं उसे भुला नहीं पा रहा हूँ।

4. विद्यालय-परिवार के प्रति आभार–इतने वर्षों एक साथ रहने से विद्यालय के प्रति अपनत्व-सा हो गया था तथा छोटी कक्षाओं के छात्रों से हम अनुजों के समान व्यवहार करते थे। इसलिए मैंने जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए उनसे क्षमा-याचना की और उनके अगाध-प्रेम के लिए आभार व्यक्त करते हुए विद्यालय-परिवार के प्रति शुभकामना व्यक्त की।

5. उपसंहार–इस तरह विद्यालय का अन्तिम दिन हमारे लिए हर्ष और विषाद से मिश्रित रहा। हमें विद्यालय से अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करके जहाँ भविष्य में उच्च कक्षाओं में अध्ययन करने की खुशी हो रही थी, वहीं अपने विद्यालय परिवार से बिछुड़ने का दु:ख भी हो रहा था।

57. परीक्षा का अन्तिम दिन

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. परीक्षा की तैयारी 3. परीक्षा आरम्भ 4. परीक्षा का अन्तिम दिन 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–परीक्षा अपने आप में ही एक ऐसा शब्द है, जो प्राय: सभी को भयभीत कर देता है। इसका नाम सुनते ही परिश्रमी और बुद्धिमान परीक्षार्थी भी एक बार आशंकित हुए बिना नहीं रहता है। उसके मन में बेचैनी बढ़ जाती है और परीक्षा का भूत सवार हो जाता है।

2. परीक्षा की तैयारी–'माध्यमिक परीक्षा' के आते ही मैं भी अपने अन्य सहपाठियों की तरह परीक्षा की तैयारी में जुट गया था। परीक्षा का समय नजदीक आने पर मन में अजीब-सा भय होने लगा था, लेकिन मुझे अपनी मेहनत पर विश्वास भी हो रहा था। इसलिए मैंने घर पर नियमित अध्ययन के लिए समय-विभाग चक्र बनाया और परीक्षा की तैयारी में दत्तचित्त हो गया।

3. परीक्षा प्रारम्भ–नियत तिथि को परीक्षा प्रारम्भ हुई। पहले दिन हिन्दी का प्रश्न-पत्र था। परीक्षा के पहले दिन मन में काफी घबराहट हो रही थी, परन्तु जब प्रश्न-पत्र हाथ में आया तो मेरी घबराहट जाती रही, क्योंकि मैंने जैसी तैयारी की थी, प्रश्न-पत्र उसी के अनुरूप आया था। इससे मेरा उत्साह बढ़ने लगा और मैं परीक्षा केन्द्र से लौटकर अगले पेपर की तैयारी में लग गया। इसी तरह मेहनत करते हुए मेरे अन्य पेपर अच्छे होते रहे और मुझे अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होने का पूरा विश्वास होने लगा।

4. परीक्षा का अन्तिम दिन–अब मेरा एक ही प्रश्न-पत्र देना शेष रह गया था। इसकी तैयारी के लिए अवकाश पड़ जाने के कारण दो दिन का समय मिल गया था। मैं दो दिन-रात जागकर उसकी तैयारी में जुट गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पेपर से एक दिन पूर्व मुझे हल्का ज्वर आ गया। डॉक्टर से दवाई ली और ज्वर उतर गया। नियत समय पर परीक्षा देने गया। उस दिन का पेपर कुछ कठिन था, लेकिन मुझे पूरा याद होने के कारण सरल लगा और मैंने उसे समय पर ही हल करके अपनी कापी वीक्षक महोदय को सँभलाई और प्रसन्नतापूर्वक परीक्षा कक्ष से बाहर आ गया।

5. उपसंहार–बाहर पिताजी मुझे लेने आये थे। मैं उनके साथ घर लौट आया। मेरी परीक्षा का अन्तिम दिन मेरे लिए चुनौती जैसा रहा। स्वास्थ्य ठीक न रहने पर भी मैंने जिस तरह से परीक्षा की तैयारी की, उसे देखकर सभी परिजनों ने मेरी पीठ थपथपाई, माँजी ने तो मुझे असीम स्नेह दिया और मेरा पूरा ध्यान रखा। इन सब बातों का विचार कर मुझे परीक्षा का अन्तिम दिन अत्यन्त प्रेरणादायी लगा।

58. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा
अथवा
किसी रोचक यात्रा का वर्णन

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. यात्रा का कार्यक्रम तथा तैयारी 3. यात्रा के लिए प्रस्थान 4. यात्रा के अनुभव 5. यात्रा की रोचकता 6. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–राजस्थान एक सुरम्य प्रदेश है। यहाँ के ऐतिहासिक स्थल देशी-विदेशी सभी लोगों को आकर्षित करते हैं।

2. यात्रा का कार्यक्रम तथा तैयारी–मैं भरतपुर में एक सरकारी स्कूल में विद्याध्ययन करता हूँ। अध्ययन के दौरान एक दिन प्रसंग चल पड़ा कि नौवीं कक्षा के छात्रों को राजस्थान के ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करवायी जाये। इच्छानुकूल समाचार सुनकर मन अत्यधिक खिल गया। प्रधानाध्यापकजी ने सभी छात्रों के लिए बस का प्रबन्ध कर दिया। निश्चित समय व तिथि पर हम आवश्यक सामान लेकर बस में सवार हुए और यात्रा पर चल दिये।

3. यात्रा के लिए प्रस्थान–हमारी बस भरतपुर से रवाना हुई। सर्वप्रथम हमने जयपुर आने का कार्यक्रम बनाया। मार्ग में आपस में हँसी-मजाक करते-कराते हम जयपुर आ जाये। जयपुर में आकर हमने नाहरगढ़, आमेर के महल, जन्तर-मन्तर, हवा महल आदि कई दर्शनीय स्थल देखे और खा-पीकर बस द्वारा रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) के लिए रवाना हो गए।

4. यात्रा के अनुभव–सवाईमाधोपुर से आगे रणथम्भौर का मार्ग पहाड़ी है। पहाड़ को काटकर सड़क बनायी गयी है। हमारी बस अभी उसी सड़क पर जा रही थी कि आगे एक तंग मोड़ पर बस एकाएक रुक गयी। ड्राइवर द्वारा कोशिश किए जाने पर भी बस टस से मस नहीं हुई। बस में बैठे हम सभी चिन्तित हो उठे। मन में बुरी कल्पनाएँ आने लगीं।

5. यात्रा की रोचकता–काफी समय से कोशिश कर रहे ड्राइवर को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था, तभी उसे दूर से पैदल आता हुआ एक व्यक्ति दिखाई दिया। पास आने पर ड्राइवर ने उससे आवाज देकर कहा, "भाई जरा झुककर देखना पहियों के नीचे कुछ दिखाई दे रहा है!" उस व्यक्ति ने देखकर बताया कि दो पहियों के मध्य में एक बेडौल पत्थर आड़ा फँसा हुआ है। इसी कारण पहिया जकड़ गया और हिल न सका। उस व्यक्ति ने काफी कोशिश करके पहिये में फँसा हुआ वह पत्थर निकाला। ड्राइवर ने पुन: बस रवाना की। अब की बार झटके के साथ बस आगे बढ़ी और धीरे-धीरे गति लेती हुई किले के नीचे तक पहुँच गयी।

6. उपसंहार–इस प्रकार हम रणथम्भौर पहुँचे, किला देखा। वहाँ से चित्तौड़ गये। फिर चित्तौड़ से वापस हम भरतपुर के लिए रवाना हो गये। ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा तो महत्त्वपूर्ण रही, परन्तु यात्रा के मध्य मोटर खराब होने की घटना वास्तव में अविस्मरणीय थी। अन्तत: हम सब इस रोचक यात्रा से सकुशल अपने घरों को लौटने पर ईश्वर को धन्यवाद देने लगे।

59. भीषण वर्षा की वह रात
अथवा
जब मेरे गाँव में भीषण वर्षा हुई

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. मेरे गाँव की स्थिति 3. वर्षा की जोरदार झड़ी 4. भीषण वर्षा से विनाश लीला 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–राजस्थान में तो वर्षा ऋतु अच्छी लगती है। इस सूखे-रेतीले प्रदेश में अलसाई-मुरझाई हुई प्रकृति को वर्षा ऋतु ही उल्लसित एवं हरी-भरी करती है। यहाँ के निवासी वर्षा के लिए तरसते रहते हैं और बाढ़ के प्रकोप से अपरिचित रहते हैं।

2. मेरे गाँव की स्थिति–हमारा गाँव बनास नदी से कुछ दूर बसा हुआ है। हमारे गाँव की भूमि काफी उपजाऊ है। नदी में कई बार बाढ़ आ जाने से हानि हो जाती है, लेकिन बाढ़ के समाप्त होते ही गाँव में पुन: अमन-चैन छा जाता है।

3. वर्षा की जोरदार झड़ी–दो साल पहले की बात है। जुलाई माह के अन्तिम रविवार के दिन गाँव के सभी लोग अपने-अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर सोने की तैयारी कर रहे थे। उसी समय कुछ देर हल्की बूँदाबाँदी हुई और देखते ही देखते तेज बारिश होने लगी। रात के अँधेरे में वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। वर्षा की झड़ी लगी हुई थी। इस कारण मन में बाढ़ आने की आशंका जागने लगी थी।

4. भीषण वर्षा से विनाश-लीला–लगभग रात्रि के साढ़े ग्यारह बजे बनास का पानी गाँव की ओर बढ़ता प्रतीत हुआ। इससे सारे गाँव में शोरगुल मच गया। बाढ़ आने की आशंका से लोग पक्के घरों की छत पर बाल-बच्चों सहित

पहुँचने लगे। परन्तु कुछ लोग इस कार्य में सफल नहीं रहे। वे बाढ़ की चपेट में आ ही गए और कुछ लोग वृक्षों पर चढ़ गये। अँधेरी रात में वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। बाढ़ से गाँव घिरा हुआ था। सारी रात बादलों की गर्जना होती रही। सुबह पाँच बजे वर्षा बन्द हुई। धीरे-धीरे उजाला फैला। बाढ़ के प्रकोप से बचे हुए लोगों के मन में अपने घर-द्वार की दुर्दशा देखने की बेचैनी थी। आठ बजे तक नदी का पानी एकदम उतर गया था। गाँव के कई लोगों का सामान बाढ़ के पानी के साथ बह गया था। कई लोगों के घर उजड़ गये थे। मवेशी बह गए थे। वे उस दुर्दशा को देखकर बिलख रहे थे। लेकिन भगवान् की इस विनाश लीला के सामने वे असहाय थे। सारे गाँव में मातम छाया हुआ था।

5. उपसंहार—लगभग दस बजे आसपास के गाँवों से कई लोगों ने आकर सहायता कार्य प्रारम्भ कर दिया था। इसके बाद पंचायत समिति और सरकार की तरफ से राहत-कार्य प्रारम्भ हो गया था। भीषण वर्षा की वह रात आज भी जब याद आती है, तो सारा शरीर अज्ञात भय से काँपने लगता है।

60. चुनाव का एक दृश्य
अथवा
चुनाव की हलचल

संकेत बिन्दु—1. चुनाव का आशय 2. लोकतन्त्र में चुनाव का महत्त्व 3. चुनाव के दिनों में दिखाई देने वाला दृश्य 4. प्रमुख राजनीतिक दल एवं मतदान दिवस 5. उपसंहार।

1. चुनाव का आशय—हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा प्रजातान्त्रिक देश है। प्रजातन्त्र शासन प्रणाली में चुनाव से आशय लोगों द्वारा चुनाव में खड़े हुए प्रत्याशियों में से अपनी पसन्द के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करना है।

2. लोकतन्त्र में चुनाव का महत्त्व—अब्राहम लिंकन के अनुसार, "लोकतन्त्र जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन है।" लोकतन्त्र का अर्थ है—जनता का शासन। लोकतन्त्र में जनता अपने मताधिकार द्वारा अपने क्षेत्र के उम्मीदवारों में से एक का चयन जनप्रतिनिधि के रूप में करती है। निर्वाचित जनप्रतिनिधि ही दलगत बहुमत के आधार पर राज्य व केन्द्र में अपनी सरकार बनाकर शासन का संचालन करते हैं। अत: लोकतन्त्र में चुनाव का बहुत महत्त्व है।

3. चुनाव के दिनों में दिखाई देने वाला दृश्य—चुनाव के दिनों में चारों ओर अलग ही माहौल दिखाई देता है। जगह-जगह उम्मीदवारों के समर्थन में पोस्टर-बैनर लगे दिखाई देते हैं। राजनैतिक दलों के बड़े-बड़े नेता अपनी बड़ी-बड़ी जनसभाएँ सम्बोधित करते हैं। विभिन्न प्रचार साधनों एवं सामग्रियों में उन्हीं की पार्टी को वोट देने की बात कही जाती है। विभिन्न दलों के पार्टी कार्यकर्त्ता घर-घर जाकर जन-सम्पर्क करते हैं और अपने-अपने पक्ष में मतदान करने की अपील करते हैं। चौपालों, हाट-बाजारों, बस-अड्डों और पनघटों पर भी चुनाव की ही चर्चा होती दिखाई देती है।

4. प्रमुख राजनीतिक दल एवं मतदान दिवस—चुनाव में अनेक राजनीतिक दल भाग लेते हैं। कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी, शिवसेना, अकाली दल, तृणमूल कांग्रेस, जदयू आदि राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं। मतदान करने के लिए अनेक मतदान केन्द्र बनाये जाते हैं। मतदान-दिवस पर सुबह सात बजे से ही मतदान प्रारम्भ हो जाता है। मतदान केन्द्र पर पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग बूथ होते हैं। मतदान शुरू होते ही मतदाताओं की अलग-अलग कतार लग जाती है। एक अधिकारी मतदाताओं की बायें हाथ की उँगली पर न मिटने वाली स्याही का एक चिह्न लगाता है। सभी मतदाता अपना अमूल्य वोट प्रदान करते हैं। अन्त में विभिन्न उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला वोटिंग मशीन में बन्द हो जाता है।

5. उपसंहार—चुनाव का दृश्य लोकतन्त्र का प्रमुख पर्व जैसा है, क्योंकि चुनाव से ही जन-प्रतिनिधियों का चयन होता है और लोकप्रिय सरकार गठित हो पाती है। हमें अपने मताधिकार का उपयोग अवश्य करना चाहिए।

विविध विषयात्मक निबन्ध

61. मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस

संकेत बिन्दु—1. प्रस्तावना 2. रामचरितमानस का प्रतिपाद्य 3. रामचरितमानस का महत्त्व 4. रामचरितमानस का प्रभाव 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—मेरी प्रिय पुस्तकों में गोस्वामी तुलसीदास की अमर-कृति 'रामचरितमानस' सबसे अधिक प्रिय पुस्तक है। यह धार्मिक ग्रन्थ के रूप में सभी हिन्दू परिवारों में श्रद्धा के साथ रखी रहती है। यह हमारे समाज तथा राष्ट्र की आत्मा को आलोकित करने वाला अनुपम ग्रन्थ है।

2. रामचरितमानस का प्रतिपाद्य—'रामचरितमानस' हिन्दी की ही नहीं विश्व साहित्य की श्रेष्ठतम रचना मानी जा सकती है। इसमें भगवान राम की पावन जीवन गाथा वर्णित है। किस प्रकार उन्होंने बाल्यकाल में ही अपने अपूर्व पराक्रम से ताड़का, सुबाहु आदि राक्षसों का वध करके तपोवन के ऋषियों का रक्षण किया। मिथिला की स्वयंवर-सभा में शिव-धनुष तोड़कर सीता को अपनी अर्द्धांगिनी बनाया। पिता की आज्ञा का पालन करते हुए चौदह वर्ष के लिए वनवास स्वीकार किया। वन में जाकर वहाँ की कोल-किरात आदि वन्य जातियों से मित्रता निभायी, वानर और भालुओं की सेना लेकर रावण जैसे दुष्ट और अत्याचारी राक्षस का विनाश किया। लंका का राज्य विभीषण के हाथों में सौंप दिया। फिर अयोध्या लौटकर उन्होंने राज-काज सँभालते हुए राम-राज्य का आदर्श प्रस्तुत किया।

3. रामचरितमानस का महत्त्व—'रामचरितमानस' का महत्त्व अपने आप में ही सिद्ध है। सचमुच साहित्यिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से इस ग्रन्थ का अनुपम महत्त्व है। साहित्य के क्षेत्र में यह ग्रन्थ हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें मानव जीवन की अनेकानेक परिस्थितियों, मानव मूल्यों एवं विविध आदर्शों के साथ सांस्कृतिक मर्यादाओं का समग्र चित्रण हुआ है।

4. रामचरितमानस का प्रभाव—यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। हमारे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक जीवन की मूल्यवान् सम्पदा है। इस ग्रन्थ में तुलसी ने श्रीराम का दैदीप्यमान् चरित्र जन-जन के समक्ष रखकर लोकधर्म का महामन्त्र दिया है। साथ ही उन्होंने व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, पति-पत्नी, स्वामी-सेवक सभी के अधिकार और कर्त्तव्य, मर्यादाओं तथा जीवन के आदर्शों का प्रतिपादन किया तथा आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श पत्नी, आदर्श भाई, आदर्श सेवक, आदर्श राजा, आदर्श प्रजा सभी के उज्ज्वल चित्र देकर जन-जीवन को उदात्त बनाने की स्फूर्तिदायक प्रेरणा दी है।

5. उपसंहार—'रामचरितमानस' की ऐसी गौरव गरिमा है, जिसकी अमरवाणी निरन्तर चार सौ से भी अधिक वर्षों से जन-मानस को पुष्ट करती हुई भारत-भूमि में गूँज रही है। हमारा कर्त्तव्य है कि इस पावन ग्रन्थ का हम नित्य अध्ययन करें। उसके आदर्शों पर अग्रसर होकर अपने जीवन को ऊँचा उठायें। अपने देश, जाति और समाज के कल्याण में हाथ बँटायें तथा अपना जीवन आदर्श बनायें।

62. इक्कीसवीं सदी का भारत
अथवा
मेरे सपनों का भारत

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. नव-स्वतन्त्र भारत के प्रति मेरी भावना 3. इक्कीसवीं सदी का भारत 4. प्रगतिशील भारत की कामना 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–मानव विचारशील प्राणी है। वह एकान्त में हो या सामाजिक जीवन में हो, कुछ-न-कुछ सोचता-विचारता रहता है। उसके विचार कभी अपने तक ही सीमित रहते हैं तथा कभी समाज व राष्ट्र तक फैल जाते हैं। मैं भी कभी अन्य विषयों पर न सोचकर यही सोचा करता हूँ कि यदि मेरे सपनों का भारत बन जाए तो कितना अच्छा रहे !

2. नव-स्वतन्त्र भारत के प्रति मेरी भावना–अपने विकासशील देश भारत को लेकर मेरे मन में अनेक विचार उठते रहते हैं, मैं भी कभी-कभी अपनी कल्पनाओं के पंख फैलाने लगता हूँ। इस कारण मैं सोचता हूँ कि यदि इक्कीसवीं सदी में मेरे सपनों का भारत हो जाए, तो कितना सुखद भविष्य हो जाए!

3. इक्कीसवीं सदी का भारत–इक्कीसवीं सदी का शुभारम्भ हो गया है। इक्कीसवीं सदी में मेरे सपनों का भारत कैसा होगा, उसमें किन बातों की वृद्धि होगी, उन्हें यहाँ इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है। मेरे सपनों के भारत में चारों ओर खुशहाली, समता, भाईचारा और सदाचार का बोलबाला होगा। हमारी आकांक्षा है कि ऐसा भारत हो जिसमें गरीबी और शोषण उत्पीड़न का नामोनिशान न हो। सभी को काम मिले। सब अपने पैरों पर खड़े होकर स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करने में सक्षम हों। सब एक-दूसरे के सुख-दु:ख में सहभागी बनें। भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी और अपराध समूल नष्ट हों। मेरे सपनों के भारत में सभी तरह के रोगों से जनता को मुक्ति मिले, अकाल-अतिवृष्टि या प्राकृतिक प्रकोप नहीं होवें, सभी का जीवन उन्नत-खुशहाल हो, यही मेरी कामना है।

4. प्रगतिशील भारत की कामना–आज का युग विज्ञान का युग है। दुनिया के अन्य राष्ट्रों में विज्ञान के नये आविष्कार हो रहे हैं, शुक्र और मंगल ग्रह की यात्रा पर जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। मैं कामना करता हूँ कि हमारे भारत में भी विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हो। आने वाले काल में भारत में अनेक उद्योग स्थापित किये जाएँ और उनमें उत्पादन का प्रतिशत बढ़े, निर्यात-व्यापार बढ़े और राष्ट्रीय जीवन में आय-वृद्धि होने से जीवन-स्तर उन्नत हो जाए। इसके साथ ही सभी क्षेत्रों में पर्याप्त उन्नति हो और देश का गौरव बढ़े।

5. उपसंहार—मैं अपने देश भारत को समुन्नत एवं वैभवशाली देखना चाहता हूँ, परन्तु केवल मेरे सोचने से तो यह हो ही नहीं सकता। इसलिए सारे भारतीय भी इसी प्रकार सोचने लगें और सभी एकजुट होकर राष्ट्रोन्नति के कार्य में परिश्रम करें, तो वह सुदिन अवश्य आ सकता है।

63. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. देश का प्रधानमंत्री बनना 3. प्रधानमन्त्री बनने पर मेरे कर्त्तव्य 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—प्रत्येक व्यक्ति मन में अपने सुनहरे भविष्य की कल्पना करता है। मैं भी यदि चुनाव में जीत कर लोकसभा का सदस्य बन जाता और सभी प्रतिनिधि मुझे देश का प्रधानमन्त्री चुन लेते, तो कितना अच्छा होता ! मैं प्रायः इसी प्रकार की कल्पनाएँ करता रहता हूँ।

2. देश का प्रधानमंत्री बनना—यदि मैं देश का प्रधानमंत्री होता तो यह मेरे लिए सौभाग्य का विषय होता। सबसे पहले मैं योग्य व्यक्तियों को अपने मन्त्रिमण्डल में उचित पद देकर देश का शासन सही ढंग पर चलाने की चेष्टा करता और देश और जनता की समस्याओं को निष्पक्षता के साथ समाधान करने का प्रयास करता।

3. प्रधानमंत्री बनने पर मेरे कर्त्तव्य—प्रधानमन्त्री बनने पर मैं देश की विदेश नीति को प्रभावशाली बनाता। रक्षा पर अधिक व्यय करता। देश को स्वावलम्बी बनाने के लिए आर्थिक उन्नति के लिए प्रयास करता। लघु-उद्योगों की स्थापना के लिए नीति बनाता। शिक्षा के स्तर में सुधार कर, रोजगारपरक और तकनीकी शिक्षा पर अधिक जोर देता, कृषि-उत्पादन पर अधिक जोर देता। कृषि कार्यों हेतु सिंचाई और पेयजल की उचित व्यवस्था करता। महँगाई और भ्रष्टाचार को समाप्त करने का भरसक प्रयत्न करता। साम्प्रदायिकता और जातिवाद को समाप्त करने का पूरा-पूरा प्रयास करता। श्रमिकों, कृषकों एवं गरीबी से ग्रस्त लोगों के उत्थान के कार्य करता; उनके स्वास्थ्य, स्वच्छता व आवास आदि पर विशेष ध्यान देता।

इस प्रकार मैं अनेक उपायों एवं विकासोन्मुख विविध योजनाओं को प्रारम्भ कर देश के शासन-तन्त्र को सुव्यवस्थित एवं गतिशील बनाता। मैं अपने देश की भौतिक प्रगति के साथ खगोलीय और नाभिकीय प्रगति पर भी विशेष ध्यान देता तथा ऐसे आविष्कारों को प्रधानता देता जिनसे देश का चहुँमुखी विकास हो सके। मैं आणविक आयुधों तथा विशाल बिजलीघरों का निर्माण करवाता, परन्तु पर्यावरण में सन्तुलन बनाये रखने की चेष्टा करता।

4. उपसंहार—इस प्रकार यदि मैं प्रधानमन्त्री होता तो स्वतंत्र भारत के अभ्युदय में अपना तन, मन और जीवन समर्पित करता। परन्तु मेरे सपने और प्रधानमन्त्री बनने की कल्पनाएँ कब पूरी होंगी, यह कहा नहीं जा सकता।

64. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण के उपाय

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. पर्यावरण संरक्षण की समस्या 3. पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व 4. पर्यावरण संरक्षण के उपाय 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—'पर्यावरण' शब्द परि + आवरण के संयोग से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है—चारों ओर का वातावरण, जिसमें हम श्वाँस लेते हैं। इसके अन्तर्गत वायु, जल, भूमि और उस पर रहने वाले आदि से युक्त पूरा प्राकृतिक वातावरण आ जाता है। जब पर्यावरण का निर्माण करने वाले भूमि, जल, वायु आदि तत्त्वों में कुछ विकृति आ जाती है या इनका आपसी सन्तुलन गड़बड़ा जाता है तब पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है।

2. पर्यावरण संरक्षण की समस्या—विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति तथा नित नये आविष्कारों के कारण प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ गया है। दूसरी ओर जनसंख्या वृद्धि के कारण शहरीकरण, औद्योगीकरण के कारण पेड़ों को काटा जा रहा है। खदानों, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। कारखानों से निकलने वाले गैसीय पदार्थों, अवशिष्ट पदार्थों, विभिन्न यन्त्रों की कर्ण-कटु ध्वनियों एवं अनियन्त्रित भू जल उपयोग आदि के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। ऐसे में पर्यावरण का संरक्षण करना और इसमें सन्तुलन बनाये रखना कठिन कार्य हो गया है।

3. पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व—पर्यावरण संरक्षण अपने आप में अति महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास कॉन्फ्रेंस' द्वारा सन् 1992 में तथा 2002 में 'पृथ्वी सम्मेलन' आयोजित किया गया और पर्यावरण संरक्षण हेतु कई उपाय सुझाये गये।

4. पर्यावरण संरक्षण के उपाय—पर्यावरण संरक्षण के लिए इसे प्रदूषित करने वाले कारणों पर नियन्त्रण रखना आवश्यक है। इस दृष्टि से युवा-वर्ग, विशेष रूप से विद्यार्थी अपने गाँव या कस्बे के आसपास वृक्षारोपण करें, पर्यावरण शुद्धता के लिए जन-जागरण के काम करें। विषैले अपशिष्ट छोड़ने वाले उद्योगों का और प्लास्टिक कचरे का विरोध

करें। वे कुओं, तालाबों एवं अन्य जल-स्रोतों की शुद्धता का अभियान चलावें। पर्यावरण संरक्षण के लिए हरीतिमा का विस्तार, नदियों आदि की स्वच्छता, गैसीय पदार्थों का उचित विसर्जन, रेडियोधर्मिता बढ़ाने वाले संसाधनों पर रोक, गन्दे जल-मल का परिशोधन, खुले में शौच का विरोध, कारखानों के अपशिष्टों का उचित निस्तारण, जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण और जन-जागरण आदि अनेक उपाय किये जा सकते हैं। ऐसे कारगर उपायों से ही पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखा जा सकता है।

5. उपसंहार—पर्यावरण संरक्षण किसी एक व्यक्ति या एक देश का काम न होकर समस्त विश्व के लोगों का कर्त्तव्य है। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले सभी कारणों को अतिशीघ्र रोका जावे तथा वृक्षारोपण व जलवायु स्वच्छीकरण पर पूरा ध्यान रखा जावे, तभी पर्यावरण सुरक्षित रह सकता है।

65. मनोरंजन के आधुनिक साधन

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. मनोरंजन का जीवन में महत्त्व 3. मनोरंजन के साधनों का विकास 4. मनोरंजन के आधुनिक साधन 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना—मनोरंजन का अर्थ है, मन का रंजन अर्थात् मन को प्रसन्न रखना। जब व्यक्ति किसी काम से ऊब जाता है; तब उसे मनोरंजन की आवश्यकता पड़ती है। मनोरंजन के बाद वह थका-हारा व्यक्ति नवीन उत्साह का अनुभव करता है और फिर से अपने काम में दुगुने उत्साह से जुट जाता है।

2. मनोरंजन का जीवन में महत्त्व—आज के वैज्ञानिक युग में यंत्रवत् जीवन जीने के कारण मानव का जीवन नीरस और संघर्षमय बनता जा रहा है। इसलिए आज मानव-जीवन के लिए मनोरंजन का विशेष महत्त्व है। जिस प्रकार शरीर को पुष्ट बनाने के लिए उत्तम भोजन व स्वच्छ जल की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन के लिए मनोरंजन परम विश्रान्तिदायक माना जाता है।

3. मनोरंजन के साधनों का विकास—प्राचीन काल में मानव का जीवन बहुत सहज और सरल था, तब भी मनोरंजन की आवश्यकता अनुभव की जाती थी। उस समय लोगों के पास समय की कमी नहीं थी, इसलिए उस समय नाटक, मेले-तमाशे एवं महोत्सव ऐसे होते थे, जिनसे कई दिनों और रातों तक जनता का मनोरंजन हो जाता था। परन्तु वर्तमान में सभ्यता के विकास और मानव-रुचि के परिवर्तन के साथ मनोरंजन के साधन भी बदल गये हैं। इस कारण अनेक प्रकार के मनोरंजन के साधनों का विकास निरन्तर हो रहा है।

4. मनोरंजन के आधुनिक साधन—वर्तमान समय में मनोरंजन के साधनों के रूप में रेडियो, टेलीविजन, फोटोग्राफी, वीडियो गेम्स, टेपरिकार्डर, सिनेमा एवं खेलों का अत्यधिक महत्त्व है। इनमें आज टेलीविजन सबसे सस्ता मनोरंजन का साधन है। घर-घर में टेलीविजन होने से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम, खेल, कुश्ती आदि घर बैठे देखे जा सकते हैं। साथ ही कवि-सम्मेलन, मुशायरा आदि का भी आनन्द लिया जा सकता है। इसके अलावा मेले, भ्रमण, देशाटन आदि से भी मनोरंजन सरलता से करके ज्ञानवर्द्धन किया जा सकता है।

5. उपसंहार—जीवन में अन्य कार्यों की भाँति मनोरंजन का उपयोग भी उचित मात्रा में होना चाहिए। मनोरंजन सदैव स्वस्थ-प्रकृति का होना चाहिए। आधुनिक समय में मनोरंजन के साधनों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इससे आज के अतिव्यस्त मानव को भी आनन्द मिल सकेगा और उसके जीवन की नीरसता और यान्त्रिकता समाप्त हो जाएगी।

संवाद-लेखन

संवाद का स्वरूप–'वाद' मूल शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाने से 'सम्वाद' शब्द बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बातचीत' है। नाटक, उपन्यास, कहानी, फिल्म या टेलीविजन धारावाहिक नाटकों एवं दृश्यों में पात्रों के द्वारा जो वार्तालाप किया जाता है, उसे संवाद या कथोपकथन कहते हैं।

वर्तमान में टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिक, टेली फिल्म, साक्षात्कार तथा रेडियो नाटक आदि में सटीक संवादों के माध्यम से कथानक का सुन्दर विकास दिखाया जाता है। इस कारण दृश्य-श्रव्य प्रसारण माध्यमों में संवाद-लेखन का विशेष महत्त्व है।

संवाद-लेखन की विशेषताएँ–टेलीविजन हो या फिल्म या नाटक, उपन्यास, कहानी आदि हों, इनमें संवाद को कथानक का विकास तथा पात्रों के चरित्र का उद्‌घाटन करने वाला माना जाता है। संवाद-लेखन की जो विशेषताएँ मान्य हैं, वे इस प्रकार हैं–

1. संवाद नाटकीय प्रयोजन को सिद्ध करते हैं।
2. संवाद पात्रों के आन्तरिक चरित्र का उद्‌घाटन करते हैं।
3. संवाद पात्रों के कार्य-कलाप एवं क्रिया-प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हैं।
4. संवाद पात्र और घटना के द्वन्द्व को उभारते हैं।
5. संवाद वर्णित परिवेश से सामंजस्य स्थापित करते हैं।
6. संवाद वर्णित दृश्यों के साथ पात्रों के स्वगत भावों को सूचित करते हैं।

संवाद-लेखन की विधियाँ–संवाद-लेखन की इन विधियों पर ध्यान रखना चाहिए—1. संवाद लेखन में पात्रों की बातचीत स्वाभाविक ढंग से दिखानी चाहिए। 2. संवाद-लेखन सरल तथा संक्षिप्त होना चाहिए। 3. संवाद-लेखन रोचक, नाटकीय, हास्य-विनोद और व्यंग्य से मिश्रित होना चाहिए। 4. संवाद-लेखन दृश्यगत तथा प्रभावात्मक होना चाहिए। 5. संवाद-लेखन में दृश्य की परिकल्पना, दृश्य का समय व दिन, दृश्य के पात्र तथा घटनाओं के आधार पर लिखे जाने चाहिए। 6. नाटकों एवं फिल्मों के संवाद उनके दृश्यों के अनुसार अर्थ एवं सन्देश को व्यक्त करने वाले होने चाहिए। 7. संवाद की भाषा सरल तथा सम्प्रेष्य होनी चाहिए।

इस प्रकार संवाद-लेखन में अनेक बातों का ध्यान रखना पड़ता है। संवाद-लेखन एक कला भी है तो एक तकनीक या शिल्प-शैली भी है। इसमें परिवेश एवं पात्रों का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। उदाहरण के लिए मुंशी प्रेमचन्द की 'पूस की रात' कहानी का यह संवाद द्रष्टव्य है—

हल्कू – सहना आया है।
मुन्नी – आया है तो आने दो .... मैं क्या करूँ?
हल्कू – (घबराकर) वह अपना उधार माँगने आया है!
मुन्नी – (उदासीनता से) पैसे हैं कहाँ?
हल्कू – (विनती से) लाओ जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ .... किसी तरह गला तो छूटे।
मुन्नी – रुपये उसे दे दोगे तो कम्बल कहाँ से आयेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उसे कह दो फसल पर दे देंगे। अभी पैसा नहीं है।
हल्कू – (समझाते हुए) तुम तो सहना को अच्छी तरह जानती हो, ... वह न मानेगा .... गालियाँ अलग देगा .... हाथ-पैर तोड़ने की धमकियाँ देगा इत्यादि।

सोदाहरण संवाद-लेखन

(1)

आपने टेलीविजन पर समाचारों में सुना कि मुंबई में आतंकवादियों का हमला। कई लोग मारे गये और सैकड़ों घायल। इस घटित स्थिति पर दो मित्रों के बीच हुए संवाद को लिखिए।

अजय – मित्र विजय! कल तुमने मुंबई में हुए आतंकवादियों के हमले का समाचार सुना।
विजय – हाँ मित्र ! समाचार सुन कर बहुत ही दु:ख हुआ।
अजय – इन आतंकवादियों का हमारे देश में आने का प्रमुख कारण क्या है?
विजय – हत्याएँ करना, दहशत फैला कर शान्ति भंग करना।
अजय – इन आतंकवादियों को रोकने के लिए हमारी सरकार क्या करती है?
विजय – इनकी गतिविधियों को रोकने के लिए सरकार द्वारा बनाया गया विशेष कमांडो दल, पुलिस व सेना आतंकवादियों का मुकाबला करती है। उन्हें मार गिराती है।
अजय – इनका आतंक लगातार क्यों बढ़ रहा है?
विजय – इसका प्रमुख कारण आतंकवादियों को तत्काल सजा न मिलना और हमारे अन्दर देश-प्रेम की कमी आना है।
अजय – हाँ, आज देश-प्रेम की भावना की ही तो कमी है।
विजय – आज देश-प्रेम केवल स्वतंत्रता-दिवस और गणतन्त्र-दिवस पर ही हमारे नेताओं और जनता में छलकता हुआ दिखाई पड़ता है। वह भी दो-चार घण्टों के लिए।
अजय – धन्य हो मित्र ! क्या खरी बात कही।
विजय – अच्छा, अब मैं चलता हूँ। नमस्ते मित्र !

(2)

आपका मित्र इस वर्ष 'माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' की माध्यमिक परीक्षा में प्रथम आया है। उसे बधाई देते हुए एक संवाद की रचना कीजिए।

सौरभ – स्वागत है, आओ निखिल ! बहुत-बहुत बधाई हो!
निखिल – धन्यवाद !
सौरभ – इस बार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में अपनी परीक्षा में प्रथम आकर भाई तुमने कमाल कर दिया।
निखिल – धन्यवाद सौरभ भाई ! मुझे खुद को सचमुच में विश्वास नहीं हो रहा है।
सौरभ – अरे ! इसमें विश्वास की क्या बात है? तुमने अपने परिश्रम का फल प्राप्त किया है।
निखिल – तुम्हारा कहना ठीक है लेकिन यह फल मुझे बड़े-बुजुर्गों के आशीर्वाद से ही मिला है और तुम्हारे जैसे मित्र की शुभकामनाओं से।
सौरभ – हाँ मित्र, बड़ों के आशीर्वाद से और तुम्हारी मेहनत से तुम्हें अच्छा फल मिला है।
निखिल – मैं भविष्य में भी इस हेतु पूरी कोशिश करूँगा और तुम्हारा अच्छा मित्र कहलाऊँगा।
सौरभ – अच्छा ठीक है। मुझे तुझ पर गर्व है। अब बता, मिठाई कब खिलाएगा?
निखिल – जब तुम कहो। चाहे तो अभी चलो।
सौरभ – चल मित्र! मिठाई खाने के लिए मैं हमेशा तैयार रहता हूँ।

(3)

परीक्षा के एक दिन पूर्व दो मित्रों की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

अक्षर – नमस्ते विमल, कुछ परेशान से दिखते हो?
विमल – नमस्ते अक्षर, कल हमारी गणित की परीक्षा है।
अक्षर – मैंने तो पूरा पाठ्यक्रम दोहरा लिया है, और तुमने?
विमल – पाठ्यक्रम तो मैंने भी दोहरा लिया है, पर कई सवाल ऐसे हैं, जो मुझे नहीं आ रहे हैं।
अक्षर – ऐसा क्यों?
विमल – जब वे सवाल समझाए गए थे, तब बीमारी के कारण मैं स्कूल नहीं जा सका था।
अक्षर – कोई बात नहीं चलो, मैं तुम्हें समझा देता हूँ।
विमल – पर, मैं उस अध्याय के सूत्र रट नहीं पा रहा हूँ।
अक्षर – सूत्र रटने की चीज नहीं, समझने की बात है। एक बार यह तो समझो कि सूत्र बना कैसे। फिर सवाल कितना भी घुमा-फिराकर आए तुम जरूर हल कर लोगे।
विमल – तुमने तो मेरी समस्या ही सुलझा दी। चलो अब कुछ समझा भी दो।

(4)

विद्यालय प्रांगण में 'विद्यार्थी और अनुशासन' विषय पर भाषण हो रहा है। वक्ता अपने-अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। इस संबंध में हुए दो मित्रों के संवाद को लिखिए।

प्रखर – मित्र भास्कर! तुमने 'विद्यार्थी और अनुशासन' विषय पर आयोजित चर्चा सुनी।

भास्कर – हाँ, सुनी! तुम्हें सुनकर कैसा लगा?

प्रखर – बहुत अच्छा लगा। समझ में आया कि जीवन में अनुशासन का पालन बहुत जरूरी है, क्योंकि बिना अनुशासन के जीवन का निर्माण नहीं किया जा सकता।

भास्कर – बात तो तुम्हारी सत्य है। अनुशासन में रहकर ही मनुष्य अपने जीवन में आगे बढ़ता है।

प्रखर – वह आगे ही नहीं बढ़ता है, समाज और परिवार में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

भास्कर – लेकिन आज तो अनुशासन की बात रही ही नहीं है। जिधर देखो, उधर स्वच्छन्दता ही दिखाई पड़ती है।

प्रखर – तुम सही कह रहे हो। अध्यापक समय पर कक्षा में नहीं आते और कक्षाओं में विद्यार्थी पढ़ने के बजाय बाहर घूमने में रुचि लेते हैं। मौज-मस्ती कर अपना समय बरबाद करते हैं। उन्हें कहने वाला कोई नहीं है।

भास्कर – हाँ, यह तो सब होता हुआ दिखाई पड़ रहा है। अब क्या होगा?

प्रखर – अब तो तुलसीदास का ही कथन ठीक लगता है–

होइ है सोई जो राम रचि राखा।
को करि तरक बढ़ावहि साखा॥

(5)

सड़क दुर्घटना-प्रसंग पर दो मित्रों के बीच हुए संवाद को लिखिए।

राहुल – अरे मयंक ! यह माथे पर क्या हुआ जो तुमने पट्टी बाँध रखी है?

मयंक – कुछ न पूछो मित्र ! कल तो ईश्वर की कृपा से मरते-मरते बचा हूँ।

राहुल – क्या कोई सड़क दुर्घटना हो गयी थी?

मयंक – हाँ, कल रात को मेरी बाइक खड्ढे में जा गिरी।

राहुल – कैसे?

मयंक – घर के पास सड़क के किनारे बिजली विभाग के कर्मचारियों ने पोल गाड़ने के लिए खड्ढा खोद रखा था। उसी में बाइक सहित गिर पड़ा।

राहुल – क्या चोट बहुत लग गयी है?

मयंक – हाँ, चोट तो लगी ही है। माथे में आठ टाँके लगे हैं और जाँघ पर भी खरोंच आई है।

राहुल – जितना बचे, उतना अच्छा। ऐसे बिजली विभाग पर मुकदमा कर देना चाहिए। तभी इन कर्मचारियों की बुद्धि ठिकाने आयेगी।

मयंक – हाँ, हमने कंज्यूमर फोरम में लिखित शिकायत दायर कर दी है।

राहुल – यह तुमने बहुत अच्छा किया। मेरे योग्य कोई काम हो तो बताना।

मयंक – हाँ जरूर बताऊँगा। धन्यवाद!

(6)

वर्तमान में सब ओर बेरोजगारी व्याप्त है। इसी को लक्ष्य कर दो मित्रों के मध्य जो संवाद हुआ, उसे लिखिए।

नरेश – हलो परेश ! कैसे हो?

परेश – अच्छा हूँ! तुम कैसे हो?

नरेश – बिल्कुल ठीक ! (पास आकर) सुनाओ, अब क्या करने का इरादा है?

परेश – क्या बताऊँ? आज के बेरोजगारी के जमाने में जो हो जाए, वही अच्छा है।

नरेश – फिर भी।

परेश – सोचता हूँ आर.ए.एस. बन जाऊँ तो अच्छा है।

नरेश – भाई तुम्हारा इरादा तो नेक है। मेहनत करो। लक्ष्य जरूर प्राप्त हो जायेगा, क्योंकि जहाँ चाह है, वहीं राह है।

परेश – तुम क्या करने जा रहे हो?
नरेश – बी.टी.सी. की परीक्षा दी है, परिणाम आये तो कहीं आवेदन करूँगा।
परेश – बिना दौड़-भाग के कहाँ रखी है नौकरी?
नरेश – हाँ, वह तो है।
परेश – लगे रहो भाई, तुम तकदीर वाले हो!
नरेश – अच्छा ! अब हम चलते हैं? बॉय।

(7)

यात्री और बस संवाहक के बीच हुए संवाद को लिखिए।

यात्री – भाईजी! यह बस कितने बजे चलेगी?
संवाहक – छह बजे।
यात्री – अरे! छह तो बज गये हैं फिर यह देरी क्यों हो रही है?
संवाहक – आपकी घड़ी में छह बज गये हैं। अभी टाइम है।
यात्री – अभी कितनी देर लगेगी।
संवाहक – मेरी घड़ी में अभी पाँच मिनट शेष हैं। ठीक छह बजे बस रवाना हो जायेगी।
यात्री – आजकल बसों का चलने का कोई समय नहीं है। आप लोगों की जब इच्छा होती है, तब चलते हो।
संवाहक – आप बिना वजह हम पर आरोप लगा रहे हैं। हमारी बसों की निश्चित समय-सारिणी है। हमारी बस उसी के अनुसार चलती है।
यात्री – अच्छा, यह बताइए कि आपकी बस आगरा कब पहुँचेगी?
संवाहक – अपने निश्चित समय पर ही पहुँचेगी।
यात्री – धन्यवाद ! अब तो चलवाओ बस!
संवाहक – अपनी सीट पर बैठो। देखो! बस स्टार्ट हो रही है।

(8)

बैडमिंटन खेल पर दो लड़कियों के बीच बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

सीमा – सोनी कल का मैच देखा क्या?
सोनी – तू किस मैच की बात कर रही है, क्रिकेट की या बैडमिंटन की।
सीमा – मैं पी.वी. सिन्धु के करिश्माई मैच की बात कर रही हूँ, जिसमें उसने इतिहास रच दिया।
सोनी – ऐसा क्या किया सिन्धु ने?
सीमा – कल सिन्धु ने विश्व चैम्पियन जापानी खिलाड़ी नोजोमी ओकुहारा को हरा दिया।
सोनी – अरे यह तो वही खिलाड़ी है .... ।
सीमा – ठीक सोच रही हो, यह वही ओकुहारा है जिससे सिन्धु विश्व चैम्पियनशिप में हार गई थी।
सोनी – तो सिन्धु को कड़ी मेहनत करनी पड़ी होगी।
सीमा – हाँ।
सोनी – इसका मतलब कड़ी मेहनत, लगन और निरन्तर अभ्यास से हर मंजिल पाई जा सकती है।
सीमा – तुमने ठीक समझा, सोनी।

(9)

आँखों देखी बस दुर्घटना के सम्बन्ध में पिता और पुत्र के मध्य हुए संवाद को लिखिए।

पिताजी – मुदित! आज तो तुमने बहुत देर कर दी।
मुदित – पिताजी! आज हमारे विद्यालय के एक छात्र का बस दुर्घटना में निधन हो गया। हम उसके प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए उसके घर गये थे।
पिताजी – बस दुर्घटना कैसे हुई?
मुदित – विद्यालय के पास लालबत्ती पर बस रुकी थी। उसी समय वह छात्र बस से उतर रहा था। तभी पीछे से मिनी बस ने आकर उसके टक्कर मार दी।
पिताजी – उफ्! उसके घर में कौन-कौन है?

मुदित – पिताजी! एक माह पूर्व उसके पिताजी का कार दुर्घटना में निधन हो गया था। बस अब घर में माँ और एक छोटा भाई रह गया है।
पिताजी – विधाता का भी खेल निराला है बेटा!
मुदित – हाँ! पिताजी! भगवान् भी सज्जन आदमियों को ही दु:ख देता है!
पिताजी – ऐसा नहीं है बेटा! विधाता तो सबके साथ न्याय करता है। हम सबको अपने-अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

(10)

मोबाइल फोन से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। इस बारे में दो महिलाओं की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

रजनी – अरे सरिता! कैसी हो?
सरिता – मैं ठीक हूँ। अरे हाँ कल बेटे का जन्मदिन ढंग से मना लिया?
रजनी – जन्मदिन तो मना लिया, पर बेटा स्मार्ट फोन लेने की जिद पर अड़ा हुआ है।
सरिता – तो दिला दो न उसे एक फोन।
रजनी – सरिता, बात फोन की नहीं है। वह गेम खेलकर समय खराब करेगा।
सरिता – यह बात तो है। आज लगभग सभी बच्चों के पास फोन है जिसका दुष्प्रभाव उनकी पढ़ाई पर हो रहा है।
रजनी – आजकल बच्चे पढ़ते कम हैं, फोन पर ज्यादा समय बिताते हैं।
सरिता – मैंने अपने बेटे को फोन तो दिला दिया, पर वह टेस्ट में दो विषय में फेल हो गया।
रजनी – हमें बच्चों को जागरूक कर इसे रोकना चाहिए ताकि वे पढ़ाई में मन लगाएँ।
सरिता – यह ठीक रहेगा।

(11)

दो परीक्षार्थियों का प्रश्न-पत्र को लेकर हुए संवाद को लिखिए।

पहला परीक्षार्थी– भाई! आज का प्रश्न-पत्र कैसा रहा?
दूसरा परीक्षार्थी– प्रश्न-पत्र तो सामान्यतया ठीक था लेकिन निबन्ध कुछ अटपटे थे।
पहला परीक्षार्थी– ऐसी बात तो नहीं है भाई!
दूसरा परीक्षार्थी– तुमने किस पर निबन्ध लिखा?
पहला परीक्षार्थी– मैं तो 'आपका प्रिय दिवंगत नेता' विषय पर निबन्ध लिखकर आया हूँ, क्योंकि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी पर मेरी पूरी तैयारी थी।
दूसरा परीक्षार्थी– लिखा तो मैंने भी इसी विषय पर ही। प्रधानमंत्री पर मेरा निबन्ध तैयार था। सो उसमें ही थोड़ा अदल-बदल कर लिख आया हूँ।
पहला परीक्षार्थी– तब तो निबन्ध में तुम्हें शून्य अंक ही मिलेगा।
दूसरा परीक्षार्थी– (घबराकर) क्यों भाई?
पहला परीक्षार्थी– तुम 'दिवंगत' का अर्थ नहीं समझे क्या? इसका मतलब है मरा हुआ। वर्तमान प्रधानमंत्री तो जीवित हैं।
दूसरा परीक्षार्थी– उफ्! यह तो गलत हो गया। इसी प्रश्न में अच्छे अंक प्राप्त होने की आशा थी।
पहला परीक्षार्थी– भाई! अब पछताने से कोई लाभ नहीं है। जो होना था, सो हो गया। भविष्य में ध्यान रखो।
दूसरा परीक्षार्थी– ठीक कहते हो भाई! तुम्हारी सीख को भविष्य में मैं याद रखूँगा।

(12)

मालिक और नौकर के मध्य हुए संवाद को लिखिए।

मालिक – आज तुमने आने में बहुत देर कर दी।
नौकर – क्या करूँ? आज सब्जी मण्डी में बहुत भीड़ थी।
मालिक – आज भीड़ होने का क्या कारण था? क्या कल कोई त्योहार है?
नौकर – नहीं, मालिक! कल कोई त्योहार नहीं है।
मालिक – फिर झूठ क्यों बोलते हो?

नौकर – झूठ नहीं बोलता हूँ मालिक! कल पूर्णिमा है, इसलिए सब्जी मण्डी का अवकाश रहेगा।
मालिक – अच्छा………………ठीक है। पैसे वापिस करो।
नौकर – (पैसे लौटाता हुआ) यह लीजिए तीन रुपये बचे हैं।
मालिक – तीन रुपये?
नौकर – हाँ, मालिक! कल की अपेक्षा आज सब्जी महँगी मिली है।
मालिक – कोई बात नहीं, महँगाई तो दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। ईश्वर जाने, यह महँगाई कब कम होगी।

(13)

नए विद्यालय में अपने पुत्र का दाखिला दिलवाने गए अभिभावक और प्रधानाचार्य के मध्य हुए वार्तालाप का संवाद लेखन कीजिए।

अभिभावक – सर! क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?
प्रधानाचार्य – हाँ-हाँ अवश्य आइए और काम बताइए।
अभिभावक – मैं अपने बेटे का दाखिला इस स्कूल में कराना चाहता हूँ।
प्रधानाचार्य – कौन-सी कक्षा में?
अभिभावक – ग्यारहवीं कक्षा में।
प्रधानाचार्य – उसने दसवीं कौन-से विद्यालय से उत्तीर्ण की है।
अभिभावक – .... पब्लिक स्कूल आदर्श नगर से।
प्रधानाचार्य – तुम अपने बच्चे को पब्लिक स्कूल से सरकारी स्कूल में क्यों पढ़ाना चाहते हो?
अभिभावक – मैंने इस स्कूल का नाम सुना है। यहाँ पढ़ाई की उत्तम व्यवस्था है और खर्च नाममात्र का भी नहीं है।
प्रधानाचार्य – आपके बेटे के दसवीं में कितने प्रतिशत अंक आए।
अभिभावक – 70 प्रतिशत।
प्रधानाचार्य – आप कमरा सं. 15 में मिस्टर शर्मा से मिल लीजिए।
अभिभावक – जी, धन्यवाद।

(14)

विद्यालयों में प्रवेश की समस्या को लेकर दो अभिभावकों के मध्य संवाद लिखिए।

अजय – अरे मित्र! कुछ परेशान से दिखाई दे रहे हो। क्या बात है?
देवेश – हाँ, मैं अपने पुत्र के किसी अच्छे विद्यालय में प्रवेश की समस्या को लेकर बहुत परेशान हूँ।
अजय – क्या कहीं प्रवेश नहीं मिला?
देवेश – मैं जिस भी विद्यालय में जाता हूँ, वहाँ हजारों रुपये डोनेशन के रूप में माँगते हैं।
अजय – हाँ, यह बात तो है। राधाजी ने कल ही एक विद्यालय में अपनी पुत्री को ग्यारह हजार रुपये बिल्डिंग फण्ड में डोनेशन देकर प्रवेश दिलाया है।
देवेश – अरे भाई! उनका क्या है, वे तो व्यवसायी की पत्नी हैं। इतने रुपये आसानी से दे सकती हैं।
अजय – बुरा न मानो तो एक बात कहूँ।
देवेश – हाँ, हाँ, अवश्य कहो।
अजय – तुम अपने बच्चे को किसी राजकीय विद्यालय में प्रवेश दिलाने की कोशिश क्यों नहीं करते?
देवेश – हाँ भाई, मैं भी यही सोच रहा हूँ।
अजय – भाई, प्रतिभाशाली छात्र राजकीय विद्यालयों में पढ़कर भी जीवन में सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

(15)

आपके विद्यालय की फुटबॉल टीम रंजिता की सुस्ती के कारण फुटबॉल मैच हार गयी। विद्यालय की इस पराजय पर दो छात्राओं के मध्य हुए संवाद को लिखिए।

पहली छात्रा – आज बहुत बुरा हुआ, हमारे विद्यालय की फुटबॉल टीम हार गई!
दूसरी छात्रा – सुना तो मैंने भी है, पर टीम हारी क्यों?
पहली छात्रा – रंजिता के कारण।

दूसरी छात्रा – अकेले रंजिता के कारण टीम हार नहीं सकती।
पहली छात्रा – रंजिता वैसे ही मोटी है। उसमें चुस्ती-फुर्ती नहीं है। वह गोल करने के अवसर चूक जाती है।
दूसरी छात्रा – क्या वह अग्रिम पंक्ति में खेल रही थी ?
पहली छात्रा – हाँ।
दूसरी छात्रा – फिर उसे उसी समय बाहर क्यों नहीं निकाल दिया?
पहली छात्रा – अरे तुम नहीं जानतीं। वह शारीरिक शिक्षक की भतीजी है।
दूसरी छात्रा – यह भतीजीवाद ठीक नहीं है। यह विद्यालय की नाक का प्रश्न था।
पहली छात्रा – तुम ठीक कहती हो बहिन! हमारे विद्यालय में ही नहीं, पूरे देश में भाई-भतीजावाद का प्रभाव छाया हुआ है।
दूसरी छात्रा – तुम ठीक कहती हो। इसी से हमारा सिर झुकता है।

(16)

पी. टी. एम. में अध्यापक और छात्र के साथ उसके पिता से बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

पिता – मास्टर साहब नमस्ते! अन्दर आ जाऊँ?
शिक्षक – अन्दर आ जाइए, स्वागत है आपका।
पिता – धन्यवाद! मुझे मेरे बेटे के बारे में कुछ बताइए।
शिक्षक – आपका बेटा पढ़ाई में ठीक है। मन लगाकर पढ़ता है।
पिता – फिर इस बार इसके नम्बर कम क्यों हैं?
शिक्षक – आपका बेटा बीमार होने के कारण नियमित रूप से स्कूल नहीं आता है।
पिता – मैं अब इसे नियमित रूप से स्कूल भेजूंगा।
शिक्षक – यह मोबाइल फोन लेकर स्कूल आता है ओर कक्षा में वीडियो देखता है।
पिता – मैं इसका मोबाइल फोन घर रखवा दूँगा।
शिक्षक – इसे घर पर आप पढ़ने के लिए कहिए, स्कूल में मैं ध्यान रखूँगा।
पिता – यह ठीक रहेगा, धन्यवाद।

(17)

शिक्षा अधिकारी के कार्यालय के बाहर कुछ लोग उनसे मिलना चाहते हैं। कल्पना के आधार पर उनके संवाद लिखिए।

संगीता – (चपरासी से) मुझे साहब से मिलना है, अभी!
चपरासी – अभी साहब बहुत बिजी चल रहे हैं। आप इन्तजार करें। बैठ जाइये।
रहमान – (चपरासी से) भई, मेरी पर्ची अन्दर पहुँचा दो, मुझे जरूरी काम से बात करनी है।
चपरासी – साहब की घंटी बजेगी, तब जाकर तुम्हारी पर्ची दे आऊँगा। तब तक प्रतीक्षा करो।
संगीता – (चपरासी से) कितनी देर और बैठना होगा?
चपरासी – मैं क्या बताऊँ ....?
रहमान – (चपरासी के हाथ में पर्ची के साथ बीस का नोट रखकर) भई, मेरी पर्ची अन्दर पहुँचा दो न!
चपरासी – (भीतर जाता है और लौटकर रहमान को इशारा करता है) आप अन्दर जाइये।
संगीता – घंटी तो मिलने का समय खत्म होने तक बजेगी भी नहीं। (तमतमाती हुई दरवाजा धकेलकर भीतर जाने लगती है।)
चपरासी – अरे! अरे! क्या अभी घंटी बजी है। बिना घंटी बजे कहाँ जाती हो? रुको, रुको।
संगीता – तुम्हारी घंटी तो अब मैं बजाऊँगी! तुम्हारी भी और तुम्हारे साहब की भी घंटी बज के रहेगी! (दनदनाती अन्दर चली जाती है।)

पत्र-लेखन

(औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र)

सामाजिक प्राणी होने से मनुष्य को अपने सम्बन्धियों, मित्रों, पारिवारिकजनों तथा विभिन्न अधिकारियों को पत्र लिखने की आवश्यकता पड़ती है। पत्र-लेखन एक कला है। यह विचार-विनिमय का अच्छा, सरल और सस्ता साधन है। यद्यपि आजकल दूरभाष, तार, ई-मेल, इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि के द्वारा भी विभिन्न सूचनाओं एवं समाचारों का आदान-प्रदान सरलता से किया जाता है। फिर भी पत्रों का अपना ही महत्त्व है। लेखन के कारण इनका अपना स्थायी महत्त्व है। इसके साथ ही पत्रों के द्वारा हम अपनी बात विस्तार से, प्रभावी ढंग से, आत्मीयता से व्यक्त कर देते हैं। जिसे पढ़ने वाला अच्छी तरह से समझ लेता है।

अधिकारियों तक अपनी बात पहुँचाने, शिकायत करने, आवेदन या प्रार्थना आदि के लिए केवल पत्रों का ही सहारा लिया जा सकता है, अन्य साधन उपयुक्त नहीं माने जाते हैं। इसलिए भी पत्रों का अपना ही महत्त्व है।

पत्र-लेखन की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें—पत्र-लेखन की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं—

(1) सरलता—पत्र की भाषा सरल, सुबोध तथा स्पष्ट होनी चाहिए। पत्र में लेखक का आशय पूरी तरह से व्यक्त होना अपेक्षित है।

(2) संक्षिप्तता—पत्र लेखन में अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए। बात को स्पष्ट, संक्षेप में लिखना चाहिए। लिखने वाला कह जाए और पढ़ने वाला अच्छी तरह से समझ जाए।

(3) निश्चयात्मकता—पत्र में लेखक को अपनी बात निश्चयपूर्वक कहनी चाहिए। इसके साथ ही सभी बातों को क्रम से लिखना चाहिए, ताकि कोई बात लिखने से छूट न जाए।

(4) शिष्टता—पत्र-लेखन में विनम्र और शिष्ट शब्दावली का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

पत्रों के प्रकार :

आवश्यकता और स्थिति के अनुसार पत्र कई प्रकार के होते हैं, किन्तु उन्हें मोटे तौर पर दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(1) औपचारिक पत्र (Formal letter)

(2) अनौपचारिक पत्र (Informal letter)

(1) औपचारिक पत्र—जो पत्र सरकारी कार्यालयों तथा अधिकारियों को अथवा व्यावसायिक कार्यों को लेकर लिखे जाते हैं, उन्हें औपचारिक पत्र कहते हैं। यथा—

(क) प्रार्थना-पत्र—प्राचार्य के लिए	(i) अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र
या	(ii) आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना-पत्र
आवेदन-पत्र—नियोक्ता के लिए	(iii) नौकरी के लिए आवेदन-पत्र
	(iv) स्थानान्तरण के लिए प्रार्थना-पत्र
	(v) निर्धारित प्रपत्र (फॉर्म) में पत्र
— सार्वजनिक पत्र	(vi) निमन्त्रण-पत्र—सार्वजनिक समारोह
	(vii) विविध सरकारी पत्र
— शिकायती पत्र	(viii) अधिकारियों को प्रार्थना-पत्र
	(ix) सम्पादक के नाम पत्र
— व्यावसायिक पत्र	(x) पुस्तक विक्रेता, कम्पनी, बैंक, संस्थान के नाम पत्र इत्यादि।

(2) अनौपचारिक पत्र—ये पत्र उन लोगों को लिखे जाते हैं जिन लोगों के साथ लेखक का व्यक्तिगत संबंध होता है। जैसे—

(ख) व्यक्तिगत पत्र

(i) माता, पिता, बहिन, भाई आदि पारिवारिक सदस्यों को पत्र
(ii) मित्रों एवं रिश्तेदारों को पत्र
(iii) बधाई व शुभकामना-पत्र
(iv) शोक संवेदना-पत्र
(v) विवाह का निमन्त्रण-पत्र
(vi) धन्यवाद-पत्र

पत्रों के अंग

(1) पत्र-लेखक का पता और दिनांक—यह पत्र के ऊपरी सिरे पर प्राय: दायीं ओर लिखा जाता है, लेकिन आजकल इसे बायीं ओर लिखने का प्रचलन भी हो गया है।

(2) संबोधन तथा अभिवादन—ये पत्र के बायीं ओर लिखे जाते हैं। पहले सम्बोधन शब्द लिखा जाता है, बाद में अभिवादन लिखा जाता है। औपचारिक-पत्रों में अभिवादन शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(3) पत्र की विषय-सामग्री—पत्र के इस मुख्य भाग में पत्र-द्वारा प्रेषित की जाने वाली सूचना, समाचार, निवेदन, आदेश, शिकायत या विषयानुसार बातें लिखी जाती हैं।

(4) पत्र की समाप्ति—पत्र की समाप्ति पर लिखने वाले और पत्र प्राप्त करने वाले के संबंधों के अनुसार दाहिनी ओर शब्दावली का प्रयोग किया जाता है; जैसे तुम्हारा मित्र, भवदीय, प्रार्थी, आपका आज्ञाकारी, तुम्हारा शुभचिन्तक आदि।

(5) पत्र पाने वाले का पता—दोनों प्रकार के पत्रों में यह सबसे अन्त में लिखा जाता है। पते के साथ पिन कोड अवश्य लिखा जाना चाहिए।

संबोधन, अभिवादन तथा पत्र के अंत में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की तालिका :

पत्र का प्रकार	संबंध	संबोधन संबंधी शब्द	अभिवादन	अन्त के शब्द
व्यक्तिगत पत्र	पुत्र पिता को	पूज्य/पूजनीय पिताजी	सादर चरण-स्पर्श/ सादर प्रणाम	आपका आज्ञाकारी पुत्र
	पुत्र माता को	पूज्या/पूजनीया माताजी	सादर चरण-स्पर्श	आपका आज्ञाकारी पुत्र
	पिता पुत्र को	प्रिय/आयुष्मान् (नाम)	शुभाशीष	तुम्हारा शुभचिंतक/शुभेच्छु
	माता पुत्र को	प्रिय/आयुष्मान् (नाम)	शुभाशीर्वाद/प्रसन्न रहो	तुम्हारी माता/तुम्हारी शुभ-चिंतक
	छोटा भाई बड़े भाई को	आदरणीय भाई	सादर प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी/स्नेहभाजन
	बड़ा भाई छोटे भाई को	प्रिय ! चिरंजीवी (नाम) आयुष्मान् (नाम)	शुभाशीष/ खुश रहो	तुम्हारा शुभचिंतक/शुभेच्छु
	बड़ा भाई छोटी बहिन को	प्रिय (नाम) आयुष्मती (नाम)	शुभाशीष/खुश रहो	तुम्हारा शुभचिंतक/शुभेच्छु
	मित्र मित्र को	प्रिय (नाम)	सप्रेम नमस्ते/नमस्कार	अभिन्न हृदय/तुम्हारा मित्र, तुम्हारी सखी/तुम्हारा शुभ-चिंतक

	शिष्य गुरु को	पूजनीय/श्रद्धेय गुरुजी	सादर प्रणाम/सादर चरण-स्पर्श	आपका आज्ञाकारी शिष्य/ आपका स्नेहभाजन
	गुरु शिष्य को	चिरंजीव (नाम)	शुभाशीर्वाद/खुश रहो	आपका शुभाकांक्षी/शुभ चिंतक
व्यावसा-यिक पत्र	पुस्तक विक्रेता या बैंक मैनेजर को व्यापारी या दुकानदार को	प्रिय महोदय श्रीमान् प्रबन्धक		भवदीय/भवदीया भवदीय/भवदीया
कार्यालयी पत्र	विभाग के अधिकारी को समाचार पत्र के संपादक को प्रधानाचार्य को	मान्यवर, मान्यवर महोदय श्रीमान् सम्पादक महोदय श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय		भवदीय, निवेदक, प्रार्थी, विनीत, भवदीया भवदीय, निवेदक/भवदीया, निवेदिका प्रार्थी, कृपाकांक्षी, आपका आज्ञाकारी शिष्य, आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

निर्देश—पाठ्यक्रम में औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों का समावेश किया गया है। अनौपचारिक पत्रों के अन्तर्गत व्यक्तिगत पत्र तथा औपचारिक के अन्तर्गत कार्यालयी एवं व्यावसायिक आदि समस्त पत्रों के नमूने यहाँ दिये जा रहे हैं।

अनौपचारिक पत्र

व्यक्तिगत-पत्र

(बहिन को पत्र)

प्रश्न 1. स्वयं को मथुरा निवासी पंकज पाण्डे मानते हुए नवविवाहिता बहिन को पत्र लिखकर ज्ञात कीजिए कि ससुराल के नवीन वातावरण में वह कैसा अनुभव कर रही है?

उत्तर—

मथुरा

दिनांक : 25 अप्रेल, 20XX

चिरंजीवी बहिन,

सस्नेह अभिनन्दन!

हम सब यहाँ सकुशल हैं और तुम्हारी अपने नये परिवार के साथ सदैव कुशलता की कामना करते हैं।

जब से तुम्हें अपने ससुराल के लिए विदा किया है, यहाँ कुछ सूना-सूना सा लग रहा है, परन्तु तुम्हारे लिए यह सौभाग्य का विषय है कि जैसा वर और घर हम चाहते थे, वैसा ही तुम्हें मिला है। तुम्हारे ससुराल के लोग अच्छे, सभ्य और सम्पन्न हैं तथा तुम्हें वहाँ किसी बात की कमी नहीं होगी, फिर भी नये-नये वातावरण में कुछ अटपटा और अपरिचित-सा अवश्य लगता होगा। तुम पत्र द्वारा लिखना कि वहाँ का वातावरण कैसा अनुभव कर रही हो? तुम्हारे साथ सास-ससुर, देवर-ननद का व्यवहार कैसा है और तुम्हारे पति का बर्ताव कैसा है? क्या तुम्हें वहाँ किसी बात की दिक्कत तो नहीं होती है? अपने पत्र द्वारा लिखना और वहाँ के पूर्ण समाचार भेजना।

अपने ससुराल के सभी लोगों को हमारी तरफ से यथायोग्य वंदन आदि कहना। माता-पिताजी तुम्हें आशीर्वाद कह रहे हैं तथा प्रमोद प्रणाम कह रहा है।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में...

तुम्हारा शुभेच्छु,
पंकज पाण्डे

(माता को पत्र)

प्रश्न 2. आप कमला हैं। आपके गाँव में उच्च माध्यमिक विद्यालय न होने से आपने आगरा शहर के विद्यालय में प्रवेश लिया है। उस विद्यालय के वातावरण, शिक्षण-व्यवस्था एवं अपनी निवास-व्यवस्था के सम्बन्ध में अपनी माता को पत्र लिखिए।

उत्तर–

आगरा

दिनांक : 25 जुलाई, 20XX

परम पूज्या माताजी,

सादर चरण स्पर्श!

आपके आशीर्वाद से मैं यहाँ कुशल हूँ और आप सबकी प्रसन्नता की सदैव कामना करती हूँ।

हमारे विद्यालय का वातावरण बहुत ही अच्छा है। हमारे सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ अतीव स्नेही स्वभाव की हैं। विद्यालय का अनुशासन बहुत अच्छा है, सभी छात्र-छात्राएँ अनुशासन का पालन करती हैं और शिक्षण के अतिरिक्त खेल-कूद तथा अन्य प्रवृत्तियों में भी भाग लेती हैं।

यहाँ मेरे निवास की व्यवस्था कन्या छात्रावास में हो गई है। यह छात्रावास शहर की भीड़-भाड़ से कुछ दूर और हमारे विद्यालय के समीप शान्त वातावरण में स्थित है। इसमें सुबह चाय-नाश्ता, दोपहर और सन्ध्या को भोजन की अच्छी व्यवस्था है। यहाँ मुझे किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। अत: इस सम्बन्ध में भी आपको मेरी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

बड़ों को चरण स्पर्श, आलोक और दीप्ति को मेरा आशीष-प्यार। आप मेरी जरा भी चिन्ता न करें। पत्रोत्तर शीघ्र दें।

आपकी पुत्री,

कमला

(छोटे भाई को पत्र)

प्रश्न 3. आप इटावा निवासी महेन्द्र हैं। अपने छोटे भाई सुरेन्द्र को, जो आगरा के गाँधी छात्रावास में रहकर अध्ययनरत है, एक पत्र लिखिए, जिसमें अपव्यय से बचने एवं बचत के सम्बन्ध में उपयोगी सुझाव दीजिए।

उत्तर–

इटावा

दिनांक : 15 अगस्त, 20XX

प्रिय अनुज सुरेन्द्र,

शुभाशीष !

यहाँ सब सकुशल हैं और तुम्हें सदा सानन्द चाहते हैं। दो दिन पूर्व तम्हारा कुशल-पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुए। तुमने कुछ पुस्तकें खरीदने तथा अन्य खर्चे हेतु रुपये भेजने के लिए लिखा है, इसलिए तुम्हारे लिए आठ सौ रुपये मनीऑर्डर से भेज रहा हूँ। ऐसा मालूम होता है कि तुम अधिक खर्चा कर रहे हो। अभी से अपनी आदत सुधार लो और अपव्यय से बचने की चेष्टा करो। प्रत्येक कार्य में आवश्यकता के अनुसार ही व्यय करो। यदि तुम अभी से बचत करना सीख जाओगे, तो तुम आगे चलकर स्वावलम्बी बन सकोगे। अपव्यय की आदत पड़ने से कई बुरे व्यसन भी लग जाते हैं, जबकि बचत करने से मन में शान्ति एवं विश्वास पनपता है। अत: तुम अभी से अपव्यय से बचकर बचत का ध्यान रखो।

अपनी पढ़ाई पर विशेष ध्यान रखना। पिताजी व माताजी तुम्हें आशीष कह रहे हैं। कुशल पत्र भेजते रहना।

तुम्हारा शुभेच्छु,

महेन्द्र

(छोटे भाई को पत्र)

प्रश्न 4. आप भरतपुर निवासी श्यामलाल हैं। बीकानेर में अध्ययनरत अपने छोटे भाई नगेन्द्र को पत्र लिखकर नियमित रूप से अध्ययन में मन लगाने की सलाह दीजिए।

उत्तर–

भरतपुर

दिनांक : 20 अगस्त, 20XX

प्रिय अनुज नगेन्द्र,

शुभाशीष !

अभी कुछ दिन पूर्व तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। उसमें तुमने लिखा कि तुम्हारा मन बीकानेर में कम लगता है। यह तो निश्चित है कि राजस्थान में बीकानेर की जलवायु गर्म है। अपने यहाँ भरतपुर की जलवायु ज्यादा अच्छी है। इसी कारण तुम्हें वहाँ परेशानी भी हो रही है। परन्तु यह सूत्र याद रखना कि संघर्ष व कठिन परिश्रम से ही सफलता मिलती है। वहाँ पर तुम्हें अधिक से अधिक अपने अध्ययन में मन लगाना चाहिए। प्रारम्भ से ही अध्ययन करोगे तो परीक्षा में अच्छे नम्बर आएँगे तथा वार्षिक परीक्षा में भी अच्छे अंक प्राप्त करके प्रथम श्रेणी बना लोगे। निश्चित कार्यक्रम बनाकर सुबह से सायंकाल तक अपने समय का सदुपयोग करो। पढ़ाई के साथ थोड़ा खेलकूद एवं व्यायाम भी आवश्यक है। यह अच्छी बात है कि तुम्हारे विद्यालय में खेलकूद अनिवार्य कर रखे हैं।

माताजी व पिताजी का तुम्हें आशीर्वाद।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में.....

तुम्हारा शुभेच्छु,
श्यामलाल

(सहेली को पत्र)

प्रश्न 5. आप नाम से कुमारी रश्मि, निवासी आगरा हैं। अपनी सहेली कुमारी ललिता, निवासी कोलकाता को अपने यहाँ ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने हेतु पत्र लिखिए।

उत्तर–

23, आनन्द भवन, संजय पैलेस,
आगरा
दिनांक : 25 अप्रैल, 20XX

प्रिय ललिता,

सप्रेम नमस्ते !

यहाँ पर हम सभी प्रसन्न हैं और आशा करती हूँ कि तुम भी वहाँ पर प्रसन्न होंगी। बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। अब परीक्षा भी समाप्त हो गई है।

मेरा आग्रह है कि इस बार ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने के लिए तुम यहाँ आगरा चली आओ। तुम पहले भी कई बार यहाँ के ताजमहल, किला और सीकरी के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों को देखने की इच्छा व्यक्त करती रही हो। अब यहाँ आ जाने से तुम्हारी इस इच्छा की पूर्ति भी हो जाएगी तथा बहुत दिनों के बाद हम दोनों सहेलियों को साथ-साथ रहने का सुअवसर भी मिल जाएगा। तुम्हारे साथ रहने से ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने में खूब आनन्द मिलेगा। इस सम्बन्ध में मैंने मम्मी-पापा से भी बात की है, वे भी बड़े आग्रह के साथ तुम्हें आगरा आने के लिए कह रहे हैं।

अपने पूज्य माता-पिता को मेरी ओर से प्रणाम तथा छोटे भाई-बहिन को प्यार। शीघ्र पत्र लिखकर अपने आगमन की तिथि और कार्यक्रम की सूचना भेजना।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में ....

तुम्हारी सहेली,
रश्मि

(पिता को पत्र)

प्रश्न 6. स्वयं को जयपुर निवासी रमेश मानकर बीकानेर निवासी अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए, जिसमें अपनी परीक्षा की तैयारी आदि का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–

जयपुर
दिनांक : 22 फरवरी, 20XX

पूजनीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श !

मैं यहाँ पर सकुशल हूँ और आपकी सपरिवार कुशलता के लिए ईश्वर से सदैव प्रार्थना करता हूँ।

आपका भेजा हुआ पत्र तथा मनीऑर्डर दोनों एक ही दिन मिले हैं। इस समय मेरी पढ़ाई अच्छी तरह से चल रही है। अब वार्षिक परीक्षा के लिए लगभग एक माह रह गया है। मैं आजकल सभी विषयों का नियमित अध्ययन कर रहा हूँ। अंग्रेजी और हिन्दी की तीन बार आवृत्ति कर चुका हूँ। सामान्य विज्ञान और सामाजिक ज्ञान का कोर्स भी

दो बार पूरा कर लिया है। अब गणित की विशेष तैयारी में लगा हुआ हूँ। आजकल मैं रात में साढ़े दस बजे तक पढ़ता हूँ और फिर सो जाता हूँ। प्रात:काल चार बजे उठकर अध्ययन करने लग जाता हूँ। इस तरह मेरा अध्ययन-क्रम नियमित एवं सुव्यवस्थित चल रहा है और आपके आशीर्वाद से मुझे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की पूर्ण आशा है।

पूज्या माताजी को चरण-स्पर्श तथा सुनीता व सुनील को प्यार।

पत्र की प्रतीक्षा में..........

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
रमेश

(सहेली को पत्र)

प्रश्न 7. सुषमा जौहरी, माणक चौक, भोपाल की ओर से प्रिय सहेली प्रभावती, उदयपुर को टिड्डी दल के आक्रमण के समय किये गये कार्यों का वर्णन करते हुए पत्र लिखिए।

उत्तर–

भोपाल
दिनांक : 7 अप्रैल, 20XX

प्रिय प्रभावती,

सप्रेम नमस्कार !

यहाँ पर हम सभी प्रसन्न हैं और आशा करती हूँ कि तुम वहाँ पर प्रसन्न होंगी।

गत महीने हमारे यहाँ टिड्डी दल आ गया था। शहर के सभी पेड़-पौधों के पत्तों और कोंपलों को टिड्डी दल चट कर गया है। उपवन एवं बगीचों की हरियाली भी उनके आक्रमण से नष्ट हो गई है। इस अवसर पर हमने भी अपने विद्यालय के पेड़-पौधों की रक्षा की। हम सभी ने मिलकर उपले जलाकर धुआँ किया, डी.डी.टी. का छिड़काव किया तथा कपड़े के पुतले हिलाकर टिड्डियों को भगाया। इस प्रकार सप्ताह भर तक हमारा यही कार्यक्रम रहा। हमारे शहर के अन्य विद्यालयों की भी यही स्थिति रही।

अब यहाँ का वातावरण ठीक है। तुम्हारा अध्ययन कैसे चल रहा है? पत्रोत्तर अवश्य अवश्य भेजना। अपने पूज्य पिताजी-माताजी को मेरा सादर प्रणाम और छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

तुम्हारी सहेली,
सुषमा

(बड़े भाई को पत्र)

प्रश्न 8. स्वयं को दिल्ली निवासी राजेश गुप्ता मानकर अपने बड़े भाई सुरेन्द्र गुप्ता को एक पत्र लिखिए, जिसमें अपनी माताजी के अस्वस्थ हो जाने की सूचना भेजी गई हो।

उत्तर–

58, जनकपुरी,
नई दिल्ली
दिनांक : 5 अगस्त, 20XX

आदरणीय भाई साहब,

सादर प्रणाम !

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आपकी कुशलता की ईश्वर से सदैव प्रार्थना करता हूँ। मैंने पिछले सप्ताह आपको पत्र भेजा था, तब तक माताजी की तबीयत ठीक थी, परन्तु अचानक ही पिछले चार दिन से माताजी की तबीयत खराब हो गई है। इन्हें तेज बुखार है और पीठ एवं पेट में दर्द बता रही हैं। मैं लगातार तीन दिन से इन्हें डॉक्टर के पास ले जा रहा हूँ और दवा भी दे रहा हूँ, परन्तु इनके स्वास्थ्य की स्थिति में कोई सुधार नहीं दिखाई दे रहा है। अपने पड़ोस के डॉक्टर साहब की राय है कि इन्हें किसी बड़े अस्पताल में भर्ती कराना पड़ेगा और इनकी आँतों पर आई सूजन का इलाज करवाना होगा। इस कारण आप पत्र मिलते ही अवकाश लेकर आ जावें, तभी इनका सही इलाज सम्भव हो सकेगा।

माताजी अस्वस्थता की हालत में बार-बार आपको याद कर रही हैं। भाभीजी को मेरा प्रणाम तथा बच्चों को प्यार। आपके आगमन की प्रतीक्षा में।

आपका अनुज,
राजेश गुप्ता

(माता को पत्र)

प्रश्न 9. स्वयं को विमला, निवासी भरतपुर मानकर अपनी माताजी को एक पत्र लिखिए, जिसमें दशहरा अवकाश पर शैक्षणिक भ्रमण पर जाने के कार्यक्रम की सूचना दी गई हो।

उत्तर–

भरतपुर
दिनांक : 12 अक्टूबर, 20XX

परम पूजनीया माताजी,

सादर प्रणाम !

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आप सबकी कुशलता के लिए सदैव ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ।

मेरे विद्यालय की सभी छात्राएँ दशहरा अवकाश पर शैक्षणिक भ्रमण के लिए बस द्वारा आगरा, मथुरा-वृन्दावन जा रही हैं। हमारे साथ दो शिक्षक एवं तीन शिक्षिकाएँ, दो चतुर्थ श्रेणी महिला कर्मचारी और व्यायाम प्रशिक्षक भी जा रहे हैं। भ्रमण का कार्यक्रम दो दिन तक आगरा के दर्शनीय स्थलों एवं ऐतिहासिक स्मारकों को देखने का है और एक दिन मथुरा तथा एक दिन वृन्दावन व आसपास के क्षेत्रों का भ्रमण करने का है। इस शैक्षणिक भ्रमण से हमारे ज्ञान की वृद्धि होगी और हमें नये स्थानों को देखने, वहाँ की बोली-भाषा, रहन-रहन और संस्कृति आदि का ज्ञान होगा।

इस शैक्षणिक भ्रमण से लौटने के बाद जब भी अवकाश मिलेगा, मैं आपके पास आ जाऊँगी। पूज्य पिताजी को चरण स्पर्श। सुदर्शन और रंजना को मेरी ओर से प्यार। पत्रोत्तर अवश्य भेजना।

आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री,
विमला

(सहेली के लिए)

प्रश्न 10. आप दिल्ली निवासी मीनाक्षी हैं। अपनी सहेली कुमारी रंजना को एक पत्र लिखिए कि वह आगामी गणतन्त्र दिवस समारोह आपके साथ ही मनाये।

उत्तर–

पालम विहार,
दिल्ली
दिनांक : 10 जनवरी, 20XX

प्रिय रंजना,

सप्रेम अभिनन्दन !

तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि दिल्ली में गणतन्त्र दिवस विशाल स्तर पर मनाया जाता है और इसमें लाखों लोग भाग लेते हैं। हमारे विद्यालय में भी इस अवसर पर विज्ञान एवं चित्रकला प्रदर्शनी लगाई जा रही है, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ 'अमर शहीद' नाटक का अभिनय किया जाएगा। समारोह की तैयारी अभी से बड़े उत्साह और लगन से की जा रही है। मेरा आग्रह है कि इस अवसर पर तुम यहाँ आ जाओ तथा इस वर्ष यह समारोह हमारे साथ मनाओ। मैं तुम्हारे लिए पिताजी से कहकर जनपथ पर होने वाले सरकारी समारोह के 'पास' भी मँगवा लूँगी। सुबह के समय हम इस समारोह को देखेंगी, तत्पश्चात् हम विद्यालय के समारोह में सम्मिलित हो जाएँगी।

मुझे विश्वास है कि तुम अवश्य आओगी। मैं तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा में रहूँगी। इसी आशा के साथ,

तुम्हारी सहेली,
मीनाक्षी

(छोटी बहिन को पत्र)

प्रश्न 11. स्वयं को दीपशिखा, विज्ञान नगर, कोटा की निवासिनी मानते हुए अजमेर में अध्ययनरत अपनी छोटी बहिन को अस्वस्थ रहने से उचित इलाज कराने के साथ ही व्यायाम करने की सलाह देते हुए एक पत्र लिखिए।

उत्तर–

15 क, विज्ञान नगर,
कोटा
दिनांक : 22 दिसम्बर, 20XX

चिरंजीवी अनुजा,

सस्नेह आशीष !

यहाँ सब कुशल हैं, तुम्हारी कुशलता की कामना करते हैं। दो दिन पूर्व तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी अस्वस्थता का समाचार पढ़कर चिन्ता हो रही है। तुम अपना इलाज किसी अच्छे डॉक्टर से करवाना। इसमें लापरवाही नहीं करना। साथ ही प्रतिदिन सुबह-शाम को व्यायाम भी करते रहना, क्योंकि व्यायाम करने से शरीर का रक्त संचार उचित गति से होता है तथा स्फूर्ति भी आ जाती है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उपचार और प्रतिदिन नियमित व्यायाम दोनों का अत्यधिक महत्त्व है। इसलिए मेरी सलाह से अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना और अपने समाचार शीघ्रातिशीघ्र भेजती रहना।

पूज्य माता-पिताजी तुम्हें आशीष कह रहे हैं। शेष कुशल, तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में,

तुम्हारी शुभेच्छु,
दीपशिखा

(मित्र को पत्र)

प्रश्न 12. अपने मित्र को एक पत्र लिखिए, जिसमें उसे जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित करने के उपलक्ष्य में प्रसन्नता व्यक्त की गई हो।

उत्तर–

1251, सोजती गेट,
जोधपुर
दिनांक : 27 फरवरी, 20XX

प्रिय मित्र माधवेन्द्र,

सप्रेम नमस्कार !

हम यहाँ सकुशल हैं और तुम्हें परिजनों सहित सदैव कुशल चाहते हैं। आज के 'दैनिक भास्कर' में प्रकाशित समाचार से ज्ञात हुआ कि जिला प्रशासन ने 'गणतन्त्र दिवस' पर तुम्हें सम्मानित किया है। इस समाचार से मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। मैं अपनी प्रसन्नता का शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। जिला स्तर पर साक्षरता अभियान में तुमने रात-दिन परिश्रम करके जो सराहनीय कार्य किया है, उससे हजारों निरक्षरों को अक्षर-ज्ञान के साथ वह ज्योति मिली है, जिससे उन्हें पढ़ने-लिखने की योग्यता प्राप्त हुई है। वस्तुत: यह कार्य बहुत ही पवित्र तथा मानव का कल्याण करने वाला है। सीकर जिला प्रशासन ने तुम्हें इस कार्य के लिए सम्मानित कर तुम्हारा गौरव बढ़ाया है। मैं इसके लिए तुम्हें अपनी ओर से प्रसन्नता व्यक्त करते हुए हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे ही पुनीत कार्य करते रहोगे।

अपने पूज्य माताजी-पिताजी को मेरा प्रणाम कहना और अन्य पारिवारिक जनों को यथायोग्य अभिनन्दन। पत्रोत्तर अवश्य भेजना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी मित्र,
अखिलेन्द्र

(छोटी बहिन को पत्र)

प्रश्न 13. स्वयं को बीकानेर की एकता मानकर जयपुर में रह रही अपनी छोटी बहिन प्रतिभा को सी.पी.एम.टी. की परीक्षा में सफल होने पर अपनी प्रसन्नता का एक पत्र लिखिए।

उत्तर–

रानी बाजार,
बीकानेर
दिनांक : 28 मई, 20XX

प्रिय अनुजा प्रतिभा,

सस्नेह आशीष !

आज ही अखबार में सी.पी.एम.टी. का परीक्षा परिणाम देखने को मिला, उसमें तुम्हारा रोल नम्बर देखकर बहुत खुशी हुई कि तुम इसमें केवल उत्तीर्ण ही नहीं हुई हो, अपितु मैरिट (योग्यता सूची) में भी तुमने अच्छा स्थान पाया है। इस खुशी के अवसर पर मेरी ओर से प्यार भरी बहुत-बहुत बधाई। इस समय मेरा मन अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है और तुमसे मिलने की तीव्र इच्छा हो रही है। पिताजी की हार्दिक इच्छा रही कि तुम डॉक्टर बनो। उनकी इच्छा

अब पूरी हो जाएगी। हमारे लिए यह बड़े गौरव की बात है और ऐसी अनुभूति हो रही है कि तुम पिताजी का नाम रोशन करोगी और परिवार का भविष्य उज्ज्वल बनाओगी।

मैं अगले सप्ताह तुमसे मिलने आ रही हूँ, साथ में तुम्हारे लिए उपहार लेकर आऊँगी। मेरी भगवान् से यही प्रार्थना है कि तुम्हें सदैव इसी प्रकार सफलता मिलती रहे। माताजी तथा पिताजी को मेरा प्रणाम कहना। शेष कुशल हैं।

तुम्हारी शुभेच्छु अग्रजा,
एकता

बधाई-पत्र

(मित्र को बधाई-पत्र)

प्रश्न 14. बीकानेर निवासी अपने मित्र जितेन्द्र को राष्ट्रीय खेलों की तैराकी प्रतियोगिता में रजत-पदक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में बधाई-पत्र लिखिए।

उत्तर–

4 बी, आदर्श नगर,
जयपुर
दिनांक : 27 अक्टूबर, 20XX

प्रिय मित्र जितेन्द्र,

सप्रेम नमस्ते!

यह समाचार सुनकर मुझे अपार हर्ष हुआ कि आपने राष्ट्रीय खेलों के अन्तर्गत आयोजित तैराकी प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर रजत-पदक प्राप्त करने में सफल रहे हो। यह आपके लिए अत्यधिक गौरव का अवसर है। आपने लगातार तैराकी अभ्यास में जो प्रयास किये, उसका परिणाम आज सामने आया है। इस सफलता से न केवल अपने प्रदेश का नाम गौरवान्वित हुआ है, अपितु देश का भी गौरव बढ़ा है। आपके इस सम्मान से हमारा पूरा परिवार आह्लादित है। मैं इस शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि अगली बार आपको स्वर्ण-पदक की प्राप्ति होगी।

अपने पूज्य पिताजी को मेरा चरण-स्पर्श कहना। इस सम्मान के लिए पुनः बधाई।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,
अभिनव

(छोटे भाई को बधाई-पत्र)

प्रश्न 15. अजमेर निवासी सोमदत्त की ओर से अपने छोटे भाई रामदत्त को राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में सफल रहने पर बधाई देते हुए प्रेरणास्पद पत्र लिखिए।

उत्तर–

अजमेर
दिनांक : 11 जुलाई, 20XX

प्रिय अनुज रामदत्त,

सस्नेह आशीष!

यह समाचार जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय प्रतिभा खोज में तुम सफल रहे हो। तुम्हारी इस सफलता पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई। तुमने अध्ययन में जो रुचि रखी और निरन्तर जो परिश्रम किया, यह उसी का शुभ परिणाम है। भविष्य में भी यदि तुम इसी प्रकार परिश्रम करते रहोगे, तो तुम्हारा भविष्य अवश्य ही उज्ज्वल बन जायेगा। तुम्हारी इस सफलता से हमारे परिवार का गौरव बढ़ा है। आगे भी तुमसे यही अभिलाषा रखते हैं।

मेरे सभी साथी भी तुम्हें इस उपलक्ष्य में बधाई दे रहे हैं। अपना कुशल-पत्र शीघ्र भेजना। शेष कुशल।

तुम्हारा अग्रज,
सोमदत्त

निमन्त्रण-पत्र

(विवाह का निमन्त्रण-पत्र)

प्रश्न 16. स्वयं को आत्मप्रकाश भारद्वाज मानते हुए अपनी छोटी बहिन के शुभ-विवाह का निमन्त्रण-पत्र लिखिए।

उत्तर–

मान्यवर श्री.........................

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूर्वजों के आशीर्वाद से मेरी सौभाग्यकांक्षिणी अनुजा करुणा का शुभ-विवाह चिरंजीवी वरुणेश, निवासी कोटा के साथ दिनांक 10 मई, 20XX को सम्पन्न होना निश्चित हुआ है।

कृपया इस शुभ-माँगलिक अवसर पर पधारकर नव वर-वधू को आशीर्वाद देकर कृतार्थ करें।

दर्शनाभिलाषी : विनीत :

कमल, विजय आत्मप्रकाश भारद्वाज

एवं समस्त भारद्वाज परिवार

[विवाह का परम्परागत निमन्त्रण-पत्र]

प्रश्न 17. स्वयं को प्रदीपकुमार सक्सेना, वाराणसी निवासी मानकर अपने ज्येष्ठ पुत्र के शुभ-विवाह का निमन्त्रण-पत्र [प्रचलित परम्परागत शैली में] लिखिए।

उत्तर– **।। श्री गणेशाय नमः ।।**

आते हैं जिस भाव से भक्तों के घर भगवान्।
उसी भाव से पधार कर दर्शन दें श्रीमान्।।

मान्यवर,

परम आराध्य आशुतोष भगवान् की कृपा से अपने सुपुत्र

चि. विकास सक्सेना

(सुपौत्र स्व. उदयनारायण सक्सेना)

संग

आयुष्मती शर्मिला

(सुपुत्री श्री रामेश्वरदयाल माथुर, निवासी शिव कालोनी, कानपुर)

के शुभ पाणिग्रहण संस्कार

की माँगलिक बेला पर आपको कार्यक्रमानुसार सपरिवार सादर आमन्त्रित करते हैं।

कृपया पधार कर वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान करें।

दर्शनाकांक्षी : विनीत :

श्रीमती एवं श्री सुदीपकुमार सक्सेना प्रदीप कुमार सक्सेना

प्रेमलाल, बनारसीलाल 17-20, अवधपुरी कालोनी, सारनाथ, वाराणसी

गौरवकुमार, अमित कुमार

एवं समस्त सक्सेना परिवार

।। वैवाहिक कार्यक्रम ।।

अतिथि सत्कार	रविवार, 3 दिसम्बर, 20XX	हर पल
महिला संगीत	"	3 बजे अपराह्न
	सोमवार, 4 दिसम्बर, 20XX	
गणेश-पूजन	"	8 बजे प्रात:
बारात प्रस्थान	"	5 बजे सायं
प्रीतिभोज	9 बजे रात्रि	
विवाह संस्कार	"	शुभलग्नानुसार
	मंगलवार, 5 दिसम्बर, 20XX	
वर-वधू गृह-प्रवेश		8 बजे प्रात:

नोट–बारात हमारे निवास स्थान से विवाह-स्थल 'सगुन मैरिज गार्डन' के लिए प्रस्थान करेगी।

प्रीति-भोज का निमन्त्रण-पत्र
(सम्बन्धियों एवं मित्रों को पत्र)

प्रश्न 18. स्वयं को योगेश मानते हुए अपने अनुज कपिल को भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रथम स्थान प्राप्त होने के उपलक्ष्य में आयोजित प्रीतिभोज का निमन्त्रण-पत्र लिखिए।

उत्तर–

4 अ-153, कावेरी पथ,
मानसरोवर,
जयपुर

बन्धुवर श्रीमान्......................

परम हर्ष का विषय है कि मेरे अनुज कपिल ने इस वर्ष आयोजित भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अपार प्रसन्नता के इस अवसर पर समस्त शुभचिन्तकों एवं मित्रों के साथ एक संक्षिप्त समारोह का आयोजन रखा गया है। इस निमित्त दिनांक 25.7.20XX को हमारे आवास पर सायंकाल सात बजे प्रीति-भोज आयोजित है। इसमें सपरिवार समय पर पधारकर हमें अनुगृहीत करने की कृपा करें।

आपके स्वागत के लिए समुत्सुक,

विनीत :
योगेश

नोट–(i) छात्रों के लिए यह ज्ञातव्य है कि विवाह एवं प्रीति-भोज से सम्बन्धित निमन्त्रण-पत्र पारिवारिक श्रेणी के होते हैं। इसलिए उन्हें अनौपचारिक-पत्र माना जाता है।

(ii) परन्तु गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता-दिवस, विद्यालय के वार्षिकोत्सव, किसी सम्मेलन, सभा या गोष्ठी के लिए जो निमन्त्रण पत्र लिखे जाते हैं, वे सार्वजनिक पत्र होते हैं तथा उन्हें औपचारिक-पत्र माना जाता है।

संवेदना-पत्र

(परिचित को पत्र)

प्रश्न 19. आप कोटा निवासी अजयकुमार हैं। आपके सुपरिचित अनिल शर्मा एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गये हैं। इस निमित्त उन्हें एक संवेदना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

7/25, विज्ञान नगर,
कोटा
दिनांक : 25 अगस्त, 20XX

प्रिय मित्र अनिल,

सप्रेम नमस्ते !

यह समाचार सुनकर बहुत ही दु:ख हुआ कि आपकी मोटर-साइकिल को पीछे से एक ट्रक ने टक्कर मार दी और आप दुर्घटनाग्रस्त हो गये। यह तो भगवान् की कृपा और परिवार के बड़े-बूढ़ों का आशीर्वाद रहा कि आप बच गये। इस दुर्घटना से आपके बायें पैर की हड्डी टूट गई। इस बात से काफी दु:ख हो रहा है।

इस समाचार को सुनकर मैं आपके पास आना चाहता हुआ भी विशेष कार्यवश नहीं आ सका। इसलिए संवेदना-पत्र भेज रहा हूँ। आपके पैर में प्लास्टर चढ़ा हुआ है, इससे आपको नित्यकर्म करने में काफी परेशानी हो रही होगी। परन्तु ऐसे में क्या किया जा सकता है। ईश्वर आपको कष्ट सहने की क्षमता प्रदान करे।

मैं समय मिलते ही आपसे मिलने का पूर्ण प्रयास करूँगा। मेरी ओर से आपके परिजनों का अभिवादन एवं पुन: संवेदना-निवेदन।

आपका,
अजय कुमार

(मित्र को संवेदना-पत्र)

प्रश्न 20. अपने मित्र के पिताजी का असामयिक निधन होने पर एक संवेदना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

बी-4, प्रताप कुंज,
बापू नगर, जयपुर
दिनांक : 16 अगस्त, 20XX

प्रिय मित्र सुशील,

आपका पत्र पाकर हृदय पर आघात-सा लगा। मैं सोच भी नहीं सकता था कि आपके पिताजी का इस प्रकार अकस्मात् देहावसान हो जायेगा। दो मास पूर्व जब मैं आपके यहाँ आया था, तो उस समय उनका स्वास्थ्य एकदम अच्छा दिखाई दे रहा था, परन्तु जैसा कि आपने लिखा है कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा। मित्र, यह रोग ही ऐसा है, हृदयाघात का पहले से मालूम होना कठिन रहता है। इस संसार में जन्म और मृत्यु तो ईश्वर की इच्छा पर निर्भर हैं। किसका जीवनान्त कब और किस प्रकार होगा, यह ईश्वर ही जानता है।

अब आपसे मैं यही कह सकता हूँ कि आप इस मार्मिक आघात को सहने का साहस एकत्र करें और सभी पारिवारिक जनों को सान्त्वना प्रदान करें।

मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे और पारिवारिक जनों को शोक सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

आपका स्नेही,
सुशान्त

शुभकामना-पत्र

(छोटी बहिन की सहेली को पत्र)

प्रश्न 21. आपकी छोटी बहिन की एक प्रिय सहेली के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में उसे शुभकामना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

डी-40, कृष्णा नगर,
भरतपुर
दिनांक : 22 जून, 20XX

चिरंजीवी अमृता,

सस्नेह आशीष!

जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में तुम्हारा निमन्त्रण-पत्र मिला। इस शुभ-अवसर पर मेरी ओर से कोटिशः मंगल-कामना। ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम्हें लम्बी आयु प्रदान करे और जन्म-दिवस मनाने का निरन्तर अवसर मिलता रहे।

तुम्हारा जन्म-दिवस मंगलमय हो, इसी शुभ-कामना के साथ छोटी बहिन के हाथों प्रेषित भेंट स्वीकार करना।

तुम्हारी शुभचिन्तक,
अनुराधा

(मित्र को शुभकामना-पत्र)

प्रश्न 22. विदेश यात्रा पर जाने वाले अपने मित्र को उसकी मंगलमय यात्रा के लिए एक शुभकामना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

कल्याण-भवन,
सीकर रोड,
जयपुर
दिनांक : 25 जुलाई, 20XX

प्रिय मित्र सुधीर,

सप्रेम नमस्ते!

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ, पढ़कर पता चला कि तुम अपने पिताजी के साथ एक सप्ताह की विदेश-यात्रा पर जा रहे हो। इस समाचार से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता एवं हर्ष हो रहा है। तुम्हारी विदेश-भ्रमण की इच्छा पूरी होने जा रही है। इसलिए इस अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामना। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारी यह यात्रा मंगलमय तथा उल्लासपूर्ण होवे।

अपने पूज्य पिताजी-माताजी को मेरा प्रणाम कहना। विदेश-यात्रा से लौटने पर अपने सुखद अनुभवों को पत्र द्वारा अवश्य प्रेषित करना। पुन: शुभकामना के साथ,

तुम्हारा मित्र,
राजीव सिंह

धन्यवाद-पत्र

(खेल-शिक्षक को पत्र)

प्रश्न 23. आपके विद्यालय में खेल-दिवस मनाया गया। आपने कई खेल-प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर पुरस्कार जीते। अपने पूर्व खेल-शिक्षक को पत्र लिखकर अपनी उपलब्धि के बारे में बताइए तथा आगे भी उनके दिशा-निर्देश एवं आशीर्वाद की इच्छा व्यक्त कीजिए।

उत्तर–

सरस-निकुंज, मोती मगरी,
उदयपुर
दिनांक : 28 नवम्बर, 20XX

पूजनीय गुरुवर,

सादर प्रणाम!

आशा है आप सपरिवार सानन्द होंगे। यहाँ से कुछ विलम्ब से पत्र भेज रहा हूँ, अतएव क्षमा चाहता हूँ। इस वर्ष अपने विद्यालय में खेल-दिवस धूमधाम से मनाया गया। इसमें अनेक खेल-प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मैंने सभी प्रमुख प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और पुरस्कार भी जीते। यह सब आपकी कृपा एवं शिक्षा का सुपरिणाम रहा, जो मैं आपके बताये अनुसार खेलों में विशेष प्रयास कर भाग लेता रहा। आपकी इस कृपा के लिए मैं अपना हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। मैं आगे भी खेल-प्रतियोगिताओं में सफलता पाना चाहता हूँ। इसके लिए आपसे दिशा-निर्देश प्राप्त करना चाहता हूँ। आपका मार्गदर्शन मेरे लिए आगे भी शुभ आशीर्वाद के रूप में अवश्य फलित होगा।

आपके स्नेहिल व्यवहार का बार-बार स्मरण हो आता है। शीतकालीन अवकाश पर मैं आपके दर्शन करने अवश्य आऊँगा। आपके दिशा-निर्देश सहित आशीर्वाद के पत्र की प्रतीक्षा में,

आपका आज्ञाकारी,
महावीर सिंह

(स्वच्छता अभियान में पार्षद को पत्र)

प्रश्न 24. आपके कस्बे के पार्षद ने खुला शौच मुक्त स्वच्छता अभियान में जो प्रशंसनीय कार्य किये, उस सन्दर्भ में उन्हें धन्यवाद का प्रशंसा-पत्र लिखिए।

उत्तर–

25 बी, पटेल नगर, मन्दिर मार्ग,
उदयपुर
दिनांक : 25 अप्रैल, 20XX

प्रिय महेन्द्रजी,

राजस्थान के सभी प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित विवरण के अनुसार ज्ञात हुआ कि आपने अपने कस्बे में खुला-शौच मुक्ति का अभियान चलाकर सराहनीय कार्य किया। इस कार्य में आपको जो सफलता मिली, उसके लिए हमारी ओर से साधुवाद!

साथ ही आपने स्वच्छता अभियान को नयी गति देकर अपने कस्बे का जो गौरव बढ़ाया, वह प्रशंसायोग्य तथा अनुकरणीय कार्य है। आप जैसे कर्मठ, सेवाभावी लोगों से ही देश में प्रचलित खुला शौच मुक्त स्वच्छता अभियान सफल हो सकेगा। इस प्रयास के लिए आपको धन्यवाद। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आप जीवन में इसी तरह सामाजिक कार्यों का सफलता से संचालन करते रहेंगे।

आपका शुभेच्छु,
घनश्याम राजावत

औपचारिक-पत्र

प्रार्थना-पत्र

(अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र)

प्रश्न 25. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर का छात्र मानकर स्वयं के अस्वस्थ होने से तीन दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जोधपुर।

विषय–अस्वस्थ होने के कारण अवकाश के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे कल सायंकाल से तेज बुखार आ गया है। रात में चिकित्सक से दवा ली, उन्होंने मुझे तीन दिन तक विश्राम करने की सलाह दी है। इस कारण मैं आज से तीन दिन तक अर्थात् 22.8.20XX से 24.8.20XX तक अपनी कक्षा में उपस्थित नहीं रह सकूँगा।

अत: प्रार्थना है कि उक्त तीन दिनों का अवकाश प्रदान करने की महती कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
अमित
कक्षा IX (अ)

दिनांक : 22 अगस्त, 20XX

(शुल्क मुक्ति के लिए प्रार्थना-पत्र)

प्रश्न 26. अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापकजी को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए जिसमें शिक्षण शुल्क मुक्ति की प्रार्थना की गई हो।

उत्तर—

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
विवेकानन्द माध्यमिक विद्यालय,
अलवर।

विषय–विद्यालय शिक्षण शुल्क मुक्ति के सम्बन्ध में।

मान्यवर महोदय,

सादर निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा नवम (ब) का छात्र हूँ। मेरे माता-पिता बहुत गरीब हैं और मेहनत-मजदूरी से किसी तरह परिवार का खर्चा चलाते हैं। इसलिए वे शिक्षण शुल्क देने में असमर्थ हैं। इस सम्बन्ध में यह स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि गत वर्ष भी मुझे शुल्क-मुक्ति प्राप्त हुई थी और मैं अपनी कक्षा में वार्षिक परीक्षा में प्रथम आया था।

अत: मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी गरीब हालत तथा अध्ययन सम्बन्धी रुचि को ध्यान में रखते हुए आप मेरा शिक्षण शुल्क अवश्य ही माफ कर देंगे तो मुझ पर बड़ा अनुग्रह होगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
रामरतन
कक्षा-IX (ब)

दिनांक : 14.7.20XX

(प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र)

प्रश्न 27. स्वयं को महात्मा गाँधी उच्च माध्य. विद्यालय, चूरू का छात्र मानकर प्रधानाचार्यजी को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए जिसमें अपने विद्यालय में बढ़ते हुए जल-प्रदूषण की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया गया हो।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
महात्मा गाँधी उच्च माध्य. विद्यालय,
चूरू।

विषय–विद्यालय में जल-प्रदूषण के सम्बन्ध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में विगत काफी समय से टंकियों की सफाई नहीं होने से उनमें गन्दगी बढ़ रही है तथा उनमें ढक्कन भी नहीं हैं। ऊपर से जो भी वस्तु उनमें गिरती है, वह सड़-गलकर गन्दगी का रूप ले लेती है। कबूतरों आदि की बीट से भी पानी बदबूदार हो गया है। इस तरह विद्यालय में जल-प्रदूषण निरन्तर बढ़ रहा है।

अत: प्रार्थना है कि आप विद्यालय में जल-प्रदूषण की समस्या का अविलम्ब समाधान करने की कृपा करें। एक सहायक कर्मचारी को प्रति माह में दो बार पन्द्रह दिनों के अन्तराल से टंकियों की सफाई के लिए निर्देश दिया जाए। एक शिक्षक को निरीक्षण की जिम्मेदारी दी जाए। टंकियों के नये ढक्कन बनवा दिये जाएँ। पानी की शुद्धि के लिए संबंधित दवाई का प्रयोग भी समय-समय पर किया जाए और टंकियों को अन्य प्रकार के प्रदूषण से मुक्त रखने के कारगर उपाय किये जाएँ।

प्रार्थी,
दिनांक : 15 मार्च, 20XX मुकुन्द पाराशर
कक्षा-IX (स)

(जुर्माना-माफी के लिए प्रार्थना-पत्र)

प्रश्न 28. आप कक्षा नवम-ब के छात्र हो। आपने समय पर शिक्षण शुल्क जमा नहीं कराया। इसका कारण बताते हुए इस निमित्त जुर्माना माफी के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सवाईमाधोपुर।

विषय–जुर्माना शुल्क मुक्ति के सम्बन्ध में।

मान्यवर महोदय,

सादर निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 9(ब) का छात्र हूँ। घर से मनीआर्डर आने में विलम्ब हो जाने के कारण मैं समय पर शिक्षण-शुल्क जमा नहीं करा सका, इसलिए मुझसे पाँच रुपये जुर्माना माँगा जा रहा है। इस सम्बन्ध में आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इस बार शुल्क जमा कराने में जो देरी हुई, उसमें मेरी कोई लापरवाही नहीं, बल्कि मनीऑर्डर देर से मिलना ही कारण था। भविष्य में मैं शिक्षण-शुल्क समय पर जमा करवाने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

अत: आपसे प्रार्थना है कि उक्त जुर्माना शुल्क माफ करने की महती कृपा कर अनुगृहीत करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
दिनांक : 29.9.20XX अशोक शर्मा
कक्षा-9 (ब)

(स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र के लिए प्रार्थना-पत्र)

प्रश्न 29. माना कि आपके पिताजी का स्थानान्तरण जोधपुर हो गया है, आपको भी उनके साथ वहाँ जाकर अध्ययन करना है। अत: प्रधानाचार्यजी को स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रदान करने के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
संजय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भरतपुर।

विषय—स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र दिलवाने के सन्दर्भ में।

महोदय,

सादर निवेदन है कि मेरे पिताजी का स्थानान्तरण यहाँ से जोधपुर हो गया है। मुझे भी उनके साथ वहीं जाकर अपना अध्ययन करना है। मैं मजबूरी में अब यहाँ अपनी पढ़ाई नहीं कर सकता हूँ।

अत: प्रार्थना है कि मुझे स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र (टी.सी.) प्रदान करने की कृपा करें। टी.सी. का शुल्क मैंने कार्यालय में जमा करा दिया है। मेरी तरफ विद्यालय का कुछ भी बकाया नहीं है।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

दिनांक : 17 अगस्त, 20XX

महेन्द्र कुमार असवाल

कक्षा-IX (स)

पुत्र श्री लालचन्द असवाल

(चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए)

प्रश्न 30. अपने प्रधानाचार्य को चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

अजमेर।

विषय—चरित्र प्रमाण-पत्र दिलवाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि मुझे समाज कल्याण विभाग कार्यालय में आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु अपना चरित्र प्रमाण-पत्र जमा कराना है। मैं कक्षा सप्तम से आपके विद्यालय का नियमित छात्र हूँ तथा इस समय नवम कक्षा में अध्ययन कर रहा हूँ।

अत: प्रार्थना है कि मुझे चरित्र प्रमाण-पत्र प्रदान करने की कृपा करें।

प्रार्थी,

दिनांक 18.10.20XX

बाबूलाल मीणा

कक्षा-9 (अ)

(छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना-पत्र)

प्रश्न 31. स्वयं को अत्यन्त गरीब परिवार का मानकर अपने प्रधानाचार्यजी को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए, जिसमें पठन सामग्री के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करने का निवेदन किया गया हो।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

सीकर।

विषय—छात्र-कल्याण कोष से छात्रवृत्ति दिलाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

नम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा नवम (ब) का छात्र हूँ। मैंने अष्टम कक्षा इसी वर्ष आपके विद्यालय से प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है। दुर्भाग्य से इस वर्ष मेरे पूज्य पिताजी का असामयिक निधन हो गया। इस कारण मेरे सामने पठन-सामग्री खरीदने के लिए धन का अभाव है। आर्थिक स्थिति ठीक न होने से पठन-सामग्री खरीदने में असमर्थ हूँ। राजस्थान सरकार के आदेशानुसार प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को योग्यता के आधार पर छात्रवृत्ति दी जाती है। कक्षा अष्टम के परीक्षा परिणाम के अनुसार मैं इसकी योग्यता को रखता हूँ। मुझे किसी अन्य स्रोत से भी छात्रवृत्ति नहीं मिलती है।

अत: प्रार्थना है कि मुझे छात्र-कल्याण कोष से छात्रवृत्ति दिलाने की कृपा करें, ताकि मैं अपनी शिक्षा नियमित रख सकूँ।

प्रार्थी,

दिनांक : 11 अगस्त, 20XX

रमेश चन्द्र

कक्षा-IX (ब)

प्रश्न 32. आपके बड़े भाई का शुभ विवाह है। इस कारण आपको तीन दिन का अवकाश चाहिए। इसके लिए अपने प्रधानाध्यापकजी को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
आदर्श विद्या मन्दिर,
अलवर।

विषय–विवाहोत्सव पर तीन दिन के अवकाश के सम्बन्ध में।

महोदय,

सादर निवेदन है कि मेरे बड़े भाई का शुभ-विवाह दिनांक 17 नवम्बर, सन् 20XX को हो रहा है। मैं इस विवाह में सम्मिलित होने के लिए तारीख 16 नवम्बर, 20XX को घर जाना चाहता हूँ। अतः प्रार्थना है कि आप मुझे तारीख 16 नवम्बर, 20XX से 18 नवम्बर, 20XX तक तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

मैं श्रीमान् का बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
दिनांक : 15 नवम्बर, 20XX सोहनलाल यादव
कक्षा-IX (स)

(बुक-बैंक से पुस्तकें प्राप्त करने हेतु)

प्रश्न 33. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्यजी को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए जिसमें बुक बैंक से पाठ्य-पुस्तकें दिलवाने का निवेदन किया गया हो।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उ. मा. विद्यालय,
टोंक।

विषय—बुक-बैंक से पाठ्य-पुस्तकें दिलवाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा नवम (स) का छात्र हूँ। मैं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग का गरीब परिवार का हूँ। इस कारण न तो मुझे किसी से पाठ्य-पुस्तकें प्राप्त हुई हैं और न मैं खरीद सका हूँ। बिना पाठ्य-पुस्तकों के मेरी पढ़ाई सही नहीं हो रही है। मुझे बुक-बैंक से कक्षा की सभी पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध हो जाएँ, तो मेरा अध्ययन सुचारु चल सकता है।

अतः प्रार्थना है कि मुझे कक्षा नवम की सभी विषयों की पाठ्य-पुस्तकें विद्यालय के बुक बैंक से दिलवाने की व्यवस्था कर महती कृपा करें।

प्रार्थी,
दिनांक : 28 जुलाई, 20XX रामेश्वर बुनकर
कक्षा-IX (स)

(नियमित शिक्षण के सम्बन्ध में)

प्रश्न 34. अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए, जिसमें हिन्दी के अध्यापक की कमी के कारण नियमित शिक्षण-कार्य न होने का निवेदन किया गया हो।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उ. मा. विद्यालय,
अलवर।

विषय—नियमित शिक्षण-कार्य न होने के सम्बन्ध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि लगभग विगत एक महीने से हमारी कक्षा में हिन्दी विषय की कक्षा नियमित नहीं चल रही है। विद्यालय से हिन्दी के एक अध्यापक महोदय का स्थानान्तरण हो गया तथा हिन्दी के दूसरे अध्यापक महोदय को राज्य सरकार के आदेश से जन-गणना कार्य पर भेज दिया गया है। इस कारण हिन्दी विषय के अध्यापन में व्यवधान आ गया है और अभी तक सारा पाठ्यक्रम पढ़ाना शेष है। इससे हम सभी छात्रों को चिन्ता हो रही है और वे विद्यालय के अनुशासन का ध्यान रखकर शान्त बैठे हुए हैं। इसलिए अतिशीघ्र कोई वैकल्पिक व्यवस्था करके हिन्दी विषय के नियमित शिक्षण के उपाय किये जावें।

अत: प्रार्थना है कि उक्त विषय के अध्यापकजी की अविलम्ब व्यवस्था कराकर हमारा शिक्षण नियमित चले—ऐसा करके हमें अनुगृहीत करें।

प्रार्थी,

दिनांक : 9 सितम्बर, 20XX

नाथूलाल गुर्जर

कक्षा प्रतिनिधि-IX (ब)

(विद्यालय व्यवस्था के सम्बन्ध में)

प्रश्न 35. अत्यधिक गर्मी के कारण प्रार्थना-सभा में आपकी कक्षा का एक विद्यार्थी बेहोश हो गया। तेज धूप में विद्यालय आने-जाने की वजह से कई विद्यार्थियों को लू भी लग चुकी है। पत्र लिखकर प्रधानाचार्य से अनुरोध कीजिए कि गर्मी की छुट्टियाँ पूर्व निर्धारित समय से दो सप्ताह पहले कर दी जाएँ।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय महाराजा उ. मा. विद्यालय,
जयपुर।

विषय–गर्मियों की छुट्टियों के सम्बन्ध में।

महोदय,

सादर निवेदन है कि इस वर्ष अप्रैल माह में इतनी अधिक गर्मी पड़ रही है और लू चल रही है कि इससे कई विद्यार्थी बीमार पड़ गये हैं। गर्मी के अत्यधिक प्रकोप के कारण विद्यालय आने-जाने में काफी परेशानी हो रही है। आज तो प्रार्थना सभा में हमारा एक सहपाठी लू लगने से बेहोश हो गया। इस कारण हम चाहते हैं कि गर्मियों की छुट्टियाँ 15 मई से करने के बजाय 1 मई से कर दी जायें। इस तरह दो सप्ताह पूर्व छुट्टियाँ कर देने से जहाँ विद्यार्थियों को लू-गर्मी से राहत मिलेगी, वहीं हमारे स्वास्थ्य पर भी बुरा असर नहीं पड़ेगा।

अत: प्रार्थना है कि इस बार गर्मियों की छुट्टियाँ पूर्व निर्धारित समय से दो सप्ताह पूर्व कर देने की कृपा करें। यह मेरा ही नहीं, अपितु समस्त छात्रों का विनम्र अनुरोध है।

प्रार्थी,

दिनांक : 30.4.20XX

पंकज राठौड़

प्रतिलिपि : जिला शिक्षाधिकारी, जयपुर।

छात्र प्रतिनिधि IX (अ)

आवेदन-पत्र

(नौकरी के लिए आवेदन-पत्र)

प्रश्न 36. जिला शिक्षा अधिकारी, उदयपुर को एक आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें शिक्षक पद पर नियुक्ति के लिए प्रार्थना की गई हो।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् जिला शिक्षा अधिकारी महोदय,
जिला शिक्षा कार्यालय,
उदयपुर।

विषय–शिक्षक पद पर नियुक्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

दिनांक 17 जून, 20XX को 'राजस्थान पत्रिका' में प्रकाशित विज्ञापन को देखने से ज्ञात हुआ कि उदयपुर जिले की राजकीय प्राथमिक शालाओं के लिए तृतीय श्रेणी के कुछ अध्यापकों की आवश्यकता है। अतः उक्त पदों में से एक पद के लिए मैं भी आवेदन-पत्र आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरी योग्यता का विवरण निम्न प्रकार है—

(1) मैंने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से माध्यमिक एवं सीनियर सैकण्डरी परीक्षा क्रमशः 20XX व 20XX में प्रथम श्रेणियों में उत्तीर्ण की है।

(2) मैंने बी. ए. परीक्षा नियमित परीक्षार्थी के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य और अर्थशास्त्र विषयों में सन् 20XX में उत्तीर्ण की है।

(3) मैंने बी. एड. परीक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में सन् 20XX में उत्तीर्ण की है।

(4) मैं सदैव अपने अध्ययनकाल में प्रथम स्थान पाता रहा हूँ। मुझे समय-समय पर पारितोषिक भी मिले हैं। इसका प्रमाण-पत्र साथ संलग्न है।

(5) मैं तेईस वर्ष का स्वस्थ युवक हूँ। पढ़ने के साथ-साथ खेलों में भी मेरी बड़ी रुचि है। फुटबाल व क्रिकेट का तो मैं दक्ष खिलाड़ी हूँ। अन्य खेलों में भी मेरी बड़ी रुचि रही है। इनका भी प्रमाण-पत्र संलग्न है।

आशा है कि आप इस आवेदन-पत्र पर विचार कर सेवा करने का अवसर देंगे। मैं यथासम्भव अपने कार्य व चरित्र से आपको पूर्ण सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करूँगा।

संलग्न—6 प्रमाण-पत्र प्रमाणित प्रतिलिपि

भवदीय,
रामलाल अग्रवाल
50, कृष्णा कॉलोनी,
उदयपुर।

दिनांक : 15.9.20XX

(नौकरी के लिए आवेदन-पत्र)

प्रश्न 37. जिला विद्यालय निरीक्षक को एक आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें उनके कार्यालय में अस्थायी लिपिक के पद पर नियुक्ति हेतु प्रार्थना की गई हो।

उत्तर–

सेवा में,
श्रीमान् विद्यालय निरीक्षक महोदय,
जिला शिक्षा निरीक्षणालय,
अलवर।

विषय–अस्थायी लिपिक की नियुक्ति के सन्दर्भ में।

महोदय,

निवेदन है कि 'दैनिक नवज्योति' समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार मैं आपके कार्यालय में अस्थायी लिपिक पद के लिए अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यता आदि का विवरण इस प्रकार है—

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर से सैकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण (प्रथम श्रेणी, सन् 20XX)
2. उपर्युक्त बोर्ड से सीनियर सैकण्डरी उत्तीर्ण विषय—विज्ञान-गणित वर्ग (प्रथम श्रेणी सन् 20XX)

मैं इक्कीस वर्ष का स्वस्थ एवं कर्मठ युवक हूँ। मैंने उक्त सभी परीक्षाएँ नियमित परीक्षार्थी के रूप में उत्तीर्ण की हैं। मैं शिक्षा-काल में सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेता रहा हूँ।

मुझे हिन्दी टंकण एवं कम्प्यूटर संचालन का अच्छा अभ्यास है तथा तीन माह तक रसद कार्यालय, जयपुर में अस्थायी लिपिक पद पर कार्य करने का अनुभव भी प्राप्त है। यदि मेरी अस्थायी लिपिक पद पर नियुक्ति की जाती है तो मैं पूर्ण ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा से कार्य कर सभी को संतुष्ट रखने का पूरा प्रयास करूँगा।

अतः प्रार्थना है कि मुझे उक्त पद पर नियुक्ति प्रदान कर अनुगृहीत करें।

संलग्न-1. योग्यता प्रमाण-पत्र
2. चरित्र प्रमाण-पत्र
3. अनुभव प्रमाण-पत्र

दिनांक : 11.8.20XX

विनीत,
विकास राजपुरोहित
पता—15, होप सर्कस, अलवर

[नौकरी के लिए निर्धारित फार्म (प्रपत्र) भरना]

प्रश्न 38. आप अनिता असवाल हैं। आप हिन्दी अध्यापक पद के लिए निर्धारित फार्म (प्रपत्र) पर आवेदन-पत्र भरिए।

उत्तर–

पद का नाम – हिन्दी अध्यापक (टी.जी.टी.)
1. प्रत्याशी का नाम – अनिता असवाल
2. पिता का नाम – श्री नानगराम असवाल
3. पिता का व्यवसाय – बागवानी
4. जन्म तिथि (अंकों में) – 15-09-19XX
5. वर्तमान पता – सी-215, शिप्रापथ, मानसरोवर, जयपुर-20
6. स्थायी पता – गाँव मोरीजा, गुर्जरों की ढाणी, चौमूँ, जयपुर
7. क्या आप अनुसूचित जाति/जनजाति/पिछड़ी जाति हैं? – हाँ-पिछड़ी जाति
8. क्या आप भारतीय नागरिक हैं? – हाँ
9. योग्यताओं का विवरण:-

कक्षा	श्रेणी	वर्ष	बोर्ड	विषय
सैकण्डरी	प्रथम	20XX	मा. शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर	सभी अनिवार्य विषय
सीनियर सैकण्डरी	प्रथम	20XX	मा. शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, हिन्दी साहित्य, समाजशास्त्र
बी.ए.	द्वितीय	20XX	राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	अनिवार्य विषय, हिन्दी साहित्य, इतिहास एवं समाजशास्त्र
बी.एड.	प्रथम, प्रथम	20XX	उक्त	हिन्दी (समाजशास्त्र)

मैं प्रमाणित करती हूँ कि आवेदन-पत्र में दी गई सम्पूर्ण जानकारी व सूचनाएँ मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

10. अध्यापन अनुभव—एक वर्ष
11. पोस्टल ऑर्डर संलग्न (संख्या 4215)
12. संलग्न प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपियाँ–
    1. सैकण्डरी परीक्षा
    2. सीनियर सेकण्डरी परीक्षा
    3. बी.ए परीक्षा
    4. बी.एड. परीक्षा
    5. पिछड़ी जाति का प्रमाण-पत्र
    6. अनुभव प्रमाण-पत्र

दिनांक : 18 जून, 20XX

आवेदक/प्रार्थिनी
(हस्ताक्षर ....)
अनिता असवाल

शिकायती-पत्र

(पुलिस को शिकायती-पत्र)

प्रश्न 39. स्वयं को जोधपुर निवासी मानकर स्थानीय पुलिस अधिकारी को मोहल्ले में हो रहे असामाजिक तत्त्वों के आतंक की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए एक शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में,

थाना अधिकारी महोदय,
पुलिस थाना—चौपासनी रोड,
जोधपुर।

विषय—मोहल्ले में व्याप्त असामाजिक तत्त्वों के आतंक के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि आजकल हमारे मोहल्ले में कुछ गुण्डों ने काफी उत्पात मचा रखा है। ये गुण्डे चौराहों और गलियों के नुक्कड़ों पर खड़े रहते हैं तथा आने-जाने वाली युवतियों से छेड़खानी करते हैं। इस कारण युवतियों एवं अन्य औरतों का घर से निकलना दुर्भर हो गया है। इन गुण्डों से मोहल्ले के दुकानदार भी परेशान हैं। ये दुकानदारों से मनचाहा सामान माँगते हैं, परन्तु कीमत नहीं चुकाते हैं।

ये लोग रात में खुलेआम शराब पीते हैं और हो-हल्ला मचाते हैं। इन पर बड़े-बूढ़े लोगों के द्वारा समझाने का कोई असर नहीं होता, उल्टे ये उन्हें अपमानित कर देते हैं। इस प्रकार हमारे मोहल्ले में इनका आतंक बढ़ जाने से भय और अशान्ति फैल रही है।

अत: आप से प्रार्थना है कि इस सम्बन्ध में शीघ्र उचित कार्यवाही करें, ताकि मोहल्ले के निवासियों को आतंक से मुक्ति मिल सके।

प्रार्थी,
हरिसिंह चौहान, श्यामलाल सारण,
दुर्गाराम, परसादीलाल
एवं समस्त नागरिक

दिनांक : 22.8.20XX

(गन्दगी के सम्बन्ध में शिकायती-पत्र)

प्रश्न 40. अपने मोहल्ले में व्याप्त गन्दगी के सम्बन्ध में नगरपालिका के अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् प्रशासक महोदय,
नगरपालिका, कॉवट।

विषय—मोहल्ले में व्याप्त गन्दगी के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि हमारे मोहल्ले विष्णुपुरी में गन्दगी का फैलाव दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। सफाई कर्मचारी गन्दगी उठाने के बजाय स्थान-स्थान पर उसके ढेर लगा जाते हैं। उनके जाते ही कुत्ते, सुअर आदि उन ढेरियों को पुन: फैला देते हैं। इस सम्बन्ध में हमने सफाई कर्मचारियों एवं उनके जमादार से बात की, तो वे चाय-पानी के लिए पैसों की माँग करते हैं। सफाई-निरीक्षक तो इस मोहल्ले में कभी आता ही नहीं है।

इस तरह की लापरवाही से मोहल्ले के निवासियों का स्वास्थ्य संकट में है। गन्दगी पर मक्खियाँ एवं मच्छर भिनभिनाते रहते हैं, नालियों का पानी सड़क पर फैल रहा है। इससे अनेक संक्रामक बीमारियों के फैल जाने की पूरी आशंका है।

अत: प्रार्थना है कि हमारे मोहल्ले में सफाई की समुचित व्यवस्था करवाने की कृपा करें।

प्रार्थी,
दिनांक : 8.10.20XX क, ख, ग
18, खेतडी रोड, कॉवट

(जल-संकट का शिकायती-पत्र)

प्रश्न 41. जलदाय विभाग, अजमेर के अधिकारी के नाम एक शिकायती पत्र लिखिए जिसमें नगर में व्याप्त जल-संकट का विवरण हो।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् मुख्य अधिकारी महोदय,

जलदाय विभाग, अजमेर।

विषय–नगर में व्याप्त जल-संकट के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि पिछले पन्द्रह दिनों से नगर में पेयजल की समस्या विकराल रूप में उभर रही है। एक तो तीन-चार दिनों में एक ही बार पानी दिया जा रहा है, उसमें भी केवल आधा घण्टे और कम दबाव के साथ दिया जा रहा है। इस कारण घरों में उचित जलापूर्ति नहीं हो रही है और आम नागरिक पानी के लिए तरस रहे हैं। नगर की रिहायशी बस्तियों के गरीब लोग अत्यधिक परेशान हैं। टैंकरों से जो पानी सप्लाई किया जाता है, उस पर काफी भीड़ लगी रहती है और वह पानी पूर्णतया स्वच्छ भी नहीं है।

अत: प्रार्थना है कि नगर में जलापूर्ति की उचित व्यवस्था की जाये। इस कार्य को प्राथमिकता देकर ऐसे उपाय किये जावें, जिनसे आम जनता को जल संकट से मुक्ति मिल सके।

प्रार्थी,
दिनांक : 12 मई, 20XX क, ख, ग
संभ्रान्त नागरिक

(पत्र-सम्पादक को पत्र)

प्रश्न 42. आप स्वयं को बीकानेर निवासी अनिल कुमार मानते हुए परीक्षा के दिनों में नगर में हो रहे शोरगुल की शिकायत का एक पत्र किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को लिखिए।

उत्तर–

श्रीमान् सम्पादक महोदय,

राजस्थान पत्रिका,

जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर।

महोदय,

मैं आपके सम्मानित पत्र के द्वारा प्रशासनिक अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि आजकल परीक्षा के दिनों में हमारे नगर में रात-दिन लाउडस्पीकर बजते रहते हैं। रात में दो-तीन बजे तक विवाहोत्सव, जागरण और भजन-कीर्तन के कार्यक्रम होते रहते हैं। विज्ञापनों का प्रसार-प्रचार करने वाले वाहनों से भी शोर-गुल बढ़ता रहता है। इन सभी कारणों से यहाँ के परीक्षार्थियों को शान्त वातावरण नहीं मिलता है और हमें परीक्षा की तैयारी करने में कठिनाई हो रही है। गत वर्षों तक परीक्षा के दिनों में लाउडस्पीकरों को बजाने की निषेधाज्ञा प्रसारित हो जाती थी, परन्तु इस बार अधिकारीगण अभी तक चुप बैठे हैं।

हमें आशा है कि स्थानीय अधिकारीगण इस तथ्य की ओर ध्यान देकर अविलम्ब ध्वनि-प्रदूषण करने वालों के विरुद्ध निषेधाज्ञा प्रसारित करेंगे तथा परीक्षार्थियों को परीक्षा हेतु शान्त वातावरण उपलब्ध करायेंगे।

निवेदक,
दिनांक : 24.3.20XX अनिल कुमार
मुरलीपुरा क्षेत्र, जयपुर

(छात्रवृत्ति न मिलने की शिकायत)

प्रश्न 43. आप स्वयं को अनुसूचित जाति का छात्र मानते हुए निदेशक, समाज कल्याण विभाग से छात्रवृत्ति न मिलने पर कारण सहित एक शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् निदेशक महोदय,

समाज कल्याण विभाग,

राजस्थान सरकार, जयपुर।

द्वारा—श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय, राजकीय मा. विद्यालय, बीकानेर।

विषय–छात्रवृत्ति न मिलने के सम्बन्ध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं अनुसूचित जाति का छात्र हूँ और वर्तमान में राजकीय मा. विद्यालय, बीकानेर में कक्षा नवम (अ) में पढ़ रहा हूँ। मैंने सत्र के प्रारम्भ में ही आपके समाज कल्याण विभाग के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त करने का फार्म भर दिया था। उसमें मूल जाति प्रमाण-पत्र व पिताजी का आय प्रमाण-पत्र भी लगा दिया था। मैंने यह फार्म अपने विद्यालय के मार्फत भेजा था। परन्तु मुझे अभी तक छात्रवृत्ति नहीं मिली है, जबकि मेरे साथ पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के छात्रों को छात्रवृत्ति की राशि प्राप्त हो गई है। इस कारण मुझे आर्थिक परेशानी उठानी पड़ रही है।

अत: प्रार्थना है कि मेरे आवेदन-पत्र पर तुरन्त निर्णय लेकर मेरी छात्रवृत्ति स्वीकृत करने की कृपा करें। इस सम्बन्ध में जाति प्रमाण-पत्र एवं पिछली कक्षा उत्तीर्ण का प्रमाण-पत्र पुन: भेजा जा रहा है। आप आवश्यक कार्यवाही कर अनुगृहीत करें।

प्रार्थी,

दिनांक : 22 फरवरी, 20XX

रामनारायण बैरवा

(पुत्र श्री रामकिशन बैरवा)

कक्षा नवम (अ)

(मनरेगा कार्यों में अनियमितताओं की शिकायत)

प्रश्न 44. जिला कलेक्टर, सीकर को एक शिकायती-पत्र लिखिए जिसमें गाँव में चल रहे मनरेगा कार्यों में बरती जा रही अनियमितताओं का उल्लेख हो।

उत्तर–

सेवा में,

श्रीमान् जिला कलेक्टर महोदय,

जिला सीकर,

राजस्थान।

विषय–मनरेगा कार्यों में अनियमितता के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि हमारे गाँव में मनरेगा योजना के अन्तर्गत एक पंचायत भवन एवं सड़क का निर्माण कराया जा रहा है। इन दोनों कार्यों में अनेक कमियाँ और अनियमितताएँ देखने को मिल रही हैं, जैसे—

1. काम करने वाले लोगों को समय पर मजदूरी नहीं दी जा रही है।
2. काम पर केवल तीन आदमी लगे हैं तथा आठ लोगों की हाजिरी गुपचुप लगाई जा रही है।
3. मजदूरी का भुगतान निर्धारित रेट पर नहीं किया जा रहा है।
4. गाँव के जरूरतमन्द लोगों को काम नहीं दिया जा रहा है।
5. दोनों कामों में गुणवत्ता का ध्यान नहीं रखा जा रहा है।

अत: प्रार्थना है कि आप इस सम्बन्ध में किसी वरिष्ठ अधिकारी को भेजकर जाँच करवाने की कृपा करें तथा उचित अनुशासनात्मक या दण्डात्मक कार्यवाही कर इस समस्या का समाधान करें।

सधन्यवाद!

निवेदक,
मूलचन्द जाट
ग्राम-क-ख-ग
सीकर

दिनांक 12 अक्टूबर, 20XX

सार्वजनिक-पत्र

(स्वतन्त्रता-दिवस समारोह पर आमन्त्रण)

प्रश्न 45. स्वामी दयानन्द सरस्वती राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर में आयोजित होने वाले स्वतन्त्रता दिवस समारोह हेतु सार्वजनिक आमन्त्रण-पत्र तैयार कीजिए।

उत्तर–

स्वामी दयानन्द सरस्वती राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर
स्वतन्त्रता-दिवस समारोह

महोदय,

प्रतिवर्ष की भाँति विद्यालय प्रांगण में स्वतन्त्रता दिवस समारोह निम्न कार्यक्रमानुसार आयोजित किया जा रहा है—

14 अगस्त स्वतन्त्रता-दिवस की पूर्व संध्या	:	कवि सम्मेलन
अध्यक्षता	:	श्री देवव्रत कविशिरोमणि
समय	:	सायं सात बजे
15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस समारोह	:	प्रातः 8 बजे झण्डारोहण
अध्यक्षता	:	माननीय शिक्षा मन्त्रीजी, राजस्थान
मुख्य अतिथि	:	स्थानीय लोकसभा सदस्य
सांस्कृतिक कार्यक्रम	:	विविध रंगारंग कार्यक्रम (विद्यार्थियों द्वारा)

आप सभी महानुभाव उक्त दोनों कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर समारोह की शोभा और विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाने की कृपा करें। आग्रह,

विनीत,

अध्यक्ष
विद्यालय छात्रसंघ

संयोजक

प्रधानाचार्य
स्वामी द. स. राज. उ. मा. विद्यालय
अजमेर

(विद्यालय के वार्षिकोत्सव का आमन्त्रण)

प्रश्न 46. आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव आयोजित किया जा रहा है। इसमें होने वाले कार्यक्रम का विवरण देते हुए एक सार्वजनिक आमन्त्रण-पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर– **राजकीय कमला नेहरू बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,**
जयपुर (राज.)
विद्यालय का वार्षिकोत्सव

महोदय,

प्रतिवर्ष की भाँति हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव दिनांक 25 जनवरी, 20XX को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विद्यालय परिवार की ओर से आप सादर आमन्त्रित हैं।

–: कार्यक्रमः –

- मंगलाचरण (सरस्वती वन्दना) — छात्राओं द्वारा
- मुख्य अतिथि माननीय शिक्षामन्त्री, राजस्थान का स्वागत (माल्यार्पण) — प्रधानाचार्य द्वारा

- अध्यक्ष श्रीमान् शिक्षा आयुक्त, राजस्थान का स्वागत (माल्यार्पण) — वरिष्ठ शिक्षक द्वारा
- विद्यालय का वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन — प्रधानाचार्य द्वारा
- रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम — छात्राओं के द्वारा
- मुख्य अतिथि महोदय का आशीर्वचन — शिक्षा मन्त्री के द्वारा
- पारितोषिक वितरण एवं अध्यक्षीय भाषण — शिक्षा आयुक्त के द्वारा
- धन्यवाद ज्ञापन — छात्रसंघ अध्यक्ष द्वारा

स्थान : विद्यालय प्रांगण — समय : प्रातः 10:00 बजे

आग्रह :
सचिव,
अभिभावक-शिक्षक संघ

निवेदक,
प्रधानाचार्य
(दूरभाष 2XXXXXX)

व्यावसायिक-पत्र

(प्रकाशक को आदेश-पत्र)

प्रश्न 47. प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रतनगढ़ की ओर से आदर्श प्रकाशन, जयपुर को पाठ्य-पुस्तकें मँगवाने के लिए आदेश-पत्र लिखिए।

उत्तर—

कार्यालय, प्रधानाचार्य,
राजकीय उ. मा. विद्यालय,
रतनगढ़।

पत्रांक पु. 25/104-20XX — दिनांक : 12 जुलाई, 20XX

श्रीमान् व्यवस्थापकजी,
आदर्श प्रकाशन,
जयपुर।

महोदय,

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें उचित कमीशन काटकर वी.पी.पी. द्वारा भिजवा दें—

कृतिका (भाग-2)	10 प्रतियाँ
क्षितिज (भाग-2)	10 प्रतियाँ
हिन्दी व्याकरण-रचना	5 प्रतियाँ
भार्गव हिन्दी शब्दकोश	2 प्रतियाँ

पुस्तकें उचित पैकिंग द्वारा भेजें तथा बिल की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।

भवदीय,
प्रधानाचार्य

(आदेशित माल प्रेषण की सूचना)

प्रश्न 48. आदर्श प्रकाशन, जयपुर की ओर से प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रतनगढ़ को आदेशित माल प्रेषण की सूचना का पत्र लिखिए।

उत्तर—

आदर्श प्रकाशन,
जयपुर।

पत्रांक 944/20XX — दिनांक : 22 जुलाई, 20XX

प्रिय महोदय,

आपके कार्यालय आदेश-पत्र पु. 25/104-20XX दिनांक 12.7.20XX के क्रम में सूचित किया जाता है कि आपके आदेशानुसार समस्त पुस्तकें आज ही वी.पी.पी. द्वारा भेजी जा रही हैं। सम्बन्धित बिल को स्वीकार कर प्राप्ति की सूचना प्रेषित करें। सूचनार्थ प्रेषित है।

भवदीय,
कृते—आदर्श प्रकाशन,
व्यवस्थापक

(सूची-पत्र मँगवाने हेतु पत्र)

प्रश्न 49. निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया को दिसम्बर, 20×× के पश्चात् प्रकाशित हिन्दी साहित्य की पुस्तकों का सूची-पत्र मँगवाने के लिए एक पत्र लिखिए।

उत्तर–

कार्यालय : प्रधानाचार्य,
दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जोधपुर।
दिनांक : 3 सितम्बर, 20XX

श्रीमान् निदेशकजी,
नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16
महोदय,

आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें देखने का अवसर मिला। हमारी संस्था के पुस्तकालय हेतु हिन्दी साहित्य की कुछ पुस्तकें क्रय की जानी हैं। अत: दिसम्बर, 20XX के पश्चात् प्रकाशित अपनी पुस्तकों का सूची-पत्र अवलोकनार्थ यथाशीघ्र भिजवा दें।

भवदीय,
....
प्रधानाचार्य

प्रश्न 50. विक्रेता द्वारा माल विलम्ब से भेजने तथा पैकिंग सही न करने के सम्बन्ध में क्रेता की ओर से एक पत्र लिखिए।

उत्तर–

प्रधानाचार्य,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बीकानेर।
प्रेषिति–चौखम्भा प्रकाशन मन्दिर,
22, शक्तिनगर, नयी दिल्ली।

क्रमांक: 97/16/20XX दिनांक 09 जुलाई, 20XX

महोदय,

हमारे आदेश-पत्र के अनुसार आपने जो पुस्तकें भेजी हैं, वे काफी विलम्ब से भेजी हैं। साथ ही पुस्तकों के पार्सल की पैकिंग ठीक ढंग से नहीं की गई है, जिस कारण कुछ पुस्तकें भीगी हुई तथा फटी हुई हालत में मिली हैं। ऐसी पुस्तकों को पुस्तकालय में रख पाना असम्भव है। इस कारण ये पुस्तकें वापिस भेजी जा रही हैं। आप यथाशीघ्र उनके बदले अन्य पुस्तकें उचित पैकिंग करके भेजने का कष्ट करें।

बिल का भुगतान माल-प्राप्ति के बाद ही किया जा सकेगा।

सधन्यवाद।

भवदीय,
प्रधानाचार्य (हस्ताक्षर)

(आपूर्तिकर्ता को पत्र)

प्रश्न 51. प्रधानाचार्य, राजकीय सीनियर सैकण्डरी विद्यालय, तारानगर की ओर से स्पोर्ट सर्विसेज, दरियागंज, दिल्ली को खेलकूद सम्बन्धी सामान की आपूर्ति के लिए एक पत्र लिखिए।

उत्तर–

कार्यालय : प्रधानाचार्य,
राजकीय सीनियर सैकण्डरी विद्यालय,
तारानगर (राजस्थान)।

पत्रांक : 25/12/20XX दिनांक 17 अगस्त, 20XX

श्रीमान् व्यवस्थापक,
स्पोर्ट सर्विसेज,
दरियागंज, दिल्ली।

विषय–खेलकूद के सामान की आपूर्ति के क्रम में।

महोदय,

कृपया निम्नलिखित सामान उचित/मान्य कमीशन काटकर यथाशीघ्र भेजने की व्यवस्था करें–

लेदर फुटबाल 11 नम्बर किट सहित	10 नग
वॉलीबॉल 7 नम्बर किट सहित	12 नग
हॉकी स्टिक श्रेष्ठ क्वालिटी की	25 नग
वॉलीबॉल नेट-सेट	10 नग
हॉकी बॉल (लाल + सफेद)	30 नग
बैडमिण्टन रैकट सैट	15 नग

उक्त सामान अपने प्रतिनिधि के मार्फत उचित पैकिंग में भेजें। बिल की दो प्रतियाँ उचित टैक्स-निर्देश के अनुसार कार्यालय में प्रस्तुत करें।

भवदीय,
हस्ताक्षर (..................)
प्रधानाचार्य

(आपूर्तिकर्ता द्वारा माल-प्रेषण के सम्बन्ध में)

प्रश्न 52. स्पोर्ट सर्विसेज, दरियागंज, दिल्ली की ओर से प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तारानगर को माल आपूर्ति के सम्बन्ध में पत्र लिखिए।

उत्तर–

प्रबन्धक,
स्पोर्ट सर्विसेज,
दरियागंज, दिल्ली।

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
तारानगर (राजस्थान)।

पत्रांक : 22/20XX दिनांक 12 सितम्बर, 20XX

महोदय,

आपके पत्रांक 25/12/20XX दिनांक 17-8-20XX के क्रम में सूचित किया जाता है कि आदेशित सामान की आपूर्ति डेढ़ माह बाद ही की जा सकेगी। क्योंकि इनमें से कुछ सामान उत्पादक कम्पनियों से अभी नहीं मिल रहा है। अत: निर्धारित समय तक सामान की आपूर्ति सम्भव नहीं है। एतदर्थ खेद है।

उत्पादक कम्पनियों से सामान मिलते ही आपके आदेश का सामान प्रतिनिधि के मार्फत तुरन्त भेज दिया जायेगा।

भवदीय,
(हस्ताक्षर............)
व्यवस्थापक

प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन

भूत अथवा वर्तमान की विशेष घटना, प्रसंग या विषय के प्रमुख कार्यों के क्रमबद्ध और संक्षिप्त विवरण को प्रतिवेदन कहते हैं। प्रतिवेदन अंग्रेजी के रिपोर्ट (Report) शब्द के अर्थ में प्रयुक्त होता है। समाचार-पत्र के लिए किसी घटना अथवा दुर्घटना का विवरण रिपोर्ट या प्रतिवेदन है।

दूसरे शब्दों में—वह लिखित सामग्री, जो किसी घटना, कार्य-योजना, समारोह आदि के बारे में प्रत्यक्ष देखकर या छानबीन करके तैयार की गई हो, प्रतिवेदन या रिपोर्ट कहलाती है।

प्रतिवेदन लिखने के लिए निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए-

- प्रतिवेदन हमेशा संक्षिप्त होना चाहिए।
- प्रतिवेदन का शीर्षक स्पष्ट और शिष्ट होना चाहिए।
- प्रतिवेदन की भाषा सरल और साफ-साफ होनी चाहिए।
- शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो मुख्य विषय को रेखांकित करता हो।
- घटना, प्रकरण आदि जो भी हुआ हो उसकी तिथि और समय की सूचना दी जानी चाहिए।
- प्रतिवेदन में केवल महत्त्वपूर्ण बातों को ही लिखना चाहिए।
- कोई घटना, प्रकरण या किसी छानबीन की मुख्य बातें प्रतिवेदन में अवश्य लिखी जानी चाहिए।
- व्याख्या सही क्रमानुसार रूप में हो।
- निर्णयों की जानकारी देनी चाहिए।
- प्रतिवेदन लिखते समय भाषा में प्रथम पुरुष का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
- पुनरुक्ति दोष नहीं हो, यानी एक ही बात को बार-बार भिन्न-भिन्न रूपों में नहीं लिखना चाहिए।

प्रतिवेदन के प्रकार—प्रतिवेदन के तीन प्रकार होते हैं—

1. व्यक्तिगत प्रतिवेदन
2. संगठनात्मक प्रतिवेदन
3. विवरणात्मक प्रतिवेदन।

प्रतिवेदन का उद्देश्य—प्रतिवेदन का उद्देश्य बीते हुए समय के विशेष अनुभवों का संक्षिप्त संग्रह करना है ताकि आगे किसी तरह की भूल या भ्रम न होने पाये। प्रतिवेदन में उसी कठोर सत्य की चर्चा रहती है जिसका अच्छा या बुरा अनुभव हुआ है। प्रतिवेदन का दूसरा लक्ष्य भूतकाल को वर्तमान से जोड़ना भी है। भूत की भूल से लाभ उठाकर वर्तमान को सुधारना उसका मुख्य प्रयोजन है।

प्रश्न 1. विद्यालय में आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर— **राजकीय विद्यालय, जयपुर में खेलकूद प्रतियोगिता**

जयपुर, 27 सितम्बर। राजकीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल, जयपुर के क्रीड़ागन पर 20 से 27 सितम्बर तक जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में जिले के 20 सीनियर सैकण्डरी स्कूल से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रतिदिन दो चरणों में प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक तथा सायंकाल 3 बजे से 6 बजे तक किया गया। वॉलीबॉल, हॉकी, बैडमिण्टन, भाला फेंक, ऊँची कूद, लम्बी कूद, टेबिल टेनिस, शतरंज आदि 25 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन समापन समारोह का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता जिला शिक्षा अधिकारी ने की। उन्होंने प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन के लिए प्रधानाचार्य को धन्यवाद और प्रतिभागियों को बधाई दी। अन्त में प्रधानाचार्य जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रश्न 2. 'विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी' पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **'विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन'**

भरतपुर, 17 दिसम्बर। स्थानीय सेंट पीटर्स स्कूल में एक 'विज्ञान प्रदर्शनी' का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए 'वैज्ञानिक सिद्धान्तों' के आधार पर बने उपकरणों के मॉडल्स का निर्माण कर दर्शकों को प्रभावित किया। इस प्रदर्शनी में स्थानीय स्कूलों के 20 छात्र-छात्राओं ने भाग लेकर अपनी वैज्ञानिक अभिरुचि का प्रदर्शन किया। एक मॉडल में परमाणु की संरचना को प्रदर्शित किया गया था तो एक अन्य मॉडल में 'मोबाइल' की कार्यप्रणाली प्रदर्शित की गई थी। कुछ मॉडल गुरुत्वाकर्षण, सर्फेसटेंशन, मेकेनिकल ऊर्जा पर आधारित थे। विद्यालय की छोटी कक्षाओं के छात्र-छात्राएँ जहाँ उत्सुकता से इन 'मॉडल्स' को देखकर ज्ञानार्जन कर रहे थे, वहीं गुरुजन भी अपने शिष्यों की प्रतिभा की सराहना कर उनका उत्साहवर्द्धन कर रहे थे। प्रदर्शनी में छात्र-छात्राएँ बड़ी रुचि के साथ अपने 'मॉडल्स' को समझाने का प्रयास करते दिखाई दिए। सर्वश्रेष्ठ मॉडल 'मेकेनिकल ऊर्जा' को पुरस्कृत किया।

प्रश्न 3: आप प्रेस संवाददाता मुकेश चौधरी हैं। जयपुर से अजमेर जाते हुए आपने एक ट्रक और जीप की टक्कर देखी जिसमें कई लोगों की मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना का 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन अपने समाचार-पत्र को भेजें।

उत्तर– **सड़क दुर्घटना में 3 की मृत्यु 5 घायल**

जयपुर, 4 मार्च। आज दोपहर जयपुर-अजमेर मार्ग पर एक जीप और ट्रक में भीषण टक्कर हो गई। जयपुर से शादी में जा रहे एक ही परिवार के लोगों की जीप, अजमेर से आते ट्रक से टकरा गई। जीप के ड्राइवर तथा एक स्त्री और एक पुरुष की मौके पर ही मृत्यु हो गई। जीप की पाँच सवारियाँ घायल हो गईं।

सूचना पर पुलिस पहुँच गई। घायलों को अस्पताल भेजा गया। उनमें से दो की हालत गम्भीर बताई गई है। ट्रक ड्राइवर ने दुर्घटना-स्थल से भागने की कोशिश की लेकिन पुलिस ने लोगों के सहयोग से उसे कुछ दूरी पर पकड़ लिया। गलती जीप के ड्राइवर की प्रतीत होती है। उसने तेज रफ्तार से जीप चलाते हुए ट्रक को बगल से टक्कर मार दी। पुलिस ने मृतकों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है तथा उनके परिजनों को सूचित कर दिया है।

प्रश्न 4. अपने मोहल्ले में हुई चोरी की वारदात पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **पाँच लाख नगद एवं जेवरात चोरी**

चूरू, 20 जून 20××। हमारे मोहल्ले में लाला खजूरी दास के यहाँ चोरी हो गई। चोरी रात के लगभग 12 बजे हुई। घर के सभी लोग शादी समारोह में गए थे। हमारे मोहल्ले में हर रोज रात 11 बजे से 2 बजे तक बिजली गुल हो जाती है। चोरों ने इसका भरपूर फायदा उठाया। वे पीछे के दरवाजे से कोठी में दाखिल हुए। उन्होंने घर की प्रत्येक चीज का मुआयना किया। जिसके कारण कमरों की सभी अलमारियों का सामान फैला हुआ था। वे अपने साथ 50,000 रुपये नकद, 21 तौले सोना और अन्य कीमती सामान ले गए। लालाजी को चोरी की बात रात्रि 2:30 बजे पता चली जब वे वापिस लौटे। वे कुछ गणमान्य व्यक्तियों को साथ लेकर थाने में पहुँचे। पुलिस ने चोरी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। वह चोरों की तलाश में जुट गई है। इंस्पेक्टर महोदय ने आश्वासन दिया है कि जल्द ही चोरों को पकड़ लिया जायेगा।

प्रश्न 5. आपके विद्यालय द्वारा सप्ताह भर चलने वाले संगीत और नृत्य उत्सव का आयोजन किया गया था। अपने विद्यालय की पत्रिका के लिए 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर– **नृत्यगान सप्ताह सम्पन्न**

जयपुर, 26 अगस्त, 20××। हमारे स्कूल ने एक सप्ताह तक चलने वाले संगीत और नृत्य उत्सव का आयोजन किया, जो 18 अगस्त को शुरू हुआ और 26 अगस्त को समाप्त हुआ, जिसमें हमारे शहर के 15 स्कूलों ने भाग लिया। यह एक महान संगीत और नृत्य कार्यक्रम था जिसमें भारतीय शास्त्रीय संगीत और लोककथाओं और पश्चिमी संगीत और नृत्य रूपों की एक विस्तृत विविधता देखी गई। सप्ताह भर चलने वाले इस उत्सव के दौरान हमारे स्कूल में कई प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था और इनमें प्रसिद्ध संगीतकारों और प्रतिष्ठित नर्तकियों ने भाग लिया था। इस उत्सव के समापन के दिन शास्त्रीय और पश्चिमी नृत्य और संगीत के एक अद्वितीय संयोजन को प्रदर्शित करने वाला दो घण्टे का कार्यक्रम रखा गया था। यह सभी संगीत और नृत्य प्रेमियों के लिए खुशी की बात थी और हमारे कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण भी था।

प्रश्न 6. आपके विद्यालय में पिछले सप्ताह रक्तदान शिविर लगाया गया। अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका के लिए इस शिविर पर एक प्रतिवेदन लिखें जो 100 शब्दों में हो।

उत्तर– विद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन

हमारे विद्यालय में पिछले सप्ताह रेडक्रास सोसायटी द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। प्राचार्य महोदय ने स्वयं छात्रों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्वयं रक्तदान कर छात्रों के सामने उदाहरण पेश किया। उन्होंने बताया कि आपके द्वारा दान की गई रक्त की एक बूँद भी दूसरे को जीवन दे सकती है। हमारे विद्यालय के कई अध्यापकों और छात्रों ने इस शिविर में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यह शिविर सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक चला। रेडक्रास सोसायटी के जिला अधिकारियों द्वारा रक्तदान करने वालों को प्रमाण-पत्र दिए गए। रक्तदान करने वालों को शारीरिक कमजोरी महसूस न होने के लिए उन्हें फलों का रस पिलाया, साथ ही कुछ फल भी दिए।

प्रश्न 7. पार्क में हुई छेड़छाड़ की घटना पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– चार मनचले गिरफ्तार

जयपुर। स्थानीय पार्क में आम दिनों की तरह ही कल भी भारी भीड़ थी। लोग काफी संख्या में मौजूद थे। बच्चे, बूढ़े, युवक-युवतियाँ सभी पार्क में घूमने-फिरने का आनन्द उठा रहे थे। तभी अचानक हलचल-सी शुरू हो गई। जिसे देखो वही पार्क के पश्चिमी छोर की ओर भागा जा रहा था। पता चला कि कुछ मनचले युवकों ने लड़की से छेड़छाड़ की है। पता चलते ही लोगों ने उन युवकों को पकड़ लिया। लड़की ने सारी घटना कह सुनाई। इसके बाद लोगों में रोष भर आया। उन्होंने उन मनचले युवकों की पिटाई कर दी। अन्त में लड़कों ने सभी से माफी माँगी। लोगों में बहुत गुस्सा भरा था अत: एक बुजुर्ग व्यक्ति ने मोबाइल से पुलिस को बुला लिया। पुलिस सभी मनचले युवकों को पकड़कर ले गई। लड़की के बयान पुलिस ने दर्ज कर लिए हैं। आगे की कार्यवाही जारी है।

प्रश्न 8. चुनाव हुआ और आप वोट डालने गए। एक प्रेक्षक के रूप में, आपने बूथ पर जो कुछ देखा, उस पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– चुनाव का दृश्य

जयपुर, 10 फरवरी 20××। को सरपंच के चुनाव के लिए मैं वोट डालने गया, तब पोलिंग बूथ के सामने लोगों की लम्बी कतार थी। जो अन्दर जाने के लिए अपनी बारी का इन्तजार कर रहे थे। बूथ के अन्दर एक तरफ दो पोलिंग ऑफिसर और एक पीठासीन अधिकारी और दूसरी तरफ कुछ पोलिंग एजेंट थे। एक मतदान अधिकारी मतदान के नाम की जाँच कर रहा था, उस पर निशान लगा रहा था और पहचान के प्रमाण की माँग कर रहा था। दूसरा मतदान अधिकारी मतदाता के बाएं हाथ की तर्जनी पर अमिट स्याही का निशान लगा रहा था। तब पीठासीन अधिकारी ने उन्हें मतदान पेटी में जाने के लिए कहा, जहाँ उन्होंने मतदान के लिए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन तैयार की थी। मतदाता अन्दर गया, अपनी पसन्द का बटन दबाया और बूथ से चला गया।

प्रश्न 9. पिछले रविवार को आप अपने एक मित्र को देखने अस्पताल गए जो वहाँ भर्ती था। अस्पताल के दृश्य पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर– अस्पताल का दृश्य

जयपुर, 9 अगस्त 20××। रविवार को मैं अपने एक मित्र को देखने बराला अस्पताल, चौमूँ गया, जो किसी बीमारी के कारण वहाँ भर्ती था। एंट्री गेट पर रजिस्ट्रेशन काउण्टर था। डॉक्टरों से परामर्श करने की अनुमति देने से पहले मरीजों को अपना पंजीकरण कराना पड़ता था। रजिस्ट्रेशन काउण्टर मरीजों से खचाखच भरा रहा। रजिस्ट्रेशन काउण्टर के पास बरामदे के दोनों तरफ डॉक्टरों के ओपीडी कक्ष थे। ओपीडी के मरीज वहाँ अपना नम्बर आने का इन्तजार कर रहे थे। डॉक्टर के कमरे के बाद सर्जिकल वार्ड था। यह वार्ड मरीजों से भरा हुआ था। यहाँ ऑपरेशन के बाद मरीजों को भर्ती किया गया। सर्जरी के बाद हर तरह के मरीज वार्ड के अन्दर थे। नर्सें मरीजों को देख रही थीं। उनमें से कुछ रोगियों के लिए दवाइयाँ लगा रही थी और घावों पर पट्टी बांध रही थी। वे मरीजों के प्रति चिंतित दिखीं। मेडिसिन वार्ड आखिरी कमरा था। यहाँ सामान्य मरीज बिस्तर पर लेटे हुए थे। अस्पताल का पूरा नजारा कोलाहल से भरा हुआ था।

प्रश्न 10. आपके विद्यालय में विदाई समारोह का दिन था। इसके बारे में 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– विदाई समारोह

25 फरवरी, 20××। हमारे स्कूल में दसवीं और बारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए 20 फरवरी को विदाई समारोह आयोजित किया गया था। समारोह की शुरुआत सुबह 8 बजे हमारे स्कूल की प्रार्थना से हुई। डी. ई. ओ. मुख्य अतिथि थे। स्वागत भाषण इको क्लब के शिक्षक श्री अवैया ने दिया। इसके बाद नौवीं व ग्यारहवीं के विद्यार्थियों ने अपने विचार

व्यक्त किए। शिक्षकों ने भी अपने भाषण में विदाई वाले छात्रों को आशीर्वाद दिया। स्कूल के प्रिंसिपल और डी.ई.ओ. साहब ने भी एक छोटा-सा प्रेरक और विचारणीय भाषण दिया। दसवीं और बारहवीं के छात्रों ने परीक्षा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का वादा किया और एक उज्ज्वल कॅरियर बनाने का इरादा किया। अन्ततः ग्रुप फोटोग्राफ लिया गया। अल्पाहार करके सब चले गए।

प्रश्न 11. कॉलोनी के पार्क में आयोजित 'वृक्ष बचाओ' समारोह पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न**

जयपुर, 25 फरवरी, 20××। को संगम पार्क राणा प्रताप बाग कॉलोनी के मुख्य पार्क में आर. डब्ल्यू. ए. के सदस्यों द्वारा सूखते पेड़ों को बचाने के लिए समारोह आयोजित किया गया। इसमें कॉलोनी के बच्चे, युवा और गणमान्य सदस्यों को भी शामिल किया था। आर. डब्ल्यू. ए. के अध्यक्ष ने गत जुलाई में लगाए गए पौधों के सूखने पर चिन्ता प्रकट करते हुए उपस्थित लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने बच्चों तथा युवाओं से इन सूखते पौधों को बचाने का आह्वान किया। उपस्थित व्यक्तियों से दो-दो पौधे तथा नववृक्षों को गोद लेकर उन्हें बचाने का अनुरोध किया। व्यर्थ बह रहे पानी को पार्क की ओर मोड़ने तथा पौधों की सिंचाई करने की बात सुझाई। उन्होंने लोगों से इस 'वृक्ष बचाओ समारोह' को सफल बनाने का अनुरोध किया, जिससे सभी को शुद्ध पर्यावरण मिल सके। लोगों के पेड़ बचाने की वचनबद्धता के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रश्न 12. उज्ज्वल आवास समिति में मनाए गए कन्या भ्रूण-हत्या के विरुद्ध जन-जागरूकता कार्यक्रम पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जागरूकता कार्यक्रम**

8 मार्च, 20××। को उज्ज्वल आवास समिति ने अपनी कॉलोनी हर्ष बिहार में कन्या भ्रूण-हत्या के विरुद्ध जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर कॉलोनी के अधिकांश लोग उपस्थित थे, जिनमें युवा बच्चे, पुरुष तथा महिलाओं ने उपस्थिति दर्ज कराई। कॉलोनी की महिलाओं ने गीत और लघुनाटिका से नारी की महत्ता पर प्रकाश डाला। समिति के अध्यक्ष ने भावपूर्ण भाषण दिया, जिसमें नारी और पुरुष को जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए बताते हुए लिंगानुपात में समन्वय बनाए रखने पर बल देने को कहा गया तथा नारियों के बिना समाज और जीवन में नीरसता छाने की बात कही। उन्होंने युवाओं को कन्या भ्रूण-हत्या न करवाने की शपथ दिलवाई तथा अन्त में व्यक्तियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

प्रश्न 13. विद्यालय में दीपावली की पूर्व सन्ध्या पर आयोजित शुभकामना एवं सन्देश सम्बन्धी कार्यक्रम पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **विद्यार्थियों को दीपावली की शुभकामना सहित कर्तव्य बोध**

2 नवम्बर, 20××। को हमारे विद्यालय में दीपावली की पूर्व सन्ध्या पर एक लघु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विद्यालय की प्राचार्या ने अपने संक्षिप्त भाषण में विद्यार्थियों को इस पावन पर्व की खुशियाँ बढ़ाने तथा उन्हें लोगों में बाँटने के लिए प्रेरित करते हुए, पटाखों से दूर रहने के लिए कहा तथा आस-पास के किसी गरीब बच्चे को उपहार एवं मिष्ठान्न देकर उसके साथ खुशी बाँटने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बच्चों को पटाखों के शोर एवं धुएँ से उत्पन्न प्रदूषण से अवगत कराते हुए, इससे वृद्धों और रोगियों को होने वाली परेशानी के बारे में बताया। उन्होंने पटाखा रहित दीपावली मनाकर उन्हें भी खुश करने की सलाह दी ताकि उनकी दीपावली भी मंगलमय हो सके। अन्त में पुनः दीपावली की शुभकामनाएँ देते हुए इसका समापन किया।

प्रश्न 14. विद्यालय में आयोजित आपदा-प्रबन्धन सम्बन्धी मॉक ड्रिल पर 100 शब्दों में प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **आपदा प्रबन्धन सम्बन्धी मॉक ड्रिल सम्पन्न**

2 नवम्बर, 20××। हमारे विद्यालय में आपदा प्रबन्धन सम्बन्धी मॉक ड्रिल का आयोजन 3 बजे किया गया। इसकी सूचना छात्रों को प्रार्थना-स्थल पर दे दी गई थी। इसमें छात्रों को भूकम्प से बचाव सम्बन्धी जानकारी एवं बचाव के उपायों को बताया गया। नियत समय पर जैसे ही हूटर बजाया गया, छात्र अपने-अपने बस्ते सिर पर रखे खुले मैदान की ओर भागने लगे तथा पंक्तिबद्ध खड़े हो गए। विद्यालय के पी.टी.आई. ने इतने कम समय में वहाँ अचानक सुरक्षित एकत्र होने के लिए बच्चों के प्रयास की प्रशंसा की। उन्होंने एक मेज के माध्यम से इस आपदा से बचाव का मॉक ड्रिल

करवाया तथा ऐसी प्राकृतिक आपदा के समय भगदड़ न मचाने, अफवाहें न फैलाने, अफवाहों पर विश्वास न करने की सीख दी तथा घायलों को अस्पताल पहुँचाने के उपाय बताने के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

प्रश्न 15. आप क ख ग हैं। दिल्ली के रघुनाथ मन्दिर के नजदीक जबरदस्त बम विस्फोट हुआ है। विस्फोट के समय आप वहीं मौजूद थे। अपने अखबार के लिए इस विस्फोट का 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **रघुनाथ मन्दिर के नजदीक जबरदस्त बम विस्फोट**

दिल्ली, आज दिनांक 10 अगस्त, 20XX को दिल्ली के विश्व प्रसिद्ध रघुनाथ मन्दिर के नजदीक जबरदस्त बम विस्फोट हो गया। विस्फोट शाम को लगभग 5:30 बजे हुआ। धमाके के साथ ही लोगों में हाय-तौबा मच गई। विस्फोट इतना जबरदस्त था कि कई दुकानों के शीशे तक टूट गए। शाम के समय इस बाजार में बहुत भीड़ होती है। बम के छर्रे कई लोगों को लगे तथा मकानों की दीवारों में दरार पड़ गई। कई वाहन जलकर राख हो गए। इस विस्फोट में 10 लोग मौके पर ही मारे गए। लगभग 3 दर्जन से ज्यादा लोग घायल हुए। घायलों में महिलाएँ ज्यादा थीं। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँचकर स्थिति को नियन्त्रण में कर लिया तथा घायलों को अस्पताल पहुँचाया।

प्रश्न 16. आपके विद्यालय ने एक वयस्क साक्षरता शिविर का आयोजन किया, उस पर एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **वयस्क साक्षरता शिविर**

7 सितम्बर, 20XX को हमारे विद्यालय ने एक वयस्क साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया था। शिविर की गतिविधियों को स्कूल के सांस्कृतिक समाज द्वारा संचालित किया गया था और इसमें कुल 25 स्वयंसेवक थे। शिविर की शुरुआत मुख्य अतिथि श्रीमती कविता नाइक, एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता के स्वागत भाषण के साथ हुई। इस शिविर में उन वयस्कों के लिए शैक्षिक विकल्प प्रदान किए गए थे, जिन्होंने अवसर खो दिया है। कैंप में 400 लोग शामिल हुए। उन्हें योग्यता अनुसार बाँटकर निःशुल्क पुस्तकें और स्टेशनरी उपलब्ध कराई तथा उन्हें पढ़ने और लिखने में सक्षम होने के लिए मूल बातें सिखाई गईं। डेस्क और ब्लैकबोर्ड के समेत सभी इन्तजाम पहले से कर लिए गए थे। प्रतिभागियों को जलपान भी कराया गया। मुख्य अतिथि ने स्वयंसेवकों के बीच भागीदारी के प्रमाण-पत्र वितरित किए। शिविर सकारात्मक नोट पर समाप्त हुआ।

प्रश्न 17. आप महात्मा गाँधी एनिमल केयर होम गए थे। जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार देखकर आपको सुखद आश्चर्य हुआ। इस पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **महात्मा गाँधी एनिमल केयर होम में जानवरों की अच्छी देखभाल**

6 अगस्त, 20XX को मैं महात्मा गाँधी एनिमल केयर होम गया था। यह परित्यक्त पालतू जानवरों, बचाए गए जानवरों और सड़कों पर घायल हुए पशु-पक्षियों का घर है। कई पुराने जानवर भी थे। जानवरों की देखभाल की गुणवत्ता को देखकर आश्चर्य हुआ। उनके लिए परिवार जैसा माहौल है। पशुगृह में सुसज्जित चिकित्सा कक्ष से लेकर पशु चिकित्सक सर्जन तक सभी सुविधाएँ हैं। पक्षियों को बेरहमी से पिंजरों में नहीं रखा जा रहा है। उनके पास खेलने और पालन-पोषण के लिए पर्याप्त जगह के साथ हरा-भरा वातावरण है। पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की टीम द्वारा अस्वस्थ लोगों की नियमित जाँच की जाती है। महात्मा गाँधी एनिमल केयर होम उन पशु-पक्षियों की जरूरतों को समझकर और उनकी जरूरतों को पूरा करके एक शानदार काम कर रहा है जो खुद के लिए बोल नहीं सकते। अनुभव भारी था।

प्रश्न 18. आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया, उस पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **वार्षिकोत्सव आयोजन**

बाँसवाड़ा, 02 फरवरी, 20XX को हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव हुआ। इसमें मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी, बाँसवाड़ा श्री सुरेन्द्र मोहन थे। मुख्य अतिथि के आगमन पर प्रधानाचार्यजी ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। सरस्वती वन्दना से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम विद्यालय के छात्र-छात्राओं के द्वारा एकल और सामूहिक गान, नृत्य और कव्वाली प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम के मध्य में विद्यालय के प्रधानाचार्य ने विद्यालय की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम का अगला चरण फिर प्रारम्भ हुआ। इस बार 'वीर शिवाजी' नाटक की प्रस्तुति इतनी मनमोहक रूप में की गयी कि दर्शक मंत्र-मुग्ध होकर उसे देखते ही रह गये। कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि का सारगर्भित तथा छात्रों के लिए प्रेरणादायी भाषण हुआ। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहे छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया तथा अपने भाषण में विद्यालय एवं कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मिष्ठान्न वितरण के पश्चात् कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ।

प्रश्न 19. आपकी कक्षा के छात्र एक दिन के शैक्षिक भ्रमण हेतु आगरा बस द्वारा गये। कक्षानायक के रूप में आप शैक्षिक भ्रमण पर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर– **शैक्षिक भ्रमण सम्पन्न**

दौसा, 22 दिसम्बर। दो दिन पूर्व कक्षाध्यापकजी के संरक्षण में कक्षा के पैंतालीस छात्र बस द्वारा एक दिन के शैक्षिक भ्रमण पर आगरा गये। प्रात: छ: बजे विद्यालय परिसर से बस आगरा के लिए रवाना हुई। लगभग दो घण्टे की यात्रा के बाद आगरा शहर में होकर ताजमहल के पास जाकर बस रुकी। शिक्षकजी के आदेशानुसार सब छात्र ताजमहल देखने गये। ताजमहल का अद्भुत नजारा देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये। ताजमहल की वास्तुकला, कलात्मक कारीगरी और स्थापत्य-कला के साथ ही यमुना का उसके सहारे बहने का दृश्य कितना मनमोहक था। दीवार पर बनी काले पत्थर की रेखाओं को देखकर ऐसा लगता था कि अभी पास जाकर उनको स्पर्श कर लें, लेकिन जैसे ही उनको छूने पहुँचे, वे हमारे स्पर्श से दूर हो गयीं। प्राकृतिक छटा के बीच सजा ताजमहल वास्तव में ही दुनिया का एक अद्भुत आश्चर्य है। इस ऐतिहासिक नजारे को देखकर हम अपनी बस में बैठ गये। रास्ते में मनोविनोद करते हुए रात दस बजे अपने विद्यालय परिसर में पहुँचे। घर जाकर खाना खाया और स्मृतियों में डूबकर सो गये। वह दृश्य आज भी हमारे लिए अविस्मरणीय है और रहेगा।

प्रश्न 20. विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर में बाल-श्रम की शिकायतें आने पर स्वयं को मानवाधिकार समिति का सदस्य मानते हुए 100 शब्दों में एक जाँच-रिपोर्ट तैयार कीजिए।

उत्तर– **बाल-श्रम की जाँच-रिपोर्ट**

जयपुर, 28 दिसम्बर। मानवाधिकार समिति के सभी सदस्यों ने विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र के विभिन्न कारखानों का निरीक्षण कर वहाँ पर बाल-श्रम की स्थिति की जानकारी प्राप्त की। जाँच करने से यह पता चला कि—

(i) विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र में पचपन बाल-श्रमिक काम करते हैं, उन्हें पूरा वेतन नहीं मिलता है। उनसे अधिक काम लिया जाता है और अवकाश नहीं दिया जाता है। (ii) बाल-श्रमिकों के मौलिक अधिकारों का हनन होता है। उन्हें डरा-धमका कर क्षमता से अधिक काम कराया जाता है। (iii) बाल-श्रमिकों का कोई संगठन नहीं है। इस कारण वे अपनी शिकायत भी नहीं कर पाते हैं। (iv) कारखानों के मालिकों का व्यवहार बाल-श्रमिकों की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी है।

इन स्थितियों एवं शिकायतों की जाँच-रिपोर्ट प्रस्तुत समिति संस्तुति करती है कि श्रम-न्यायालय में परिवाद दर्ज किया जाए और बाल-श्रमिकों को उचित न्याय दिलाया जाए।

प्रश्न 21. परीक्षा के दिनों में नगर में ध्वनि-प्रसारक यन्त्रों के अनुचित प्रयोग से सम्बन्धित 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर– **ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों पर प्रतिबन्ध जरूरी**

जयपुर, 22 मार्च। आजकल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाएँ चल रही हैं, इस दृष्टि से परीक्षार्थियों के लिए शान्त वातावरण अपेक्षित है। परन्तु इन दिनों नगर में जगह-जगह जागरण के कार्यक्रमों, भक्ति-संगीत और विवाह-समारोहों के कारण रात-दिन ध्वनि-विस्तारक यन्त्र (लाउडस्पीकर-डीजे) बजते रहते हैं। इनके कर्णकटु शोरगुल से विद्यार्थियों को अपनी परीक्षा की तैयारी करने तथा अध्ययन में दत्तचित्त होने में अत्यधिक बाधा आ रही है। गत वर्षों तक परीक्षा के दिनों में ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता था, परन्तु इस बार प्रशासन ने अभी तक ऐसा प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। इससे युवकों में अशान्ति फैल रही है और सरकारी तन्त्र की निष्क्रियता पर प्रबुद्ध नागरिकों में रोष बढ़ रहा है। परीक्षार्थियों को तो अपने भविष्य की चिन्ता सता रही है। अत: परीक्षा-अवधि तक ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाना जरूरी है। शिक्षण-जगत् का भी यही अभिमत है।

प्रश्न 22. अपने नगर/कस्बे में जागरूक नागरिकों द्वारा चलाये जा रहे जल संरक्षण आन्दोलन पर समाचार-पत्र में प्रेषित करने हेतु 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर– **जल-संरक्षण की महती आवश्यकता**

बीकानेर, 15 मई। ग्रीष्म-ऋतु के आते ही नगर/कस्बों में जल-संकट बढ़ जाता है। इस स्थिति को ध्यान में रखकर बीकानेर नगर के कुछ जागरूक नागरिकों तथा समाजसेवियों ने जल-संरक्षण आन्दोलन आरम्भ किया है। इस आन्दोलन का उद्देश्य नागरिकों को जल का महत्त्व बताना तथा जल की उपलब्धता में कमी होने पर उसका संरक्षण करने के उपाय सुझाना है।

जल-संरक्षण आन्दोलन के संचालकों ने स्थान-स्थान पर सभाएँ की हैं, नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जन-जागरण किया है और पानी की बर्बादी रोकने के लिए अनेक उपाय भी बताये हैं। हैण्डपम्पों, बोरिंग-ट्यूबवेल आदि साधनों से भूगर्भ के जल का अत्यधिक विदोहन करने से जल-स्तर निरन्तर गिर रहा है। ऐसे संसाधनों पर प्रभावी नियन्त्रण रखने तथा वर्षा-जल को भूगर्भ में संगृहीत करने को लेकर आन्दोलन से जुड़े लोगों ने जो चेतना जागृत की है, वह सुन्दर प्रयास

है। वस्तुत: जीवन में जल-संरक्षण की महती आवश्यकता बताकर उसके अपव्यय पर रोक लगाने के उपाय सुझाने में यह आन्दोलन सफल रहा है।

प्रश्न 23. नागरिक जीवन में दिनोंदिन बढ़ती हुई अराजकता को लेकर 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर— **बढ़ती हुई अराजकता पर नियन्त्रण कब?**

भरतपुर, 10 अक्टूबर। वर्तमान में भरतपुर नगर कई कारणों से अराजक बना हुआ है। यहाँ पर बाहरी कॉलोनियों में हर दिन चोरियाँ होती हैं। चोर रात में घरों में घुस जाते हैं और कभी-कभी दिन में भी सूने घरों को निशाना बनाकर चोरियाँ कर जाते हैं। इससे आम नागरिक भयभीत एवं परेशान हैं।

शहर के मुख्य मार्गों एवं गलियों में भी गुण्डों-बदमाशों के गैंग नागरिकों से खुलेआम कीमती सामान छीन लेते हैं। कहीं महिलाओं की गले की चैन खींचने वाले उचक्के अपना काम कर जाते हैं तो कहीं दुकानदारों से हफ्ता वसूली करने वाले गुण्डे दादागीरी दिखाते हैं। स्कूल-कॉलेज की लड़कियों से छेड़छाड़ करना तो अब आम बात हो गई है। रात में भी शराबियों, जुआरियों और वेश्यावृत्ति वालों का हुड़दंग होता रहता है। इस प्रकार आजकल भरतपुर शहर के जन-जीवन में अशान्ति, आतंक, अराजकता और असामाजिक तत्त्वों का उत्पात काफी बढ़ गया है। इस पर प्रभावी नियन्त्रण अतिशीघ्र जरूरी है, परन्तु प्रशासन कब मुस्तैद होगा—यह देखने योग्य है।

प्रश्न 24. अपने विद्यालय में आयोजित 'बाल-दिवस समारोह' अथवा 'वन महोत्सव' पर समाचार-पत्र को प्रेषित करने के लिए 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर— **बाल-दिवस समारोह**

14 नवम्बर को प्रतिवर्ष हमारे विद्यालय में पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन पर बाल-दिवस समारोह आयोजित होता है। इस बार भी यह दिवस धूमधाम से मनाया गया। इसमें राज्य के शिक्षामन्त्री मुख्य अतिथि रूप में आमन्त्रित थे। विद्यालय के सभागार में नेहरूजी के गुणों की चर्चा हुई, उनके त्याग और कर्त्तव्यनिष्ठा का उल्लेख कर उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया गया। इस समारोह में देशभक्ति के गीत गाये गये। विद्यालय के प्रांगण में एक छोटा-सा मेला भी लगाया गया और छात्रों द्वारा बनाई गई चीजों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस समारोह का आयोजन छात्रसंघ के द्वारा किया गया। अन्त में श्रेष्ठ छात्रों को पुरस्कार वितरण कर इसका समापन किया गया।

अथवा

वन-महोत्सव

वर्तमान में उद्योगों एवं नगरों के विस्तार से वन-क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं और पर्यावरण-प्रदूषण बढ़ रहा है। अतएव छात्रों को वनावली का महत्त्व बताने के लिए हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष वन-महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी यह आयोजन हुआ। इसमें विद्यालय के सभी छात्रों एवं शिक्षकों ने विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया, फूलों-बेलों के पौधे लगाये और जन-जागरण के लिए एक जुलूस निकाला। इसमें छात्रों ने 'वन बचाओ, वृक्ष लगाओ' के नारे लगाये और लोगों को वृक्षारोपण का महत्त्व भी बताया। पर्यावरण की शुद्धि एवं मानव-स्वास्थ्य की दृष्टि से 'वन-महोत्सव' का आयोजन ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप में होने चाहिए।

प्रश्न 25. अपने शहर की खस्ताहाल सफाई व्यवस्था अथवा अनियमित बिजली कटौती पर समाचार-पत्र को प्रेषित करने हेतु 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर— **शहर की खस्ताहाल सफाई व्यवस्था**

ऐतिहासिक नगर, जयपुर, वर्तमान में गन्दगी से अटा पड़ा है। इसकी बसावट-बनावट में नालियाँ पक्की बनी हुई हैं, जमीन के अन्दर बड़ा नाला एवं ड्रेनेज सिस्टम भी है, परन्तु सफाई की व्यवस्था अब भगवान् भरोसे है। फलस्वरूप जहाँ देखो वहाँ कूड़े के ढेर दिखाई देते हैं, नालियाँ कचरा जमा होने से अवरुद्ध हैं और गन्दा पानी सड़कों पर फैल रहा है। यद्यपि नगर निगम ने सफाई व्यवस्था के लिए अनेक कर्मचारी नियुक्त कर रखे हैं, परन्तु उन पर नियन्त्रण का अभाव है, निगम के स्वास्थ्य विभाग को बार-बार शिकायत करने पर भी कोई समाधान नहीं हो रहा है। नगरवासियों के स्वास्थ्य के प्रति ऐसी लापरवाही चिन्तनीय है। अत: इस दिशा में ठोस प्रयास नितान्त आवश्यक हैं।

अथवा

अनियमित बिजली कटौती

अजमेर शहर में बिजली का संकट पैदा हो गया है। विद्युत वितरण विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्तमान में माँग के अनुरूप बिजली उपलब्ध नहीं हो रही है। इस कारण जब-तब अनियमित रूप से बिजली की कटौती की जा रही है।

दिन में बिजली की कटौती उतनी नहीं अखरती है, जितनी कि रात में, क्योंकि रात में चोर-उचक्कों एवं असामाजिक तत्त्वों का भय रहता है। अनियमित बिजली कटौती से पानी के ट्यूबवेल कम ही चल पा रहे हैं, छात्रों को परीक्षा की तैयारी करने में दिक्कतें आ रही हैं, लघु-उद्योगों पर आर्थिक मार पड़ रही है। विद्युत विभाग नियमित बिजली उपलब्ध कराये, यही उसका प्राथमिक दायित्व है।

प्रश्न 26. अपने विद्यालय में आयोजित गणतन्त्र दिवस समारोह पर एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

उत्तर- **गणतन्त्र दिवस समारोह का आयोजन**

अलवर, 26 जनवरी। आज राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में गणतन्त्र दिवस समारोह आयोजित हुआ। प्रातःकाल छात्रों ने प्रभातफेरी निकाली और गली-मोहल्ले में जाकर देशभक्ति के नारे लगाये। साढ़े आठ बजे विद्यालय प्रांगण में एकत्र हुए। प्रधानाचार्यजी ने राष्ट्रध्वज फहराया। छात्रों ने समवेत स्वर में राष्ट्रगीत गाया तथा तिरंगे को सलामी दी। प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों ने सभा में गणतन्त्र दिवस के इतिहास और महत्त्व पर प्रकाश डाला। कुछ छात्रों ने भी देशभक्ति के गीत गाये। फिर व्यायाम प्रदर्शन हुआ। अन्त में सभी छात्रों ने देशभक्ति का संकल्प लिया, देश-सेवा की प्रतिज्ञा की। मिष्ठान्न-वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ।

प्रश्न 27. 14 सितम्बर को विद्यालय में 'हिन्दी-दिवस' मनाया गया। इस सन्दर्भ में सभा के आयोजन पर 100 शब्दों का एक संक्षिप्त प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर- **'हिन्दी दिवस' का आयोजन**

आज सोमवार, 14 सितम्बर, 20XX को विद्यालय के सभागार में प्रातः 11 बजे प्राचार्य महोदय की अध्यक्षता में एक सभा आयोजित की गई। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. किशोर ने 'राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी' तथा बारहवीं कक्षा की छात्रा शिवानी और सपना ने हिन्दी की स्थिति पर अपने विचार प्रकट किए। प्राचार्य महोदय ने घोषणा की कि इस वर्ष हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को 1000/- रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। सभी उपस्थित लोगों का अध्यक्ष महोदय ने धन्यवाद दिया और सभा विसर्जित की गई।

प्रश्न 28. आपके विद्यालय में गाँधी जयन्ती उत्सव का आयोजन हुआ। समाचार-पत्र के लिए 100 शब्दों में एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर- **गाँधी जयन्ती उत्सव**

हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति दो अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयन्ती पर उत्सव का आयोजन हुआ। इस दिन विद्यालय के प्रांगण में स्थापित गांधीजी की प्रतिमा पर सर्वप्रथम प्रधानाचार्यजी ने माल्यार्पण किया। तत्पश्चात् सभी शिक्षकों एवं छात्रों ने पुष्पाञ्जलि अर्पित की। प्रधानाचार्यजी ने गाँधीजी के जीवन पर, उनके सिद्धान्तों एवं कार्यों पर प्रकाश डाला और सभी छात्रों को सत्य, अहिंसा, भाईचारा, जन-सेवा आदि को अपनाने का सन्देश दिया। सभी छात्रों ने समवेत स्वर में गाँधीजी के प्रिय भजन का गायन किया। इसी दिन लालबहादुर शास्त्री की जयन्ती होने से उनका भी पुण्य-स्मरण किया गया। अन्त में सभी ने गाँधीजी के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

प्रश्न 29. आपके विद्यालय द्वारा विश्व साक्षरता दिवस का आयोजन किया गया। उस पर समाचार रूप में 100 शब्दों का एक प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर- **विश्व साक्षरता दिवस**

नागौर, 8 सितम्बर। इस दिन विश्व साक्षरता दिवस मनाया जाता है। हमारे विद्यालय में भी इस दिवस का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्यजी के निर्देश पर हम अपने शिक्षकों के साथ समीप की कच्ची बस्तियों में गये और वहाँ पर अनपढ़ लोगों को साक्षरता का महत्त्व बताया। वैसे सरकार की ओर से साक्षरता अभियान सारे देश में चल रहा है, परन्तु दैनिक मजदूरी करने वाले एवं अत्यन्त निर्धन लोग अक्षर-ज्ञान के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। ऐसे लोगों को रात के समय साक्षर करने के लिए हमने कार्यक्रम बनाया और उन्हें इस अभियान में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। साक्षर होना मनुष्य का मौलिक अधिकार है। निरक्षर लोगों को इस अधिकार की जानकारी देने में हमारा प्रयास सफल रहा।

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

मुद्रक :
मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

★ ★ ★ ★ ★

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी कक्षा 9

समय : 3.15 घंटे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	15
रचना	15
व्यावहारिक व्याकरण	15
पाठ्यपुस्तक : क्षितिज (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : कृतिका (भाग-1)	15

1. अपठित बोध : **15 अंक**

अपठित गद्यांश (आठ बहुचयनात्मक प्रश्न) 08

अपठित काव्यांश (सात बहुचयनात्मक प्रश्न) 07

2. रचना : **15 अंक**

(i) संकेत बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध-लेखन (विकल्प सहित) 06

(ii) संवाद-लेखन/पत्र-लेखन (विकल्प सहित) 05

(iii) प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन (100 शब्द) 04

3. व्यावहारिक-व्याकरण : **15 अंक**

(8 रिक्त स्थान पूर्ति, तीन अतिलघूत्तरात्मक एवं दो लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) शब्द निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय), विशेषण, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव 03

(ii) परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव 03

(iii) वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य) 03

(iv) पर्यायवाची, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 03

(v) मुहावरे 03

4. पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक : **(40+15) 55 अंक**

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-1) **40 अंक**

(i) निर्धारित गद्य-पाठों से किन्हीं दो गद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(ii) निर्धारित कविताओं से किन्हीं दो पद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(iii) 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) 06

(iv) 5 लघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) 10

(v) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 03

(vi) किसी एक रचनाकार का परिचय (कवि अथवा लेखक के विकल्प के साथ) 04

(vii) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 05

पूरक-पुस्तक (कृतिका भाग-1) 15 अंक

(i) 3 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 03

(ii) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न 04

(iii) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 03

(iv) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 05

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **कृतिका–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-1

गद्य-खण्ड

1. दो बैलों की कथा	*प्रेमचन्द*	1-14
2. ल्हासा की ओर	*राहुल सांकृत्यायन*	14-25
3. उपभोक्तावाद की संस्कृति	*श्यामाचरण दुबे*	25-36
4. साँवले सपनों की याद	*जाबिर हुसैन*	36-45
5. प्रेमचन्द के फटे जूते	*हरिशंकर परसाई*	45-56
6. मेरे बचपन के दिन	*महादेवी वर्मा*	56-67

काव्य-खण्ड

7. कबीर	साखियाँ एवं सबद	68-79
8. ललद्यद	*वाख*	79-87
9. रसखान	*सवैये*	87-96
10. माखनलाल चतुर्वेदी	*कैदी और कोकिला*	96-108
11. सुमित्रानंदन पंत	*ग्राम-श्री*	108-118
12. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	*मेघ आए*	118-128
13. राजेश जोशी	*बच्चे काम पर जा रहे हैं*	128-136

कृतिका भाग-1 (पूरक पुस्तक)

1. इस जल प्रलय में	*फणीश्वरनाथ 'रेणु'*	137-143
2. मेरे संग की औरतें	*मृदुला गर्ग*	143-151
3. रीढ़ की हड्डी	*जगदीश चंद्र माथुर*	151-157

व्याकरण

1. शब्द-निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय)	158-172
2. विशेषण (लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव)	172-184
3. परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव	184-192
4. वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य)	192-200
5. पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	201-223
6. मुहावरे	223-237

अपठित-बोध

1. अपठित गद्यांश	**238-251**
2. अपठित काव्यांश	**251-263**

रचना

निबन्ध-लेखन

राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्यात्मक निबन्ध

1. मेक इन इंडिया **अथवा** स्वदेशी उद्योग 264
2. आत्मनिर्भर भारत 265
3. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
अथवा
कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 265
4. समाज में नारी का स्थान **अथवा** भारतीय नारी तब और अब
अथवा
राष्ट्र के उत्थान में नारी की भूमिका 266
5. राष्ट्र निर्माण में युवकों का योगदान **अथवा** राष्ट्रीय उत्थान में युवा वर्ग का योगदान
अथवा
राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका 267
6. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन **अथवा** प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 267
7. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या **अथवा** कन्या भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 268
8. आतंकवाद : एक विश्व समस्या **अथवा** आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 269
9. रोजगार गारंटी योजना : मनरेगा **अथवा** गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 269
10. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 270
11. बाल-विवाह : एक अभिशाप 270
12. आतंकवाद : भारत के लिए चुनौती **अथवा** आतंकवाद : भारत की विकट समस्या 271
13. दहेज-प्रथा **अथवा** समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 272
14. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या **अथवा** बढ़ती महँगाई : एक विकराल समस्या 272
15. पर्यावरण प्रदूषण **अथवा** बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 273
16. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या **अथवा** देश में व्याप्त भ्रष्टाचार 273
17. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान 274
18. बढ़ती भौतिकता : घटते मानवीय मूल्य 274
19. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन **अथवा** वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 275
20. राजस्थान का अकाल 276
21. बेरोजगारी : समस्या और समाधान **अथवा** रोजगार के घटते साधन 276
22. नारी सशक्तीकरण 277

शिक्षा एवं विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध

23. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 277
24. सर्व शिक्षा अभियान **अथवा** सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 278
25. शिक्षित नारी : सुख समृद्धिकारी **अथवा** नारी-शिक्षा का महत्त्व 278
26. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व **अथवा** कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता 279

27. शिक्षा-सुधार में विद्यार्थियों की भूमिका 280
28. निरक्षरता : एक अभिशाप 280
29. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता **अथवा** नैतिक शिक्षा का महत्त्व 281
30. इन्टरनेट : वरदान या अभिशाप **अथवा** इन्टरनेट की उपयोगिता
अथवा
विद्यार्थी-जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 281
31. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 282
32. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी **अथवा** सूचना क्रांति के युग में भारत 283
33. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव **अथवा** कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 283
34. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप **अथवा** युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव 284
35. मानव के लिए विज्ञान-वरदान या अभिशाप **अथवा** विज्ञान के बढ़ते कदम 284

विचारात्मक निबन्ध

36. समय का सदुपयोग 285
37. जल संरक्षण : हमारा दायित्व **अथवा** जल है तो जीवन है 286
38. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है **अथवा** विद्यार्थी जीवन में अनुशासन 286
39. स्वावलम्बन का महत्त्व 287
40. वर्तमान की महत्ती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता **अथवा** राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 287
41. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका **अथवा** समाचार-पत्रों का महत्त्व 288
42. कटते जंगल : घटता मंगल 288

पर्व-त्योहार सम्बन्धी निबन्ध

43. ऋतुराज वसन्त **अथवा** प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त 289
44. त्योहारों का महत्त्व **अथवा** त्योहार : जनमंगल के आधार 290
45. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 290

स्वास्थ्य एवं खेलकूद सम्बन्धी निबन्ध

46. स्वच्छ भारत अभियान 291
47. खुला-शौचमुक्त गाँव 291
48. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग **अथवा** योग भगाए रोग 292
49. शिक्षा में खेलकूद का महत्त्व **अथवा** जीवन में खेलकूद की आवश्यकता 292
50. जब मैंने क्रिकेट मैच देखा **अथवा** आँखों देखे मैच का वर्णन 293

संस्कृति एवं पर्यटन सम्बन्धी निबन्ध

51. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता 294
52. राजस्थान के लोकगीत 294
53. नखरालो राजस्थान 295

संस्मरणात्मक निबन्ध

54. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना **अथवा** जीवन की वह चिरस्मरणीय घटना 295
55. गुरुजी जिन्हें मैं भूला नहीं सकता **अथवा** मेरे आदरणीय गुरुजी 296
56. विद्यालय का अन्तिम दिन 296
57. परीक्षा का अन्तिम दिन 297
58. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा **अथवा** किसी रोचक यात्रा का वर्णन 298
59. भीषण वर्षा की वह रात **अथवा** जब मेरे गाँव में भीषण वर्षा हुई 298
60. चुनाव का एक दृश्य **अथवा** चुनाव की हलचल 299

विविध विषयात्मक निबन्ध

61. मेरी प्रिय पुस्तक (रामचरितमानस) 299
62. इक्कीसवीं सदी का भारत
अथवा
मेरे सपनों का भारत 300
63. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 301
64. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण के उपाय 301
65. मनोरंजन के आधुनिक साधन 302

संवाद-लेखन **303-309**

पत्र-लेखन
(औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) **310-336**

प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन **337-344**

क्षितिज : भाग-1

गद्य खण्ड

1. दो बैलों की कथा

(प्रेमचन्द)

लेखक-परिचय–महान् कथाकार एवं उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 में बनारस के पास 'लमही' गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचन्द का बचपन अभावों में बीता और अभावों के बीच ही उन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा विभाग में नौकरी की, परन्तु असहयोग आन्दोलन में भाग लेने हेतु सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दिया। ये स्वतन्त्र-लेखन में प्रवृत्त हुए। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ तथा ग्यारह प्रसिद्ध उपन्यासों की रचना की। इनके साथ ही कुछ पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। सन् 1936 में उनका देहान्त हो गया।

पाठ-सार–'दो बैलों की कथा' प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी है। झूरी काछी के दो बैलों के नाम थे—हीरा और मोती, दोनों बैल सीधे-सादे भारतीय लोगों के प्रतीक थे। वे ताकतवर और कमाऊ होते हुए भी अत्याचार सहते थे। कहानीकार ने इनके माध्यम से भारतीय लोगों की परतन्त्रता में होती दुर्दशा का संकेत किया है। पर उन दोनों बैलों में घनिष्ठ मित्रता थी। झूरी उनकी पूरी देखभाल करता था। एक बार झूरी ने उन्हें अपनी ससुराल भेज दिया। तब हीरा-मोती ने समझा कि उन्हें बेच दिया है। इस कारण मौका पाकर वे दोनों बैल वहाँ से भागकर आ गये। उन्हें फिर झूरी के ससुराल भेजा गया। इस बार भी वे वहाँ से भाग गये। मार्ग में एक खेत में चरते हुए पकड़े जाने पर उन्हें 'काँजीहौस' में लाया गया। वहाँ से उनकी नीलामी की गई और एक कसाई ने उन्हें खरीद लिया। कसाई के साथ चलते-चलते दोनों बैलों को उससे डर लगने लगा। इसलिए वे दोनों भागकर झूरी के घर आ गये। अपने प्यार करने वाले मालिक और अपने थान को पाकर वे खुश हुए। झूरी ने उनके पास चारा डाला तो उसकी पत्नी ने उनके माथे चूम लिये। इस तरह दोनों बैल प्रसन्नता से रहने लगे।

कठिन-शब्दार्थ–निरापद = सुरक्षित। अनायास = अचानक। मिसाल = उदाहरण। वंचित = रहित। विग्रह = लड़ाई। जालिम = अत्याचारी। गोई = बैलों की जोड़ी। चरनी = चारा खाने की जगह या पात्र। प्रतिवाद = विरोध। बछिया के ताऊ = मूर्ख। बेतहाशा = बिना होश-हवास के। जोखिम = खतरा। साबिका = सरोकार। चेत उठना = सावधान रहना। अंतर्ज्ञान = भीतरी समझ। अश्रद्धा = असम्मान से। पांगुर करना = जुगाली करना। रेवड़ = समूह, झुण्ड।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर–काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी कैद पशुओं की संख्या, उनकी विभिन्न आवश्यकताओं की पड़ताल, जिससे उनके खाने-पीने का इन्तजाम उसके अनुसार किया जा सके, पशुओं के व्यवहार का आकलन तथा सभी कैद पशुओं की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए ली जाती होगी।

प्रश्न 2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर–छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। उसकी सौतेली माँ उसे मारती थी और उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। इसलिए हीरा-मोती की व्यथा देखकर उसके मन में उनके प्रति प्रेम उमड़ आया, क्योंकि उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं।

प्रश्न 3. कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में बैलों के माध्यम से अग्रलिखित नीति-विषयक मूल्य उभरकर सामने आये हैं—

(1) सरल-सीधा और अत्यधिक सहनशील नहीं होना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक सीधे इन्सान को 'गधा' कहा जाता है। इसलिए मनुष्य को अपने अधिकारों के प्रति संघर्षरत रहना चाहिए।

(2) मनुष्य को हमेशा स्वामिभक्ति, सहयोग, निःस्वार्थ परोपकार, मित्रता और नारियों के प्रति सहयोग की भावना रखनी चाहिए।

(3) आजादी पाने के लिए मनुष्य को बड़े से बड़ा कष्ट उठाने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

(4) मनुष्य को नारी जाति का सम्मान करने वाला, धर्म की मर्यादा मानने वाला तथा सच्ची आत्मीयता रखने वाला होना चाहिए।

प्रश्न 4. प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किस नये अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे के लिए रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न करके उसे सन्तोषी, सहनशील, सुख-दुःख में समान रहने वाला, क्रोधरहित एवं स्थिर व्यवहार वाला बताया है। इस आधार पर उसकी तुलना ऋषि-मुनियों के स्वभाव से की है। इस प्रकार कथाकार ने गधे के सहिष्णु, निरापद, सद्गुणी एवं सन्तोषी स्वभाव वाले अर्थ की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 5. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर—'दो बैलों की कथा' में कुछ घटनाएँ ऐसी हैं, जिनसे हीरा और मोती की गहरी दोस्ती का पता चलता है। यथा—

(1) वे एक-दूसरे को सूँघ कर व चाटकर अपना प्रेम प्रकट करते थे।

(2) दोनों बैलगाड़ी या हल में जोते जाने पर ज्यादा से ज्यादा बोझ स्वयं ढोने का प्रयास करते थे।

(3) मटर के खेत में दोनों मस्त होकर, सींग मिलाकर एक-दूसरे को ढेलने लगे। तब हीरा को क्रोधित देखकर मोती ने उसके साथ कठोर व्यवहार किया और दोस्ती को दुश्मनी में नहीं बदलने दिया।

(4) गया द्वारा हीरा की निर्दयतापूर्वक पिटाई करने पर मोती का क्रोध भड़क उठा और वह हल, जुआ आदि लेकर भाग निकला और उनको तोड़-ताड़कर बराबर कर दिया।

(5) दोनों मित्रों ने सहयोगी रणनीति से सांड का मुकाबला कर उसे परास्त किया।

(6) मटर के खेत में मोती के पकड़े जाने पर हीरा भी उसके पास आ गया। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

(7) काँजीहौस में दीवार गिराने पर जब हीरा की रस्सी नहीं टूटी तो मोती भी अकेले बाहर नहीं गया।

इस तरह के आचरण से दोनों में गहरी दोस्ती दिखाई दी।

प्रश्न 6. "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।"—हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचन्द के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हीरा के उक्त कथन के माध्यम से प्रेमचन्द का स्त्री-जाति के प्रति सम्मान का भाव व्यक्त हुआ है। भारतीय संस्कृति में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' कथन से नारी को सम्मानित एवं पूज्या माना गया है। हमारे समाज में कुछ लोग स्त्री को केवल भोग्या तथा साधारण जीव मानते हैं, उसका शोषण-उत्पीड़न करते हैं, मारते-पीटते भी हैं, परन्तु प्रेमचन्द का ऐसा दृष्टिकोण नहीं रहा है। उन्होंने स्त्री को समता एवं सम्मान का पात्र बताया है।

प्रश्न 7. किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी सम्बन्धों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर—कहानी में किसान जीवन वाले समाज में मनुष्य और पशु का घनिष्ठ संबंध बताया गया है। वे एक-दूसरे के सहायक और पूरक रहे हैं। किसान पशुओं को घर का सदस्य मानकर उनसे प्रेम करता है और पशु भी अपने स्वामी के लिए जी-जान देने को तैयार रहते हैं। झूरी हीरा-मोती को घर के सदस्यों की तरह स्नेह करता था। इसीलिए हीरा-मोती दो बार उसकी ससुराल से भाग कर अपने थान पर खड़े हुए थे। उन्हें देखकर वह ही नहीं उसकी पत्नी भी आनन्द से भर उठी थी। इससे पता चलता है कि किसान अपने पशुओं से मानवीय व्यवहार करते हैं।

प्रश्न 8. "इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे"—मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—इस कथन से ज्ञात होता है कि मोती स्वभाव से उग्र किन्तु परोपकारी, सहयोगी और दयालु बैल है। वह अत्याचार का विरोधी, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति रखने वाला और आजादी का समर्थक है। इसीलिए वह काँजीहौस की दीवार तोड़कर बन्द पड़े पशुओं को आजाद कर देता है। उसे इस बात पर सन्तोष होता है कि अब चाहे कुछ भी हो। इतना तो हो गया कि मेरे प्रयास से नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी। अतः वह आशावादी, स्वार्थहीन और साहसी पशु था।

प्रश्न 9. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

उत्तर–आशय–सामान्य पशु होते हुए भी हीरा और मोती एक-दूसरे के मनोभावों को समझ लेते थे तथा मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। इससे कथाकार का मानना है कि उन दोनों बैलों के पास अवश्य ही कोई गुप्त शक्ति थी जिसके माध्यम से मूक-भाषा में वे एक-दूसरे की मन की भावनाओं को समझ लेते थे। मनुष्य सभी जीवों में श्रेष्ठ है, परन्तु उसके पास ऐसी गुप्त शक्ति का अभाव है, जो बिना बोले ही दूसरों की भावनाओं को स्पष्टतया समझ सके।

(ख) उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शान्त होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर–आशय–गया के घर में हीरा-मोती के साथ अत्याचार होता था। गया उन्हें मारता था और खाने के लिए सूखा भूसा देता था। दोनों बैल इसे अपना अपमान समझते थे। सन्ध्या के समय उसी घर की एक छोटी सी बच्ची ने दो रोटियाँ लाकर उन दोनों को खिलायीं। एक-एक रोटी से उनकी भूख क्या शान्त होती, परन्तु छोटी बच्ची के प्रेमपूर्ण व्यवहार को देखकर उन दोनों में एक शक्ति का संचार हो गया, मानो उन्हें अच्छा भोजन मिल गया और उनके हृदय में यह भाव जागा कि यहाँ पर भी किसी सज्जन का वास है।

प्रश्न 10. गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि–

(क) गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

(ख) गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था।

(घ) उसे खली आदि सामग्री की जानकारी न थी।

सही उत्तर के आगे (√) का निशान लगाइए।

उत्तर–(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था। (√)

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 11. हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ़ आवाज उठाई, लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में हीरा-मोती को स्वतन्त्रता-आन्दोलन के क्रान्तिकारियों के प्रतीक रूप में रखा गया है। इन दोनों ने गया के घर जाने पर मातृभूमि के प्रति अपना प्रेम दर्शाने और अत्याचार-शोषण का विरोध करने में अपनी क्षमता का परिचय दिया। इस संघर्ष में उन्हें वहाँ प्रताड़ना मिली, मार भी खानी पड़ी और भूखा भी रखा गया, फिर भी वे अपने ढंग से उसका विरोध करते रहे। इस तरह गुलामी के बदले आजादी की लालसा में उन्होंने संघर्षरत रहने की अपनी बलवती भावना का परिचय दिया।

प्रश्न 12. क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है?

उत्तर–अप्रत्यक्ष रूप से यह कहानी अंग्रेजों की दासता से मुक्ति की कहानी है और इसमें हीरा-मोती क्रान्तिकारियों के प्रतीक हैं। जिस समय यह कहानी लिखी गयी, उस समय भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन चल रहा था। अपनी बात को खुलकर न कह सकने के कारण प्रेमचन्द ने दो बैलों के माध्यम से आजादी की लड़ाई की ओर संकेत किया। हीरा-मोती को लेकर कहानी में जो घटना-क्रम एवं विचाराभिव्यक्ति दर्शायी गई है, वह सब आजादी की लड़ाई से मेल खाती है। जहाँ झूरी का घर स्वराज्य का और गया का घर पराधीनता का प्रतीक है वहीं हीरा अहिंसा का और मोती क्रान्ति का प्रतीक है और रेवड़ में चरने वाले पशु स्वतन्त्रता के प्रतीक हैं। अन्त में इन दोनों की विजय बताई गयी है।

भाषा-अध्ययन–

प्रश्न 13. बस इतना ही काफ़ी है।

फिर मैं भी जोर लगाता हूँ।

'ही' 'भी' वाक्य में किसी बात पर जोर देने का काम कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में से ऐसे पाँच वाक्य छाँटिये, जिनमें निपात का प्रयोग हुआ हो।

उत्तर–(1) जोर तो मारता ही जाऊँगा।

(2) न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नजर आती।

(3) एक ने भी उसमें मुँह न डाला।

(4) आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा।

(5) साँड को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजरबा न था।

प्रश्न 14. रचना के आधार पर वाक्यभेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उसके भेद भी लिखिए–

उत्तर–रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं—

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य।

(क) दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।

उत्तर–यह मिश्र वाक्य है।

(i) दीवार का गिरना था –प्रधान या मुख्य उपवाक्य

(ii) अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे। –आश्रित क्रिया विशेषण उपवाक्य

(ख) सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया।

उत्तर–यह मिश्र वाक्य है।

(i) सहसा एक दढ़ियल आदमी आया। –प्रधान उपवाक्य

(ii) जिसकी आँखें लाल थीं। –आश्रित विशेषण उपवाक्य

(iii) और मुद्रा अत्यन्त कठोर। –आश्रित विशेषण उपवाक्य

(ग) हीरा ने कहा–गया के घर से नाहक भागे।

उत्तर–मिश्र वाक्य है।

(i) हीरा ने कहा। –प्रधान उपवाक्य

(ii) गया के घर से नाहक भागे। –आश्रित संज्ञा उपवाक्य

(घ) मैं बेचूँगा, तो बिकेंगे।

उत्तर–मिश्र वाक्य है।

(i) तो बिकेंगे। –प्रधान उपवाक्य

(ii) मैं बेचूँगा। –आश्रित क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(ङ) अगर वह मुझे पकड़ता तो मैं बे-मारे न छोड़ता।

उत्तर–मिश्र वाक्य है।

(i) मैं बे-मारे न छोड़ता। –प्रधान उपवाक्य

(ii) अगर वह मुझे पकड़ता। –आश्रित क्रिया-विशेषण उपवाक्य

प्रश्न 15. कहानी में जगह-जगह मुहावरों का प्रयोग हुआ है। कोई पाँच मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–कहानी में प्रयुक्त मुहावरे–ईंट का जवाब पत्थर से देना, सिंहनी का रूप धारण करना, सींग मारना, गम खाना, जी-तोड़ काम करना, सिर झुकाना, धौल-धप्पा होना, कोर कसर उठा न रखना, पसीना आना, दिल भारी होना, आँख न उठाना, पलट जाना, टल जाना, जान से हाथ धोना, नाकों में नथ डालना, जान जोखिम में डालना, मन फीका होना, अकड़ निकल जाना, खलबली मचना, मन फीका करना, माथा चूमना, काम आना आदि।

वाक्य-प्रयोग–(1) शत्रु तभी शान्त होगा, जब **ईंट का जवाब पत्थर से दिया जायेगा।**

(2) मालकिन ने तुरन्त पास आकर दोनों के **माथे चूम लिये।**

(3) काँजीहौस में बंद होने पर दोनों की **अकड़ निकल गई।**

(4) काँजीहौस की दीवार गिरने पर सभी जानवरों में **खलबली मच गई।**

(5) यहीं रहे तो **जान से हाथ धोना पड़ेगा।**

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में मोती प्रतीक है—
   (क) महात्मा गाँधी का (ख) सुभाष चन्द्र बोस का
   (ग) जवाहरलाल नेहरू का (घ) प्रेमचन्द का
2. भारतवासियों की अफ्रीका और अमेरिका में दुर्दशा होने का कारण था—
   (क) अकर्मण्यता और आलस (ख) पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेष

(ग) सीधापन और सहनशीलता (घ) सहिष्णुता और संघर्ष

3. छोटी-सी लड़की उन दोनों के मुँह में रोटियाँ देकर चली गयी थी—
(क) उनकी भूख शान्त करने के कारण (ख) उनके प्रति दया दिखाने के कारण
(ग) उनके प्रति आत्मीयता होने के कारण (घ) उनके प्रति सज्जनता दिखाने के कारण

4. साँड आदी था—
(क) मल्ल युद्ध करने का (ख) डर कर भागने का
(ग) शत्रुओं को पछाड़ने का (घ) हिल-मिलकर रहने का

5. "इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी।" यह कथन है—
(क) हीरा का (ख) मोती का (ग) गाय का (घ) गधे का

6. गधे में किसके गुण पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं?
(क) आम आदमी (ख) चोर डकैत (ग) ऋषि मुनि (घ) कुलीन वर्ग

7. निरापद सहिष्णुता का क्या अर्थ है?
(क) संत भोलापन (ख) अत्यन्त मूर्खता
(ग) अत्यन्त सहनशीलता (घ) सादगी

8. दो बैलों की कथा-कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
(क) मेहनत करनी चाहिए। (ख) अपने मालिक की सेवा करनी चाहिए।
(ग) भाग्य पर विश्वास करना चाहिए। (घ) स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करना चाहिए।

9. दोनों बैल गया से नफरत क्यों करते थे?
(क) गया पेटभर चारा नहीं देता था। (ख) गया दोनों बैलों को मारता था।
(ग) उनसे खूब काम लेता था। (घ) उपरोक्त सभी।

10. झूरी ने अपने दोनों बैलों को कहाँ भेज दिया था?
(क) भाई के घर (ख) ससुराल (ग) मित्र (घ) बहन के घर

उत्तर-माला—1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख) 6. (ग) 7. (ग) 8. (घ) 9. (घ) 10. (ख)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. दिनभर की थकान के बाद शाम को जब वे खुलते तो एक-दूसरे को................. अपनी थकान मिटा लेते। (चाटकर/बातकर)
2. गया के बैलों की गोई ले जाने में .... आ गया। (जोर/नाकों तले पसीना)
3. दो-चार बार मोती ने गाड़ी को .... गिराना चाहा पर हीरा ने संभाल लिया। (खाई में/ढलान में)
4. छोटी-सी लड़की .... रोटी लिए निकली। (दो/पाँच)
5. जिस .... मार्ग से आए थे उसका यहाँ पता ना था। (परिचित/अपरिचित)
6. संध्या समय दोनों बैल अपने .... पर पहुँचे। (नए स्थान/पुराने स्थान)

उत्तर—1. चाटकर 2. नाकों तले पसीना 3. खाई में 4. दो 5. परिचित 6. पुराने स्थान।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

प्रश्न 1. 'दो बैलों की कथा' किस लड़ाई की ओर संकेत करती है?

उत्तर—'दो बैलों की कथा' कहानी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की लड़ाई की ओर संकेत करती है।

प्रश्न 2. "गिरे हुए बैरी पर सींग नहीं चलाना चाहिए।" यह कथन किसका है?

उत्तर—यह कथन हीरा का था। वह यह कथन मोती को कहता है।

प्रश्न 3. झूरी कौन था? उसका हीरा-मोती के साथ क्या सम्बन्ध था?

उत्तर—झूरी एक किसान था। हीरा-मोती उसके दो बैल थे।

प्रश्न 4. दूसरी बार गया बैलों को कैसे लेकर जाता है?

उत्तर—दूसरी बार गया हीरा-मोती को बैलगाड़ी में जोत कर ले जाता है।

प्रश्न 5. काँजीहौस के अन्दर का दृश्य कैसा था?

उत्तर—काँजीहौस के अन्दर बिना चारा-पानी के जमीन पर मुर्दों के समान अनेक भैंसें, बकरियाँ, घोड़े और गधे पड़े थे।